

यय्त्रेनमञ्जयसम्ब

## श्र.जऱ्यतप्रदेशस्थ्याः भ्र.जऱ्यतप्रदेशस्थ्याः भ्र.जऱ्यत्रेत्रस्थाः

द्यापति जुन्दन् गुन्यस्य या

()21782

## **ରି'ୟ'**~ଷ'ଅନି' इब' ଶଶ୍<sub>ୟ'</sub> ଶ୍ରି' ५५५५' ଶ୍ରଣା

### 55.4

५२ क'ने'न्य'के'न्यन्'बुर'यात्र'र्यक्रियं के स्वर्यं स्वरं स्

क्षय "स्रं लेगं हेश पक्षे द्रा हे स्वास्त क्षे क्षा क्षे स्त्र लेगं हेश पक्षे व्याप्त हेश हिता हे स्वास्त क्षे व्याप्त हे स्वास क्षे व्यापत है स्वास क्षे व्याप

श्रीकाद्रियामञ्जानवाद्यकायाक्षेत्र निराय (साक्षेत्र क्षेत्र क

इव्याम्भवात्मव्यत्यवाद्यव्याद्याचे व्याम्भव्याद्यात्राच्यात्र्यात्राच्यात्रा मन्ता देते हेराया प्रायाया में प्राप्त हेरा के सम्प्राय में प्राप्त हेरा है स्वाया स्वया स्वाया स्वय ने'म्रोते'मुलार्चेर'पर्यत्'व्यारम्'यर्वत्र्युत्राम्याम्रिण्'यसुत्र्यासुनः। न्दराह्मायारनायार्थेद। न्नार्यदासुर्गात्रायार्थेद। न्नार्यायार्थेदा रत्ने नत्त् कुन्न्त्य व्यादेवादेवाया नवादेन् कुरेयवाद्यायहन् स्था श्चिन्'रा'ने न्। व्यून'त्'य भन्'पादी'न् ये 'क'ने'न्व'दी'ने' स्र अवस्थाय देखेवा' मानद्रान्त्राय्राद्रवराष्ट्रवराष्ट्रवर्गात्रेत्। स्नानवर्गन्त्रहेवर्ष्वराधिन्। दर्शे हता द्यनः स्वतः रः न्रः। व ह व स्थेव या देवा या न्या या विव ता । सेवा लुनः विनः **দ্**ৰ'ৰ্ছ্ড'ন। ষ্ট্ৰ'নন্'ন। স্'নন্'নেইন্'ম'নভম্পৰ'নম। **ॾॱ**ॴॴड़ऀॱॸ्ॱॷढ़ऀॱॸॸॱॸॖॖॱॹ॒ढ़ॱळेॱॸॱऄज़ॱॸॹऄॱक़ॺॴॱॸॸॣॱऄॖॴज़ॱढ़ॸॱॱॸॷॱॱ ८६ँ८ प्राचेरा ने'र्ग्वर में म्हें दें इयह है। र्धेर व्≪ने प्रेस न्तर्र≫न्नः। «नेतावेर्य्युन्ये»। «जुलानवराम्रास्यिके ME>| 《세월라'메드드'자디티》| 《파트리'링'티'우' 다리'크》| 《크'핑'라' इश्रात्र हरू≫। «अष्यान्यत्रान्यतः कृष्ण्यः अष्य अन्त्रिक्षात्र हन्यः । «अ

#### मानेशन।

ন্ধীৰানকাম ( 1042 মঁ—1123 মঁ) ই মান্তুকাইনা দুইকা"" <u>शुर्चे दार्चे तामके विषाधिव या ५८%। या ५००० व्याप्त स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स</u>्वापित स्वापित <u> রের্বারাম্ব'র্বান্মর্ব'র্করাঞ্জর্র্র্রারাঞ্জন্ত্রান্র্রাম্বর্বা</u> शुंकें नार वंस में कुराभी र क्षें पार्वर दु र र र पार्भ र दे। र वे र व सु व इनिदेर्वश्वाता मुर्वे द्वाया बीटान्टावरा मंत्रवाया आहु न्टा छ। देवा **৻ৼৣ৾৶৶৳ৣ৻য়য়৻য়৶৶য়য়৸৻য়ঀ৸৸ড়৸৸ঢ়ৼৄ৴৻য়ৢয়য়৸৸৸৸৸য়৸৸৻৻৻** पराक्षेत्र-तुराक्टेवित् त्रं नहर्वात शुर्वाचेत् किष् पृत्युर्वे वस्त्रेष् ने श्चित्रापास्य ने देन द्वित्राय वर्त्र श्चित्राय वर्ष्य यात्र प्राप्त प्राप्त होते । । विन्दिर्शेषराक्त्रानुराक्तिक्षेत्राविन्दिर्वित्तिक्षेत्रानुर्वा ञ्चन। «नेपांचेन व्यव्यविक्ष्यन प्रत्ये अवन्ति । अवन्य विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषय বাবন্ধ্যাক। ब्रेल्ट्र स्ट्राप्ट कें राखु व स्व व्याप्ट स्व स् ग्री स वृत्र न्त्र **८८.८८.१५७८.६७५४५८.४५। अट्य.४४३७५४६५.३४८.५७५८** 

न्ये स्ति वृत्त्वर्णं नाईव्याः ह्याः ह्याः ह्याः क्षेत्र्युन्यः ह्याः क्षेत्र्यः स्त्रुन्यः ह्याः व्याप्त्रे व्याप्ते व्याप्ते स्वयः स्त्रुन्यः स्त्रुन्य

इयता.स धिवाबतरातरीरातेशयरातुःचन्दान्तेशयात्री। रात्रा शुराश्चरायळ व ने यात्रा शुराळ शास्त्रा शुराया विषा धेवा था वी'या कुराकुराव्य ळं व 'ग्रेश वे त्यान वाय दे ळे ग्रन पॅरे वें जु वायेन 'क्कें प्राने 'रा'' ''' प'वे'हर्ग'्य"नेरपदि'ईं बाकुप्पन्'र्युव्यन्'पन्देन्पर'पञ्चप'दर्नेन्'य'" ळें है। यर बरावात हैं वाय राजे पति पत्र याया देता वसू ग्राहेन् दर्नेन'यां यें बाधेव'वेन'। न्मे कते व नव्यामि भे कन गुन् से ना हे स पत्रेश्वरः स्तापरः वर्षरः स्वायं वर्ष द्यो वर्षे वर्षे तर्म वर्षः वर्षः वर्षः कुरादि-तान्नान्ति के कि वार्या प्राप्त का स्थान राश्चिष्ठं गराहेन्यायावीन् गरान्ना इंग्राखन्न् न्याखन् छन बातव् इवायाक्षेत्रहे न। क्रम् नेयाबेत् चातिरत्र्मे मा चर्च यावाह्य न्त्र पर्वन्द्रम वीबाग्वन्यापकृषा पर्वश्चेत् बाह्न् श्चीः ग्वेत् अधुवा संदे बर्ळर पहें सप्पन्र रे स्पन्य वर्षा प्राचकु प्राप्त वर्षा की बर में ब्रायन प्राचित वर्षा कते'अर्गे'वयायह्य'परर्'्रेशयत्य तर्'दे'र्घे क'तर्देते'से'र्वर् क्षेत्रप्रविद्राप्त्रिक्षरा पर्वेद्राप्ति ।

इंग्रदार्थ्यं इंग्रदा विषाधित प्रसा ने त्या इंग्रहेन स्वात्य का की त्र इंग्रहेन स्वात्य का की त्र इंग्रहेन स्वात्य का की त्र का की त्र की त्

षति'पर'वेर'। वे किन्'क्के'पर'वेर'र्खेनब'में र्'प'सबर'वेरबाबे'र्वेदे' पर नेर निर निर नहर वहाल 'र्न छहा नेर पर रु नहार पेरा के स भु'विनवासन् न्दी देव चीवा चु'येन हु'न चुर ववा 1949 वर्ग गर्न '''' নপ্রব'ঘ'ন্দ'। 1955 মৃত্যেল্যসূত্র নাত্র ব্যা ই'কুম'ন্' 1925 विरञ्ज र द शिरी भी ने र पश्चर यं प्रा | श्वर यं यं श्वर यं विते **र्ज्ञप**्रम् केन् व्यति वित्रम् विष्य कर्षे क्रिया वित्रम् ऍॱबिॱऍकान्ने चेरः त'विषाचीकारीवाकीकी वीरा महुर वका हु व'रुवार्जन' '''' 1951 सॅर्र्डि सुन् सुन् छे नेर प विग्र्र アングロスグロッター म्चाप्यययात्रुपान्द्रेस्रिक्षित्रिप्रिक्षेत्रेस्रिक्षेत्रेस्य विस्तित्रा हुर जॅर हो रर्पर प्राच्युवाया तरी वे अधिना प्राचे अहे प्रवे व धिव ''''' **बि**रःळेंग् नेष्वयार्ने न् संभित्र प्रयात्रम् पूर्णायाः ठवः विगाने न्। 1959

न्यात्मार्थरः अस्ति विच।

न्यात्मार्मार्थरः अस्ति विच।

न्यात्मार्मार्मार्थरः अस्ति विच।

न्यात्मार्यात्मार्थरः अस्ति विच।

न्यात्मार

#### गशुअ'ना

पान्ना सन्पानुगम्भवयान्द्रम्याय। यहे तुनान्नान्द्रम्या हॅद'श्नेनअपुरत्या। *``` हरात स*न्'श्नेनअपुर्न्यान्यस्थान्'रीन'। पर्वे अशामकार्थे प्र.क. पर्वे.ट. पर्य ब.ट.। व्ह ब.टा.क. पर्धे, क्षेये.लूट. पद्य वर र्व सुव हु अर्क्षे व वर्राधिव । या वर्ष व वर्ष है । वर्र व वर्ष वहु अर्थ प्र रे। इंशिंखन्यक्रीयं व्यादिन हेन् रेनायां में ह्या नरात्रे त्यान न् होनायां नरा तहेना हे बाक्की सन् वा श्रीयान्ता की बसरा की प्रवास का ही ता का नि ह्र राया प्रा के द्वेष वा क्र के के के कि के ता वा के के कि का मात नात विमानी शाह्य महत्राय निन्धार नामा साम नामा साम हिना महिना र्रा चुर विश्वश्री श्रिम हेर्य र्राय श्रिश्य हेर्य श्रिम हेर्य श्रिम हेर् पान्न महाकार्या । भेगवा महाकारी अवसानु न कार्य सार हो त्या तत् मा पा न्राध्याध्याद्र्र्यायार् वाह्यान्राधिन्याके म्रापात्रे न ५८। नेवसारहेग हे व्यो छात्र स्थान स्थान निया हु पारि प्राचीत स्थान प। अवर रूपा पश्चित्र व्याप्त व्यापा विष्य के विषय के व ह्र्याष्ट्र प्रत्यात्रेगाधेव।

यगुर्यदेश्चेन् श्वरित्त्रिः वित्तं व

प्या दं पह सिरे ह्वा परेत्। क्षेण प्रभूत हे पर्वत व्या परित स्वा प्र

मतियाग्ववश्येव्याकुत्र्व्।।

> ছ্রাথীবা শ্বন দেন বিধান স্বর্থন বা নিন্তীবা দু বিজ্ঞান্ত্র বা নিন্তী বা নিজ নিন্তা বা নিজ নিন্তা মিন্তীবা দু বিজ্ঞান্ত্র বা নিন্তা বা ন

## ন্শ্ন'ক্ৰণ

| <b>或英人</b> ,立美人  | (1)   |
|------------------|---|
| 表如日本到"帝"         | 漢기 ·······(3)   |
| 8ব'র্মনাগ্রীন্'ন | 'त्रेष्'हेष्'चर्ये'अर्द्र'य।  |
| 55.到             | রীন'শ্ৰি'ন্ন'স্ত্র'নপুষ্ম'না · · · · · · ( 8 )                          |
| শ্ৰীপ্ৰামা       | <b>દ્વ</b> ના તથના શ્રુપ્ત ને ક્રમ્ય લુવા શ્રુક્તા શુના તમા ક્રમા સ્થાપ |
|                  | মন্ত্ৰীশ্যা(21)   |
| नशुक्षाय।        | ন্মু'র্ম'র্চ্চন'মত্ন'মা   |
| ब्रह्मा शुर्मित  | r要でれるというという。  |
| 55.到             | ন্ত্র'ঝ'ন্ন'ল্প'অন্থ'ন্ · · · · · · · (50)                              |
| শ্রীশাঘা         | क्र्वं च्चेत्रं व्यं खुर्यं क्चेत्रं च्या(59)                           |
| শাস্ত্র শা       | ন্মন্দ্ৰশ্নৰ্থখন্গ্ৰ্ম্ব্ৰা · · · · · · (93)                            |
| মল্লি'মা         | ন্ত্রনাই নাম টাপ্ত 'ব্য নেপ্ত নম'না · · · · · · · ( 9 9 )               |
| 린'기              | न्द्रसुल'तुःचेनब'च।(116)  |
| ह्याना           | ম্রুব'ম'ম'মী'ব্র'মন্থাবা · · · · · · (131)                              |
| মন্তব্ৰ'না       | बेन्न्'वेन्'र्'त'य'पञ्चवन्य'य  · · · · · · (139)                        |
| 지정기'지            | ময়ৢবৢ৻য়ৢ৻৸ৢঢ়ৢ৻য়য়য়৽ড়ঀৢ৻য়৽য়ঀৢ৻য়ঢ়য়ৢয়৽য়৽ঢ়৽ঢ়৾৽               |
|                  | ছুম'য্ম'ষ্ট্র'ম'অগ্রম'দব্রঅ'শ্রী'শ্লীম  · · · · · (187)                 |
|                  | রী'না'মীর'ষ্ট্রীম'মার্ল'নের্লমাম'ন্র'ণা'মন্ ন'ন্নি'                     |
|                  | র্মন' অব্য'ষ্টা'ঝ'বীন' দ্বিব'ট্টা'মীনা ••••••(193)                      |
|                  | শৃষ্টি'ঝ'র্ট্রব্'ঘ'ক্ত'নর্ন'গ্রী'র্দ্ধব্য · · · · · · (203)             |

| শৃদ্ধান্তব্যুক্ত শুন্নিকা • • • • • • • • • • • • • • • • • • •   |
|---|
| ঈন্দ্র্প্রপ্রক্রিক্সিন্ ************************************  |
| ব্যাবাই সুঁব প্রাব্য  |
| ম্ব্র-বের-ব্রথ-ব্যব্দেইন-বী-র্ম্ন(250)  |
| অল'র্জাবাদ্রাদ্রাদ্রাদ্রাদ্রাদ্রাদ্রাদ্রাদ্রাদ্র  |
| gনান্দ্র-প্রবি'ন্তাশ্বর্জন্'নবি'র্মুন্। ······(265)   |
| য়ৢঀ৽ৼৢয়ৢৼৢঀৢঢ়৽য়ৢয়৽য়ৢয়য়য়ৢয়৽য়৽য়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়   |
| 新木·씨씨·되미·쮨·푹·훋·본 드·레·新木·怒·원·씨 ··· (270)   |
| ন্য কুন'থ'ন্ন' ব্লুল' নবি'র্মুন  ·····(275)   |
| 寒'덩'조지'다'두도'죄투씨'다려'취지(282)  |
| শ্বাপ্তান স্থান ক্ষ্মিশ ক্সিশ |
| हुर्य.त.विवा.व.र.इय.वी.चंड्र.चंड्र.सूर्य(291)   |
| ন্থম'ন্ন'মন্ত্র'ন্ন'মন্মন্মন্(302)  |
| র'নর'ক্র'ন'ন্দ'ঝ্রেশন্বী'র্ম্না(314)  |
| R집'對되'국지'다' '독도'전투자'다려' 滿국  ·····(320)  |
| スペマ·高·マ・汽子・砂茶ス · · · · · · · · (322)  |
| <b>ドマ、芝 に、                                  </b>  |
| <b>५अ.८१.क्वर्यस्थित्रं स्ट.अह्याम्यतःभूरा</b> (363)  |
| ব্দের-দুর-বেশবান্-বিল্পান্ন-স্থান্ (365)  |
| スペニース・おってことの「てこれの・ころ・茶ス」・・・(369)  |
| ब्दं चेंब्र्ड्यं च्ह्रायतुषायते क्षेत्र(376)  |
| 5句, 光·美·景·景之, 弘·紫文, 思·蒙·勾   |

| শ্বিব'র্স্বর'রঝ'ঘ'ন্ন'অহপ'ঘরি'র্ম্না ••••• (399)                             |
|--|
| ম্বাক্তন'অ'ন্ন'বান্ধানানী'র্স্পৃন্   |
| 🕽 'ন' নবা'ব' 'ন্ন' অহ্ম' ঘটি 'স্গ্ৰা' · · · · · · · · (430)                  |
| मि'प्रियं कुल'त्र्यं सङ्ग्रह्न् हिन्द्रं देन् स्ययं श्चम्यः नत्रः            |
| ষ্ট্রন'স্ত্রঝ'দনি'র্মন্ ·····(442)   |
| <b>ଌ</b> ୖ୵୵୷ଌୖୣୄ୵ଢ଼୶ୢୖ୕ୣ୕୵ୄୡ୶୳୕ୣ୵୵ୢୣଡ଼୶୷୶ୣ୕ୄ୕୕୕ୠୖ୵୶                         |
| 51(451)  |
| スペン、デ·含·フロニ・智可・奇·茶木  (521)   |
| <b>কৃ</b> ৱ'ব'ঙ্কি'ব্দ'ঝ্লথ'নব'র্মিশ্য ·····(524)                            |
| ञ्चन'न्न'ने'ङ्ग'न'हे'तड्डल'न्ट'डुल'यन'न्ज्ञेन'यते'                           |
| 新六(531)  |
| <b>ス</b> か、夏 、   |
| য় |
| ষ'ন্ট'র্ন'্টার্সান  · · · · · · · (565)                                      |
| শৃখন্'ব্ৰীস্থা(578)  |
| <b>ভ</b> ন'ব্যুন'ট্টাঙ্গ্ননা · · · · · · · · (597)                           |
| মুব্'র্মুর'ব্র্ব্র'র্মুব্ ·····(612)   |
| ন্য'ন'প্রম'ন্ব'ন্ন',শ্বন'  |
| শিস্কৃত্র'ন্বী'নেনুত্র'খ্রীমা ·····(659)                                     |
| নই'স্থৰ'খ্ৰীৰ্মা ·····(667)  |
| ন সুন ন্ত্র ব্র নের সুনা(672)  |
| [Ŧ'ĸĔ゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙゚゙゙゙゙゙゙゚゚゙ <del>ヽ゚</del> ゙゙゙゙゙゙゙゙゙゙                   |
|  |

|                 | <b>屬內'內內'對'新不  ·················(678)</b>  |
|-----------------|--|
|                 | <b>ব</b> র-স্(694)   |
|                 | দ্বন্দ্ৰস্তুন্দ্ৰন্থ্ৰস্থা ক্ৰিম্বা  |
|                 | म्भेनःहर्त्रं त्रांत्रावायायायायायायायायायायायायायायायायायाया  |
|                 | রক্টা শুন্' বিশাবা' ক্রনাবা'বারি' শ্লীনা · · · · · · · (712)   |
|                 | <b>55</b> 年 選 名 著 不   ・・・・・・・・・・・・・・(718)  |
|                 | ন্ত্র'শ্বিন্ত্র'ব্যব্রব'র্মিন্ ·····(724)  |
|                 | বলস্ত্র-'বৃত্তন'নপ্তব্'টাস্ক্রব্। · · · · · · (731)  |
|                 | ষ্বন্দ্ৰবি'শ্বন্ ·····(753)  |
|                 | म्बेद्र'ह्र्य'व्यायाहेते' द्वयायायुः नृतः श्रीतः श्रीये 'ज् । ग्रीतः   |
|                 | ক্তব'অ'বগাঁব্'ঘটাস্মিনা ·····(760)   |
|                 | मुद्रत्व म् प्रति दे अवस्य अवस्य अवस्य मिष्ट्रिय ।   |
|                 | শৃত্যদ্ব সুন্ · · · · · · · (768)  |
|                 | 왕'훋'제따다'축경'취지(773)   |
|                 | ন্ন্ত্ৰ'ন্ত্ত্ৰ্ব'ষ্ক্ৰন্ ·····(779)   |
|                 | ন্ম-প্র-নেইন্ব-ট্রিস্ন্ন (790)   |
|                 | ব্রিক্টান্ত অন্ত্রিকিন্সানা · · · · · · · · (793)  |
|                 | মন্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত্ৰ-'মান্ত |
|                 | ন্ন্   |
|                 | तुःश्चनः इवनःश्चः नः नक्केन्यः मन्नन्यः सुदे हः तक्षवः   |
|                 | নঙ্ক্'ন্নিস্ক্রা(৪০2)  |
| <u> ব্</u> যুখা | न्त्रन्यास्य क्रियान् विन्यास्य विवास  |
|                 |  |

,

## 到港气气管气

र्स्याञ्जिते स् तथाया रेगा स्ति हेन गर्ने न प्रता ही न ब'श्रेंश्रु'द्र। ब्'ग्रुप्र'ञ्जा सर्पाच दि'केव' अर्छव' अर्षाव'वे' यह ५ 'छदे' ह्व' ग्रुट्व' स्था'" त्रीन्'स्यायहोन्'रहेते'रून्'त्रेन्'अस्त्यायान्यतात्रार्या वेषाद्वते प्रस्थानु बाद्य पर्दे प्रस्ते प्रस्ति वर्ष र तथा कुर् प्रतर्थ हु """" ण्डरात्रा क्रीयानस्याच ते र्ज्ञन् एवन् गुवाकी स्थान क्रान्य क्रान्य क्री स्वान स्वान ए'अन्त्न्न'र्न'न्न्त्र्रा । त्या अन्ति न न न मिला झें के के न ने **ह्ये बंदार प्रक्रम्य द्वार देर प्रक्राय करा प्रक्रम्य देन व्याप्त प्रक्रम्य द्वार प्रक्रम** त्युर्ध्वव्यत्व्यक्षंत्रं ताव्यक्षं इर्ग्युव्यक्षं विराष्ट्रव्या यने पर्रात्र नर्वशह अरामन्द्रयान्त्रात्रात्र्यान्त्रात्रात्र्त्रात्र्यात्र्यात्र् हुन्। तु स्वाकें तरी राष्ट्रियायर्न् वापत्यक्यतर्भे परि न रायायर्गे वाकिता विश्वाप्तवार्ष्ट्रियमा मञ्ज्ञाय तर्पाने तात्तर्। । विन् हिन् स्वाया हेते स् म्हेर्त्रवेष्त्रवर्ष्त्र्र्त्वाच क्ष्यात्र्वर्ष्त्रवाये वेशक्ष्यावर् र्मन्यहराष्ट्रवर्गन्न् मुँ हैन्यर्गन्न् ज्व स्वाकन् न्तुन् न्तुवर स्रम्य गुद्राचयवापय। अिन्ध्राक्चे त्या इत्युक्षय इत्या दिन्या पर न्त्राक्षं क्रन्ता त्रुन् क्रेन् अन्यात् स्रिते न्त्राया म्निना न्त्रुन् नहुन दं अत्यत्रतः याँत् 'श्रुवाराञ्चला द्वीतः तत्त्वारा दुन् वातः प्रश्नतः ।

क्षावद्य त्रे व्यायव्य प्रायव्य व्यायव्य व्यव्य व्यायव्य व्यव्य व्यायव्य व्यायव्य व्यायव्य व्यायव्य व्यायव्य व्यायव्य यय्यव्य व्यायव्ययः व्यायव्ययः व्यायव्ययः व्यायव्ययः व्यायव्ययः व्यायव्ययः व्यायव्ययः व्यव्ययः व्यव्ययः ययः ययः ययव्ययः ययः ययः ययः ययः

## क्य'वर'ग्री'के'नईंत्।

ने'यन'र्वेन्'ग्रक्षं उद्'क्केंब्रेन्'र्देर'न्न'र्वेर के'देवहाक्षेष्ठिः'''" वर्षि 'नैकाकुष्ट्रे' कंटका यान्ता यक्त हो वाकु यने पाता यह क्रें वापा अन् रहे ना"" र्स्यायम् बेन् प्रति लेव स्वापा नम् स्वापा यन् संयाभु तु ते नर्या न् म्बर्धारु द्वाति वार्षात्र प्रवास वार्षात्र प्रवास वार्षात्र प्रवास के वार्षेत्र प्रवास वार्य वार्षेत्र प्रवास वार्षेत्र प्रवास वार्षेत्र प्रवास वार्षेत्र प्रवास वार्य वार्षेत्र प्रवास वार्षेत्र प्रवास वार्य खुबार्ज्ञिन्।नार्हेन्द्रात्मावव्यान्दर्न्द्रात्माव्यां खुन्वत् खंद्राय्याच्येत्।पदिन्त्।" गर्डव ने यान प्रति हैन स्वाप। पर नु न्वा यान यह वा सु प्रति न बिनःवतात्रवाञ्चनःपरिः यतुन् द्वेष्- येव्ययेः नेः विन् 'तृ खुन्वा यक्षवेव''''**'''** इत्यातपुत्रकुर्तात्मवार्षेत्राने विवयत्त् क्षेत्रात्रे श्रु त्युत्रात् षद्र प्रतिवेग मुक्य वर्षण मेश हेश्य हुग ने श्री सास्व स्वया तहेग हेव" क्रीं सूर वेद प्रदासे वें बेर्पा मारा वा सामित है वा से प्राप्त धान्य वापरत्यें यह साश्चा चुन वसाय की ने गया वेता वेन ने गया पर्दे वा पाया व्ययाहें गरा में ए तियेता दु का है। के साता न ए छ व रहें द रा । मॅन्यातार्वेशपुराववराष्ट्रेर्पाशस्य वराहेरियात्रात्रवराते कुन्याः ब्रह्मत्याक्षित् व्यव्याप्तेन् प्रति हैक्द्वन्य है ह ग्रायक्ष्य हिन्द् """

चिरः ख्राः अस्वः सृष्ठ् व स नक्षेत् कु के लेरा श्वा स्वा र वा स्वा ह सा । । । । । **र**ग्र-की: नग्' सग्राकेन्' सत्ते कें नें इक्षराकी इ' नर' पर' प्राप्त मुक्त कें म संव् क्षुन् पार्च वा ग्री वा क्षून पार गुर व वा न्न पारि श्रु पेंन पार्थ विन व है " रव्रंद्रः वित्रहेन्यायम् स्त्राभ्या हुत्र वुष्या न्यारः स्वयाया कृति त्या क्री माव द 'में ब' घरायो भेरा' या तर क्रुंद 'क्री नेपा' या इयरा क्री सासू ता **र्**षत्रतितिये वेशक्षेपनेपानक्षेत्रकरात्रा क्षाप्ताति विकासी **ह**रा देवयाचे ते प्रस्ति यो अधिव पड़े . जा श्रूप या तु . जूब , ये अप मास्यायात्र्यास्यायात्रास्यात्र्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्याः मे गर् त्रम् गुन् श्रे के रारा रूर दाय दिर गुन श्रे तर न जुन य सेन श्रे के मा सुरवर्ष्या व्याचित्रं हे हे नेग्रादि (सवाया क्रुर पु पञ्चनवा नेर विवया र्ट हैं गुरुप अवर छैत प। めらってれるが、てて、おおれるあれるます。 ं हिरः अवाधित प्राप्त वादिना हे वार्षे नाया पर्दे वार्षे पा पर्दा है वार्षे न् गतःपर्यात्तनः असेनः अत्राष्ट्रतः अर्थाय हतः श्रीन् गतः नाश्ची गर्तुं गः तुः "" र्षेत्र' पकार श्रम् स्ति र गरापारा राजे गा से स गर्से से गा श्रम द्रारा स्तार र र र र र र र र र र र र र र र र र चविते'बतुन्'रा'स् रग्याम्बया'ठन्'रम्यरम्त्रात्राचयान्तु'बते'स्रिरः" नेति छैर ग्राम राज्य में भे प्रस्ता है स्पन् सुन से प्रस् ピスプロ **र्वेट्यार्वेव्यवर्द्यार्ट्ट्येय्यार्थेव्याय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्यार्थेय्या** बूर्यायां चवा वास्त्र विकास न्यायां हो पा हे बार हे ने की क्रें र वा वे वा वा वा

व्र-दिन्'रा'तेष्रस्'ता श्रुपाम् हेर ग्रुस् पाष्ठि सूर श्रीन् ग्रुप् न देश री NI म्बर्याक्त्र्राच्या बहुन्यहेत्र्न्यान्यम् ह्वित् यस् **तन्त्रां स्युर्धितेयया उवायायर विन्यान्य विवायाया विन्या** क्रयान्जन् जी तर्ने रातेष्ठ न् नामा नग नी में तर्षेष्ठ न् वारा नश्री त्वाँ गुन् की श्रे वेश पतुन् दे के सपकराय दे दर्वा पान की वर्ष न """"" न्दराशुः क्षेत्रात्रे क्षेत्रं ते क्षेत्रं ते र त्व नहाय। चरा विते त्या क्षेत्रं त्या क्षेत्रं पर्इदार श्रुवाय केवा द्रायुरा पहार राष्ट्र राष्ट्र स्तारा यत्य वा सति गुरा कु वा गामा মীরমান্মেরেরমানী্প্রণাণী্শর আস্তা্রুমানিকার্প্রাপ্রমান্তন্তন্দ্র ज्ञान। वृत्रवाह्यं र्वेन निर्मान केन के केन निर्माण केन के किन निर्माण का ८४ क्षेत्रेन्द्र न बायस्य प्रत्न क्षेत्र क्षेत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य बेन्'सत्ते'ग्रम्स् नेते'र्ज्ञून्'ब्'सेन्'बे'न् ग्रन्सें'स्नाबेन्'नु'दर्खें वा मन्'नरकी हैन'ने'तहें व'तायरत'यहें या वाही 'तहन' वाहिते' **गर्ने न्'रा'''** हुन् रोबराग्री न्यन न्यापदेश्य संत्राप्तु र्वेद प्रवाद बाब्रावत्या सु दूर '''' <u> बैन'प'न्न'त्र्जें'त्रक्षप'नृत्य'न्न'त्र्त्र्ण्यते'क्व</u>ेन्'त्रसङ्गेन'केन' । **ञ्च'लक** बे'तनरवित्रं कुरत्वुन्यंन्दरत्न्न्त्त्र्रः न्युरः न्युरः न्युरः न्यायः सन्यान्यः ने न्यान्यः न ૡૺૹૺૹ૽ૺૺૢૼ૾ૡૹૢૡૻઌ૾ૹ૽૽૽ૢ૽ૼ<u>ઌ૾૽ઌૹૻઌૼઌૺ</u>૾ૡૢૺ૱૱૽૽ૢ૽ૺૡૢ૾ૺ૾ૡ૾૽ઌૢૼૹૢૻૡ૾ૢ૾૾ઌૼૺૺૹૢ૾ૡૻ૽૾૽ૡૹ૽૽૽ૻ૿ पान्न्ना पाने भुक्षि क्षेत्र क ৾য়ৼ৻য়য়ৼ৻৾৾ৡঀ৾৻য়ড়ৼ৾<u>৻</u>ৼ৾৻ৡড়৻ঢ়ৢ৻ড়৻৸৾ৡ৾৻ঀৢ৾৾৻ৼ৻য়ঢ়৾৻য়৻৴য়৻ৼ৾ৼঢ়ৼ৾৻৻৻৻৻৻ बाप्तरत्त्रें श्चेन्प्तिन्दुर्द्रित्रुं विस्नेद्र्या विस्निवारी प्रम्या विस्ति

वयार'वेर'पदेग्नेर'र्र'य्व'यबक्ष'यञ्चरवे'यज्ञर'वेत 四人に मुकायववाने पातायञ्चनवायवायविवायवायवाविव्याया न्द्रश्रित्वयापाम्बर्गरुन्द्रिन् केन्द्रिन् ग्रायाक्तिन्य सहित्रिन् सा षे ने राष्ट्रिश्चर हुँ र गुर्रात्य पृत्र परि पर्र त न र शुक् श्चित्रपदि क्रिक् त्रिव्यर्ग्यहर्प्यते ब्रुव्या त्रुत्य है वर्षे रर ब्रुव्य वेष्य हे व क्रीन्द्राक्ष्र्वादा गुवान् क्रान्य विदाने विवादा कर् ज्या क्ष्रित दुः विवादा दि स न्वत्रेययातार्यन्यहे भूग्युर्शे हेर्या मन्दर्ध्यय क्ष विद् **७८**'श्रांभेर'अब्वेब'केर'मेवाग्चः अचतः ५ग' यनग'येन' ५'अस्व । शुअः ५'''''' गुन्द्रत्याययायिकं व्यायम् है 'न्रेशर्येते स्थानवया उन्'वन रेग्'रा'तेवर्याशु'विद्वेद'य'तेवर्या गर्नेन्'व्यार्थेन्'ग्रायाक्षे वेन्'हूँन्'राराह्यं मग्रॅन्'रेन्'ने'र्मग्राबेन्'नु'न्रानरे'र्न्'स्रामु ग्रुअ'र्म्याकेन्'नु''' रन्ज्याचा के केन्या में न्या के ना केन्या न्या प्राप्त ना सहस्राति यम्या मुकाकु विमायम्यान् मृहं प्रस्तुया मुकाक्षान् रहेगाया तुया नुका मिना ह्या हिर् नीय हर्पाया पहें ब्र्या विर्दे प्रा नीयर या मुख्य र स्टिर ख्रा रेवरान्यतः इवराईसात कन्यान्न वर्षाने देवेन प्रते मे निर्मा कुरायकाः यान्यां कुषाकुषिन् सम्मारान्यां मुन्दिन्त्या पर्मार्थन्या देवा सहया की रोयरा ठव् इयराया नर-रर-नो स्नया पर्-र यहव् परि सुर-पह्न व्याही र्रात्रवयाप्येक्ष्य। न्ये तहेग हेन शिक्ष्म पान्य पक्ष न नेन あいてんてずたかけてていれているかられるというかっているとういいい बर्ने र ब्रं के गुडेग न्र खुका गुडेग था हु प्र प्र वि से ब्राह्म र पर्गा 지'황|

# हुन् वॅन होन् भार है वा हे न भारे वह न भा

## न्नम् ब्रेन्न्विन्नम् भाषा

क्ष्यांत्रं वित्राक्ष्यं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं

न्ते के के अप्तान्य वित्तान्त वितान्त वितान विता

कुर्यापतार में ते श्रेराधेव ने रामते स्वापित पुरित विराव वर्षा सुप्त गता <u> দিন ট্রিম'ট্রাল্ফ ন্ন মাণারী রমধাতন্ ইব্'র্ম'স্ক দু'র একা সূত্র ঘরিং</u> ब्रॅन् ह्रे रहे व् रॉ विया विव न र र है व र या। जून ह्रे र दे ते शे मयरा उन् <u> र र श्रे मॅं श कुँ द वि र द श प र र र रे द में के रे जु द श्रे श प जु द प ।</u> मन्द्रित्रम्भुवास्यापारिवास्त्रम्भू ने म्ह्रास्य स्टर्म्य स्वर्षाः वि क्षेञ्च प्रम् ग्रापित्र त्र्ध्यान्म स्वाप्यक्षिण्यत्र हेर हिर द्वार हिर स्व <u> ८तृग्'रा'सरा ने' इसराधीय मान्य सम्मानसम</u> 尺万可"以利 कं में दिन्दा यथ। दिन्दा मारे पदा के विदान में निया रेव, यं के ते । वर्षे का तर्दे र प्रव अन् । की ने वा प्रवा निर्मा की ने वर्ष प्रवित । द्या वर्ष्णिः ह्यानु प्रस्तान् प्रस्तान् वीपक्षेत्रप्रम् प्रस्तान हिन्त है स न्'ल्ला क्रमान्द्रान्त्रा क्रमान्द्रा विकासन् प'गुरु'है। महाकं में नम्यानक वाल विम्ना मन्यान महाने में निर्मा के वाल कर्म मरत्र्विष्वस्थित्यस्य विवासम्बाद्धाः स्थान्त्रः विवासम् **ब्रिन्परा जॅन् ह्रिन्देर-द्वायन्देन देन में केरे हि सून वर्मे अपन्य परि** नर्डवाय्व्र'तन्काकी नर्क्कुन 'पा खराभेन 'ग्रीका' नर्झे बकापा नका हिन्द। गुर्-छेबान्नर्पर्र्त्रसम्बद्धार्पतिमात्रिरःकुःबळ्लेन्नरिर्न्त्रवाद्धर्यः ष्ट्रद'रा'अर्धेर'यश्र'द्वादर्प'द्द्र'यदे'यहां अहे प्रक्रुबादर्शें पाक्षुर् विवा'''' FO

ने न रा झ ने आ क ने कंटी करा ल ने रा ने विया कें न किया करा कर का

मुद्यायान्य र प्राप्त्र सिंदा में या लेट र र्वेट प्राप्त न्य द प्राप्त में प्राप्त में व ইন্ট্র-ব্রাথন্য ভ্রম্ট্র ব্নথ ভ্রন্ট্র-ভ্রম্বর্ণ বর্ণ। ত্রিন্ট্র্র্ব विश्वत्राश्चित्रायानुःह्रवावृत्वित्।यस्न्। विश्वत्रह्रवापान्तः चक्रायतेर्द्र-व्यक्त्र्त्विषायत्ष्याः अव्यक्तिः तेर्पत्वष्याः तत्र्वाराः स्वाःः चन्न'त्र'चडे'न्य'न्बॅन्त्र'र्मेत्र'क्ष्य'प'डेन्'। इस'न्डन्'रा'र्घयस ড়ঀৢ৽য়ৼয়৾য়ৢয়৽ঀৼ৾ঀৣয়৾ড়য়৾য়য়য়ঢ়য়য়৽ঀয়৽য়ৢয়ৢ৽য়ৢঢ়ঢ়৽য়য়য়৽ঀৼ৽৽৽৽৽৽ त्वित्रार्ययायार्न्प्यान्त्र्याचर्वित्र्याय्तित्तित्त्र्वायायायाय्या न्म नित्र द्राप्ति। बहन क्रिने से द्रार्थ सर्पा न्यु के क्रिक म्युत् वुर् प्रश्राद्विर स्वर्गं उत् रवहन । मृत्त् प्रत्य वुर द्तु म ■ 目の「ではとかけて、其に、子、口中子、れ、子、まなか、いないのと、ななり、で、ふと、これ लामकायिद्वावमातक्ष्रांचाक्ष्र्वातुम्या मुक्ताविमात्र्याया त्रिं इवराशिव दावसामा देवा वादी मिद्र मेने इवरामा वादि गुर् राष्ट्रभगवार्ष्यन्त्व। यन्वन्यवस्यन्तित्वत्वर्ष्यन्तिग्यन्तर त्तुगानेता अन्यायक्षायता मून्योने इवक्किलंब निवादी भ्रे.प.बर.प्र-क्ष्वंश्वयायवात्रश्चेत्रायुक्षत्रायायव्यक्षरः नते.तह्याः """ कीतान्त्रादाक्षेत्रं ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् ग्रेन् शेष्वर्यस्तरावेष्वस्यस्तुष्वेत। सन्द्रश्यद्ते। देव्देषु तुत्रे'क्सॉ**ट्**सक्र**रके'प**प्पन्'व्यानेयरा'कव्'ग्री'न्व्नित्'यात्यावरान्त्रः ते'तु'" <u>ष्ट्र</u>पःइवरावदायसञ्चः ग्रुअप्यः इत्रव्युयः नृतः र्ष्ट्रेन्यः यः पश्चिन् ने त्याः ""

क्षंप्रन्थ्यत् प्रश्चित्। मुडेग्'द्र'यद्द्रंन् ग्र'त्याद्रग्'वेद'ग्र' हुन्वंभूनंपर्पर्पत्वाचेर्यायय। न्याद्धनंपतिह्वयाय। हेप्वह्वा मल् ग्रान्ग्रिंद्वप्रविष्यात्रे। यूनः स्रान्दिरः द्रवराशी वेरः क्षण्यायन्तर्भारत्वर्भारत्वर्भारत्व हेन्द्वर्श्वेत्रव्यायरावराया विगायम् प्रतिः द्वानुः केशागुरः लुः द्वां शङ्गवादा ग्रुरः प्रतिः छ। नैसारसाद्धर' प्रति खना न साम हो। कर कर हिना हिना सर् प्रति द **कं** र्रेशमें परति म कं र्रेशमें परति मुनेरपिर पर दिया में मवतायन्यं तात्ववयात्रं न्यस्य विन्यं विन्यं विन्यं विवास नुस्राभित्रम् विश्वे रास्त्राके प्रायुक्त प्रित्त स्रा अवसास्या की हैसा शुद्धन्यत्र्रेष्यप्रायम्। शुक्कव्यम्दरत्र्वेतेः ह्वन्यन्त्र्र्वार्यः न्युर्वेत् माभगक्षाव्याप्तराष्ट्र्यं वर्ष्यं स्टेश्न्री देपन्या गुना मुन्या हे पर्वन न्न्यहत्यन्त्र्वान्यस्य स्वाधिक्यस्य विष्यान्त्रम् इश्वेष्ट्रम् इत्रियं क्ष्येप्रमायः हिन्द्रम् वित्र बर्देव'न् गतःत्यार्देग्'बेब्'गन्'तुन्'व्रात्वग्रां सेर्न्नात्। चलि बारा के कारा मित्रा प्राप्त च के बात इस की में देश में के का पहुंची हा में निर्देश द्वेन् महिन्दर्भे क्रून्द्र स्थित अन् । श्विर हे नई न राम का करा केत मराभु गहुर हु व वागु ब ह् र् पा तरा धा गु बार्च । 四万'ロス'万'章 मिन् के के सारा ते श्वर में लेंग् भू वा वन हिन् तर में न पा ने सार राजा न ना

रेव'र्', गुन्धी'यर् रे'क्वबार'यार्ज्यंयते र्नेव'र्'हे'यर्व्व' ग्रीह्यायर **त्रा**क्षेप्यन् द्रात्तु वृष्यक्ष केवागुन् लु प्रमेवाप् में नवा व्या व्रायायका गुद्यास्त्रवास्त्राच्याचेत्रपादेत्। क्षेत्रवाद्यान्यस्त्राचाः क्षेत्रपितः स्त्राचारेत्रपादे न् रीतः वसार निया केंद्र र केवा खिवा या द्वा की रूप ता दाववा या या यन्य स्या न्मार्मिन्य्यायात्रेष्यार्मात्रेष्वयात्रेष्वयात्रेष्वयात्रेष्या कवाक्रीक् खरावादेवायान् ग्रास्थित्र वर्षात्रात्याः स्राम्या पतिः इवा बर ग्रुनः पार्भेन् परारति गृष्या वृत्रः पुरिसे वेर। गृर्हेग् वृ २.७ 'त'र्यं शु'ळॅन्'हेर। पडिग'न्'रे'ह प्रश्निश्चित्'हेन्'इयरा'ग्रीकान् का **हे दिस् बेस्परी छै। गुवार या**ख्या सार्याया । यह अपि । यह या गडिगानारे देन असे र उन् शे हिंदा वन पान गुन हैं परा र र रे इयल'गुर्-पर्रित'च' नहच'च' ५ ते न विष् व' दे दे स्थ हर लु च तु केन्द्रम्यार्थेय। रन्नेद्रम्यायानेतित्रम्भन्तान्नित्रम् राधिन ने र व वा तहता धारापा पति व विष्या है। हे वा र वा छन पा पान दिन नवायाम्याचित्रयम्या वायरायाज्ञायस्यानुवान्तर रशक्राप्तिहण्यात्रेंद्रीं यक्तियम् दे इस त्त्ग'है। कुर्मिंग्ररतिग्नीकार्मित्राव्य। द्वारात्याहेशच्याकीररात ८इ.८५.के.च्रेच्येच.६.इ.ध्यान४.५४५वंग 됨'저주'동도'동'취속'다**자** त्रिर्म्यू प्राचु श्रूप्व अप्र प्राच विकास द्वारा ग्रुप्त श्रूप्त विकार ।

मिस्यातत्वा भूत्। नेरारशक्ता प्रशहे पर्ववायविवायके । हे नर्दुव की दुन नु सुरा में नर्दु गया मता में बुन ने पर ने मन देश'ग्रॅस'प'प,प,प,पं,प्,। ब्रु'अ'हे'पर्दुद्र'भेद'र्ये'ळे'ख्र-र,८८९'प्रदेश्रह्य कुसाइवराग्रीयागुर्व्य हिन्यायकुष केरायार्थेष्य यापि इसायराम्याणा मलकानीकाकी द्वारापाकी वाका उन् नी में न'न्' महारका पकार है गा है न'न' """ यम्या कुरा कुर्या प्रमान् रापा रापा या विमा है से हु रे सरा या सार्य या हें म्च अ मुत में त में त अ द्या में श्री का मुत्र प्राप्त का मुत्र का मुत्र का मुत्र का मुत्र का मुत्र का मुत्र ५'ॡ'ॠत'ॡन'के'न्त्र'इंड्र स्राह्यं क्रियंकेत्रित्रं केत्रात्रं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं द। न्दें पर्दर देव में के। हिन् हिन हिन प्राप्त पन्न र में माइवस में मामक्रीन्यन्तः। अदिन्यायतिः स्रातात्वान्त्रान्त्रान्त्रात्वरा ह्या शु'गह्य-विन्। ग्वर'यन्क्षे'र्वे अद्यर'न्ग् श्रेड्ज्रिययर वेन्'रारासु नरि:श्वेराष्ट्र नरान हे पाकेन में या है पर्वन रेन में हे हिन रना ने निन न्द्रियार्शित्वुद्रित्रान्द्रियात्। इरापर्वरान्द्रियांन्द्रियांन् य'इयरा मह्र प्रु'गर्सेता वे राग्सेता प्राप्त हरा परा

न्रह्में पर्व्यक्ष्यं विष्यं विहा ने द्वा व्यक्ष्यं विहा विषयं विहास वि

६ म् । यात्राद्वीत् मृत्र् मृत्राद्वीः चतिः क्वु यह ह्या यह स्यान् स्यान् । चत्र प्रतः मृत्र कृतः नवाद्यो मृत्रां स्यान्तानुः कृतानुः कुषा चेत्रा मृह्यत्यः स्या।

यान्यत्राकुन्यायाध्याः पर्वतात्राय्यायायाय विष्यद्वा रेन'र्चेक्टे'श्ववाया <u>वे</u>न'क्वेब'न्न'र्चेन्न'न्नात'स्नान्न'वेवन्न'र्ज्ञव'र्चे**क** ग्रवार्ग्ना वार्षे इयस न्यस्ति वित्रिता है ग्री की मी क्रिया पा स्र बर्दर'पबर'क्ष'वादबाख्वावावाद्यदेव'र्'क्रूर'हे। क्ष्यं च यथा = न 'यर' अदित्यपान्त केतात् शुन् शुन् शुन् श्री स्वारी यह न् रित्री श्रीतान REN'UNI गुन्की समुन्त्राया सम्बद्धा निर्म्हिन्स्। देना सम्बद्धा दे वाकी वर्य वर्ष्य मार्थ वर्षा मार्थ क्षा वर्ष द्वा प्रमा मु त्य हु न्य वर्ष प्रमा वर्ष वगारीं वर्दर हिंग। पर्दि ग्रामीं वर्दर हिंगा ना नहें द कर हैं प्रा **८८.८ मूर्ये प्रमुख्य व्यत्रेत्राय म्यान्याय व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत व्यापत** लन्यात्वायाया यन्यात्र्वायात्रेवयाक्याक्यात्वार्यात्वा पाळेद्रांच्यान्वेत्वाहै। अप्राद्यान्याक्ष्यायान्यान्यान्यान्या मुक्तरारागश्चर तु गर्राता हिन्दिन्द्रिंग्राशीयहन्द्रियार् हे ब्रुन् इयय ५८। ५५'५५ याप्रीत याद्यया ग्रेयागुर'र ते प्रवेतान रेन्या पतिः व्यावाश्वर्धन् प्रत्रति वे वाष्य्रियाम् य न्ताः व वाष्ट्रवाः वर्षाः व नेराष्ट्र वाया मान्य के वा इस वा निरा। निरा कवा की जा अस वाया यहपायायिव रामका ग्वर है। इंबाकु तिया में यह स्त्रु ग्राया वे बा गर्रेत्राच भर्भर भर न न च भर

हे'नर्जुन्भे'वत्यन्त्र। हिन्द्रयसन्दंशन्देशन्देशन्दंशन्त्र **हु' धरा**त्र हैं दा ग्रार न् वें खर्केन प्रशासन मन प्राय हुने हो दिने हुन न्तु'तु'तु'तु संभीत्रिंग्'से'केव्'से'विया'ने सिन्'व्या न्नः नेपायाने। रेग्'स्य राहेट्'अधिरे'झुआई'शुबानेग्'गेरु'इतार्डेट **34/图**二式1 राधिन्या ब्रैस हे बाह्य प्रवृत्त स्वाय व्यव वा त्रा प्रवृत्त व्यव विवा क्वय विवा क्या विवा क्या विवा क्या विवा म्बर्गाय्र्वेरप्रप्रः हेव्यह्याप्रायाध्वेव्यवा मर्दरायाह्रिप्युप्ति हुँ परा पर्टर रा श्रेषे रा दे र र हे पर रहे । स्तारे र र हे पर्दर त्तुत्राच'न्न्। वैन'क्र्यक्षप्रवाधनात्रवाध'न्न्'स्न'वैन'यन्ध'वैन्दु बर्पन्युर्वित्रवाग्तुतानुत्रान्युर्वित्रवाक्षेत्रत्युर् ह्म-र्यं हें सुक्षशु नर्वेयां व कार्ये त नतः यह न वाया व धारा ने रावनः मर्देवार्राम् मेन्नेवार्के मुत्राध्या मार्चा विष्या हिना विष्या है । *विवा विळे* खुत्राने विष्ट्र से ह्य काक्ती हैं व बा**क्ष दें र खे** बा**द कार दे व र व ः ः ः** ः म्वन्रुंग्न्निवागुन्द्रिः स्वाधित्रित्रे व्यास्त्रित्र्वे व्यास्त्रित्र्या विवासिन्द्रा है। श्रशाया विव्रं पुरि शे न्न् पा दे की लंद दिवा तालु व वा व वा वा विन् न्तु मुस्या ता इ'अ'ग्वित'म्न्व'इत्याद्याद्रग्रित्तित्ति हेन्द्रन्याद्यापय। **ग**र्ने द'ने शार्स्तु र'कें तार्ति न्द्राचात्र प्राप्तु द' शुक्र 'त्र हो क्षेत्र हो का क्षेत्र हो का का विकास का मति है। न्न्रिंग् कन्के के ने तर है है विषानिया ने न्न्रिंग ना स्राप्ति हिन् र्में हें 'शुक्ष'ग्नित्र'त देव'पति क्रिंक्यप्त हरा पर्वा विव निव ने साम बाव विविध **क्षेत्र'त्र तर्रा क्षेत्र'त्रीयां देवां ने र स्नर्। ने र क्षेत्रा हे युद्धा वर् वर्** इन्यम्य। गर्नेद्रकीयम्भेनयाशुक्तपन्तः। हेःश्रयनः ज्ञयायनय

गुरु-केन्स्रा-हि-सि-हि-सि-हि-सि-हि-सि-हि-सि-हि-ने। गईव' यवेवयाद्वयाक्रीप्त्व विवारस्तरायेन्त्र स्वार्म् न्थर विद्यस्य ¥ॱश्र्वाखरायायायायात्र्व्त्रित्रेष् 5'ইব'নথা म अक्षित्राविष्णमः यमाने मानिमान मे न মথাৰথা सम्मा हे मुन्न स्रोतन्यमान्ता शिक्षेत् रेत्र सर्दि स्रामा सेत् मस्यन्वात्यां स्वार्धेवा हैया हैया है स्वार्धिया ग्रम् वार्चे वार्धिया स्वार्धिया स्वार् सतर शेषाव दाया स्थाप के स्थाप देवत्त्राचान्त्रस्त्रस्त्रित्तर्भाषा श्रेक्तर्ने स्वयाचीयाधानुन्छय बिट्र प्रांह्र श्रे अविट्र व अर्थेन कार्या राज्य राज्य में म्राचेर र्वेर भूत्। ने वया हे श्रवाधी प्रवानिता करा पहिला पहिला है । क्षे'गृब'केश ६ श्रांताके ताते वाय हें न'य वाय नुन वे व हे व ता के ता विश्वान्यात्रात्रे । मर्देशने प्रमुखेशम्बेर्पराये अधुरायराज्ञे तस्यापरा गुन्पत्र कवशहा ।

**विण**'ऍन्'ए'नेब'बे'ता'र्हें 'हे बेन्' गेरि'र्छेन्' च गडां प दि'छे न जुता छुन' हु ''''''' नर्जन्य हे में परेश्य सर्वे द र्येट्य है। देवे हे व विश्व स्वाक्त स्ट प्रविद **बुकार्च पापा क्षेत्र प्रकार काली ताई हो शेट वो धी आत्र र काली व टकाप र में ""** सन्भेन'युन्न'पन्न'त्रेन। जुत्र'वृन्न'युन्न'त्रक्षेत्र'युन्न'त्रकुत् मस्तिन्द्र हिर्देश्य विद्यालया महास्त्र क्षेत्र हिर्देश विद्या के स्ति है स्ति है स्ति है स्ति है स्ति है स्ति है से सिर्देश है से सिर्देश है से सिर्देश है से सिर्देश है सिर्दे ५'यर'में' यदायेद'नेर'परादुर'नेर । कुताके कुर'या पहेराण विद्या वदाविन्।पन्दंरगशुक्ष'र्विः ज्ञातान्। व १८ कपा वेन पर त्यत्धे गेश्वायम् अरावस् मृ. यहेश्य स्यावस् मृतः है वित्। वतः मृत्यसः मितें म कंत्र इसरा ग्रीका है का ह्या त्या द का की ता प्रदा सुवा खुता न विवा गुदा द रा য়ৢঀ৾৾৽য়য়য়য়য়ঀৢঀ৾৽য়ঽয়ড়ৢ৾৾ঀ৾৽য়য়য়য়ৣ৾৽ र्श्चिम महेन्य। रोर'गश्चरया য়ৣঀৢ'য়য়৾ঢ়৸য়য়য়য়য়য় ह्मन् बुग्यामस्यभिन्द्रमुद्दीन्द्रम् स्चित्रम् स्वर्षेत्रम् स्वर्षेत्रम् । स्वर्षेत्रम् स्वर्षे स्त्रिः संस्पृत्यान् सुन् । न्युरः सुन् । सुन् । मन्युत्रन्त्रं गुन्दन् नेप्रस्त्रुत्र्पस् यान् सुर्यं मृत्रेर्वा स्तर् नेति कें ध्रायाचित्र वहेश श्वापाया विवापन ए श्रूषा हैं हे रोन वी র্য নহা বাথা। ग वैश्वान गतात्त्वाकी प्रस्ति । दे ग वैश्वाता श्वा गहिन तह्य स दायाञ्चायानेश्वरताज्ञ्वयावस्त्रन्यस्त्रावस्त्रायश्चरायञ्चेत्रपञ्चितःस्त्रा यदेखें। श्रेयां यर्ने द्वेव रोतः ने भुः प्रतायते न ने न वा हे त्या कु वा पर बी'ताई' हे बेन' बेलाडेंन' बीकी वर्षा दें र हेता प्रश्न र प्रश B<16€~1

ण्नाः स्वारं त्रा व्याः स्वारं त्रा क्षेत्रं त्रा कष्त्रं क्षेत्रं त्रा कष्त्रं क्षेत्रं त्रा कष्त्रं क्षेत्रं त्रा कष्ते क्षेत्रं त्रा कष्ते क्षेत्रं त्रा कष्ते कष्ते क्षेत्रं त्रा कष्ते व्या कष्ते क्षेत्रं त्रा कष्ते कष्ते कष्ते कष्ते क्षेत्रं त्रा कष्ते कष्ते

म्'द्रश्यापराययग्रित्र्वं यह्नन्। श्रुय्वाप्त्रं नित्त्त्त्व्यत्।।

यह्नन्त्र्वायापराययग्रित्र्वं यह्नन्। श्रुयह्नय्याप्तायाप्त्रं नित्तः चक्कन्।

यह्नित्तः प्रस्ति स्वत्वाप्त्रं विष्यत्यावे विषयः विषयः

म्राम्यकाक्ष्याक्ष्याच्याम्यम् स्वयः स्वय

ने'न साम्मानमानि कें ग्रामक के न मार कुन हुआन्म व्नापर गुरा"" व्या शिक्षानेशन्ता ज्ञाय वर्ष इंशयन सिंहिन है। उन स्या हैते हुँ व बाशुः हीनः तार्यनः व याध्यवानेनः तर्यनः तरिः हो। सुः ये । तत्रु वा वीर्ताः सूँ वा त्त्रा - प्रतिरे हे र स्थान्न र अज्ञलातायायाय ते हे व्याखा आतार हे वा **रायाया** ही । बर'यन'ळे**व**'यह्नबाहे'त्रि सङ्घ्यामण्यम्'सुव्'न्यस्तु'वेव<mark>'गुन्सुत्र्य'''</mark> मला स्थानिर तर् वाराय न्र वेर क्षेत्र के न्याय स्थानिर के यम निन्दु खने स ने दिल्य मार्थित में स्वीत स **छै** कुन्'रा'**त**ने'तातु'रे'रे'सबाबे'र्तन'रा'भेव'पब। न'सब्'तुरा<u>क्</u>रेस' **ऍन्: तनुग्नादाने।** इंबायदे गृहस्याद ग्रादा विग्नुनः प्रवाद दे सुदे बिरालाइसारान्गतानेन। नार्छनाइसार्वराष्ट्रसाराज्यातम् नेरावसा ध्यार् विंद। दिने वेद वेदारा द्वारा द्वारा दर् प्रमुवारा विद क्रिंदारा वारा मॅं चुराव्याप्रदेशपर पश्चेन पश्चेन राष्ट्रीयन ता श्चे यान ता श्चन में में या केन '''' रेवियान् गत्राच विषा चुन पर्या वै'इबबाग्रैकाम्बारा'न्गतःने'वैन मन्ष्रां तेष्रां विष्युत्रात्र्ष्या चेरामा चुत्रा ने द्रारा स्वीयं विषय स्वीयं ह्या अयात्रातुः संविषाक्षेत्रादाः संविद्याक्षेत्रादाः स्वा गठेश **ই**ন্'শ্বীন'শ্<del>থী</del>ন' बिद्दा निर्म क्रम व्यवस्थि क्रियम व्यक्ति मुन्दू मुग्ब है। मृद्धियाम् सम्मित्रस्य स्तान्तः मृद्धाः स्ताद्धेः स्याप्ते । स्ताद्धाः स्ताद्धेः स्याप्ते । स्ताद्धाः स्ताद्धाः [म'र्या'र्दर'न्यर'यर्दर'म्रास्यास्य स्वार्याद्य स्वरान्र महेन्यूय। *ब्रु'प'इबर्ग'त्रप्रवाशु'त्रियाप्याक्रव*'प'हुर'पते'ळे। ধ্বদার্থ স্থ বর্ষ

## ୩ଵ଼ିଷ'ୟା କ୍ଷମ୍ୟ 'ମହ୍ୟ'ଶ୍ରି' 'ସମ୍ପିକ' 'ମ୍ବମ୍ୟ' ଡ଼ଅଷ'ଖ୍ର' 'ସବିଷ'ୟା

षद्रत्यक्ष्यः प्रश्वेष्यः व्यवस्यः प्रतिष्यं व्यवस्यः । विष्यः । विषयः । व

विन्यित देव व्यक्षिव स्वार स्वार विश्वा क्षेत्र विन्य विश्वा विश्वा मत्याक्षन्यान्यान्तः म्यान्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्या ब्रिकेंद्ररम्बद्यार्श्वेद्विप्नम्बर्याः अप्तायाः स्ट्रीःह्वस्याक्तीःहेरः दशः क्षःप्राप्तिग्दार्ग्निह्रवाशुर्वित्वा ने स्वा द्वाराष्ट्रिन् तर्दे राष्ट्रेन्य गुक्तारा र र मितु तर्का हिया कें के चित्र की पर त्या यह त्या । हित्र पर हुःषाष्टुः न्दःष वे विवयाय द्याया । स्तिर्वाष्ट्रिया संस्थेन प्राप्ता महेराति न्रकुर्वित्वित्र में विद्यार्थित स्त्री विद्यार मही *पर्याद्वेसुं श्रुद्वाष्ट्राश्चेश*श्चेत्र्याह्येत्र्यात्वेत्र्यात्वेत्रात्र्यात्वेत्रात्र्यात्वेत्रा पविवाह्यम् विवाह्य । इया मुखा दिया हैया न विवाह कर मक्रेंदेवियान्यस्यवयार्मेरयार्थ। देव्यायमार्भे प्रेन्यस्टर्य स्ययानुया ने क्ष्मा में में र स्ययानु मार स्थापना छूट र मर हेन्या के त्री का के त्री का के त्री के है। विन्याञ्चन्देन् ग्रीकाञ्चन् पुर्वातहन् वेन्यह्मका विवर देन्'ग्रीस'रूप्यान्नेन्'नेन्'न्या न्दे'ल्न्'ग्रेन्'सहेर्यानेन्य व्यं के अन्त्र अद्भार अद्भार म् स्था अस्य भी अस्य भी श्रें र इयय षा'वेतानुता ग्वर'इवर्यान्चेन्'वर'राग्वाने। हिन्'वान्चन्या न्रॅंदेबाग्नेन्'नेर्व्य। देन्'असु'न्र्युयतार्वे रन्त्रन्तु'अपुन्निदे पर। न्युरविरायम्बेन्र्त्यायाष्ट्रिंग्येम न्युद्रायसमायेन्

नुषाक्ष नेते न्यंन द्वे ब्रिते द्वे तामका में न्या हता स्ना कना रात्राज्ञेलाबते क्षे रणवानके रवारा कुंब वर्षा सवान्त्रा बेन कुन र क्षा ्रान्य प्रमाणन स्वरासेर ग<u>र स</u>्ना द्वारा स्वरापन स्वरापन स्वरापन स्वरापन स्वरापन स्वरापन स्वरापन स्वरापन स्वरापन सर्गाञ्चातान रेत्रा श्चार्मा निर्मा निर्मान स्थित स्थान है । से स्थान स् है सम्भुः तें नरोरः नरोरः नेगः संदे रत्यानः है। ये नः हुरः नरा न्नः में रापति वी तेवरा दुनः गुवायके वाद हेन्दान्न। अपु न्नाका वे त्मंभूग्यापन्दैराने सूरानुरानुरात्से व्यवेता हुरा देता व्यव्यास्या सं र्रायहरायम् अव्यव्याः वे त्याष्ट्राः कं न्यतात्व्यवान् वे त्राह्म यहन व्यास्त्र विश्व द्वार प्राप्त विश्व द्वार विश्व वि स्ते। नन्ग्रां क्षं हिरातर्वा नेरानाने नेरावा क्षा क्षा विरायना बै'तानेशन्य क्राय क्रवं पह गया दे हैं। बै' इग' वद गुद दे प्री' वस तह्यान् ग्रावण्यायिवाने। हिलार्वराधन् ह्वारायिते ह्वार् न्या वया अ.पि. र.र. अ वेते वयात ई अर गर वग सि पा ग्रूरा अर अरथा **लट्शः इयरा ग्रीशः भ्रांगः तरा रिष्ट्रिः श्रांगः खट्रः या ग्राटः ।** रात्रा तह या द्वारा प्र देग्रानेरपानेपानेवपारदिगुन्हे। वीर्मिक्रपारेवर्पंक्रपारित्र <u>५८.५२। ५८.च.ब.८.५.५५.व.व.व.व.५५५.५५।</u> कॅं क्वें किंग के त्या सुरा वा वा वा वा के के के स्वा के ता से किंग के ता सुरा वा की भवाश्चित्ववाग्नित्रेत्रा हुगान्त्रेवाश्चर्वात्रेवाश्चित्वात्रेवाश्चित्वा  स्यश्यां संक्ष्यां स्थाने स्याने स्थाने स्थ

ने'न्यान'सं'पर्रे 'ऋ'र्डस'स्य्'परि'से| अ स'ताम' सर्वा ही न'परि' बिन्न्न्नतान्ते से क्ष्र्व्रक्त सुन् वीत् वीत् वी क्ष्र्व्य त्र न क्ष्र्व्य विष् **बिना**ळॅन्'स'ने। बन'यॅब'र्कें'क्र अ'ग्रुक्ष'यदे'क्र बाक्किन्'दिने व्यानुः के'दर्जे ग्रुक्ष ब्रायन् पुष्त्र्रेन् वे व्याप्त्र्य प्रमायन् यत्र राष्ट्रिया वयान् ग्रास्यान्यां त्रास्त्रे । त्रुवा व्याप्यं सन्यां सन् न् प्रस्यायास्त्रः ळं ५ ग्रन्जुव्यञ्चर् द्रस्त्र्र्यस्त्र्वेर्रायभेवायात्रुण् वेरायाञ्चरः। देववा देन्'रम्'ने|पन्'न'ग्'नवि'गुन्'नकुन्'यान्र्यम्'न्य्यम्'सं'ग्यम्'न्य निन्निश्व अतिन्दाल वेशान्य विश्वतित्रे वे विश्वति स्वा न्गतः प्रमेशस्यता वे हिवा वहें का इवका न्म। हिन्यम् स्पर्धा सम्बन्ध र्या कुलाय संवासु मने गवा वर वरा क्या के या की थी ने कुरा वर पार वरा मंदर है। अ.पु.न्नः अ.वे.त्यः न विंगः तर्रं गया ग्वनः गहागः वैराधः त्यः क्षु विराधाताक्षा करान् गरायाको नयराके न्रायका गहिण मति क्ष्रं व सं प्रच मार्ग प्रवादा । अ साम् व की प्रवाही व का की व पवीयात्र्व सिक्केयातात्पञ्चरः। कर. यस्याताताची वेत्राचीत्रस्वी पत्राची र'पर'न हरा हेन' नहारा देन'न हें र राज्य न राजा पर ही ता ने स र्या कुराय संब् भुः वेशिष्ट्र वित्र हेश्या गृश्य व्या मुख्य मित् कुरी वे प्रमेष्ट

स्तिः न्दः अवेश्व वेश्व वेश्व वेश्व विश्व विष्व विश्व विश्व

म्या म्यान्य स्वान्य स्वान्य

नेते कें अप्राये । स्या के त्या के स्या के स्य के स्या के स्य

क्षांतर्या विषयः स्वयः क्षानः श्वायः स्टायः स्वरः त्र स्वरः त्र व्यायः स्वरः श्वेतः स्वरः स

अ.अ.डी.ने.ब्रम्'ग्रन्ति.हम्'याः क्रत्'न्यरः तिम्'त्याः व्यतः स्त्रे स्त

श्चिरात्रक्ष्ण्य स्टाल्यां स्टाल्यां स्वर्यात्र स्ट्राले स्थायाः यादा है। हरा सरा श्चित्र हैं देन स्ट्रेन स्वर्यात्र स्ट्रेन याद्यां गुन्यां स्ट्रें स्ट्रेन योद्यां गुन्यां स्ट्रेन स्ट्रेन योद्यां स्ट्रेन स्ट्रेन

नेतिः कें क्रंबालवा पुण्या क्रंबाला क्

## ग्रुव'या न्ग्'नें'र्ळन'नडन्'या

यद्रत्यास्त्रः त्राहे त्र्युं वृष्याया हे त्युं वृष्यया वृष्याः संवर्ष्य स्वर्ष्यः स्वर्षः स्व

अहु ८८ तेर प्राच्चिष्ण प्राच्च प्राच्चित्र प्राचित्र प्राच्चित्र प्राचित्र प्राच्चित्र प्राचित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राचित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राच्चित्र प्राच

अ'अ'व्दान्'र्वेसंस्द्रित्येव्यंत्राम्यावय। के'नेर'भ्रात्रित्रेसं हते'त्त्रित्यंत्रम्द्र। हेन्'अ'ब्रन्यंत्रस्याय्यं क्ष्यां व'वेन्'य्यंत्रेसं ब्रा भेव्यंत्रम्द्रभ्याव्यायेन्'अक्षयायः तस्यायय। हामेव्यंत्रस्य वकान्तामाने। श्रमानामान्यान्तान्ता प्रमान्यानाम्यन्तुन्ता स्याह्मित्त् स्या मित्र विवासित विवासित्र विवासित्र विवासित्र विवासित्र वित्रात्राञ्चर वर्षित। अधार्यर प्राययायवा विराग्धर्या व्याश्चिरः विवाद्युरः है। चलायाने गर्दे रामायान्य। प्रेगायाने अर्गाया यम्बीसंवेशनम्बान्यस्य स्वाम्निन्भान्। तर् यव'र गर'र जुरा'व्या त्रा ही होत्र र प्राप्त कर्षा हिन् वा हिन वा हिन् वा हिन वा ह त्यन्भेन्यन्त्रन्त्वेरक्षायुन्देन्यकुलद्द्यत् ग्रेयत्रन्त्वा श्रीत्रां यत् में व्याप्त है। अ हिते प्रयास सिया या या या है स्त्र हे तर है ति त्त्रग्रायात्रेवाञ्चयात्रम् न्या न्यायाः विकासम्मान्याः नेत्र वित्रवेत्रम् मृत्रेश्राष्ट्रीश्राह्य प्रतिराद्य द्वार्थाः यदि त्यम् या यत्रेत्रप्रवेत्रप्रवेत्रायस्य न्रक्षाव्याम् अप्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्याः न्या द्राप्तरे महिन्द्रीकारा ता है ने प्रभू वाववा हु न न ने का जुन प्रवास्ता पार्वा वा वा वे न प्राप्त मैन्धित्रुग्राप्त्राहुः में पाने क्रुप्ति तर्ग् नेत्। हे हगरा तर्देन नित् देन्'अञ्चन्'नशुअन्।हश्र्वा।

ने'न्यान्याक्षात्रात्रायानेत्रि। ने'स्याक्षित्रायाक्षेत्रा न्याक्षात्रायान्तर्भन्तित्रात्रायाक्ष्याक्याक्ष्याक्

अप्रश्वास्त्र भ्रेत्र प्राप्त स्वास्त्र स्वास्त

ने'द्रवा ह'या क्रिंश हर्षा विद्यायाय। वार्थ ख्राया चर्च है। देन द्रवा क्रिंश वार्ष वार्थ वार्

श्चिताकर्त्रस्त्रम् राज्यायायार्तिः श्चेष्रायाः स्वया **ドネススコスライ** मानियम् अर्थे हेर्डिर त्रुण हर्पर रुपर हर्र रहा हर् अ'ग्रिग्'न्न्'तु'ग्रिग्'त्र्त्वत्याअ'र्वन्'म्र'अ'अर्यान्ति'त्यग्'रा'व्रश्चम्त्रुन्'ह्रे' য়ঽৼয়ঽৼয়ৢয়ঀৼ৸ৼৼয়য়৽য়য়৽ঀৼয়৾৻ৼ৸৽ঀয়৻ঀ৻৻ড়ঀ৾৻য়৽ श्चन्क्षेत्रायाम् वाताक्ष्याय। स्वान्त्यस्वितः हण्यास्वान्यस्वान्यस्वान्यस् मुक्षाक्षां हेन विन् स्वी स्पार्टि सम् श्वन विन प्रति अह भेर प्रकृषि न क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष हिंद्र ग्रीराध्याद् अद्युत्र ह न राजा हो द्या प्रत्येन हुद्र राजा हिंद्र रन्नियतुव्दुं क्षेत्रयाव्या विर्मृत् में नेत्। त्या परत्य स्या व्या नेत् षट् वे वे न दे न त व के अवर में में न का अपर र खे न व बेबबादबेद्राप्तव। देन्'इबबावर्षद्राच्यांन्दर्नु'द्राद्रावेष् बिन्दम्न्द्रवादात्वादात्वादात्वादात्वाद्यात्वाद्यम् । अत्तर्वाद्यम् विंग्'म्यार्थिग्'म्याश्रुयापादीश्रेययानिव्'तुर्देन्'न्व'विग्'सुन्दे र्राज्यासाया दुर्वा हिन्द्र्या हिन्द्र्या व्याप्त्रवासा व्याप्त्रवासा कुर्कीत्वस्त्रित्र्रित्र्रेत्र्र्त्र्त्र्त्र्व्यत्त्र्वा चेर्यत्ये म्यावया केर्या चुत्त्रत्या

देन्'इवरान् स्याप्ति वात्राप्ति वात्रापति वात्राप्ति वात्राप्ति वात्राप्ति वात्रापति वात्रापति

श्री क्षात्र प्राप्त कर्षात्र कर्ष कर्षात्र कर्ष कर्षात्र कर्ष कर्षात्र कर्ष कर्षात्र कर्ष कर्षात्र कर्ष कर्षात्र कर्षात्र कर्षात्र कर्षात्र कर्षात्र कर्ष कर्ष करत्य करत्य कर्ष करत्य कर

 विश्व द्यांप्र स्क्रास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्

स्तुः स्तर-रामानिका कुष्ण अस्य स्त्रीत् स्याप स्त्

**षष्ठ्र'ग्र**र'प्र'ल्'ख्यारण'भेर्'ग्रुख'र्य्याचेर। ग्रेव'याख'नेत्रः **विग**िर्दर्भ वित्रेष्म हराने इसस्य प्रति विष्ठ के समुख्य है । परात्त्व'वहुरराय'श्रु'रा'वेव'वेदाराय'म्हरायदा वे'यठ्र'यहु ह्यर्पाविषार्द्ररायरात्र्याः अधार्याद्या अध्यतिः इत्रः रु: श्चेवापरा व्यायित्वयान्यार्वस्यान्यत्विन्यायाः वित्रायाः वित्रायः वि **८**सः ज्ञाः अप्रतः मेवा ग्वरः प्रतः मेवा नेवा छ्या हेव ' छ्वा छ्या ' ख्रा । व्यवा श्चीर्वे र ह्वन्य है। व्राध्य देव में हो यन ग्रामेन 'या श्चन' ग्राह्म अप्राप्त 'या स्म ष्पषु 'न्र' अ' वे रा गर्डें चुरु रा ते स्प्रा के ब्रिया महें सार गर न् ग्र 'या र रा '''" है। बै'तर्स्यापते हुँ न हिर श्रे हें न वा की श्रें 'द वा हुन यें रन प्रहर। ने नहरमायाम्या निर्वाचीका असुति हवा का अधि न पर स्था नु र में व यन्गः ने|बतुब्रन्थः अ:क्षेप्रशब्धः तकै।य:ॲन्'यब्धः क्षेत्रःय।य ग्रा *नैशव*'बसु'अझेस'धेब'दा'वेषा'ग्व८'पर-तु'वेशवु'प्र'सुस'दबाहुब''' '''' वेयान्याक्तयाववन्त्रुभावविषयां व्यावया अप्यान्याव विषयां वेयासूना में पर्टः द्वारा इववाद 'रग'ने वाक्यापर' वुवायवा व्यायपर होवाकता वैयायह्न वया ने हमान ने वाया कर के विवास मान वर्षा दराञ्चराग्रुम:कॅग्'यम: ५५,त्ग्'क्रे। ५५,६्रंच'यम:श्रेप्टेय। यमम्प्रे षष्ठ्र १८६ ता द्वेन वारतः रेश द्वेर गायु यात्र या ग्रेर ग्राया ना है त्या दे राजा श्चन्यन् त्रवर्ष्मन्याश्चर्यान्यः स्वावर्षान्यं वर्षान्यः वर्यानः वर्षान्यः वर्षान्यः वर्षानः वर्षान्यः वर्षान्यः वर्षान्यः वर्षान्यः वर्षान्यः वर्षान्यः वर REAL

A 5 4 7 7 7 1 A 5 4 1 वरामकुरावत्याकृतावत्या हरानुषायान्यान्यावयायहे ह न्रा नदग्'सुन्'नकु'त्रत्रार्द्रेन्द्रत्र्याचुन्हे। स्यान्ग्'भेन्'न्युअत्रात्र्य <u>बेर्र्स्स हिंद्र' सबस्य हुन्स्यबा</u> बेर्ह्हिन् कुष्पहर्मने सम्बन्धा निर्मा वेत् महात्यात्रा नेते छेत्रा थाया मुन्द न्य प्रत्य व्यापा र्में क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्र विषा व्यन्ति । स्ति स्वारा तु त्वक्ष स्वतः त्वा वितः ब्रून्त्रत्विरः ब्रुन् हे। त्रायरिवायं के विकास निवास स्तिवा मया असु भैन पु नवर र में रायर मर दें लु लिर तरु न पाया र या न्न'बदि'ल्याद्रवा न्द्र'यं द्रबार्चन'र्संन'या बसु चुद्रवा में द्रपाहिंद' है बा बहुःश्च्र्यानुष्वितःविषानुष्रः वे न्यानि। दायायहाष्ट्रावाद्याप्त्रः न्यान व्या देवा द्वा ता है 'वे 'न्न स्र तार हो ता हिन कारा विया कि न स्र ने र्रः ने ग्रुत्रस्तु खुरः ग्रुत्रं व्यात् खुरः प्राप्तं व्यात् व्यक्तं ग्रुत्रः वित् वित्राया वित्रातर् वृत्राया नेपान वित्राय वित्राय वित्राय वित्राय वित्राय वित्राय वित्राय वित्राय वित्राय ब्रॅन्यार्यप्रमाने रायायमु ब्रॅन्यु स्ट्रिन्य स्ट्रिन्य स्ट्रिया विन्यारे राम क्रिम दुन् चुन् चन् प्राप्त प्रमान स्वर्य प्रमान स्वर्य प्रमान स्वर्य শন্তদ্রা /

वित्रत्ने विश्वके वात्र्यात्यत्युवा श्वापात्ता त्वा विश्वता

इन्नश्चित्रः न्यानुव्याव्या कृतः त्याय्या हिन्दः ।

इन्याः इन्द्रः न्यानुव्याव्या कृतः त्याय्या हिन्दः ।

इन्याः इन्द्रः न्यानुव्याव्या हिन्दः ।

इन्याः इन्याः विव्याः नुव्याः इन्याः विव्याः विव्य

स्निन्द्रक्षेत्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त् स्निन्द्रम्नद्वर्ष्ट्रम्निन्द्रम्नद्वर्यम्निन्द्रम्न्द्रम्निन्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्निन्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्न्द्रम्न् सर्चन्यम् विद्यायम् अवस्य अवस

देवै'तुब'म्दे', ध्रयाञ्च'म् 'सं'द्या असुदे' ह ग्रामे 'तर् विग'सूम' श्रुवात्। अप्तितेत्वेकेपायायग्याञ्चरमयित्यग्देव्योजया अप्तिते B: \$4417-144A:444Eq: 5-415-1418-141-4-1-6-4-1-16-8...... मन्त्रज्ञासुर्श्वेष्ट्रवन्न्द्रविष् वर्ष्या वर्ष्याचार्याः मत्रव्यान्नः देन्त्र र्गरवे इवरा करा दें र परि शवायर क्रिक्ने र वें श विष्ठा विष्ठा पर्ग हा यन्गारी क्षे किरादर्व वाचे रायदे ग्राम्य न ये है 'य विवासेन स्वा क्षेत्रां स्वाप्तरे से तार्चे कारा न वादे न्वा यहा के दिन दुन। न वाद स्वाप मैनिनेवायमु विगार्देर मरापायाचेर। तनुसर्देर ता स्वसावर रुखा ह्र्नार्स्वाक्कीर्यरादेन। अप्तुप्तराक्षादेग्वाकेरात्री राह्यात्रात्रात्रात्रात्रा हैर-प्रायदायने प्रहेंग ने ज्ञान हो प्रदेश हैर प्रश्ति प्रायदा प्रायदा है । देन्'रम्'ने'ग्रॅंग्'सें' है संख्यातिरं ग्रॅंग्'हेन्'प्र'ने ग्रॅंग्'हेन्'र्यस्। बुतान्न। व्यार्धन्तार्वेग्राच्यान्नित्रं वन्ववेग्राच 551

द्र'ठव्'ग्यम्'प्र'र्दंश'वेग्'गेद्र'घर'व्ग्ग्'घ'घडुग्'ह्रे'हेर'दमेव्प्र''''"" यहिन्यस्तिष्यः व्यार्थेस्ति है स्वित्यवान्तु। रायावान्ति ळव्यन्त्रम्रोत्रत्रेक्षयः अत्यां यत् वृक्षयं प्रमायका শ্রম শুরু र्भेन्'बर' पर्डेम्प्यम् ह्'गुद्र'हर्ने न्यापदे'न्यं में 'न्न्' भैन्'बर्यान्येप षा स् 'चक्किय'र्प'ग्।य'र्स्य स्वापस्यग्।य'र्स्केषा है। ष्ठिय ग है न श प दि प्रित्यार्भेग्रापुष्याषुत्रेतुः स्वयान्ना। ववतः वार्षेष्यविधेयन्तः शुक्रासुः ने ने निया वार्ष मही ह्या स्ट्रां वार्य स्ट्री वार्य वार वार्य वार मन। मायनायनेवावयानेवाक्षयान्वात्रम्यान्वातान्वातान्वाने मन। अपिरुष्टिश्चार्स्स्वार्ध्वरार्द्धरार्द्रान्त्। खनानार्द्धःस्वाःस्वार्दाः बर्चरके। ५ मकाराक्ष्रर्द्र न्त्रात्व्या देते छे व्यवस्त सुनाराक्षर में विवा वी डे त्य विवाह त्य पश्चित्र है इत्तर वा अत् छेत्र यं वा वस्त व्यक्ति हिना सुः त्रुं या न् र्राव्यक्रमा ना शुवा सिं ने 'धाया शिक्ष या स्वर्म सामा सुविधाय हुत्यमुँव। हैं प्रदास्त्राच्याचितिः सुन्यास्त्राचार्यास्त्रेन सुप्तां स्तिना **ढ़ॅशन्तः। न्हः संक्षाप्तुःन्हः खः ने गा**ने सान्नः ने साञ्चानः स्वरान् सन्। इत्या वृत्यं वर्षे वर्षे ने राया वर्षे । प्रत्या वर्षे महरामकावरामित वर्षा सवाक्ष्या मानिया हुरासा । ह्रेट्'में शेय हुँय। र्मानेष्ठुन्यसाहुँय। यस्क्रीह्रसाहुँय। सरस्य हेर्रेन

ढं'व। मुर्यापञ्चव'यदे'कृत्'बॅ'तिन्दि'तद्व'यम्त्रांतिन्दि'मुर्यामुर्यायेव। राञ्चरःसंत्रारःकुव'यद्व'यव'यव'यव'वयवंत्रवयंत्वादायेथे'देरःकृव'र्रःचेर।

ब्रैन:ळेंअ'न्न'ग्नाग'यन् राय'हेअ'नु'अ'र्खुन'य'गुन्'ग्रेअ'र्घेअ'''''' मय। यायावारे सें परेवाचेरातुरित्रां सरावारा यायावारे परेवारेवारा परेवारे नंभवाक्ष्यान्य विषय् व्यात्रें प्या राहे। য়য়ৢঀ৻য়য়ৢয়ৣ৻য়ৢঢ়৻য়য়৻য়ঢ়ৢ৻য়ঢ়ৢ৻য়য়৻য়৻য়য়৻য়য় श्चेर-छ्याने प्रांत स्वयान्त्र न्या राया स्वा स्निन्ति प्रांत ह्या न्या न क्रिन्त्यन्त्ररत्त्वान्तेन्वेर्तात्य। ज्वापाद्यवावानेराजात्यन्यक्रि N'MA! ब्रा नेपश्रम्भं स्वरित्यं पर्वताने त्राप्त व्याप्त व्याप्त विष्ठ्र प्राप्त विष्ठ्र प्राप्त विष्ठ्र प्राप्त विष्ठ ने'न्यार्थें नन्पार्यन्'युष्वयाञ्चाने न्यायापात्र स्या व्याप्तराध्यायया देन्त्यानुत्रके सुन्नानुत्रं तके सुन्नान् नामान अन्यान्यन्तर्भागान। धातान्य इवयाग्रीयान वर्षे। न्रां पान <u> विन्श्वीत्रवेदार्यायायायायायायात्री सञ्चलत्ते वुल्यायेत्। न्यल्येत</u>ी तु'वा'र्वन्'पर'भवातने'नेन्'न्'रर्न्रहें त्रम्नान्यवापव। आहु'यानु 되다의'의'를다'다자'라지

ने'दश्यात्रा'श्चे द्वारा'रन्द्वे प्रंत्'त्या स्तु 'श्चेन्'त्वा द्वारा'या द्

बन्धंत्वरनु चुन्यंय। अवश्व न्धंत्र न्वे ध्वा चुन्यं स्व व श्व व द्वं द्वं चुन्यं स्व व श्व व द्वं व द्वं

हैन:र्ञुःन्यपदेःन्न्वयप्ययात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्। भ्रम्याञ्च अपृत्तिः गर्भगाः संस्टिन् स्मानी भिन्न स्मानी सिन् स्मानी सा मरा अवित्रम्यायाया वित्रहेति म्याने निर्देशम् व्य। विरान्ने ये बृद्धन् विन्ने द्वित् यं प्यतः यहं त्यापि देने दाया विरान्नितः मत्व'सुन्मा धारापते'शे'महन्मादे'श' मृत्व'म्नाकेव'वे' अत्र्रीराचर्य। अत्राप्तर्पत्यत्य्त्र्यात्रः ज्ञान्तः क्रीतः पार्तरः निः नः तह्ना'य'त्र'द्रन'ञ्च अपिते'ळे। न्व अर्थेन्य क्री इत्र'त्र्ये न्या'प्रताय' मञ्जर्भ स्वरायम् । त्रें पारे विष्यं देश देशे देशे देशे देश है या स्वराहित पर देशपरा पर के व् की देशहा सुर है। वग तगत तरे र मतुग्य। न्युयाग्रंदाने स्वायायायाया ने तार देवा रेर्ड्यान्स्रर्माधेद'पवा दे द्वारागुर क्रेन् म्या गुरावरा नि नैप्तरमान्तरार्हेगाःश्चित्रःतुःस्रेरपःग्वरा अध्यरायरवेषेनाञ्चरःहे।

स्वाक्ष्यां स्वाक्षयां स्वाक्ष्यां स्वाक्ष्यां स्वाक्ष्यां स्वाक्षयां स्वाक्षयां स्वाक्षयां स्वाक्षयां स्वाक्षयां स्वाक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वाक्षयां स्वावक्षयां स्वाक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्षयां स्वावक्य

प्रस्तां प्रस्तां प्रस्तां स्थान्यं प्रस्तां स्थान्यं स्यान्यं स्थान्यं स्

स्तार मुंन्यान स्वाप्त स्वाप्

इसातर्वेरायानेपाविन्तारतिष्विव्यस्ययार्थन्यातिस्तान्त्र ष्र्यन्यत्रत्वायान्यवित्रदेशयम्। सन्तर्भेषान्यन् धेवःवेर। ने'बैब्'कुब'बेन्'न्याष्ट्रेन्'रन्'बें'स्यान्नियेन'चुब्राम्ब। ने'बैब्'स्निःच बर मंजुराजिर दे। हिर्किष्ठेर के खरान जुराबेर। र रर र हिरा व्याधिव चेत्र। दें व्यु ब्रेन्प्रस्ति ने स्वन् चन् देवा प्रभुवा सन् क्ष्रम् रिन विवाद्याववा धेवेने न्यायायुवा व्यक्तवाद्याया यमा धेनोने छर गरेगान ने ग्यान म म राया न गर हिन छेला याने बेच्नाळेवारान्तर्वेगायन्पन्पन्पत्तुग् वीनेचवानि हेनायन्निन श्रेरायावयाचेरायानुवायान्त। क्विन्त्यानुन्त्र्वे क्विन्दित्रार्वेन गुड्यम्। स्रायम् स्रायम् देशास्य। विनेदे मे तम्मान्त। इत्रा तर्चे रःपातादे वापवाणनः कुवादे वे गन्तर तुवाया व्रावादे संखे थे। मेशायातरात्र्तित्वस्यान्तात्र्यात्रियायन्तान्त्राचीयो स्टर्मिनाः पञ्जवाराज्य। दयार्श्वेरपान्वरान्यं व्यक्षियां वार्षान् व्यवस्थ केन् यं न न मा कर वे अयं हेन् हे। इत्य त हे र प दे हुन द वा ने अयं स्त्रिं ने स्वर्धां के व्याप्त्र का स्वर्धां त्र क्षेत्र क्ष्यं क्षेत्र का क्षेत्र क्ष्यं क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष्यं क्षेत्र क्षेत्

ने वश्यक्ष अव ने से श्रामान् वादार ने स्त्रा अदे हुन ने स्वा नि नि नि स्त्रा व्या वादार व

ने'दबान्याङ्गादर्वे स्यायान्ये स्वापन्ये व्यापन्ये व्यापन्ये स्वापन्ये स्वा

तुन् यन्य में अन्त्र संस्थेर प्यं न्यं याचेर प्यं ग्रम् र प्या रोरामदे ग्रवरायं हुग्रायं तर्प्यायम् लु 'लु यायवा वेरायं प्रवास्य अ न्यन्त्रेत्वं वि'क्रायक्त्र'र्'क्रायक्षेत्रं विष्ये विद्यान्त्रं पठवापापमुराहे। यदायरायुद्धाः मुंत्रां पूर्टा हुवा हाः वाद् यहताप्रेर्यूर्ण्युर्ण्युष्ठ्याः हेर्प्र्। व्याये विषेत्रे हेर्प्रायक्ष म्'स्य र् रेरप'न्ल्यपदेखं कुर्यन्याया यनुर्या छन्'पर सुन ८ अ न श्री । व श्री श्री हिंदिन स्थित । श्री अ में श्री अ श्री हैं प्रत्र यम्बाही र्'त्र्वेराचर्म्ब्राचेरकेने चुर्म्व्याद्वायायाय म्यू न्तिन्ति वित्राचित्राच्यात्यात्यात्यात्याच्या HX. 6. 64. H41 क्रैन्यः विषाः तुः तञ्जीत्यः धया विषाः चतुवः वयः हवः मृनः वीः वनः नुः श्रेवः त्विग्य। श्रॅग'त्रण त्रुग'त्र'ग्नत'द्र'कु त्रे स्न्'त्र्द्र'द्र'च्युत् नम। न्'न्यारीन्'न्यायां अर्चन द्विन्'व्यापयाह्मन्'र्भातिन्न क्षेत्राया व्या म् अति विषात्राकुर्। न् रे राम मिर्यायरात नुग प्रमहिन् कु धारा द स हेग्'वह र्वत्हेर्द्राप्त्रेन्द्रम्पर्यम्ग्रुर्प्ताया दं अन्तः। वृत् पासुन् दं न् नुपाया दं अप्यू दे न् दे न् प्रमायः वृत्रायम्। विट. वियावश्वीत्। ट.क. द्यालट् वश्वट्राताल। श्रे व्यात व्यात्यं Bartal 英文·当大口·山英二·子·大五·山西二 一下方·其山如山南大 मन्किन्यादेन्यान्ति मन्ति स्तित्वित्यात्वे स्तार्वे स्तात्वे स्तार्वे स्तार व्यक्षेत्रच्या स्यान्त्रम्य प्रमान्त्रम्य व्यक्षेत्रच्या स्यान्त्रम्य व्यक्षित्रम्य व्यक्ष 



ह्या द्वरा देर र राखुर परि सु र हुव वार्षा व्यव वार्य राख ष्ठ अवात्रतः त्याचे वाचे तुतिः संचं अपातः तुत्रः अति न्। पाता इसराग्रीकेर वसर्वत। ध्रमकेर स्वापन र ह्रमणी पने द्रापा पन्रा प्रवाशी अञ्चा हिपामा में चिन्दि त्राव्या गरेगा तृ (त्रि व्या राहे अतः डेन्'ने'केन्'त। त्रुःश्चन्वेन्'गुन्'सन् नर्यस्य अपनित्रेर्ग्ना नुन्देश ण्डु अर्ड अप्पन् प्राचनका है। देश्च बकारु न् ज्ञान स्ट्रा ममनाक्ति। विकास के समित्र के समित्र के समित्र के स्वार के समित्र क कर्त्रुप्केन्र्रं देवाचुप्ते। देप्रम्पाकृत्रणुप्पाप्त्रप्रवाप्याप्त वितः प्रकृष् विता तुः श्रेष्य स्ते ते या नित्य प्रम्य प्रम्य । ध्राप्य दे श्रेष्ठे वापा वॅदि'नहरूरन'नेप्रथरे'नुन्यान्यंन्'रु'हेन्प'इवक्षंच्यान्न्यर''' ''' तर्वाष्यायात्राञ्चन्यकृत्यकृत्यक्षात्र्वाष्ट्रस्य स्वत्यात्राच्या न्'र्येते'र्सं'वेष्यायात् बुञ्चेष्'वेशकी' वर्धेन्'प्राप्य हेश्र लग्-मु-र्सुन्द्र-व्यन्त्रेंद्र-श्रेन्-लान्यरत्र्रद्यम् म्नावयरेन्न्-मुन् विष्याने स्या हर् उत् क्षेत्र व्या के या त्या या स्व त्या वे स्वित्। প্রবা पदिः अनुद्रः द्रायाः तर्मे विष्यः तन्त्रापः त्रायः विषयः द्रायः विषयः द्रायः र्मिन्सर्मिन्स्रित्रहर्म् इम्राखुम्यामिन्द्रित्रास्त्रम् तुम्रिक्षित्र के मे याचे रापाया वावें वापा इयवावा रे में वापा प्वाराय के वापा के पा विवातुः रुगः वर्षे नः प्रवेनः प्रवा ध्रवः प्रवानवान् वर्षाः व्याप्तवाने व्याप्तवान् वर्षाः तर्वान्तुम् ध्रवातर्ने स्तानु तहत्त्वा चे मलिमार्येण क्रिमाया 二代

भूगवार्धान्याने विन्यान हो । स्याप्तिन स्वाप्तिन स्वाप्तिन स्वाप्तिन स्वाप्तिन स्वाप्तिन स्वाप्तिन स्वाप्तिन स ब्रिन् क्षेत्राय हताया देन् बीबा नेत्। हेन् पहिषा ग्रीबावण प्रविते बुता नेन देति अर्शेविति दिप्त इं अर्थियो विष्य विषय के पा के बार्स न स्वास के प्र पराप्तवा राने तुर्वाक्षां वार्ता सर्वा वर्षे वारा प्रमुख्या प्राची प्राची रहेन्याहे श्रुरानु प्रें साहे न हता वर्षा क्रें राधिया का नाराया हिसासुना क्रेप्रह्मात्राचरात्राचारात्राच्यात्राच्या म्याच्यात्रच्यात्राच्यात्राच्यात्रच्यात हिरायाय। रशियानयम्बद्धार्यस्याते। देग्वरिक्धंवर्श्वेन्। त्युर्प्तिक्षेंत्यानु चकुष क्षेत्रेंद्र चकुप चुर्प्ति सद्नु में केद्र संदे द्यातमन्याच्या नायार्भ्याशुर्यायर्थ्यारान्यायष्ठ्राच्या म्यास्यास्य स्थाने प्रताति पाप्य प्रताति । क्षेत्र स्थाने । क्षेत्र स्थाने । विषयात्व वुविष् विषये यहँ त्या यहँ वा ने स्वर् क्षेत्र विययं विव नेभिन्ममाणुन्मतीष्यायान्मभीनार्वेत्रामान्तर्यायाञ्चरात्। म्बायुम्मारितेयुः दुःग् हृन् सहुग् अन्यद्वेत्रेयायहुग् क्षेत्रे प्रदे द्रवा'याद्वयाग्रन्'न्ययान्त्र्वुत्व्याच्यन्'ने। स्राप्तने स्राप्ते मु ने रता अप ह र व र वे व र व । वि र के मु र के व में र के व ने र वे र दिन्यात तृष्याया विन्य स्त्रीष्या दशहिन् ग्रीयायन हिन् ग्रीयायन हेन् वराम्डेगायाम्डेग्'र्गुन्'न्यन्यावेन्'र्येन्'र्रा-हेन्।

नैर्म्य्यवार्यान्तिः स्वर्थान्तः निरम्भ्याया अञ्चल्वितः स्वर्थान्तः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः

स्यान्त्राक्ष्यां स्वान्त्राक्ष्यां स्वान्त्राच्यां स्वान्त्यां स्वान्त्राच्यां स्वान्त्राच्य

## बळ्याशुरावे पासु प्रवासायन्यापि सर्गा

## न्नम् व्यान्नव्याम्

*षरवे नव प्राणुम् व विव के प्राप्त रव्या नव सु प्राप्त म र्श्चे प्रम्या वर्ष* । । । । । रेवराउव'ने'इवराञ्च'य'रम्'मेवायर्षे'नेवप्र नरत्त्व'गड्यर'। वरायर वे तर्दे त्रापायण्यायया व्यापया सेवरास्व इवरादार् र्के बार् हेन् 'भेव'य'न्न' इयाय' वर्षे 'ने बान्स वर्म स्वराय र ने वाप दे वी खाता विना'न्न'भॅन्। कॅं'न'विन'गुन्'नेबाहे। ने'इवबानें'न'न्न'केंन'तु'खबा व्या नुव्युद्धं सव्यं व्याप्ति वन् व्यापि विवान स्थित त्वाप्य ५'८'कुब'बुव'पते'र्क्रं भेग्'बेर'प्राधेब'यव। हुँ५'क्रैंश्टते'तुः र्त्रं प इयरार्भुट्य। दयहिंद्'ग्रैस्यम्'देस्द्राचरपदे'ययस्'हेद्रप्देविग इति । यन्त्रिंद्रन्रन्र्स्याष्ठ्रियायन्यम् स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति <u> ইব'ন'বিশ'গ্রীম। দম'মধুব'গ্রীব'রমমাশ্রুম'গ্রীম'শাগ্রদমানম। দরি'</u> तर्न्रायाश्चराक्षेप्रम्याक्षेत्राक्ष्यक्षेत्रायाः द्रात्राह्मराज्या *षर*ॱग*ॅव्राक्षेर*ॱरु*षा*न्रः ५५ 'ध्यः थरः छे र यः विग्'त रुग्' धष। क्र्याम्य **र्ग'र्र्निवृश्चित्र'नेग'ग्रुर्व्याद्यायर्श्वर्याश्चेराञ्चन'ह्या'र्द्रेशयायहं"** [मयान्यिन वहार निराम्य क्यारान्य निराम्य निराम न व। श्रायार्ट्स्व्यं स्प्तार्वियाश्चारात्याक्रयार्द्यव्याराक्षेत्रायायाव्या वित् गुरायायहे रायाविषायत् गरा देरस्य साम्राचायाः अत्राचिषा मुद्राक्षिय महारा

८*षा*णु८'त्र्'व्रथ्यु८'त्रङ्ग्रद्र्य'देर'र्र्र्र्र्युर'त्रंद्रव्यद्र्य'''"

**इन्। यरुन्यल।** ञ्चायाते हें खें न्म्यू यात नृत्य त्नाया द्वारा दाया । तर्ने अप मॅंब् भेव है। ब्रां अप 'स्रां तर्ने व की प्रतामा अर हैं प्रां कर कर द्यानितितु न विवाद पाल्या राज्या देन दिन्द न विवाद दिन हैं न विवाद दिन हैं न **श्रीक्षात्र नै रामह मात्र वामहाम्यामा विषाधित मक्षा अहता भरि हें गवा यूज्याया** मुन्नान्त्रय। त्रां साद्र यया मुन्नान्त्रय निन्धय। हे स्थाया प्रांतीया रते'भ्रम्भूम्भायहराप्या श्रम्भून्दे'त्रानुत्राम्भन्दायह्या रेन ह्यन्द्रम् अस्ति ह्यन् हे द्राया यन्न वे अत्य हुन् व राष्ट्र र राप दे की क्षेत्रां संक्षेत्रां सत्राया स्वाया स्वाया स्वयं स घुरामरा मु'बरी'व्यावया रते'न्यां संस्वयां प्राया केवार्यां परी संपा हिंद्रश्री डे.स्.स्टाक्रिया प्रस्तियां श्रीया केव.पश्चययादा केवा शम्बाम् विपानम्बर्धान्यविपानम् माम् मामान्यातात् । कर्ता क्षेत्रको नृज्ञे बारा राष्ट्र बारा कार्युत्या पान प्रतार प्राप्त प्रतार की कार्य साथ की व्याप्त प्रतार प्रतार की विकास की पर्वाह्नेर्याह्नरवा न्यन्त्र्यान्यवायायावन्यायवा नरिःयवस रातारबार्टार्सं अवु पुरायबावग मसु मविता ह ग्राकेव से हिंद्। सेर न'लावग'नत्व'ग्रैक'र्कग'प'चुर'। न'लम् 'न्र-सेरन'नवागुर'र्द्व'नदे इयानुन्यम्भवयान्नेन्यरयानु। त्यापञ्चययान्त्रायान्। લન્યા છું ચાર ભારા બચાર સૂં . સ્વ. ધુના જીવ. તા પ રેના . શ્રે ચાર . શ્રે પા રે ર. તા સ્થા राम्भवयानराष्ट्रसाम्बर्गाम्या क्रान्तान्त्रम्। न्त्रित्निर् हें। वनाननातर्वराचरा इवित्वयन्ता हिन्याहेन्वय द्रम्याप्त श्रेश्व सं के भिन्न सं स्याप्त ने न्याप्त स्तु व स्ति क्र श्री व स्व स्व सं त्र व सं त्र स्व सं त्र त्र त्र सं त्र त्र त्र त्र सं त्र त्र सं त्र सं त्र सं त्र सं त्र सं त्र त्र सं त्र त्र सं त्र सं त

त्र्वाचित्रःतुःव्रत्यायःश्चेत्राव्याद्वरः त्रित्व्यायः विष्वव्याः व्याव्याद्वरः विष्यव्याः व्याव्याद्वरः विष्यव्याः विष्यत्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

Rहेन् हेद्र'ग्रद्धान हेट्। देन् वाह्य ने वो शेश्वर उदा इश्वराम हेन् पर ष्ट्रग्'यर्थयंवेर्'पिते'पिते'पिते'प्रात्र्याहे'पर्वुव्ययर्पा'र्पा'र्पा'कुल''''' कुताप द्वराष्ट्री राकुताय स्वातार पान्य रायहिन पा विवा वे रा व्यवस्कृत्रकृत्रकृत्रत्रित्रयम् ते प्रत्यव्यवस्य प्राप्ति। NAI ह्यम्बर्गेश्वर्तेन् क्रेंत्रं विष्युन्नितेर्त्त्व्या ध्वाळ्त्रं त्रत्तेत्त् सुन् म्रां वायम्या वन्नान्ति में व्यान् नुना हैं प्राराष्ट्र मुन्य वायम हो। <u>बेर्राचित्र्युत्र्वेत् मृहेबर्ग्धेय्येत्राचेत्राचे यह</u>्त्रं हे द्र्ये प्रे 'यया दुत्र' वर्त्य प्र माविषाह्वे राष्ट्र राष्ट्रे। यमातान्त्र यात्र मंग्रि राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र मर्हेन् हे द्रावने त्राप्तवा मान्या मुक्ता के त्रा हे तर देवा के रावा मान *ब्रियंच्चाणुनः वर्केन् 'हेब्'द्रन्दि'र्न्च'ग्व्यापृठः केव्'बू'र्र्यागुन्युन्य'''* विगाधिव'वतर्। न्नां अति'रागत क्वार न्वें राग्य स्वरा वर्षा वर्षेत् हेवा घु अकु रात्र ह्युन्'रा'र्स्य वा न्या या वा वा की के 'या कु वा प्रारं या हिन्दी 大學大 मवग्मवास्त्र हे बाने भवाने हा कुर्ति रिंत् के वार्षे प्रा 对策气! रेडे'गुक्पार्परेर्ज्ज्याने रास्त् हेद'दे'त्र अर'र्घ'त्र विष्ठि। बेन्-ने-पृत्रेकाग्रीकाग्रीन्-केन्-रत्नुन्य-विषाद्येका केपीन्-व्यवस्या क्रे'त्रअक्रेन्द्रअसुद्रायात तुष्न्त्र्रान्यहे सुष्या विद्रातुः न् क्रेस्या विषा सुन् इत्। क्षेत्रयात्त्वस्यवेत्यवक्षिववेत्वेत्रा स्तर्भागवित्र म्रायकेव्यं विषाप्यस्य में व्या देन् इयदायागुद्र ग्री दात्र श्रुपा विषा

र्स्तान्यत्विष्यत्रात्त्विष्यविष्यविष्यत्तः। अव्ययम्यत्त्विष्यत्तः स्त्रम्यः स्त्रम्य

ने'न्यागुन'यरतर्दे'विन'र्देन्याया धुन्याहे'यन्ये'विना तत्त्व ने'ह्ययायाद्देयाया ज्ञान्याह्ययायादेन्याया ने'ह्ययाग्रीवन'व्यादीयायान्दु'र्देन'यानविन'न्न'कुरायनन्य।

ब्रु'के'यरे'य। हुअकीरयाय'नेग नेय'नेग'ने य'ने। देर्'की संह त्या नेर ने'भैद'द'देन'ग्री'स'हें'दे'देन'द्रम में दें सम्मर्भन'ग्रीस प'भेव'व व। प्रेर्वं व्यव्यक्तिया व्यव्यक्ति स्त्र्यं विश्वय्या स्त्रे दे प्राप्त प्रेर्वे बर्धां हो रत्यात्रे नवार्दर्या विषाय्र्या इरायवा हु त्यावे होत् परिने ॉॅंट्र लॅं र्डु 'दाकेव'र्से 'विषा'शु 'श्रुंग'गीड्र'र्ट्र खेट्'ट्र अश्रुआव्यार्ट्र स्य पत्र। सर्वातिवीवर्पन्दिन्तुं के स्युत्तुं न्तर्हे राय। ह्युद्रायम्बर्धाः क्केप्त'न्दिन्'क्षु'र्श्वेन्'दिन्'दर्ग्नापाय। अर्वेन्'अञ्चन्'र्हुञ्चरअेन्'पदे ने'त्ववावाववान्रार्डेव'ख्यात् उव ने'ववान्य'कुन्य'लवा ध्राम सदै'व'न्यता' द्व'र्रम्यते'न्देश्राञ्च । ज्रे' श्रुर्यर्या संवृ 'वेश्युप' मल्या संस्थाने वारा माल्या मल्या माल्या माल् बेर्'रा'याखुर्दर्राचाविषा'यञ्चर्याहे। हिंर्'ष्राच्यर्थेव। न्युत्यास्य। यन्यान्दर्भःक्ष्र्न्'क्षेक्षेय्रार्भे केवियास्यव्यहे। विनः क्रद्रारा वेद्रातु क्रेन्नर मृत्रापयान् अचितः क्रेयवेषा वु दुर्देर्द्यामा सव्यान विवासका दें बारका वरपान्त ब्रन् छैका हिन प्रते शुक्त है न न्द्रत्यान्तुः द्रते द्रवा करा याया त्रभूत्याया नहें दाहे न्द्रता वृत्ता हुता नवा सव'यावे अपावे ना हुए । हु । यह दे दे अया क्षेत्र के ना हे रापवादे दे पेना र्वेत्पान्त्। कर्भ्याथास्यापरायतुर्वातेश्वप्रेत्राव्यापञ्चित्राया। <u> न्र देव व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याहम व्य</u>



है। म् यदे व्याप्तां यादर द्वेषा वाह्य विद्या ने द्वा ने द <u> दिन् मैबान्दे सहता सूदी में इन् १५५ माना न्या ग्रन्दिन में हु हुं मु</u> **८इं'८२ै'गॅं'कॅ८'र्डेग'छे८'युर्ग'ख्रर'सर'र्डेग'८र्ग'र'रे'** पर्श्वेगरा ଵୖ୵ୖ୵*ଷ*'୵ୢୠ'୶୵୵୕୶ଽ୶'ଦନ୍ଧୟନ୍ତ୍ର'କ୍ରିବ'ପ୍ରବ'ଦଶ୍ स्तर्वसुत् से द्रु स्वादा है। इस्तिर विद्राविदा विद्रादा सम्भाष्ट्र प्राचित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र क्षेत्र **धेव'परा स'वरांग्रे'पव'ने'नेबागनव'ग्रे**क्नेन'व'र्देश'केबा'ग्रुठा**उं ८**८. शिषाङ्ग्रेश्वर्य्यान्टः यञ्चत्रत्रेत्रं सेन्द्रम् अञ्चेश्वर्येवा स्वाराप्ताः स **ब्रैन**'स्ग'न्न' सूरी'ग्रु'गर्नेग'गे'गर्नेन्य। ब्रु'र्न्न'अग'ळॅअ'इसयाद्धे' ्र पं अं धुरापरा वाप्तराते पा विषा पुत्राव वार्ष्ट्रं हिता क्षणा ने तर्गपाता रहे बै' इ.स.चै) ने गा भेव प्रस्य ८ तु ग व्या व्या वा प्रवास व व्या व व्या व व्या व व्या व व्या व व्या व पर्या व्यविः वियव्या स्थाने सम्मानि व्यव्हा सर्पान्यन धिन'खुन'तळेता'डेन'न गुर्या नेरखन'यरंतान्यसं श्रुपें र ह्रान्या है। ह्रा अन्दिन् में क्टें प्रन्ता है। अत्या दूर्न 'द का ग्रीकी के ता में के हिना 'द न का प्रा खुबान्यां भेन् वहारायन्तरहार। हैं विश्वे वानहारायन्त्र यायान्। संतर्मायम्यान्यान्याविषाञ्चषायादेवात्रदेवायमा द्याद्य। वृग्रं केपिदापतेष्यु सम्यावीत्र्र्या मतिकिन्नु वृग्रा न्र्यन्द्रियहर्या हिन्छियभून्या हिन्छियभून हिन्छियभून्या हिन्छियभून्य हिन्छियभून्या हिन्छियभून्य हिन्छियभून्य हिन्छियभून बदंद'इववाज्जवानर'वृवानव। तत्व'न्द'क्रेरवतर'खवार्ग'भेर्' न्युक्षत्रस्य तान्त्रे त्वन्। क्रिक्षं वाक्षं वान्युक्षं वान्युक्षं

म्याक्षेत्रः इत्वाव्यव्यक्ष्या स्याप्त्याच्याः स्याप्त्याः स्याप्त्यः स्याप्त्यः

## ग्वेनामा देगा द्वेन स्मान्य स्मान्य

न्न ने में है दे द का प्रया हे न न है न है न प्राप्त । पहु प्र है त व का प्रया न का त न्देग्'न्त्र। प्रतान्देग्'न्'कर्'र्'श्वर। प्रताह्म'श्वे'के'राविग्'र् ह्याया देते प्रमानम्य विषयि हे हिर्दे न्यायया हायते प्रमेयया [PT'5'त्रेनवाराप्ता वरक्ष्यां वर्षेत्रक्ष्याः क्षुत्रक्ष्याः वर्षेत्रक्ष्याः वर्षेत्रक्ष्याः वर्षेत्रक्षयाः व विन् बेर्च विष् वुन्। देर ब्रां व्याचे विषय वर्ष र विन विषय । वर्षे गृहै पश्रादेग् मु त्या यहा श्राम् व्याप्येव वया वय हर स्याद ह्या दर्भ र हिन पहिन विवासिक के स्वासिक के स्वासिक तर्त्वान्न्वाञ्चरात्वा ज्ञायाहुनावानातुवार्धाः स्टावेनार्दरः देनावाज्ञः तत्रग्'नव। भु'ह्र-'र्'ने'खनवार्क्षेत्र'न्नः क्वॅन'तयां हेन'त्यां हेन'न्नं वा र्वास्या स्वापर्यापया चरवास्वार्वार्वापरे पर्या स्वा हिन्'क्वुन्'चेक्ष'के'न्बॅन्क्ष'च'त्रा'चानुन्याच ते'वाचन। क्वुन्'क्वा'नेत्रा मर्द्रिं हेन्द्रियाचन्। यह केन्द्रं संयात्रवायां गहारक

ष्ठण्रु'येरः पंत्रेण्यर्द्र्य। स्त्राचित्रं स्त्राच्यः स्त्राचः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राच्यः स्त्राचः स्त्राच्यः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राच्यः स्त्राचः स्त

नेतिः सं प्राप्ति । क्रुं । विष्यः स्थानी । त्रि । या वा निष्या है। इयाद्रः ग्रवस्या ग्रव्राचरा व्रावस्या व्रावस्या <u>रात्रान्तुकागर्वराव्याञ्च</u>रायान्नायाः कवायरान्याः देरावीवार्धन्य। मरत्र्वा मृग्युर्पार्ग्रा त्रवायात्रम् विवाद्यायात्रम् दे महिकास्य स्टार्स्य देन दे अन इसाम् भिन्न वित्। मृत्यसारमा गुरा हेरामहारसाया ने महिनाहा मुशुक्ष'स्पर्याय'त्रान्याक्च'ग्र-रव्यान्ग्रात्राचुन्र्यतेःक्र्राक्षेयेन्द्रन्य। नरे तुर्श्वेन इवया नहुन्य। नायापन नहुर्या के वार्य नन चुरायय। ॕॗॎॖॕ॔**Ҁॱॺॱॺय़ॖॱ**क़ॆॺॱय़ॕॱॲ॔ॸॱॿॆॸॱॸऻॗ<u></u> ॕॗॎॕॖ॔ॸॖॱॸॸॱॺॱॺॎॱॻॱक़ॸॣऀॱढ़ॺॺॱॺॱॺॺॖॗॱ अधिर, के ती या हूच, चे ता के छुच, चे . सूपु. छू, ती हुता, ती या ती हुता, था. **H**TNI श्रान्तः विश्वत्वयास्याः विश्वत्याः विश्वत्यः विश्वत्यः विश्वत्यः विश्वत्यः विश्वत्यः विश्वत्यः विश्वत्यः विश्व पश्यावितः इवश्यद्रात्रहर्षाद्धरः। विग्राक्षरः परिक्रे अरार्घः श्रीः त्तुग्'ग्रुट्रा'द्रा'द्रा'द्रा'याद्री'द्रा'याद्रा'कद्र', पातृग्या प्'याद्रा'क्रा'च्री न्नवयन्न्न्न्रर्प्तर्त्वा ने ने क्रिं क्रिन्यं

प्रस्थित स्रिक्षण्यान्त्र प्रस्था ध्राण्या स्त्र प्रस्था व्याप्त स्त्र प्रस्था स्त्र प्रस्य स्त्र प्रस्था स्त्र स्त्र प्रस्था स्त्र स्त

ने'चर'ल'चन्न'हं स्थेन'र्'ने'न'हे'क्र्रहेन्'लन्स्य।
ने'चर'ल'चन्न'हं स्थेन'र्'ने'ने'हें स्थेन्'प्यं केन्'प्येहं स्थेन्''
ने हिन'र्र्राकेन्द्रसकेन्द्रपक्षित्रहेन्'त्रप्येन'हें। हिन'स्राकेन्द्रपक्षित्रहेन्'स्याकेन्द्रप्याके

सदतः तम्भुतः द्वायात्र देवः व्यवेतः यदे सातवावः द्वारं विवाधितः यः देः म। बर्ध्यवत्रिंद्रव्यक्षेत्र्यस्त्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन् दर्भूग'रा'र्बुद'नरे चनरा'र्खा प्र'र्खेनराक्ति'रे स्र'वेना'रा स्तर्दिः सुः तुः विवाहि वयः विवानिहास हितार्यः विवानिहे वयः प्राया ब्रेन्'र्द्यार्येन्य्रान्न्। ब्राथार्ब्र् व्याप्त्यात्र्यन्त्र्य्याय्यं तत्व वातरति सप्तवस्तिवस्यान्यस्यस्तरः द्रान्त्रा हे से वातर् हुँस देगानाबुद्रवा ने स्ट्रन्य इयाया सद्या स्वता स्वत सुन्क्षियन्यन्य स्नयस्न्य म् न्यायर्दि सुन्ति विवादि वार्यनेवा ग्रात्य। ह्रान्यविषापञ्चिष्य। नेप्यत्हेत्रवंयप्रत्यप्त्राप्त्रा पत् श्चार्य्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं ¥ॱ¥ॱॺॴॱतुॱऄॣॴऄज़ॱज़ॷॸॴ<u>नेॱॷ</u>ॸॱक़ॖॖॺॱॻॴॗ**ॴ**ॸॱक़ॗॸॱॵॸ॓ऄॱ विषायार्हें व द्या अप्तें यात्रु के व ष्यापा स्ट स्ट के व या पा कि व्यवरायहे वृष्यं वेदः यवेवाया तर्ने तर्रायन् वाष्ट्रवा त्या छवा स्या न्द्रन्याभवाक्षीन्त्राच्या सुन्यान्यस्यायम् द्रन्यान्द्र पर्व (वृह्णपहा प्रत्क कर मैह्राय ने प्रत्वेत्। प्रह्म क्रिय ने महत्महत्म् भेव। इन्यापत्यम् वर्षे वर्षामु मात्रु अपा विना न्वं सद्धितः प्रस्ति व स्विव स्विव स्विव स्वति । स्वति स शुःगह्यस्य विगानकेगवा ने प्यन् हुअक रंअ प्रेन्स्य परिक्री प्यन्त्र यहिंद्वत्य। यहाकेद्विंद्वत्यकेष्यप्रेयायर्भदिश्वा

वुकानुकानवुद्धाराया न्यायरानीवाव्यान्यस्त्रात्र्वायायर लग्राबॅद्वाया द्यादर्दित्रविक्षाम् के द्वा हिंद्किने **पनेव'रा'र्र्राधेव'व'र**्श्चें 'पत्य'र्व'र्यक्षय'हेव'र्रा'वेष'र्र्र् सुष्'र्य'र्धेव'' र्दिःगहुरुष। देःतुषायद्ग्वीबाददैःदद्युद्यनिबाद्द्यवस्यव्यव पश्चाते ग्रामर ग्रॅंप्य प्रत्व 'वेशक्ष्य' प्रत्या स्ताप्त । ह्याब नम्बर्गित्र प्रति । द्राय्य के स्वर्गे स्वर्गित में प्रति । प्रति के स्वर्गे स्वरं स्व ह्रवाराज्य वारायां प्रतावाद्य वाराया देवाने त्या के द्रारा वाराया हुर्षित्। यरवायरशु महुअन्वयाषु रायद्वराय दिनानेन द्वाया प्रकृष् ष्ट्रियमु छेन प्रसम्भाव स्व। देन छैराई हिन छै जिल्ला स्वराय पन वेत्रत्य मर्द्रन्व्यप्पापत्वेत्र्त्। नेपून्वेन्पार्क्यपर्द्रापा धिवाव। ग्रियन्ग्रवीन्ग्रयस्य स्त्राप्यक्ष। यन्ति साइयकाकावाता ५८-१ द्यरा दें यया दु हुँ ता देग के रा न में रा दे हरे रे । । ने प्रदेश **इन् अर्'रा'वेगाचुर्'र्र'क्र्यादर्र्न्'र्य्ञ्ज्ञ्यदे'र्ग्यादेव्यादर्श्वा** ग्रु अने प्राचार्यायाप्त में दें यातानु प्रमुत्।

प्राप्त त्र्य स्ट्रिं त्या स्वास्त स्वास्त स्वास्त स्वास स्

च्यान्यक्षक्राच्च्यान्त्रियं क्षक्षक्ष्यान्त्राच्चान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्त्राच्याः विद्यान्याः विद्यान्त्याः विद्याच्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्यायः विद्यान्याः विद्यान्या

पहलानिहास्त्राच्यां अप्तान्त्राक्ष्यां स्वान्त्राच्यां अप्तान्त्राच्यां अपतान्त्राच्यां अपतान

क्री इतार्य र र्सेयापा इवरा विन् की न में न र न में ता न र या कर। শ্ৰ प्रविगःपाविःशेव। हं प्रदे हेवासप्रप्रव्यवश्रुश्चेसप्रशुप्ता हिराहे र्वे व वाय विग् से हे 'रूप ज्व वा शुप्त श्रुतायव। प्पार विप्रूर पे वा वेर वा N'ज्ञर ₹र'कुग'गहारल। हारल'पल|दिर'गहाअक्टीपेर'र'रर'गहिग' र्भायात में वान् वा बुनाया विकास में मानिया है का वार्या ने त्या रति'शुन्दिर ग्रम्यापित। रेन्द्वानेर हेम्' बन् पित्रापिते छ। मः ववर्रेशयरम् प्रमुख्यात्र प्रदेश्यापरातर्गः दव ग्व कु ज्याया परायश्चरतापान्तवाचेरायाया यायावारेवरायाराञ्चरायाक्ष्री हुँ न राक्षे प्रव छ्प ने प्रां के विना तर् न पर रे। स्व प्र स्व पर स्व प्र स्व **ष्प्र- व्याया प्रमाणी प्रज्ञा श्राप्य क्ष्या प्रमाण क्ष्या व्याप्य व्याप्य प्रमाण क्ष्या व्याप्य व्य** यम् वित्रम्यमेन पुष्पञ्चन व्याया में द्वारा नम् नव्या हा हो तार् रह्यावीदारह्य दर्भामायस्यादेन। वीपन्यादायहरसम्ब ह्म यभूवाक्ष्यभूवायकेष्ट्रम्मया यायभूवायायस्य प्रस्थावरः बर्चुरायवा चतुन्र्चेग्रुर्वेर्प्प्र्र्र्र्प्प्रितेर्प्यावतर्भ्रत्वःग्रेग् हिता ने नियान स्वास्वास्त्री निकी प्रमिषा परायन निर्धाः यभैग्रायन्दे इवरायन्तर्त्रेण्यये प्रमाणे भेवप्रस्ति । ५'रूप्रे र्वेश्वाप्तिन् चेरान्यन् क्यापया नेति के त्राव्याञ्चर्यापाय हिन् वया ন্ৰণ দ্ৰেণ ভৰ্মন ইম্বাম দিন ট্ৰীট্ৰ ব্ৰ শ্ৰুণ নাৰ দ্বৰ। बरपंबें' र्दुशन्यग्'ने'र्स्याग्न'त्वार्यश्रम्'न्'चेरगुन्धुग्'क्वे'त्रेट्रेन'ख'तुशपरःरे' रेव्यायुग्रदिवान्म् तु रहाताताचग्रह्युम् पर्या गुर्वाधेव प्राप्ता

## न्नःत्रन्यः शुक्रुवाः म्।

ने'तुर्वान्वर्रन्'र्सन्'वेबेब'कूँब'र्खेंब'र्घं'यने' बर्ळग्'नीन्यन्'र्वे'ळेख**्र** हुन्परा स्याक्षेव्यावस्यन्यत् स्वाहिन्यन्यन्यन्तिवाक्ष्याक्ष महेन्यपाय। दें रायमें हं या विमानय। बारेकारी नारास्य। सु र्घेषारा गरिया गरा तहेस'रा'होस'गर'क्रेस'नदे'र्ग्रेगरासेर्'पर महिन्यायाधिवायम। नासवान्यन्यम् मन्दर्द्रियम् स्व ष्ठग्'नरं संव्याद्राद्रात्रात्रात्रात्र्यम् व्याप्रक्रित् व्याव्यायम् व्याप्रक्रित् <u> व्रि</u>न्थर्न्यन्थ्रें व्रिक्षेत्र्ग्युह्य। व्यविश्चयायात्रः क्रीव्यक्षाह्रम् पञ्च पर्यापय। प्राप्त प्राप्त विश्व प्राप्त विष्य विश्व प्राप्त विश्व प् नैयान्दर्दुः रेपस्र्प्रायम्ब्रुयायाः ज्ञायरेवायन् हिन् ग्रैराञ्चेतुःसग्दर्सं विग्यहे ग्रायास। प्राक्तां ग्राया न्यान् ग्रा षश्च श्राच ते'न् यन् न् न् व्याप'के' विवा न्यन' स्व' सन् न हिन म्व ने देव नवर ह वय वय वय देव देन उन मुल मुख क्षित व व वय व इग्नज्जा अन्तरायहर्ष्ट्रियम् द्रायम द्राक्ष्यम् अन्तर्भाव पातानवायायस्व मृत्राम् मृत्र वितानस्त ने नुत्रास्य मुन्त्रा म्रास्त्रितःत्वामु ग्रान्वयाम्त्राचित्रे स्वारिते स्वयायेवाया स्वापा रु'ते'वराज्ञन्यामेव'म्बुन्य। क्षु'यर्वरु वि'म्डेग्'ड्रेन्ररु र्ह्मान्युनः विनः यहना पर्दे प्रयासुन पा विनाय तुना पा धेव है। हिन प्र मुन्याया अपन्य प्रत्ये के प्रत्य के में वाप रात्र तन स्वाप्त राज्य स्व

रोवरागरीयहर्। दरराधराज्ञायरार्चेद श्चेश्या गुरुषा बहु के व्हिन् रूप् दे विषायाय यो है ग दे हैं विषाया इसप्रतिष्व्रवागानाम् द्वापित्राधेन् प्राप्ति न्याप्ति विष्या क्ष्मवा ने'र्सेन्यम'न्न'न्नन्न्न्न्न्वर्यम्याक्षेर्यावान्या नेर **B**श्चराकु श्चरं पर्देश पड़िया ति स्वाकु संस्था स्वाकु स्वाकु संस्था स्वाकु संस्था स्वाकु संस्था स्वाकु संस्था स्वाकु स्वाकु संस्था स्वाकु स्वाकु स्वाकु स्वाकु संस्था स्वाकु स् कन्पं प्रमा कर्प्य ने प्रेर रेप कुन पुर प्रमान कर्ष या विषय हिए। B 本がだって、おれて | B おかんてからの、中心、歌 一 大いり、美されて **रमरादे ग्यरात्राश्चीरमराव्या छे छ राष्ट्राम्या छ अश्ची विस्वराद्रा** मन्त्र-त्यन्वेषाक्ष्यागुन्ध्रान्त्रित्रानुत्र्वा सर्भून्ष् इस्रानु द्वातका नहिन वित्राह्म । महिन दिस्र मा दिन । हिन । हिन । हिन । स्रा सुरा ब्रान्तर्ज्यायानस्रापया ज्ञायतीत्रायस्यस्य स्वर्षित्र्रान्तरः म्रायायार्वेन्दारिन्तर्वे विक्रिंत्या मुद्यात्या वरक्रिन्त्र व्रातुन्त मत्रान् द्वारायवाया वात्राच्या ने द्वारा न्याप्त्र न्यन्या होने र्रान्य के वे अं इवक ग्रेवा स्थानि दें र लग्बा ६८ दें र ग्रेव मिं र ग्रेव स्वाक्षेत्रं हिन्दरायार्यन्याष्ट्रेरा नेव नेविवानते नगरायातानुः **ब्रॅन्'ग्शुम्बान्वेम्बान्बान्ग्रन्'याँ व्'यन्बेन्'।** इंश्निट्ट्याने, पर्वेचत्वा यात्राज्ञ्याच्यान्ता। म्बायम्। प्रदेशका विकास स्थापन । शेरपश्राम्यान्यं पर्वे अपित इस ब्रेन प्रेन न मा केंस पो की दिन पा बाबिन पा प्रेन प्रमा वा वा वा प्राप्त प्र हे छन वया विवाद या भवावया। यान वतन के या वेन प्रति वे यो वा व

प्रिंग'रा'तर्ने सके चेर्। क्षेप'यस क्षेप'यस क्षुस'यत क्षे। ध्रस कुष ळ्रवाराश्चरायञ्चन्यञ्चरा येवयाव्यायस्य सन्य सन्य सन्य सन्य ळॅगयायार्ययानसेत्रु वेयागुर्द्धरत्य। वळव्यायार् वेरायक्रु ঘষা ব্দৰান-খেন ব্ৰ'মাৰ্ট্ৰ'ব্ৰা দ'ৰ্ট্ট্ৰ'ব্ন' দ্বৰাদ্দ স্থিত্তী तर्भे 'श्चॅर'तां यद्यर **श्चेता** दे'व्याद्यर द्राप्त्य याद्य प्रेर र र हेर न्युर्यः द्रायादरायवाद्ययाया । व्यवायवर व्युर्वे प्राप्ता देवै तुराप्ति स्त्रायप्य द्वाराज्य प्रिया हुए है। क्वराविया यह स्राप्ति स् इन्'विन'तर्नारान्ता ज्ञाजान्त्रात्याध्यातान्त्रात्यातान्त्रा बापरःशु'नवि'तश्रवातरेनःतृषाग्री'वत्यनविषाद्ववरानश्रेताषार्वेषाद्वा। क्रश्चर्याच्यायाक्ष्यात् 'य्यापाराश्चर्याया स्थानीयाप्राचारायाच्याया वराञ्चव'ह्या'यरीयाहे। दराञ्चयायातु'ग्राद्या ञ्चयरी'ह्या'उ वातरः भवानुवायवाषव् भवा सववारु र ज्ञान् र वेर ग्रान्वरा म्रीताञ्चना निश्च अञ्चारा प्रवाहिना प्रवास मिना प्रवास मिना प्रवाहिन प्राप्त हिना प्रवाहिन प्राप्त हिना प्रवाहिन प्रत सरह रूप्ता अपास मुस्ने राम इप्तरा मुस्न के वा ने गुन्वर्धर्हे। क्षेत्रभूत्रज्ञ भुन्नेर्य र्ष्ट्र गुन्क र्ष्य र्ष्ट्र या म्य सर्वतः। तर्नेत्र्त्रीयववर्षीयवर्षतःन्तः म्राम्युनःवानः म्राम् PX:47R यन'रर'ञ्चाबाळेब्'र्ये'श्रग्रह्माबाब्यव्यक्षणुर'रद्रेब्'पर न्त्र विश्वराधराहेष्यरान्त्रप्य। न्तुतिरेताहस्यिनान्त्रर 

व्यापन। व्यायती व्यापन स्थित मेर्ने व्यापन प्रत्येत वसार्ह्र राष्ट्रेर परायुक्त पार्थिय पक्ष प्रस्ता कुर्चे वा वा रे वा वा पक्ष चेवा ब्येन नदुःर्मन्वियन् क्याक्षेरान्येव। अवाशंतरम् सुनातन्त्र न्यान्तुरसम्बा नेसन्यन्भु'न्यन्तिसन्दिन्यर्गन्त्रस न्- न् ग्रेराधित। स्रायां श्वरायां चंद्राप्यां व्याप्यां व्याप्यायां स्रायां स न्त्रवेशन्त्रान्तिपान्त्रव्यक्ष्याद्धरानु हिन्यय। देन्यस मिन्ति न्यन्त। ह्यान्द्रायेवाव्याक्ष्यध्याध्यापा वर्षाक्ष्यभ्याः **ध्वः ५५: न शुरुरा वित्रायः स्थापयः तेन यः ५२: न हेन यः ५२: यहरा इ**ंदि'श्चेरिदे प्रश्रेष्य प्राप्ति हें दें दु 'सं'प्रोदेश' गृत केद प्रकुष वृत्रेय। र्गादास्य प्रकृषिके । र्गादाय के तर्प के रापिके सुर स्वा विग्रुश्वर्यामेन। दरागुराग्रेकापतिर्ध्वग्र्राप्तरायपतिर्देराताम मक्ष्यामर हे में बु रे पामक्षेत्रपाषित। नेति है र के वात हे न वाय वाय केप्रस्वविस्त्रवाधित्र्यं ग्रीकान्युन्यायाने भारावन् अवायाना विवा मञ्जयकं व व्यवद्रान्ते। इंग्रेंन्यायन्यने प्रविद्येत् ग्रेंन्य त्वाप्यवा म्यास्य राष्ट्रेश्यायम् मुन्नाय ख्रात्य च्या च्या चर्तारा राष्ट्रा स्या स्य विश्वक्रियायम् व्यापया स्रवीत् क्रियायायम् य्वाप्तया नेराञ्च यतेः मग्द्भैद'कुस'गर्द्द्र न्यात्व'तु हिर्द्द्र व्यात्वात्र सुत्र नेत्वत्वात्वात्र व्यात्वात्र सुत्र नेत्वत्वात्वात्र बयाग्रेगराय। झयठेग्युर्क्षुयप्रदेशुयापुर्देयद्वरहेन्द्रया बरपंरर्भरार्भेग्रियुक्कपंर्मरत्रुग नेरश्चरवयारण्ययात्रा म्या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स

पा चर्नानुबाङ्क्यानुब्रान्त्रित्त्रित्त्रान्त्रित्त्र्यान्त्रित्त्रान्त्र्यान्त्रयान्त्र्यान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्यान्त्यान्त्रयान्त्रयान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्त्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्य

पन्प'रा'यग्रानु रापया म्बिश्रम् हिम्हिन् हि। म्यार ग्राय हिन्दर्भेरदेश्यरक्षेत्रश्याच्याच्याच्या क्ष्याः अरः ग्रं पञ्च पावश धिन् गृह्य अन्य स्टाया स्वयं स्वयं व्यापान हिन् गृह मुल्य स्वर् म् अर्थर-व्र-र-र-प्र-प्रतिख्यार्ग्धिन्'ग्रुअर्त्यतुंपकुरःग्रुप्याः" गुर्रार्यर्वा के अप् किर्मे विष्ये हित्र विष्ये विषये विषय क्षे हो र न ते हुं अर्थन में न जा है। त हो जा की त है जा की त हो जा की त हे'त्र्'तु'नञ्चवसर्व्राच्यान्त्। सेवसम्बद्धायात्राव्यत्येत्'यातुम्विष्रासु वि'नदे'अ'सु'सु'हुन्'उन्। धुअ'न्-'ग्रॅंश'र्यन्'प्न्न्। मुयानियाके मश्राचित्रायाच्चेन्यराज्यरानुर्येषाव्याद्वाचेन्ययः। ध्राक्चित्रा र्देव'गुन्द्रस्विषा'ग्वर्प्पंविषा'देश'गुन्देर्'। देप्रस्यान्त्र है। नहिन्। द्वाना द्वाना हिन्द्वाना अति क्रिया स्तर्भा स्त न्यश्राक्ष्रीत्रात्रात्रेश्वर्तात्रात्रात्रेश्वर्तात्रात्र्वर्तात्रात्र्वर् स्रायन्त्रं में भु देव प्रयाप्य प्राप्त वा स्रायि स्रायमिव प्रयासे वा प्राप्त प्राप्त ग्रान्द्र-द्वर्ध्यापात्र्रं प्रतित्र्रं क्षेत्रवा म्प्रत्यं 지지의 **ॅ्रन्य दे** द्विष्य अस्त्र व्याचन द्वित् वित्र अहे ना स्थान वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र

 मना केंगा है र दूरि परि प्राया चंगा हु र तरी है से से देश विग'नेवान्ववारग'र्वेरापर'युवाय। पर्झववाववाळे'रदेरवरवा मुराधितारा विगानेत् प्रांत्राञ्च अत्या यत् सार्च प्रमुखान्या व्याप्त **後が大さればされているからいのはいないといばはれらいがあればいるがないだけ** न्नन्र्यं छे लु र हुन्यव। धुअ की लाववा यान यावर ताव की लगका र्हेग्। तर्ने चं अधी अधी केंग्। प्रत्वे र र र ए। या न छी शव। प्रत्य ति त्राता प्राप्त स्ताने। न्नरमंनानरमंनायां नेनानेन्यम। वर्षेस्तायार्थेनाया हिंद्र'स्ट्र'वीबालुबादीवा व्यावाद्र-व्याद्र'पिबावाबुट्या ध्रयाद्र-रावी मना दॅ र क्रे न्या द्वा प्रमान्य र क्रे त्या वे न वा या वे ना न व र पा दे न व व ५'८व'क्के'न्यन्त्रे'यन्ग्'यदन्केशकुन्न्वन्यरःवु खुकाने। न्यन्त्रात्रात्र्यन्त्र्या न्ध्रःश्च्राःकेन्याः व्याःकेन्त्राः त्रह्यायहर्द्री पर्गावेर्'यार्चमार्म्ग्'ग्रुर्या ध्रमञ्चन्'र्ट्य महा मन्ग्वेन्यारे क्रियायाम् पर्ने ग्वहा हुन ग्वहा मारा नेन स्यानु राख्यायन म्यास्य विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषय विषय विषय विषय विषय लन्ना तर्नेन्द्रांद्रांत्रायावर्षायाकीत्रात्र्र्हे द्वारायद् ह्यन्यन तुरुषे शेषा देवा भेष्य । प्राप्त विवा भेषा विवा है । यह ते हैं । इत्याया र्श्रान्यं व्याप्यात्रने शुः तात्र स्था व्याप्या स्था विष्या विषय । यन्या रराषीयपार्वे रार् पवरामायपार्वतरा। न्तुःतरीक्षेराहे द्रप्राया न्द्रन्ध्रात्रिक्ष्यात्रव्या न्यात्रिक्ष्याः स्त्रीक्ष्याः सहा क्रेत्रत्य <u> र्यर पश्चर वृज्य हेलात हेन प्यर लु।</u> सूर र्यर ज्ञाय द्वाय हेन परिःधिकन्'वन'सं'रन'र्बेन'प्रवान्'यव'त्र्'वा'य'रिविन्यवक्षांत्रीवात्रान **८६.७.५.५७५.३.५४.४.५०.५७.५५। ७०.४८.२.५५५००।** म्रायास्य वात्रास्य देशस्य वार्षे न्वत्त्रत्वतामानुषापराने स्राप्तान्यां विद्याष्ट्रयान्याया विद्यापा सुरायम। ज्ञायदे वियायम। यन्यायेन यदे सेन स्वाया सीमाया मन्द्रां श्रीता मृत्यं केत् चित्र हित्र हिन् ग्रा गुरु वा न्या ग्रीता हु मलेबान्याचन्याचेन् अहिन्प्ययायह याकुना हिन्प्र देशा सन् न्यन्त्व। ग्राथान्यन्यन्धेत्र्वन्। ब्रमुक्तेन्विन्नन्यार्वेन्य्यन् व्यक्तिरः वृत्रान् पन् प्रमुक्त क्षिया म्युप्तः रन् ने मेव प्राप्त वृत्रा वृत्रः श्च अधुना वाष्ट्र सन्दर्भ के सम्बद्ध सम त्र्वाचिर्द्धन्कुस्यक्रियन्द्राचाहरम। विद्यत्र्वाहर्ष्या पर्पथा वर्ष्यम् देशस्य स्थान्ति । वर्षा <u> नृश्वा प्रवेश हुर्या स्वामेश प्रदर्भ प्रतास है वृश्व न् वा स</u> महत्यानेनायन्यानेत्यानस्त्याह्वन्यम। न्नायान्यान्यान्य वित्राचन्त्रवाद्यकारावेत्याम् स्याद्रात्रवात्रात्रकार्याव्यवित्रहे। द्रवाद्भव अक्रेपाद्भ वाश्वयव्यद्भाय दिन्न । स्थायमाञ्चर कपार में द्राविता हुत्व्या बहुकेव्'वेयव्ह्रम् मं अहेत्'ह्रम् ह्रिन्यमम् कंपन्त

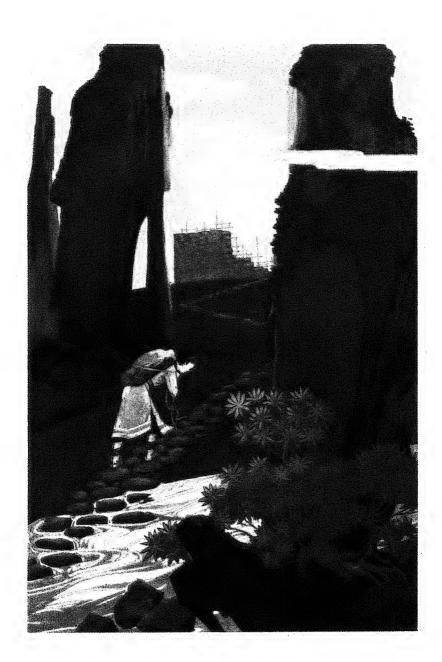
ब्रैट ने प्रति श्रुप अंके दिन्यवा श्रुप वृत्य देवा वृत्य देवा वृत्य व्या **ন**রি'ঝন্তব'ট্রব'ত্রঝ'ব্রঝ'র্হঝ'রু'ব্যর্ব'ন্-'রেন্রঝ'ব'ঋন'য়ৢৢর'য়ৢয়'বয়ৢৼ''''" रोयरा गर्ने यही इस्मिन व स्वासिन व स्वासिन के मेन र मिन के বৰুগ্ৰহ বুৰ্থ্যথ। नेते तुरा सं राय संवाधाया हाराते ज्ञाया र तुवस वैनः पतु गुरु। वन कापरानः ताञ्च अते जुन् पुरुष। के वा गुरुनः पाभेव'व्याक्रुया हेव्'पर्या वर्तर'र या हिंद्'या द्वराया सुरापाया न्वत्रन्त्रंव्यक्ष्यं द्वन्द्रया बुद्रवा व्यव्यन्त्रं व्याप्त्वा व्याप्त मवाराहे। पर्वार्रास्यक्षि क्षेत्रक्षेत्रस्य द्वारा रराष्ट्रि मन्त्रातु सन्दर्श द्वापय। ५.५४६ अ.५ न्वा छेन् परि खुवा २५ के वेन् <u> चर्न्यक्रें प्रत्यं वयं वयं अर्थें व्याप्त क्रिया होत् प्रत्यं हुन्य होत् प्रत्यं हुन्य होत् या व्याप्त</u> नैति:क्षेत्र'र्चव्य विषार्थेत्'त्वस्त्र'त्यर'त्र्यः कृत्वव्यः रष्यः **विषयः** परस्ततुष्यः"" 13 न्'ब्रु'ख'तन् वादे'त्र्वत्'त्रेन्'प्र'वान्वव्रर्गन्वां वाद्र-'प्र' तत्व ग्वन्द्वित्उर्त्वायावीर्वेवार्वे वे वे वेर्त् र्ह्यान्ने के हिंदा दा रात्तर वा क्रियाने राष्ट्री के श्वरामे वा वा वा वा विद्यार प र्षात्। र्'रेंद्रग्'व्'रेंद्रग्व'क्र्यंदात्। यर्'ह्र्य'र्दे केव्रदें हेर्ग्यो न्या पुरा पुरा से सुर प्रमा विकास के बाल प्रमा के का का मानि के कि प्रमा के कि का मानि के कि कि कि कि कि कि कि मन्त्राभवत्व्रच्यायष्ठ्राच् राष्ट्राच्यायायात्रात्र्ष्ठेवात्रः स्वाप्तरात्त्व षायपर स्त्र प्रत्य प्रति । द्रा हुण्यतर हेर्। 可下骨下

ब्रम्डिश्रहेत्रायत्यार्वे स्रवेत्रायान्यम् दुर्वे विषायात्रे प्रे व्रायराणा त्रण त्रायति हे हिर्दर् हण्या हिया यय शे दिरा श्रुया राज्य हो नि क्रान्त्रवाह्येरहे। ध्रयायायारायानुवाधराराह्यनुहिन्धया। सयानराया सभाक्तिकार्यात्रेत्रद्वर्द्वर्वर्वर्वर्वर्वर्वर्वर्वर्वेत्रः Nअ कुर्द्र विषापी अर श्रेयवादा प्रति हैं रव ही प्रति हैं प्रश्नेत्वा ने'वरार्श्वेन'श्वन'ग्यन। द्युक्षे'भेन'इयरापर्रगरावरार्द्वे'ग्रेंसाहे वर्ष मना ने म हे - प्रेंता र्वेट्। ने र प्रश्राम । द र प्रश्राम ह र प्रश्राम ह र प्रश्राम ह त्रत्व न्वर्याभिष्यं व्यापिष्टे वित्राप्ति । प्र ग्रीसर्भ्रे न्यायस्य न्यायस्य प्राप्ता वाद्य प्राप्ता कर्याया विकास स्वाप्ता कर्याया मुक्ता न्याया विकास स्वाप धेन'प'ल। न'दर सप्ताध्यालावस्याने'विगानुसञ्चारें प्राचीन दे परःततुन न'तृनःसन्।न्यः कुथः नृतनः। सन्।त्रेन्द्रः क्षेत्रव। र्षेत्'ह्युत्'क्रवरार्ह्येत्'त्रुं हीव्'परा वी की नव विनाव'ते। वी न विनाय दॅर-दॅर-दर्-ब्रॅन्त्र्ग्याया ब्रॅन-चाययन्यान्त्रीग्-वेशव्रक्याच्या श्चित्रान्याम्प्राप्त्राच्यान्यत्राम्भ्यान्त्राम् वित्रार्ध्यान्त्रम् राम नेराया र बुद्द में में राय देवा में वा ने सहसार का दे गार्च्यागाग्नित। देवावगात्नात्रात्र्वेवार्च्याय्वर्ग्यर्ग्ने हेर्चेर नयान्गरही उन्छयानसन्द्रयानजन्द्रन्यानमान्यानया हना स्डिते इस वर वर्षे रहे। दे र वे र व व सर्ग ता वि र व व स्व है र है स्यार्थिग्राह्मां महिन्द्रमात्र्वा है। क्षेत्रायहें महाराह्मा स्वायद्यायेत्।

श्रुद्राध्यायेष्वाय्यक्षाय्यक्ष्यः विषाः श्रुष्यः विषाः श्रुष्यः विषाः विषाः

प्रअः ग्रीवाः व्यक्तं ग्रीवाद्दं क्वां में बावा में त्या प्राप्त व्यक्तं ग्रीवाः व्यक्तं ग्रीवाः व्यक्तं व्यक

प्रविषाः द्वित्राच्याक्ष्यं त्याव्याया व्याप्या द्वित्राम् स्याप्त बैव। विन्दर्भुवायार्वेदवायाध्येव। श्रुवातक्षानुः विद्याद्यत्रार्वेदवा द्यग्त्रात्रात्राद्धेवायय। ज्ञायतेत्वताव्य। यद्यकेवा र्द्यार्द्रपान्तार्भ्यायनापराभेतावयार्क्रसात्र्न्याध्येयावा स्याद्धेर र्खेना'गुर्-'नोर्हेर-'र्वेन'या वावर-स'र्-'हेन'ना खुर्अपिया ग्नवर्गर्गकेर। ने'बेद्रारते'हें ज्वापाबद्यावर्गहें राहित्ररात्रें स **यन्यरात्र्वायस्य स्याव्यास्य यात्रा यम् अवाव्यास्य स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्य** र्दरका है। शुक्रातान् व्यायान् प्रवासन्तर्भातन्त्रा ह्याया है व्यायान्य वि ग्रापरम्त्र। अवरायशिवधंकरात्राह्मावरादान्त्रा रेव केंग्यं ग्राम् ता है। वादराय वा कर हेर प्या केंग के ग्राम प्राप्त कर हेर केंबर्न्'हिन्यं बेंग्न्रयय। पन्ग्ख्यानु तर्में पर्न्तु। यपः स्य स्वायक्षाचनान्त्रः स्वायमान्त्रम्यात्रम्यात्रम् स्वायम् व्याद्र- म्वय्यम् यात्रा ध्याम् । व्यान्य व्यान्य व्यान्य । प्यान्य व्यान्य पिश्र हार या पा केरा हा अपर राजी शुक्रेव अर भिवा ग्राम स्वराप पा अपर पा अप लन्पतेर्देग्र्व्यायश्रम्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्या होत्रपंक्षरहोत्रान्वस्य। देर्र्यार्द्रवस्य होत्रहर्ष्यस्य।



**डिकान ते सुन् ग्राम दे।** ध्या ग्रीका श्रुपा इस समाञ्चायाता याना याना प्राप्त प्र वदार देव'र्'मञ्जूष ध्रयंन्र'र य ग्रुर' यर'यर'द्रर य। तदीर संमू मॅं के न्यू स्तर त्र्य म्हा ग्रुम सुद्धा यहिय पुष्य स्वर्ध यहि सूप् इयरागुर्पर्पर्वत् ज्ञायावीख्र्यंत्राप्राप्ता द्रॅनरा ग्रेरा नेव (तृप्त प्रवास समाप्त सुग स्र स्र न तरे हैं। धरा ग्रेस म् नेयस्यापर दस्य व्याप्त स्वापा क्राप्त स्वापा हम्याप्त स्वापा स ॻॖऀॺऻॡॱरव्याय ह्रं वह्र प्राविषात्त्र्वापाने त्या खुवा ह वया श्रुवा हु या पा है। हेन'इसमान'पनत'पनर'रंगड़िया याउते'र्मावमानन व्यानः तान्वरः है। ध्याश्चे व्याव्या तन् इवयाञ्च वया तसुराप द्ररागुराय। इष्ट्रम्पित्रुत्र्रापुरायाक्ष्यानुराष्ट्रियान्युत्राम् र्'यहर्राही र मुखर्मियायाताम् न नर्'न्याधेन।

ने द्रवाल्या यह स्टाल्य के स्ट्राह्म स्ट्राह्

मन्त्राद्धरः स्विषायरः स्ट्रिं स्थान्य। विष्यं र स्विष्यं प्रिं स्थान्यः विष्यं स्थान्यः विष्यं स्थान्यः विष्यं स्थान्यः विषयं स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्था

र्रम्प्यात्र्राष्ट्रिष्ट्रम् मन् में तान्त हुना महिसातकन् केन तर्जा माना के सामस्यान तर्जन्या म्नान्स्यायन्ता रन्तां स्वायाय्य विवायाय्य स्वायाय्य स्वायाय्य चञ्चच छ म। तहेव हेद तहेव हेद त द्यारा हैद न्यतिः तत्विव्दाः। विश्वान्यविद्यान्यतिः स्वर्वात्। त्राण्यतः म् न्यास्य । स्याप्ति । **६८। শ্রস্থমান্ট্রাক্তির** শুরুবারি প্রমান্তর বার্থ প্রমান্তর ক্রমান্তর বার্থ প্রমান্তর ক্রমান্তর বার্থ প্রমান্তর করে প্রমান্তর বার্থ প্রমান্ত বার্থ প্রমান্তর বার্থ প্রমান্তর বার্থ প্রমান্তর বার্থ প্রমান্ত বার্থ বার बर्चवर्षा ग्रीहेव १८ हो तापार भेव १५ १ते गया है। विर र र हे या गुव श्री नन्ग्रंस्ट्रिन्त्रत्तुग्ध्य। शुभिक्द्रश्रम्ग्गाश्चरः। सुदान्त्रिग रिश्वराष्ट्ररावर्षार्देभेषाहे। हिन्दिराग्नायार्धेदानेरामा नया <u>ञ्चायायरपाञ्चनयाञ्चेत्रावयारा गर्चनापु त्यार्कयानायुराञ्च तयायाञ्चरा</u> मय। तर्रस्यालुन्द्रस्यायाधित। देते:खग्राहण्याखुन्द्रस्तिःभुः बरी हुए हु। अप्रांच मुक्ते व भेव पार तर्ग देश लु में व म्या स्था मल। हाल मैन तुल हे लाहे। नित मन्य रार हे में दूर राप दे भु कुन <u>न्रामुग्यान्यार्म्राम्थानुयासान्यत्याक्रम्यान्याक्रम्यान्याक्रम्या</u>

नसानसुन्देन्द्र्या नेसान्द्राया केसामान वित्रम्यान्द्रवर्षास्यान्त्रत्कुत्यः वस्त्रप्तः स्वर्षः द्वराष्ट्रस्याः श्रुत्र 5'र्नेन क्ष.च्यामुळेव'पान्चे राष्ट्रे न'पानिनामुन्यान्युरा। नामुनापरंता रान्। वर्ष्यप्रस्त्रा याना विवाद्यनः वर्षावयः कृष्यक्र ( ८४। धुन् पर्दताकाने त्या द्वीका द्वन् । ८ इता क्षरा क्षरा क्षरा क्षरा क्षरा क्षरा व ৡ৴:৴ঢ়ৢ৾**৲**'য়য়৾। ৾৾৾৾৽য়৾য়ঀ৾৽য়ৢঀয়ড়ৢয়য়ড়৾য়ৢ৾৾৽৴ৼ৾য়য়ড়ঢ়য়য়য়৾ঢ়ৢ৾য় क्षाष्ठ्रमायाष्ट्रिसम्बद्धस्य स्त्रीयाच्याच्याः व्यवस्य विक्रायम् उ श्चेनलापान्ता म्लास्यायर्थास्य । ह्यार्वेन न्तायर्थापास्य । श्चरंक्रपायशैयावेरांन्सुर्वेगाः स्वाविष्याचेत्रात्र्यात् साहे। हेन् इसरायकॅर्पान्नरार्गान्यम् सराद्याहेदाक्षीम् संस्टात्वारासुन्य खन्। हन् न राने प्राप्त न स्न क्रिं से हे राज क्रुप्त हारा तरि राज बस्वयान्यार्येन्द्र-विवायाञ्चवाव्यवाञ्चेवाद्र-प्रद्र-प्रत्वाया विं द्वित् 'ताक्रम' बुरायहराया भेदाया व्यतः यभुरावा वामा विवारमा द्वितः ठेग ने'क्रर**ा**ठरामराहेंग'प्रते'प्रस्य वृ'र्सते'क्रु'ज्ञन् हुग्रान्य'पञ्च' इंग्इर्वरान्स्रराधेन्द्यानिग्दरुग देरहायरेवायन्। हा सदै नगर भेद प्रवा नगर न्य विवास वा के का गुर दें दा। प्राप्त न तर्नि दिन्द्रिया में विश्व क्षार्या स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स् धिन। ८.प्रापवयान्टान्यायार्म् प्राप्त साम्यायाः वर्षाम् प्रायाः स्र बिदः प्रद्राया द्रेया की प्रवास में अवार्थ द्वापति वे द्वापती वा स्वा कुण्यायर्गे में न् नु खेषाय हुण्यया ने र से र प दिवा में प ने द स

रव्यान्तर्द्रपादिवादिन्य। शेरापात्त्रप्तर्वापान्यायते रेंह्याता हर्षाताला हर्षा कृषा परिताल क्षेत्र हिंदा पर तर्त वा वा पहर व **१**म् अतिः नगतः नकग्पराधारायाः वित्रहेषा गुराके मिनास्तर्गाः । बेर्याक्षेत्रहेर्वास्त्रक्षेत्रत्वा स्थापस्य ग्राह्मवा हिस इनकामतेष्व्वाद्वेरक्षायान्यद्वेदाने। समासञ्चरकारेरन धरार्थे र ज्ञव खें लिया ने दर र र पवरा नायर है R77' (5'&'7' 55') कर विवाधकाराया भूगायक्षिय प्रश्चिम भूति भूति भूति विवास प्रश्चिम नत्यां रेरेरे न वेशन वेश वह राज्या न न न म न स्थार से राज्य न त न स हैर'रबान्राच'चेर'ह'वेर'तहुन्।यहा रहाकृन्दिन'रुन'रर'पहान्ध ग्रस्कॅलिट रेप्ट्रिलेग्फॅर पाश्चर र्'रेश्वर रेशर र राज्य 정리 मया सन्दर्भतन्ति । शुष्पश्च अस्त देन विष् हेरा क्षेत्ररयान्यात्रान्यायायायात्रहते,द्राम्यान्याय विवसान् हुन हुन हुन विस्व व स्वता स्ता निरसे र स्वा हून व स मक्रमञ्जूषाया धारामा हेला कुला के स्वा की में समस्य कर में मा में मान मान बिर्-पावव मनस्य उन् विश्वपाय निर्मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व क्रुवाराक्ष्मद्वाद्वाकोत्त्वा अञ्चलेरायकान्द्रात्वाहेराकुर्यवाकीवायववा बिर-दे'लाडीकागुर-बेर-च-के हुर-दुर-बेर-चचपकार्वे लाबेर ने तर्ग विमारी न में सामा इस्मिन ने साम व व पारि यह तारी र विमान में सामित **व्य**न'श्रन्।

ने'वरान'र्सेन'र्सेनस्या भग्र-नुखुन्स्युन्द्रस्याखुर्नेन मैंबाब्वेरप्तरे हैं पें जब देवान देश प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प न्नाया हेन्। पति ज्ञुः पा इवायाया यहँ या विष व व हैं या व । ये स्वायाय हैं । हन्। त्रुप्तनेनसर्वेष्युप्ततिष्ठैष्यव्यन्त्रुप्तस्। धुत्रानेष्ववेद्याग्रीद्यानुद्यायद्य त्तृत्'ने'ॲव'पत्ग'रु' गुर'धराष्ट्रीरा'त्र'वित्यरा'र्हेग'रु'र्द्र'तत्ग नैरामला देर सुन विवायमा विवाय सामुन ही दुवि में अमार्थ हेन पानमा Nयानरः गुन्नायाद्यः नृतः द्वै प्वतः संभूतः वेन् विन् विन् विन् विन विन् विन विन विन विन विन विन विन विन विन वि विवसक्षेष्ठेन्द्रन्त्र्यवास्त्रवाद्वर्त्त्रात्वर्त्त्रः व्याप्तिक्ष्यः विवसक्षेष्ठेन्द्रात्व व्राया नेवार्या केन्यान्या मेक्स्रिं स्वाया न्यापा ते केंद्राया दे स्वाया वि ने। श्चरायां कृषाया दिया स्वाप्ताया श्चराया विष्या दिवा वाहिया तळतावेशवश्व श्रद्धापता झ्यतिवत्रावता अर्चे अ मुळेव दे र्दरा भुग वि ५ में या ४ ८८ दे दे दे है ते कु ए पा या के ग में के पर्द व मनवाशुःबनवाकुःन। मुःनकुःदुरः इंग्वर्रेगः वैदाद रेन् पदेग्न वदा मण्यन्याधित। न्यान्येन्यास्य प्रस्तुः क्षेत्रं क्षेत् अदिन्य प्रतिके। हिन्दर्भ अस्य प्रस् व यापर स्व यापर विन्त नेरात्रिराक्की मेंगायर है। पायित। ने परायाद विवाह वादि र दार्थर दार्थ ब्रे प्रकार्वरप्रयम्भीकानेव भेर्पक्षेक्षः व पर्ने स्राधिव प्राधित्य। न्रहिण्न्वेन्र्राथायाव्याव्यायावेश्ववर्त्रेश्वेषावेषायां न्रायायाः रंष्ट्रवर्शकन्र्संसदराष्ट्रस्यम्याते। अन्दिगाने वेन तामद्याता A स्र र गु र र शक्ष A हिता र गु इ बका र र र र के के ति प्र का कु के र पा

<u> ५८। श्रुः अप्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्</u> न्'यन'रोबर्शंकन्'यन'र्ये'रन्'विग्'भि'न्'त्रेलेन'ह्रे'क्रुयारा **रगद**वा हुत्। ने'न्यान् ग्रेयान् में हेते'न् ग्रीयात्रियः नु'न्यनः प्रभुत। ग्नयया रग्गव्रव्या अविग्नव्यायाम् न्यायाम् ब्रुग्द्रम् द्वाविषा ततुष्य द्वाविष्य देवा विषय द्वाविष्य द्वाविषय द्वाविष्य द्वाविषय द्वा म्राजनार्कन्यम् वृत्तः वित्राचेत्राचेत् 'तु 'त्र क्रेंबन्य दुत्। वरापति प्रमानाया कार्ने अमु केव। हन्यात्री तर् न्यात्री तर् मुर् दे मुर् दे मुर् द्रा षद्या गुर्ना सन् वात्र वारावा के ने रादि कुर्ना दिन दे वा के ने ने रीताः बेन् व व व है न व ग्री पें व ह व खु र नु खे ही प्र दे ख हु 'बेन् 'रा' बेन्'''' भिवाने। हिनानमानिमान्नामानिमा सामिता सामिता मॅ्यान्देश्वग्रम् ग्राग्यरः द्वापरः येत् क्यित्वय। ग्राक्रायत्रः क्षेत्र'रुषाक्रेत्'त्र'क्षेंश्रवानेग्'ग्श्रद्यायव। तदेग्याक्याप'वेग्'रुत्'हे। न्द्रश्चर्वित्राञ्ज्यापाय। वि'न्द्राञ्चन्यापन। व्रायायन्यते 

 इसरानुसायन्यानुष्ठेन्'राभेन्'रासा ने'साह्येन्'रन्'यान्'नेन ने'न् देन की के प्रदर्भ में प्रदर्भ मा दे प्यतः दे तु का हिन में मा महा दा दे मा त्त्रग्यत्र। ह्याद्रम्प्रदित्युगः क्षेत्र हुँ व व व प्रायुद्धिया प्रश्न व है। खुन्दाधियाञ्च वरीपन्दर्भ वर्षा प्रमान्दर्भ वर्षा व अन्तानीत्वात्त्वत्त्रिक्षेत्वे वेत्त्वाक्षेत् व्यान्वाकाहेन्त्त यक्षापाध्यामुक्षाप्वराद्याप्ति रायस्य विश्वराया। क्षेत्रे नैकान'रूर'रे'ग्रेकाग्रीकार्नेन'बेर'ग्रीपकानिग्'ग्रकारतुग् ज्ञाबदे'राग्रकाः क्ष'ब्रांभाव'भव'न्व'क्षेक्के'ना'भवादिवाबेन्'ने'ग्राज्यवाबेन्। हिन्दरास क्ष्रां मुश्रुम् प्राप्त तुर्या स्वर में तक्ष्रां स्वर्या स्वर्य न्या प्राप्त स्वर्य न्या गुन्द्वग् हैं भार्त्रे प्रम् ह नि सप्य। दें नहें नि स्वर्ग प्रह्म स व्या तुरानेरायां ठव् श्चेग् तृ र्यन् यन्। ने प्रत्याय कंवयां ग्रीस गहारमा

ने न का नु का के वा प्रति त्या का ति ति त्या का त्या वि त्या वि त्या का त्या वि त्या

चेन। विते ने प्रवासित क्षिण क

**Ҁे'वबाञ्च'यांद्र्यापायांस्ययात्रिंग्य्राम्यः मठबादाः कबाहे**'क्ॅांदें'सु**र्'''** निवर् ने त्रेत्रारा रूटा व्यवे (ब्याव्या अर्धे वर्षे वर्षा रूर्य म् ध्याक्री हु द्रु देर्द्र सम् रहित्वे द्राये द्रु स्या हर्द विषा छे । यह द्रु साम मृग् ग्रह्मद्याच्या महूर्याय हुर्याय ह्या स्व या स्व स्व स्व स्व ध्या-त्र-स्त्र-कृतःस्तावय। स्यास्यानारः । मन्द्राचनुष्याच्यान्त्राच्यान्त्राच्याः विष्याच्याः विष्याच्याः विष्याच्याः विष्याच्याः विष्याच्याः विष्याच्या क्ष'ग्रेंबक्ष'वर'ने' भर्षेत्र'क्ष'क्ष'वर्ष'वर्ष'व्याव्यं क्षेत्र' स्व चलुवासः तत्रवारात्या । अवार्तरः त्रः अवाः अतः तसः वतः तुराः तुः विश्ववा स्टा विपायकासियापकास्त्रम् मृत्रेन्यायाया चन्नाभाष्यात्रात्यां व न्याव म् श्रेम् खन्या के प्रवेश दिन्। व अ सं न न न भुःगनुन्द्यम् क्रीहेद्रन्तः। मुर्गर्म्यास्य न्यास्य न् र्गुः इंग्रियं पराष्ट्रे र बंश्रिवं कुंबे के लें र स्वा वर्षा देशाय है। कर देन रेप र र प्राच सम्मन्द र पर विश्व स्थाय हिन य जात महिम्स हे खुन्य के मृत्य नहें नुका निम्म नुका निम्म ब्रायग्रः भे र्रेन् प्रवासी कारी हिमापि दिन्द्र व्या कुन् भे प्रविति र्ने व केन हिर्यदेख्यर्प्त्रिंदिर्प्रक्ष्यं द्वाराष्ट्रियं द्वाराष्ट्रियं विद्राप्ति इदिः चेर्यावेषा गुर्वेर्यते। विंतुर्त्वे गुला गुला त्रार्वेर द्वा हर्त्ताया रखें द्वाकेदार्वियायीयानशुपान्यीयाद शेरिन्नयन् हु-र-र्विग् गुरुवा बुद्य। बु अते प्रगत् पति इ स्थाय वु बप्या

म्ब्रान्यस्त्। स्वाधित्वत्याः स्वाधित्वत्यस्य स्वाधित्य स्वाधित

ने'क्षाङ्गंत्रग्'युर्प्पते'के'यर्पं प्रयायाया है। य्राक्षिके'तर्व।

ग्विस्याप्त्रप्ते प्रयाप्त्रप्त्रप्ते प्रयाप्त्रप्ति व्याप्त्रप्ति प्रयाप्त्रप्ति प्रयाप्त्रप्ति प्रयाप्त्रप्ति प्रयाप्त्रप्ति प्रयाप्ति प्रयापति प्रयाप्ति प्रयापति प्रयाप्ति प्रयापति प्रयाप्ति प्रयापति प्रयापति प्रयाप्ति प्रयापति प्रयापति

न्याःभैशनेश्वायुन् न्याःभैश्वार्मेशः विश्वायुन् । श्वायःभैशः नेशः विश्वायुन् न्याःभैश्वायुन् न्याःभैशः भैशः विश्वायुन् न्याः भैशः भैशः विश्वायुन् न्याः भैशः भैशः विश्वायुन् न्याः भैशः भैशः भिष्वः विश्वायुन् न्याः भिष्वः विश्वायुन् न्याः भैशः भिष्वः विश्वायुन् न्याः भिष्वः विश्वायुन् न्याः भिष्वः विश्वयुन् न्याः भिष्यः विश्यये विश्वयुन न्याः भिष्यः विश्वयुन् न्याः भिष्यः विश्वयुन् न्याः भिष्यः विश्वयुन् न्याः भिष्यः विश्वयुन न्याः भिष्यः विश्वयुन न्याः भिष्यः विश्वयुन न्याः भिष्यः विश्वयुन न्याः विश्वयुन न्याः भिष्यः विश्वयुन विश्वयुन न्याः भिष्यः विश्वयुन विश्वयुन विश्वयुन विश्वयुन विश्वयुन विश्वयुन विश्वयुन विश्यये विश्वयुन विश्यये विश्वयुन विश्वयुन विश्यये विश्वयुन विश्यये विश्यये विश्यये विश्यये विश्यये विश्यये

देवागुड्यायति हेवाड्य। ज्ञान्यार्याय तत्वापा इववाद्यायवा न्नायर्भवार्यके। श्वेराग्रेकायन्यारम्योज्जामान्नायम् वतर। ५'यव'छ्र-'पर'र्'ध्याव 'र'यावयावयाव मर कन्याविना यर्'रा ने हुँ र गुरु र इसरा गुः है 'से प्रेन प्राम्य महारा ५८। । १५ प्र र महारा हमा वसायरि स्प्राचे र प्रस्तुरा ने बैब में स्प्रान् गृत न्त्रां सामा त्वतान्त्रम्या न्यत्यन्त्रम्याः व्यत्यन्त्रम् **छन्।यर क्षेत्र के निग ने ता के गन्य या न ग न ग र ग र म ते या र हे व पा र ल के व या** व्या स्मास्याप्ता श्रामाया श्रामायाप्ता स्मामायाप्ता रते'चर'ष्ठर'ठर'ग्रे'र्रार्राप्त्यरा'र ग'इसरा'ग्रुर'। श्रेर'ग्रेस **१ हे हे ग प ते हे प्रवा पन्न त्याय मान का के पा क** परकें दिर्रायद्या मुनदे ग्रावयार गाधिव पार्टा हुर्पर देवा रिलानु । जन्यकार गाम। स्राधाय वितर तर्जे ते नगत कु न्यारी प्रनाम हा म्यारान्त्मत्त्वकन्द्रत्कन्रयार्थ्यास्याद्र्याद्र्रात्न्त्त्र्यात्र्या ने विव की मन्यकार ग्राविव द्या हिन् रता विव कर रे प्राहित । ब्रियाबालाम् इत्याने सुतान प्रमात का पर्यातान वा पन र तु उत्तर मान

व्यानुस्यवा वित्रान्तिस्यान्तिः।

ने वरावना देन ने व्याप्त वर्गन्ता वर्ग वे त्राप्त वर्गत पर्यम् व्या शुन् मति स्मारा सर्हित हिमा उरा परि माया है। सामायर मत्रेश्च तिव्यश्च वर्षेत्रची प्रविष्य मान्य मान्य विष्य मान्य विष्य मान्य विष्य न्न यहिंग रात्राञ्चर त्र्रा र्यं वर्षा वा ने वा ने ना स्तर है व रायहिंग है व से न वना स्वाक्ष्र क्रियास्या वित्रविद्यान् वतः वेरान दे वित्रविद्यान् मान्यन्त्रभुराव्यापन्ययान्यान्यम्न्यम् प्रतिः कुष्यवः प्रत्येवः पश्चन्या 월조'도号미'다'자'호미'호미'자등미'다'도" 등'라'본미'다'당미자'원미'형 व्याप्तियानितः तत्वा व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्यापति व्याप बहु के व्याद्यत्यम् प्रमृत्यवाद्यवाद्याद्या विद्या इंस्टे भुंजुर। ह्याय द्वाप इंद्रंग हेर प्राप्त वर्ष वर्ष नेसन्यन्यायाग्रॅन्त्स्कुन्थन् यश्चर्यातः यञ्च यश्चरा सग्रा मदानग्रात्रम्य प्राप्त प्राप्त विवास व देवाल विवासमा हवस विवास गुरु ग्राम् द्रा सुन ग्राम् प्राप्त । माने हिम्में द्रा द्रा प्राप्त स्वा प्रम्य मन्द्राराध्यामुबायवरामायाव्याच्याचा न्रामुबामवेरयाने। रीत होत वीत् शुवाभाष्ठ स्वया । धुराभाष्ठ ग तरे यवा शुरू वापायया। स्याभी राष्ट्र से त्यान् में त्या है। प्रवेत्या त्या है राज्य त्या प्रोत् ने प्रवेत्य तरुषाय। वर्क्रप्तरादरारु र्वेक्षिक्षं नठर्प्यका हाक्षक्षं त्याञ्चरा इन्'इन्'रा'तगत्यहन्'यदे असन् प्रकृष गन्व की पर में व्या र्हेन् क्ष्रिं क्ष्रिं हेर बेर प्रति या पर्हे या पा होन् 'या प्रतः 'हिन्'रून' दति हु**'** र्रेते भु'जुव 'न्न' हु व रा न्या इ व रान् 'क्षु' रन्यें न्रा में व 'हे व 'व हु न्रा न्या हु न ग्त्वरावरायत्वरायाः नेयावग्त्रायासे परास्याय्यास्य मुद्र प्राप्त प्रतायेव प्राप्त कराव हा हि र मुंव चुराय। र प्राप्त स्थाप्त तुस्यवव्यान् हिर्म् व्याने प्रयाययाने राहु म्याने विषा सुराव्यायमा नुष्ट """ बिनः नर्न् परावर्धेन है। छण् छैरात्ति प्रान्तु पासुतानवा ज्ञावते मग्राम्याम् व्याप्त्राम्याम् वर्षेत्रा वित्रवर्षः वर्षः म्वेदानात्मित्रात्मात्म्वर्ष्त्। विदानेद्यान्स्हर्द्यावीत्रेद्र <u> রিল'বেশ্রার্রাম'র 'মর 'উ'ইল্রা ট্রন'র্ন'বার্রান'বা মা</u> श्चिम के राप दे दि र ता हु। या ५८ । धुवा ता या पर दि प हु ता दि । दू । धुन । पर न्भव कुल्यातन् क्रांके वियान दिष्य क्षेत्र पार्क त्याय प्राम् न्त्राचराष्ट्रेन्यान्त्राभी र्ष्ट्र। व्रेडाळ्याच्यापति श्रीख्यानेना रुक्ते पर विग्याहे यात्रह्यायात् वियाक्षेत्रयाम्याययाच्यायय। म्याययान् पत्र है।

श्ववंक्रयः प्रशियाविदः। अर्थे अष्ठं अतु केवः दे त्र द्वा अत्रेतः विष क्रायाप्तदे प्रमादेः वादराष्ट्रवादाकुष्यवादाया सर्वासुराववदाकुष्यं केन्ष्यवा क्रांक्षेत्रायद्वर्त्राच्येर्द्राचेत्राच्येर्द्राच्येव्। य्यायायाय्याय्याय्याया बर्ने'अन्ब'त्रत्र्रम्'न्रन्'त्र्वाचर्'त्र्'त्र्व्वेन्'छे'च'बेर् प्रवर् इसराम्। पराग्रीयायाडेयापाप्तायमाञ्चराप्तरायमाञ्चराप्तरा ग्वर्पतर्भेर्। वाग्वर्पत्र्वावाव्याव्याव्याव्या गर्द्रम् मुहुर्य व्यान् मूर्म्यते पर्या मुर्ग मृत्र म्वया ग्रीय रेश्यर्धेव वश्वाताता 경도' 도'제'된 이 작' 현 학' 저' 그 볼 두' 나 자 विभागवान्त्राप्तिवा देवातवात् अर्मे द्वाराताचेवावावा यहर् दर्। दरे केर पर देवारा महास्या में देवार प्राय हे. पड़ मन् अंग्रान दु देयां नहार है। इ. हैं ने प्रांचे ये ना इंच मूर्य ना इंच में मश्रह्मां भुष्या सर्वे हिरापर दे हिं पुते हिना प्रस्त हैं दि न न न न न दे रे ळेळ मान्त्रायात्र कोत्रात्रमायके वाद्यात्र वाद्यां वे नार्ते नार्ते नार्वे नार्वे नार्वे नार्वे म्बेश्यम्।

## न्तुअभा न्यनःन्यन्यस्याः विवास

क्ष्याः स्ट्रान्त्राक्ष्याः व्याप्त्याः भ्रम्याः स्ट्रान्त्राक्ष्याः स्ट्रान्याः स्ट्रान्याः स्ट्रान्याः स्ट्रान्याः स्ट्रान्याः स्ट्रान्याः स्ट्रान्य

नैरामुपादवराग्रीराधरात्विवायरात्विवायर्द्राचार्द्राच्याप्राह्य द्याधरपान्में न्यापायवान वेन्याने। हुवाया वेन देन न्यारेन मन्नाकेन्'अत्रातिन्द्रम्नानीकान्यस्य। ध्रामन्द्रम्हान्यस्य। **ह्रयोक्ष्याक्षेत्रे, इं. इं. ज. श्रवायान्याच्यां तावावयः श्रव्ययः श्रटावशेटयाता**जा ञ्च'वार्रिण'य। ञ्च'वार्रा वीयग्रावाद्व'र्दरे भुं ज्वत्र्र्र्र विग्रार्वाद्र'हें व्यान्यान्यायात्राचा सामान्यात्राच्याच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच क्षाचें बद्यु के व् ग्री शतु पा निर्दे क्षर तद्यापा त्यावता ह पर दे क्षर प्रवर विरा ५'स्प्विष्यं प्राप्तिक्षंविप'क्र्यं विष्यं विषयं स्राप्त्रं स्राप्त्रं स्राप्त्रं स्राप्त्रं स्राप्त्रं स्राप्त ग्रान्द्रग्राकुञ्चर्यायावेशस्यान्द्रप्त्राविग्द्रम् न्दरिनुश्चन इयराक्षेत् हे परान्य मिन् धेव'रा'रावेव 'ग्रुन'गेरा नेरम्पारालेगाञ्चावाहेगारानन्व पर्नेव पुः छेत् वरा क्रेया-वाश्वम् रा। ५'ञ्च'यासुग्राही'द्रश्राम्प्रद्रिद्रिद्रिप्तिम्पर्याचेत्रापराही **८ अ.अ.५४.५ व्रॅ.५ व.५५.५ य.५.५** প্রথান্ট্র থানা रवःसंन्त्यविञ्चायञ्चव्यविष्ठनः हुनः तुः तर्वे नते स्वया येन् यश्चेवः ""

**इन्याप्त्यक्रियः न्नः स्वाप्तियसम्बद्धाः स्ट्रान्यः स** त्रां अर्हेन'रा'यर'प्रह्नेन अत्राज्ञां रा'ने'या त्रां अर्थे'तुर'रु'अ'र्घे अर्धु केव'क्यें नुः यर्थव 'दयरा' वरा'या सु' दुर' दु' तर्वे दर' रय' हें रा' में प नेप्तरतारतिरयान्यर्वा तरीयान्य विवाहितानेन में रार् देश में अ अरारा पार्ची अक्षय । इ बरा विश्वानया ह्रमधीवावार्षियवा रानेपद्राचेराकीर्मा रामवादर्भरा पति'अर्त्तेव'क्रि'ग्रहें चें अहु'केव'पेव'पवा पन्न'येन'अ'र्रेर बायाचें बा **मॅग** रेग गहारहा ने राध्यालया तहं या नग प्राप्त कार्ये व प्रेप्ण मॅबहु के ब प्रस्ता ब का हिंद हे ब हा तहे व पर तहा हुन का हे न हे द वशान्यं अपिते हन् वारातान् । यव वर्षे व खीं न से मि प्रेम । प्रेम प्रमानः सन् तर्म र्मेग्रुकेग्रुग्नेश्चर्य। प्रत्रायत्रायात्रायात्र्वेष्यप्रवासुर्। परःश्रीकात्रातर्ने सम्बद्धार पात्या प्राप्तिः चे प्रवासिका विष्टे । वसवया महग्रायायम् रेग्यायाया मुन्याया मिन्याया अवार क्रीकेन। मार्केट वयवाहा हाना यह दाया वा है नहां यह यह तरें दा की व्यापर अव भैव'द'वेपरे'ब्रें'दद्यप्रदेशप्रकार्यक्षाप्रकार परेव। पर्ग'भेर'या श्चिरः घुन् 'खेन् 'तुः संस्पान्तः । अस्य शुक्रेन हे छे र या देग 'ततुग' यहास ४५'प'मनेव'दतमहेद'न्र'मठकापतिभेव'हकाने'वादरःकेव। हेवा' स्थानिक के के कि निर्मानिक निरमानिक निर्मानिक निर्मानिक निर्मानिक निर्मानिक विवार्स्टरायें राजार्थेव हेरास्य हेरारायें राजायें अनु के वार्वे

<del>ই</del>শস্ত্রীদের্বি'মরাবার্বরামরাইরি'রীগেরবারীর'মরামরীর। ব্'শের**'** ह्मां ता प्रचान क्षेत्र स्वाधिन हिंदा प्रभूत प्रचे साम्। हिंदा हिंदा से स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र ळेव'य'न्यन'मञ्जरणन्यवारण'वीव'पत्रे'तेव 'वीवा न'धे'ळन्'णहेन' वित्रां केत्रां स्त्रा विवादार्थे वादा विवादा विवादा के का पति'ने'न्र्'के'त्र्षे। इस्राय'केर'ब्रूर'तुर्मवस्राठन्'ईस्रार्ध्वेग्रावस्र स्यानेग्'राधिव'राया द्रांट्राचिराक्ष्याचीत्रयाद्रात्या यया ग्रायाः इताया **শ্**নে'ক্রমান্ন'মে'অম্বা'উশ্লেম-নেন্নের'র'র'র-নিশ্রী'কন'ঈর'ম্নের न्गु मिन्याय। विश्वाभीयाभीय श्रीन्म्यामा सुन्मि स्वाभीत्र्या न्'स्राय' वुन्'यराक्ष्य क्षेत्र'क्षेत्र'कुत्'कुन्'कुन्'क् क्यायान्यायान्य खुक्षरा'नन्ग'वेन्'क्ष'कुंद्र-'नक्षलव। देव्'गुन्'ब्रेग्'रा'क्रनक्षकेव्'तन्ग्' पतिःथोः कन् केव् सं पकुन् न्र स्वनः खन् अनः संते क्षे 'व्या छनः पठन् 'सनः''' पायव। न'हराशुप्त हर्षश्चात कर्य के स्व परा नर ने के रान्य तर्म नर स्व रण'इयरा चैद'हे। चुन'इ गरा अर'म्र'र'न्ने वा खुरवा द्वा क्रें अ'र्'त्रहण' राभिवःसवान् गतः प्रनः श्रीवानियाः गश्चनः श्रूनः।

मुक्षान्त्रभाष्ठाः तर्गः क्षेत्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ठाः स्वाद्धः स्वादः स्वतः स्वादः स्वाद

मश्रभुद्र 'स्त्र' प्रतित्विरः प्रग्ति देत्र 'स्टे 'दे श्रेष्ठ्र प्रति स्त्र स्

## त्मूं शत्मूं रत्याप्ताताकाका तत्व वा यापान्देशश्च वा मा

नेति ळे ब्रांक न्म न्योता तिक र की द्वारा के वा की न्यताप्तवन्यार्ने हेरायह ग्राही जुन् छिखन इसरा जुरायर ग्रन् व्या व्याप्तान्त्रवर्षात्रवर्षात्रवर्षा ह्यान्त्रवर्ष्वव्यावहित्रारः न्न'यतै'खग्रते'श्चै'चॅर'चलग्रवा तुष्टिन्'र्स्रच'यां सून् द्व'रु'न्नमंव्यक्षेत्राहे। हिन्नियमदिन्निते तुन्या नाया है। यस तर्ने तर् भुरापाष्ट्रिं 'ग्रेकायम्याक्च वाग्री'मङ्ग्द्रापायास्त्र'हें ग्रायादे हिन्दा ह्यु' ततु म यन् मृत्वेन् खात्मह्रो भ्यादन् दर्मुन दर्मा प्रापन में निन्न तर्पातमा विराधरान्म्या विराधरान्या । मन्ग्'वायतः तर्ज्ञ्राष्ट्रेन्'रा'वेग्'द्रन्य'सेव्। नेश्'न्'हुन्'न्'तान्नाः अ बाप्तरः तर्मेश्वान्दरः नरे श्रुं नः बर्मुरः नर्गा रत्याग्ररः सुर्श्वेषाः पाः स्र रहिता व्याम्युर्देत्यामध्येव। विन्'ग्रेयम्य विन्पति हराहेत्परात्सुर्य हुं हें गरा पर पहें गरा पाने जन्य राम गाने हें न 'तु खुर हैन' हॅनवाराम् विन्तु कुन्पते हन्या शुकुन्। ने नवा सन्य सुरामा ने स्व युन् निवे तत्वापानी नामाधन्यम् वर्षामुन् केन् निवेरिन निवेरह वर्ष ह्य'ततुष देव'रा'तार्ख्यवयायते'दे 'अ'भेन'रा'ने। हिन्दर्शेययां हें न इंट्यानपुरे, त्राक्चित्वा विद्या विद् त्तृ ग इंद्रायदासुत्रायादेशहिंद्राञ्चरायाचेद्रायदेहे। तकें यायाचेद्रा दंशर्रान्तरत्याहे। र्वागुन्तं ब्रान्ता सुकुन्यर्वे र्या ळेव'सं'त्रहुन्'चराहुनदे हुरान्रा| क्रेन्'स्व'ग्रेक्षेत्रायाण्न्ययारण्यी महुन् गुरु हिंद्यापन मुमिते हिन। म्यायहून् वेते वर पुरु प्राप्तान मत्व इत्र्वास्वाक्षकेत्र्यात्युमामतिः हिमासम्यासम्नि दिन्द्वा **ॅ्रिन्ट्रने प्रवाधीत श्रेम् हेर्यम् वीत्र क्ष्मिन्यम् म्यामि व्याप्त स्थान हिला** न्यन्यात्रात्रवराय्त्रेव्यार्थ्यवयायात्रावर्थः **क**न्'बन्'में नहत्त्वात्यायाया द्वारा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कुन्'इवशन्त <u> न्मा परातुः के तरिते तर्ना में नाया है नाया हमा विमानगता हुन है न दुवा</u> ৾ঀৢ৾য়<sup>৻ঽ</sup>৻য়ৠৢয়৸য়ৢঀ৾ড়৸৸ৼ৸৸ য়য়ৼড়য়ৼ৾ৠৼ৸৸য় महेराह्न् हिराबद्दाह्द्र्यहाद्वायाम् कृषा तहुरामकामग्रारम् *ॻॱ*ढ़ॖॖॺॱय़ॱॠॱॻॱ୴*ॸॱॹॖॆॱॸॕॱढ़ॸॱऄॖॸ्ॱ*ॻॱऄॺॱ**ॻॺॱ**ॸॺॸॱॺढ़ॱॻ*ॸॱऄॖॺ*ॱऄॗॺॱॴॷॸॱॱॱॱ सन्तर्वा न्य्वयान्युना महेन्यानहना क्रेन्तहेन्यायर्नन ने क्रिन्प ते अर्गे ह्रवाय प्राचित वाय त्या न्यन न्न वा स्थान वा विष र्मत्यहर्पान्ने वश्वरम्

## नवेंना वस्यार्हेंग्याग्री सुना निहन्याना

प्रनास्त्रक्तित्या स्वास्तित्व्यात्या स्वास्त्रक्ष्याया स्वास्त्रक्ष्याया स्वास्त्रक्ष्याया

नेर्र्स्याञ्चा व्यतिः महार्म्य विश्वज्ञाताः पाने व्यापाने विश्वप्ता विज्ञा मतिर्द्धः चुन् पत्रम् र्पः न्रायक्षाने इंग्नग् स्वा निर्मानगाल र्से आ नु मञ्जा नेति से न्या वर्षेन् मेन स्वराह्यामान पाया वेश्वरावया मॅरप्तवण्केष्वराक्षेत्राहण्याचरानुः अक्षकीत्र गुत्याचराहेव वादव में प् मण्यत्त्राचराष्ट्रमात्रेयम् वर्षात्राच्यात्राच्चाच्याच्याः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः याप्यास्य संग्रेशक्रित्विर्धिरेष्र युन्पत्र मंग्यूययात्र याई न्ही सतिः (त्याय्या पुर्विन्) च्चापायद्वाप्यकेषा क्या द्वारा की द्वारा क्या स्वरा हराय'न् गतःरच'येव। न्'रे'हेव' खुग' क्रें 'नेग रात्राय नव रहते' त्युठा'नु' डेग्'ग्रह्मर्प्पाता विवयः रुप्पंग्रह्मप्पंप्पंप्पंप्यं में मुख्ये प्राप्ति धितः प्रवादर्शे न् क्रांक्ष्याव्य। युग् क्रांप्यम् पर्मा पर्मा विवाद्यां परमा विवाद्यां पर्मा विवाद्यां पर्मा विवाद्यां पर्मा विवाद्यां परमा विवाद्यां पर्मा विवाद्यां परमा विवाद्यां मितिःदूरः प्रविवा हुर क्रेपिनेवा अर्थेर् पाराधवा केवा रेग रामस्र सुअः ने प्रथ्यं वा सुर्दे में विष्यं प्रमुन्ति माजुर या सुना क्षें प्रमेना स व्य-प्रविश्वास्य क्षेत्रुं भाषा हे प्रविश्व सामित्र हे व प्रविश्व सामित्र स्वाराध्यां स्वार

 ने भूराधन त्या प्रत्य प्रतिषा है व तु व स्याप्त स्व भ्राय की व देव त। र्रे हे तकर र्र रे हे रे के रा रे हो र के र र ते हैं का भग खु अ सूर्य र र र र के र दे क्षेषु इत्रायमु प्राप्त स्वित्राय येत् प्रति यग्र र देव त्याय हे व व सार यह स म्तित्रक्षे क्षेत्रप्रदेन वर्षेत्रप्रक्षित्रप्रक्ष र्चन्। अरः अरेन्। प्रतिः क्रेव्। ग्रीका तर्नु क्रेन्। या क्ष्म वाप्यतिः हेव्। तर्ने याप्यकुः । । । । । । । । । । गड़ियां ग्रेया प्रस्थाप देखा। इस श्रेय पात्ता में यापर या इस पर प्रस् पदि'तहेंब'रा'न्न'यरुषारा'तर्ने'यर्षेन्'व्यवा'रुव'वर्राया'तर्नेन्'रा'द्यवा' क्तिः त्रां रहें रख्यां के युं के व्रा स्वार्य र व्यक्षेषा या प्राप्त व्यव्यक्ति ८व्रक्ष्रिति विद्राप्ति स्राप्ते व्याप्ते व्याप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्रापति विद्रा य गृत्र दे गया न्दा गृत्र हे का छै। वे हे न दे मु हे न दे नु का छे अप विवा " विवाधरम् विदा नियम् तिरामति का विकाश में विकाश विवाध में प्रवाध मे वैवर्द्धः सन्गतः प्रतिता प्रतिहेत्रे प्रति देन् प्रविद्धे प्रति यापहेब्द्ब्याञ्चेतात्'ते'मेत्'प्रात्म विष्यायम् म्यावायात्मेव्यायात्यात्मेव्यायात् मुन्याल्याद्यापञ्चन प्रस्तापतिव द्राञ्चन प्रमान्त । देवे व न व याग्यन मन्देरिष्याचयाराक्त्राक्तीति हिन्त्रम्य स्थान्त्राम्य स्थितः सन्दर्भागाया ₹, गुष्ठम् नम् नुभिन् दिन् न्या द्वेषा या द्वारा पर मुन्या तरी गुरा द्वेषा पर म्बर्'ग्'न्र्राधेव'परम्'यम्। ने'हेब'र्य'त्यं केर्'र्ग्यर'र्र् **८क्षे**प्राक्षे हुन्या । अवाङ्कु ८ मुखार मिं र परि हे वा र ई वा वा इव वा हुन् हु मसबरामराज्ञें नर'र्यर'बेर्'पर'तष्ठियाव्य। त्रिंरयायराचर पर'तर्देन्'पति'प्रवायपकाहे व'कें'र्वरम्यये'र्व्वयंप'ग्न'प्पट'तुर'प'" विगायायहेवान् ग्रेंबाही हेवाबाग्वीन्तायहाय। नेपायहेवावबा मेग्'रा'रेअ'ग्रेअ'तरेंग्'रेटः विश्वाहर्यापते पश्चित्रम्थेग्'त्र्रश्चेरः ।।।।। यशुर्याद्रा ग्राहेष्ठ्यस्य श्रीरात्रस्य निरा नर्वि यहेर्द्र नु ज वे र प सेवा प प् व व प र जे वा प व । वे व व प व व प व व प व व प पः अवतः द्ग्'सरा ब्रेंसः चरः तर्दे द्'य**रा**ष्ठिदः द्धयः द्विते अरः पश्चेदः दरा **ड्रबरान्रक्तेर हेराके छेन् म्बबराक्न ज्वावर देवर्**ष्ट्र प्रहेग् छेन् ''''' रोबरा पक्षेत् 'प्रेव' पर में 'श्रम्बा । वृद् 'रूट' मी श्रम्भादा वृद्या केव् चॅदि भवा रु 'तहम् प्राम्य क्षेपा इवा न्या मेवा यावि च हर व वा हा केन् ई "" हे नेवापरित्यातुत्विन् हे। देपाएक्षा इस्त्यात्वा हेवस्य र छेत्याता त्रायायकेवा केन् प्रतास्व वाद्या विवासी स्वाप्य प्रतास स्वाप्य प्रतास के विवास स्वाप्य ग्'र्ट्स्वेर्'यार्द्र्ररायायम्'र्द्र्युर्'प्रदेश्वत्राकेश्वर्राद्वित्''''''''

न्त्रा न्यन देशपाचयासासामानामान न्'ग्रॉन्'रेयप प्रविद्रार्श्वेश ने'यन'वाळव केन'रेग'रा'न्न हुदावेंद्र प'न्न लगानी मन्ग् बेन् १८ कें सम्प्रायायाय मन्। शुन न्नः भेष्यपाष्ट्रे कागायान्येः न्न शुःवहवानुःविदेश्वेष्वाचर्यान्यान्यायान्यायाहेन्यान्यानाः मन्ग्'केन्'हॅग्बा ने'ह्रर यह नग्'क्ष'हेन्'स'न्ह'र्रेवकां वज्रापर ८ ह्रेंग र मूंबरहे। श्रु अववर र अरे ह्रें व सर्वित र देखें। इस ह्रेंग श्रुव ह्न व्यायेवया ह्रें गायेन पुंचा यर है। यान मान विषय विषय विषय कै कि ग्रका क्रेका राधिया ने त्या प्रकारीका मिका राष्ट्र हि ग्राह्य सार्यम् प्रमा नेग्यमेन्द्रस्य व्यवस्य इत्यान्द्रम्य विवासेन्य गराताताहिंगापाकेन्या हेन्द्रे खेरते। सारे शेन नेपाने विगन्ता क्षे व्ययम्भित्। दे ता स्वा यहिंद दु दि हैं त दिना श्रश्चे न्यास्य बर्चर व स्व के ने प्राची त सर प्रमा सान् र में में प्राप्त न र में के प्राप्त में प्राप्त में प्रमाण के प्राप्त में प्रमाण के न्त्रस्यान्धित्रस्यामण्या नेसान्न्त्रणस्यान्देन्द्रस्याना लयन् मेन् राधित। प्रवित्व प्रवित्व स्त्रिक्ष मेन्द्र स्त्रिक्ष स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र इन श्रुक्षेत्रा श्रुन्य द्वारा द्वारा में वर्षा परि ह गया देश के ते श्रुन्य प्राप्त न्रायकस्यान्ता संस्महेग्यायते नेसारमा नय संस्पृष्टि पान्ता मक्रापादर्। क्ष्मावर्षराष्ट्रयापराष्ट्रेन्पदेशमक्रावेन्'वेखाः। त्रस मात्रेग्'प्रति'स्राक्षेत्रप्रिंग्'रा'न्'र्र्प्राच्यात्रम्यात्रा

র্মান্য অর্মর নত বা অর্মর 'মিন্ 'মান্ট্রন' দ্রমান্তন্ 'গ্রী 'র্মুর' নু' দ্রমান্ট্রন' দ্রমান্ট্রন' দ্রমান্ট্রন' <u> हेरा गुन्द रुष्ट्रें स्ट्री</u> के होन् ज्वन स्वन्द्र द्वा राय है से स्वराय है न् श्रीका विवादा प्राप्त विवादा व **५८। इ.स.प्रवर्ध्य, प्रज्ञास्य प्राज्ञेस्य प्राज्ञेस्य प्रवर्ध्य प्राज्ञेस्य प्रवर्ध्य प्राज्ञेस्य प्रवर्ध्य प्राज्ञेस्य प्रवर्ध्य प्रवर्ध प्रवर्य प्रवर्ध प्रवर्ध प्रवर्ध प्रवर्य प्रवर्ध प्रवर्ध प्रवर्ध प्रवर्** कुर्दर्व अनुन्दालया मञ्जाल उत्ती भारत में विष्ट्रे प्राप्त रा'ता ज्ञव में 'तवा की भव जार में बार पंदर । कूर के न हे न वारा ता में व में नश्रीकेन् भूमान् म्याप्तर्मित्रप्त भूमा हिन्। हिन्। सर्भा सर्मान् म्या पतिःमनकाहेकार्मे पः तुःनक ग्राञ्चरः गृहेकाताये रकाये नः नुःतन् न ग्रा परकें भगवा देव देशपाया राष्ट्र इसा तर्डे रापा वसवा हा से दाय दे र्भूर विर्। अवस्य विर् पर्मेर सेर से हेंग पा इसरा र पर प्रवि र र बहुद्रप्रते'न्य्रत्र्व्यव्यक्षे हे चेन्प्रते'त्या देशकी क्षुप्रधेद्रप्रत्रे यम्या में पाद्वयायद्वपुत्ति प्रायाख्यायाप्याप्त्र्या क्रेंग्यार्युत् न्भून। रेवरायाययान्भुन्द्रवाञ्चन्त्रविद्रात्तेन्। तक्षेत्रवार्षे त्रोतार्के हुन्रं क्रेंबका द्वा अर्देव्तिवित्वतका वेत्पति हा वायान ध्यां श्रीहरात्। बर बेर पील्यका हेंगा तहाल हुं या हुरायका हुराय के मर्केन्'रान्देश्चेन्'त्रकेतें'पर्रानुत्रात्वेत्। समराधुन्'ने हेन्यरात्वेन बेद'रूब'ग्रे'व्यन्द्र'त्रात्रायन्त्रा

प्रात्ती क्रियोत्पर्याक्षेत्र, ट्रिक्षायाः जा व्याक्रेयोक्ष्यं व्याक्ष्यं व्याक्ष्यं व्याक्ष्यं व्याक्ष्यं व्याक्षयं व्याक्ष्यं व्याक्षयं व्यावक्षयं व्याक्षयं व्यावक्षयं व्याक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्ययं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्ययं व्यावक्षयं व

विषालुबाधवा ह्यां विद्यालया सुर्हित्याने स्वाविषात्रे । सत्तरे देशे द्वाति विद्यालया स्वाविष्य के स्वाविष्य से स्वाविष्य से स्वाविष्य से स्वाविष्य से स्वाविष्य से स्व

ध्याग्रेव्याव्या ६दिःस्यदिःयादिः संयाविषादिन्यदे क्रिंच्या न्न्युयापं विषायन् पाश्चन् विद्युत्नि स्वाक्ष्ये क्रिंच्या स्वाप्त्या स्वाप्त्य स्वाप्त्या स्वाप्त्य स्वाप्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्त्

स्थार विवा नो स्पर्मा विवा चुर्व स्था स्थार स्थ

स्रम्याक्तां स्राप्ताक्ष्यां क्रिक्ष्यां स्राप्ता क्रिक्षां स्राप्ता स्राप् য়ৢ৾<del>৲</del>৾৾ৼয়৾৽য়য়ড়ঀ৾৽ঢ়য়ৣ৾য়য়৸য়য়ৼয়য়ড়ঢ়য়ড়ৢঢ়ঢ়ড়ৢ৾ঢ়৸ড়ৢঢ়৾৽ঢ়ড়ৢঢ়৾ড়ঢ়ঢ়ঢ়ড় भै ग्राच्यायाः म्याने क्षेत्रपुष्पायाः कुषानेषाः चेत्रायाः स्वाप्तायाः स्वाप्तायाः स्वाप्तायाः स्वाप्तायाः स्व विषाप्त हर**्यश। इ**न्'बेन्'ने' बाषदः दर्शे अदे'क' कुन्'नु' तरुषा उन्। बाह्यर द हैं ते खुर प्रमृद धीव व्या व तुर के वर कर धीव के में बा न्द भेव व्रत्र र दे हा अ पुरा न हा अ की श्रास्त्र हा की का की व्यक्ति स्वा बद'ळन्'वरा अ'वीह्र'गृतु वरा छेन्'यते'गृन्यरापायव'सन्'याधेव' पर्वा कु'त्र'वाह्रत'त्र्वेतेख्र प्रमुद्द'भेद'द्र'वेह'त्र्ड्व'केश'युर'त्र्वं क्ष्रअवया तन्गाञ्चरानवेगाच्चेन्नाअति।हुनान्धेवपया न्नाअति।वया व्या वर्षवयान्यां त्यवे व्यन्ता पर कन् वुन वे वप्यन विन के लार्दे दर्शान्युद्राचाया यद्नायात्वुद्राचेद्रायद्रित्द्राविनानिकातद्रीः स्रद्राचेद चुन्यापरक्रम्भवन्वयास्यापद्वयास्या धिव व ब्रून तह गृतु र दिन स्याप स्या या या या या व न न मा स्व या या । स्या पश्चित्र न्याना त्वा देशा देशात्र मुद्देश्य न महत्र ८५गःहै। ८.म.न्यश्रह्यः ४८.१४। राष्ट्राच्या स्था ब्रॅन्प्रह्मानीमाञ्चराञ्चरानेमाञ्चरायमा इं न् ये द्वया प्रमुख हे तस्र ता प्रमुख प्रम वैवासस्वाह्यवाया वर्षेवा मुर्चेन तहवा वीन्ये क परंतप्तव। तस प्रते विन्कः सन्दर्दे दे विन्दर्गं निविन्ने त्रु निविन् केन्य किन्य

श्चायतिष्वत्यव्या न्युत्रवुन्ध्वयाशुनुन्यतियन्षे प्रमानने लुप्याय मञ्जूतापरतिषु व्ववस्यराष्ट्रवार्यार्याः केस्त्रे के वेदायरात्त्वा यस **९**'रु'रे भें पशुर्ताताया भुष्यायशेषायते क्षुः व हं दारं व रायुताय यायस्ता **ठै**: यह य: दुर: वा देवबायर। अत्रावाद्यवा क्रीत सुवायः वारी र तुः यद्वीता मल। नुरेर-न्गरक्षान्-हिन्न-प्रस्थकाने कु नराया हु र्रापार्श्वेत्रपायान्वेन्यपात्रात्वन श्रुन्यस्यार्श्वापरात्रहेना त्रेत्यंत्रम् प्रहे वयापश्यह्त्यंप्तिः सुन्। यह्न्य्वित्रः व्हे वाह्ने। वह्न्यायाः तरेमश्रीमः मर्थयामस। व्यवायायेमः हेगाः तुः सहया है। सुःयः नः नेतः न्म्ब्रायराग्न्बर्द्रम्बाव्य। तस्यान्म्द्रात्व्याः वान्वसार्याः वृद्धाः पथा प्रकृष्टेन वृद्धेन विश्वया निर्मु हुन परम् व अखिर प्रमुक् - मुतः नहार प्राया सरी पर्ना पर्ना पर्ना पर्ना पर्ना पर्ना पर्म हुन्यत् वेत्। यन्ग्यार्त्र्त्यार्वेषायान् ग्रावेषाद्यान्याने ता मारतः त ज्ञेते खनः न सूत्र चुनः व कालु र दिनका रा त्या वालु वारावा स बहरहे। पॅन्शुव्वव्यानी ब्रीन्विश्चित्रा यान्या ताले व्याप्रा पारम्पा मर मिर पर तर्ग महिर या हिना महिरा ही से स्वर हो हिर हुं वया श्रेत्रां तरी, श्रेवी, श्रेवी । विश्वारा, व्यापा, व्यापा, व्यापा, व्यापा, व्यापा, व्यापा, व्यापा, व्याप र्नार:वेबामु:राभी भिक्रामु:रेन्यमुनार ह्याया विवानग्रास्त्रे श्चर पर्ववराते। प्राम्म मुनापासर महायाय हिम्म के १:८८:३:१८: इयसक्टर र्देर्के हुँ न्यायायमें गुन् गुन्राराध्य महास्रह्य ( तुवान् देवे प्रतः तुः प्रान्द्धां त्यानः नेदिः नेदः नेदः नेदः नववा विन् की है नवात्य

वर्षे गुग ने अंद्धराद्य (

न्'द्रश्याप्तरत्र्र्गं कृद्' पजुन्'ग्रेप्या । स्वर्णा हें प्याप्तरात्र्र्गं कृद्' पजुन्'ग्रेप्या । स्वर्णा हें प्राप्त हें द्राप्त हें त्राप्त हें प्राप्त हैं प्

<u> ને 'વશ્રા સુગ'ત હતા હાત 'શું' કે વાત કો તા શું વાલુ વાત માન માત્રા અમેં 'કે 'ક્ષુ' પ્રાતા </u> नते व्यायक्रम् क्रीयक्रम् त्रात्रात्रात्रा श्रुत् क्रून् गुन्द स्वाय ते व्यक्ष्म नामित য়য়৻ঀয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ড়৻ড়৻ঢ়ৢ৾ঢ়৾৽য়৽য়ঢ়ৢ৽৽৽ न्नायान्यान्यान्यान्यान्या ন্ম্-'ব্ৰহা'ট্ৰাহা'র্বা नगतः नजुन् की नम्भारा भेर्या है है है है सम्मार स्वारत कुराव न्रा वर्ग **७**ण्रॅ्ञान्यद्ययायाग्त्रायुन्तः त्रेष्ठ्यस्यहे कृत्रत्युन्यते खुन् '''''' पङ्गव् हेन् न्वर पर्व भुगपम् इ अरे वियावया ळे*व*'शुं'तु'तु*त्'तर्ने हेव*'त्रवेत'त्र' क्षे'यश'यश्यत्तर'त्रहेश्यः'भेव'वेत्। नग्रद्भन्त्रीप्रमृद्द्यायायम् केत्त्रुः देते खनः नङ्गद्दानन्तः संप्यनः """ प्रा हिन्'तु'केव्'इवरा है संक्षेत्रक् तुःकेव्'इयरा'ग्रेशक्षे भयापत्ति'व्याप्ति यापत्या गुव्र'त्रक्षे भयापत्रान्तरः स तन्त्र भुरातिन व्यवस्त । स्यान्त्र भूते । केवॱ**प**्रेतिः है। शया हुनः कुंशः इवशः हुः व्यतेः हुनः तुः सुरापाः वर्नः कुनः री ।

मीशियायायाः केयायां क्यां नायां माशियायायां क्यां माशियायायां क्यां यां क्यां माशियायायां क्यां माशियायां क्यां माशियायां माश्री माश्र

श. 2 श. ची शेषा श्रम स्या के श्राम स्या ची श्रम स्या के श्रम स्य के श्रम स्या के श्रम स्या के श्रम स्या के श्रम स्या के श

2. म्रुं या अत्राप्त व्याप्त व्यापत व

व्याद्वाक्षेत्रव्याच्या । गार्च्याद्वाक्ष्याच्या ।

प्राप्त स्था | श्रिव्य प्राचित्र प्

द्रे.केर्ड्यश्चराप्तु.केब्रयार्च्यायुवा । म्झूर्ल्यराच्या । म्झूर्ल्यराच्या । म्झूर्ल्यराच्या । म्झूर्ल्यराच्या

मुश्रम् श्रम्य। महान्य। स्थायानन्याचेन्यास्याक्ष्यकाक्षेत्रहेन्याः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्था

म्बारीश्चित्रक्ष्याप्तक्ष प्रकायम् विवायम् । श्वियायम् श्वियायम् । श्वियायम्यम् । श्वियायम् । श्वियम् । श्वयम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम्यम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वियम् । श्वयम् । श्वयम्यम् । श्वयम् । श्वयम्यम् । श्वयम् । श्वयम् । श्वयम् । श्वयम्यम् । श्वयम्यम् । श्वयम्यम

हें तुरा गहुरा सर वा कुरा द में निर्देश विद्या विद् विषयात्रत्। । तर्ने सम्बु वृष्यं वृत्वः वृत्यं वृत्यं वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः पर्भवाधुर्पि |स्ववंरयार्र्ष्रवाधुर्प्वव्रदे । ।स्वव न्रायदे सुयायह्रव विवा नि हिन् मान्य रे स्माया दी विष्मा बरपर्योर्जु: न्दा । नगतः चकुन् ॲटवाक्री चक्कृक्प धेव। । गहवा है'कॅ'न्गुन्स्रेग्'स्रेन्। । हुम्स्रम्ब्र्ह्ह् बेन्स्येव। । हे'स्रके ह्व त्रिंरपन्। । इंस्राय दिन् ष्राया स्त्राया स्त्राय स्त्राया स्त्राय स्त्राया स्त्राया स्त्राय स्त मानतः गम मानी । हुन राहे सामाने गा शुन होता पेना । साम राजाने हुन'रा'ने। तिसेन'शबारीकाकामाने हुन'रा'भेन। सिंगका नितर सु कुन्त्रवर्याः दी । ब्रेन् क्रांन्यरः चलेते मन्ययः रणः धेना । सुरेश तम् गुन् छस्य पारी । गुन् या सुद्वे न् वित् मुं या प्रमेन। । सुद्वे सुद्वे स त्रवायान्। दिन् न्यातायानु यहत्यावाधिन। शिहेना सुर्हेन्य म्याप्तादी विस्वाति भ्रुवासान स्वाहित्ये । श्रित्र से त्यायी त्र'हे'शका'चल्ला |तर्नरळेंगबाबु'च'हा'त्रुंच'गुव। ।क्रॅब'क्ष्र्वा र्मा शिक्षं स्वाप्ता । गार्चिम् हुरे से में सशीर में दे। र्विक्षेनिक्षेत्रम्मात्र्याचित्। । विमान्धान्यवास्यवस्य ज्ञाना । कृद्र प्रमुद्र भी ग्रम् यकारण हैयकार भी द्रा १ हैर प्रदे 31 म्मार्यायायम् प्राप्ति । व्यत् वित्रायम् प्राप्ति । श्रुव

बैग् ग्रेंब्द्र्ग्रेन्यरापे । । दिवित्र माया है ग्रुग् तर्स्यामधित्। श्रेरः ग्रस्यः र्ग्रस्ट्रें स्यासुरस्ट्रें प्रान्। । इस्यिते ब्रेरः तुः ग्रेन् ग्रस्यः धित। । नर्ज्ञः त्यसंद्ये रत्यं है 'त्यसं यज्ञ । । तर्ने रास्त्रे वा राज्यः पा हु श्रूप गुन् । इं दु ग के न पर्द प न पर दे । । गुन् में हे न हें न हें न इर्स्ट्रियेव। १गावन पुन्नेन संस्टर्म । विकास निवास निवास पालेवा विवा मा तर्था सम्प्रा सम्प्रा सम्प्रा मा से ना प्रमुत् की वा निवा रग मेरबार भेव। |प्रेर ८ ईअ अव ग्रुअ गुरु रा दे। । भ्रु ग्रुअ रर स्तिर्ह्मन्याधिव। विरामितिवाचार्याम्याम्यान्यान्। ।तर्विवासयाह्मया मति शुप्पा भिन्। श्रिन् सेना श्रेन पुन महेन महामा । तिर्म स्पार श्रिष सुन्। तह्न त्राचा प्रमान विकास के मुक्त निकास के मुल्त निकास के मुल्त निकास के मुल्त निकास के मु तुःष्वेष्यराध्येषा । मनःषेनः कुन्दुः तह्येयानाने। । तुः कं न्याकुन् रा'तहेन्य'पिन। व्रिंशे भाषाक्षेत्र क्षेत्रभाषात्र नाता । तर्र केष म् पातुः क्रॅनःगुव। विनःतुःगाळेवः नद्ववयानः न। । वर्दनः रूनः वी बेश हूं न स्वारं भेव। । गार्च गार्नु हिन के न हैन पारी । विंकी प्रवि हिर्-र्-१८र्-१र-भेदा हिर्-गर्नेग्वम्रात्रकाक्रयाप्ने। ।क्रुद्-रकुर्-ग्री ग्रव्ययन्ग् नेत्यम्भित्। । हुन्द्रंग्व्यन्तुःग्वेत्यः राद्। क्ष्म् याक्रीम्याक्षक्रम् प्राचित्। । श्रुक्षिया क्रीक्ष्म् प्राचीया विकास प्राची र्हिर्यायाधी धुन्तस्यायीत्। । शुर्वस्यावित्रस्र स्व पदी विराधति श्रीत दुष्पित् प्रायमित्। विषय श्री भारति दिव है। ्मद्याननम् । १८५ मळे प्राया पातुः श्रूपागुत् । । छम् पुगाळे द्रामञ्जूष राने। । गुन् वर ने शियार राया भेता । गार्चिया हुर्सेन संक्रित राने। । श्रव'नजुन्'ग्रे'गन्ययारग्'मेनयाप'धेव। |तॅन्'कंन'ञ्चग'यानठया**रा** दे। ।ॐॱॹॕज़ॱॼज़ॱॺॺॱॺॖॱॸॱख़ढ़। ।क़ॕ॔ॸॱॸ॓ॱॺख़ॖॱज़ॾऀज़ॱॿॗॸॱॸॱॸ॓।। त् मुक् क्री में अन् किया दिन प्राप्ति । विश्व व क्री क्षाव व्यापत मन प्राप्ति । पगतः प्रजुत् 'ग्री'पसूर्व 'प'न्र प'येत् । । श्रुत स्व ग ग्री व 'तु पनि ग सप'ने । त्रिंरापायाष्ट्रीयुग्तस्तापायित्। किंत्रत्यायाप्तियार्वे स्वार्धातस्तरः पदी विरायति श्चीर दुष्मिने गुर्याय भिन्। । गुर है स्वस्थीर दह है स्वस् मनमा विदारित राष्ट्रें न्या इवयायायन प्राधित । प्रायान दार्थी इ।प्रवास्त्रीया विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठा वि ८:अ:क्रव्श्वीप्तायान्द्राध्यत्व। । श्रेशञ्चरायञ्चर् श्रीप्तक्ष्रव्यार् हिन्। विश्वामुह्मस्य स्था स्विष्यम् गुन्यन् मृतः श्रुं न्यम् हुः सेन् ঘ'ইব'র।।

न्तर्ने हेन् हेन् हर् हर् हर र न्यु र हर की कुर् त्यो तार न्तर तार नर श्रुर सर्। र्याक्चेंस्र्व'र्पर्टे.पर्ट.पर्ट्र्या स्र्यूप्तः प्रणायः प्रप्राच्यः प्रणायः म्य्यं अष्ट्रियः प्रणा श्रास्यः स्र मायमत्त्र्वाः ह्रवाद्विते क्षं त्राकुत् यम्त्राकुत् यम्त्राकुयम् मक्रस्यामक्रवापाक्षातुविषाः स्पर्पान्। पूर्वितः क्रवाक्ष र्थायक्वर्षा निवानः वाचर खिवाय। क्वर त्रोता क्वेषा क्वार विवान निवान स्वा मा ग्रम् त्र्यम्प्रिया देश्वर्षात्र्ये द्रवाश्चेत्रा भेग म्या द्रवाशे ह्रव कूर्र्न् नर्ने प्रात्र्राच क्रांच व्रात्र्य विष्ये न्याया व्रात्य व्रात्रा विष्ये त्या नेप्ता इ स्तिप्ताला खनायेवा मह्य हे सेवाहा स्वयास्ति न्सुकुव्द्वराम्बद्द्वे। त्रं पर्बुद्द्यं नेमाम्बद्धाः मर्द्द्रंद्र्यो बेशकूंब संब्दारामा द्रन् ग्रामा सुवाव निर्देश मा अविता मिन म्बर्वा नर्हें इन्डिन् म्बुर्या रामामृत्यं हेन् इस् मन्ग्रायाओस्र पाष्ट्रस्ता है है पते प्राप्ता इयरा ग्र्रा व्या ग्रामर सिं प्राप्त म्याम् प्राप्त स्थान शु'र्वे दश'नेष' ग्रुट्या

न्वश्राप्तां गुन्त्स्यापत्त्वे व्यापत्त्वे व्यापत्त्रे व्यापत्त्य व्यापत्त्रे व्यापत्त्ये व्यापत्त्ये व्यापत्त्ये व्यापत्यापत्त्रे व्यापत्त्यत्यापत्त्यापत्त्यापत्त्रे व्यापत्त्यत्यापत्य

न्वसायुः छेव्। इत्रस्य न्दान्य विषय् । ।

नियस्य प्रित्य प्रित्य विषयः विषयः

## ह्र'य। रन्धुम'तृ वेनक्या

दाःकुःद्याप्तवे व साव । इ.से.धे.धेव्याप्तवे व साव । इ.से.धे.धेव्याप्तवे व साव । इ.से.धे.धेव्याप्तवे व साव । इ.से.धे.धेव्याप्तवे व साव ।

हे. त्याम् व. म्. त्याम व. म. त्याम व. च. त्याम व

इन्। न्रान्तिः स्यान्यान्तिः स्यान्याः स्यायः स्यायः

म्वास्त्रात्र्याः श्री विश्वस्त्रात्र्याः । श्री स्वर्धः त्रात्र्याः । श्री स्वर्धः त्रात्र्यः । श्री स्वर्धः विषयः स्वर्धः विषयः स्वर्धः । श्री स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः । श्री स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्ध

प्रमा विकासित्तं विकासितं विकासितं

प्रिन्देन्त्रस्य प्राप्ति । विन्देन्त्रस्य विक्रा विन्देन्त्र विक्रा विन्देन्त्र विक्रा विन्देन्त्र विन्देन्त्य विन्देन्त्य विन्देन्त्र विन्देन्त्य विन्देन्त्य विन्देन्त्य विन्देन्त्य विन्देन्त्य व

स्त्रेयाधेदा न्पृहेन्यास्यादेवाकी तत्त्वाच्या नन्याकेन्यायकेन् रा'च इन्'में विषा क्षेत्र विषा प्रविद्या विष्य दिवा विषय स्याग्रीयायक्रन्यानम्बराव्य। स्रात्रात्र्वाकृत्या मुँयायअभी ग्रम्बराट्गा ग्रव्यायम् ग्राप्या カキネケススケスケッ क्षेण् जुन्द्र स्वास्य प्रायमः यव प्रवा रियातः स् यन् स्वाप्तर्णः Rदे इवरात्राम हे में बू में प्रावृत्ति प्रताय है र द क्षापि खर पहुन्" ॲन्'मराडिव'प'भेव। हुँन्'ग्रेरा'गुन'बाहत'त्र्त्र्र्स्युन'मह्न्पते'र्श्ने**न**' अर्घेन् अर्न्न् न्युर्त् त्वेन्या कुर्त्या तकुन्यु अर्थ हेन् न्युक्ते पर्त्यु **५४। पर मुक्राया नुवाया शुर्वेर या अया ह्र व छ अँ पर या सुरा व व व राज्या अया हर व छ अया सुरा व व व राज्या अया हर व छ अया सुरा व व व राज्या अया हर व जिल्ला का व** त्युतापाबेन्द्रन्त्रन्त्र्र्पान्ययान्याः वैद्याद्याः वह्रद्याः श्चिमार्थम हे संस्थित दे दूर् रामा स्याप्त रामा स्यापत रामा स्याप्त रामा स्याप्त रामा स्याप्त रामा स्याप्त रामा स्यापत रामा स्याप्त रामा स्याप्त रामा स्याप्त रामा स्याप्त रामा स्यापत रा **ग**र्डिन्'रा'क्षेत्र:ग्रुक्'त्र'क्षेत्रक्षत्रस्यकारायन्'रे''र्देष्वरायकन्'ख्रिष्ठकाः हॅ्र व स्वयं भीवा कु गर व स्वयं ८ रे रे स्व त्या रागार कु रहर स्र खुकांबेन्'वाष्तरात्र्वेते'क्रंकांक्रेंन्न्न्यु'र्यन्यायवा नवेन्न्वाहेन्न्न्य मङ्गवाराष्ट्रस्यवा न्त्राष्ट्रप्रिन्नेन्त्रस्यो कुन्याहिवाववावः स्तिः **ढ़्र**ऻॻॖऀॴऄॱॲ॔॔॔ॸख़ॻॖऀॴ॒ढ़ॕॖॎॸऻॻॖऀॱॻऺॴॴॱय़ॴॸॱख़ॸॱऄॸॱज़ऀॱढ़ॻॖॴॻॱऄॸॱ मराज्ञ वर्गान्य अर्था देवा यापर अधुर प्र अध्याय। न्न-नि-नी

द्वारान्यस्यो स्वयाद्वार्यः स्वयाद्वारः स्वयादः स

व् वॅ नगर देव कव्य ग्रंय पर देवया । नगर देव कव् वॅ र बरीद्वाधराया । प्रवासाय प्रवास वार्षे के प्रवास । वार्षे **धॅन'८२ॅ न'ग्येन'नदे' हु। । ग्वन्'ग्रे' ग्रान्'न्ग' क्रेन**'य' कॅन्या । ने' ने अनः अनः तने केन अन्। अर्थन में अनः अनः सन् अत् अन्। <u> ह्रवंभवः यनः देवः न्यावेव। । नेः तदः यञ्च यवः ग्रानः तनः वर्षः वर्षः ।</u> यभ्राकुं बर्धरायन्य कुं बेर्। । यद् क्रेराय में गृद्धार द्वार देन। । इ.स.चुन्। संपर्दन्यप्रदेशा । क्रिक्षकृत्यं दश्यत्तुत्यपः चत्रकाकुः मया । । त्यापर्वन्यत्रेष्वन्त्र्त्त्रेषा । त्ययाविष्याः क्रन्याः कॅग्'नेश'न्येंद्र। ।न्येंद्र'चलन्यें'तर्नेन्द्र'दिनेतां नेता ।त्विर्यः **६**ॱचॅं क्वेत्'खुन्। । ब्रें बेत्'कुं हं 'च्च' प्य'भे' बायर। । कॅ्च य बेत्' प्रिण्सः क्षे. प्रेस्या । येवयायः येवयाद्वयः कर्व्यः ह। । नरः स्वयः न्मॅन्य' के के मिन्य विन्यं वेन की नियं विन्यं **न्र** इत्र परिक्षे सत्या | न्र वार्या वार्य वार्य

**८.**त्-्येट् बक्षर्यः क्ष्रितः न्तः यश्चर्यः व्याप्तः व्यापतः व

देशमहान्यव्या द्वपान्दिः अर्गार्डमान्द्वपान्ते। सुर्हिन् त्यूं न'तर्ने श्रेश्वरातात्वेदार्षुः वारु वारापात्वेवा श्रुनः हो। तर्वशास्त्र श **७**८५१८२ वायळेव प्राधिव प्रकाशुः विषक्षेत्र । देव गुरः विष । त्राप्त विषक्षेत्र न्नवर्गरम् इयरात्राच्यक्षक्षेत्रं वर्गतार्म् न्यारा इयर्गकेन् न्युत्या नैर'ए' अए' ब्रु' अति' य गृत्र' य विव् 'विग् 'त गृत्र' य स्त् । गृत् वर्षा प्रगृ ने क्वें तर्ने ग्राह्म वर्षा केंद्राया द्वा । व्याप्त वर्षा । व्याप्त वर्षा गुर्नेर प्रभेत दे गुरुर्य। सुर्या के सामित सामा के द्रापा स्थान त्रम् इश्रीताया हराया हर्षे श्रीताया हरा हर्षे पन्ययापतिळेन्यात्रात्। झ्ययाभुर्चेर्यार्नेहे त्रिर्यंपने बक्षम नवर्त्तर्तियारात्रार्व्यक्षेत्रे देवा का के में निर्मे देवा वा त्रिंरात्रं रेन् र्या व्या रता शे तार्रा निर्मा विकास स् व्यः द्वै न ग्रन्त्व रःसद्देन म्राध्यायार्स्य सहे ध्येगाय द्वान्तः। त्रें रामते भेगितर सूरामा न्या ना ना नित्र ही सूरामा संग्राह हैं बर'नहर्व'द्या ने'इबस'नमेंन्'रा'खराकी है'रह्या छ'न भेदा है। हुन पद्व'राधिव'ग्रुर'पाथ। ज्ञास्याक्षक्ष्य'न्द्र्यात्र्यावर्ष्ट्र्यात्यात् इं: न्यन् दुः वे न्यं वे न्यं वे न्यं वे न्यं न्यं वे व्याप्ति हैं।

तुः ईतः धर देतः ५ में शक्ष्रायः हुनः। ज्ञायतेः वत्यः द्या स्टारम्य। विन् देश्ययान् सुन्य। वर्षेनः यम्य। विन् वे देशं देशं परिन् न न न ग्रत्यवा न्यान्यः यह वास्त्रः इत्यत्वराम्या दुन्येद्रन्त्र्वंदत्त्र्र्र्त्याया द्रवहिन्यक्र इयराञ्च 'यात्र'तुरार्ट्स बुर्'पर्वा ने राविव 'तु' वयराशु' वर्वा ग्वरा ग्वरा विन्यान्यविन्यप्रविन्द्रवस्त्रेत्। देविन्द्रवस्त्रिक्रा तार्भून्'कुलको के ने तिने कु'ग्राचे ग्राच केन' इवलकी सहिन जीला ना ना पदिने भेन पराने पाईनिया निम्ला है से समस्य में स्वीस्थान पहिन पतिःश्चेंग्रह्मार्क्षरत्। प्राप्तिः विक्षायि विक्षायि । विक्षायि विक्षायि । विक्षायि विक्षायि । विक्षायि विक्षायि विक्षायि । मार्शे ग्रायारा सामाने शुः सामिति स्मा ग्राया में द्वास में स्माने स्मा में समा बर्ध्या के देवें न्यवातवर्द्ध। व्यास्यके के व्यास्य विद्यार वर्षे मत्र'मं क्रें दबायुन पहु द पति व दबाये व पति र र र र र र र र र र र र र र <u>न्नर्वित्रञ्चर्त्वेञ्चावत्रत्वेच्तुव्यक्तित्र्यत्वेच्या</u> क्षेंबरा गवन'यम्'बे'बेर्'गुःगन्यव्यव्यन्तेन'गम्'दिसंगर्'क्षेंबराय श्चरायति श्चरायव्य इत्यासिया भराष्ट्रियस्य स्वराकेन दे से मिरि र्रः दुं रेल बेलाव सार्थेर् दे। दे प्राह्माल त्रा वे द्रारा सार्थे सार्थे रान् विन्के सुन् न के साम हिन पानि मार्थित विन् मिन के निम्म स्व पते'ग्रकाने'क्यकाशुक्रुपापागर्डं'मॅर्ट्रक्'डेग्'क्रुपापानुकाव न्नायने'""" विचलाहेंग मासरि देव या श्री सेसला के स्वलंक वा की रही देव दे स्वला दे गा रता विषानु पाराधिव। श्रुपाया वा बुर् व सं से दिन में भवा र व गर्वा के पाराव

मृत्यस्त्रायते. विष्यस्य प्रत्याये स्वयः स्वयः

श्चरः क्ष्यः भूनः प्रथम ब्रानः श्चरः स्वानः स्वानः

व्रत्यापर्व्यायर्व्याप्त्र्यापत्रयापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्र्यापत्रयापत्यापत्रयापत्यापत्रयापत्रयापत्यापत्रयापत्रयापत्रयापत्यापत्रयापत्रयापत्यापत्रयापत्रयापत्याप

मिटा स्थ्यिट्ट्याश्चार्यात्रेयात् व्यापान्यात् व्यापान्यात् स्थात् व्याप्त स्थात् व्याप्त स्थात् स्यात् स्थात् स्यात् स्थात् स्

म् । विदेश्या प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त

हे मु य इयराय द्वाप त हमाया । । य य उ व ह स न म य सुव पा ते । |後れ湯、ガイガ・豊か、調口・ロス・ギョ | トカ・ギ 産え・コヨギゼ・コララ・ इति:स्या । हेन्द्रवियायान्यासुनःशुनामनः मृग । श्रेवशास्या गुनः छ्य'र्स्ट देंता । श्वताभुतिर्वेतर्या कुरायर मृग । श्वायते यगतः ईना में हेरे नहुर। किराय नहेर छेर नवसाय सेन विरुध सार त्रॅंति: चैन'क्तरादी । श्रॅंन'तिस'तरमन्यार स्न । हरार्से श्रेट श्रट' सति कुता हेन देश । तस्यान सेन मन सुन । हेन तसे न स्यार्थिते र्श्वेन । अन्या । अन्या । वित्र वा व शुः हु मुरा हे देवा । तुरा मुख्या मुदा हु (तृ है दे पार क्षेत्र । मुद्र र क्षेत्र स्यायीयार्चिषानु । । न न न स्यायकुष्म ने स्यानी प्रश्निष्म । स्य हे न तम्नितित्वयानस्य। | न्यत्रचेवात्रत्वेतिकेत्रास्यन्। । माध्या विवादित्यायरविराव। अहिंगाञ्चायदिञ्चितान्सवस्ता । अते हीता व्यंत्रे हे त्याराया । श्रु अविषायते श्रुपाप्यं व्यंप् । विश्वेप्युप पतेत्र्वास्वादा । तिवस्तर्याच्येत्रस्ति स्त्राच्या द्यां अक्षिक्त विद्यां प्राची । से मने विवास प्रीचा माने विद्या माने विद्या माने विद्या माने विद्या माने विद्या वन्थेन् च भिर्मेष्यारित्या | वापत्रत्ये वहेश्यिते प्रान्तिन्ति स्टी विश्वपर्ष्ट्रवेद्वेद्वेद्वेद्वेद्वे

र्षवयाप्ति । ध्याके हेश द्धार परि र र ध्या नेर । । त स्वा ग्येर प बेन् परिन् ने ब्रुं र प्रा विषयमान्य में बेबेन् ब्रिबेन् व । हन्य इर-५'वर्धनायते क्वेंद्रवेष्प् । विश्वन् म्राम्यविद्यारी राम्या मने'म'क्रे'भे'मध'ममस'स्नि । ग्रीम'सेन'क्रे'भे'म्वरा'भस'स्। पर्वतः सदी तसे व 'सवार्षत्। । या तर यहि व 'सूर्या परि सें व सामा । न देवा श्चान्यां न्यां महिरामा विद्या । न्यां क्यां वात्रात्र में ते श्वा क्यां वात्र त्यां विद्या त्रशक्तिश्वास्त्रश्चास्त्रश्चित्। | सन्दर्भार्षित्वेत्त्रः क्रुन्ता । निहस्र क्षुन्वर्वर्वेतेत्र्राः क्षुं व्या | वित्यानवापति क्षुन्तु व्याय। | व्यानवा क्ष्यायह्रवापतिःश्चिमानिराणित्। ।श्चिमानिरातदेवापतिःश्चेशातुःत। । कुन्पःगवनः र्वतः यमः विवार्षेण । यमातः यकुन् न्नः वतः यमः विवार्षेण । धिन्यान सन्देति न्या देशक्ष । नने न् ग्रेश न्या महाया न्या देश বিষার্বিশ । অনিমেরের্য্রা অলমের্ম বিষার্বিশ । শব্রা শৃত্তা অন্তরে त्राँदै न्या वैदार्वेग । इंदा हुँ न्यान र रेदै न्या वैदार्वेग । ५५ र्सताक्ष विदे प्रमा विकासमा । तुः श्वीपः प्रज्ञाः पिदः प्रमा विकासमा । चन्त्रत्वे व ब्रुच प्रते न्या वेश म्न । चकुन व व चकुन च उरा न्या । वैवार्मेन । न्याः नेवाबीत शुरा नहवानरः मेन । में वाने 'म्या वाहेन' व्यवासु'यन्य। वियागश्चन विनानग्रेयानग्रेयायहर।

ने त्राष्ट्र से त्रा स्वर्ग स्वर्

है। स्तर्ः इय्याचनः चेनः निह्ना स्वाधित्य मुनः द्वा स्वाधित्य स्

द्रैव'रुव'यर'पते'व्यवायातात् ५५। । तुःश्रेटः उरारुव्धेः हुनाः মগ্রব্ধব্য । ষ্ট্রিম্বার্শনির্দেশনের্শনা । শ্লম্পান্তব্স্ট্রিন্ট্র্ द्री । श्रुवित्पत्ति दिश्यो मेश्राक्षत्। । ह्रवश्यत्ति स्त्राप्ति । मम्ला द्विः अन्गामितः विमायवाद्या मिनेवामवेवः रुपस्त मनः र्रेव। । मन्द्राया के बाबा महित्यमा । मुर्वे सामा सामा दे ६ ५ ५ ४ । क्षेट्र त्याचन्य पति ज्याद्याच्या । त्याद्याचराच विनः नतुन्यनः तु। विकान्याया विन्यवाद्या । संवेदानवेदा तु'त्र च्र न्य र ब्रुंब | द्वेब क्व मा अया यहे न प्य | प्य ग्र देव इ.चर-क्रुंब-ब्रिट-चल्द-चर-खा । व्रि-ब्रा-चा-चर-ब्रिट-प्रवयाया । स् नैयामविवानुप्रस्त्रायरञ्जेव। । यानुष्रायेवषाकवायामहेन्यम। । रम्भेवराग्रम्क्राययायकुष भिष्केत्रवेवरामक्रीन्यह्त्रप्रे विर। क्रियम्ब्रूबबलायविर्यस्ति। वि.सर्वायदेवर्विर्यवस्ति। स्वेश्यवेवर्र्त्रस्र्रप्रश्र्वा ।श्रुव्यान्त्रम् स्त्रित्त्वा ।

ड्रेशम्ब्रुन्विन्द्र्युव्ययन्त्रं चर्यम् । द्विष्यम् क्ष्यक्षेत्रं व्यव्या । द्विष्यम् व्यव्या । द्विष्यम् व्यव्या । द्विष्यम् व्यव्या । द्विष्यम् व्यव्यक्षयः । द्विष्यम् व्यव्यक्षयः । द्विष्यम् व्यव्यक्षयः । । द्विष्यम् व्यवस्यविष्यम् व्यवस्यविष्यम् । । द्विष्यम् विष्यम् विष्यम् विषयः । । द्विष्यम् विषयः । । द्विषयः । । द्विष्यम् विषयः । । द्विष्यम् विषयः । । द्विष्यम् विषयः । । द्विषयः ।

ने र रहें न वर्ष गृत्र श्रुव्य क्रम जे ले र त्या न हे न वर्ष या वर्ष

देन्त्राञ्चन् नुस्य। वन् न्युयताचेन्याहे। कृत्ने सुस्याण्यत् नृत्रायेन् सुर्यायेः रूत्याञ्चन् नुस्याः

न्त्रवर्गान्त्रेक्षर्गाः क्षेत्रवर्गान्त्रेक्ष्ण्यात् । वर्षा क्ष्णाः कुष्णरम् कुष्णरम् कुष्णाः कुष्णः क्ष्णे क्षण्यात् । वर्षा क्षणः कुष्णरम् कुष्णरम् कुष्णरम् कुष्णाः ।

## नुगम ह्युनम्मलभान्यम्

स्त्राप्त्राप्ति वृद्धनः त्याध्यान्नः यह्तात्त्वात्याः । स्त्राप्त्रापति वृद्धनः त्याध्यान्नः यहतात्त्राप्ताः ।

हे पर्वत्र्योः वत्यत्य। म्ब्रिये दे त्याय विष्या प्राप्ति विष्या प्राप्ति विष्या प्राप्ति विष्या प्राप्ति विषय प्

यान्य स्त्रा स्त

मञ्चर्पात्रेश्वर्पुंक्रियव्यव्यान् र रेशेरापायपाद्याध्यादर्भेष्ठरात्।।।।।।। मञ्जा ने सान देन 'खेन' प्रति सी गुरु मिते 'कें सा क्रीन तार हे गया ह गया वरा। बिर्मर ने व्यवस्थात में नार्मा अरु सक्ते हैं। **वेग गु**र के वेर्पा प्रस्ति वेर देशक्षक्षत्याक्षेत्रेत्रप्त्वानु नहेन् संदेशस्य दे रूप्ति दे रूप्ति स् श्चिर्म्सं विषा व्यन् रान् का स्रोते सं विस्त का मा सेन हा हा र हा सिर केन्ज्र म्याबेन्। न्विंन्द्रिंन्येन्व्याञ्चन्द्रिः सर्वे तत्त्व इतादर्हेन्य नव। ने'र्न्ड'हुन'वयाठे'र्र्चयार्थन'ठ्याराय। अभी वयार्थे'राह्यन्'र्र्चया र्षरः। बहुः दर्शेरः पञ्चरः पञ्चः र्रथः ५५ ग गृत्वः इरायः सम्बर् विन्द्रवर्गन्ति क्रिं श्रुं नायात्रे ग्रायन विन्यान स्वा **८.ज.चेंट्र**न्त्राचेट्रकुर्यस्य ४.प्रयान्त्रा अस्य ४.च.च्ट्रन् ब्रॅं तिविन्त्यश्राम्यां क्र्यं ब्रह्मा व्यन्ति स्तु स्तु स्तु स्तु हो। हे अय बुच'चर'भ्रॅंग्'केग्'मु'ह लेर'चर्या हे'यान्य रम्या'हॅर्'प'न्र''स्यानु हिन्यमा है। तथा दुःहे क्ष्य हुन प्राप्त हिते विन तहना हुन तत्त्र। पिर्प्पं क्षिप्तरं तर्पं ने रत्यं वर्षं क्षेत्रं या वर्षं क्ष्यं ने में वर्ष डिन'र्र कं नग्निन' द्वारा तर्गा है। ज्या ता नहे का के ना राज्य का उत् पीर् सुन्यं विषायार्थं यन यां हे सार दुषायाने हानसम्बद्धाः वे दुस्यन सिंहुः वियाधिक हुन प्रमा वादी द्वाप विवाध सम्बेख है। इव इन वादी पर हुं

मक्ष मर्झन् युवाबाबेन् पराम्यायायायी नेकानिनः श्चारी सुनाम मिश्चेनः हुन् "" " यम्बाद्याद्वायेन्द्रत्य्रें विन्दुम्पवा ने यावग्वायि वित्या **८ग**'5्रव'वरा वरि'इय'मेश'५८'८'रर'गे'सेवय'यसेसा दे'यगर' पक्ष प्राप्त स्वाप्त के स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स् र्झे ग्रुअः सृत् देवा गुरः अ वृष्या परः दिन् व्यवस्य सम् **4.9** न्द्रेशन्त्रिर्वर्वे सुन् नर्वे त्राप्त्र क्रिया वर्षे व ৰেখা मतुव्यस्यान्ता हेरारे तहेव्ययययस्यहे। मयस्य विषापहर यश। त्रिरपंत्रवास्त्रप्ताः अक्षेत्रं से विष्याः स्त्रवाः स्त्रवाः स्त्रवाः स्त्रवाः स्त्रवाः स्त्रवाः स्त्रवाः दुर्यापायने यार्क्षकं विवापान्या नेते प्रवादान्त्रीं वायहे वयायने सुवाया न्म्या ह्यां पश्चर श्री सूर पा नर द हे पया दया ने स्ना क्रीन हिरा है बूर्याप्तर्वायात्र्वाक्रम्क्रम्बुराह्मवाधिवाधुराद्रेष्ठ्राह्म षेत्'ग्रेशन्वानकतः त्र्यामा व्यापान । व्यापान **५ मॅ व' महे प ब'ग्री बें ५ ८ में शुव' इस ब' मस ब' हें प वा ब' हें प ন্দুকা** ढ़ॴॹॱय़ॱढ़ॏॴॱख़ॖ**ॴॱॻॴॱऻॗॾऀॴॹॱॻॹ**ऄॸॱॴऄॗॕॖड़ॱय़ॸॱ**ऄॱऒ**ड़ॺॹॸॖॎॱॺॵ क्षेप्त तृष्यय। प्रमुत्यप्ते क्वयः सुद्वेत। यदे उद्यापः इययः सुः पतः ह्येन्द्रराधिन् श्रुं प्राताः कंन् येन् प्राविषाः वीप्रान्दः त्रयात्र विराधाः त्राश्रीनः प्राये येन् पर विष्वण कॅन्'व्या क्रेन् मंदि कॅबान्चेन्'पर न्यां पर त्यां सुर सिंदी 周'尽气周二对"

हेके पर्सुन् कुर्स्प हुन् राहे उत्। । मु हुर यर परे पनार अर

म्लेव। ।म ध्राय प्राप्त प्रें पर्देव मात्रा । वि हमा हु वि है पार्पेव विष्णुक्षक्ष्रत्य। विष्युद्धि विद्युद्धि दिन्द्रीत् दिन्द्री स्वरामुन्। विद्यु 部·口声有'只要不得下不到! |新村内首下口角·盖村内南下首南下! |第下 ष्र्रं वं वं तुः र वे दा । तुःष्रं वं वं प्रः यरः वे दा । ग वे वा ग तहे वा उरक्षेर्यं बेर्। । वुरक्षेर्यंदे के इंग वेर। । व्यार्गर कर क्रिंग दुः त्र्र्या । साम्र उद्य व व तुः मः वे । । तुः मः त्रे प्रश्चे या म व गुया । ग्वेराग्तिस्याउन्केर्त्यं चेत्। ।तुन्त्केर्त्यते । ヨッイカイラ ガイ類がらいるが 一致一、致人、我人、我人、女、女人 一名一、社・ व्यवास्त्रीत्यात्वर। । मनेवामात्वस्यात्त्रित्यात्रः 多二、文字、母、安全、母之 1日山、七川七、年 女士、教文、子、八道 1七公、文本 स्ट. क्र्ष्यियः हेता अटी विषयः हेता श्रीमश्र क्रुड्यंशनश्राम येट्या प्रेम्पातह्य उत्केत्र स्राचित् । वित् केत्रित् हे स्राचेत्। । व्या 「一方子、大小教女子、八道」 「一方子」、女子、女子」 「一方子」、女子 式名·母·卷如当八 1日可·八可不可 数二新四丁·凡到 1日年初一日一一五一 श्चर्याम् अर्। निर्वाम् श्चर्यास्य स्वाम् स्वाम् स्वाम् । विदेशम् RENGに第二式・到了 | コーカー、近、第二、五人、海、海山山一 | 日本 

विश्वाचित्रं श्री चार्या व्यक्ष्यं स्त्राच्या व्यक्ष्यं स्त्राच्या श्री चार्या व्यक्ष्यं स्त्राच्या व्यव्यक्ष्यं स्त्राच्या व्यक्ष्यं स्त्राच्या व्यव्यक्ष्यं स्त्राच्या व्यव्यक्षयं स्त्राच्या व्यवक्षयं स्त्रच्या व्यवक्यव्यवक्षयं स्त्रच्या व्यवक्यवक्यः स्त्रच्या व्यवक्यवव्यवव्यवव्य

रम्भन्पन्पन्यविष्यार्थसम्बर्धाः यहेस्ये प्रयातृपविषय्य। बतिः इवाचर क्रुंतः पार्या चेरापवा दिः स्वायावराधवार में परिः देवः दुः **ए**अन्तिबायराष्ट्र। देखान्तिः न्याया क्रेंस्ट्राह्यापान्याया रोर मेरि है। प्रवेद रे प्रांत अर्हे र रा रु र मायर ता क्षुर वहा बेर्'परा ब्रुरागुरादार तिरामायाया भेता क्रुं वरा नाय विरामाया A & TX + TX | **८**ग्'न्र'क्षुत'र'बैद'र'ग्वद'ग्र'ग्वेद'य्र'क्षेत्'य्रक्षेत्'र्येद'र्येद्र'य्येत्' **बिग** हग्र्येन्'डेन्। नः'रे'विन्'वाञ्चनःयाञ्चेन्'यावन्तिः वायान्तेः बर्देयायन्थित। इयाचरायन्ने ग्रायात्रिंत्य। हुग्यान् में न्यायन श्चरायस्वायायाप्त्। यहन्यार् राज्यायस्वायायस मन् मायापराञ्चनामकातर्देनमा सरान्नाभराञ्चन। नमा श्चरापाबे**दारा**ब्रह्म नेबायराबेक्षा ४८ यटाबे४८ । हेबलायरा पत्रा द्राप्यम् वापते हेवाइववाकी प्रेराम्बाया प्राप्यक्षित राष्ट्रेन्'पत्रै'प्रवश्याप्त्र्वा'तु'र्र्र्र्र्र्र्प्त्र्वा'व्रिन्'व्'श्चे'त्वर्र्याच्या न्वन्षुन्। नह्यापन् । तहार्चन्। तुः अपन्यापान्। तके प'र्र'रव' र्सन् नी हुन् प्रस्थाया इन् पा इस्राया क्षेत्र करा ही सार्कन प्राय प्रमान नैयानभुतानिन म्नादि इययातम्यानुया यक्के यत्राषुना निवस्ति रराव्यायुष्तरी ब्राह्मार्था ।

क्रेश्यक्रम्'यरपदे'व्यक्षित्र्त्त्त्

**डी**द'ग्रीक'र्ह्सेनक। ।ग्रे'काग्रे'काग्रीकुर'ग्रीकुर'क्षर'। ।दिवस्पदि हेवा मार्त्ते न न न प्रेन प्राच्या । प्रस्वस्थिन प्रस्वस्थित् स्था अवापना ष्मः स्टः । । श्वरः देनः श्वरः देनः श्वरः यहारः यहिनः वद्यात् वृत्रः त्रात् वृत्रः । पङ्गिरः विनः पञ्जरविनः विक्रायि गिर्दे । विने वह विश्वेनः हुनः सम ग्रैश'नेद'र'द्रवय। [र्जुग'ग्रेन्'र्जुग'ग्रेन्'रूब'यय'र्ग'र'वेन्। ।हे'वे' ह्यः हुन्। श्रुः यदेः र्युनः श्रिनः द्वा । श्रुतः नैन्द्रः श्रुनः श्रुनः स्तुनः त्वा । <u>धारापाय बंब क्व गुरा हर गे क्वें रखराय। विराधगा इवकारा रदी पा</u> য়য়৻ৼ৻৷ ৻ৢয়৻৴ৼয়ৼ৻ঀয়ৢৼ৻য়য়৻৸ৼঀ৾৻ঀৢ৾৸য়ৼ৻৷ ৻৸ৼ৾য়৻ हण् श्रु अदि द्वे। |द्वे पदिषाण्य इता पर्वे रादा श्रुपाय वेद। । छदा यम्मानविन्त्रम्म ११ । १५वानेम् वर्षम् वित्राविष्यास्य वर्षात्रा। वायर बराय विश्ववाय व्यव्याप विष्टा र प्राप्त विष्टा त्र। । तर्ने यम् से हग् श्रु सदे द्ये। । द्ये तर्ने संग्रम् इता दर्जे म मञ्चरमञ्जेत्। विम्यविम्द्रिम्यानु ग्रुअन्। जियन्मियम् तम् बदि:स्रवार् र्वेता । महेदाहे पाम ह्यूदाने पादववा । तुरा ने राया न्नु र्नेर-न्यम् सुयर्या । तर्ने यर्के हम् हु यदे न्ये। । न्ये तर्वायुन्द्रस्यत्र्व्यस्यञ्चन्। ।वःपत्रन्वेत्यक्रःक्रस्ये त्यानेत्यास्य स्वायाम् वेत्। । व्यव्यस्य स्वायम् स्वायाम् व तुशानेतायात्रवायात्रातिवाराविवा । तिनीयात्रवे ह्वाञ्च वति न्ये। । न्ये तन्याग्रनः स्तात्र्यं रानः श्चरायाचेन्। । श्चर्यकन् न्र्म्त्यक्रम्

त्रियह्र्र्स् केंद्र्यात्र्र्म् । विस्त्रात्र्यक्ष्म् विद्यात्र्यक्ष्म् विद्यात्रक्ष्म् विद्यात्रक्ष्म विद्यात्रक्ष्म विद्यात्यक्ष्म विद्यात्रक्ष्म विद्यात्रक्ष विद्यात्रक्यात्रक्ष्म विद्यात्रक्ष विद्यात्रक्ष्म विद्यात्रक्ष्म विद्यात्रक्ष्म विद्यात्रक्ष विद्यात्यक्ष विद्यात्रक्ष विद्यत्यव्यविद्यत्य

## नतुन्मा भेनलक्षेत्र्रिनेन्निक्ष्यकामा

यन्तर्थक्त्यय। हेप्तर्श्वप्रीय्यम्य राज्यस्य विद्या विद्य

के क्रांच्या क्रेट्यं प्राया कर्षे राया विष्या विषया वि

म देव उव वर परे वितर राय राय दुर्। । धुरा र व उ से में रव व। । गुनेव पनेव प्रमास्यक्ति यातु गुन्न। । श्रव दुर नेर ग्रा महिरायात्वेव। । वित्राक्षात्वाकावेवाकायहरास्यवा । नाञ्चरार्था श्रवधरतियशक्रीतर। । अ.स.स्व. पर्पात्रप्यक्रीर वे। । श्रीत ऑक्ष्रॅ मॅलाब्रुन् हिर्रात् छुर्। । त्यायाब्रेन् मी म तुनः खेबयायाळेन् 'पारा। । मः स्यापाय उद्याप र श्री वर्षाय दिखे । विकेष्य दिया प्राप्त विकास श्चीत्रां श्चन्यायायायायायायायात्रात्वाता । निः श्चीत्राक्षेत्रः श्चेतः वित्रायायायाया देन्'अ'तु'गबुअभ्री'स्या'यस्यप्रदे। ष्टिन्'यक्रि'यमेश्रयम् अप्र चर्डतायय। । प्रतिन्श्रुग्यवेत् प्रतिः कृष्ण प्रस्ति । प्रतः क्रंबा ब्रुपः पर्वे ग्रायाय दिन्य शुर्मा । द्वेष क्व अर पर्वे ग्राम्य स्वा इयरा | क्रियंत्रेन्द्रसान्स्रेयरामतिक्री | ह्रायायराग्रीयन्तिमा | नरायेन्'र्सून'नु'र्स्टरापरिकें। । ततु'के'नन्'र्सुग'यरि'रून्'र्सू पविन्। । यन्ग'ग्रन'व्य देते झें हुन श्चेयवा | ग्वरुन'ग्वर (ब्रेट व्याप्ती) | क्रॅनराधेन्'खेरा'ग्रीरा'न्धनास्'क्षन्। । ५ना'स्नाराक्षेन्'न्न्'र्स्

वियाद 'रग'गैया मु 'या न ग्रु रया ने 'ह्य रया पया। अ'वे दे 'श्री 'प्रवे व 'सु' बॅं'वेग'८ तुग'रा'ने'बळे' अ'व राष्ट्रराम्रान्। अ'वे'य्यराङ्ग्रीत्वावकाम् वेखा ग्वर्न्तुः र्वर् है। बर्द्रिया विवादि वित्र हिन् है। दुत्र प्वा विवादि वि ने'लानभुराधुरा। श्वामविवादयवातानभ्रत्यापय। त्यार्टावेयापादी क्षेत्रराप्त्रग्राप्तेरचेत्चुरापाद्यस्यित्रहेराद्याद्य। अवेदिचेत्रस्य नैशाल तु प्यन में प्रकार्य प्रवास्थायतन वी तर्ते न में शक्रवा वुन है। स स्ति, विर्त्ता स्वयायाय स्ति क्ष्रया पश्चरया प्रशास्त्र । सामि क्षर् क्षेत्र क्षेत्रया पश्चर वा प्रशास्त्र । म्बियात्र्यवार्तिः क्षेत्रक्षेत्रवाद्यावाष्ट्रवाचेवाव्या राष्ट्रत्मवाउत् <u>ब्रिं</u>न'ग'न् गॅब्रारायन में बेरान्सन में त्रस्तराय में ना कन्या हुनाय न्या क्ष्रान्त्रेयाय्यार्च्याञ्चर्याञ्चर्याच्या क्ष्रित्याज्येयान्द्रारहित्।क्रेक्ट्यार्धरमत्या हुन्। नन्द्राणुन्द्रियासम्। यन्त्राष्ट्रि होन्द्राहिन्द्राहुन् है। नक्ष'तळेंद'र्य। मदायदेवार्याह्वेदार्श्वेवाध्यायदे सदादाया नव। स्रायाद्वरान्य सन्दिखन्यन्ति। ह्यादिन्तिन्देन

## बेर बेर बर एक ग्रह वरा

देरःख्यादिः संग्वेदः त्वायाग्रुनः <del>दें</del> प्राप्ते ख्यात्यन्या शुनः प्राया रक्षणुरःष्ट्रस्यष्ठः यहरायदेशव देरःवैद्याप्तरः श्रेद्राष्ट्ररः वैद्याप्तरः विद्याप्तरः वहरार्चेग्रार्थे मुन् क्ष्य। यगत्र यकुन् न्नाय। प्रग्र तहर न्य उद कुं यह । इतार्युराय हरायुर्याया प्राप्ता वुरान्य। रायर्या ह्री व विव र वि र र हरा हुँ र तार है हैं अर में पुरा र वा किर द वरार है वय वदाग्वाची राजा तु । यहार। देन'रमायान गर्या द्वराष्ट्री राय देवरा र्सः हेन् के इयरा श्रीयान स्नाम्यान स्थान स् हुँ यश्रपान हेराय है। विवास मानवास चैव'चुन्न'द्रसम्बद्धाहिरहे। ५'खयातर्नर'यश्न'दुन'विन'ळेते'**वे'श्नन** न्र्यांतर्रत्यात्र्या तर्भेत्र्य्यात्र्यात्रा नेत्र्याके तथात् हर क्षे ग्रस्ने ग्रावग्यम् प्रायस्नि द्रायस्य परितर् विषा क्ष्रा हि विषा त्राय तस्र्'र्'हुर'पर्या परुरयाद्रवायर'र्मेंह विर'तरुष वाया वे हुंता न्नःश्चनः अंत्राहर कुंत्राचन्न् वुन्यकानेव् कुंतुः तेवा वुनः कुंन् नन्याः । यम् अक्के अवस्य म्ना म्याया अवस्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप र्रापुराधवा संस्रो वित्किक्षर्भुत्यात्हेन्यात्राच्यान्यं सानेर न्यान्या क्ष्मा वित्यमार में न्यान केत्। वित्र हे का वर्ष्य प्यान वित्र के। न्विन्वन्द्रवर्ष्यक्ष्यन्तेन्वर्गवर्षा न्यक्षिःप्रवर्गक्षे न्दियद्यायायाञ्चरपार्दि। शुःश्चर्यस्परिप्यगर्देव्षेव। ह्र

ष्ट्रें न स्वरा ह्रें न'सरा पन्न-प्रें पन्न पायकार्रे न स्ट्रीन हे न'स्रेन स्वरासं रम्बिंचन्द्रिंप्रत्यं न्यादेन् न्यादेन् न्यादेन्या श्रीम्याद्रिंप्रम्य ह्रेर। ने'परः विनः हिन् परः चय। श्रेन् वा विनः वा विनः वानः मुकेश्राम्बिन्यन्ति स्वाराज्याच्या ब्रिन्यन्ति स्वाराय्याच्याच्या पर्या राष्ट्रं न् गत्रमुपान्रामुत्रं वर्षे वाची तर्षे वाचीन् पर्या विदानी न् में वापा ग्वराक्षेत्रेत्रिः ज्ञान्या सुग्राः पृष्ट् प्रसावन न सान् क्राया सन्। तर्सवायुति ब्रेन्प्ना प्राप्त के कें ग्वापा न में शत्रुपा प्रमा न दिन कर <u>ब्रॅंबायहर्न्न वित्रे श्रेत्युन रुक्षेत्र पर्यर्द्य प्रत्युण नेक वर्षेत्र प्राची गुन</u> <u> ५८: कुर्पार्यम् क्रेन्यम् ५८ त्या स्थान्य स</u> हिन्'र्रूक्षय'गुव्दन्यम्'कुच'र्येष्व'यर्दन्'न्य'त्रेर्य्याया न्यःर्यं प्रयय पायहिना हे व के के बनका विमानु मानुना वना क्रिया में है सन दि केना यन्त्रप्राच्याने न्यूनियम्यायान्त्र्यं व्याक्षान्त्रप्राच्या म्बद्धं म्बारस्यव्रन् म्बर्या दिन्त्र हिन्द्र हिन्द्र स्वर्या दि हुर्या दे रहे महान् *ॺॖॕॖॿ*ॱय़ॱ॔ख़य़ॱढ़ॸॣऀॱग़ॖॿॱॸॣॸॱॿॖॻॱॺॕॺॱॗॵॿॱख़ॸॱख़ॿऻॎ<u>ॿॆॸॱॹ</u>ॸॱॿॖॆॸऻॗॗॸ॓ऻ री न् 'प ते 'क्रें काप' क् अका सेवा 'प 'कें कें ते 'क 'शुवा का कु कू प र तु प । प न सा क्रें प मॅर-स्रवीत्वः म्वायायस्य प्रकान्यायाः स्वर्थः । प्राप्तः स्वरी बहुन्द्र-ज्ञुनः त्रेंग्'न्द्र-भेद्राञ्चराया। दें-द्राष्ट्रिन्'ग्रीक'सुन्रां चूर्नारां नम ८*न्पा*तन्दित्द्वेर्ह्सपाष्ट्रस्यवर्ष्ट्रा तन्दित्रवायाकेन्द्रायानःबीकः खन्याधेन'हेर'पन। तर्ने हेग्'प'गुन्भुंअर्द्धम्'रप'ळे'तर्नेरन्याचान

यान्तः स्थान्तः स्थान्यः स्थान्तः स्थान्त

ञ्चान्त्रवेश्वर्थः क्र्र्स्स्वर्थं वित्रवेश्वर्यः वित्रवेशः विश्वर्यः वित्रवेशः विद्याः वित्रवेशः विद्याः वित्रवेशः विद्याः विद्याः

व्या श्री इययावानी विस्तान्तावाक्षंत्री हैं स्वाक्कित ने वायहा होत् हेराने सहारा स्वाकित स्व

नेत्रवादवाब्रेन्द्रवाद्यं व्याद्यं व्य

ग्रॅल'८ नेपराप्तग्रॅति'ग्र्यु'८ हुग्'्रेर | । हुन् ज्ञपरास्थाबेर रिकर यप्तयः। |येवयाभेन्'वृदेययेन्'पदेवें व्यन्तरा । व्यवस्थितः या मुद्रेशक्रीक्रें सम्मूर्मिय प्रता । तिह्नुस हैं मु सेन् परे क्रेक्स सु सेना । सेन्स माबेन्'मने विषापहें वा | महें वा स्त्रा वा माने वे खा माने वे खा माने वा माने वा माने वा माने वा माने वा माने व वृष्द्रस्यातुगाद्दरेषाताञ्चन । तताजुनानवादेषे नार्यय। । न्य इत्राधेन्यर्थस्य होन्। । १४४१ तञ्चरानेन्यते हे स्था। इअवर तन्द्रिंत वर्षा अट्य । ग्रिवा श्राद्य वात्र विति तन्त्र स्थि षेया । ग ५५ 'र्से बेर' चति चर च र वो र या । बार तर त्रे ते हेर त द वा मर्काकुवर्षेत्र । पर्वाद्रसारम्भित्रं मुत्रपदित्र स्वाधिद्र। । है तस्र न्द्र क्कीपायायाय ने पराधिया । व्हें या त्या दें वा के ने प्राधित विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास गुरुको हॅ प्रायय। । श्रुन् द्रायुन् कुरा श्रुरा राज्यय। । श्रेन द्राय मक्केन्द्रभ क्षेत्रयम् ल्वा । न्यातः स्तान् केन्द्रभ स्तानकेन्द्रया । **८ योप:पश्चान्धिवश्चान्य्रेवःपश्चान्यः । व्राच्याः श्वान्यः श्वान्यः व्यान्यः व्यान्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः** वेत् स्वरा वियापायाय स्वत् वेत् पर मेना

मेश्रम् स्वार्थ गुरुष्टा व्याप्त स्वार्थ स्वार्थ म्यार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वा

**पर**'होर'के'पहेब'डे'पुरावस्। सामके'झेव'याररे' सवसामुर'वासर रा धैव'व। हिन्'रून'गवैद्य'ग्'गर्रान्'व्हन'बेर'घर। कं चें रर्प स्थाय ग्वन र्र्त्रियाराये ग्रायराय रहण देशामुरा श्री वर्षां नारा ग्रीत र्रेन येता कं चें नराग्रांत् 'श्रेग्रांत् 'सम् ने क्रियंशे तत्ग्'र्मे ने र श्रूर प्रश् मसयप्ता धाराबेसन्स्राहेत्राचापात्रां नाह्यामहिन्द्राहेन्द्रा परःइतातर्द्वेरःपतेववतर्द्वे तथाश्चुःयधिव्पक्वित्नाः वद्देतावेरः।"" यग्गान्द्रित्यात्राह्मेन्द्राच्याचेत्राह्मेन्द्र पति'नर्जेन्'पाशु'यानर्ज्ञेय। रास्त्रार्ने'तुन्'ने'क्'वेत्रांनेवाक्षेक्र्न्'यन् इयराग्रीरागुर् हेन्। यरयाज्याव्याच्यायात्रेत्रप्यायायाच्यायाया स्या शुर्रा प्रित्। दे र्झें अपिते हे वाजा वे प्रेत विदा। द्यापित हैं हा <u> न्रायहत्याचायमायातुः न्रायः वेदे नेवाधिव। चगतः नेवाहाके यश</u> हेन्यवर्त्र्ष्ठे अयर्यक्षक्षर्मन्यते र्स्वय्यम् नग्त्र्रदेनया केतरेर विन:नु:यानन्।वन:पापन:ग्रेन्पनार्हेण्।क्रुयापाग्रुन:पाक्रम्। 당하게 자주 원도하지 |

विश्वपतिः श्रु ह्यस्यायश् अ ते व्यते। क्रिंशपायहरायां हायार्क प्रतिने तहाला चेरापायित्। प्रतिर र प्रति चेरा प्रति व्यक्ति स्

स्थान्न न्या प्रतित्वा क्ष्या क्षया क्ष्या क्ष्या

सुयान्'बे'तरारापादे'न् अपकरायुक्षायांदी रन्गा वसका हूँ गया सुन्' पर ठव विषाय क्रेक क्रेप पर दुन्ने विदाय देन देन देन विषय के राज्य न मॅश धेर बे त्रामा अं जीर वे उत्तर तु तहे दिर म्यामेर न दे त्र अवे छेत्। ब्रेंब्रे'वे'द्रत्ञुब्र्व्युब्र्यं ठेग्'गे'छेरः सत्वे'त्रम। क्वेंतर्देरे'छ्रं बर्वा कुरा पश्चित दे। । पर्वा वैषा रुषा परत दि देव वा त शुपा पर न्नायाधीन्याक्रित्रित्रक्रित्रक्रेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष त्र्वद्रायशञ्चत्रक्षेत्र न्यान्द्रात्रक्षेत्रव्यात्रक्ष्याः । यां बें हो न प्रति के लुका सका ने ना क्षेत्र प्रका न हमा कर का का कि का न वा न वा न Nर्वातन्यायां चन्। तृप्तते र्त्तुन् रूप्ते न्देन्। देन्। द्वा यो प्तया द्वा या प्रवासिक्षे या न्या । <u> গ্রীঝার্ক্রনঝারীবা ভিঝান্ঝানভঝার্ঝান্ঝানভংগ্রুর্থেঝাগ্রীগ্লোনেরী</u> 到七剑,刻1

मुन्ना भूजा कुर्या कुर्या प्रसाद के प्रसाद क

₹·देतहरःहेन्वरावरेत्रु। । बुरःरेविरःहेन्परःहेन्छेन

विसारमानीसारमाना इनामान निमान सामिता स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स

ने ब्रालिया (प्रक्रां प्रें प्रक्रां प्रक्रां प्रक्रां क्रां प्रक्रां क्रां क

वृत्रान्त्रात्र्युं संन्त्रिवाद्यात्रात्र्यः विवाद्यः विवादः विवादः

ने'क्रांसंग्डेग्'र्डस'संक्'प्र'न्न'। ग्वसानेराक्चेन्'र्सेन्'र्स् पदिन्ते रात्रे न्वव या सन्पातवात सुनि है। हिवायर तरे पतिवा वेर-प्रॅश्चरा। क्षेत्र-'ज्ञुवायायाधेतायते'त्यंज्ञुकानुकायम। भेत्राभेत् रत्वेत्र्ष्ट्रेष्ट्रेष्ट्रेर्न्तेर। द्धर्युत्र्र्त्र्य्युग्पतेत्र्र्व्यव्यव्य ग्रेन्त्रहे। विन्किश्चन्ज्यम्यम्यम्। देन्द्रयस्यक्षेत्रविन्स् हिलाक्षेत्रपान्यरार्षेत्र। विष्कृत्रपान्यत्यत्रपान्यत्यपान्यत्यपान्यत्यपान्यत्यपान्यत्यपान्यत्यपान्यत्यपान्यत् याय। मायात्रात्रेत्रपारिणमायेत्। येत्रुन्तुनायार्येतिनेग्रायतमा सन्याया तस्तायस्त मुन्द्रम्या स्त्रा तस्ता स्त्रा श्चित्रायां यह ने ने वारा कर दिन होता वार्य ने वारा दिन होता वार्य कर होता है कर है क व्यत्रेष्याचेत्। यन्तु ज्ञन्याव्यायायन्यन्यन्ययाया न्यातः क्रुका बक्के संस्था मुडेग्रम्ब के होन्यम्य स्प्रिम्य स् त्रे | विंदे:ह्ये | विंदः क्रेंश्रयः इयाद्वः चेवः धेवः प्रदारः ८५० दे धेवः द्रदरः अ.द.न.प्र. प्र. न. विवाद्य व्यक्षः क्षेत्र व्यक्षः विवाद्य व्यक्षः विवाद विवाद व्यक्षः विवाद विव

ने'दश्रालां पहेण' स्थार्थना प्रतास्त्रे व्याच्यां व्याच

विश्वस्वर्रेत्रियाच्यायञ्चेयस्विर्ध्यन्यित्रे स्वर्षेत्र प'न्न्। क्षेत्रन्यंतेभ्रन्ने रेन्द्रेनुन्। मक्ष्यम्बन्धिः रामात्रवातः व बद्धां हो न व का सुवा परि त व व प्राप्ते य का सुन य। दा अर्थे न परि दे प तर्गाचेरम् वाद्मवार्चेश्रवारा है वाद्मवावारी हैनामरात्रे हुर देवा वा केर 'र्वा ता कें के वार्य। र 'तुर तिवा वा वा वेर। र 'तुर यद्रत्त्व चेर्यया । विर्यम्बद्धः द्रश्रार्थः प्रवास्त्र व त्रुण'य'त्र'। रकारते वैद। रेपर्ने ता क्रिंय ने दे क्रिंय के व पिदा है। ८क्र्याचेन्'मर्गपुरापन्ने'पुर्यास्त्रापित्व चुरा में बुराह्मश्राज्यापर पन्त्यम पनेव ह्रव पन्ते सेव स्वापित स् यंकिष्यत्त्रीततुग्रायंन्त्। गुक्न्निप्यत्युत्रानेभ्नवत्र्यान्तः ज्ञुन्र इग्'ने हे इवरासुताव्या तरीतर्नरायर्नि एन्य वर्जन है। देन द्यकाश्चिकाप्तक्ष्ण्यात्रे सेवाकारुवाद्यकाश्चित्रम्य स्ति । सेन्प्रस् इयराक्षियाः श्वेतः वर्षेत् 'हेगः नेतः । गुरागुरागुराज्यायायां प्रात्रा नेतः तः षर् श्रे नरा च के प्रत्याप्याप्याप्याप्याप्याप्याच्या ख्यायने प्रतियाने प्राप्ता विस्तान् म्यानि स्वापा स क्षेत्राञ्चर नवा श्रुं र ने न 'के है र रहें हे । सर न र के 'त ह पर है। कूट ने नवन पनट में के ना हिट पन। केंद्र खान है पेट ना केंद्र पन केंद्र पा हिट किया <u>र्; क्वॅ</u>न्'ळेते'.पज्ञु'.त.तुस'.पर्या २'वॅन्'र्'न्गत'प'क्वॅन्'ळेते'.चड्र'क्वन्ते' पर्या वरुरात वर्षा मृत्यु प्राप्ता त्राप्त वर्षा मा अव्यापा न्ता

त्तर्त्वाच्यंत्रंत्ववयःत्त्त्त्वाच्यः विष्यं विषयं विषय

ने वहायमार्थे विश्वपं देश होमान देखें। स्वहारी है मान मेनुवहा कार्रिन्दारम्प्रम् द्वार्षे रस्यरस्यतम्प्रम् महाकार्येष्ट्रम् वस्य वस्य प्राप्त प्राप्त प्राप्त । गृतु अर्क्ष ग्राप्त वस्य स्री शिषेत् व्यातर् भेव। गहणवारहव्या मॅब्रावया ग्रापक्षाणू । तर्ने भिवायात्र हेरायाय। त्यापळेषा द्वारा भेवार प्रेवार वा सेपेवा द्वाराया दरि:र्सं वं : यश्ट्रं वेशहे। हिंद् वंशय: द्वार धेव:वश्चेत। धेव:घुर्वः पर्या दें दाने ने ने ने ने दारा में ने हिंदा है न हिंदा है न है न हिंदा है न है न है न हिंदा है न है न हिंदा है न ब्रेस। व्हिन्दर्धेत्यव्यविष्युत्यनुः दिरबायदेषा नुबाविष्युत्र वद्यावे अरः रु:र्राता ने वरान् परायमेन गरायम्न पाधित वया नेरा ने गाधित है। हिन्द्रवयः सर्द्रापि स्वयं वेन्द्रयाया हिन्द्राप्त पाने विन् ने'ग्राक्ट्राचेर। देंब्द्विन्'रन्'इबराबे'ईन्ब्रायान्न छेबानेग्'ग्रस्'यान्। बे'यहरः नुःचर्डं वायवादः प्रदेश्यः तदेववायते व्यूरः दर्वे वाने र । व्यूरः प्रदेश ब सराय इत प्राच स्थाय हा प्राचित है। वि पें यो से वे न द सामे र मार म्राया विराधन विपानुकायका दिन्द्रमानिनान्नेकारा देत्ना हेर

व्यागुर्नेत्रवारम्याया । म्यायत्र्व गार्चेयानुयायय। देव र् वेवा बेन्'मनसन्द्रितनुग्'नेर'नस। र्दुं'सन्द्र्यन्त्रसर्द्र'न्द्'स्यान्नस्यन्तुन्त भिन्दे । विस्तित्रे विद्यायम् वित्रायम् वित्रे वित् वित्रिक्षाम्या वित्रक्ष्यात्री वित्रक्षिक्ष्यात्रीताम्बन्यात्रक्ष न्न्वित्रत्रित्रव्युत्र्र्व्वर्यक्षित्त्व व्यःस्त्राक्षेत्रः। व्यःग्रं **ड**रा उर कें. त्र न रात्र में रादें राजेंदा। तह रातु होर के के विषा ताहिंदा Nबाक्षियोत्ताः केटा हे ता की दिन ने राता । न वा विं रे केटे क्षिट का ने रा ५८। ८ शिख्यार्थ्यत्रप्रदेश्चग्रम् विष्येत्रप्रे हे। हें च्रा व्यास्यां र्दु भुगुन्त अहमा के नहिना खरानहिना तारा नित्य स्ता विन'न्या न्नेन्पतिकेत्यकेतन्तिः हिर्यानहरः के केंग्राविरः वयागवना म ह द भी में द न मुना हैं में सम्म ह सम्म मुना सम्म म न स पति'त् म कें तर्र र तहें अरापर में तु'रा धेन पर्या तहें अरि में के गुडेग्'य'न्'नश्रवं र्ह्नेन्'य'न्न्'यत्व्रात्येत्राय'येन्। ने'नश्रहेन्'यन য়য়য়য়৻য়ড়য়ৠৢঢ়য়ৢঀ৻ঢ়৻৴ৼঢ়৾ঽ৻ঀয়ড়ৢঀয়য়ৢ৾ৡয়৻ঽৢঢ়৻ चेन्'र'न्ग'अ'रुन'केहे। कॅश'वृद्य'र'र्डब'क्के'त्रु'वेश'कुन'येन्'य स्यान् र्या हिन्दायात् तिन्या हे वा स्वास्त्र नन्वित्कुन्पन्वाकारुन्छे। त्र्यायत्न्त्रंनन्तिःवन्त तर्ने तर् थेंन् प्रवा हते हु तर्ने क्रिया उर्वाचने प्राप्ति हु तर्ने ह्या क्रिया

到1

हेर्देब्र्क्व्यरपतिव्यवायात्तु । । क्रेंब्र्न्स् वेश्वेर्र्यार **डैद**'छैदार्के पर्या । घ्रण'न् गर हः सॅन्तु'अ'र्हेन'। । न्तु'अ'र्हेन'चे हिरा हे ज् | निर्णे हता तर्हे राजवायाना | क्रिने बाक्टे तरे हे बाव हरा वर्षा | ह्रेन्यायतेषार्वाज्ञवाञ्चरायाय। | द्रिन्वाञ्चरायतेषाञ्चरा यने। व्हिन्द्रायवार्यते विनानसायने। । सुकायहुन् क्रेंयानग्र्जन न्दिन्। न्द्री । त्रम्रान्त्राः हुन्याः हुं वर्षाः स्ति हुं हुन्यः हुन्यः मते'सेबस'केन'मने। वि'मने'के'मन्त्रमने'कॅरमन्त। ।मने'मने' त्रं व्यात्रात्र व्यात्र व्यात्र विकासी विकासी व्याप्त विकासी विकासी विकासी विकास विकास विकास विकास विकास विकास मॅं'पॅग'नीक्वैर'हेरी'तहतानीय। वि'यानेर दुर'तातार्यर। विर' क्ययान्तर्नित्राशुर्यात्य। । त के सुत्त्वयात के क येत् या। । हिता पर्दश्चरवाकुवाक्ष्यापाय। । गुजेरवाग नवायपार, प्रियाया बेर्। । देते है रखनुषाम्बन् ने रूट्ट्र दहन पुराया

वित्रस्यक्षत्रस्य वित्रस्य प्रमानित्रम् स्त्रेत्रम् वित्रस्य वित्

ने'न्याञ्चा स'स'न्यां ने'न्यावेन'संसं तन्ययाते'कर्याकेन्यां विना''
क्रेन्डिन'स्न्या नेते'त्यावा विन्यास्याते कर्याकेन्यां नेते'न्यान्यां नेति'न्यान्यां नेति'न्यान्यां नेति'न्यान्यां नेति'न्यान्यां नेति'न्यान्यां नेति'न्यान्यां नित्रां न्यान्यां नित्रां नित्रां

श्चित्रं होत् हित्रं प्रत्राच्या व्या हित्रं हो वित्रं ने अत्य वित्रं ने अत्य हा व विवासन्यम्यत्वा विःम्यः वश्चित्रं वर्षाविवा वर्षे ने ने मंन्द्र ने हैं दिन में दिन स्ति न में दिन स्ति न में दिन स्ति न में दिन स्ति न में दिन स्ति में में दिन स रीयरा कत्वा न त्थित दुर्। वित्र न ती हैं हैं हिंग या शेरात है दुं हैं न ती मु भिन नेर पत्र। वे न सर्प या स् स् स् से म ने म ने म र ता र ता है। Ĕॱॹॺॿरत्वद्याद्य५५५८२° बुद्धःविषाताश्चेरः हेयाद्यःवे ५ वॅदात्र५५० वा वेरवर्'तु'त्राचदे'त्रर्व्यदेश्ये' बुर्'त्या वादः हे हे विव्यर्वर्ष् मात्रुम न्रामान्याम् अराज्या न्यान्यम् अराज्यम् माक्षेत्रतुष् क्रेंश्र्मेष ततुष्व्यन्त्रेश्याविक्याप्तस्त्र्र्र्त्ते हेरामक्ष मन्वाक्षवा मात्रम्पत्रम् त्रापति कराई मान्मान्ता हे न्या वर विस्है। ब्रेंदे वे न्यान हे या नवा स्नित्र मान विस्ति विस् विग् महिन् रु क्षित्य। उर्वाया वर्वा कर् क्षेत्र रु क्षेत्र या। वर्षण हिन्य म्देन्या म् उराज्यानुःक्षानदेःयग्रायान्यान्यान्युः हे जेन्ते ना शुः जेन्द्रायात हेन्द्राया व्यवस्थन इयदातकन या मिन् पाने स्वर्धन द्वा म्बाबरायडे.मुब्रायायडाक्रेश्यतह्रवयायाया ह्रह्रेष्वयग्ररायकः दुःक्षःपःततुगःवेरःपःर्घवापवाचेःस्रयावयाने । हिन्द्यिषेत्रःत्यातदे पेत्रः बेर। रक्षेत्राध्यापान् नातायिन 'च्यापया अन् 'स्नेया है। तर् 'तु दर्य रतात् ह्याव्या अरहे अरहे हेर्राहे राहर राह्या स्वाधिवा वहेवा राह्ये दे रे म्बुतात्त्व म्याग्रम्थे नृष्येत्यस्ते अने। न्यत्यम् न्यां यो वर्ष प्राप्तिः स्वर्ते स्व

प्रकार व्याप्त स्था क्षिय प्रमा स्था क्ष्य स्था क्य

व्या गृहेश्या में कं रुम् अर्थन्य महिल्दित्य ने व्याप अर नम ष्ठे सुलाकमान्यमालसुमानदीनमान। ये मुन्दाने। नाम हे तानमा মেন্ত্ৰাস্থাৰ্কম। হলব্বসম্প্ৰিশ্ভিমেন্ত্ৰ্ৰামান্ত্ৰমান্ত্ৰ र्दर नेर। बरेशिये निरी ८ छनिर नर्सि क्रिंबर रे कि जुर वहिं। व्यवत्रिष्ट्रां त्राम्यात्रां त्राम्यात्रां द्राम्या द्राप्त्रां त्राप्ति क्राम्या तार्यात्र्र्वे व्याप्त्रे व्याचित्रं व्याचित्रं व्याप्त्रं व्याच्यात्रं व्याप्त्रं व्याच्यात्रं व्याप्त्रं व्याप्ते व्यापत्ते व् भरःहराष्ट्रीराभेन'मसात्युँन'कु'कुन्। श्चन'म'र्ह्हरान हरान्यात्मन्'यस चञ्च नवापति क्षे स्वाक्त प्रमा क्षेत्र नवा क्षेत्र नवा क्षेत्र नवा क्षेत्र नवा क्षेत्र नवा क्षेत्र नवा क्षेत्र यत्रात्। प्रेन्द्रप्रवारः ज्वायात्रः विकास्य विकास्य विकास म तुर- दर्। म त्र मार् छेर म तेर के का रेका र तेर म का मार्की हैं न का मार्की क्रॅबलाग्रुट्से क्रेन् 'हुलायवा| ये : ह 'व'दे| दें व'ल' हॅदे 'परायाप हे 'दर्' विवानिकार्रेववाराधिव। तर्रेष्यवाग्रन्द्ववाराविवानिकार्रेववारात्त्रवाः है। मुचनरारन्थेन्'न्यचेर्राया। न्दे'तर्नेपरान्द्र्यन्ग्रुया पराया ग्री सारी विपाप राष्ट्र पा हो। स्या ने क्षेत्र विषय होन परि से सरा उन रत्यर्परम्पत्र रतेप्रयायप्रति द्विष्ठिवापियार्षेत्र चेया प्रवासम्ह्रेणयास्य वर्षेषु श्रुप्त हित्स्य हो।

स्याप्ता ।रेविन्दिन्दिन्द्वेनुस्या ।इत्याद्वेन्यस्याराहेण्य राषिद। |न्यापाञ्चवयाञ्चेयायाञ्चराविता |वापाञ्चेतायायाञ्चर पर। दिस्र रिने र तके तुस्ता |द्राय तस्र र प्रस्ता र देवा षित्। भिपन्ने प्रेम्प्यार्क्षे स्वित्। भित्र त्यामु प्रियाया या वि रेष्ट्रित्रहेरुत्रहेरुत्रवा ।इस्ट्रिंग्ट्यवायार्ष्ट्वययाधेव। ।५ दुल बुन वयात है यापान्य। [इ बुद्धात सु भेवा च पा दे। दि त्रिन पर्ने रु:२क्के'बुश्रव। वितानहें रायस्याया हें प्राया भेवा । र हें व्रक्षे हराबेन्यन्न। विनान्वनाहराबेन्यन । निविन्यने त्राति तुकान् । इतान्युँ रामक्षयाम् ईषका मधिन। । रामान्युक्रिको सेन् मन्ता विविद्ध के बेर्या । रेब्रिंग्सरी दुसके बुकावा । इस तर्मे स्पर्याया स्वित्राया भेता । स्वित्र स्वर् तर्मे से से से स्वर् । तर्रस्य पृत्र सेंबेर्पाउ। |रेबेर्परे उत्ते तुराय। |इता तर्चे र प्रवास है न का पा जिल्ला | के के न खिर प्रते न व स्वास के लिल्ला है। | ब्रिट म्पष्टिं नपुर्वे व्यवस्थात्री । यम् नपुर्वे व्यवस्थान्यम् । रेनवा ब्रियश्यराहूबियरालुव।। विश्वराश

सहवारान्त्र्त्वाराक्ष्यं वहरा स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्य

कुँबराबी चेन्यरतिष् वाज्यस्यरावा है स्ट्रिं चेन् तिरतिरविष्यत्वेन्यर व्याचित्रति वेत्या स्वाचित्रति विद्याचित्रत्य विद्याचित्रत्य विद्याचित्रत्य विद्याचित्र विद्

प्राचः अ' प्रचरः में इयशं वंशप्ता स्वाक्तिय ने खुणः प्राच्या मिन्'ग्री'खराञ्चन'द्रवराहे'केर'र्वन'व्याञ्चवावी व्यापाद्धन'प्रिके। अंध क्षे'तुरुष्याभवावेववाळेचाके'र्द्रमञ्ज्ञा ज्ञानवाव वदानदे विवादिया क्रीज् मनेनबादबामक्बामबा देते वर वर्षेनबारोकरम्बार २ देवा के वेर हा। श्चुँवायहेवाणवानवानु पञ्चरापये ववारगान्यवाना । ह्यापारायदेवी भ्रवसार्याः सामानारा देन विद्यान्य विवादिवा प्राप्ता स्राक्षित द्वाप्ता पर्सेश्वरात्तरेविद्यापय। इत्रिंदिश्वरात्रेयरेश्वरात्रे कृतरा ग्रीस क्षेत्र सामुक्ता ये ५ ते : कर ने सामुरा मा १ वर्ग कर ने सामुक्त साम बह्याश्चासिकानः द्वायान्त्रीयान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् व्या निवान्त्रम क्षेत्र क्षर खन्न वर्। क्र न्वर्। न्वेन न्य सम्बन्ध स्वर्थ स्वर् प्रवा इः इव व व के के व दि दे के के कि के के कि के के कि है। पर्ने नवाता के मृत्यते नवा स्राम्य मिन्न के निष्य कर्म मिन्न के निष्य कर्म मिन्न कर्म मिन्न कर्म कर्म कर्म य। र्वायास्याकेवित्पाह्यामान्यानेवर्पतिव्याहेप्राक्षेप्रवाह्य हुन्धर ठव हुं का है। वेष वाय वा मुंता व वा हुं व व वा प्रव न न व न न त्व्रा द्याकृष्ट्रच्वराचाळ्यासुरम्राच्या श्रीरात्वर्या क्रीक्रं राष्ट्रवर्ष उत्रहेदार होतानु में विद्या ने यदा गुवाम विद्यार सेवया ट्टॅग्राब कुर-५८-इसपा सम्मायन क्षान्त्र हरा दिन्ते कुर्या दिन

त्रिर्य। च्रियापे व्याप्ते व्यापते व्यापत

प्रस्तित्वास्त्रिक्ष विद्यास्त्रिक्ष विद्यास्त्रिक्ष विद्यान्त्रिक्ष विद्यान्ति विद्यान्य

য়्रःस्रंग्रंग्याक्षेत्रः प्रस्ति स्वाध्यं व्याध्याव्याः व्याध्याः व्याध्यः व्याध्याः व्याधः विष्यः व्याधः विष्यः व्याधः विष्यः विष्यः व्याधः विष्यः विष

विनायन्तान्त्रं न्यान्त्रं न्यान्त्रं विन्त्रं विन्तं वि

त्रवाद्यात्रक्ष्यात् क्ष्यक्षित्वस्यात् प्राप्तः स्वाद्यात् क्ष्यक्ष्यः क्ष्यक्षः क्ष्यक्षः क्ष्यक्षः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

णा अह्नव्याच्या अत्राचन्त्र श्री स्वर्ण स्व

다는 교육소명 | 대한 교육수 | 대한 교

त्रेर हु तेत्र विराधित पति हो त्रापत गत कं पात ने पत्र हु पति व स्राधित व्या स्राप्त हो राप हिंद स्राहु ते स्राधित स् इसरायभ्रापत्र। संसद्धरक्षेत्र्यम्मिग्नेरक्ष्यासम्मा न परिःपराय।

ष्ठिः रत्मः बृबंद्याः विवादः दे । व्रितः स्टः श्रेश्वाः सः स्वरः विवादित् वाः सः स्वरः विवादित् वाः सः स्वरः स्वर

त्राहित् द्रवश्चित्र द्रवश्चित्र द्रवश्चित्र द्रव्या चित्र त्रव्या चित्र चित्र त्रव्या चित्र व्यव्या चित्र त्रव्या चित्र व्यव्या चित्र त्रव्या चित्र त्रव्या चित्र व्यव्या चित्र च्या चित्र व्यव्या चित्र व्यव्या चित्र व्यव्या चित्र व्यव्या चित्र चित्र च्या चित्र चित्र च्या चित्र चित्र च्या चित्र चित्र

राज्य । विन् विंग् भून के स्वराय विषय स्वराय विन् विंद्य स्वराय स्वराय

नहेंन् व्युर्ग्न म् नियानहेंन्। द्विषाया के विष्केर। द्विष न्दुर्डिलेग्दुर्। तिष्ठम्बन्दर्गम्दुर्तिह्र् । हत्सेव्द प्रेयायेन् के ल्या प्राप्यात देव। । पहेन् व ने न त देव के सुर प्रा पर्हेर। १ हें ग्राच न्त्र स्वाचित्र ग्राच श्रेर। १ झें अपन द्वापित्र स्वाचित्र इन'हिन्। । तहन्यान हिन्देन केन केन तमा विकास के मान के स क्षेत्र अपः व्यत् । । त्युतः वेतः पहनः पतः वेतः वेतः पद्व । व्यतः वेतः कुरभो असुर अर्तः पजुरा । ने ता रेगा पति हितु छर विवा । हेगा केवा रोयराप्त क्षेत्र कु र्सेग कुँदा विश्वापत्र संस्थापत्र दिल प्राप्त कुँदा । नर्भन्। विद्यान्त्रम् क्रियाः क्रियाः विद्यान्य विद्यान विद्यान्य मेश्ररपाक्षीरसामी में साम नगरा । गुन्यवितह वार्ये हे हुन वाला । दिन वि अन्य दे ति वि मान्य न । । विन् अन्य वि वि वि मान के न । नेहारताई वार्यितावरेतु पर्वं गया । द्विरापा केरा ग्री गतु संया । इतहा त्रश्चरा र्श्वर श्वर व्या । विस्त हुन प्यन्य पति त में सामा तहता। यन्तः तरेवः पाकुलाविययाप्रस्यातात्रेय। विवाधान्नात्रात्र्या विष । वि: त: र र त है व की त वि र देवे । वि: ही र र वा के वि र है न हैं न त्तुवा । गुड़े द'दे'त्याँ हुग सेवरा ठव सूँ मा। । ह जूग दे परे केदा हर्त्या हुन । हुन हे हुन निर्मे स्वर हुन । निर्मे श्री र र निर्मे र निर्मे ग्री इ'नरुर्। । र्षु राष्ट्रेर् छ्रा क्ष्रायर होग। । ह रे क्र ন কু প্রাথ বাবাবান বা কু বা ইন। । ত্রি পু গ্রী কু বি প্রাথ বি বা तहेग हेव शे श्री न ता हूँ व हु वेन | [5 वा पवा

## र्वित् इसराप्त्रं प्रत्या स्त्रं

स्वा ।

स्वा क्षित्त्वा विता क्षित्त क्ष्रिया क्ष्

क्षेत्र हे प्रायम् स्यापित् वर्ष प्राप्त स्यापित स्या

ह्रेन्त्रवित् इत्त्यं व्यापायं त्रियायं त्राम्यं त्राम्यं त्राम्यं व्याप्तं त्र्यायं त्राम्यं त्राम्य

हुरः ह्र्याःमन्ब्रःश्चेःयन्यायः । सम्बद्धाः स्ट्रः न्यारः ह्र्यः भित्रा । विद्यानग्रम्बर्धाः

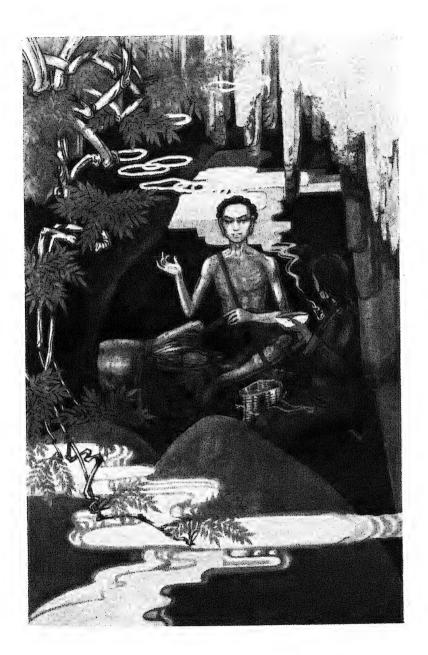
विनः इवराप्त्यम् शुर्मः हे र्यनः मा

८: यर है व 'रु है व 'यथ। इ 'र य र 'रू र क्षे र 'खुव 'य के खागिते कें इराधिकाले। श्रीन्खनाले अस्तिन् क्रिया वितायम्ता नेरान्ने द्वर तमेतापतिरार्वस्यञ्चापारम्यार्सर्पाप्राप्रा **ॻढ़ॖॸॱॺॊॺड़ॖॖॖॖॖॺॱऄढ़ॖॏॸॱॺॺॱय़ॺॱऄॱऄॱॺऄॖॺॱॺऄॖड़ॱक़ॗॸॱॻॺॱॻॺक़ॱ**ॱॱॱ बाह्रवायाञ्चरः सन् वाद्रेरः यरः वीवाया न्यावायाय रेरः ५वः भेरः नयः अरः र्श्वनः। न्नेव्रित्यपन्यसेयान्यानुनः। न्यन्त्रीयनुत्रव्यस्यान्वः क्येक्वेष्यश्चर्या हेन्द्रत्तुष्याच्या । द्यायेन् क्येप्यनः क्षेत्रः विषापुः दर्वान् ब्या ने'यम ब्रायनियम्य प्रतिवासि स्पर्धे स्पर्धे प्रविश्वास्य अपि प्रति है। ये हहा नया बु हुन कन् न सुकान का न विकास दे सूत्रा तु मुकेन हुन है। इन न मर ह सर्हेन्यम। प्रश्नेत्र्यप्रम्प। गुन्यप्रदेविप्रस्केरानुहिन् शुन् बन हैंन्'तु'इतारहें र य'बतिततु'तर् पाविषा'न्यताहुन्वस त्य'हॅन'र्द्ध'र्धपरात्यंर्राचेन्द्रन्त्रच्च्य'हे। दतिःहेल प्रॉडन्'हेन्द्रन्त्रवा। निमारिकाञ्चायान्येलार्च्यान्वेत्वर्धिवास्यवा मनुवायास्य। न्याक्षेत्रायान्यः नमरार्थेयारेल। मृतुर्स्रेनाइवयात्रैयातुरामुख्यम्य। श्रेष्ट्रायात्र्या वदायहरान्त्र्रा ह इनारहेव्विन'तनुसानावन विद्वेन हिनातत्त्रा राया रामा वे हरे प्रवासिका वे मुक्त के क्या पाया दि तर् 

गहेन'सन्द्रात्रां कंपाया शित्राप्या । प्राथ हे प्राय्तान **য়ৢॱয়৾৻**৻৻ঀ৾৻য়ৢঀৢ৾৽য়৾৻ড়৾৻ৼ৾ঀ৾ৣয়য়য়ৼৼৼয়ৣ৾য়৻ঀঀ৾৽ঢ়ৢ৾ঀ৻৴য়ৢ৾য়৻য়য়য়৻৽৽ वया नेरः र्वेषयाय देशे त्रात्राय देशया देशया देशया हेरा ना **घॅराहे। हैन'नु'र्देटलास्डन'यठन'वहार्श्चेन'सुग',तु'र्द्दि'रार्ट्स्ट्रे**। ह्या द्याञ्चन्यास्त्रे सकी रेन्या स्ति च ना इस स्ति स्वा द्वा ना से वा से वा से वा स बर्ह्निया विन्यान्त्र के क्षया द्वाकारा देश द्वाचा विन दिन दि यहेन्या हेन न'न्त्नायास्तापति'यर'त्। भु:न्र'व्याकुंबुवयान्या ह कर गेरर स्थार में न मुनु ह्यें न इसर छैस तुर मह है र तु स्थार क्षे'बर'र्मे'ततुष'व्या तद्वताच'वषय'त्रुषक्षे'त्वच'रा'र्देर'**रया** त्रिर न्राके स्वायास्याया श्रीतार्यसम्बद्धना पति क्रमापाय वर्षां ररा विवायत्व देवे द्ववा द्वे वा के यहिन देवा न्या हिन वाबा धाव के सा विवाधियातुमा श्रीनार्थे दिनायात्र विवाधी विश्ववाधी है । विवाधी है । विवाधी है । रते'त्रिकाम्।तरेदार्दे'स्वम्बेदाश्चेदाभी संक्षेत्रिक्षेत्रायातत्म्। सेत ह लेदा" तर्गापया

त्याये हिन्द्याचे र हैन विन्द्रित्या में या के द्या व स्थ्या हिन्द्रित्या में या के द्या व स्थ्या व स्या व स्थ्या व स्

रमातर्नि 'श्चिम हिमार न'गाँ स्'र्हेग माग्री में वसारीयहा उन्या गर्नेन्परकें होन्या करान्वन्युवाया मेन्एकें एक विन्या म'गुन'गुक्ष द्विस'पर्यादने ही गुक्रियामर में ही हिन्यर खर्याया में ह द। हिंद्रान्याल वायबक्केबादुबाबेद्रायदेन्द्रातान्त्रात्वरावेष्ट्रातान्त्रात्वरावेष्ट्रातान्त्रात्वरावेषा दाने <del>द</del>र्ज अंत्। यन ब्रिंत के जिन कर में ब्रें कर का केंद्र न कुर ब का क्रें अप तरी बर बेर अत्र हिंर दार्थिन दात हुन इस हे ने ए के द। हिर है ल ८.४८.४।१४.५.५४५.५) क्षेत्र वीक्षेत्र प्रकार ही प्राप्त ही वा श्राप्त वीक्षेत्र विकार विकार विकार वीक्षेत्र वीक्षेत्र विकार व र्मस्क्षेत्रन्पु न तुन् प्रभु खुरी तहे न का क्षेत्र न मन। त्रु तहे न न **ग्रे**स्प्तः**राह्य्या**तज्ञुन्कीत्राद्यस्यात्र्यस्य क्षेत्रः व्याप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्व वि'र्सेष म प्रमन्'कु'रम् न सम्मन् तिन् हेन् के क्षां नज्ञ न तिनु ति है नि मिलेन न क्षेत्र या। क्षेत्र हैं ने क्षाय ए अ मुख्यातर्हेर्य। मुद्रस्थित्रिक्षित्रेक्ष्यात्रीत्रकात। छेत्रिह्य য়ঢ়ৼ৾ঀ**৾৾ঀয়**য়য়ৠৣ৾ৼ৾৾য়ৢঀ৾<mark>৻য়য়ৣঢ়৾৻য়য়ড়</mark>ঢ়৾য়ৼয়ৢঢ়৾ড়ৼয়য়ড়ড়ৼ৾ড়ঢ়৾ मराञ्चायरीयग्राङ्क्ष्यायाधेद्र। यग्रारायहेत्रायञ्चययाया। रत्यी त्रिंदर्तुः सुद्द नदे त्रेयवा ठवातम् दे के तदे दे नदे हैन् उं यातुः या नद् रम्बाब्द्राचेया उव्युक्षे क्षेत्राच्या व्यापान्य प्रविक्षेत्र में प्रविद्या प्रविद्या **व्यातके नेवायेन्'तु'तत्व्यापकां सेविद्यायात्रीया हेव्स्वया सुन्'ग्रेके'** वनवाञ्चनवान्षेत्। नञ्चनवात्र्वाञ्चान्रेनदेत्रम् हः नः वदः मेहरसु याज्रप्रिंग्रर्भ्यविषाप्रिंग्री केंद्रिययम्बहुर्ग्यया



हे रुवा ग्राया वारवा हुवार में प्रति सर्ग्य । । इसा पहुन ' श्रेव प्रीवा वार्षेयाक्षर। चि.युन् चेन चेना स्राप्तराया । स्राप्तराया । स्राप्तराया । विन्नायाय तुन्। विविद्येति सिन्नायाया तुन्नाया । श्रीनार्थे कृता **উল্'ই চ্'ঞ্ঝা ।শ্রুণঅ'শ'র্ম্বা'শ্রুম'ট্র্ড্রা'শ্রুম্ন'ম্ম্মা'ন্ম'শ্রুম।** अर्घेन्कुॲर्र्र्स्युः नयस्यत्रित्रीन् नरः न्हेश । । नरः न्ह्न् वर्ष्ट्रेनदाञ्चः न्नायवै। । तन्यवै। यस्यस्य द्यान्य द्यान्य । क्रिया <u> चकुन्-तुन्-प्रवाध ह्याञ्चर्यायाध्येत् । इत्याचकुन्-ज्ञर्यापराञ्चेन्</u> परिकेश्यप्ता निष्ठिमक्याचान् र्स्यत्यन्ताने निष्या पज्जन्र्ह्सरकारमा के वारकारमा ने वाया । त्रिक्रमा क्षेत्रकार्यः । त्रिक्रमा क्षेत्रकार्यः । त्याञ्चे ग्रन्थाया विवाय। । न्यारायातुरायाञ्चराञ्चायाञ्चान्याञ्चन । तुन्यविवायवित्राचित्रेम् व्यन्त्व गुर्याय सन्दर्भ वृत्य । इ.सं. न्र की बतुन्यम् निन्म्यम् । त्रमः हुन्य द्वयपदे त्रमुक्षेण व्यवस्त्र पदी। १८२ पदिपम्बराज्य इंशम्बराउं अम्पन्त। × १८६ गः हे वा मॅ्र १३ग नि ने ब दे छूट हा र टर म है म । १५ व छूट मार र पर हो हु र परे **५८:प**ार्वेश। |ॲ:बर:क्क:हरे:क्व:ग्:च=६:५८:पाशुवा |पर्डव:क्ट:

मृतिव्युतिःसम्मानिः तृष्याः न्दाः प्रति । । तिनैः प्रतिः प्रम्थसः व्या म्बर्या दंशम्त्र। × । व्यः मॅन् देशम् शुअः श्रेष्ट्रा मेन् । नतिः स्वायात्रिरः क्रॅरः ५८: याहाय। १९ व्यायम् क्रॅरः क्री क्रु हरः क्रेन् ५८: मिल्री । तिरी मिल्रियम्बराज्यः अः हरान्विराज्यः चंद्राज्यान्तः × । यायात्रः श्चेतित्वर्धे परंज्यम् । पर्नेत्रावितः पन्नर्धिते सा नेअन्तः गुलेश । सेरः इसायरं ग्रायदे नसंदे रात है अन्तः गृत्य। । त्रिंदान्द्रीयानतित्रिंद्रम्प्यायन्दर्द्रम्पति। ।तर्नेत्रितिव्यवायाया ६४४म्वराउद्यान्त। × १क्रेशेन्ट्र ४१३१२४म्(८४८ अर्घेन्ट्र न्द्र न्द्र न्द्र न्द्र न्द्र न्द्र न्द्र न्द्र न्द्र म्नाम निर्मेन के नाम निर्मा हिन के मानि राम निर्मा हिन के मानि रिर्मे हिन के मानि राम मिना हिन के मानि राम मिना गुरु [ - न्र मुख्य | न्य त्र स्य गुरे न्र हुं न्र मिलस्य पहें द न्र पति। । तर्ने पति पन्ययान्य । ह्यान्य स्थान्य स्थान्त । × । ह्या प्रमुत् ह्मं भैराकी महिंद बिदा। । मन्द्राय ही महराया की दर्शे । । महिंद ही। लर क्षेत्र व्याव वात के का वे न ला । कि या वान प्राप्त मी की न में ला मुलान बेर्। बिरवाबेर्'रु'बुर'यान्स्र्रन्'त्युवाचेर्। माञ्च'यरि'न्रवा रगः रें अरु। अत्राधित्व वित्राह्म । सन् प्रति वित्राह्म । सन् प्रति वित्राह्म । सन् प्रति वित्राह्म । सन् प्रति केन् चरपाञ्चराराणेन्। निः हैरला है ग्रास्य त्र्रा । श्रीरा कें स्य चकुन्'८ नॅन्'बेर'ग्रैया । व्येग'या ते नव्यन'स्या नव्यन'ग्रीया । श्रीन विश्वरान् शुक्षर विराध्य र के ने विश्वर विश्

मृत्या । विश्वायो । व

ये : ह 'व'रे। अ' हॅरे' तहेग 'हे व' कॅब प्र च कु न 'ने 'क्वेन 'यें ता ने र पर त्तुगःहे। ने:रॅंडगःबेन:बेन:बेन:ग्रेक्शःवःब्रन:अन्व्राचन्रे। नारेलं दू नाक्षुतु बे देन नर ने बाप दे ना कुन ता अ ह र न ने बार ने ना मन्द्रायान्ता भेदाभेदायायान्या निद्रायान्या <u>न्रायुक्षाया मृक्षाञ्चर्पात्रे सुगाल्ये राया श्वीताञ्चा न्राक्षार्या मृहाक्षा</u> बेन्। अः सं रम्पमः रेन् ग्राह्यस नेन् प्रावित वित्र इन् गर्रेन् प्पापन सु प्राप्त तु ग तन् सु गरा की शे इसरा कुन संस्पत्त **पॅ**न्यंतर्न्तरत्तृग्यम। हग्रुनल्ग्यंत्रंत्रा नेवेद्वत्र विग'त गत्र है श'ग्रन' न वृष्य । इस तुः तने ता ज्ञान विष्य विषय विषय तळेळाज्ञॅ व वा वा से द्र रहेव दर शुरा दुर्जे दा दे दा से से दर दा ता वा दा वव दिया नैरर्भ्न्परावश्वन्य। श्रेन्सरेन्नरेष्ठ्व्यायाश्चन्द्रिन्नरेन्नरे ताम्याञ्चिम् इति द्वारापु ने तायार्थे गुवार हुवयापति वृ गरिग तम्पापति स्र इ. ५.५.५.५.५.५) भरायात्रेया ८ र्चयाक्रीकालीयात्रीय न्देग'याँ साहे प्रवित्व वित्रात्व वित्रात्व साहीय साहित है। द्भयातु'यापर्वेयवापाधिव'व्याचेर'प'। पर्वेयवाधेर'ग्रवासुपवा द्यवा

स्राप्ता स्वयान्त्रकाले वाला स्थान वाला स्वयान स्वयान स्थान स्थान वाला स्थान वाला स्थान स्यान स्थान स

( हर्मा स्तर्भं स्वास्त्र स्वास्त्र

षाने पाराषा मु ने हिरामाने बेर्पा देश मुंद्रा पाने केरी वह स

विषाभाष्याम्यावस्य द्वानायदेशस्य विषाभाष्य स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त् देविष्य स्वान्त्र स्वा

मन्न स्था के त्र क्षेत्र क्

मःगुन्तायके निम्ह्यायहे उद्। भिष्ठ हुन्य । स्याध्याय

इव'वय' वे वे वया | वि'इव' व्यु पैवा प्राया विषा व दे प्राया | व्य षेत्रात्मुँत्'रोयराक्नेत्रा क्निःस' **स**'ये में 'रॅब'वा स'रासत्त' मैक्सर्वेरम्परे अनुमानुवा विराधिन मृत्यु । स्वाप्त स्वाप्त सम्बन्धन । स्वाप्त सम्बन्धन । स्वाप्त सम्बन्धन । स्व मर्डेम। | अद्यरः श्रव्यद्धनः मेरः गृषाच हिंतः माने विव। । वित्रां सामा विवा न हरानकात्। श्चिराम हेन् श्चीमं मन प्रेन करा के द्। श्चिरा स्थायमर त्षुरानदेश्चे । अश्वेराद्वावयायायादुर्देन्य। । अविश्वेरावे त्षुरा पन्या । श्रुं न्याश्रेत् जुत्यायत्य देश्यव्या । देश्यदेग श्रुप्य धेत् पतिः छे। । तक्षं पः त्र राष्ट्रियाय ग्रेया स्वास्त्रास्त्रः । ग्रेवियाय वेतिः र्र्यः हुनःश्चनः दुर्दिन्य। । दिविश्येन् कुं इतादि रहें ने स्वा । दि स्न गर्दर्रवेशवायवार्श्वरादी । विःशुं शुं नेराविरार्द्वर् पुन्। । व्यापी ह्वाराजेटाचेरामाध्या विद्याक्षे स्टाम वेदानु महत्यामहाया । कप'र्ने' व्यत्रे'त्रप्त्रियात्रेया । देव के व्यापाद्रप्त्रिया हुए। । म् तर्छेन् नेर्विन तश्यापान्न । मन् तर्देव नेर्विन तयर्या ष्ट्री । व्हर्म'द्धन'यक्ष्य'ग्रीकाक्षेत्र'यम् । हुम्'नहत्यं व्हर्म'यहत्र कुर'पश्चरवा | र्षुवाराक्षेर्'रु'तक्षेरवादवान्नार्थावा । रेहेवा मन्गात्रान् क्रांबेन्'कुन्। । गुर्भे : इयकानु : बका पनः देन : दर्धे गुरु। । स्र देते सुराया प्रतृत् संति से सरा । स्य देते । विषय मा ने देश के प्रा हितै: क्षें र हो नक्षां र व क्षें र हित्र के व के व कि व **श्ची**'सुर'तर्रे श्चेतवार्षेत्'चेत्। । श्वियायळेशाग्रेत्'पदि'र'यत्र'सूद्। । ब्री क्रुड्युव व्हार्स हें वृष्ण हुआ ब्रुव्य | विष्ट कें सें ध्ये कर प्रायम | वृष्य

पर्सर्मित्रित्रियः स्थान्त्रियं स्यान्त्रियं स्थान्त्रियं स्थान्त्रिय

ने'न्याहे'पर्ड्न'स्यर्थापंत्रियां स्निंग्रीया हे'पर्ड्न'श्रीयां हें पर्ड्न'श्रीयां हें पर्ट्न'श्रीयां हें पर्ट्न'श्रीयां हें पर्ट्न'हें स्थान स्वयां श्रीयां स्वयां स्वयं स

्रित्वर्श्वित्र्याः वित्र्वर्श्वाः वित्र्वर्श्वः वित्र्वर्श्वः वित्र्यः वित्र्यः वित्रः वित

तिरः चः तथा वर्षे देशे स्वाकुः त्रव्यात्या भिन् के व्यापात देशे वर्षा वर्षे व

यम् मृत्री स्वारा स्वर

च्याद्वयाष्ट्रम्या च्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम् व्याद्वयाष्ट्रम्याः च्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्याः व्याप्त्रम्

हेर्न्ड्रिक्फ्रीक्षाव्या राज्याकी हुलायाधिवरारास्ट्रिक्षा ८व'र्रॅन'ग्रुअग्री'श्रुत्राय'भेव'रुन'| ष्ट्रेन'रून'इवरा'ग्रीश'र्ने हे'तळन' र्रम्यान्त्रम् अवस्ति। देवि देवि अस्तरात्र हुन्। यहाँ वा मुक्षा मुक्षा हुताया **ড়**ঀ৾৻য়ৢয়৻ৼ৻৴ড়ৢঢ়৻৴ৼ৻য়য়য়৻য়ৢয়৻ৼ৻য়৻৴ঀ৻য়ৼ৻ড়ঀ৻ঢ়ৢ৾ঀ৾৾৾৾৾৾ঢ়য়৻৸৻য়৾ঀ৻৻ড়৾৻ दे नमा के पा के दिन । के बाह्य द्या द्या हो द परिक्षे पा आ समित प्रकार स्वा ब्रुपः गुरु। त्यापारी स्थागुः के प्राप्ता । के प्रेतायाना भारता स्थापार स्थापार स्थापार स्थापार स्थापार स्थापार विश्वाच ते स्राम्ने हे ते विषाधिय दिन। विश्वा हु त व्यवाय प्रीन के सव्या है इंबायन म्ब्रेश्न नाश्चान्य अन् नुश्चा न्यान रामा माना माना रेट शेपर्व छन्पराञ्चायायहन् द्वाविषाकीयाहेयास्याचान विना ग्रान्याया वे सर्वा अत्राम्या द्वा न्या द्वा न्या न्या क्षेत्र में दे दे व न्रेन्यस्य स्थित्रः न्रेन्यस्य स्त्रित्र् स्त्रित्र स्त्रित्र स्त्रित्र स्त्रित्र स्त्रित्र स्त्रित्र स्त्रित् **इत्याय स्थाप्त अव्याय । क्रिप्त र्यम्य अन्य म्याय म** तिन्द्रकी'न्बे'नकु'न्द्र'अळअषाबेन्'सूति'सबाळवषाळेव'चुराव' हे अ'हवा' न् ग्रुतान यद र वे न् 'नु क्रे बे क्रे में क्रें या वे तन्त्र मा है। कु तन्न राता ये न् या क्रेस'नेर'क्रेर'दुब'क्र्र'पब्स्या क्रेर'चन'य'वबक्रु'त्य्वयाप'पेर्'केब व। रव रूप में केवा पर्वापाल हिव या श्री व शर या श्री या तर्र में या **इं वरान्ट**:सॅराञ्च:सारावरागुरा। परानु:गन्यरान्ग:इंसारायाःश्रेटा

त्या त्रित्राच्या च्रायद्वा त्याच्या त्राय्या व्याप्त्या च्राय्या व्याप्त्या व्याप्त्या च्राय्या च्राया च्राया च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राया च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राय्या च्राया च्राय्या च्राया च्याया च्राया च्राया च्राया च्राया च्राया च्राया च्राया च्राया च्रा

ष्पार्याद्धरायय। है'यर्ड्व'श्री'यर्द्द्र्याने'ह्ययार्द्द्द्र्यायाः यहंद्र्य न्दार्द्द्र्यायाद्द्र्यं प्राचिंद्वर ग्राच्द्र्या इयायाप्य प्राच्द्र्यं प्राचे प्रवर्षे प्राच्च्ययः म्राह्र'म् प्राचिंद्वर ग्राह्र्यायायाः प्राच्च्यायाः स्वर्थायायाः प्राच्च्यायाः स्वर्थायाः प्राच्च्यायाः स्वर्थायाः स्वर्थायः स्वर्ये स्वर्थायः स्वर्थायः स्वर्ये स्वर्ये स्वर्थायः स्वर्ये स्वर्थायः स्वर्ये स्वर्ये

षरःरश्रुरःयश्रद्धेत्यश्चेष्वत्यः विष्यः विषयः विषयः

इंग्'अ'र-'श्रे'अ'पेव' इंश्रश्चाई' (र ईश्र्री-पाञ्च। ने हेश्येते' श्रूप'अ'यत्यक्षेत्र' त्रुश्यपते हेश्यशुक्तं देन्' अति ईं' त्रहुत्यचुन्। ने हेश्य श्रेति तु श्रूप'ण्वव इंश्रश्चा चुन्'प्यपेव' हे। निते पङ्ग्'प्ये अपेव' कें'देन्' अ'न्न। श्रेन्तुश्चर्या हुं व'पाने शङ्गे सामन्तर त्रुग्'ग्रुप्ता

नेति ले ते पन परापता दे पर्दन के ज्ञापन न सम्मानि महिंदी

त्राष्ट्री सुंप्तार्त्रा प्रत्या देषा के स्प्तार्थितः में दे स्थरा से द्राया प्रत्या प्रत्य प्रत्या प

प्राचित्रिं स्वाच्या म्या म्या स्वाच्या स्वच्या स्वाच्या स्वच्या स्वाच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या स्वच्या

पञ्चन्द्रप्ति विश्व स्वार्थित स्वर्ध्व स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये

म्राख्यायात्रिक्षे व्रतिः स्वात्र्वे स्वात्रे स्वात्ये स्वात्रे स्वात्ये स्वात्ये स्वात्ये स्वात्ये स्वात्रे स्वात्ये स्वात्यः

इयश्चीश्वां श्वान्त्र श्वान्त्र श्वान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त् इयश्चीश्वां श्वान्त्र श्वान्त्र श्वान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त् स्वर्गान्त्र श्वान्त्र श्वान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त

दे अति श्रूप्ता के सूर्य श्राप्त क्रिया प्राप्त क्रिया प्राप्त क्रिया व्याप्त क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया व्याप्त क्रिया क

म् स्वर्शक्त क्ष्राच्य क्ष्रियाच क्ष्राच्य क्ष्रियाच क्ष्राच्य क्ष्राच क्ष्र क्ष्राच क्ष्राच क्ष्राच क्ष्राच क्ष्राच क्ष्राच क्ष्राच क्ष्राच

श्चर्म्यातातानम् । ने व का चे स्वाप्तातानम् । व का स्वाप्तातानम् । व का स्वाप्तातानम् । व का स्वाप्तातानम् । व का स्वाप्तात्तम् । व व का स्वाप्तात्तम् । व का स्वाप्तात्तम् । व का स्वाप्तात्तम् । व व का स्वाप्तात्तम् । व का स्वाप्तात्तम् । व का स्वाप्तात्तम् । व व का स्वापत्तम् । व का स्वापत्तम्य । व का

श्चे नशुक्षानु क व्याद्रमायाद्र सत्त स्वाद्याद्र स्वाद्या हुर देवा नामवातु सुर वी मर्ज्ञद्रापन्'विगा'तु'रो' मन्'र रापान्न सहा ने'न्याला कुन् कुले कुने मार्चेयानु हुँ न परात है। क्रें या र रापान मारा हा ने व राहूं न र हूं यह ही **ॅ्रअतुःलर्ज्ञेनः पर्यासुत्रेगः नहतात्र प्रस्तः राज्ञः प्राप्तेनः प्रमानः स्तान्तः** वसाक्षेत्रासुन् पुः चुः चुः ची क्रें रातार व हिन्र रहारा प्राप्त वहता ने वहाता है। त'प्रत्वष्यप्रते केंन्न' वया शुर्प्य द्वाप्तर व म्याप्तर व म्याप्तर व म्याप्तर व म्याप्तर व म्याप्तर व मिल रे तार्चे वापितायानु न यापाञ्च न यासु ना न न यापा न ने व यापा न हे व 序·ガ·石·ガ·元·心·至可·引著·ス·ス·四下。西二·ス·ガ·八下·四月川 <u> नृ गु त्रामु र त्रामु रूरा त्री हे ते जात्रात्र त्रामु ग्रामु ग्रामु</u> न्राधान्यत्स्या'न्रा'यहताहे र्रेकाहे ते तार्त्ये वाक्षत्र में वाक्षताह " त्सुताक्वी नेता क्वी शायव वारा है स्वीते स्ना ने व वा य र क्वी न स्वा य र मा शुं में हे हैं न दु न द्वाया न ते व का या तर कि न तर का न तर का न तर का या तर वा तर का या तर का या तर वा तर वा तर वा तर त्र्वाराम्युताने हें व्याप्ते तथा नुष्या खुन्या का के हिन महिन्या। ने नावना म्यान्त्वायार्याहे में व्ययाष्ट्रे रात्यम्यायायायाया हिन्दी स्यापा हॅ न रा एक प्राचन में दिना दुन्। ने व दा या खुना प्रज्ञा हिन हुन ने व क्रिया スペガイスにはより 多か、カイ・茶、日 コラフ・ギナ・ファー ইথারিএ,প্র ने'न्या र्रे र तर्रेग्'वर्धवरातार्ये व्यापि क्रें रातार शंख्यात्रात्रा वहता ने वहा इव्याने निर्यात ग्री मह त्या पहिना वा के हि मान वा पा निर वाहर। नेतः कूं तका ग्रीका है। पर्व व् श्री अव ग्या न वा के व् में। प्राथा प्राथा । प्राप्त प्राथा **필**시' बद्यास्तर्गत्रेन्त्रेस्त्रिस्त्रिक्ष्येव्यक्षित्र्यक्ष्यं ने'वर्षान्रवाद्धन'रा'न्न'ग्नेव्'क्षेठान्रवाराबाद्धव'न्नन्याद्यात्रा **ब्रि**ने अर्ने ऋष् पृष्ठ सुग् स्पन् पृष्ठ । नेते ब्रिने संस्र स्पन प्राप्त । स प्तत्वा ने'न्याञ्च'न्पर'नु'र्चेन'यय। केंन्रेन'यती केंन्रेन'यती केंन्रेन'या .धरः गहुन्य। ने'न्या हैन'बेन' बराईन'धरे'ळे'र रा'धाई' हे'न्यन'धुग' は治滅 町'可不動'看者'社'号'て下! ロペガゼモハ'スペー 産 मर्द्धवायाद्ववायुत्। देवाञ्च मर्द्धन्य विश्ववाय्यक्षेत्रवाय्यक्षेत्रवाय्यक्षेत्रवाय्यक्षेत्रवायक्षेत्रवायक्षेत्र रान्र हें राय्न देन ने बर्डेन प्राप्त राया है तहितान्त है राया रहेन पदि'र्ज्ञर। नेति'क्वेन'क्वैर्यारकाकुन'हे सुतै'र्ज्ञर। नेति'पराताज्ञन'सुन्। सुत्रो क्रेंग्र'र बाद्य'न्द्र बह्या मुहत्वद् मुब्य'हिरार बाद्य'बारे देंद् <u> इत्राबह्य। देवलाहे पर्वं व प्रणाद्य पर्वे अर्थे पर्वे व व व प्राप्त व व प्राप्त</u> सरा रशकुरायार्द्धरातर्द्धेन्याम् नेतान्यापशुरुद्धेनाने म्यापाउति स्र न्
। कुन्वगुर्धीक्र्र्रण्युत्या नेव्याक्ष्न्वरः
नुप्यः र्सरि:श्चर'र्झें अपस्यापान्ना अहल। हेन्'की ह्वां पने' पर्या 'मेना झेन' है। हेन्' मर्डें अ'ह्ब' ८ न बा की बाखान' मह्ब'पार के के बाता के ब' में खुन बा की ख़बा वा हिना" न्यापरः शुराप। न्यों श्वॅरः हें स्टें ति हें तापा गुरा खुरा से सका निया से सका न्यतः छेन् सं हार्ति । गृब्वित्रु रोब्या ठव् की में व्रुत्। बेर कु ही प्राप्तिया राखन्याबेन्'न्नवाद्रां द्वान्द्रां द्वान्तां वहता ने'वद्याद्वान्तराष्ठीं दें आहत व म्बुग्रापतिक्षे ब्रक्तियनु बुन्निति स्रिन्नित्व न्नित्व स्र

चित्रान्त्ः व्यद्यान्त्रं भूर् । प्रावृद्धः निर्मेन्द्रं है वर्षः वर्षः निर्मेन्द्रं वर्षः वरः

यु न्रा ध्राक्षेत्रेवारावाययायविः स्रा इरायते व यार्षायावरा वराधा इसरा ता यह गा ने वता के यहा की स्री ने वहा सुन पर दुः तहें व पति'वराय। रैट'रेराझ हे'गणर'रेति क्रेंर। खु'र्घरातु विषया वहा न्तुरापलुन्'वै यदि'र्स्रा ईन्'व् र्वेर्प्यन'मन्ग नैरामकेषाराणे क्रॅर। देव'द्यव'यवरर्'यहं संशे तत्यार्टा हि हुव'यार्ववह हे हे वार्डेदिः स्रेर। स्वाप्त्रर्शेषहराय तुर्प्यवेषश्कराय द्रा हवा पति लुशल व के क्रूंन च सुं क्षेत्र पर राजा क्षेत्र पा न न न पा सुति ह्रिंत्र श्री के के न्या के निष्य के नि त्रिर्प्यक्र्र्रप्तरेखें। क्र्रिर्छ्यकाग्रीक्रिंशिष्ठ्यप्रेक्र्र् पश्चार ते 'श्राता हव 'श्रे 'श्रे श्राता न पर 'र्चा र व्यव श्रोत 'र्चेट भ्राता पर रागा "" बर्दर्। र्यर्चे त्रीर इसरा हैन प्र बर्द्र हैन ज्यापि सम्ब म वा द्ववा ग्रीबागुर पुर खुरा वर्ष्ट्वा पुर बेववा र क्रेन 'हेर'। पुर खुरा' रेयरा'न्पते'पञ्चप'द्याताञ्चप'यायाययाञ्चरपहर्यं तापानेन्। स्रता बेन् इबरायतम् इसन् गर्धैः चग् कत् चव्या व्या ग्वराश्चित्रः वर्धेः रेशक्षुः वेदैः पर्ने पाया पर्मे न पदि दर्शन सम्मा विषय हे न वा यापता क्षेत्रस्य र या श्रुप्त क्षेत्र राष्ट्रित स्राम्य देत किरा वे स्राम्य क्षेत्र राष्ट्र र स्राम्य स्राम्य स्राम्य न्नः न्व स्तानी स्वा प्रस्था वस्तान्ना सम्बद्धीत प्रता वर्षन् पा स्तर स् ।

( ने'न्ष'अगुरात्त्रअग्रै'झ्न्यश्चित्र'हु'ज्ञ्चरान्य छे'न्यान्ह्न' "" हॅं ) पञ्चपरात्र्यश्चिर्णपह्न्य'प्न्न्यंवर्णक्य' क्व'यास्य' पहण्य पदी' "" सर्न्'प्रकृत्कुत्यस्

## 

इतार्स्य राष्ट्री राष्ट्री प्राप्त व्यापा देश ৰ'ই'গ্ৰ'ব্য सक्रम्'अम्'ब्रिम्'वे।ह्रम्'व्'र्द्र्न्'व्यायाध्या'क्रुंकेव्'र्द्रिम्म्स्या 351 मल्यायरित्यवयलियायेले तल्यारे मू में वाया मले नया से दं सुर्थेर प्राप्त दे ही राष्ट्र नियान क्षे'अन्'क्षे'त्रुव<mark>'यश</mark> हते'त्रे'ङ्'ठन'रन'अन'क्षेत्र'यहरःद्रव्यात्रुव्य पया वैनःविषायम् स्रायमान् वेयान् वेन व्याप्त व्याप्त व्याप्त विनः स्राया न्दर्वाहेद्रप्रते हे जुद्र हेद्र ये विष्ये हुर् दुर्भ दर्भ दर्भ प्रवाह के के प्राह्म के दाय हात के का की का प्राह्म का की का प्राह्म का की का का की का का की का की का की का की स। नःस्र र ते वित्र दे ने र त्या विषा नस्त 'उना न 'उन मन्या से दा विषा अर्धेन्त्रपरतिष् यन्ग्तिहेन् ब्रेंश्यरेन्यपति हेंशन्न श्चरापत रैं छेन ऋय। रहान्य एवं रहा छेर। भैस न्य एवं भैन छेर या गुरुय। म्बेर्णाः व्यापान राष्ट्रियात् म्यापा तक्षेत्रात्र व्याप्ति स्वर्णाः स्त्री स्त्रापया स्वाकिन ह्वाया न्वायी में स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स् हुम् विपान्म राम् विमा क्रिया विषा विके या विमाने राम क्रिया प्राप्त मा क्वुं प्रते कुवराम् रापते प्राप्ताम प्राप्त विष्या में प्रत्ये विषया विषय विषय प्राप्त प्रविष्पित्रे सम्भा निराहें प्रश्चे में सिरा ने से प्रश्चे में राहिष् क्षेत्र सुन्यका श्वेन मानि देव न में पिस ने प्रमानि में न प्रमानि हे न ह्यां मी स्वर् रायर रायं र्ष्ट्र ने पह म्यां हु ने पह म्यां स्वर् प्राप्त र र म्यां स्वर् प्राप्त र स्वर् स्वर्

स्था क्षेत्र स्व क्ष्य क्ष्य

र्जुर्'यर्'धैर्यर्पविदे। १५'क्ष'यभुरव्र्पविषा । १८'त्युत्र पछन्दर् । । रयन् र्येत् । विन्ति । विन्ति । मलवाबित्वहन्द्रवाह्यात्रवा । क्षेत्राबित्वरायाया द्रुंद्रवा । वितः मियार्था वु रू. क्रिंग हुन ही | नि 'क्षे' नहार व'नि नि ति। ते। | नि क्षेत्र हुन हर-दर-७ क्षेत-२५५। ।र-क्षेत्र-गर्ज-उत-दुर-क्षेत्र-क्षेत्र-तर्नेन। ममस निम्म सर्व ६ व द्वारा अपूर्व । अस्य निम्म सम्म में दूर्व । वरकेन क्रॅ्वयान्युकायुर्दरः र्रात्रुकारी । राष्ट्रियत्वयान्रात्राताः । म् अव्यक्षक्ष्रं व्यान्त्र दुर्रा रहेराक्षेरा तर्ने द्वा व्याप्त व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स् क्षेत्रातर्दित्। । तस्र अवित्य स्वास्त्र व्यास्त्रा । भ्रें आवित्य स्या <u>ज्र. ५.२४। इ. . ज्या बेक क्रीट त्य क्राप्त सम्ब्रेट क्राप्त</u> वरा ह्वराषी । १९५५ म्यागु हत्यवरा में ५ भूगवा थे । न्नुव्यक्ष्र्न्र्त्र्तर्राहरूव्यक्ष्याम् न्यार्थेव। । ५३२ वृत्रः प्रत्राधिवा त्यातः हेव कवा । विश्वामहात्याचया होव दे प्राप्त स्थितः स्वापित स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त र्द स्तु विषा तु सुराध ते हे सा हे सराध ने केन हर राज्य सुराष में सहिन ळे प्य विषा से प्रापे प्राप्त से 'हु व्यप्त स्वस्य प्रहु व्यप्त विषा स्व के प्रस्त व्यस्त व्यस्त व्यस्त व्यस्त तुः ब सु केव हिंद 'द 'त्र व 'गृतु र 'प 'द्र व' में अ'द' 'त्र में द' प'दे' के 'हु र '। <u>न्नःधःन्यन्भेवःअर्र्वात्राधेःहन्न्य।</u> हेनाःराक्तेवःन्वकेष्यता रचंद्रयाया श्रुप'वित्'तु'क्रंयाश्चित्'क्रेपर'कर्'ह्यायाया दे वा राजित वें मार्च राज्ञ वार्च राज्ञ धीन 'हुन'जव। धमः धमः ह्वा यान्त्र न मरेग्याद्वयाह्न वर्ष्यवाद्वग्रीयेवया उद्याद्वीदा पहेंदा पर प्राची पश्चन्त्र प्राचित प्रा

शुप्तर । श्रिविर इयादर प्रवासिका । हे नवारा बेंबा गुरा महिए वर्ष बुरा । विवयह विव क्रियान में स्थान विवय । इस्तर व इन पा मयस क्र-त्रम्याया । श्रुः व्यन्त्रन्यति मतुन्नि स्वाप्ति । हे सर्व् व हुन ला न्यत्र ल न ल गुर्मा । ह्य न ला यूनाय तरी न ल ले तर में र्ने हुन्य हे अर्थेन्य । श्रिन्द अर्थन प्रश्च श्री श्रुपाप प्रिन्। । घा स याय ने वाच दि व्यवा हैं गा भेव। । मुहेगा सुरा में पूर्व प्राया परि। । बावत्त्रम् अने सामादे व्यवाहि मुख्या । रूर है स्वेन प्रते न्या है स तरी । यरवाज्ञ रापद्दवापतीलनवा हेवाधिवा । केंन्राज्जा ह्रॅं सर्यापायरी । वर्षेत्रायेन् सेयया ठवा क्रेड्डिन गर्ने न पेता । व न गता वि:ब्रेन्'ब्रेन्'द्रच'दर्। । सम्बन्ध्या ब्रेन्'ब्रेन्'ब्र्य्या स्वा । क्षेण'चर्याञ्चरत्रापदि'न्गाद**मुच**'दरी । व्रवस्य हॅं ग्रास्त्रे पदि'यहन् मेव-षिव। । मान्नवरि हेव' सव' श्वरा पदारहरा। । सिहन्य हेर श्रुर्य ह्मारा हैं सेट दे प्रतिरूप दश्य राष्ट्रीया ने प्रविद्या में प्रविद्या हिन

यश्चित्।प्रत्यात्मा श्चित्रः विवाद्याः विवाद्यः विवादः विवा

यद्वता । व्रिन्त्यस्या । स्ट्र्स्स्यंत्रस्यः व्यक्तः व्रद्धः व्यक्तः व्यक्त

म्या क्षेत्रं महेन्द्र स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं म्या स्वरं स्वरं म्या स्वरं स्

त्रा । श्री स्त्राचित्रं स्वर्णा स्वर्णा । श्री श्री श्री स्वर्णा । श्री श्री स्वर्णा स्वर्णा । श्री श्री स्वर्णा स्वर्णा । श्री श्री स्वर्णा स्वर्णा स्वर्णा । श्री श्री स्वर्णा स्वर्णा स्वर्णा । श्री श्री स्वर्णा स्वर्णा स्वर्णा स्वर्णा । श्री श्री स्वर्णा स्वर्णा

मक्ता | निष्ववाति विन्दे उत्या वीना | वायन खुतार्त्वा उत्त मग्'बे'कं | बि'म्'न्ग्'म्'न्र के' बेर है। | म्'बे'व के व में र बंदि। ह। । अयारी सम्भवसम्बद्धामा से मार्थित । सुना मुति से सार्व मार्च मार्थ |इंद्र्यतेर्यायाष्ट्रासूद्र्या । १७ छेन् द्र्यतेर्यायाया वावतः तञ्ज्ञेन | निःवार्वे च ऋगवाक्वे उत्याय विता | निता छ वावा वावा उत्प्रम् विष्ठं विष्ट्रम् न्यान्य स्वित्रं विष्ट्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् बिरेख्य। । जाबिश्वरताव्यान्नायाक्षेत्र। । सुत्राः गुरिः व्यायाक्ष्याः स्रीतः विषय। वित्यतिर्मेत्राञ्चराप्तेरानुय। विवाहेन्द्रस्यतेर्मात्रा रेविन'तश्रीयम् । न'तर्ने प्रमुण'ह्य प्रकेर न'या से न' । पर्ने व कें त्रश्चायम् उत्प्रवाकी । श्रेर्वायम् वीत्रायात्री त्रायाः श्रीत्र विवा र्भन्ते, यान्यायाञ्चरः प्रविचाःच। । इताः मश्चराञ्च वदाः मृद्धरः। । ष्ट्र-अप्तरायातस्य रापाञ्च राक्षेत्रः के त्री । । ष्ट्र-के व व प्रतर व का क्षर के त्री न व। । गर्नेगः श्रें श्रु अप्पः में बाने स्कृतः। । वास्त्याता स्वें पात स्वं पाये श्री ।। **७ डेन'रुफेश'रर्ड्ग'श्रेन'रा । इन्न**ा क्रेशप'र्नेन'रेन्डन'। । ६ गरा क्रियः र्वतः हैं बाक्षे विवाया । इवाया क्रियः र्वेतः हैं बाक्षे वाया वा । विवायतः नुवारा म्बरे देवा | दावी तार वारा तर्वे वावी | विवार वारा त्रेश्विष्याम् । प्रवादिष्याम् हेष्याम् देवारे हरः। । विरादिर र्चे ब'तर्ने 'गर्ने ब' पर्योग वा ग्री स्वेगवा । न 'यब' प्यन' प्यन्ते वस्त से। । श्रे द्रदस्य विन्तान्त्र विन्तान्ति विन्तानिष्ति विन्तान्ति विन्तान्ति विन्तानिष्ति विन्तानिष्ति विन्तानिष्त पश्चित्। दिन्त्रयुन्दिन्दिन्दिन्दिन्युन्दिन्। दिन्नेल्क्क्षं गुरुयस्त

त्यान् विनः। । न् गानः व गाः हें राशीः के खिनः प्रायः। । छिनः प्रायः सनः स्या ह्र्वाराक्षे क्विंग् रेंट्र। । परः कट् खाह्रं वाद्यायेवा खुरः व। । प्रायदाधारः पामित्रें क्रिन्या। वेयान्यु म्यान्याह्न यान्याक्री मान्याक्री हर-पु:मताग्रीताञ्च वापता अठ र स्वराय हिन्य सुना प्रमाय वा धैना देन देन होत् केता । असार त्राची क्षेत्र ही सामुन परिवर गृहा गुन्। तन्रः प्रस्यो अपादिषा गुराहे भेर्या स्रम् यहा सुन्य स्राप्त केषा स्राप्त स्रम् गुरुग्'र्र्भ'प्र'कुर्'र्ह्ध्य'हिल'य'विग्'युरु'व्रश्चेर्'प्र'र्स्र् य स्र प्रा हे पर्वव के हिन्दा निर्मा स्वेन व के किया के के स्वाप मन श्रुण रात्रें तार् प्रत् म् यति कुराने या विते के तस्याधिक पर त्तृग् है। ब्रायते हुन्य हेरा ब्रान्य वा यहेन प्रमान्य प्रमान हे हेरा हुन्य न्ययम् न्याययय ग्रीय के हिन पा हुन पा धेव हैं। प्रेन्य या ग्रीय कुल'र्र-चे-दू प ग्रानुद्रच्या। न्नाया इत्रानुवानी क्रिंग्रन्य। ज्ञा न्बर्बह्न्युन्नेंब्र्न्र्र्या बिल्विन्युन्युक्तेंब्र्न्य्वित्युन्द्रिः। **६वः**ग्रेग'यायदवःग्रुयाय्वाक्रेम्रस्टन्गेर्।।

## मा छे 'मा छ न 'मा ह 'मन न ने 'में न।

द्रंशं गुर् इत्राप्तं द्रव्या स्वाप्तं द्रव्या स्वापतं द्रव्या स्वापतं स्व

**चे**न्देन्ध्रन्परिःज्ञ्यागृहस्यायः नृष्ट्रिक्षेत्रान्यः विदाद्यः न न्ग्रत्मुचन्रम्यायहेव्वयम्बर्यायेवेन्'क्रीने'मुन्रम्यायनुष्य पदि ह्रबारा <sub>क्</sub>यान्यान्या नर्विया व्यन्तान्य न्यान्य त्या क्ष्या । यहिन्या क्षेत्रं यदिखे। हे पर्द्वस्वितः स्वितः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वित्रः स्वितः स्वतः स्व गृद्व अप्रविव प्राम्ब व प्रमास्य स्थान विष्य द्वीत स्थान विष्वाचे तत्रवाधिव हे वें व दे। इता वर्जे रारा हिंदा पार व राधिव ने रारा या दे पर्व में के सार देश के दे के के दे के सार के दे के दे के सार के दे के दे के सार के सार के सार के दे के सार के दे के सार के दे के सार का स स्ब्रिंचर्याक्ष्म् विर्वायाचारायात्र्राच्याक्षेत्राच्यात्रा च'विग'धेव। श्रंब्रेंश्रहेंप्र्न्य्यप्रश्रहेंग् ब्रॅंट्र न्य के न्य ने व्याप्त व्यापत व्या हिन्'के'ल'रहारा'हेरपा'ने'रप्भिन'न्स'वेरप्ना हे'पर्दुन'ग्री स्रि हे'ग्रयादा'द्रवादा'स् कॅन्प्रम् दिन्द्रम् देन्द्रम् वेर्प्ति हें स्पर्न म् पर्वे देः न् भुरत्रे दे के कुर्यं के त्रा मन्द्रे हुरा महा गुन् है र विन हे त्रा सह व्यन्त्रमा सामयायां कुराविया कुरीया दे यहं व धिवाय सामया राप्ताव्याप्तुं व्याप्त्राच्या व्याप्त्राच्या व्याप्त्राच्या व्याप्त्राच्या व्याप्त्राच्या व्याप्त्राच्या व्याप ५५'५५'ॐब'ळॅब'য়ु'য়६ৢग'য়'য়। য়য়'য়बें'व'ऍब'য়५ग'য়ৢग'য় गवॅब' तु अविगायत्गायाने गानेवार्ने र विभिन्ने। विश्वाहे पर्दवाया विभान विपा **इ**संलुसप्तेत्रवरुप्त्रां यापार्द्वात्र्वे दानेरुप्ता प्राप्ते सार्चे सार्चे सार्चे सार्चे सार्चे सार्चे सार्चे सा *ब्रारापवि:* डीव'ग्रीराहॅंच'न्कॅ्य। व्ययः हेंग्'ग्रुन्'रॅंबे'चकुताच'त्रस्ता

बेरप्तरा ने'व'हेंब्प्प'विग'तनुग'य'व'रे। व्यव'यहन्'ग्वेब्यस्वन् **ह**'चन्ग'गुन'ङे'ऍग्य'ग्रैय'व्चय'हॅग'दनुय'वेन'ळ्यावु 'बेन'हे। मापृगुःस्वित्रं स्वा । ने हेशास्त्रं नाम्याने वाने। नेश्वादाका तातानेन् ग्री **८**र्ज्ञेग्'ब'न्ग्रत्वें'रन्'वेग्'ॲन्'घ'त्र'दन्तेते'ग्रॅन्'घ'बर्न्नेद्राध्यानुःॲन्'च' सन्द्रग्रात्रेन्राज्यात्र्वेग्'र्ह्ज्याशुक्षे'अ'त्र्द्रन्'न्'श्चर-त्'वेतरा परः *ଵୢ*ॱॾ॓ॸॱळॅग*राप्*गु*र्वाचुैशञ्च*ग्युतात्तरा। हे नर्जुर्वाची वरावसाराञ्चरार् त्र्रीं क्षेष्ठित्रिंगुंगित्र्रींग् गिष्ठित्रत्र्रीं त्रां संभित्। त्रांस्त्रां सदी त्रात्रिंग् सिन् पदाने क्विता तृत्वमा नाया वा मिन क्वारा वा ने ने नाया र्ह्मण्द्रात्रहें स्वायन्य स्त्राप्त स्वाप्त स्वाप्त हिंग्या वर्षे दाने स्वया हे मर्जुक्ष्किः वतात्रकारः से वित्रुं कुष्वार्यात्रः तस्य वित्रुं क्ष्यात्रः बै'विषाधेब'मकार्घेष'यर'म्'मर्घेष'धुर'त्र्ष्र्। ह्वेन्'इयरा व्यक्ष हेंग होत्रार्भ्यववर्ष्वायराहेत्र्यरायक्षात्रहार्या हेर्पद्वार्रायही त्यास्य से तथाया वृत्वी वाषीव की के तसुता हुन ये শ্বর'মার্ট্র'মঝা हिन्। भरु न बन स्वयान स्वयान स्वयान स्वर्भन स्वर्य स्वर्भन स्वर्भन स्वर्भन स्वर्भन स्वर्भन स्वर्य स्वर्भन स्वर्भन स्वर्भन स्वर <u> बैरवित्। ब्रॅ</u>ग्'रह्नि'रा'र्र्'। स्रत्यायन्ह्निकीरेन्द्रराज्य। स्रह् त्रिताने'त्-क्र**न्यः** ५व्।संत्रिवा'स्त्यक्रंकेन्सं वेषा'तु शुरुपाता चर्च्याची साम्रेम्द्राचा स्ट्रिया तिराच सुर्वा मारावा क्षेत्र विचारा व सा हा व सा हे बेर्'पर'र्वर'प्र'स'र्यु हैर'र्'ु जुन्य विद्यायर'दुर'वर्'र्वेद्र'पद *बे' अप्रेव' द्*यरा ग्रेशर्रः मन् रहं व'पक्षे सप्तिः पर्तायः में प्यार्गः नामा

क्रवलात विवादिन विनावति क्रें वितार में इंतिता नाम विविधित क्रियों निमानि क्रियों निमानि क्रियों निमानि क्रियों श्वयात्र रत् प्रकृष्यायात्र प्राविषाचिष्यास्त्राप्य । न्याविष्यते स्राप्त त्राय वितःत्र्में भूनः त्यानु गुन्या ने व्याधी याधिवः सून्या छन्। ना द्याया रम्बितार्सम्। क्षेपाद्माराष्ट्रम्यात्रम्यात्रम् बायप्त्रम् स्टायस्य व्यवस्य स्था है न द्रम् कुर्यं प्राप्त रहेन स्था मह्मा के प्रमानिक देरम् ल'वयश्रहेशप्रकेष्'भुरः। दे'वयाकुरः चर्'केष'र्भेद'पद्य। वया यात्रतः नृत्यात्राहु ग्राञ्च पराशुर हे भूतः विगा तुः पत् ग्राध्या सेशया क्व'इस्रकाताद्वस्य पर्वेदेन ने तहेंद्र'त हिन्दा प्राह्म वा न सामार्य वृष्तिष्ठः प्रमः श्रुरः क्रीरा बुषा वा वा वा निर्देश्यः क्षित्रः स्वा वा वा नन्द्रिं व्यवस्क्रें क्ष्याक्षे व्यक्षित्रिं स्यादिं राष्ट्रियान्यान्य व्यक्षि स्र सं कृषा की सं कृष् हार रात दे से सा रात्र दे ते ता या रात्र दे हार रात्र स्वरा पादे ष्र्व हेन में देव विष्व विद्या पर्दे हुन परि हो न में के न में हुन महिर षव्यायान्त्रात्राव्या हेन्तर्व्यायान्त्रा व्याप्ता रॅग्याने'अर्क्षेत्'करी:कराद्रग्रांगीतवेरापाद्राः। वास्त्रत्रयार्चेशाने'हरया रु'अ'र्इन्'रु'वुर'यथ। वि'यभिन'ग्रेशद्भण्यत्र स्टिंत्र'रु तर्ग्'र्न् वशक्यात्रवापनेव्पितिहर्वातन्वगुन्तुः वशुन्वः

सक्षा | ऑप्टब्रायाक्षण्य स्थायां | विष्याप्तर्भित्रक्षायां | विष्याप्तर्भित्रक्षायां | विष्याप्तर्भित्रक्षायां |

इ. श्रुपंक्षः पर्श्वपान्तः। । बार्षः श्राचीन् वार्षः हेनः ने । ही नः पान्निनः न्ग्'क्षे'ग्रॅन्'ने। व्रिंब्'सर्यन्व'प्रमण्य'यदीयम्बानु'नेय। 1न्'क्षे इयाञ्चेत्र्ग्रेष्ठ्रात्माञ्चेत्। भित्याप्तात्म्युप्तित्म् इवराउन्ते। । व्या । गर्रान् गर्रान् ने ग्रां तर्स्य । व्यां वर्षे ने वर्षे ने वर्षे वर्षे ने वर्ष न्यायात्री । ज्ञाल मानेनाया सुनित्री । न्यतः च्रीनानित र्श्वेन'त्र्राचीया । अयाने संस्ति संस्तायो । नग ने हणया है हैं मानेया । रोयरा दे स्ट्रिंग्स्य की हैं राया नेया । केंग्स हुना रहा ने 长河到第二 [其一六三十四日] 王田田五十四 [四十四十四日] 四五 तक्ष्यहाश्चे है। । श्चिरमायन वे वे वा वी तम्य स्तु पने वा प्राय ह्य यहाव द्रा श्रीव प्रत्य प्रत्य प्रत्य । । प्र सं सं प्रत्य प्रत्य । ह्यम । अप्तं अप्तृं न् अं म् राष्ट्रिम् या या या या । मिन्याम मान्या स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम पन्त्या विन्यस्त्रियाम् स्वापित्रेयाम् विन्या म बरारा शुरान्य प्यान बेर्। १ दे देव क्येव प्रश्रुन प्रस्ता । लिग्या । इंग्रान्ने परुश्चन व देशेशलेग्या । इंग्रेन्य्य स्पर्म हिन्य लाईनान्धिन्धित्या । न्यानित्यी व्यानित्यी व्यानित्यी विषा महान्याया तरे न्यम् इयया दरी हिन्छित् श्रुन्मे सरेन् यम् क्षेत्रित्। क्षंत्रसुतादीव्याह्वित् पर्ने पराप्त राक्षेत् चेर। न्यग्

हे के क्रियारायित्वयस्य तिर्वा । त्वर्या द्वरा हे वया परि इत्यत्वर्त्ते राय। । मुन्दु के पति सु विगायित। । भिन्दि रार्के गया गहॅन् ब्रेन कें कें क्रवरा । जिन् अजेन्स निरं निरं निरं निरं । न्व्रार्थितं वह्नाः न्यं वहन् हेद्राया । क्रें येहु दुरि देन् प्राया । तर्दराश्चीत्रवरायातरि जुन्तु हो । रेज्ञ दर्भित्र देव शेजिंद रेव व। विः त्रं त्रः देग दिन् ग्वराया । श्वेनः यवि प्रान्ता कु व नु हे। । शु: हुन् ख्वा सेवल की स्राप्त हुन। विस्ताय प्रिया विस्ताय का स्तर 다다하다 | 독미·화·하현·종주·중·왕 (1월 종·최종·종윤·종도하다·라지 | ロス·新七·戊七叔·本漢·劉有·周七· | 英 劉有·口ス·新七·引·劉有·万· 由 त्युर्प्याद्वर्पन्नेरक्षेक्षेक्ष्रत्वस्यक्षेत्र। । न्युरक्ष्रिर्धन्यस्य तहरास्त्रंन्यम् । तहरास्त्रंन्श्र-दिरीः जुन्तुः हो । त्रायाद्वरायसं Nशक्त'त्तरश्राया । व्रिं तहं अतु क्षेत्र'नी है ने द क्षा । क्षेत्र त्या क्रिकुन्'र्'के। । र'क्लार्स्चे रर्'हेंत्'रहें क्'रा'ल। । रोबर्का क्रूंर्'हेर्' नर्झेयरा पति त्रायम् भीया । तरे नार्दन क्षेत्र में संदि सं तस्या सुन्। । कॅ'तस्तारस्यात्र्ये रक्षे'कुन्'तु'हे। वित्'तेष्रायर'वृन्'त्रां स

षिदा । शिरासे हिंदा ग्रीका नेवा वास है। । रासे हिंदा ग्रीका सामे वा । ८ इतार्यु रवे तारम्यापीय। । चुयय्येयया के विष्मानि ८ दया त्तुरवा । शुःश्रद्धारदेन् ग्रुप्तवाधिकायम् श्रुप्तवा । प्रवासनेदाः ं पर्दिः छेन्। मैसः रूपान्त्र प्रमुन्। । सद्पादिः रोबसः ग्रीसः मैन्। दिन्य। । ष्ट्रिं-'ग्रुन्'ख्नां अर्ह्ण 'तुःशेयशं मञ्जेन'व्या । १२०० मान्यां वापान्यां वापान्यां वापान्यां वि षत्। वित्नेप्रसुर्चेन्द्र्रस्यव्यवे। । तत्विपनेष्वर्यः क्षेत्रः न्निया विरानेरज्वावार्षक्राया । तस्यान्यार्क्यायुकावा स्वि'न्'न्नि। विश्वात्रात्राच्या श्रीयाधिव'ने'इयशायताळे राहे' मर्ड्र तार् प्रचेत्र मुक्षायर युराव्या के तहातावी मराग्रवाही। तर्चे ररान्स्यवं रक्षे। धेव'खेनवानी रान् सार्चेतावेर हनवायायर्चेर दारेन् इवरा ग्रीकागुन् वी हैं ववाय साम नुव न विनाय देन ग्रीकाय साम ह श्चित्रातर्वाचीया इत्यायात् व्याकु हें सामग्री नामायादेव हें। ब्रर्रिन्द्र्राच्द्रित्व्याः कव्यस्त्रुवाःचान्तः क्रांक्र्र्यक्तान्यस्त्राः नेत्। न्'लेग्'लुन्'स'र्न् द'ले'य। मॅं'श्च'स'त्र्षेत्र'यन्'परी हर्षानेग्' खु : चेरःपाया हेः पर्दुव्यं ग्रीयप्येवः याः परुव्यं ग्रीः यगुरः सदैः गृह्य रवाः वा ।

 वर्षेत्रीयीय्याया इस्ति स्वर्धियाय्या । स्वर्धियाय्या । स्वर्धियाय्या । स्वर्धियाय्या । स्वर्धियाय्याय्या । स्वर्धियाय्या । स्वर्धियाय्या । स्वर्धियाय्याय्या । स्वर्धियाय्याय्याः । स्वर्धियाय्याः । स्वर्धियय्याः । स्वर्धिययः स्वर्धियः स्वर्वयः स्वर्धियः स्वर्धियः स्वर्धियः स्वर्धियः स्वर्धि

प्रयत्त्रम्य विश्वम्य विश्वम्य । [५,६८, प्रयत्य विश्वम्य विश्वम्य

म्बर्ग्या हिन्द्र्यो अन्य निर्द्ध्य प्रम्य विद्य विद्

प्रस्ते | व्यास्त्रे स्वास्त्रे स्वास्त्रे

विन्यो वर्षावृत्यं • निवासकुन्यतिविन्यस्य प्राप्तः न्हेग्स्र पर्झेंबर्यापदिष्य्यान्द्र वीर्या । हे दूर्र छेद्र प्रेति कुन्पर् हॅग्रा | द्वायाद्वरकुलानतः द्वारायायाद्वराया । इनका नगर्यः ত্ত্ব্ৰিই'ন্ৰ্ন্ন্ৰ'ম'ক্ষ্ৰা | ব্ৰাফাই'মিঅ'ল্ব্ব্'ন্স্ৰাই| पश्चित्रं यह वर्ष्य र प्रमेश्वर्षा प्रते अञ्चर्षा | वरः संगव्याहेवः त्र्यानेशपतिष्ठित। वित्वताष्ट्रत्वीयगेग्रायन्त्रीत्रिम्य।। दिन्'व्याने'केन्'मॅरि'कुन्'प'ल। । न्यतान्यायातर'हे'तुरी'क्तारत्त्रं र बर्। भिर्वत्वत्यतेर्भ्वत्यञ्चर्यञ्चर्या <u> इब्दान्द्रीट्यास्याया । गर्हेन्छ्न्ट्याहेन्ट्यायायाहेन्। ।</u> हर्षा श्रे केंद्र 'ग्रे महार न्या दाय है यह । दिन हरे तर के र पर ही हा ग हिन्। देवान्युन्यामया इ र त्रिन्य ठवान्य न्यो हिन् इवया ्छन्'वराष्ठ्रग्'न्रः'ङ्गस्प'अर-नु'चुरा'वरा। ज्ञ'प'ग्रिकेग्'गे'तर्रेकेप'रा'रानुत्रा हेर्र तहत्यायापायिविदार्वेदायाया। वृद्यायराव्यायरकाविःयाप्र वर्रानी इ रें ने इववा इ रे अ कुव पन न पें पह न वा परि त्रिंतर्तु'वर्गपर्क्षेतर्वराष्ट्रित्रं है। हे मर्ख्वातामुवाकरात्रः वरापादे कर्ष्यार्थं स्वार्थं केत्रें केत्रें केत्रें केत्रें वार्यान्या त्र्यां कव्यत्रात्म त्रा र्सिन् राष्ट्रे 'जनाञ्च' याराधेसार विराजनिताय जारा ह्या प्राचीता विराजनिता विराजनिता विराजनिता विराजनिता विराज र्केन'म् क्षेत्र'कन्'नम्दि'त्यन्य'नमुन्'र्केन'के'म्बुन्'मेनम्दः नश्चन'यन् पश्चित्। धुन्'न्न्क्रॅन्प्चसन्तु'चुरुनेक्षेचून्पराधुरपाने'तादी' बिपाम् बट प्रजीयाचे बाजिट विक्षे । के छव मा क्षेत्र विज्ञान निवास प्राप्त विक्ष

नैसाहे नर्ड्वायापन्य वयान्याचे वयाके नान्ताकु विस्तानि निर्मान वराञ्चानाम्बन्। मीनरानु नामेराखूनामे बन्धनाम् कुराहे। 子母母是 নৰ্ভৰ'মেন্ট্ৰ গু'নন্ন-'দী'শ্ৰমান্ত্ৰ প্ৰান্তিনমান্ত্ৰ-'ব্ৰমা থাষ্ট্র শব্ধ बद्दीयान् हेन याहार्ष्ट्रे दापदेशवाद्यायाहरे हराके दार्या विनानी न्युकाद प्रना श्चैतरः'न्न'चळरा'पदे'स'चॅन'ळे*न'चॅ' वेग'५५ग'च'ने*न'नेत्वा'चलुग्रा''' पतिक्षे। बाबतात्र्रां बन्धं बाख्या पर्वतात्र्न् प्रवास्त्रिक्षं वाद्या है व रा सुला क्रेंन्य प्राच्या है लाय वित्र त्र्रित विवश है बाज है बाहुन प અ'મૈત્'ग्રैश'&'ॡଖुભ'ॡୠૄૼત્ર'৸અ'য়য়য়'ড়ৢঢ়'ঢ়ৢ'য়৾'য়ৼ৾ঀ'৳ঀ'য়৾৾৾ঢ়ৢ'য়'''''' चक्षेत्रुं चुन् चर्म। हे चर्ड्द् गुरुष गुन् दे हि कृत्र गुन् र द्रामा ग्रा द्रिर मयाशु'द्वर्गम्य संत् व सर्चे व प्या । व स्व या त्या त्या पत्या पति सक्यया ह्यु'ग्रकाग्रीपद्वन्'तत्रापदेर्द्रे'प'वेग्'त्याग्रन्'ग्रक्ष् द्रस्विन्'सृस्य बर्द्र'चक्कॅंद्रसुवागुव्देवित्रस्य। वाद्रगुक्षुद्रद्रगुरागुव्य। दे वस गवस अमेता नु ने न सा सु क न ते हैं। यन मूर की मूर ने सा नहीं न च्यायक्र्यात्याक्र्यात्वाच्याक्र्यात्वाच्याक्रयात्वाच्याच्या ह्य तञ्जानी संज्ञान में गहानका पति अवर स्वानिते अनुवान में निस्केन र्मे विषापत्र प्राप्ते सम्बेदा सन्दर्भ । ने विष्य हे यर्जुव षाव सम्बन्ध स्त्र हुँ व मबाह्य वर्ष वेद्र दुन् गुरु हे हा पाय हैया रहा पहुन व्यवस्था यह तर दर सर बर्धेनबाने प्रवानित्र वर्गा इत्रकारा तर्ने खराक्षेत्र वर्गे रहार प्रवाहि। द्यात्रे द्रवश्रम् व्याप्तवात् क्षुत् ग्ववश्राक्षर् वित्। रः प्रतः ग्रेंन् क्षे हैड्'हे'र्झ्यापित'ग्रुट्याया। विन्द्रव्ययायहण्युर्'हें। वाहित्याह्युर्'त्र्व्ययायहण्युर्'

## न्दरायश्रम् श्रीम्

बार्के शुद्ध। हे नर्द्ध वर्षे सार बादा ने केन नर्द्र सार है। महत्वा """ न्भेन्याशुर्द्धे वाध्याक्षात्रे राष्ट्रियापा उवा द्वायापत्ता वियापते हुवाया तान्हें ब व्या मृत्रत्वर्भागृब श्रीष्ठ्या यह र श्री मृत्र व्या शु शु र हिरा। हिन्पर हें में दर में मार्क मांतुया नेते में नयापा कु नया सु ना सु न्यं में रम्'तु'ॲन्'य'त्य'यन्त्व'त्वे'तु'तन्ने'यम्'केस'ॲम्'य'न्म'। हे'मर्ख्द्र'क्षे'स्रवा हीरातवातानेरानेनानुन्तानारा गुरापति सान्या सरायापा इयसाग्रीना श्रुव प्रत्या है वा नेव में स्याया लग रा है वा त्या तर है। हे पर्दुव कूर नेश्रम् मिन्द्र नेर्मिर्म निर्मित्र निर्मे देशका देशका निर्मे निर्मे किया के विष्ट मिन्त निर्मे के विष्ट मिन्त ह्य वात हुन निते द्वाप वर्ष । या है नि वात ति वे वह वा प्रा स्र-यापा दयशाग्रियाहे पर्युव तारीयशा ठवाग्री में वा **परा वे ये** । इयसभी र्नेन्या प्राप्त गुन्दिर प्रवृत्व वित्र रेग्य शुन्दिर प्राप्त । दरे ह्रवाहेन'व्यार्चेव'दुन'रूप्'ययव्यव्यापर्यययेन् देन'व्यवागुन'स्वाहे " इराद्यांचेरपर्रा हर्पराष्ट्रवायापुणावादारा विवेदार्दर बॅबावयाञ्च'न्गुव्दु'र्श्वरपान्रराचारवातात्रं यञ्चलप्रराद्धवावार्ववारा यर्नेतातनेयसाग्रीलु पार्कस्तातुरावान्तवायम्। श्रीरात् दूर्रायहः केन् श्रेतु जुन् ग्नर्य श्रेन् स्याधे तहे गय। स्याप्त प्रग्रापन तनु

त्रिं न्न्वेन्पार्भित्रायां म्व्यायां येत्रायां म्व्यायां येत्रायां म्वायां स्वायां स्वायां स्वायां स्वायां स्व ष्ट्रिप्रर में मुंद्र खुक्र मुंबे व्या क्ष्र्य दि मक्ष दि के मा बुद्र दि के व्या मग्रें न्पान्त। इर्यापा द्वारा ही स्डूरा नर हे नर्द्व ही तर्ड हता <del>ऍ</del>ड़ॱय़ॱॺॗॻॖॱॹॖॱड़ॱॸॱॱॺऄड़ॱॾॕॱॱऄ॔ॱढ़ॕ*ॺढ़*ॱय़ड़ॱऄॗक़ॱड़ॖॺॱॺऀक़ॱॺऄढ़ॱऄॗॗॗॿ*ख़*ॱ हिर हे भार्षेण पर रखें ग्रैस्य। या प्रवस्त्र ग्रुट न् सु हैर पर है द ने'नराहे' पर्दराष्ट्रीराञ्च कराष्ट्रे हे हें' तहाराहे गर भागता गरिय सर ढ़ॕज़ॺॱज़ऄज़ॱॾॺॺॱॲ॔ॸॱॻॱॻॾॣॺॺॱॸॖ॓ॱॻग़ॖॸॱढ़ग़ॖख़ॱॺॖज़ॱऄ॔ॱऄ॓॓॔॓ड़ऄॗॕढ़ॱढ़ॺॱॱ प्रिंग इवश्रायम प्रेंग हे द्रामहाता हैंग मुगद्र अति व शतु ন্ত্ৰকা *खुन्।* तर्द्धनशत्रकात्रश्चिन्। यः यम्। नृत्यः सम्युन्। सुकार्मेन्। सद्यः तर्द्धनः। **५८. प्राय: क्रि. प्राय: संस्था में स्था: स्या: स्था: स्था:** महर क्षेप्राय केदायदेव परं पश्चन प्रमास्य देश में हिंग म् १८४वर में त्युत्यकर प्रवा व्याप्त स्टर्य द्ववरा ग्री राहे पर्वं व मूर्य पर चन्। पठन दे। हन यन में न का हेन या हन या की छन या यह न स्या। **डिरायान्त्रे ज्ञान्यर्यर प्राप्तान्य प्राप्ते ज्ञान्य अपन्य क्षा अपन्य क्षा अपन्य ज्ञान्य ज्ञान ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान ज्ञान** श्रीकामर्गकावना है पर्द्वा श्रीमतुर गन्दार देव दु है का है। मदका शुःश्चेत्रान्त्रक्षात्रेत्रहेष्यान्त्रम् नियान्त्रित्रान्त्रित्रान्त्र् निष्यः व्यवतः केष् में विषादा विषय व्यवस्य सुद्धानः सुद्धाने । सुद्धाने में विषा म्रस्यवयार्वन्त्रम् नेराविन् द्वस्य ग्रीयाप्यत्य मैराहे पर्वव ग्री धुरः वंश्वर्ष्प्रायं व्यानवि तुवासु तर् पत्य। न्सु न्न तर्प्राप्य प्र

ग्वनःक्षेक्रेन्द्रेक्षञ्चेन्द्रविनःक्षेत्रःकुक्षान्ग्यव्यादः यदिनःक्षेत्रःयकाग्यतः मम्बामित्रे भुताब् स्राम्ये वेते मानः हेवा भेषा तत्व ने वदा त स्राम्येन विना'यान् वेन'न्र'कृन'र्दु'यह्रस्य वर्ष्यर्ग्नातिः तस्र । तस्र न्रेन्द्रम्पुन्त्रन्यास्य । देर्दिन्यास्यस्यम्युन्द्रन्यास्यस्य <u>ढ़ड़ॆॱऄढ़ॱढ़ॺॱॹॖॺॱढ़ॺॱॿ॓ॱक़ॕॺॱॿॱढ़ॊॸॱढ़ॕॸॴॺॹॸड़ॖॸॱढ़ड़ॖढ़ॻख़ॖॴॱॲॱॱॱॱॱ</u> क्रेरह्मेप'तृ' हे नते' छे। हे नर्ड्र चुँच वजुर नहे वज्य पाई या परादें व हि। र पर्याञ्च प्रायुत्रायतय। प्रव्याम् वर्षे श्री राज्य ५ 'प दे 'मेन् 'त र हेन्' दरायाः त्रें त्रायाः श्रेत् 'त्रा क्षुयाय का श्रेव' पर्या व्रायते 'वृत्याव का श्रेव' पर्या न्तः छन् 'अप्यत् म्मान्द्र तर्मे प्रमारतिष्ठान्त् 'सुष्ठा 'सुष्ठु स्ट्र' निषा महान्यास्य। नैस्प्रिंग् इवराप्तायकेशवराद्य हैं। गुव् हें पर्वत्यीष्ठिया विप्रा गुन्दव्यद्याद्वपाद्वपादह्याने ह्यापय। हे पर्वन श्रीवायावय। र ने मर *अप्रेन्'पर'च'अ'र्ञ'न्शुद्यप्या वित्र'द्ययाग्रीयाग्रुत्'न्द्रिया*ञ्चन्। पर्वताप्त्र व्याप्त व्याप ह ग्रापवास्त्र राष्ट्री क्षा स्वराष्ट्री हो ग्रापवास्य । *च*न्'पते'क्रेन'दब्यत्व्वयाय'न्'यह्य'पते'ळॅन्'य'प्रयाद्याततुग्'य'य। क्रॅब्र' म'नृगु नु'न्य' देन' इवय'ग्री' च य'र्जुव'यर्दन'गन्त'न। पन्ग' इयय' ऍ८:पाद्दे:पर्दुव'ग्रीकाह्रण्यायष्ट्रिव'ग्रीकाण्येण्यायापाराण्याप्यात्वापाया हे'रार्ड्द्र'ग्री'व्याद्याप्य'र्यर'में हेर'द्याप्यक्षाप्य। व्रित्'इयय रतार्श्यं विरायत्वारायाँ स्याधित्या यर देवारा मुणु मुण्या सर्गा रुण' इयरा ग्रीरावी स रॅन्' मे हेन् व'गरात' गरिण' मराहे पर्वदाय वर्षा

ने'त्राहे'पर्दुव'ग्न'व'पत्वग्रालुषापर्या हे'पर्दुव'श्ची'व्यावर्षाण्यय ने'ग्'र'भेव'बॅर्। हुर'बेबबाय'र्चर'र्वेच'पत्वें क्यात्र्वें रप'त्वुर'प' प्रवितः के बक्रेन क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हैं स्वार्थ । शुक्ष कर्नेन क्षेत्र प्रक्ष स्वार्थ र्हेन'न्याप्यित्। ५'यन'न्याणुन'होन्'न्यस'न्नय'स्व'न्'तन्याप्य ्यर्गेर्'रा'शुक्ष'ग्री'हु'त्रहुल'यबूब्र'रा'भेत्। र्'रे'सून्यग्रेर्'पदे'ग्रव्यवी'स सामान शुर्वा धरामिन में राहें मान है। पर्दन ने रामा गुराभु अन्रस्विद्रियत्रम्पर्यम् तराय। स्या भ्रा मिन्सिन्या इन्देशित विषय हेन देशित से पर्माविया हैन प्रीयाया नुग्राकी हेन्द्र त्र हेन्या त्राया वाराया है स्र त्र ग्राव्याया है नर्द्व क्रीलयादवादायाकेरानेदारेत्रियात्व्यवादवाद्यात्रात्रात्रा त्या यचर ने के यापर तर्ने इवरा ग्रीका के न रा ग्रीत मिर सिरे झारा पर रे पर रेश के मुन्यमें दंश रे तम्बर्ग। हिन्य र मिना स् ञ्च'नते ञ्चन्'याष्ट्रेन्'त्'ञ्चन'द्वक्षणीक्ष'नते वद्यत्पञ्चेर'व्यापनतः पहनः बर्मा म्रामित्वस्य विवासित्य । विवासित्य विवासित्य म्रामित्य । वाच क्षेत्राये वी तर्रेत्राय विवादुत्य यात्रे तुवाद्वित् दववा ग्रीवाके ग्रुवाय धिव न्नित्र्स्यम् क्रियान्या प्रक्षित्रा प्रक्षा प्रवास्य विष्या प्रमाण व्यवाक्षीःबर्ह्न'राख्याय'न्न'तुबाबर्ह्नबाततुष्'र्स्तावेव'ज्ञबाख्या'''''' मस | हे मर्ड्व के वित्यं व साम हिना हे व पा इयस की साम में साम की साम मा द्रस्वाप्तात्तुवाक्षे। देनवाण्यात्त्वाक्षात्रः विकास ग्रुत्य। देवस्पित्स्यस्यैस्रिस्या न्न्तिन्देन्देरदेन्द्रियाचरादनुन्यक्रीत्र्रिन्रन्द्रवर्णः र्स्रदर्भाषुद्रदर्भाग्य। वित्रह्मवर्शाधियान्।यन्।हें।यर्ड्द्रायर्थःविद्र्यंद्र्र য়ঀঀ'য়য়য়য়য়ঀঀৢঢ়৻য়ৼৼ৻য়৾ঀয়য়ৢয়য়ৢঀৼয়ৢয়ৼয়য়য়৻য়য়য়৻য়য়য় राधिव'तेर गृहस्त्र द्राप्त हम् कम् केव्या र र स्प्रा हिन्पर हे से दुर इंदार्प्त, इंपर्व्यक्षियात्रेयां च्याप्त, प्रत्येयात्यात्र, प्रत्यात्र, प्रत्यात्र, प्रत्यात्र, प्रत्यात्र, प्र नमञ्चासकी म्नेतःव्देन्द्वमागुन्दिन्दि रातके नराक्षुम् केन्स्ट्रिन् लुकाः हेप्तर्द्वाग्रीक्षित्रस्वरूषिव्वव्यासेष् प्रतेशहे। हेपर्श्वत्यान्गुन्याप्रतःत्र्व्याधाःतान्याः।हिन्'तावीःन्व्या अदित्यार्श्वेतःकुन्त्यान्र्वेश्ययान्यान्त्यान्निन्चन्यातने हिनः য়ৢয়ॱ৾ঽৼয়ঢ়৻৻৻য়ৢ৾য়৽য়য়ৢয়য়৻ঢ়৽ড়ৼ৾ঢ়ৢয়ৼঢ়৾৽ঢ়ৢৼৼঢ়ৼ৾ঢ়ৼ৾৾য়ৼ৾৾য়ৼ৾ मुन्नित्रद्वार्यार हुरार्चे दायश या मेगावया विवास राजे स्वास हिन्। इरायपार्वणयान्यामा सम्मान हेराईनामुः सर्मित्यापरात्रीना विनः ॲन् 'हु'नदे 'गृन अ' ऋव' नञ्ज ग्रा हे'नईव'न्रॅव'श्वॅन'गुन'ल'नेन न्गरविष् दुर्शे पन्य परिषर। ग त्रा क्षेत्र में रा परि त रा में से म त <u> चैत्रवेर्'रा'गुब्दे'पर्वब्'के'गर्रेर'पर्युक्नेव्या'सु'रु'गुर्राप्युव्यक्तिस्</u>रा''' पर्द्वन्श्रेष्ठाः तात्रक्षत्राचेत्रात्वाने हे त्या पर्वे क्षेत्रः प्राप्ते का पर्वे व्याप्ते का पर्वे व्याप्ते व नेते कें हे नई क्राया छ गृ'त विराख्न ते ने राया ह गृ **छग**'र्र' श्रेर'र' छुग। मुक्षेन्'र्धन्'रेशक्षं' ह्र्याब्यसंत्। यात्राय्मेन्'रादे'त् गुरुने' व्यव्य लाग्रॅलाहे। य पॅट्र्न्ग्रलेय ग्रेहेर्न्य्यन्रळेण्यपदेन् स्वय त्यपञ्चर्द्रे ञ्चेत्रेषु त्यव्यु स्वर्त्व मुद्रास्य म्

न्यत्रने नेन्या ने व्यक्ति व नुवायाया । विन् व्यवाय स्ट के व्यवा मन्ग्रं संन्त्। । मः इतार्धे रक्षेत्रसम् ग्रेक्। । मिं क्रेत्रस्य भैः स्र्प्याञ्चा प्रकार । प्रकार महामु भिर्मे रवहर भिर् । प्रमुक् द्वे ब्रेन्'ग्रु'सद'ने'ब्रु'पैद्य'रहरा । अव देव'देन'ने सद'य'दुनयान ५न' तस्य। । यम् मृत् ने ते ये ये त्व वृत्या । य य दि ते ये ये ते व ते य स.क्रियाञ्चानते व.ह्याया ्रान्यहिं स्वते ह्यायायन व व तर्देग या है ग्राम के राप देन | | बीटा यट देन पा के ग्राह है न | | विम् ग्राया विद्यार्थे में स्वाया है। । भी सेम् सुमानी पमा केव पहार। । पर्वा विश्वावर विवायहर्षा प्रवास । व्याप्त स्वर् हराया नजुरा विवस ग्रीस नजरा नजुर हिन साहा नहन । नगु है नवासु में नहें न त्याय व । । स्र म व प्र म वाय च न छ वाय न । ह्यन् की अन्तर स्वापिया स्वाधा स्वाधा विषय हे द्रान्तु व इद्रम् मु प्राप्त । क्षाने व्यवस्य पर्वे पश्चन प्राप्त । त्रा के के के प्राप्त र प दंश। १८८०'ड वृषा द्वार्थ द्वार होता वितायमा । इता हे इता मरा स्त्य। विरान्भेवराय्या विरायका विराधना पश्चा वित्रमान्यानवित्रित्तर्भावेत्रान्या विराह्तानके कुर्क्र्भवत्वा विम्नित्वर्ग्या । न्यरः है-दिन्य्वयस्यान्यक्षात्ति-व्यव्व। ।रेव्याः संस्थान्यक्षः

र्गर्गर्वार्थ। विस्त क्रियशं ठवं त्यं प्रत्यं वर्ग या प्रता क्रपार्ट्र क्रां झुनका शु'न दुन । वाय वि ' न व क्रो न पर व न पर व न । त्यवन्ते सुरक्षेत्र ते रत्न विष्णुका । श्चिरवर्षे व्या के तायहर वह ग्या । मनः प्रविदे धुग्याया सुगे सुनः। । अस्य रे प्रवास प्रवास दे पानुः पानि रान् इस् । विरुद्धा विरुद्धा । विरु त्रतिक्षेत्रत्म् स्पानाय। | निकायान्यापतिः क्ष्यंत्रम् यात्। । हेना . व्यात्रयम्पत्रेतुःखन्द्रः। । र्गुव्र्वान्यरः सूरः ने स्वायायः द्रः। । र इतार्वे रश्चे तिर सर्वे स्व बुद्ध । विष्टे न रश्च न रश्च में रश्चे रश्च त्रवारा में । वित्र प्रवासका क्षा स्वरं तुः व । क्षित्र तर दिर के प्यतः रम्बर्वि। । रक्षेविषके क्षेत्रस्य र क्षेत्रवा । गुन्द्रे प्रविषा निनि:र्येग्ने'रु'रु'पर्वेस। । अळॅब'र्डे'कुल'क्कि'रल'मि'ने'रु'श्चन्। । न्यतः तार्न्रकी तिह्नुन याने राज्ञ तायल । । श्री राज्ञ सारा प्रेन्स तालन् केना चलग । र्झरा र्झरा केर प्रंपर या ता कर र रेंचिर। । यर र र्झरा ग तु या या र र र मुर् गेळे प पर्देव। विद्रत्पा द्रमा में स्थान विष्यूर साम्वावा । विश्वादर त्र्वा वेत्रायराम हत् विवासाय ग्रीसा । ज्ञिता संग्राम महिनामा महितासा वित्र । । श्रेषिके ने र वदायर विषये श्राप्तर या । श्रेषे ति दि विषये प्रेर श्चै अववा । श्चिमा प्रायमित्र सम्बन्धिय । श्चिन्द्र वा प्रायम् । श्चिन्द्र वा प्रायम न्सन्यभिन्यान्यात्रस्यान्त्रः । ।त्यान्येयाभीत्वुग्याद्रस्यत्भेतः कुल। [८.वुक्रकुक्त्.केव.शेव.कर। विरास.शेव.क्रेब्रक्रपट्रंबर

अर्थेर'। |र'स'अर्'क्रेबायुर्'ग्रेरेग्य। |स्र-'र्ग्याद्'खरतर्हर arg-r । र प ठव प च व च कुराये के र वे दि र वे व । । प व का व र व प्रिंट्याबीन्परः सून् 'बाब्रीन्'। | वि बक्षा ग्रुन्' हो ब्रा नग्रीकापायावा। । र बी क व की | P' त्य क ह न प्य न दा । धे बा ह्य पा कुन की पहल य न र ने हैं बही । शुप्त में पार मार दें दियें व हो अही । इस रहें रही सार रापा | कुल' प्रवश्रें पर ल' संयु व ल हे ' व है । । विं प् ' सु श्रें प ' द्व श्रें 51 न्यायस्य भेरः र्रा देव है। । यह वा सुन विया है व साम हिंद देव है। । रा इसार्डिराम्पर विवसायने प्रानुता । वित्रिष्ठ प्रान्म इवसान्नु। विश्वस्परित्यव्यवश्या विश्वन्धरस्ति है। हास्यस्नित्य म् नवादिराने में तिविवयानया है पर्वयापर ह नवान वयस दरा हैर बर्द्र'व्यावन्यार्चे'बर्द्र'प्या यःचेंद्र'त्वाचर्द्रेयापानवेवानु'तुरः व्यायः मॅनः ने हेनः मध्याकन् । विनशहेशन् नः खुन् । विनश्चे हेरा ग्रीयाः । । । । । न्ना नेन्यात्ररावरित्रन्देशायेग्नेवानुत्रानेता हरायार्येन न्गरतियं नेरप्यं त्राहेश्यन् गुरुहेश्यर गुग्राह्यं। ने वहानु स द्यषाण्चिषान्वत्वराहरावराष्ट्रवाद्याव्यान्वरान्वरान्वराम् त्रगुरात्र्योत्रानितः म्रायानु त्रेतः श्रे तत्युअ मुीशान् त्यत्र हे नर्श्वनः श्रु अ र्वे नराः। पर ने पर्याप (दिने के न प्रमाणन प्रमाय विवा कुरा हिना कुर महिन हरप्रश्चित्राच्यात्राच्यात्राच्या हित्रप्रध्याच्याच्याच्या ब्दबार्हेग्'य|प्रतर्देश्च्यक्ष'ग्रीक्ष'प्रग्रीक्ष'रग्रह्म'व्यक्ष'व्यक्ष'प्रदेशक्ष'ह्'' वगुरतर्भगुषुरवार्थ।।

हेन्न्यतः व्यवस्थित्रं विष्यात् तुर्। वित्रात्र विष्या विषय बामवरत्व्रां संज्ञेत्। । न्यां संयानित्र हैं सन्या है। । न्र पति बर्ह्र प्रकार्य र्यं वृह्या । तुः क्षेत्र कुं हिं वृह्य हुन्तरे सेसराला हुन् हेन् न्ना । नहां कुते से ते हता दरा सेना । नहां शुःभुनि द्वराह्मा । सुनि दे हे ग्राह्मा पत्र नि नि । विषय राप्रेर्'वश्वास्त्रं प्रेर्डिया । पर्स्रेस कुरे हिवास स्वरा महार हु सेर्। । नक्ष्याद्वःक्ष्याद्वेन्क्र्रः व्याचल। ।क्ष्यापतः क्षेनः द्यापननः व्याद्वनः। । क्वॅन'यदे'मुन्नेन'र्देन'ग्राता'न्न'। हिन्द्रात्रीय'हेन'यरमान'र्हेन् पर्या अत्रिन् कुँ न् वेन क्रिंग्य काम्या । कुँ न् पर्वे वेन हिला नवन वस्य द्वारा । विषय स्टि हे ग्राया न द्वीर श्रायमा । मिले ग्रास्या न वारा रेन्ष्यकेत्। । त्युत्व्युत् हेत् ह्रेत्त्र्यवय। । त्य छेष् युत् र्ह्यायत्रम् व्याप्तुरः। । रराशेवयार्द्धयाश्चरात्रम् इर्डिरः। । ररा ग्वरम्ब्यवेश्युवायतेष्ठित। विश्ववाद्युवाद्येत्रहरूवस्यवा।। त्यकातुःशुपःईतायनरे वकानुरः। | विश्वर र भे क्षेत्र तरी । १८८ তব্ৰে অবি ব্ৰেমানৰ তীব্। [স্ত্ৰুন ন বি স্কু অৰ্ড অমা দি ন মান ক্ষম। । ८क्रमदेष्यक्ष्र्वायात्र्वाच्याचीय। विषद्गान्वाचीत्रम्यक् चतुर्वित्वर्षेत्र । युक्षञ्चयं वेद्धयः प्रस्थलका युव। । शक्य मुद्देश बेन्'मन्'स्वयक्रम् । तस्यायस्यात्र्रम्'यर्ग्यन्'यर्गयर्ग्यस्न्यन्। । रोगस्यापद्रस्याचयस्य स्ट्राय्य स्ट्राय्य स्ट्राय्य स्ट्राय्य स्ट्राय रात्रेव। वितुव्यापम् हे ज्ञायरे देव। विज्ञंग प्यवापन्य प्राप्त

हु चट्यप्त कुर्या | विद्या चर्या प्रमुख्य प्राप्त के अक्षा में राम विद्या में अक्षा प्रमुख्य प्राप्त के विद्या में अक्षा में राम कुर्य क्षा में राम कुर्य कुर्य क्षा में राम कुर्य कुर्य

कुंबर्न्ड्वाञ्च द्वेव। विधिष्यात्र्वान्येन्यवान्या ।वन्ति ब्रुंद्रज्ञान्त्रत्यात्रेयस। विष्ट्रत्यकेम् पतिः क्रुंगः हुनाय। । ह्यसः व्रैक्षज्ञंबानदेश्ववादुग्ववॅटः। व्रिंटःदुग्ग्नेरेटःतुःखुरःयःवया विवर्षातानने ना इस हुन पना । शु ने हेरान शुराद राजा श्राम्या । भ्र-राख्द्वित्। ।ग्रॉथं त्र गुतायं प्र-र्वाचेत्। ।धे पञ्च प्याप् व्या बर्ळवेदा । इसम्बर्धियावाकुर्येवेदा । यहारानुः पर्वादरा ळॅंबाबेबा ।नेवें हैं धैंपन ये हुण धैवा । यन प्रवस्प हन प्रन व द्रा मञ्जन। विनः र्ह्मन् र्व्यन् नः र्ह्में अया विन विनः र्ह्मन् र्व्यन् नः र्ह्मन् र्या बैबा । इसर्हेग फॅन व इसा तर्जें र बैबा । पर दुरा फॅन व ले ले ल भैद। क्रिं तके मन्द्रायम्यक्रियं । निविद्रानिक्रियं हुण यन्य। (।यन्ते:स्न:के:द'न्युत्यंनतेःर्द्वेन ।येन:स्वके:द'ये:नुन्यः <del>ब्रॅ</del>ुण । गृष्ठे : ब्रुण : क्षेत्र : ब्रुंज । त्रें न् : क्ष्य को के व्याची : ब्रुंज । स्याद्माक्त्रेयाक्ष्रित्रवार्श्चेय । । । ज्ञात्राक्तेयाक्ष्रियाः विष्या पर्वःर्ङ्ज्ञन्<sub>रि</sub>न्थन्य। । अर-५५५८ छ-५-१ स्थाप्तः मर्जुन्। महोन्। वर्षा वर रे'विंद्'तश्रीयव्'वर्'पदे'लवा । मुर्रेग्'स्रस्वेद्'व्'वर्'पदे'लवा । श्चित्रं प्रदेश स्परित्य । । १६० मन राष्ट्रे साम क्षेत्रं ताम दित्य स्त्रं 

परि'र्ज्ञनः। । महायातश्चिमं अन्यां मेर्व्यार्जनः। । व्रिमं मन्यां केर्याः र्हरुक्तिया । तस्र त्युर्वे वर्षा मेग्येते स्राप्त । अत्र कर्वे वर्ष वृद्धराष्ट्री प्रेंत्। दि'त्वाम देत ठदार्श्वत हुवायवदा । यत् सुद्धारा गृतुयार्थें त्रारामयायदे। विद्राः जित् जित्र जित्र जित्र जित्र विद्रा वित् अपारीयराष्ट्री बुद्र त्वाप्त दी । बुद्र प्रत्ययते विवासिया विवासका परी । पर-र्गर-र्वर-सुग्यर् हे प्रवापरी । ख्रान्न वेर्पर्रे मशः ळें अपस्यमि । दि'इता' तर्जे र'वस्य की मदे' हुग्' त्यक्ष । दि' ग्रन्'कु'यर्'ह्रग्'र्द्र्'कुश्च। । ह्राहुग्'य्र्भ्यय्यदे'द्रवस्'न्छ्रस तरी । ब्रिन्सुर्स्रात्रस्त्रम्यस्ति । सर्वेन्नत पातळें ग्राया प्रतिश्वां । करायतुन् हैराततुन पागुन गुन अहेरा । क्षेर्व्यात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्व रेबागुः इंबाबुबाने (या वार्षेत्। विषयान् गुरुपारान्य विषाई बाया त्तर्य। । त्यान्यापते क्रेंन् त्यात्युता पर मृग्। देवाय्यात्या पर्या ग्रेक्ट्र्र्र्स्स्र्र्स्र्र्स्य्र्द्र्य्र्द्र्य्र्र्स्र्र्स्र्त्र्यंक्ट्र्र्त्य्व्यात्र्य्यात्र्र् <u>र्नः अहला दुनः व्यक्षार्भ्या क्षेत्रः प्राप्तः वृत्रः अवाश्चिः त्राप्तः व्यक्षः अवितः</u> रा'न्ग'स्'ब्रॅब'हे। बॅबर्य'र्चअ'यम्'ब्रेचेन'रा'तन् द्वबार्चेतांसम नवा गुन् भ्रेन्यर दर्ग विश्वास्य है पर्दन ग्रीविय दया न त्यान्य स्थाप यानुयागुरानुराके। श्रेष्ठायानेवामें क्षेत्रान्त्रक्ष वितादकार्रकारी चेन्'पाइयका विवाद विवाद भिनामा श्री दक्ष विश्वाद सन् गुशुम्बार्शि ।

म् भुरवरायतेष्वरवातात्त्र्त्। । वित्रवार्यत्त्रात्त्वा र्रायंडवा |र्संह्रंबाहर्यरायह्मायाम। विवापायपार्डमारुखेर य विव हु ब्रेव। | न्यात प्यन विच पति न्यात हैं र खुरायें तरी। । के ळें कूर बर्'या कुला च ने ब 'हु बे बा विराहित कुर कुर रावे गाय दे 'तु र विराहित' [तुषाहरा हुर्य द्वार भेर दुर्वे वा । नवत के सेंद ति वा वह वा संक्षुनुत्रा । द्व'न्वबातन्य में नेद्र'न्य में व्या में व्या केव' ह्व वर्ष য়ৢ बतः रदाञ्चाता विः हवः गुलः तुः तहेवः पः वेवः तुः श्रेवा विः हतः ह्याः क्षे'हॅग'चनेव'रु'पायाद्यु'या । तिश्रम'र्वे रा'न्ने मुंत्रीया भेव'रु'ब्रे वा। ग्वेब'ळव'र्से हीन'ड्रब'क्टेंस्यायन्त्रा । वि ळें ख'न्ब'रेडेन'रा'वेब'र्ह ब्रेम् विराह्याहितायाक्षास्ति न्याराया विराह्यते यतुनायस तकेर पंक्षित विकास व तर्न् नृत्वे न्द्रम् विन् प्रमेन । विन् वस्त्रम् वा यत्न प्रमेन विन स्व ंदरी । । जन्म न महिन दुः तर्रेन प्राप्त के प्राप्त विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास राम। विराव के इश्रास्त्य में हवा वि वि वि वि वर्षा तर्हे रात प्रेव बह्री। इंग्रज्याच्या नेरळ्यवात्रिक्यास्याक्रीस्त्व हेल बुर्वा यर्ग रुग द्वा का गुर्दे पर्द र दे पर्द र दे प्राप्त के चर्ड्वप्धतार्चेग्रांतरीराह्य्यायाव्या नेत्र्ग्रांव्यायायस्या नशुर्वित्वायक्ता निवासिस्यस्यर्भरत्तेवास्यक्तर्तुत्र्वात्या ल लुरापरा हे पर्वत् के लाग न्यार ता के ग्रामा के या न वा ना वा न

ष्ठिरःपःस्यः श्रेंपंरः न्यात्रस्यः व्याप्रः स्रीं व्याद्यः स्यात्रः स्यात

हेर्डे च्या यरपरे व्यवस्य तर्ना वित्य रेस्डे व्यक्ति प्रें पन्न'मं वें द्वववा | मः द्वता तर्चे मं केता महामान | त्यु मं वे न् की ५५'प'ग १८ व का ग्रीका | विक् वेद पका गर्सका चित्रा | विक् विक केंद्रा रु: इन रु: पर्न 'युर्व । । तस्याय वया रु: तर्मे वया वा स्ट पा हान। । वैगाप्तर्रेशकेशवाग्निशश्चित्राप्तक्रा । त्र्राम्यस्य रेटावारेपाटा बरा । गुनैसर्द्रस्वा बस्य द्वा छैन र युन । शून्य र द गुन् र ने हुँर पन्न में हुर। । पहें तित्र ही पान हुरा सवार दा गरेंग । धिद वेद निः हॅ न स न न में न नि'यव'पर्यथ'रव'त्र्षुण ।ण्वेव'चर्याग्रे×ॅन्थ'वेग्'व्यरायेर्। । ট্রিন্'ঝি'ব্যা'শীস্ত্র'ঝর্জন্'ন্র্'মেন্। । নের্গ্রাপ্ম'ট্রির্'মক্ক্রাব্'মি'য়ুস্' थ्रा । विरायन मेन्स्न संतिक स्वरम् ।नेप्रायमित केप **८र्जे राया । जॅराख्या रुख्या र् जॅरा रे छे। । रा छॅ प्रयं ये रा छैं रे विंरा** त्रीय रुप्तेष्ठ्रा । ब्रिन्न्न प्रमुक्त स्वराक्षेत्र ग्राम् वर्षे राष्ट्री । दिने र ळॅगराकुष्पद्रायन्गार्थ बॅर्स्यया । ज्ञायकॅन्प्यकुन्'नेरायग्रस्यय पत्रम्। ।श्रूष्याया क्रीया वेशाय व्यापन । विश्वाय हाम विश्वय पर्या व.श.इवश.ट्र-्रवा.इ.प.ध.शब.हो इ.पर्वेब.धेवांश.शब. न्न्न्यपः भेवः तत्न न्त्वः न्त्वः वीकासुत्यः ततः न्यवः न्न्नित्यः चुनः

## विन'ध'वन'श्रेन'ब्रेदे'स्र्रन

बार्वेग्तुत्। हे पर्ववादीतार समाने के नामा करावर समासी का अर्देग्रागृहत्य्द्रप्राद्रयश्चीरामतुग्रापति'ग्रायापानेपान्पाद्रप्राया ग्रद्धरा व्यवि'चग्रिच्चुच'हिरक्षिर्'र्जूर'ग्रेर'र्प्रियरिवरस्य क्रॅंबर्-हेंब्र्यायवा सिन्दिर्म्याख्यायाह्यकार्यरक्षा नेर्दे विमा ् विषयत्याञ्चित्वितः तत्विषयाः भयाव्याविषाव्याञ्चनः हीः सनः नतः हो। हे पर्द्धव्यविषयपित्रमध्यवर्ष्धेणव्यव्यव्यानिस्यानिष्यित्यानित्र श्चनकात्रायत्त्रपुत्क्षत् केषा छेत्र छेत्र तत्वाया तवाया वित्वाते वाहेषा वाह्य केषमाबीतनुग मार्ज्ञेबाळेवायायमाञ्चमातिष्वायमात्रगम् ग्रीमबावया। षरः प्रज्ञेबबाबयः रु'त्वु ग्रायसः त्र्या भी से रावादः ईर्रे रहेन् छेवः में विगाणि श्वाया की न्या न्या में त्रा तां वर्षा में त्या विदाय तिश्वा तुन की न्या निवा की वा वित्रपाविषा भुतः वर्षा वित्राहे पर्द्धन्या शुः वर्षा स्वराहेषा हेषा स्वराह कुरः ह्या विवाद्यायार्थरः। इन् सेन् ने हे सन् बर्स विवाद्यं राज्य विमराग्रेव'मदी'असे'मॅन'महन'क्रेग्नेंन'र्'त्य वृद्'महा ह्या हेव'सदी

ळित्सुतार्'विवेद्रव्यावगुर्तिः गहारसार्था।

द्वैन'रुव'यर'पत्रै'व्यक्षत्य'यर्द्। |व्यन्तायायर्षे तर्वयक्षय्यक्ष क्षेत्र' | विक्षिण द्वाराय देश्व ह्वाया हिंद्र येट या ह्वा वी ह्वा ষ্ট্রিব'র্ম। । এমানর' নেই র্মান্সের' ব্রম। । স্ত্রু স্কুর' নেনি' ন সুন্দ্রি গ্রম र्षेत्र'ग्री'न्ग्रीय'विषा'व। विश्वाचुन'गर्डेग'गप्पन'टगर्याय। वि'**र्न** बर्डराक्षे वावता प्रमापना | दिन् चेराक्षे त्रांति न्यता नुपना | यश्रुःश्चरः प्रविध्वर्भेरः प्रथा । व्यवतः ष्ठ्रपः तह्यः र्णः रुषः स्टरः हेव । म्र डे अर्चे द में वा की प्राप्त के प्राप्त य। १२'र्चे त्र र्सर प्रमृत्य दे कुल र्स के त् । के ह प्रश् मृत्र के वि व। वित्रम्भाराष्ट्रवा व्याप्तराचा परिक्षे विष्युग्न गुः दुः अव्याप्त कन्या । ने न क्व न वव प्राप्त वा की जी । नियत हन वा वा बन्दरन्त्रानुष्यं भूनः देव । बुन्यायया न्यायळे बेरानाया । हें। न्र्नरकृषीन्यम्त्रस्वाद्या ।न्रेत्रसुन्नाः सुधीन्य रस्वाद्यभित्रा । थाः बद्धन् पुःषाकी र की पा तिहास प्राप्त । विस्ति ति स्ति । विस्ति । विस्ति । विस्ति । विस्ति । विस्ति । विस्ति । नदेः छ। । ६ न ब यु: ८ म : देन । चु न ने स्व : न व राज्य । ष्यक्षा । विक्वतः स्ट्रिये विष्ट्राक्ष विषयः । वि. तर्याक्ष विषयः वि ५८ मूर्य विद्या । स्वित्र स्वित्र विद्या विद्या

है:तान्वत्रद्रत्ये । विनाःहै:न्यांद्राःदेनःहेन । विनाःर्सेन् स्टाः रुद् क्किंतर:याया । वित्यानकामतीयायर व्यवाया । तिरीतरायावत में वा मुनेशञ्चरायादन्येव। । यनेन हमाशञ्चरिने हें रापहर है। द्युम:इत'बह्म (दुःबेबबामक्केन'व्या । दुवाह्म परिमाधनापिकामिन **উ**দ'গ্রীকা । 🕏 শৃত্তিশ'বাদক'জুক'স্ক্রিন'ন'ম। । । ট্রিদ'র্নাশ'র্মীক'দ্ম' তেওঁ याध्रमंहित । ब्रुग्में सबस्य निर्मेश्रम् निर्मे हुन । व्यानि स्रुन् मिना सिन् विनः न्येन्य विष्य । दिव्य स्याप्तरः न्ति । स्याप्त । सरामसन्याचित् के प्रक्षिता प्रमान । वित्र प्रेमा प्रमान । वित्र प्रेमा प्रमान वित्र प्रमान । ८द'तेवरा गरुग'द्धप'त्र-ष्ठाता ५८। । । । । साम वर्षा ७५ 'तेवराह्य वर्षा वर्षा व। इस्मह्रेन्'नित्रे सम्मन्पंचेन। विस्मिनि म्रिन्पर्सहर्म ब् । १८५ स्वानिश्च र्र्ज्ञिया प्रमास्य । १६५ स्था । न्द्रन्त्रे बॅन्द्रा बिन्त्ययन्द्रन्त्र्रस्यन् देन। देवन गुन्य पया विनयान्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा गर्डेग नेश्वयद्वर्ति भ्रत्य नगर्ने।।

 ५ स्टिन्न्न्न्यद्राध्याः व्याप्त्राः वित्राः वित्र न्यतानि ज्ञिति न्यान् कन्या | नि में सर्व मा स्वापिता | श्चित्रप्रविदेश्वव्यारोत्रायां सूत्। |दित्रप्रवाश्चित्रप्रविष्टार्स्स्रत्येहे। इर इर वुर वुर के न हें र विर । । न ग्रीय ति संस दें न ग्री स स न हु स स । न्नरष्ट्रन्त्र रुकेयाब्रा । प्रान्द्रन्त्र वेयाब्रा स्ताया । न्राकेरान् ग्राक्षिता व्यापा । ने व्याप्ता । ने व्याप्ता । मित्र क्षा । दिन्द का तुन्त मित्र विवक्त ता विवह के किना । विन न्यत्र्व्व व्याप्त्रियाप्ति हें। विम्तु स्ट कुत्र के किन्। विध रलार्च्य स्थायार्च्य वा विधानान्य उर्देशास्य । इं वन्य वायरे न्रेत्रिक्तित्व । द्वाम्यास्य वित्रम्य । दिन्य व न्वत्रंद्रत्वक्रियुन्द्रहि। विरह्मत्व्या मिन् म्या अति तस्न त्यात्र श्री अपनि से । । यन स्वा देव वापका की है वना वित्। |रेकॅरहं अधिकाया पश्चित्। |बायत् सत्मा राजेला स्ता। | विपायास्याम् अळे बेरापाया । क्रिंग्नाराष्ट्राची प्रमारा । दे त्वरात्रं के वित्रवावर्ते। वितर् मूर्यं वित्रवावर्ते रहेरे मर्।। विन्तर्भाष्ट्र व्या द्वार प्रमान प्रमान विन्तर विन् वित्। । व्रु. यदे शुक्रा ग्रीकाया न श्रुकाव। । ६ ग वा ग्रु. न ग्रा न स्वराह्म । इन् नी स्वा न् सर्प्यया प्रयापा । सि कुल र्सेन् प्रेरे न प्रमार स्वाया । निः तन्यः वण्या द्याये द्वनः श्रीन है। । तन्यः वण्या वित्यक्री वण्या वर्षः द्वनः  त्रस्तावित्। । ग्रेन अं हे व्या ग्रेश्या महाकावा । । वन है न्या र डिता ब्रा । विन में र कर कर की बेर पाया र विन की यार समित प्राप्त ह्रण्या । तर्भवदार्द्रभाष्ट्रियाश्चरायापदारी । शुः इराख्यायळ्याः पुःरोग्रयातश्चित्। द्वा । ऋष्म्रेन्। शुर्याम्येन्। तन्। कृत्। अस्मा बरवाज्ञवानज्ञुनवाववाज्यः। । तर्जे हुना नी तथाञ्चात देवां दे स् विरंड बड्रिन,पथल,बध्द,सूक्षात्तर,स्रा विर्वाह बारा सविवात्तरा है विरा है। |रःशेवयात्वियानदे हेर्ये व मुक्ष | | व्यक्ष प्रान्य स्था व। ।रःसगःश्रेवःरमः उःदेःयःस्रः। ।यरःयगःसगयान्तर्गत्रितःयेवनः Nश्चित्। ।श्रेमश्ची:ने'हेन्'अ'वेब'दा ।विन'स्ट्य'वेवाचरान्। क्षेत्रम् । यन्त्रेवर्गहेन्यर्भंहेन्यर्भंत्। । तने न्यर्भकेष्वंन्यावन यन्यूरी र्राप्त्रियश्चर्य्युवस्त्र्यं । शुन्त्रविद्यस्त र्भेग्राह्युत्रस्य । । न्या श्रीन्स्य प्रात्त्र स्व है। । त्र से हिंत् कुषिन्त्यत्वषु तिविषायन्। ।न्तुनः सन् सेययाम् हन्त्यः येन। ।न्तुनः त्वियानते:सु:सग्क्र्रा । देवान्याःश्रेद्वांस्त्रंन्त्रम्।लुरःचुरःनया हे मर्ड्वाक्रीत्रवायायेवात्तायम्याविवाद्याः हे। नेतेयवातुः इवामते २ चे प्रज्ञुन्'की' अगुर्द्दर्' ग्रुट्यर्थे | |

हिन्'यनेव'र्च'यनेव'र्च'तरे'्डं'यनेव'र्च'र्यं'यनेव'र्य'र्थन्' २'अव। ।न'र्वेव'कन'कुल'विश्वयं'त्रज्ञेथ्यंवत्यंत्रत्येवश्वयंत्र्ये। ।शुःने'यश्च कृव'र्य'र्घश्ययार्जन्। ।श्वविश्वयं'यकुष्येवत्यंत्रत्येवश्वयं। ।विन'यश्च कृव'र्य'र्घश्ययंज्ञन्। ।तने'हिन'ग्री'विश्वयंत्रेव'यन्नि'हिन्। ।विन'यभ्न'

प्रेरकुंदुरअदी शिविंदिरे इसकेशकि यानक्वा विराद्देश म्यारह्म स्वाप्तिकेर केर प्रथा । व्यान्या प्रधियान प्रक्षेत्र व्यास्या । पति'णे नेवातुराष्ट्रियावन्। । इन्यायान्। प्राचन्यायान्य। । न्युन र्वेन्षे र्यतः इंदायः वृद्याः न वृद्धः ग वृद्धायः य र प स्वाप्यः । विवदा विन'र्देन'म्बारा हुन्यीकान्त्र। ।न्धिन'र्सेन'म्विकारा वयान्येन। । रेन्द्रे डे लायर प्रस्यापया | तिशुराधेन् हेन तहें न हु र श्री श्राप्त | र तस तसुर हॅग परा क्यार बेर्। । सुर्वेते ग्वर ता सर न स्या पर्वा । जुन् कर् येर् प्राप्तु र ग्रीना द्वा । ज्ञा खर ग्रीना ग्र बेर्। ।तहत्रळेंद्रश्रें अवॅर्ड्र दंदा ।दूर हूर वुर तह्न तुर वुस इव। १८ हमा कर्म वेद्याम वद्यार वेद। माइन या नह व सहार र्छ व। । तहेव बेर रर माराय हर ग्रीश द्व। । ए मा हर तहेव हेंगा परा वृद्यान वेन । नन ने ग ते वराता हुन न दे रा परा सरक्षेरतरश्चित्रप्रमा । इत्मिने सुन् स्तरम् मन् स्तर्भात्रस्तर्भात्रस्तर्भात्रस्तर्भात्रस्तर्भात्रस्तर्भात्रस् हिंद्रिक्षिव्यक्षदे विवाधका किंकेंद्र स्थित कुर की वाद्य विवाधकारी कॅन्यनेन्यान्यान्यान्यन्। व्यन्तिन्ते चंद्रायेन्यान्तन् नेवानेवान्या । रोयराक्षेत्रे हेर में में त्रा | र्ष्यु खरार व तरे से स्क्रीया | सरार व ग्रॅं र केर तर्रे पर हेर। | दे हा तह्य ग्रह र त्राय र प्राय वा | द धनः त्रिरान ते वे वा न वे वा वा विवास वे न वे न कु ने व व व

ख्यासन् पुंचा क्षेत्र स्वा व्या स्वा विद्यासन् पुंचा क्षेत्र स्वा व्या स्वा विद्यासन् पुंचा क्षेत्र स्वा विद्या स्व विद्या

दिन् वृत्रीय द्रम् प्रवासित्। अत्राप्तर्मन प्रवासिक्षेत्रियाया द्रा स् क्रमा व्याप्तयया व्यापा स्यय। | र्न्न्यमा क्रिंग् में तरेन् पा पत्र । । विश्वेष्व्याचेष्या व्याचित्राच्या विश्वेष्या विश्वेष्या विश्वेष्या विश्वेष्या विश्वेष्या विश्वेष्या विश्वेष्य न्य। । ना कुन्दे सातन्या के किन् । किन् क्रिं के के नया स्वर्य राज्य प'र्टा विस्तारिकार व नमम मानदि हिरा ईस्राच न सहिन पियालिबान्निया | निःश्रीस्रेपयालीबान्यन्त्रं राष्ट्रिया । युवास्या राह्या म् चरे जूर रु जुन । रग के परे द रे भेग हुन के ग यर। । रे यर के न्नित्र्नित्र्न्तिः स्वाप्तान्ति । ख्राप्त्वापतिः नहन्नित्रः कुरापाने । मश्रकुरव्यवाष्ट्रर्भ्वर्र्द्रकेशम्बत्यवा । न्त्रिर्म्यिरेवेश्रिक्ष् पराय केरावा । समाधी-प्रेमिस संद प्रम्मिश्य ग्रिमा । प्रेमिय मञ्जयानस्मिन्नवाद्यस्य। । स्त्रीस्ने सुस्तर्मे ने वार्याये । । यस क्केन्'सु' तुरु वृक्ष'र बेर्। । ब्रैंब्र' स' सु' तुरु पत्र त्र तर प्र वृर्। । र प्रेन वित्यामनेन्छन्नहेन्। वित्यीयान्तिन्द्रम् न्यार्थेया वित् मानसकन् वर्षे तक्षवयाम। ति हिन् क्षिमान्य के संवयमिय। हे रुवा ग्रुवायरया क्रयं गुव क्रिंग्डी | में हे तकर क्रव ५५८ ब्रॅंट खुरा |दिवर्चरामह्रदामदीमन्यार्मिवर्द्रा । आवह्रदा हुन् छुन शेयरापञ्चित्रप्रस्ता ।देत्प्रस्यायेनाश्चित्रप्रस्यायेन। वित् क्चिन्छनः इस्निन्दः स्रुवा । नवान्नः यं नः श्रूपः न्रं वः न जवः क्चेः प्राप्ता । न्यास्यान्ने स्यान्यान्यान्या । नर्निन्यात् रन्यान्यान् । ढ़ॕज़ॱख़॔**ॸॹॱॴ॒ॸॖॴॱख़ॖॻॱॻॾॕॸॱॻ**ड़ॱज़ॱॿ॓ॸऻ<u>ऻ</u>ॸ॓ॹज़ॱॶॖॺॱॸज़ॱॸॺज़ॱख़॔*ॸ*ॱ ষ্ট্রিঝা । নের্মানারীঅকাডব'লঅকাডন্'ঝা । দব'লদ'ন দ্বাকাদ্র'বাইন্' क्षरायञ्जल। ।तुरान् नेरास्तरायते स्वास्तराय। ।वेरापते व्याला क्षेत्र केन विन्। विन न सम्बन्धिया सुर क्षुयाया सहिन । विन 'कुर देशान न तर देशक्षान् नत्। | न्नायमिते छै सन् क्रेंतु प्रायहर्य। । व्यान्नाये छै सन् विनवासायहरू | निःगर्वेदानदेश्चित्रवाहेतानम्गरा । द्वान्ववा न्यन् र्यते मृत्या द्वा र्येन्। । क्रम्ब्रेन् न्या द्वेन् त्या द्वेन्। अर्द्रम्यानुरान्यान्याः इस्या । यने केन र्वेन प्रतिप्रीयाः चीताः ग्रैय। । ५ ग' स्या हे व' यह व' ग् ५ म्याप थे। । यय म् व' ५ दे - क्रॅं मञ्जू म तुःग्रांय। । विन्किप्तायाय हेन द्राहा। । यन द्राप्त स्ति व्यापत्र से विन द्धपापन। । ग्रुण्यतेभ्यवायाग्रुष्विहे। । इतार्व्यसङ्ख्यायते

धित। । गन्यराम्याभेन् छेन् गनिम्यर्सिन् । । न्यार्क्सिक्रमः श्चिमां वार्य भिया । क्रियां के मार्च मार्थ है स्वार्थ है स्वर्थ है स्वर्य है स्वर्थ है स्वर्य ह इसराग्रीस् व स्वरा । क्रिन् क्रिंगरा स्वराग्रीक्षेत्राम् स्वरा पतिः र्र्यापति हेर् भेरा । चुर ह्रा रेया ग्रीपर पा हिमस रार्हेन'वर्गनक्षेंवर्गराधेन। क्षिराहेलान्तुन्रापत्तुत्राराधेन। । क्षेत्र'य'ञ्जाय'गवद्यप्र'षेत्। | ष्रेत्यप'येत्'परः क्षेत्र'याद्रव्येत्। । हिंद्रम्वत्यस्थेवय्यय्यम्यव्यंत्रह्न्। ।द्वत्यस्थळ्यःहिद् ठग'रत्। । तरे वित'यश्चे प'ररतहें व'षेव। । तरे वित'यश्चर' मात्र्वेष्णिव। तिरे हिंद्धार्याद्वारामस्याद्वाधिव। तिरे हिंद् मसर्ति प्राह्म हिन् विद्रा विद्राहित्यस्य स्तर्भन्य व तरे तरे रामहर व नदे राष्ट्रीय । तरे मूरियर ने मान प्राप्त प्राप्त षिव। । तर्रे कंश वेर 'तु कें व 'क्रांत परिवा । तर्रे म वर ने राव हेन' राषित्। १८दे:सेयसञ्चनेसन् कुन्द्रत्वन। १नेभिन्खन्यनेस

मसम्बद्धारु र मुला १८५.८ वर् व्याप्त हु हुन पर देन ।वि विस्वान तुत्राचुरू त्यायाय हन्या । वित् 'ठग' त्याय ठवा क्षेत्र पति वा श्चित्र। । प्रत्याक्षार्दे हे तहे व पा थे। । प्राक्षेया या व व प्रति या शुन यान्ह्य । विवादा हे प्रवादा हुन्। यान्य । विवाद वा प्रवादा विष्य र यान्ड्री |नात्महेंन्यायवात्रवायुराव्। |र्दे:हेंन्युतापरात्रें तरःदेव। |ने'र्ने'वृत्यंक्षे'त्रकासन्'वृद्धयात्रमुन। |ने'र्ने'त्ररःग्रीकाताः मग्निव्स्रुट्य। स्रिक्ष्माञ्चर्मस्य प्रवास्त्रम्। । स्रिक्षित्रं व पर्'केब'ब्रेटः। ।रप'रविवयापयवाग्रीयावीपवीप्यार। ।विट'कुप' र्भवा । वित्या । वित्या क्षा वित्या क्षा वित्य क्षा वित्य क्षेत्र त्या वित्य क्षेत्र व रोग्रान्यते पुन्वेन पुन विद्यान पुन्य हो। न्याया निवास या ञ्ग'र्हेन'र्बर'हे'पर्डन्'A'छग'८८'र्केरपायर:5'ग्रुर। ठे'**ग**शुराप: परावराञ्चरवायकातहतायातापातिवार्वराज्ञातावायावात्वात्वरायात्वरायात्वराया परपर्रा विन्'बेन्'जुक्'च चन्'र्यं न नृष्या। बहेरा नैनः धेन्'नु रेनः पते दस्य पर्या व्हेन्यन्यक्रन्ययन्त्राष्ट्रिय्वर्यक्ष्रि हेर्प्वर्ययक्रन् रास्तावत। चग्रीव वसाय नग्भाय द्वामीय तरे सिरे समा चग्क्यवाद्यं चर्यात्म अर्थः चर्यस्य प्रमान्त्रे वर्षे तर्ववयापा नर्इन्परम्बला न्रिक्षकन्द्रसात्र्र्धेरायाष्ट्रन्याद्वरायादा व्यक्तित्तर्म्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र परिदेशम्ब्रीकेश्वीयाग्वदापरावाविषाव्याव मेंब्रुः ह्यारि स्वराः

खे अप्यास्त्रवाष्ट्रस्याची । प्रतिन्ववयानवाष्ट्रस्था पंचर। । कुन्'र्प'प्यन्'र्येते चैत्रक्रप्रक्र । कुप'र्प'यह्ने श्चिम: दुर्वास्त्र । । गुरुषा: सुरामलुष्वायाय दे श्चिम: श्चेष्य राज्य । । ज्ञान श्चेष र्द्र क्री क्षुताया प्रस्ता | १८दे प्रमाण स्ताप्त प्रमाण स्ताप्त | १५८ प्रमाण स्ताप्त स्ताप्त | १५८ प्रमाण स्ताप्त स्तापत स्ताप्त स्त स्कृतः हन्या की हे वार होता सय। । हु या नर की या देवा है वार या। । देन ত্র্পান্ত্রিন্ স্ত্রীরেম বাদ্দে নে মুদ্দর বিশ্ব त्रवेत। व्रिव्यक्त'शुप्रवेत्वर्वाच्यायर्। । प्रगत्रदेव्येव्यक्रप्र हिन्यस्वा । न्न्यव्यंन्न्यक्षिक्षित्रस्याः । क्ष्यन्न्द्र चेग्'न्यव'यमें'पन्नेर'दिया । समानेव'र्येन्स्युत्र'पन्ग्रप्र बक्रमा । वित्रम् देश्वर्ष्य विषक्ष स्याम् वित्रम् । वित्रम् वास्या वित्रम् ब्रायम् चरारेय। ।हस्याग्रीसान्नेन्यायेश्वयान्यंब्राने। ।तनान्द्राया शुपा विं परातर्व । हेर्ना वृह्य अरायर या श्रुवा श्रुवा । केंद्रा हेर् देशचत्रे'र्नेब्'हॅग्याय। विगयायत्वित्यायः चनः व्यते देवा निवनः वाद्रैवानदीः अव प्रण्य पुरुष | दिवाद्वा अव राष्ट्रण के वाद्री | चन्न'डन'त्रेन'त्रम्यडराय। | क्रेंचेत'न्यम'ळेन'न्यपत्र' म्बा विक्रिकेन्सं देन्यं दिन्य वर्षाता वर्षात्री दिन्यवर्षाय वरः दु ब्रामा । देश, द्व, चत्रा, व्यान्ति, च्या । व्यानग्रम् व, सून, क्षेन् खे. र्शेत्। । नर्भवरापकार्विरानरात्विवराविश्चेत्। । मान्धे वेत्पर न्दर्परत्ता । वेशन्यप्या हेपर्वन्ग्रेया र्'त्रहेर्'र्क्ष

द्यान्त्र क्षेत्रा श्रेष्ठ्य विकास क्षेत्र क्षेत्र श्रेष्ठ्य क्षेत्र क्षेत्

नदे सं दूं न। । सन्गत देव उव के विषय स्ति । निर्मेष छे त मु मित्रायाभेन है। १८३ मित्राधियामु मित्रामु मित्राचेत। १८३ मित्रा न्दस्यन्यक्षित्रक्षित्रक्षित्रस्य । त्र्याः न्त्रस्य देवाः मधिय। विस्पारं वया समितः स्टापारं विद्यापारं वया समितः रन्याचेवा तर्रान्यव्यविष्याः गुरुवा विन्यम्य रन्'लबाबुन्' | विवायन्'यन'बून्'रन्'लाविव। । वे 'यबुन्'न्न'र्ले' ह्रेचे,प्रचंबावी,चेश्वा विस्तान,बाबेष्,रस्तावविस् म्बिर्द्रात्मेवा ।द्रम्बःह्याः व्राहेन्वाः वर्षाः मृद्धाः । वुर्द्रः यद्रः **ざった「みがりた」 「まれ」は、大いな、大いな、まましまり、「からり、「かっち」** 육보니의·네일러 | 음구·떠드·화·리용·노드·머리음드' | 토리·따드·화·리용· रम्याद्वेय। ।चग्कग्रान्मविष्ठग्रायदेव्यकग्रागश्चय। ।हुन् भर्गुव्यविष्टायवाद्वरः। विद्यायर्गुव्यविष्टायाचेदा । रूर देवा;न्र-र-वायवान्दः ज्ञातावाडायाः । ह्य-एपनः रोगवाडेन् न्र-रायवा

हुर्। विवायर्त्रेवराकृत्ररायाचेव। क्रि.वेर्प्रायम्याविर नहें न वेन प्रवा । बुन पन कें व वेन पन प्रवास विकास कें वा वित्रप्रात्मिया । तित्रेरम्भरप्रात्रेरप्रमें व्यवहर्मे वा गृह्यया । धैय। । । सरायगेषाया इयया सेवया ग्रीकें तहुता हे। । नरा सूरा कूरा यरा हें परायस । १८दे रर हुन् दु १६ दे व व दार ही र तहारा । Nरतिष्याचपुर्द्राचार्ययाषयात्त्रीत्। विषयाकुर्द्रम् व्यापाषया रॅन्'न्यायायर्जें दॅन्बेन्'पर'अर्चेन्। वि:ध्या क्रेन्न्न्प्तिह्यानदेः श्यया । इन् नित्र सर्व ने ने नित्र विषया । इन हिन विषया बिन्पर हें गया । तर झें अप हे न् 'गुर हें ग्या । । बि झें अप पा पर हॅंग'रा'है। ।क्रेंअ'र्र' शेक्रेंक्यमहिकासु'येर्। ।महिकारहेंद्'हु'रा' त्युत्रापतिः गृदी विस्तरस्याः र्वायाः स्वायाः स्वायाः विद्याः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स बह्न ने दिन है । विद्यासिय विद्याल के दिन के स वित्'गृत्र्'त्य'त्रवेचर्याय'भेव। ।त्'ह्वॅत्'क्ष'च'त्र्त्रं'त्र्रक्षिः । र्झेंअ'रा'वेत्राबेत्'क्वै'र्रार्',विंग ।श्वेत्'रा'शुग्रा'तबुर्रा'त्रग्रा'वेत्' ब्रुंट्या । तत्रकातुः रेन्द्रप्राच अन् भूट्या । तत्रे व्रिंट्णे क्रवाश्चरा नि'त्र'यह्नि । निर्मेन'न्छन्यम्भु'त्र'त्छ्यय्यम्भिय। विन'ने हेन् व्यवन्ष्यं म्यून्। । तद्भेषात्तुः येन्याचे रागवा ज्ञन्या भेषा । न् क्ष्मिंदिते श्रुव् क्षेत्र भिव। १८दे हिंद् श्रीका व्यवस्था भेव पुराव। । इत शुप्तने केन् नरामां । अँगर् नग्नेन पर्ने रे रहित्र। । ययस

इत्यत्यं रहेन् ज्ञेन्यव्यस्त्। विश्वायुन्यय्या य्याश्चित्र्यं त्रित्र यक्ष्यक्ष्यं पुन्त्यत्वर् प्रत्या स्वाप्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स्त्रं स् त्रे स्त्रं स्

## न्ना'सदि'स्रून'स्था

त्यं गुडि हेन्द्रं श्री त्या स्वाप्त्रं श्री त्या स्वाप्त्यं स्वाप्त्रं श्री त्या स्वाप्त्यं स्वाप्त्रं स्वाप्त्रं स्वाप्त्यं स्वाप्त्रं स्वाप्त्यं स्वाप्त्रं स्वाप्त्रं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्रं स्वाप्त्यं स्वाप्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्त्यं स्वाप्य

बर्द्धन्यः स्वास्त्रः स्वास्त्रः भेष्ठा । स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वा <u>श्र</u>- 'र्दे'येन्'पदे'न्याकुन्'दन्। विन्'प:र्श्वेन्'पदे'ययायात्रायात्रायेत्।। ग्नवरारग्रेश्रेर्भंत्रम्बुयरि । । प्रदेशेयापरित्ययायहि धैद। । तुर्रे येयवासया बुर्ट्य प्रदे। । कुर्या प्रयवाय क्रें रापदे त्यायादन्थेव। । सुनःर्पेग् चन् पुन्यु न्याप्ति । । यन्याप्तिन् त्तुत्रानदेश्वयात्राह्यक्षेत्। । इत्यानदेश्यवश्राः क्षेत्रायादेशे । न्नि-द्ध्याञ्चापापते'भवावाद्याभेव। । भव्यवाद्य-द्वग्नीयाञ्च-द्रम्या व्या । वृत्र कुरा हैरा तात त्वा गुरा त केया । विवा व शुर या व या रग्यां सुरी ग्वसासुर्हे व है। दे सव कर् ग्वसादे साग्र स्ट्रिं स्ट्रा म्पाराया । नेवसहेमद्वाप्तवसनेमद्वां कुवाकी हैन नेवस यदुग्रायाया त्रावयादेग्ने केंद्रागुरायायापार्रा र्यग भैं रितः श्रु'न्तः नर्शे श्रु'यतः र्ये श्रुतः नय। ध्रायः इयश्यातः न्या श्रुतः नः धिवायवा प्राप्तावय। क्रेन्ट्रिन् ग्रांतिष्ठ्रन्यपरि हेन्द्रेत्रकी रतायात्व व्यापायका हे के हे के सर्वत है। विताय सर्वे के वा से विवाय चताचुरापासवाकेषीवावयाञ्चयावाहिषायायय। चरावववाकरावेः त्विष्यंनिःकान्नायरञ्चनः म्बद्याकन्तिष्यं विनः स्वानः निनः स्वानः । स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः ळॅन रा ग्रैयान् ए त तुना पा इयया ग्रैयाया में राप ५८ । 🛮 इप हुना पा ५८ । रिप्तक्रेयप्पप्त्रा सम्पर्णप्त्राप् वळेवाप्रकुर्प्यास्त्रव्यप्रकेष तस्याष्ट्रस्य वाहून केता हिनामर श्रुपास्य ग्रामिन स्वारामा स्वरामा स्वारामा **8**१ कुव् पाष्ट्र स्वाया प्रस्ति । स्वाया स्व

भिन् गुँकान्य छन् 'न्न् अर्थात स्वयाया भिन्न प्रया न्या न्या का स्वर्ध स्वयाया भिन्न प्रया न्या स्वर्ण का स्वर्ण का

विग्राच्यरापत्रेत्रायाम्यायात्यात्यात्याः ।क्रेन् हेते स्तर् ন্দ্ৰান্ত্ৰী বিশ্বৰাঞ্জিল ক্ষুৰ্'ব্ৰান্ত্ৰী हिते ते हैं में ब्रेन वहर् पति। । ब्रे ब्रेन वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष तर्भें प'न्य'यातर' र्राय कुसपदि'सेवर्यं रुत्रं स्वस्। । इस'यहिन् রদের।ক্রুমান্ট্রান্দেরদেশেরবাদেশেরীবান্তীরাস্ক্রিবর। । ট্রিন্দের্মিন্দ্রের ग्रॅंन्'क्वेन्'बे'ब'भैन्। |भिन्वामत्त्राकुप्यामात्त्र्र्त्रेतिः स्वा नराभिन्'राप हन्यापदि'भीन् न्या समया । समानी'न्ये कुन्'पदि'हरा श्चेन'मुना । तुनान'भ्रंभेन्न गना समा भ्रेता । केंतरेन परागावन त्यन्त्रं त्रवित्रम् । श्रिः सन् अत्यत्रम् न्यत्यश्रुश्चे। । ने श्रुः तन्न स রুম্*রমাষ্ট্র*'ননি'ষ্ক্রা । দ'দ্রামার্দ্রমান্তর'মানন'র বা । দ'দ্র चन्द्रच कुर्म् अवेद्रा । निविद्र्यम कुर्यक्र व्यापन निवा मक्द्रमञ्ज्ञानेत्रान्त्रान्तात्रान्त्रुत्। । तथान्त्रंत्रान्त्रुत्रान्त्रेत्रान्त्रीत् पर्मेमंत्रप्रतिस्यह्नम् । तहस्रह्मस्यम्यक्रिम्न्यस्यम्यस्यः। ।

रताञ्चर प्राचन वित्र के स्वाप्त वित्र प्राचन वित्र प्राच मॅ्रा । महारातस्यात्राच्यात्राच्यात्रम् । त्युरावे**रा** र्ह्रश्रमुति:जुत्राःशःवेद। ।श्लेषाःमः व्वतानदिः इतादर्वे रःत। ग्रॅं ५ 'पर्र'तेबर्श ग्रैस'पर'ग्रें ५ 'प्र| । अस्र स्याप' संस्थित गुरूपर न्। । तेवराञ्चरपर विरावे के प्रति । । वे राधि वेदा कु**र** गुन्पविषा । १२५ क्विं प्राचा संदर्भ स्ति । १५ अ.स [म्यरापर्डं पञ्च ५ 'यव' कर्'ग्री | दिव्वें प्र'रेष्य हुष्' न्त्र रायर वा गुर्। | तहेन्यार्थें कुअपापं पर्ने से सूद्र | निप्तरे रात के न्यान दें रा <u>ଛ୍</u>ଡିବ'ଶି'**ର'ଦିବ| |ତ୍ରି**ମ'ୟମ୍ପ'ଞ୍ଚୁମ୍ୟାଞ୍ଚ'ୟଖୁୟ'ମ୍ୟମ'ମନ୍ତ୍ରିମ୍ୟ| |ରି'ମ' लग्नें र्पायात्र विवादत्। । ब्रिन्दि वयान्व र्नु र्वे युर्व । **ৼॅ्व'**ळ्द'ठुरु'रा'र्दॅव'बेद'षेव। |श्चर'प्पर'छेद'र्रूर'र्द्र'र्द्ध। । ने अविग्ने दे अविग्न दे चे के व्यवस्था । विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व वित्'ग्रीप्टर्'तु'अव्यामर'यवग्'यथ। त्रे'ळॅग्राह्मयश्राह्मर'द्र्पर युराने। सुग्'र्रामेरायायरार्'तुस्य। व्यक्षभ्रीयराह्यरा। हिन्यह्रद्यार्वेयापदिःइत्यादर्हेरायरागन्ता देन् क्षेत्रार्देश्वेत्र। ইূব্'৳ঢ়্'ঝর্ট্'৸৶ঝঝ'ম'৸ইঢ়্'৸ম'য়ৢয়৾৸। ঢ়'ৡৢ৾ঀ'৳ঢ়ৢ৾৾৳৸য়ৢঢ়'ঀৢ৾ नग्रन्त्रज्ञान्यसः कॅबार्द्रोत्यन्रेग्वन्यन्तु भेन्द्रन्त्रः ग्रीसार्देश भैगामानेषामान्ने। प्रतीपास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा हा । वैयान्यस्याया वित्रस्य वया हैया भेरा अन्य न য়ॅग्'ब्रेन्'सुतान्नानगृतै'त्यन्याच्यीन्'यमः विषाद्धन्या हे। रन्रन

र्र्स्यतः गृब्द्रश्चाः सन्दर्भन् इवरा दे सन् धारा की मरीते हु। वा न्ना न्यतात्रत्रःक्वेष्विष्यन्याःभिन्द्र्।। द्वेष्यद्वन्ग्वेर्राण्यन्देर्दिन्यता तनरकी नवितन्तित्र हुर हैर रे रें न्यतातनर ता केर रुप कें अ रु त्र्यें क्षे न्वें व्यापत्त्वा न्वें न्व है। वद्यने वर्षन्य व्याप्त व्यापत्व वय रायवा व्यवस्यक्त्रिक्षाय्यस्य व्यवस्य मुर्दर्भे प्रवेशवा नुरः कुरा हेर ने परे न व सार । । नुर कुरा श्रुप पर दे शिला | इन्'द्वा'रेबर'य' न्यन' हुन्'वेन्' । इन्'द्वा'रेबर्'हु इतार्य्यं मञ्जूरः। । विराख्याके वार्षे वार्षे वार्षे । वारा युरावर्षे पायरी र्यायुवा । इर ख्या वर्षणाया श्रुर यर विषा । देवा गुरा विरा ह्य वर्षात्र अत्याप हें वृष्य र कुरा है। १ देश वर्षा वर्षा पर वर्षा पर वर्षा पर वर्षा पर वर्षा पर वर्षा पर वर्षा **ग**रेग'नेब'नेन'पुर-गरेग'न्न'। श्चे'प्रत्मश्चेन्'र्रग्रस्त्र'न्य। यवतः श्रुयः में नदः गद्दः यवायशे सः दुः हेदः । इति वदः दवान्या या सदीः म्नरः विरः। देवे दरः दका ग्रुरः च्रवः विषः तरे दवः हरः मुरः यः विषः त्वा हें पर्वन गुना ऍन पर्ग हिंद रर ने बेर के मन スタガルスコスト वश्रम्याया क्षेप्रयम्भियायायाच्यायाया हेपर्वन्ध्रीयाचेनः विव्यति। विन्श्रीक्षेन्न्यस्यान्यस्यव्ययः इत्रयान्यक्षित्रे न्व्ययः विगायेव'वतर'। क्षेप्तरायायार्स्य वसके सुराया वी प्रांचार तर्ने सून भिन् महारुषा व्या द्वार पर तर त्याय गुर तर्ने महारुषा स्था। र ने ग्राह्म तहायान ते जून हो न । इस ने सार हायान ते

ष्ट्रितुःकुर् तिष्ठवर्ग। । यवाग्रीःतिष्ठ्रास्त्रूरः द्वास्त्रं वया श्रुरः। । देवातवातः **ढ़ॅग**रापते'तष्ठिताञ्चर'द्युर'। |रॅग्ड्रॅबरायु:बरायु:बरायु:बरा **है**'न् गृतः सुरा हे'त कतः गुरु। | ने बात गृतः ग्रूनः हेन् ' सबाह्यः संब। | रेश्यत्वत्वत्वत्व्यः स्वायत्व्यं व्यक्षेत्। । देश्यत्वतः श्रेसप्ते यस्ति ह्या इत् वुत्। । न्यार धै प्रतियाक्ष क्षा हित्य। । रेकार न्य र्रा चुर रे खुरा हेव। | रेश दे हेर हेरे खुर र सुर या | रेश तन्त्रम्तरत्र्तिः न्यास्यातस्त्रा । नेयातन्तरत्वन्यानिः सूनः प'सुन्। । तथ'र्मेशकुन्'रे'र्मेशकुर्मेदा । तेथ'तगत'गतुरा'वॅरि' यने'र्द्रन'स्र | दिकाके'व्यका क्वा'क्या'यश्चन'यक्केन्। दिकारणता <u> जॅ</u>नराग्रेप्तह्नता | देनापाये नेराज्ञनराह्नत। । <u> न्गर में न् ने पड्वे प्रवास श्रुन्। । यर न्ग स्वारे हवका से न्युवा।</u> **र**र रेग रेग रो अरा की अप र र पठ र । । र इता तर्के र शे धे से र मे धे द । । क्षापाप मन्याये विष्यापाप मन्याये । अस्यापाप मन्याये असे स्रेर करा । *वृत्रवातेन्।व्याकुद्धित्वाशुपुवा* |ऍन्,ध्ने,प्रवात्वानु,पर्धेन,पुन्ने|| ८ इत्रात्र्ये र शे थे मुन्येष्य | विर हित्रा से स्रा म शुम्र ह्यम् स्ट्रिंद्रयाद प्रयास्य स्ट्रा । प्रविदः मृत्य स्ट्रास्य स्ट्रास्य स्ट्रास्य स्ट्रास्य स्ट्रास्य स्ट्रास्य मः इत्यात्र व्याची मेन् मेन् । प्रश्चेन ने स्वाचाराय विष्ट्र प्राचीन म्या इंगयर्रस्य हर्न्य हेराक्रें कर्या । इन्तरहर्गे क्या **ब्रेन्'अप्तर'य'ब्रेन्'। ।यन'न्य'न्न'युं'ञ्च्या'य'व्रया ।**तञ्जातुः

र्दन्न के बार शुन्दि। [न इसार हें र के थि न वाय है। [न दे - श्रेतारहाराधीव। | माने द्वारापापी माने वि तत्व'अ'ग्र'कुर'अविव। ।र'दे'रेशकेर्'द्रत्य'तर्ह्रेर्राय। ।र'दे' ग्राधुराग्रुर्वेर्वात्वा ।रादेश्वरावेर्ध्यासुया ।रादेश्वरा बेन्'ग्डेर'तु'या ।न'दे'द्रॅर'बेन्'ब्रॅन'व्रॅ'या ।न'दे'धे'ळेल मराबादी-स्वा । मानिस्ती स्वाप्तिस्य र्श्वेन'य'ञ्चन'क्रम'याम्बा ।न'वेश्वेन'य'ने'श्वेन'याम्बा ।न'वे'उन' बेर'र्नेशबेर'यावा ।र्नेशपरिषंग्रुर'पञ्चर'र्नेशव। क्षेष्ठिन्'ल'कृब्'सम्बान्गलक्षेष्रवाद्यम्। सिव्'नन्ग'रिंनकुल'सिग् लापवुर्। |इतार्वेरान्युरार्व्यायाचेर्। ।हन्याप्यया पाचनन्त्रिन्न् भेराधिया । श्चिन् महिन्द्र पास्न मार्था । ळें तरे र ळें रेर दर् बेर केर हिरा | नियात हैं र परे कीर वेर हार व्या । श्रुष्यान्यापिते विद्याविष्या । यहत्य विश्वासार्श्वेन यर वृष । ने वर्षा वव देव मुन्य पर विषा विकाप श्रुप्ता परा विं नेन पुन्त पर शुर है। हित् शुर में वाकी या में बार मान रापा ने'गलक्ष्मान्यामान्याके। नेन्'क्षेत्रम् सक्षेत्रम् व्यक्षित्रम् प्रविष्या स्थापन्या विषयम् अत्याप्त विषयम् । प्रविष्या प्रविष्या प्रविष्या प्रविष्या प्रविष्या प्रविष्या प्रविष्य विश्वविश्वव । ग्रन्डियार्स्ट्रियविष्यरेट्यीतस्त्रिक्त्रत्युवार्यस्वर्रात्यरः <u> ग्रैस'सुत्र'र्वे । नि'न्दस'हे'नईन'यम्भ</u>वादान्स'नेन्'मुन्ववादान्स नम् हिन्दां अवेदां प्रतिवादि देन्द्र तारम् अवि का अवि वाद्या द्रा

मुन्दान्यस्य स्वरंदि प्रस्ति स्वरंद्वा स्वरंद

न्न-इन-इन-भेन्द्र-विकारमा । स्वान-भ्राप्त वार्ष न्ग्रस्यम् । वन्द्रस्यं वित्रान्ग्नित्य्वायम्। । क्रुनः रेन्द्र न्गरः संयानवानकन्। । यतुवावानम् वायान्यानम् वायान्यान्याः इन् न निन्दे ते तु न केन् के त्यायन् व | दे व्हन केन् विन तिन ति हाता म्राह्म स्वापित्र देन स्वता । हिन् सुद्देन मास्त्र स्वा बह्र्यापत्रे सुर्खेष वा स्मृत् रह्न व पहुर। दि प्व व व प्रते र स्व प्रते प्रते प्रते प्रते प्रते प्रते प्रते प राया । मरात्वराध्यापयापरम्गरावेता । यहाविरापया न्दिः ह्व विनः हेन। विश्वेतायन स्वायुः हें ग्वा हेन। विश्व ह्या यम्बाधित विभागान । मान्य विति । स्वाधित । तहेग् हेद्रेत्रित्रप्ति वितारीह्रवा । वत् वितायवित्राम् विवा ने'लाक्ष्मतरि'द्रलातर्द्वे राम्। । गुन्न'ग्रनाम्भेन'हेन'न्न। बूर्पाकी हुन्य रेश देव। । तर्रे प्रें व्ये ने प्रें प्रें क्रें ने प्रें केंद्रदेशियाञ्च वर्षः | व्यक्ति वर्षायाञ्चर से स्रवा । वस 

## 정도'여러'주리'리다다'본드'라'됐다

न्यं गुरुवा है: पर्वं प्राप्त प्राप्त

त्रुवाहेलाग्रॅलापातनेपवा ।ग्रवातनेतिः व हवः नेवाव नेवा ।ग्रवातनेतिः प्रव हवः वनेवाव। ।प्रव ग्रवान्ताः भुपः सव् व्याय वित् हेंन्। वियाय वित् हेंन् नी वि व हुं हुव शुग में तहे नय। विष व व व व च च हुव व व च व व व व व्यान्यान्यान्यान्यान्याः । व्यान्यान्याः । हरवान व्यापादवार राष्ट्रीता | स्वायाया हा क्या केंद्रा हिरा | बह्रितालाञ्चराहराहराहेशनुतित्वा । व्युत्रानुताहराहराहराहेशन न'कुर'अ'तुराहे'र्घे'यहुर'। वि'दर'वे दुरायर'हता वेरं। विं ग्'अ'तु'तश्चर'ब्रन्'। क्षि'द्यं र्वेन्'व्यं श्वारं द्वन्यत्येव। हिं हरा प्रीतायका कुन्या प्रह्मि । जिला ग्री स्नि 'दे गवा नववा ग्री ज्ञाना नवसारनिर्देश्येन हन प्रवासकी हिया । विस्तान न त्र शु दु हा न स्प भेव। |गन्यसम्ग्रामर्रम् नम्भेव। । तर्रम् संगर्भव। पर् मॅं कें इयम | विन् हीन तर्ने न कायान न विन यहें न | प्रमाने ग रार्झेरलाम नोपञ्चपया । वेबाग्युरयपया विरयस्ययारी बर बर्ध्रवायाया विवास नुवायाने वर्ते। हे मईवरमवाया नेन् इवरायावयावहतापरी: न्यायाईवावयाईवाक्षेत्राशुः क्षेत्र्राशुन्दि नामा वृद्यकारोत्राम् द्वाप्तारहोत्रः यदे पा विवाना वरः यत्र विवाना वरः यत्र विवाना वरः यत्र विवाना वरः यत्र विवाना वगुरः दर्भे गुजुरकार्वे ।

য়्यतः द्वेत् ज्ञप्यते यस्य प्रत्या । व्रितः द्वेतः हेपायपः द्वेतः व्यविष्याः । व्यविष्यः व्यविष्यः । व्यविष्यः व्यविष्यः । व्यविष्यः । व्यविष्यः व्यविष्यः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विष्यः । विषयः । विषयः

म् श्रुवा | तिर्ने म् श्रुवा क्षेत्राचि त्य क्ष्य क्ष्य विष्य क्ष्य क्ष्य विष्य क्ष्य क्ष्य विष्य क्ष्य क्ष्य विषय क्ष्य क्ष्य क्ष्य विषय क्ष्य क्ष्य क्ष्य विषय क्ष्य क्ष्य क्ष्य विषय क्ष्य क्ष्य क्ष्य विषय क्ष्य क्ष्य

য়्यान्यायते वित्यायात् तृत्। वित्याये ये ते त्ये त्या त्ये वित्याय त्ये वित्य वित्य त्ये वित्य त्य त्ये वित्य त्य त्ये वित्य त्ये वित्य त्ये वित्य त्ये वित्य त्ये वित्य त्य त्य

अत्यद्भित्रश्चित्व्याची । निःश्चर्ययाची । त्रिक्ष्याची । त्रिक्ष्याची । निःश्चर्याची । निःश्वर्याची । निःश्वर्याची । निःश्वर्याची । निःश्वर्याची । निःश्वर्याची । निःश्वर्याची । निःश्वर्

(日度の) (日本の) (日本

## लमाञ्च नद्यान्ति मून

द्यं गुर्व द्यं प्रत्यं विष्यं न्यं प्रत्यं विष्यं प्रत्यं विषयं विषयं

सतियान्तु। ग्वास्यान्द्रिन्यान्त्यत्वित्वार्त्वयात्त्रित्यात्त्र्यत्वित्वार्त्वयात्त्र्यत्ति

न्न'अ'न्अ'पने'व्यक्ष'यरुन्। ।न'मर्कन्'व्यक्ष'मरुव्यक्ष पराहे न् न्यहर्म विषयि पर्व विषयि वि स्या निर ने परे परि स्वा | इर ने के क्या प्रमा परि स्व विनः न र स्वरास होन् परि न रोग । अ अ हे तु स हे न रोग है परि या । हैन'यहन'येन'पर'तहत्रेशंत्रषुग । न्युर'न्युन'येन'पर' श्रून' कर त्ममा । ह्रॅंब न्धेन बेन मर्व न्युव त्रिष् । ने द्वार के नरेव गवस व। विषात्र्ये रविषान्यापाना विषया द्वार वेतः द्वार देति। म्बलायने। ।तकर झेंबर व नेव हिंग्नी ।वह न्वव केव नेप्तरायने। । । सर्द्र वित्रायि ही प्वह्रण्यायने। । सूर्वेष्य त्रव्यादानेदान्त्रपदी दिन्दान्यक्रमळेदानेपनानदी विदा इंद्रल हुं १ के दे ने प्रतापनी | महम हम के द मेद पु परे | वि कंबेन्द्रान्त्रायन्। क्षिण्यक्षायन्यम्भरयव्यत्। । वृत्रव्या ह्मयातात्वात्वात्वार्यस्त्रीत्रः वित्रः तुर्गान् । वार्क्रः कुमानी मरक्ष्रप्राने प्रका यदे। । त्याञ्चर ज्ञाया द्यापे र्यो र यहें र पदे। । क्षेत्र पुर पदे मन् 'न् बुत्य मैन्' सुपन्। अव्येष्ण सञ्चर व्यन् प्रमान स्वयानरम्ब्राक्के स्वयापान्द्रित्यास्यापन्। । नन्द्रग्वाक्षेत्रान्तम् मैन्दुपरी विक्रम्भरन्देन्यस्यरी विवस्यन्देवे

श्चित्रं देश्वर्त्ते स्वात् श्चेत्रं क्षेत्रं त्रा वित्त्रं त्रा स्वात् त्रा स्वात् त्रा स्वात् त्रा स्वात् त्र त्रा स्वात् त्र त्र स्वात् स्वात्य स्वात् स्वात् स्वात् स्वात् स्वात् स्वात् स्वात् स्वात् स्वात्

न्न'वायम्यान्त्रमार्क्र्यान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान हिन्दाहेत्रक्षम् स्वातम् निर्माता । त्रवतानेत् निर्माने क्रिना ने क्रिन्ते यत्वा । विद्रारदेरायत्वा विश्वस्तावाद्वा । न्यार्क्षाचेन्'खण्यायन्'न्'पन्'। । वयाययायक्ष्यायात्र्रायायायान्।। विग । केशवाद ने मे्ग सुर् कें गरा हुन्। । हुन् वाद वाद में र सुर पर त्युर। अवित्वित्रार्हेग्छेन् नुवाद्य। । रवाह्यार्विन स्वाया क्षेत्रेष । क्षेत्रान्द्र्यन् त्रुंपान्देश्वरः। । सुन्द्राप्त्रायः पते'र्देव'शे'तश्चन। । द्याळेग'र्स्य'पश्चन'तुर्गाह्य। । शे'वग'र्ज्ञन रु:अनुत्रक्षे वित्रव्येषाः अति। द्वारा ही । हिलान्य संस् पातकर। विवापतिःश्चरान्त्रेरानुत्रान्त्रान् । वाक्षरान्तान अक्टे'वेग क्रियान'तुग'क्षेते'शे'रं'क्र्र'। । शरदा'न'न्ने'र्ह्चेर' मसस ं विन । अर् व्यार्थि रिने क्वें र न्ये क्वर वा । म्येर वा वा क्वर वा अत्य राप्तकर्। विगराप्तराकृत्पकुर्पकुर्पकुर् 

मून्यात्र स्वार्ष स्वार्य स्वार्ष स्वार्ष स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार

हैं निग्तर है नं रुव त्या ग्रांतर निवा | विष्ट त्या क्षेत्र क

व्यापाने न के ने कार में मुंदार के निष् । के का मुंदार मि में के का के निष् रेया व की के कुँदा जादा प्रदा । विकास हर तु गुर्का ता र दा वा विकास विका वृबकाह्र वृक्षव्रवा कुष्रु कुष्रु कुष्रु व्या विष्ट्र प्राप्त प्रमानिक विष्या करे विष । मह्न द्यान्त वातर तर्जे त्रिष् । विन्त्र वेन रि. क्षेत्र विन रन वर्ग ह्रेत्। व्रियन्दाय वर्ग तुर्ग त्रा । । नन्दार द्रा क्री ब्रुंबिल्लब्लाह्म्याः हुन् । यह बादान् श्रुंबिल्क्किल्लाह्म्याः स्थान् । यह बादान् स्थान् श्रुंबिल्किल्लाह्म्य क्रून होन् प्रवेद प्रतास्त्र । । बकेन् र्श्रेष्य प्रत्र प्रतास्त्र स्त्र तुषाञ्च। । मूत्रायम् "८८" । तर्भ । ब्र नेबर्य अर्थेन । यसुक्रों सेन् र दिवर र र अर्थे सेव। । मूर्यास्य क्रियास्य होत्र त्यास्य । क्रियास्य विद्यास्य स्थास्य स्थास्य स्थास्य स्थास्य स्थास्य स्थास्य स्थास्य 百人 | 「日本のなって、年日に日日日日日日日 | 一十八十八十八 तर्दर्भाक्षेत्रेष |केबान्कंबाग्राह्यप्राध्यादेर्भ्यराह्या |हन इत्याह्म स्थाप्त स्थाप स्थ रन्देव छेन्दे ग्रस्य प्रमान्य स्था | रन्प वद नें वर्तु न्रिन् हेरा हिन्यकेर मेर् छैलार् हरना विसम्बद्धर सम्ब मिन्द्रवर्ष क्रियक्चराय क्रिन्द्रवर्ष्टा के वर्षे क्रिया महत् में विश्वान के गराञ्चराष्ट्री हेरवर्षकार्थे हेर्पाने प्राचित्र प्राची बहता सुला वसक्ष्म् अर्द्धन्यविषावन् क्षेत्रं स्ट्रीयानवे व्यवस्थवा वेषानु नुवाना पर्या है'पर्डन्श्चेष्वत्वत्। गुर्वन्द्विन्दन्द्ववस्त्रश्चेश्चराञ्चन्य ग्रीय। भुः र्स्याग्रीय वर्ष्य रिष्ट्र भिन्य ग्रीहरूय। भुः र्स्य ग्रीहरूय विष्ट्र मिन्य ग्रीहरूय विष्ट्र मिन्य ग्रीहरूय ग्रीहरूय

ग्रैशक्रॅनरा । सुन्दर्भाग्वेरग्रुअग्न्न । क्रॅंअय्दर्भाग न्वेरन्युअन्त्र। ।क्वॅर्परिनेत्रन्वेरन्युअन्त्र। । तहस तुः तर्ने ताम् वोरम् मुख्यम् न्या । भूष्यतः म्वेरम् मुख्यम् प्रम् । इन् श्रेन् रेवस्य सुरातिस्य निम्ता । रोवस्य हेन् म्वस्य निम्म ग्ता |ने'ल'र्र्स्राच हुत्'बेर'यर'ग्ता ।क्वेंब्राच ते'ग्रेर नुबुद्यानम् पर्वे । इस्र हेन् ह्रिं सुर ब्रेसिन र न्त्। । रेन् न्यायन्ति प्रतित्ति । अप्रक्रम्य नुस्य न्यायः प्रत्नापरः ग्नत्। व्रिंत्पर्वेषावेरःग्रुअप्यन्त्रंत्। विग्रुक्तुंत् पर्दे:श्वादायातकर। किवापकु:ररःप्रतेदावद्यातुः द्वा । विहेदा र्सेश्वाचाराः भूतः पर्वेशासुर्वे । । तत्र सामुतिः वृत्ते रः वृत्त्र सामितः स्व व। । शुर्-तर्याणवन वर्षञ्चर सुवेर। । तर्विर राजवन र्वु श्रूर तुःबेन्। । ननःशेयरायन्यानुशानुश्चित्। । ग्रेन्ग नुन्यान्यानु व्यागनेरागरेगारनेयय। ।गनेरादेश्र्र्सानेन्भूनायरेगनेर। । त्रेन्यश्वाप्यम् अपन्यः विषयः त्युर। । इन्दंरिया हैं ग्यान मेराया पिन। । श्री र हं या वर्षः इयराग्रेश्वेदरत्। ।इसार्वेरक्षासरद्यन्त्रान्त्रा ।वेर् तुर्श्वन इयराकु द्वापान के सम्बद्धन | देशपा श्वन्य प्रमा

स्यस्यस्य स्थितः स्याप्ति स्थितः स्याप्ति स्थितः स्याप्ति स्थितः स्याप्ति स्थितः स्याप्ति स्थितः स्यापः स्थितः स्यापः स्थितः स्

म्रांभान्मः न्वराम्मा स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वापता स् मञ्ज्र द'र द'या बुबा विश्वास्य दिन है के महि महि महि महि । इयश् ज्ञुव्य की त्रायायायविष्य । तर् त्रे दे ये दे प्रति दे दे प्रति । । न्यस्यान न न क्रिंन निर्देशस्य मान प्रिन । शुन में न क्रिंस हे न र्ड्न ने। । ह्युद्राचारीतानदित्वस्राम्बाद्राच्या । क्रुंप्रतासे न्यादे प्रति प्रतासि । मनेप्त्रां स्ट्रिन्य देपायायायायायाया | निमन्यां स्ट्रा स्ट्रे हिंग्या दे। । हुण् च्र्रंक्षान्यदेश्ययायायद्येद। । नग्रदः नजुरः ह्रायदेः ल्यान्वरान्। भ्रान्तुयार्म्यरायेत्रयावरायेत्। भ्रान्या ध्यान्मॅद्वक्ष्म्'ग्रुअयं संतरी विराधित कर्षिता । Nअविष्कुण्योत्राञ्च । इतात्र्यं स्पन्छे र पने केव् सराता AĂ」 विश्वाचेन्'के हेंग्'रन्'लार्चेन् । नन्देन्शन्न्'र्म्लाकी नन्ध्या क्किन। ।देशकेशद्वाकेशकीयम् अंग्रीयम् । क्रिया विस्रासी विद्विद्विद्विद्वि । इतात्र्विद्विद्विद्विद्विष्विद्विष् करप्रार्धेन्द्रप्रव्या । श्रेन्द्रिके हेन्या संदर्ग क्या । **गुन् रोयरा**ग्रीतश्चरातुःन्याप्यसञ्जेत्। । गुन्-द्धनःग्रीतश्चेर्पया स्यरा ত্ব'ভ্রিন। তিঝ'বাগ্রনেঝমন। মিন'ব্রঝন্ট্রাঐন'ঝ'র'অ'বান'ন্ত্'

म्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वा

न्न'सरे' देव'भव' श्रुप'पदादह्य। । श्रुप'श्चेव'रेट' ग्रेंस'पर देव **গ্রীমার্ক্রিমা ।ট্রিবাদেবী মান্ত্র্বাদ্ধ্র ক্রিমান্ত্র্মার্ক্রিমার । রিনা** र्देव'वव'र्य' शुं'रु'येव। । अ'येरबाइ'यरे'र्यर'र्यं महेंद्। न्त्राङ्ग्रिन्राचेन्द्रम्म्राज्यान्। विन्नान्यान् म्राङ्गित्यासु दश्चैन प्राची विवय श्रीकार है गया प्राची वा की लात् ग्रीनाना मान्यान् । व्यान्य स्क्री व्यान्य स्वीता । र्में ५ पर्ने पार्श्व द्वाया प्रति ५ दी ६ वर्ष ५ प्रति । विकास प्रति । विकास प्रति । विकास प्रति । विकास प्रति कुर्ते मुः अक्षा ति युरा क्षेत्र का का या पार हिता वि वि ति वि ग्रिमाङ्ग्रायायायायायाचे । सिमार क्यार हिनापान्य संस्थित। । इविन्द्रिन्ने विषयानाय। विश्वेत्रायन्द्रस्य ह्विन्निन् त्र गुता गुरा में न रापा या भेर है। । हे न स्थान पान माने स्थित। । विन्प्रवित्यं वृष्यक्षे विन्युवन्त्व। । इन्द्रवा विन्युवन्ति विव्यवन्ति विन्युवन्ति ।

म्विराधित्। |श्रीर्मायाधीत्रम्याम्येन्। |श्रीयान्यामसिह्न बुर्-सूना सून्यस्य व्याप्यायायायायात्रा सून्यस्य र् मर्त्रीतः प्राप्ता हेला भेवा । इंगान् हैन वाह्म मान्यान है सार्या है स्वाप्ता है सार्या है से स्वाप्ता है से स्वाप्त है से स्वाप्ता है से स्वाप्ता है से स्वाप्ता है से स्व बेत्राया बेत्रप्र दे प्रवास स्वासी । देन दे र के स दे प्रवास वा धेन है। । ग्वर्-रर्श्वर्धेन्प-र्गत्यतः द्ध्याधेन्। । वर्-सः द्वनः भेगः बेदै'वृबबाबेद'वा विषयान्न'र्वावाचात्रहुण'रा'ने। व्हिंबाञ्चेदा रुन्धेन'रा'सांभगवा है। । हग्या झुर्र-तु 'र्वेन'रा दे। । न्द्रभ्राष्ट्रभ्राष्ट्रभ्रात्र्र्यात्र्यात्याः । वार्षे प्रवाद्यात्युरःवादःच न। । ऋष्विर्यस्तिष्ठिष्याः स्वर्षेत्रः स्वरं स्व नरे हे व'त्र होता भेव। । त्रा हु त्र हा रा हो व'रा शेव रा ता क्षॅं अके द' इवाया | तिहे ग' हे द' त्य हो द' प' खे द' प' दे | ग ह अ हे द' सॅन्द्र्रायायमेवाहे। विस्तालेवायायेवायतेव्हरःहन्यायेव।। <del>४</del>वात्रप्रवार्षेवापदेश्वयद्भेत्रप्रदेशे । १२५८ त्रवातार्थेके प्राप्ते । विषान्द्रविष्ठायामेन है। **डिग्यु**डेवा सुरावर्झवापान्द्रा तर्द्र न्यित। । रशपति'शु'न् ग्रुम्स्यम्'र्यादरी विम्सादर्भन्'शुप्तम्यायवि है। । १८५ कव तुर्श्वेष स्वयायाया । मन्यय दिश्वेर व न्या सप सं भिना । नेमान्युन्यान्यः। विनःदयमान्त्रे। देन्न्रेन्तिन्ति

दर्यत्विष्यंद्रम्यय्यंष्ठ्रप्यः । हियद्व्यंश्चित्रं व्याप्तर्भः । हियद्व्यंश्चित्रं व्याप्तर्भः । हियद्व्यंश्चित्रं व्याप्तर्भः । हियद्व्यंश्चित्रं व्याप्तर्भः । प्रयाप्त्रं व्याप्तर्भः । व्यापत्र्भः । व्यापत्र्यः । व्यापत्र्भः । व्यापत्र्यः । व्यापत्र्यः । व्यापत्रः । व्यापत्र्यः । व्यापत्रः ।

मध्येन्यतेव्यं राष्ठ्री व्यवस्यात्तुन्। विवहवानेवारह्या परः वैद्येशक्षेत्राक्ष । रदः खुकाञ्चः सुदै विषरः श्रेषा । देशक्षेत्रा तर्देनकामरः वर्षन्तुः न्वांता । नकातिकेनकाश्चिमं न्वांव्यावानः विवा'यक्षेत्रवा । वाष्ट्रयक्षेत्रक्ष्में प्रदेशवाया । प्रविवा'वीका मॅं अ'ने' गृतु अ'र्वे ''ख' भून' में या | | न : ग्रन् भी कार्र ग्राया राज्य के ना म्बर्मित्राया विकास विकास स्विता स्वर्थ । विस्त्री सहित् विन् तमन्यार्वे रामतुत्र। । १५५ मुल्या मुल्यार्भ न्याया रामा । १५४ नव। १८ क्षेत्र के कार्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्व व्याम्तुर्म्पाम्बर्भ । मृत्रुर्म्पाम्बर्भयम्तुर् हैरी करा। । १८ ब्रॅं अधीयार्ने वायारान्त्या वेत्। । त्यां ब्रें 'वेयार्ने वाया व्यार्चे वाया वेवा. चर्या | म्याया वित्र वित्र दे दे हिंद कुर के में में मारा | दि के कि कार्र मारा पर वाबेर्। । प्रार्वे र ग्रीकार्रे ग वाब का वाब विवाय है। हुत्त्रहुण्यत्यपदेशया । न्द्रिंग्ग्रीयर्ग्वयान्त्रयोत्। । **इ**रत्र्न्प्णुक्राप्तिः इत्यत् र्धेरामा । मन्द्राम्पार्तुः स्वर्पा

क्र<u>ी</u>न'चर-वर्**न** |पॅव्याऑक्ष्म'सुन्'बेन्'नेह्नन्'| । हुन्'बेंदि'न् र'ब्रान्' ह्या नी डेन पर हैं। हैन निकार नार के निकार नार के निकार ने के का निकार नार के निकार ने के का निकार ने किया है। मञ्जून | ब्रेयुति से क्वां ले 'ताप्य वन्या | ने वाप्य प्राप्य के प्राप्य क्वां ब्रे'रु'यद्दव ।ब्रे'ध्वग'वी'गु क्च'र्व्यर'ब्रेस' ५५५। । देख'र्यर बेर्' <u>नुःरोयस्पन्द्रेन्पर्मेयःनुःपङ्ग् ।तुःश्चिगःगेन्पःग्रुन्धिनःस्रुं। ।</u> नैशन्यन्वेन्नु बळे अपर्हरनु यहुन । हें निरीत्यु र स्निन्द पर बुद्। |नेबान्यन् वेन्दु इपा बुद्र प्र वि । व्य र्मा भी ब्रा अन् श्रुकेंग्राया । इतार्धेरत्र्ग्यां ग्रायायाया क्चैर्। |इत्यत्वें रक्चेर्'पर्वे क्ययार् इत्यत्वेया |त्वें प्रवे हुन्'नह्रस'सेस'नर'र्नेन् । डेस'न्ड्रिन्स'म्। ने'तृस'ग्रै'सु'र्ज्ञन इयबायार् क्रुं 'न्बाक्र' रेबात हुर 'र्वा रें क्रुंबाक्बारे प्रवादी तरारा दे """ **र्यापर्यत्यं वर्षापङ्गेयश्वराप्ते श्रुरः यहराष्ट्रेर्प्यातं व्युप्तः प्रेत्रः** र्हे। ।**ने'न्याहे'**पर्त्तन्यायर'थे'न्याग्रीय'न'यर'र्नेन'यार्वेर्यायारेहेन् **र्भेड्यार्भेडापित्रेड्यापित्राम्यार्भेडापित्रेड्ड्याम्यार्भेडापित्रेड्ड्याम्यार्भेडापित्रेड्ड्याम्यार्भेडापित्रेड्या** न्त्रं वेद्यां कव्रायां सव्यापारात कुरारे चुनाति खुना प्रसृद्यं चुनापाया हें पड़ द प्यार हु गुरु में द राय करा है। या स्वार्थ प्यार है से स्टें।

### विना में न 'इते' च स्रा अह न 'धि स्र न

क्षेत्राकृ | देव्यव्यव्याया हे त्र्याय | क्षेत्राव्या द्वायव्या क्षेत्राकृ | देव्यव्या या हे त्र्याय व्याव्या व्याव्याय व्याय व्याव्याय व्याव्याय व्याव्याय व्याय्याय व्याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय याव्याय या

चने'र्बरम्दर्भ । व्यवसङ्ग्रन्दर्भरन्दर्भरा 可思了 तह्रवानवेशकेन द्विनामा । यने हुनानवेशमान हेना तुत्र देवा । अ'नईक्ष'नृतुन्'अदि'८८'रु'खुका ।क्विंद'राधिद'वेद'वे'हेक्ष'न्दा'न्द्ना ता बेर्। | बेबबाया पर्वेषाया पर्ने पर्ने वर्षा | त्व्रा तु क्रं शुरिः ररः प्रवेदारि । इंटिंग राबुदा शुरः संबुर् प्रगा । विगास्त् इब्'ब्रॅल'क्केंप्रम्'दु'लदेव। ।तन्नकासु'ईर'र्नेग'नी'भेर्'र्ब्रेब्प्यर्गात्रा बेन्। । बेबबाया पर्वे बादा पर्ने पाने प्रें मान्त। । विवान सुन्या पति'सम्र वर्षे क्रिं क्रिं सुग्रे स्वर्ते में ग्रायत् वर्त्तर पठराया दित्या व्या हेपर्व्वायस्य स्माध्याप्त क्रिया हेर मर्जुद्राक्यीश्चर्यायाय न न्द्रायायाया न न्द्रायायाया <u> इ.स.चेंप्राय, केंद्राय व्या वि</u>र्द्ध व्यायायी सुर्वित क्रिया सूर्य विद्या मय। द्वेते तुः व्यं इवया ग्रीया हु 'त शुरा परिष्या ने वाया न परा शुरा पर्या हे'हर हुन परि ग्रॅं बॅ'ने'ब्ने पन्ग् इवस द्वी सुरी सुर्वे यग्या हिन तान्न्वसार्वेदानु दुःपॅनः पाय प्राया प्राया प्रायम् प्रायम् । प्रायम् । तु'हे'नर्जुद'ग्रीक'यगुर'दर्ने'ग्रानक'र्का ।

 षर'ग हर'र्से बेर्। । दोवर'रा' कुग'र कुत' कु के 'हरा' दर्रे। तवन्तवन्तर्भन्त्र्यान्त्र्यां यद्याः वनः। । देवायाकुन्यवनः संतेतिः तुः हुग'रे। । तरात्रिंशंबेर्'ब्धुरवाहे। । ह्यांया नहारिते हुता वारी व्रिन्दार्वादावित्राचरासूना व्रिन्दिव्युवादादेखुः **बॅ'भैय। । ५ व' रूब' तुब' गुन' भैन' छेब' न ग्व। । ६ ब' गुन' न व' रूब'** बर्दर्यात् । तिहेग्हेब्तर्ने यो विष्ठाहब्ता । देवादरः ह्वेंब्रुं बर्धर प्राप्ता । कें तर्दर बुर प्रते कें ब्राप्त बाह्य । वितास वा हिन्गुर-ने-पविवानेकापर-वर्षेत्। देवाग्युरकापवा द्वार्थाने इयवान्'सुरातस्यात्रांदेवापदिवापदियापान्नापरवापवाद्यग्'न्नार्स्र पानित्रित्रायाया हेपईवानियान्य स्वर्त्या पॅर पं के भेव वा बुर का राजा विस इसका वा दे। ब्रिन के विसे नि र्र्न् वर्श्वेतिवर्षाचर्षावर्षावेत्।पर्ग्ववर्त्वर्तुःग्वर्ष्व्याञ्चराञ्चरः म्बेर्पान्युव्यक्ष्या मुद्देष्युर्मात्र्याम् व्यक्ति बर्दर्यादी देर् केरि केरा वैका वर्षर प्राप्त रूप करा केरा कुर **ऍ**८ प्राया की के गाउन त्या शुका सुधि र हुता पर कि त। ५ दिन है स्थाय दु है न व्यक्तान्त्रत्तर्तु व्यापाया हेत्रई वृक्षे व्यावया र छे न्त बर् शिस्तान् नम् न वर्षात् में देव होत्। स् स्तायत् तर हेन् में सेन् पद्मन्त्रं वर्षा क्षेत्र क्षेत्र हिन्द निर्मे भवने ने पद्म हिन ८८:इयकारि, प्रविद्वात्रवात्रां प्रत्याम्बुटकात्रवायगुरः दिने मुब्ब्दकाः स् ।

ङ्गं त्रग्'यर'पते'व्ययायत्तुत्। ।य'त्र'यते'व्रेश्क्रवयात्र्यः शुयः लु। । त्रिन् भू भी तु अँ अहे अया न ज्ञन्। । त स्वरान् गर सिने न्देशशुप्तार्ययागृहव्। । विश्वशंश्रीयाग्यः शुर्पाराष्टुणयान्या तमेत। |द्रैदातदार्केषाण्चैषातहतापात। ।कृदास्वादे गार्वदाता विन्तांव्य |न्यान्यंक्षःविक्वतारान्। ।तहेव्कुःवुन्यन्केन्यं बेरा । क्ष्' श्वनान वं न दुरी न दे राजे । क्षर पाक्षेर । यह । 5'तञ्चल। । श्रेन'तह्मलाञ्च'य्यते अंता र्जन वित्रा र्ज्ञुन'के प्यतः कुरामिते हु। विमें हुन विस्मिते हुन महार दे। निराधकान श्चेन'तुन'र्ज्ञ | विन्'नेश्चेन'स्रेन्ययययात्। । ম্বুনবান্ স্ব'অউণ্'ব্যুঅ'নে'গ্রান'ন'র্র্বা বির্ভী'র্ণ'বিষবাভব'ল' बर झेंबबा विकेंद्रां मुं अरे हें ता खुवा विकेंद्रां द्वारा में द्वारा मे द्वारा में द्वारा मे द्वारा में द्वार इय्याय वित्रात्र । द्वीपात्रीं हुना देव दुर्चे । कुन दुर्व ८ के 'क' वे न ' क्रें वा वा विकास के कि के के के ने के कि के के कि के कि के कि के कि नपः वितः हम वाया मुना । सन्दिम भेग हिन् केन मुना । कुन रु:रम्बेबबर्यन्यम् रु:इंग्बा विवागहाम्याया विनः इववावारी देन्'अ'नेग्'यदे'सेवस'**उन्**'इसस्। सेयस'न्ट'स'न्य'हेन'कॅन'कॅटस राप्त्रकीत्रव्याप्तरादतुगापादनैत्याद्वादिवागवेवारीपक्षेत् वपकाकु ह्यानियानियान्य स्थानियान्य स्थानियान्य स्थानियान्य । ।

हैन'ग्रेस'क्रॅपया । ब्रिन'न्न'स्व'स् भे पर्कं द्वारा । ज्वन'नु'न वस <u> ঐব্'শ্রি'বা বিদ'দু'ঐ'বারমানমমান্দর'শ্লমমা । গ্রামা</u> यह स्पापित के प्राप्त के विश्व कि स्पाप्त के का स्पाप्त के कि स्पाप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्रा म्यान्त्राचाणकेवाक्तवानुः के। क्त्रानुः प्रवादान्यान्यान्याः विद्याः <u> ध्रेन'लुन'मार्चन'मुक्त'र्'के। । क्रेन'म्न'क्रॅ'मन्नेन'धून'र्ख'म्</u>। ब्रेन ष्ट्र-(यटकार्ट्र प्रवाहरू-रे-श्रेका । यहें द्र-पिते के रूप्ट-(स्त्र-रहा । ह्या । इ.च.पष्टिं वेश धर्म देशीया । श्रें वेश र्या वेश र्या र त्र्वेगबात्याद्याः । इयाः दंगः क्रेशः दंगवात्यः द्रारे ग्रीवाः । त्रायाः नगुरः है हुन: तुषाह्य। । नः कुता हे या ने पाता तुरः रे ग्रीय। । तुषा **५८:इयप:वयष:ठ५:५। |८८:कु५:८व:परी:८वॅ८:वॅप्टुम। ।क्वॅ५:** Nय इयानि के हेर् जुरा । यह प्रस्ट वित् हु यर ईया। । बावराप्तर्र्ज्रप्तज्ञुःधात्वराष्ट्रीःषदः। १नेःभग्नभूगःपाप्पदःज्ञुःबेन्। हिन्'न्नार'पर' क्रेंबराय' व्ययाये व मुरा । विश्वाना हराया छ । र्वे ने इययान् गत्यम् वीरान्याने क्षराया स्वाप्ति मान्याने स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स् नुःर्यरः स्। । हेः पर्वं व' यारा त श्वापति वा प्राया सुवा वा राया स्थापति । ८८.४४।२०,३,६,६६८.५१३,४५१ । स्वास्त्र,४५५,४५५५५ पति'र्स्नरहे। तनै'यन'गर्सेन्द्रस्रीसमिन्द्रस्रस्रीश्रीस्यर्भे तस्स्रस्य **「おざりすりませんが新たべ」** 

# 

व्यं गुःह। हेपर्ड्वर्श्यार्यर्थान् देन् प्राप्तां क्षेत्रं हेर्द्रात्यां क्षेत्रं हेर्द्रात्यां क्षेत्रं हेर्य व्याप्तां क्षेत्रं ख्राप्तां ख्राप्

श्रेशान्त स्थान्त स्थान स्थान

त्रः स्ट्रं न्त्रे । । अवाय द्वण्यत्यं । । व्याय द्वण्यत्रे न्याय द्वण्यत्ये न्याय द्वण्यत्य न्याय प्रत्य न्याय द्वण्यत्य न्याय व्यवस्य न्याय द्वण्यत्य न्याय विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विषयत्य विष्यत्य विषय

 स्वार्त्यं कृत्यं कृत्यं व्याप्ता । स्वार्त्यं व्याप्ता व्याप्त्यं व्याप्ता व्याप्त्यं । स्वार्त्यं व्याप्ता व्या

हेश्यह्मन्त्रं व्यक्ष्मं विद्या व्यक्ष्मं विद्या व्यक्षं यहा व्यक्षं यहा व्यक्षं यहा व्यक्षं यहा व्यक्षं यहा व हेश्यह्मन्त्रं विद्या स्ताय्या यन्। विकासिन्न न्यं विकासिन्त न्यं विकासिन न्यं व

त्रिरानिकें स्थायाधीन् त्रमुत्ता । न्न्यान् गृर्धस्यसंयस श्चरहे। सिमाश्चित्रं विद्रारा श्वर न् ग्रार नवा विष्युता श्वर वा व बिन्द्रत्व। । महेब्र्जीम् तर्वेष्याम् ज्ञान्त्रार्म्या । हे. द श्रुटरापसम्बद्धान्यस्य । विरायक्षम् नेवायस्य केवापना । रशकुर्धुव्यस्वविद्यायहाँग । तहेन् हेन्प्येरायहार्न्त्राद नश | न्यव्यानहार नश्य क्ष्य | न्यव्याप क्षेत्र की विरस द्रेषसञ्चर्रमात्रप्रमा । भेर्नुषसम्बेष् पुरेश्वर्षर्वसम् । छितः इंद्'भेवा विश्वासु'व्यायवित्सु गुःही विश्वाप्तित्याय हिन सन्वायुन्। विरक्षरेग्यायेश्वाद्यित्तरत्रत्व्यय। विरहे**अ** बैश्युर्प्यहर्प्यर्प्याता दिं हैर्प्यहर्प्यस्य युर्प्यस्य । न्न नवा शुनु न विकास मार्थिक मार्यिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक म RBसरा निष्ठित्पहरूपराश्चराया किंग्साहुगाविनासेन हुन'नु'तळर। भु'गहुअ'त्रव्या वेन्'कुन'नु'गव्या नि'नै हॅं ग्राप्ति ग्रेन् कंन्यग्रा | विष्ठाप्ति गृहेरार्घेन हरा ग्रेन

कुर्। | विस्तर्भियायाञ्चराचायम्य। | यहस्यविस्तराया मुहेशसूर्वित्। वित्यम्बेर्पिक्तार्खेर्य। हिन्दा हुग'लेव'बेर'कुव'रु'तकर। क्रि'ग्रुक्ष'त्रवाराकेर'कुव'रु'ग्वय।। बेदायाबेदायात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्राः । विदार्यदान्त्रात्रायाः विदार्या बिर्याम् वस्य विरिद्धान्य म्या । क्रिन् प्रया द्या प्रवि राया ह ग्रा पर्या | सहेशपरि गृह्य वा प्राप्त विषय । किर सूर व हुन्द्र-देवप्यवा तिर्चे पत्रेन्यते पत्रवापप्यता विवया खराइबराक्चायान्ता |स्त्रं सुन्तरत्हेन्येन्या तकेर:पर्यक्षेम्बानी । प्रे वे तर्वा हुस्य इति । । तर्वे वे 👸 न प्रति च ने न प्रति । । से अश्वास्त्र च न न त प्रतासि प्रति हो । क्रेन्'इन'कॅस'सुन्गवस्यान'न्य ।इस'रा'गुन'सहेन'हेंन'रा'हेन्। । नेवः म्राम्यम् वर्षेवः प्रविष्यं पर्यः । । ५५ म्राम्यः वर्षे द्यापः वर्षः । । पर-दुःग्न-दुत्र-ग्व्यापायेत्। । भायर-ग्राधनः संनापायेत्। । तुरागश्चायवव्यापावेत्पावरापय। । तेयवाता क्षेपत हिते हु या मकेवा । नूर्ने न्वरान्ना न्या वरा वापत दे होता । न् न्य न्य र क्रीक्षेत्रस्य स्था । त्रुत्यायि । रेयराष्ट्रपान्ताव्यायात्रास्यात्राता । श्रुवेत्रिक्वाद्रपान्या मर्या । विवयापश्चिय द्विराचित कुत्राय केंद्र। । विदे दे विवया **छ**दै'गदेर'ळद'यगय। दि'ङ्गराहं गयायदे'इयाद हें रादे। । दस विगाञ्च अगतह्यायदेखा । यन १ न न ह्या या या पर दे दा

न्द्रवर्गरम् स्त वर्षे देत्रवर्ष | विवर्धयः द्र स्त वर्षे मही | ग्रथ हैं दें दाया बहरा वा | अद्या है र रेव हु खरादी | *ध्रुव* 'हेव' हुन प्रति 'ग्न अर्थान्य'वैद्या । प्रवापित क्रुं खुक्**रांन्य अन्** |प्रस्त्राभ्या विषया यह वास्त्रा ने वास्त्रा | | वास्त्रा स ग्रैक म् ग्रायायकेया । तर्ने परम् में अपहाय ग्री गरेट कंद यग्या विवाग्युत्यायम् गुःश्रः भिवः याद्ययानेवः पुः विवापर्युरः है। <u> श्रेश्रव्याग्रम् विवयार्रेग् सुत्र पुरियम् पुरियम् विवया पित्र दे । ने वया</u> हेमार्ड्व प्रायं व्याविष्य स्थापित प्रायं विष्या हिम्म प्रायं विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या क्षेत्र'रहाराष्ट्रिन्'त्र'बेदि'तुर्श्चेन'हेन्य'द्व'तुःवृडेव ज्ञ'न'द्वे<mark>'तुःवृडेव ज्</mark>रु ब्र्रम् सुनु हेर बहु अहै। जुन में न र न प्राप्त हेर है। हैर के हैंग पति हैं गुरा ह्वा पर्या । इंत् विष्य पिते हुरा हेव प्रामु द्वा वह त त्राञ्च हेन्द्रत्यते इत्य त्र्युं रहे संक्ष्य हिन् के स्वात्रे त्राचिता चन रव'र्रार'ने कुव'ययक न्'प'डेब'यवाद न्व्यपंर्दर'च'यवा **गु**र'वर बीखुः रामाञ्चादावामाबाठवाश्चित्रीबाचात्राचा सुन्दीनेप्पन्**रामा ने**दिन्दे**व** 

#### 

न्वं गुः तु। हे प्रदुन्ये गुनः विष् पुः वेत्ययपदे से न्युनः विष्यः पुः विष्यः पुः विष्यः पुः विष्यः विषयः प्रदे

छेन्-केवन-संकित्वा-संने-इवका-संकित्वा-संने-विद्या-संने का नाहिन्-स्वा विद्या-संकित्वा-संने केवा-स्वादिन्-स्वाद्या-स्वाद्य-स्वाद्या-स्व

विनवः न्तः गृहेव। । इवयः येवः श्रुः श्रुः त्युः नवः न्तः गृह्यः। । भु'ग्रुबाग्रि'त्रवातुर्श्चेद'न्न'पदी। ।ने'पदीपक्षेत्रवापदेर्सेद्वा दे। | वयान्वपान्वज्ञेसंवयाभेव। । हिन्दिण हेवपादे र्श्यद्याग्रीसान्रसु'नह्य'त्रह्य । द्विंग्ज्याग्रीवियार्चन्देन्द्रस्यार्धन्य। । ८ कूट केट की बहु र मिया सर दे र प्राची विषय विषय दे दे र प्राची वा धुग'र्र'मृत्रेय। १२ में पञ्दि'मियाधुर'यरे'र्र'म्डा बेर्फ़ुनर्भनं केर्र्प्व । १८२ महीमस्य प्रमानिक स्त्री । वसाम्बन्। महन् मुं नस्य राष्ट्र । । हिन् तरेना हेन्यते नस्य रानेस चक्षु'चक्षु'लङ् । क्रु'वरि'वर्ग'र्झेररे'चें रत्य'र्झेरक्। । द्राराच्या कुराक्षीय अवाय सम्प्राप्त विष | निवार्क्ष कि विष्टिं र प्राची प्राप्त म्बेरा । न्नेप्त्रव्येळ्वरन्नर्रम्याय्या । कॅबार्श्वर् ष्ट्रं चुरं न्यतः न्तः पति। । ने पति पर्ये पर्यापते श्रीनः हो । वस ण्वन् नहत्यो श्रीत् स्वा । हिन् त्र हेन् परि ज्वे द्यो राम् নপ্ত'বেহা | শ্ৰহমাস্প্ৰমন্তী:ৰ'ল্ল্গ্ৰাইনিমান্তিমা | দে'বাই' म्बेन्याक्षित्रं वेश्वास्त्रात्रं न्त्रं विष् । यदे म्ब्यायक्षि ५८ महिला । इत्रत्रम् मीपायम् ५८ मान्यम् । १३ वर्ष हॅग्राकी जुन् में साम देयान्तायती। |ने प्रतिपर्यम्पर्या देखनायानी ब्यान्वन्न न्व्यीकुर्यं भेव। । किर्न्दिन् हेव्य देश्रान्य ग्रीका নপ্ত্ৰ'নপ্ত্ৰ' বিশ্বৰাপ্সনৰাশ্ৰী'নপ্তৰ্ম' বিশ্বৰাধ্য বিশ্বৰা देवापादी ब्रिटु (द्रष्टु दर्श प्रत्य प्रत्य क्षेत्र क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्

| विस्याहें प्रायुध्या के सने 'न्न' प्रायुध्या | सन्याम्याक्षे শ কুবা ग्रु-श्रु-१८६४,५८,०वि। |२े.पवि,पस्न्र्रप्रेश्यास्नि। व्यान्वन्न महन् भेरा स्तान्य। । भिर्दिन हेन भेरा स्तान्य स्तान्य |त्रिंस्वरेरवस्य वर्गःने वर्षः वर्ष वर ने सब हो न सं सं र र । । र इता त हो र की ता र राया न हे या **ह**र्यः सर्दर्भः द्वरः तर्रेते : यग् : स्वा शंक्षेत्र। । त्यतः शुक्रवः वा दराशुः बहत्यन्तरः देव । देशवा शुरुरायश मिनः इसरा वेदः तुः नृन् पनः **बुर्यवरा** छ्वापर्वतात्रस्य इत्राही छैरावरा गुर्ने वेदातृ संस मर्युरहा । नेवसहेवईदारसिःसुः वःर्वास्वास्वा रत्यव्याष्ट्र सें व स्वीनित्रित्यवि व देव व स्वा स्वा स्वा स्वा से व स्वा से व **देवै:अन्नामु: में** छेन् शत्रासुंद्र-पदे:युन् शत्रासुंप्र-प्राया न्द्रिन्द्र द्र न्द्र में नियायय। न्य नियायय त्रष्ट्रस्ययमः संध्यनः प्रतिष्यिनः प्रता वया विषा विरामनः विष्यनः **नविष्युःनेव्यापरायार्वेन्त्युविवावयानाञ्चनःवीक्षेःवियाविवानवाहेःनर्ज्वाञ्चेः** श्चित्र सुग् भी अरु व्यवस्थान हो त'रा न् न्। हे पर्व व गुरायगुरा ग श्र पा **र्वेशव्यक्र्यात्र्यात्र्युराहे। वेंदासुध्याव्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य** हे पर्दु व भे हु र पु हो व प्याय व व या या हि र या हा या हो या या र र र र र र **७**८ दें हे गुग्रया भेव दें | वितायय प्रति है तथ छै यह पर्व व स्रवेडिन्परेन्न्पर्धेन्द्र। गृह्यन्द्रिक्षयाद्वय**र**  हे'नर्ड् व'ग्रे'हुन: रु'ख्यावय। ह्यां व'वेन: नर्ग्नायां प्रस्त नरु प्रमा हे पर्द्व व के हु प्रवाद का प्रमा त हिंवा अ अ हु प इया विशानिया पराने शाप राष्ट्रीय हो रापा विषय हुए है। हे पर्द्ध वाया सुता **पर** भेरावय। अष्ठराहे स्रेर्प्य ग्राप्त राह्य राग्य। **ग**वेश्विस्वस्थ्रार्थं रत्युक्षयम् । युक्ष्णुत् हे पर्वुव्यवित् वुक्ष ব্যান্স্মিরাম্যা প্রায়াস্থ্রানার্ম্নে ব্রিম্যা গ্রেমার্মি इन्'ग्रैर'ग्रेर'यन्'रस्कुन् स्वाप्त'धुन् हे। सेन यन्तरस्कुन्यर्पन्न्व द्याप्त-, र्या अप्रवादवाग्रीयानगुगाववान्त्रः श्रीया पुनर्वानायाया मन्गानीवन्धीकानेवाने। नेपामवानुनेवकावकवर्यासम् पान्याधिन्यानापित्राम्य। वितास्वराचि चे में त्याने स्वितावरे वर्'र्'नेबादर्ग दर्'तायद्यत्रिम्मवस्नेबाबवाद्रैबायबा द्रग् माने वरे हिंद क्रेर हे कें रद विषा तत्र म दि हा या स ता ईह ता हुद विंदर-विंद्रभावर्षे यायवित्यव्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यक्तित्व व्यव **मे** लेरा मरुवा रशकुर्पयशणुर्देशपर्वद्यत्यक्कावरत्यत्ये मतिःवद्या मय। हे पर्वव गुरेया बर् है। देश हे यहा यह रही गहा दस 到|

द्रैव'यळॅग'**हे**लाग्रॅलप्प'तदेत्रश्र्या ।तु'ररु'छुद्'प'लाद्वैव'

श्रीकार्ज्ञ नका निक्रिं तर्नि कें खुन का कें का त्यान हें न र के न 13.21 धिन्यन्म् व्यक्ष्मामञ्जयम् । तिः क्ष्माभिवः परम्म स्थानः सन्तरम विता । क्रांगरवित्ने पत्रें रायां व्यक्ति । विताय वित्र ग्रायां विताय नश्रुपननत्वित्। ।अपनुत्रहेदारनेतारसर्गेशर्गुदाय। ।हुत श्रेयला हु। यदि हाया विवाद वा । हु। या ना हि। यह हो। यह हो। यह है वा हि। यह हो। यह है। यह है वा हि। यह है। इ.सर्स्यस्यस्यक्षे नर्र्येष्यः । र्यक्षेत्रं र्रत्यः ग्रस्ये स्ट्रं गुद्रा । तर्गुन्थेन प्रदूपरा कुन्दु हिल्ला । कुन्न र श्रीन ने प्रस् वार्चेब कि वितर्दर्भुव व्यवस्थि विदेशमा विवास विकास विवास वि वर्षे क्षेत्रवर्षे दा में नवाय | प्रवादित वर्षे रीयकान्त्रेत्रिन्नन्यंकान्ज्ञं रात्रार्चेत्रं देष । सुक्रें रेम् वर्षेत्रं द्व त्रस्ति ने विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व र्गत्ववर्षाता त्राकुरायराष्ट्रीव्यात्वाकुरास्ताने अर्डा रते'हैं प्रविद कु'गर'लर्चेद प्रया है। **छ**न्'ह्रर'न्तु अर्घे हिर'न् ह्नेन्'ठ्र छेन् न् अर्थर्न् न्द्र अर्थे न्द्र पर्यापर ग्दरप्रवर्भवयप्य। प्रमुर्गिवयार्भ्यव्य। नेर्र्प्येयय कें भ्रेन् ज़ॅन वर्षा च्रायतर् ने तिन चुँव पर्या इन वे या चेर परे इस तर्चे रपं विवायत्वा चेरायां चेंबा छैकाव हुआ के तत्वा चेरा यहार दे। न्नु'यार्ग्रेर्राराधीव'व्याक्रुवाहुग्वावीयने'यदिर्द्राव्या न'देग्'सुग् र्ह्युं दं दबा महिष्यं यथ। हर क्वें तर्मा श्वर से संवेग पर तर्माया न्। न्वन्व्यून्यभन्भ्यत्व्युष्त्व्यस्त्व्युष्त्

दर: ५ केंद्र प्रवा हे पर्वद प्रवासित्य केंद्र प्रवासित हो प्रवासि

द्वैत' रुद्र'वर'पदे'व्यवस्यावरुद्र। । पद्या हे 'रु'द्र' द्वेता हन्। नर्न्। मिष्यस्क्री विद्यास्त्रम् क्रेरे महेर विवेर प्रकार है। | र वे र तुव क्री ह्रा या वा वा वा वा र र । ष्टि भियायन्य पुरम्य विद्यायने । । त्री त्यायने न्यं स्थेन प्रस्य विद्यायने । तरग्रायते'त्र्राष्ट्रीराष्ट्रग्'मस्यते। ।तळळूंत्र'नोसुग्'तस्यक्षे'न्न्रा यदे। | विरक्षेरकी देवसाबेर प्रस्ति | । वर्षित है वस पाञेन्'मजानने। विवयक्तिसु सग्राह्मन्'मजानने। । प्रव पन्ग् मिन्स्याम्बर्धिन्म्यामन्। । 🎳 म्लाख्नाम्यामन्। । ह्यांत्रह्मायान्यान्। । केन्याह्माह्माह्मान्यान्। । त्र्भा तर्देर्'रत्र द्वा खेर्'यबाचे । ग्री प्रा केर्'त्रि ग्री वा वा खेर्' घरानदी । तुःतर्भेषाः तहेष्याः प्रताम्यानदी । द्रेषाः श्रीसः श्री बहुन् कुंद्र 'हुन् प्रवादि। भिग् प्रति भवा स्वयं सुन्वप्यादि। यर्भ ५ दवसाम्चित्रसम्बद्धाः । विष्ट्र प्रमुद्ध । नरामनी । निः ज्ञलाञ्चनाः नेवाः श्वन्यायस्य ने । किंदान ज्ञनः क्रेंद्रः तुःसर्वरःपर्यापदे। ।देःसरःयहरः ह्रॅंबरायलग्रायरापदे। । रोयराज्ञीरारोयरात्मायस्यामसायदे। ।देःयरःदेःदेंग्यायेदःमसायदे।। त्रें व्यवेद्रं स्द्रं न्वायार्श्वेद्द्यं यदी । विष्ट्रं नृष्यं नेव्यद्वेद्यं व दी।

हैं । च.१ूपा. श्वी. पं. श्वी. श्वी.

#### 중'성' 도위'의' 독' 독 대 ' 다 유' 첫 도 I

द'शंगु'द। हेपर्ड्द'शेयान्स'दाने'वेत। त्र'स्य स्याद्या द्रद'सुते'र्द्रद्रप्यात्यास्याः हुं व्रंद्रयात्य प्यापते'क्षे। त्रह्यत्यात्यः द्रद्रप्रेते'ग्वंद्रप्यात्याद्याः हुं व्रंद्रयात्य प्यापते'क्षे। त्रह्यत्याद्याः हित्र्प्रेत्यां प्राप्तायाः होत्यां प्राप्तायाः हित्यां प्राप्तायाः विष्यायाः विषयाः विष्यायाः विषयाः विष्यायः विषयाः विष्यायः विषयाः विषयः विषयाः विषयाः विषयः विष है'नई व कित्रवा के कि न'व ति के संग्यादि स्वति हुन प्रह्माय के सिन्दि हुन प्रहम्म प्रहम प्रहम्म प्रहम्म प्रहम्म प्रहम्म प्रहम्म प्रहम्म प्रहम्म प्र

प्रस्तित्तित्तित्ति द्वा क्रिया हिन्दा क्रिया हिन्दा क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

 शुः ८ हुन् पः भिन्। । नर्सन् स्या हैं स्यापा हैं र पः रे। । शुः न ने र स ळ्च राशुप्तह्रण पामित्र । भित्र छुंज रार्रेश ये ८ पान्। । पञ्चेयापा भेन्त्रायां सेन्। । क्विन्यां क्विन्यां क्विन्यां स्वा न्न'यायहेराप्यित। ।तन्नरातु'तके' मिर्तर्गुन'येन' धिता । गहेर् न्न्यं व 'यन्न 'श्रुं व 'यन् शुवा | न्यं व स्यात श्रुं र पाया न् में वा शुक्र । । छिन्'तहेग्'हे**र'प'सन्गॅश**प'पेद! । अग'न्न'वे'शहंतातहेंत मान्न्यान्येवा । इसन्न्यं वुन्त्रुत्रं म्बुवा । निःइत Rইবিংঘানাব্ৰীকাছ্যুক্তবা । শুৰাকানেইব্ তৰ্নোব্ৰীকাঘা**দিব। ।** विश्नित्रं मुर्दर हु है न या मुख्या | द ह्या तर्चे र या या न में श्राह्य **इ**रा | गर्वेद्रु: अस्पर्गेस्य भेदा | शेर्मेस्य रुपेस्ड ন'মণ্বা |শুব'গ্রীস্ত্র্ব্'শুরামণ্বা |র্বারেট্র্রান্বা परिप्रायं तरी ।तर्ने रतळे ज्वाह्य व्यव्यक्ते हें त्य हिन्या । पने प तर्न् 'त्राक्ष्यां वर्ष्त् । त्रित्रेशक्षे व 'त्रेव 'दाहेव। । ब्रैट दशकेव पार्डवास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र व क्रिना । वर्षन्य वित्रम्य स्वास्त्रम्य । वित्रम्य स्व गर्या देख्यका**र्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः** वर्षः वृद्यंविवातनुवायानेवाने अध्यववाया नन्यास्यवाळेतनेन **र्वे क्षरा'इवकात'ळण्यावका** के छै'वर र्वे कारा'इवकाळण्याहाउस क्रा न्वायतेख्यां विरात्यात्या केंत्रने व्यापहर है।

है 'यते' में व' ह्या बारा प्रहाण । पर हा हे क्या है 'या व व में हा तर हा हि स्वार में व हिंदी के स्वार प्रहाण है क्या है न क्

शे विभागकुन् यें सून्यायाधी । न्यात मुन्दिन सन्यति शेषुवा ५ नात्। विंतिनेतिः यने क्विन्तिं क्विनिं क्विन्तिं क्विनिं क्विन्तिं क्विनिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विनिं क्विन्तिं क्विनिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्तिं क्विन्ति क्रेन्द्रयन्नात्र्र्यान्नात्। । अन्द्रिन्याय्यन्तायः हुन्याहे स्वापते हु या नाता । १८७ मा से मा व्यवायेव्युव्यायते श्रूपायाप्ता । तहेषावाप्ता स्वापा भी । सुन् सुकाळ न वारा दे 'र क्ना पार । । सुः क्वेर ' युरा वास र -बहुब्दापी । प्रवास क्रिंद्र मुक्ति प्रदेश मुक्ति । व्यापन र्ह्स च स्वारं भी विमेला सुना महिना मिला स्वारं मिला स इयराम्बराक्त्रंदर्द्द्रवराष्ट्रं । हि.यह्यांवेवराध्यांत्रं येत्रं तर् देन गरनि हें राज्य है। । नगर पर नगर है हुन गर तळवा । वेदान्युत्यायवा विन्दान्यन्वेद्रपदिन्द्राःक्रेद्रा है। ध्रम्धिरत्यरयाप्ट्रेस्युप्त्युर्त्या र्यर्प्त्रम् न्दर्वसञ्चित्रकर्त्वात्रीत्र व्याप्ति इस्तर्भागेष्ठात्रात्रे निर्माणुरा

## स्। द्रिन्ववतास्वाः द्वं संस् रक्षाः रहाः यहतानदे र्स्नरः स्।

## न्न'यदे'सून'श्चे'मा

<u>ই</u>'নর্ভ্র'ঐ'ঝ'৴য়'৸'<u>न</u>े' ৽ৢ৾৸'ম্ন'ম্ব'মার্ম'র্ম্ব ব্রম व'र्वे'श्'रा बर्-सिक्कें हैन् में र्ने व्ययम् भे विश्वयाययन प्रान्ता र्मे केंग्र मान्यके **ॅ्र्स्स्तुः (स'र्ज्ज्ञ्र्व्यादिरक्षे।** जॅ्राह्ये स्विषाची न् ज्ञान्य द'र्ज्ञे अरः र्से विषा ५५ वष **षव्याप्य व्याप्य व्** गुबुद्द्यायम् विद्वसम्बन्ते इत्यत्वेत्रराष्ट्रित्र्द्र्येविग **रग्'अ'व'२,तृग्'**चेर'च'दे'क्षे'भेद'चेर'च'श'भेद'ग्|यु८व'घर| <u> ब्रिन्'स्वस्य रुद्'विषाधिव'पर'ततुष्'चेर'गुद्र'वेद्य'पर'युर्</u>पपाया। <u>ने'न्य' में'वर' बद्यार यशकन्' यञ्चत'वी'य वैद्यात पुण'रा' नेवा दरः नु'यान दः</u> इत्याने। पश्चेत्रप्राम्बुयायया ह्याययया हिन्कीस्थयन्त के देवा बर्चेत। ध्यान्त के देवा बर्गी बान चेंन्य दे बुन में विवाधिन म्बर्ययम् देविन्कुत्रिन्यहेन्। देन्यस्ताम्बर्यम् र्संप्यनः प्यत्। ब्रिन्प्यनः ह्युवास्य स्वीत्रः स्वीत्यां विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्या र्वेरःपःविषाधिवःविषायगुरःतर्भे ग्राप्टशस्य ।

धतान्नार्धे व्यवान् वृत्ये क्षेत्रं क्षेत्रं विष्यान् वृत्यं व्यव्यान् वित्रं वृत्या व्यव्यान् वित्रं वृत्या वित्रं वृत्या वित्रं वित्

यहना हुं र शेल हुन। । ख्यान व्या ने ते मूँ र हुं र ने। । यम वर्षे वर्षे र ने स्थान वर्षे र से स्थान वर्षे र स्थान

म्बार्या विकास मिल्रा म बेर्। । पर्र्तुंबेद'र्के' रेबेग्'ब। । षर्ग्यकेग्'या दंद्रंग्य हेवा म्पा सियापकर व्यक्तिर पर वहा निष्ठ्या प्राचन व्यवस्य सुत्युर। वि'यर'रा'त्व'र्से ये । श्रेव'र्से देन् वेग'रेवस त्यंग् वत् । यतुन् र्वेदे तह्य प्या सून्य प्येव। । हिन् की ग्वेव व्यायान के तर्ना विकाग बुरयायय। ब्रायायाया न्यायया नि वा ह्या कें। मूर्वे वा केंद्र विवाधियान पर मान्त। रहा वा सुरे बेन्'ब्'भेन्'तमसम्भाकंन्'सबातन्बामंत्रेंभंन्'वीब्'तनुष नेबाब्भेन्' MRF. तुःने प्रवेशभगवायाया चेरायदे अव्युप्त वृत्य गुरादि गृत्य स्वा तु'न्न'र्स'सु'तु'भिन्'र्सन'र्म। ।क्रेन'नहे'नदे तेववायान र्रान् श्चनवारोत्। । परापुः सुः संदार देन 'इन् माँ। । वसवार कर 'हिन षदः अगुः तुरुषे वेद्। | विष्णेतुर्वे वदः दुः पञ्च | देव कदः सः अ है। इ.स् । मः पेश्चर्यश्चानः त्वद् श्चेत्र । वा पेश्चर्यश्चानः अनः

तुर्ञ-न्-संक्ष हुन-रह्न-विद्यामा । विद्य-न्-न्-स्वर-रहिर-निर्दे न्या-प्रह्य-प्रवर-प्यवर-प्रवर-प्य-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्य-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्य-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्य-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्रवर-प्य

श्चित् अस्ति अस्ति अस्ति । ति से ना हे क् श्चे ले प्र ति से ता सि से ना सि सि से ना सि से ना

प्रस्ति स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स

हरकी स्थापन मा द्वारा के शाह प्राप्त कर्या हिन सार्य स्थापन नर्भित्यवित्ववादिवाकि हेम्ब्रिक्षिक्ष बहरातु कुर निर्मे विवास दे विवास के विव <u>র্মু</u>বাধান্তন:ফ্রন:ফ্রান্ডান:মার্ডন:মার্ডন:মার্ रे'र';;व'व'व'र्यर';चेर्राया **र**';;गुर्व'ववि'ह्यंनेराकीवर्यान मुद्यम्यान्याः वित्राने गुन्नम्बित्स्यानेवाक्तिः वर्षानेवान नायम्बान्याया हेन्द्रम्भूषा न्नर्मित्रायानेरान्धित् व्यात्यायम् ज्याप्ते व्या ज्याप्ति । व्याप्ति । व्यापति । व्याप्ति । व्यापति । व्या क्ष्मिंचेत्। गॅवॅव'रा'ने'व'रे। इत्रा'रा-पेव'रा'वेवराताचेरः पः मन्बन्न। स्यादिः रोग्याकी विद्यात्वा विद्या गुजुन्दायम् यद्विन्दे वितिष्यत्यते व्याप्तिन्द्वा श्चित्रः संव्यत् संव्यतः नीत्त्वाया शुनागीः वतः व्यव्यव्यान् हेनाः नाः वतः **न्यायन याँम्ना** 5'स्प्र-उन्नहेत्र लेगास्त्र हेरानाया हेपर्ड्व विया मुडेग'ळॅ८'र्य'र्'छॅर'स्ट'हेंस'र्मेग'र्रा'म्या मन्य यहेर मिर्न न देश मिन् स्र है। ब्र स्यापर मिर्यर ने है सारा न विद् मन्। हेपड्वाक्रीहरानुस्य हासम्बा श्रेयरानु: तन्त्र हैन तन्त्र विषा तन्त्र । यो स्वराप देव। यस शिततुम् म्हिम्'मं 'दे' प्रम् प्रमाशिक्ष्र् । प्रमाधिकां व व मतुर्पयक्षेत्रेत्। यत्र्पयक्षेत्रं मानग्र्केःस्र्। महर

द्वांत्रज्ञे पहुंचाद्वांत्रज्ञे प्रमुकाद्वांत्रज्ञे प्रमुकाद्वांत्रज्ञे प्रमुकाद्वांत्रज्ञे प्रमुकाद्वांत्रज्ञे प्रमुकाद्वां प्रमुकाद्

ब्रुंट हेर् हेर्पे ह्रेर या वृद् | सुरवा बद र निर्देश वर्षा तरेते। । वन्त्राध्यायकाञ्चरायाचेता । विरायानरायरारं ह्ये:ब्रॅंट्रा । क्रे.लूब.के.ब्रंट्याचळ. इ.ब्रंट्रा ने.पप्रवेशकाक्री ই'র্ম'বা বিদ্রেশ্প্রস্থানর্ছুর্মানর্জ্ব मया वर्षेत्र वी । विवास देशमहात्याया विवासी देवानम् ब्रिन्पर्से मुनवाने व्रावस मन्ग्'त्र'म्बुहरून्र'। मन्ग्'मैबार्न्द्रम्मर्दत्रायं दर्द्रम्मर्द्रत्वेर लाफॅन्यन्या श्रीका विका चेरा पाया हिप खुव भीवा दें का हिन पर **537** व्रक्षें हुवारी विष्यि राष्ट्रिय वर्षे व्याम् वर्षे मान वर्षे या की प्राप्ति प्राप्त ग्वसाङ्ग्रान्ग् देशग्राप्तराय। नेराव्यापराष्ट्रियानरार्ष्ट्राया हे'नर्ड् न'ग्रैश'यन्न'हिन्'ग्रेश न्राञ्च प्रायम् स्वत्राञ्च या श्रुपा श्रुपा या মিঅকানর্বশেশঅশান্ত্রদকানকা বিক্সিন্তর্পশেশবাধার্ম 

ह्याम्बर्याच्या विर्मेषान्तरम्ब्रीम्बर्धाःस्त्राम्या **र्**ट्रिक्षेत्रात्र्यात्र्यात्र्या इ'र्ट्रिक्षेत्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या नब्नश्वराष्ट्रभाषा है'न्न'नब्ननश्वराञ्च'विन्छन्न। च'न्र'चक्षेत्रव्यत्यंत्र्यं व स्'न्यं'यर्त्र'न्युन र'हर्र्युरी **बर्-** गुद्र-क्रिके क्रियाचें र ग्रा नेन्'कॅन्'कंन्'कुन्'ने'अल'क्रांत्रिक्यायतवा रत्यंकन्' **बुट्र ब्रुव्याया ब्रेश्य ते दें** प्रते ब्रुट्र प्रत्य विष्ट्र त्या विष्ट्र त्या विष्ट्र त्या विष्ट्र न्बर्द्धरामने ह्या कर वियापार राष्ट्री विष्यत राष्ट्र से दे राष्ट्र या व श्चित्रं तम्ताले 'वेव 'वे तस्त 'हु के ॲंट प्रस्कृत प्रस्त श्चित्रं स्ट र त्र व व राज्य त्र्में देन बन त्रे हो सिंता तें त्र त्र तायन प्रत्ये न विद्या विदे । देव'स'न्न्न्'कुन'हुनहुन'न्र्रम्न्राचेर्र्स् । देर्हेन्दुंव' मुक्षायम् अगुरादि गहामकार्या ।

म्हुर्त्व प्रवादिश ने न **ラス・美・口食 すりりがり 別ロをいた** 近れ सुनश्रत्में दे सद्धेव न स्राधिव विवा व द न द्या हुन'यद'ळन्'भुनयत्रें यं कण्परायीत्रा हिन्'रन'नभुन'रा'युक्षप्रेद' *व्यारोयस्पिनः में तु पः छैत्यत्यायानः* सृ 'मूं 'ब्रिन्' त्या पृत्य केश्वा गुह्न सामा देर विं बर कृ दें प्यर वहा हा आ ये वहा स्वर्ग विवाद र मुनरारा शुक्राधिव व्यारो अवाधिव प्रमुक्षा यहा गृहेका गृजाधिव है। खुकाकुष्मां दकामन निरं नन तारे ने तारे दे तारे निरं ने न न न न न न न WT श्चितवाराने'खेवाचयवारुन्'तनुवाराने'भेव' वयापययापय। वयान्न रोबबान्नयारं व'रॅ'बेर'प'बेब'प'क्षुपबापते'वेट'बेपॅट'पर'५तु**ग** रॅ'यार'शेता'तुर'तर्वेर'र्व'र्देते'शेर'यार'शे'यर'पर'त**्व** दें'व्शुत्र**य** रान्'रोजराधिव'व्यापक्षापय। ज्ञुपरापधिव'व'रोवराचेर'प्रावे तहन्या रेयसम्भित्रास्य स्वापान न न वाराधित स्वीरायस्य स् नत्र शे'त्बर्'त्य ग्याने'रोबराष्ट्र'यारीयराचेरवित्। ष्ठै<sup>।</sup>व्यत्मन्नु नव्यप्पत् ने नव्यप्पेव व्यते। **न्नु नव्यप्पत् ने नव्यप्पत् न**व्यप्पते नुव्य**न्नै।** रेवराष्ट्राष्ट्री व वे सार व व वा संस्था प्राप्त में प रोबरातायम् बैनात में प्रान्वेद्यात। रोबराष्ट्रा है 'सबराउन्' तासुनदा रा'य ५ ग रा'यो द' व' दे' रो अवातात के 'ज्ञु' के त तु ग' यथ। · 전·전·경· मयराञ्च 'रु'रेषायरुष'यर'रु' श्रेश गुर्'। श्रुपसप् विंदस र्ह्मण्य यगवाही क्रुंग्नास्था अन्य देश्वा देश्वा देश्वा देश्वा देश्वा देश्वा देश्वा व'वेर'न्र'व'यर'र्येष्यंश्चेयेयय'दे'त्र्य'ळेर। ダイ・ダイダ・ビュージ

यन्त्येन्ववराखन्याक्षेत्रायातिः श्रुवाया । यन्त्वाक्षाः न् शुक्ष नुकारकान् र्वाया । पर्ना पर्ना निहेका तहना मन्ग्'तद्देवस्थताव्यावेव'पर्रसुग्यादेवात्त्रा ।ने'हेवार्श्वर डिन्हे में हुराय हेवा | निम्मा हुतहेव निहेव निहेवा के सामित मक्षाप्यवर्षम् । क्षेत्राष्ठ्रण् । क्षेत्राष्ठ्रण् क्षेत्राह्यण्या बर्चर'बेद'र्खुत्यग्रील'यर्चर'प'र्पि । धुन'कुंकेद'र्य'पर्श्वयप्'त। । मुबि'र्र्मुकार्देव'म्बेरकेव'र्यंर्मेवा । सम्मिर्यतेर्यं ह्या स्व वैषागुरातस्या । तत्रषातुः वर्षे द्रानु ने द्राया । ह्रायते प्राय स्र-अवर्म्ग्रम्बा ।ग्रस्यसम्ग्रम्भेन्र्र्र्र्र्रम्भ। ।नस्र-न्म्या । तके प्रत्नु व्यापदे विष्या प्रमेशां । ने प्रमुद्या प्रत Rर्ग्योगे हिरु छन्। |ने प्रमुच नहिन त्याय यह से स्ना त्रान्कु'यळव्'नप्र्'वे'उर'। । । सर्हिन्'ग्रैशनस्यायर्दे 'नहरःन' मा । नियन् मृत्विद्यायां अक्रिया । नियम स्वया मियन् मायेन्य हामधिव। । निक्षिणीः मन्याः सेन् हिंग्यात न्त्रां सामा हाया है या

**८.ज.**कुरत्वेद्रस्या । ने द्रक्षेत्रवाद्यं के वापराय गुरा हितुःकुन् शेवशायाने क्षेत्रः विष् । ठिशाया छुन्याया। विष्याने प्र मन्ग् न्ना अप्रिन् त्या अर्थे त्र त्या अर्थे व **इ**प्पर्र क्रिप्राविषा अष्ठित्र विष्य नेर में | | नेर हेप देव की हुन या त दर्शक्षेत्र'क्षेत्र'त्रकारो ने क्षेत्र' प्रक्षेत्र' प्रक्षेत्र' क्षेत्र' क्षेत्र' क्षेत्र' क्षेत्र' क्षेत्र' क्ष न्र्यापान्न न्या हिन्न निवास्त्र के स्वर्ष न्वेज्ञरापं विवार्षेया वया यह सार्षे । ने साववा यह वा खारा ववा मतुब्रार्थन्यन्। ब्रिनुदेश्यन्नेभेन्य्वरा श्रास्ट्राया मान्या षीसु'ने'स्पा'अप्पेन'वयावग्'यतुव्यंन्। सु'गु'वेश'यअपयययययय त्रक्षेत्र'तुः श्चेव्याम्याहेः स्वायागुवावादी मिन्नाया स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य मुद्रादर्ग चेर वद्यार्थेग : सर्र स्थानस्थ स्थानस्थ स्थान । तर्र स्थर विषयं विषयं ने न ति र अपें प्रत्याविषयं न पुत्र विषयं विषयं म'ने'ह'बिर'येंग'दरावर्रा |ने'दबायर'येंब'यर्थायं। ह' 数タンプ・イトリ रशञ्च अदे ग्वन् अरुप् ग्वा सङ्ग्रेय प्र**धे**व से रा ৰেশ' मतुब्रस्ट व्यार्थेग सिम्ट प्रेमें स्टापित स्वा हैग्'बैद'रा'क्ष'पस्न'हिन'ग्रीह्रद'भैद'वेन। है'क्ष'स'ह्रॅस'प्रस्पारी <u>५'रे'पर्क्कें अत्यत्र हॅग्'प्रवे'तृश्रक्षण५'क्षृष्ट्र'प्रस्ततृग्रेंपेव'व्यवेन्</u> **ने**'सब्'कन्'तुरा'वग्'रे'तुरा'वग्'श्चित्रा'क्ष्रेर्यव**राम्'रे**'रळेलान्ग्रेरा'''

য়्।

न्यम्बुर्द्राधित्वित्वक्रम्या | देश्विष्ट्वर्यस्यते व्यक्ष बातत्त्। । इंदानायाचेन पति हूं न केन खें। । इंदान मन पति सहिन क्किल्यायर। विद्यानेद्यानेता हे व न् न त्रातानुत्राह्य। वित्राचन के র্মান প্র'বরাঝ মন নিরম। মির' প্রথম গ্রী'র রম কর্ম রাজ্য দিরম কর্ম রাজ্য দিরম কর্ম রাজ্য দিরম কর্ম রাজ্য দিরম কর मञ्जीपत्र। १८क्केंप्रतिक्रियां भुविस्त्रियां भुविस्त्रियां । विस्तरिक्रियां भिविस्तरिक्रियां भिवस्तिक्रियां भिविस्तरिक्रियां भिवस्तिक्रियां भिवस्तिक्रियं भिवस्तिक्रियं भिवस्तिक्रियं भिवस्तिक्रियं भिवस्तिक्रियं भिवस्तिक्रियं भिव ब्रुट्यान्यम्। विश्वानेयानेयान्यायाय्यासन्द्री विश्वान्या मङ्ग्रें वापितः क्रें वाक्षेत्रं मुन् । । विवश्येष्टित्रं प्रित्रं प्रायास्त्रः । क्ष्णां वर्षत्रिं त्राये हें प्रते हें । । तके । प्रते हरा हुते ख्रा वर्षत् तकें मरसर्विता । श्रूरितार्विते कुर्येतास्यवस्या । वि न्गेभ्यक्षेत्रसुम्बायक्ष्याः स्त्राम्बा । श्रिक्षाय्यन् स्वराधस्य विष् तुरु हु। हिंग से न स्मन्य त्या विषय विषय का हिन में हु न भैदा १२ ५ द ने वर्षे वरत ग्रायाक्ष्यां में या । विक्रियां क्षेत्र त्राप्त्यां म्याया । विवाय व्या

मानतः नुत्रापराय देशपाय विवा | रेगा दूरा हे वा दे प्येरा रेगा | **हॅ**ग'येन्'गराय'वेन्'नृत्राय'ने। |वे'गवसवयराग्री'यून्पपीव। । **७** यराञ्चरपार्चे इयरापविराम विषावया। विराम में वास्त्रीया प'रदेनबान्दिद्। |कॅबाईबानबार्कीसुम्मन्'नकद्वबादी | न्न्याचेन्'र्म्'स्थलके'र्सर्ह्ग्'स्याचर्षर्ता। विष्यवस्रर्द्द्रके र्श्वेग'च ग' प तमर' र्थे' प १ गवा । चिवरा प्र' क्रेप'हेरी क्रे वा क्षेप्रा स्व' শ্ৰীমা । দান্ব দেব মৈ মমান স্থী ব শীৰ্ষ মান্ধ নমা হ্ৰা মানিমা Nअ इस न्या विश क्रेन्पु र र स्या श्री | अर्चे र श्री इस पर प्रा मस्यस्य द्वारा । इयार्गाय हरायेर की से मायहर हे गया है। । हैं ने में न्या की प्रमाय के मार्थ के मार्थ की स्थान मार्थ की स्थान की स्था पश्चेपरा । वापक्रापर कॅराश्चर्ने पुरावर्षिता । वापश्चिपरापर तर्व'राञ्च'ग्रीकाश्चर। । तु'न्ने पड़ेव'रीववाताने 'सूर वेंग । देवा न्युर्याभेत्। व्यक्षिराष्ट्रित्वकात्यत्त्त्रान्यव्यास्वकार्हेन्य पर गवर व राप भ्रें वराप राष्ट्र व राप भ्रें व राप राष्ट्र व राप रे हुन राप रे हुन राप रे हुन राप रे हुन राप रे र्धेन'त्रा रसप्यस्यज्ञस्भुतस्र-रस्यानरेः स्रूर्रा

### कृत'म'नूण'श'र'देशशुप्तञ्जन'नते न्नेन।

न्यॅं.गुःद्र। हेप्पर्डन्थेत्यरस्यंने'हेन्थर्ध्याश्चेत्'र्वेन'द्रस्य गृहतःत्नःतुःर्येत्यस्यस्यकेर्येक्षेत्रःचन्याः इस्ययन्यस्ये न्ययाः सेन्'र्वेन' इसाम्लर्यद्वा । इसाम्लर्यद्वा हिम्पह्वास्यास्य विद्यात्वास्य विद्यात्वस्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्वस्य विद्यात्य विद्यात्वस्य विद्यात

मुश्चरवर्षित्वयायात्त्त्। । निर्मेत्त्रवर्णित्वर्ण्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्ण्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्ण्णित्वर्यत्वर्णित्वर्यत्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्वर्णित्

य'यदि'शुं ने व्रिव्याप्ता । तर्ग्युव्याविदे ह्या मे व्यव्याप्ता । त्रित्र्य व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्

*५*२। । पर: ५' नवायदे स्वाहेल प्रता । ध्राया हेल की न्याया स्र स्थान्रिं। । स्यञ्चायते क्वांचेन् छै 'न्यां मन। । नन् क्वन् छेन् छैनेया रपवर्ष्यप्रमा । पर्रमुधिर्क्षश्रीर्वेष्ठश्रीश्री । क्रेंब्राय वे स्राय अक्रुश्चं अन्तर्ति । तर्जे 'हुन्'ने तेवशक्त है 'वहा पर । किर् हुँ प्राथित दर द्राप्तर। । पर दु पङ्गेयशपरि द्राया हुन ५ । हुन्याहे वि'तर्दि, दु' अर्थन स्थान द्वा । विस्थान शुक्ष न न स्थान हुन न स्थान हुन स्था प्रा । तर् हुर थे भे लवर वहा प्रा । पर रु हैं वहा यह वि नि न्नः स्व। | नेंवायः व्यानः येनः चंयानन्ते। । तन्नः प्यानः स्यानः है। वस्यभ्रा । तहेव से प्रेमे राप्त प्रमान्य । । प्रमानु में इस राष्ट्री त्रेग्पार्श्वेष्वयाप्ता त्रिन्वयात्रयाप्त्रप्त्याप्ता । पर्त्रहेस श्चराक्रीवर्पन्या । न्नीक्षिणानिकेशश्चीतिहन्दवान्दि। । वियागगुप्तयाया। दूवापानुगागुय। हेपर्द्वाश्चीतुगयप्याप्ता र्में व राये प्रज्ञ न स्पेत्। प्रत्य मेराहे पर्द्व भी व त्रास्ट्र न स्राप्त मेरा द्र- न न अराम मा भिन् के स्विम हैं कियान विषाय हैं न। न न न न न न न मन्ययान्त्राद्वायाहेयातहेवायान्त्रात्रात्रात्रा न्यर-न्र-वन्ययायावदर-क्रे-क्रेयानुप्यक्षा क्रेंद्र-यायावयाक्रेया विवायम् वी म् विवाय रहिष् वे वेव रावे म् व वायव में यम् वी यम् मा तहिष् 

बूद्रप्तित्वळव् केत् क्षेत्रकेत्। क्षिप्त वुद्रव्य द्रित्र भेद। । तिर्विरः निरं वर्षन 'हिन्' ग्रिस् न्या । ग्रिस् चुन् द्रय **ह**्याधिद। |सेयसाग्रीयस्य न'हेन्'ह्यन'र्नु'तह्य ।स्याप्याक्ष्यः ह्यन्त्रान्व' तर्ना अविश्वात्यं वर्षे ब्रॅंड्स्यराधिव। विवरावित्वयायावरासुन्त्रात। ।इयाहिनाः ईर्धिव मृत्वरायश्चित्र। । यहंन्यस्य अत्यन्त्रां । तह्नां प्रे बेर्डी ह्यार् न्त्र । हिन्यार रूप स्ट्रिंग् न्यार रूप **इ**८-७,<sup>अ,स,स,स</sup>। विवायत्य थे.प्याचीया ग्रेट्स मवर्वित्यवायहूर्वायार्गः। ।देशकेशनवरःश्ररःष्ट्रंपुःपर।। न्द्रप्रान्यव्यव्यव्यवे । रद्रप्रवित्रः श्रेष्ठा स्ट्रिया **इ**ग् क्वे व रूप रें स्पार दिया । तिया वे प्राप्त विष्य विषय विषय । मन्यविष्कुन्यविष्ट्रविष्याः । तहिष्ठेन्येन्येक्ष्राकुन्यरः ष्राच्या । तञ्जला सेन् सुरम् शुरा में बार्च मासे। । विद्याम् शुरु या द्या **१**द्व'र'ळे'दिनेदे'कुव्'ग्रग्थान्स'न्स'यने क्रिन्'त्र'ख'ळ ग्या वा खाद्वान 'ग्रीकेंग' **८** राजात् हार गापार कें न्राक्षिया प्रश्लिय वित्र कें ता बर्दन्। गुन् गुन् जिन्न वर्षासु सेन कु धेन पत्र। केन पर्ने न्ना ने में न न वर्ष इसिंद्यानेन् ने बुद्यान्य या या गुर्दर ने ने बुद्या से ।

क्रुशतुःब्रवःव्याप्यस्यय। ।केंद्रदेश्वुःचेदःधेवःपःकःवे**दः** 

**५वा** | विन्तार्श्वेत् श्वुःवाषेद्रायाळावेत् न्वा | विविद्यादी प्राधिदाया कः बेन्'न्य। । पन्'पां वे'यय धेव'पां कः बेन्'न्य। । पर्देन् चून्'न्य। **७ भ**न्दाराक्तं बेदाद्या । इदारा रोबका केदा भन्दा । ददा रोययायानयाकु राष्ट्रिद'ए'क'येद'प्य। |यदयाकु राक्रं राष्ट्रां प्रेत्र'ए'क' बेर्'न्या । कॅराञ्च'कॅराकेर'पेर'एक'बेर'न्या । हॅगरान'के'सूर' रोयराशुः ८ द्या । रोयरायः हेन् ५ ८ स्वतं ५ देश । रोयरायः मक्ष्यम्बायम् । । यम् न्यायेन् । निष्ठेन् ष्ठवाकुळेवाराया । ररायविवास्वायायस्य द्वारी विद्यासकी महारार्यायवन विष्यायवन्द्रियाच्यान्तेरावर्यामा विर्श्वय परिन्देशन्। मिल्र्स्यून्यन्नित्र्यून्। 159 परामहत्त्रायहत्यानहत्येत्। |यक्केयपायान्याक्षेत्राया |देपनिवा इत्राच हे बदारा होता । प्रयाक्ती स्वर्ध स A'口취리'다'
- [본미시'고콜시다'
- [영'취리'
- [ | #드지다 건' म्बर्गम्बित्रञ्ज्ञात्रार्थम्य। विग्धाकेन्यितित्तुग्वर्गार्थम्य। ने द्रवराकेन् नु न क्रें वरायकाग्रन्। विवादायन स्टारी क्रें न राग्नी क्रें इरायारराषीरीयवादीरायवा । विवयादीराष्ट्ररायरादीवा । हैं न वर्षा ह व वर्ष द र या दाया दा । इंबर दिव वर्ष व केंद्र र वे न वर्ष र ने र वे व्यवा । विवयाक्य व्यास्याने त्यार्वनः । विवया शुरुरायाः। क्रेंवः याः मृगागुरागुरा द्वारा विंद्र दाय हर् परा द्वारा हे गरा हिर्पार स्वरं तहिर्या मति दूव द्वारा के नित्र का निवास के निव

# क्षंद्रव्याप्याण्यावाद्वराष्ट्रवाष्ट्राचात्राच्या

# 544'57'488'55'854'56'\$\frac{3}{4}\$

क् अंगु रु । हे पर्द्व के लार राम दे के दे छ र ह के दे ग र राम गुरुन्नेग्न्द्रां श्रे भ्वा अया तु स्व म्ये न स्यापायमा स्यापा गुन्न पर्व साम ह लिन त्र्य विन्य स्विन के वामि विवासी हेन व। सुर्वे विश्व वासि वासि नर्डिं श्रः देश र्वे न्यायो ने स्वायातर त्र्ति य कव न न म स न न स्वारा विमा .... मैकायम् पुनापति क्षेत्रमः संग्वदंशयहः प्विषात नुषापदा ने स्युन्त्वा ऍन्'न्न्ग'इवराइतात्र्वं राप'र'तात्र छंन्'वेगार्श्वेर्यान् जुर्वाच्या तुःसंनेवनी इतात्वस्याह्येन्यन्वत्याम्यनितःस्यनितःस्य इंद्रत्य। क्षंद्रस्युग्चर्युग्यंविषायह्रप्यय। क्षंद्रवर्रु चकु ८ वर्षे द्रपान् द्रपा चिषा देषा वर्षे देशे व द्रपा क्रवा क्रवा क्रवा क्रवा क्रवा क्रवा क्रवा क्रवा क्रवा क् क्ष चुन् रवत् चता पञ्च न र्वे जान र त्रि न र पो विषा चुन र विषा चुन र विषा न् बुर् बुर् बुर् हुर्। वुर् यार्थ्र प्रते तुर्या वुर् के ति प्रति हुर र्वे प्रत्यं त्यं त्रिक्के के इवया मुष्यवाय वया वया विषेत्र प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र प्रति क्ष हे दिन्याराभिन् न्याने राग्नु वृक्षारी विवा विवा वेत् । स्तारात देननाम् नम वेर करा वर्र प्रतर र विराधिका वर्ष पर'वार्षे'नैस'नर'पारि'पारे'पार्टा गृहेग ।वार'टव'र्सेट्'गृहुवा श्चै'श्चन'यद्यत्रम्म नृहेस। । स्यान्य श्चे 'यम्प्य स्थित्य प्रम्म नृह्य । । ग्रुवान् ग्रुवान् ग्रुवात्रं वरापते पुराकेन्द्र। । । व्यक्षे के सन् नः त्रिवायते विष्मवर्गाय। । व्रिंत् भू केंगायर में श्रेयश्य व्याप्त । व्रित् वर्ग्य यस द्रे क्याग्रीय। । पहेन न व व व द्रव हा यहेन। । विन प्र में वियास नहरः तुषाव। । तर्ने तर्म यावेगाओ चुर्म र्यवय। । इः इं व्राप्तरे इ.अ.न्र-मुडेग । न्वॅन्ऑं कृत्यम्तिः क्षेण्यन्तः मुकेश ळॅंन्'वा । अर श्रे आ हें येन्'परि इन् वियाया । विन 'हा हें ग'रन मे बेबबायार्वेत्या । ग्रेन्यन्यायते क्षे.क्या ग्रेया । पर्हेब्य्यायस्य स्वः ह्य सहेत्। दिवस्तरित्र से सुर र्स्यया वितर में हे ये प्रस्तर न्यवान्तान्वेण । बेन्जुनान्वेकापतिः विश्वासन् । वेना क्षेतुर्ने तुः र्हन्र पहुत्र। । गहुत्र ने गहुत्र रहे वसप दे तुरा हिन् व। । ज्याक्षेप्वायकुत्रायत्व्यायवान्त्रायाचेत्वा । वित्युक्षिक्वा न्नजी वेयवाय वेन्या । छेन् व न्याय दे क्षे क्षे क्षे छेवा । यहे व व्यवस्व (द्व न्नाय स्वा | दे हिर तरी तर् के चुर र्यवया | विव व्यमुप्तरेमुव्यप्तप्विष् । अर्थेयात्र्ष्यप्तरेष्ट्यप्पत्राविष्ठ

वि'क्र रावेर्पित्विग्'रा'र्र्ण्या । ग्रुअ'र्र्ण्युअ'र्स्यर्य धते'तुबाळॅन'व। ।अ'ध्रै'न्म्'स्ग्बाब्बायम्बायते'वे'सेन्वाय। । विन्'सं'हेंग्'रन्'मेंशेशरायमंत्रा । विन्'न्नप्यपदे'स्'केंशकीया । महेन'न'यळन'द्न'त्र'वे'हेन। १ने'हेरापने'पर्'प्राजे गुन्रंग्यरा। | रन्ने सुंकिरे केंग केंत रूर श्रेते'तु' अते 'संति हेव'न्र' गर्डेग |कंखुन|यद्रांदि रंकेंद्रद्राम्युया । न्युयादे न्युया तस्यमायते तुमा छन्। । अष्धि पर्सन्य में यापते सम्मेण उन्। । विन्'स्'हॅन्'रन्ने बेयबायाविन्य। विन्न्न'न्यापदे'स् कं विन्ना। महेन'न'बळन'६न'त्र'अहेन। |ने'हेबातने'त<u>न</u>'ओ'वुन्'र्स्यय। | यक्ति'सुरः तर्देव'यदे'स्टासुवाबान्दाविष । मुखातह्य'यदे'त्यू 'सुत्' न्त्रम् । सर्निक्र्यास्य म्यान्य न्त्रम् । महायानी गुडुद्यातस्यक्षप्रदेर्त्वाळेन्व। ।ळाडुे हु खुक्युत्र्राम् देवेन् । ।ळाडुे हु खुक्युत्राम् मयय। विन्'मुंहिन्'रन्'नेर्ने रेययायम् मर्गा विन्न्निन्यप्ते भू इयाग्रीय। ।पक्षेत्रवायस्यास्यास्यास्य । । ने ह्याप्ते पर्यास्य । इविका । विकास वाराय प्रियास देश में देश में स्वर्ग न्न-प्रतेतु स्वत्र स्न-प्रवेश । न्न-भ्रेन-भ्रेग स्वर्म स् न्नः गृह्य । । गृह्यकाने । गृह्यकान् स्थानि । त्याक्षेत्रं स्या 蒙可以花河、可多不到 | 阿丁学等可不下的别对对四首人对 | 13丁一可 न्यपदे'झे'क्र्रामुरा । पङ्गेन'न'यर्चन'स्न'म्'याङ्गेन। 15'8" तर्नेत्रक्षेप्ततुष्र्वेववा । मूर्यकृष्पतिमत्रत्यकृरः प्रः पृक्षेष । **ॿॖै'ॴॹॖॴॸऄऀॱॸॖॴॱॸॕॱॸॸॱॴढ़ॆॴ** | यग'र्स' य वे' हुँ राग्री' यय' राप्त ग्रुव। । ग्रुवरिंग्रुवरदिंवरायिंदुवर्छेद्व। । अर्धिवेदर्वे वियातम्यक्रीहेन्याय्वया वित्यहेन्यान्त्रीयययास्या होत्न्त्रप्राचति सु कें बांधीया । पहेन् न्यं वहन वहन सु या हेन । । नहेन तर्'तर्'प्र'प्रश्चेत्रवा । यर'वर्ष'रेश'र्र'वर'रा'दे'हेद'र्वेदे'सूर व्यानवानम्ब । विरात्विरानान्तान्वावान्वान्यवान्वाना ५''अ'भि५'म्बस'नेस'नेन'तेर्चेस'तुस'त्रित्र । । आह्वे'तके'र्वे५'ग्नेर'कं५' बेन्पति न्द्रिन्द्र । विन्द्रिन्द्र हेन्य ना ने देवद्र वा विन्द व् न्यापरि सु कें राय हैन । यहेन वास वास वास वाह वाहिवा । देश मागुरस्याय। है'पर्वन'श्री'स्पस्'हे'द्रा'गश्रद'र्घरस्त्रव'र्घस्त्रव' वॅं रम् न् नम् वे न् पि दे न् न् प् क्षेत्र । या पि स्यान प्यान विम्न स्व तह् वयावयार्थराष्ट्री मेन'श्रयात्रराचियाकुष्पयाद्ययाद्वरवयात्वुर न्। यक्षेत्राम्हन्विन्धन्यदेखे। विन्वित्स्येहेन्द्व्यार्ञ्ज हिन्दूर्वायात्रान्द्रियाच्याया। हेन्यईवाया इताय्वेरायाचिन **कॅशराशे तर्पर ज्यां वर्षे तरी यहर्षाय्या तरी हरायते प्राया रा** र्रेजिन्द्राचेरामुन्द्राया न्यायान्यानु र्डग्'विन्'मैब'न्'यानम्यानम्यानुब्याः अभिव्। नब'विन्यानेस्यान्तुब्य पति'त्रव'त्। **ॐर्यानैवा'नवत्'**पने'द्रवर्यानते'र्वेवा'तु'व्य'द्युन्'पाञ्चानीकेवा' गुर्-केंद्र्यान्स्य। रर्व्याची कर्ष्यहर्षे मायात्र्युन्'न्य्वरावके'यार्नराय्येव। न्'हुन्'न्रन्'न्'युद्धेत्रेव।

व्यस्तिः वृत्वत्यस्य क्षुत् प्रमान्य व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्यापतः व

स्वार्थक्ष्यां वर्ष्यं क्षेत्रां तर्रा क्षेत्रं वर्ष्यं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर् वर् वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर् वर्षं वर्षं वर्षं वर् वर् वर्षं वर्षं वर्

ने संजु न 'खे' न संया छेते हो या । दिया जु न 'न न संहू न पा

वर्षित्वाय। दिन् कुर् तेयस्य हैं न्यं दे के के स्या । स्या ने प्रा क्ष्म प्रा ने प्रा के स्व प्रा ने प्रा के स्व प्रा के स्व प्रा के स्व प्रा व के स्व व के स्व

स्वाराश्चे स्वार्त्र व्याप्ता विश्वार स्वार्त्त स्वार स्वार

इब्रायवयाई अग्राध्य अने द्राया धे थे वित्। विग्या द्राया द्राया द्राया वित्। विव्या क्रिया वित्रा वित्रा

सव्दु'व्यग्रद्भ ग्रुट्यार्थं ।

महन् स्र हें त्रित् स्र स्र स्र स्र स्र स्र महन् महन् स्र महन् महन् स्र मह

इसक्ष्वात्वर्ग्यात्वर्ग्यात्वर्ग्यात्वर्ग्याः विश्वायाः विश्वायः विश्वायः

ग्वेयायर्स्याष्ट्रपान्त्याळेन्य्यर्भन्त्। । त्यायायायर्स्याच्यायर्स्याच्यायर्भाच्यायर्भाच्यायर्भाच्यायर्भाच्यायर्भाच्याय्याय्यं विद्यायं स्थाय्याय्यं विद्यायं स्थायं स्थायं विद्यायं स्थायं स्यायं स्थायं स्

है। क्ष्यं न्यं क्ष्यं न्यं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्षयं क्

त्याः स्वाक्षः स्वाकष्टः स्वावक्षः स्वावकः स्

यहंत् कुंश्वर्य द्वारा दे द्वारा व्याप्त व्या

द्ररादर्ग्तं राष्ट्रम् स्वर्णाण्या । श्रिन्य ये ने स्वर्ण्य । श्रिन्य ये स्वर्ण्य ये स्वर्ण्य । श्रिन्य ये स्वर्ण्य ये स्वर्ण्य ये स्वर्ण्य ये स्वर्ण्य । श्रिन्य ये स्वर्ण्य ये स्वर्णे स्वर

अर्गे हे पर्वत्रेत्र यें हे। । तहे शं हिन् में त स्व द सा तहें र म। १८.वेब.तर.चेब.ब्रट.भग्रजीशत्रेषा । मक्ब.ब्र.ब.वेव.ब्र. ग्वेन्'नु'र्यन्। विरुवानु पंक्रम्यो वाच्युन्तु प्रमा । क्रवारा होन् परिवार अप्ता | वेषनु समसा हे पर्व द भी विषय देश हिंद **कॅबाइया ५०। छे५ 'व 'व ६०। हे व 'ग्रे छ प'५ ग्यू र मे बाब्या । ज्ञु प'५, पञ्च र** . अन्गेष्वःवान्यवन्त्रत्युव। । गर्ववन्त्रधुवार्वेन्नारम् क्वा व्रितिन नम्बद्धिः या न श्रमम्बद्धाः । इत्या हे ग्रा न सहा क्ष्र-(यग्रया किर्गस्त्रे मन्त्रास्त्रस्त्रम् । क्विन्यासेन परा गर्ने र यर तक्या | र गु खेर हु लेर न दे त ग ग है। या व स्री वास्त्रप्रमान्नित्याम् वृद्धाः विस्त्रुत् वृद्धाः विद्धाः विस्त्रुत् वृद्धाः विद्धाः विस्त्रुत् वृद्धाः व मेयमप्याया |नेयन्जुन्तुन्ज्ञुर्यर्षेन्या ।वर्गेन्त्रा न्यतः न्रत्युव। विस्ति नस्य द्वीयस्य विस्ति स्वाप्ति

क्षित्रेशम्बर्गास्यः संस्तृत्यः वित्रम्या शुंकु ५ '८ ज रा रा रा य धेव'यश्रक्ष्यप्रात्वस्य । र्ग्यम् हे खुग् चेरानते रंग्हता वापना । तर्भारव्यार्ग्यत्र्वात्र्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः रामः वेदालप्रायय। विदान क्विपः दुप्त क्विरः ता विदान गेंक् अन्यत्यत्रत्यवा । क्षेत्रने नवा क्षेत्र वात्रे वाद्या के। । क्षेत्र याग्रन्त्राशुःकुत्र्यम् । क्रुत्रयाग्रन्त्राशुःशकुत्रम् । क्रु इश्लीयः तथा वेटा विष्या । रेचा वे त्यां वे राव प्रतियाप हे पश्च बाम्बा । तर् वास्वापराय तुरायरा मृद्रापाय हुता । हे तहेता **र्गःर्द्रभेर्यः प्रत्यायया विरायः क्रायः विरायः** विरायः क्रायः विरायः ब्यट्गोष्ट्र अर्पायाद्र रत्युवा | क्रेंतर्ने प्रवाधि याययात्र स्ट्री। | न्यां ते क्षेत्रे स्पति पत्रुं चीन् तशुराधिवायरा हैं या या नात हैं या। वान्त्। । तर् वास्त्यार पत्र पत्र प्रत्य वुराय प्रत्य न्याः दिस्मिन्दारा ने वात्राव्या । ने वान्यां कुरात् मुस्ता में हर्या । वेबान्युट्यास्य। यट्युकॅंदेव्ये ग्रन्थर्डः भरः इवस्तुः सङ्ग्। ५ व्यवस्तुः तह्नाः यसः क्रांतिनः हनः विवश्हेबातह्वायात्वावेबावेषावेषायाच्यात्रात्वायात्रात्वा 25' हे'मर्जुन'विन'रु'यहेगाही विन'वि'यग'रा'वरा'केराचेन'रा परा अपरित्यान्य स्वापश्चर प्राप्त स्वीप्राप्त वि

वित्रं श्रेश्वर्यात्रे व्ययं त्रे व्ययं वित्रं वित्रं व्ययं वित्रं वित्रं

### ツール・イグ・コート・カー・カー・カー・ダイー

न्वॅ.सं.संक्रार् व्यक्तं क्षेत्र र स्यापे केर् छन् ह स्यक्ष्य स्यापे केर् छन् ह स्यक्ष्य स्यापे केर् छन् ह स्य

हिन्न्'क्षं व्याप्तान्त्रं व्याप्ता

विन्न् निम्म मान्न विश्व स्ट्रा स्वर्म स्वरम् स्वर्म स्वर्म स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम स्वरम् स्वरम्य स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम्य स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम्य स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम् स्वरम्यम स्वरम् स्वरम्य

ध्याप्रं क्षां क्

| तुन्' खरे' ख्रायाय में 'र्जे' न हर्। | वृत्र' संस्वा खर्'रा हुन्ब पर्दरत्येदा |द्र-'ने'ल'रद'चते'ङ्क्षद'य'ळेला |झें'नाह्यसंस्र गुर्वाकुष्ठम् हेन्द्रस्य। । हायदे ब्रुन्धन नर्द्रम्य। **'**R ग्वुबाग्रीस्ब्रिन्'ब्रुन्'ब्रुन्'ब्रुन्'व्रुन्पवर्षे । रुग्'स्दे'क्न्'यवर्षेत्राचरादेव। । ग्राप्त्र्व्यञ्चरायदेश्वरूप्यास्य । वेदान्त्र्रव्याया वि बर्ह्मन्द्रिन्द्राध्या हेप्द्रन्श्चित्रात्रव्या है सं वियाय दे र कुंग कर की इतार वें राया यह र में हि गा वुरा है। । दे देंग ळे 'न्ने'यनेबान्धन' र बन्यं कॅबार कन्' ग्रीन' स्नुन' याया 📄 हे 'यर्ड्न' गुःषुः सुतिः स्त्यानुः पत् वाराधाया विन्ति भूषा द्वारायस्य विष्या क्वॅन'गनरक्वर'यर'रे छेन। र्येन'यरिन्ट'रे तहेन'र्सेय'परिन्हंतानु ガイトを受け、後の数イイト、カイナッカー、おんし र्द्धना स्टार्म प्राच्या क्टिप्त तृष् वं प्रति तृषा हु। में वं प्रतासन में प्रतासन में पा इसराव मे। इसार है राधरे गहु गरा हु ना के राहुँ न न हों पा न्द्रेरियम्बित्रम् हिम्मेष्ट्रिय्रेयम्ब्रियवित्रम् इन् रेप्यन्ति देवाबी बु बाधर प्वीति दुवा श्रीप्ती रात्रा श्रु 'दु 'प्येन्या तरी गुव' '''' ब्रेट्डेन्ट्रेन्ट्रत्यर हुं सुट्पाय **美口袋女别如小上女见上弟**教和 ह्रण्यापञ्चरा श्रूपान्तेरप्रार्ट्स्याश्चर् प्रदेश हिर्दे प्रहेत्पर्झेयया ৼ**৾৽ৼয়য়ড়ঀ৾৽ড়ৼ৾ৼ৾য়ঢ়৾৽ৼয়ৡ৾৽ৼৼ৾৽ঢ়ড়ঀঢ়ড়ঀ৾৽ঀড়ৼয়ড়ৼয়ড়ৼ৸** বাগ্রদক্ষ হা

हेव्'गुव'द्रवाशुद्राप्यदे'द्रॉव्'यक्ष्या'ग्रुय। १ने'सप्यक्ष्यप्रेया'

धतेरम्पुः हेन्या । नेत्रान्य्यायात्र नेत्रायुम् अप्नेवाया ८ग्'चत्रुर्यप्ट्रॅर्'प्ट्'य्य'चदे'इत्यर्ध्रेर'चरे| । प्ट्रेर्य'युप'इ**य** म्बेराक्रेरापरिभार्यक्ष क्षिःश्चरायेर्दिर्भावायर्रार्द्धम्या । दे<sup>'</sup>त्य'चक्केद'देशक्केंब'यद'अ'दर्गकारी । रद्द'खेशक्के'क्केद्र'न्यरचदि इसार्वेरवरी । नुवानरहर्षेत्रवस्यतिसम्बद्धन्य। रत्यिव्यान्त्रविष्याः विष्यान्त्रियाः । देश्यान्त्रियान्त्रिया न्मॅबाबा । इवाबाडुवा क्षुवा समार हिंवा परि इता र में मान इस हॅग प्रनेग ब कुर में र पेंदरी । तरे र दूर है र के र के र के र ह्रेंगल। । ने'लर्च' यहरबाठी' पर्यायन मेंबाई। । इसहमा केंबा भुरप्तरप्तरे इत्यत् र्धेरप्पे । व अप क्षेत्र के व व व व व व व्ययाञ्चर्त्र्र्प्वययाञ्चर्त्र्र्ड्यय। । देःयाञ्चर्याववर्षः न्मॅश्र्रा । बून्यंन्ये करम्यविः इत्यत्रिं रावे। । महारक्षप्रवा न्नेपिनेकान्यन्य इस्प्यन्ते। इस्प्य हिन् रत्ने हु ग्रान्य त्यात्मा स्था संस्के हो। सत्य कु शक्ती पङ्ग्य पति प्रे ग्रा क्रेन'र्'र्षण'सर'र्स्र्राचमहेर'रेपप्रचार्या व्यवत्रेरस्येरेपविष *वशञ्चित्रपाद्रवशञ्चरादेव्वशञ्चायञ्चनावान्वदायतः* वृत्रवाद्यायः है पर्वन्श्रीक्षाव्या नेप्नाहिन्यर ने क्रिया नवाभिन प्रवाहिन्यर इयराग्रीय। एवं भारताप्ते हें सायु गयाय। रए भार ए विश्वय वियान विषा विवा केंग पा धिन। स्वा म स्वा म से बाही पा ही न ही हैं सा स न स ने पति त्र'विग'ऍर'गैर'त्न अ'प्रनेव' क्रेंश'नेग'गहारुव्यवस्यग्र'त्ने'

#### गहान्यार्थ।

क्षे.र्भेय्.अकूबे.बेशेय्य.श्रीचयाश्चे.अकु। वि.चयासेबेबराईया म्बर-दुःगर्राया । छिर-द्रमेन्दर-प्रमेशम्बेन-क्रिश्यकुर्वायम् । व्राप्ताकृत्रवेवकानेत्वास्यावते। । श्रेन्वेवकारुव् न्श्रार्केत्वाल |ग्रुगर्गर्म्स् नुदेश्वेर्।य्रःस्थय। ।शेःहग्।यरः इन्नेत्र्यान्तरत्। दिलेप्तर्नेत्रियरेप्तिकारर्ध्यय। मॅं ८ किया र में बरा के दिया है। विमें मार्य मार्थ स्वित माया में त्र् | निष्केप्तर्भन्तिपतिभाष्यम् । वर्षेष्वग्रीधि तर्दर्भिन्। विराधन्यार्विरेक्नेराकुगत्ता निःखेपत्र प्रवीपती मनेशन्मार्थिया । हार्च्याक्षणवाज्ञात्रक्षे श्चिम् । इं विना विभागते कुरार्वर द्या । देखे तर् प्रेमिर प्रेमे रामे सामा श्चु'खुश'त्रृंत्'ञ्चरशसुर'चें'तरी । वि'रं'ग्रेर कुर्याञ्च ग्रापात हा नेकार्त्र प्राप्तियमेगारम् र्यायमा । याद्र स्राय्य स्टिन् राप्ति व तरी । वारमान्य प्रतिवारमान्य । ने ले तर् प्रतिवार मनेशरम्'ब्राया । वित्रात्रं विश्वक्रीतिर्देशे । वित्रातुः लगः इन्यते कॅरत न त्रा | नेके त न नेवित्र में के र न के वार । वॅं वॅद देशन बुक बूं ८ रून । दिन निहेश केन सम्मित्र स्टार । नेक्षेप्र इंप्नेनिरिय नेक्ष्य र संस्था । वृष्य सम्ब्रेय शुक्र परि । ८६५८५ विश्वास्त्र । दिक्षेत्र ५ विषये विश्वास क्षेत्रया | माध्ययावित्वित्त्र्यत्यार्थाने | विश्वयावहत्याकृता

१नेखेरत्र'न्नेनिर्देश्वेष्यर्नार्वेषया । प्रयापत्र्या मदिनु द्वारा । न्यं वर्षे वर्य द्वीयत्रियवेश्वरः संस्रा | द्वार हेवाया से प्राप्ते के स्वाय प्राप्ते हेवाया से प्राप्ते के स्वाय प्राप्ते विकास हुन'यरायम् क्रेंर छेन्'रा'र हा ।ने'छे'र ह'न्में परि पने रार्ट संयरा।। यर संवयर र द्वाया शुरापति। । ग्वत देव श्चरापा न ग्राव संवित। । विश्वानशुम्बायम् न्नेपनेश्वाम्यन्दुः इम्प्याहे पर्द्वाया स्वान्यः र्मन् म्येन्प्रेश्वर्भव्यायम्याते हे न्यह्वायाय्या बक्कें अप कृत्। वित्यत् व्यात्रा वितः कें सार वे सावु कारा स्या विन्'ने'श्रु'पदि'**दन्'दरा'रो'**पद्य'क्र्रेंद्रहन्'ग्रु'व'पदिग'हे'पर्द्व'श्रे'श्रे' पदिद' त्वत्यायायय। न्यन्त्रण्न्ययायाण्यत्यक्षेत्र्य्याययान्यया हॅग्रायायवराष्ट्रीयाते। सुग्रायीय्यायार्रायापीयेग्यायार्थेयाया याने हुत्यम् । वर्षत्व प्रसार हुत्य वीषा राष्ट्र के दे अर्थे व प्रमान है से スタイスがインスト、お月は、日本が新され」

### ABY 新出土村上一八十二年日十二八十八十二

 ॐ'यहंद्। देद्'कुंध्यादु'येवयायर्ख,'व्ववयार्हेग्'यद्य्यायेर्द्याय।

हेंपड्व्'कुंश'ग्व्याद्यादि'यद्यव्'कुंव्'द्र्याद्यां क्षेट्र'कुंद्र्याद्याः क्षेट्र'य्यायाः क्षेट्र'य्यायाः क्षेट्र'य्यायाः क्षेट्र'य्यायाः क्षेट्र'क्षेयाः दुं'यद्व्'कुंव्' व्यायाः क्षेट्र'य्यायाः क्षेट्र'क्षेयाः दुं'यद्व्यायाः व्यायाः व्यायः व्

ग्वराद्वं वर्षं कर कर कुषा की वे दे र दे। । र अं अं र वर्ष दे र वे NAY प्रभू द 'हिन्' हे 'प्रदे 'ग्रुब् | भू व' स्व' द्र' द्र' क्र व' क्र द क्र व' क्र व' क्र व' क्र व' क्र व' क् ग्वराद्धं सर्वर मुता के भेट्टे | ग्वराक्षं मग्दर सर রমরা দুর্বারা প্রান্তর বিশ্বর বিশ্বর পর বের্ তর কেন্ত্র বিশ্বর পর বিশ্বর বিশ্বর পর ব रे'लार्चेत्। ।ळे'लर्ने ब्रेंलाय हराष्ट्र न्युक्त लाग्ने के 'रे'लार्चेत्। ण्यराद्रं वर्षर ठव कुला के भेरति। इं वे भेर र्मेव पर वायत त्र्राप्तनुप्तळ्च व्यवस्य । अस्य इत्यवत्र्यं कत्व्यन् व्यवस्ये दे रे वार्चेत्। । हें तर्ने क्रॅंशन हरायें न्व क्रुवार्की क्रें ने वार्चेत्। । ब्रह्म হ্মের্ডমভব্'ব্রুমান্ত্রীপূ 'ম'ম। । শী'ন্মান্তীব'ক্সমমাভব'মন্'মইলা' त्रिंदर्सेप्त वुग्वा दिप्दें ह्या श्रुट्य क्षेत्र स्थित् स्थित्। । स्रत्य ह्व'लबादम्'ठव'ल्ट्'क्वबाक्केंद्वे'ने'लार्चेव। ।हे'दन्ै ह्वापहर **অ**ন্ব'ক্তৰাক্তি বিশ্ব ক্ৰিল বিশ্ব কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰিছিল ক্ৰী বিশ্ব বিশ ह्मश्रुं त्रस्यक्षर्र्व्यायम् न्युयाद्रतापत्वाय। ।नेपर्हित्रार्

र्चेत्। । क्रेंप्रने क्रिंग्यन मार्थित वाक्रियकी क्रेंप्रे प्राप्तेंत्। । ৰ বা म्बुरुवास्य। हग्'न्यंव'ने'वेव'र्हु'न्न'यरश्चर'वय। প্রবা मर्द्रयात्वर्षाश्चेर्वरात्र्वात्र्वा व्यव्यात्रुर्यम् स्ट्राह्यस्यानुर्यम् सेरा विश्वित्राम्यः ह्वा केव्यां महिना स्तापा र्वा मारा क्रया हे D'ANI ळॅंअपॅग्'गे'च'य'हुँर। ग्वर'२ तुय'च'अर्दें न'र'विग'हुँर' दशयहता नुःहैन है। तनुतान् हुन निःहैन तासुतान्य। हे न हुन ल्ला त इंक्ष यहं न्'व्या न'त्य'न क्ष्य क्ष'च ति'वाध'ने' खुत्य में 'क्षें काकी'न् व्या रायाम्थरित्र्म् वायाकेन्द्री विन्यन्यास्य नवास्य वायायाकेन्या विं सह द्वा यहिव हि व वा ह्वा यो दारा स्वा स्व प्रा स्व व वा स्व क्रुअकी हेन्'परि'न्न्'प'र्ह्मप'हे। हुग्'हेर्पर ह्नरक्षप'र्शन्नन्न्' ग्नवस्य ग्वर दस्य क्षेत्रस्य ज्वर हिग्र सम्मित्र सम्मित्र स्था क्षॅं य श्वेर्प्तापा वे व्यद्याप्त दे सुना वा श्वापी सुना प्राप्त क्षेत्र हो। । कुला श्रेष्ट्रे स्टर**ा** スラ 新なスペヤラー、おきなったが茶べギ」

## नश्यावि'न'वेन'<u>य</u>ी'सून।

¥ॱश्लॅंबराचराग्रीॱ¥ंबर्युःसर्द्धेद्र'द्रश क्रिंग'चर'हेंन्'नु'ग्रेंबेबरायरे मन्त्रात्मश्रत्। वृत्वेत्र्रे पर्यात्राश्चेत्रात्त्राह्यात्रात्राह्यात्रात्रा दाविमानिकाहोतु:छन्।मविनातु र्वे कि.शु र्वकार्यन्।दाविमानिन।नवा। **रक्षप**ष्टिंन्'अक्ट्रैन्'ळेल'रा'चकुन्'ऄ॔न्'रा'शक्षक्रिण्'तिन्र'न्यन् राधेव्''''' मसारिका हैन हैन हेन देर दस्त्री सूर पर सरम है स्त्री 子で食 बावरः तर्त्रे जायेव परत्तु ग राया या उन्हे ह्रें पाया गरा नग्या यहर **हेर्न्यक्षेत्रम्नारम्यक्ष्यम्यम् स्थानम्यम् स्थानम्यम् स्थानम्यम् स्थानम्यम् स्थानम्यम् स्थानम्यम् स्थानम्यम्** पविष्युर ज्ञाप्य विषय प्रमानिक विषय प्रमानिक विषय प्रमानिक प्रमानि बैग'न्ह्यत्वस्यीः वन्ग्नरहन् वैग'ग्ने वस्य सम्बुग्यरायस्। हिंदु:इन्पाहेंब:बु:हंरियाच:बेंब:दाविषाहुन:बय। इयायहिंदप ष्ट्रिन'नेर वृत्य'व्हार्ड खेन्। नेराहे पर्द्वन ग्रीहार्य्य पर्ना ष्ट्रिन्'न्-'नुः त्र्ज्ञं'न्बुन्बयम् विन्नेन्द्रं' विन् व्याप्त स्वाप्त हो निर्मा हे निर्मा है नि ऍ न्य खुर्द्धन् संस्थे के नाम करेन कर सम्मा क्ष्रिन में के नाम के नाम कर कर सम्मा *ञ्चन*'त्रज्ञें'नेर'द्रणहेन्दर्श्वन्यः <mark>चेन्द्रायन्यत् मॅन्</mark>पर्वेन्यर्शेन्त्रन्। देरहेपह्रवृत्रिक्षव्यक्षक्षक्षक्षक्ष्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष हुंब्रायका क्षायान्य प्रमानिक क्षाया का स्वाप्त का स्वा

ष्पर'क्षे'भेग'रेग'ग्रेगयायायायायात्रं र'रे क्ष्रें व'त्र'र्सर'रा'ने ग्रेंन्'कुते न् ग्रीत्र'" न्वंशुं वतावतार्द्रं विद्वाप्त्रं विद्वापत्रं ङ्क'त्य'बी'त्रुचेर'पर'हॅब्'त्य'ग्बेग्ब'द'बाईर'प्र'त्य। ५'तुर'पेर्'बाङेब' व्यन्त्रंभग्त्रव्यायाधेव्यव्य। विन्त्रेष्ट्रित्य्यः क्रुवा'व्याकु'य'वीर'वेव'य'न्र'। न्ना'वा'नेर'यतुव्यान्र'न्र'नु र् १९५१ हे व र माना प्रकासका व प्रकास के विषय में के प्रकास के मान तर न्ना नेर्निन्नायात्र्र्मावेषाक्षेत्राते। हासामुनार्विनातुत्र् ロストを大きるとなっていて、多味、ならいいとがあったってましているというといい वस्त्रं ग्रॉन्डिंन् हं 'सर्याययस्त्रं हे 'यहं व् 'स' खुग्' सन् र्ये 'यहं स् वितर्य ब्रीप्रम् ब्रह्म अंश्राम्य द्वार्य में क्रीयात्यात्र यातात् स्या वित्युलार्चिन्दार्वे न्नात्त्वम् क्ष्रियान् वेर्त्त्ने न्नात्त्रं प्रवित्र देहि अत् द्वापायाया न्यं न्यं ने यान्यं प्रम्यं विषया विषया विषया विषया क्षातु प्रविवा न्य रवा दे माना द्वा विवा दे तुन दे माना नु माने माना चेरव्या शुम्बद्धवार्थे शुम्बद्धवार्थे न स्थानिया स्या स्थानिया स्य विदेखियातव्यवीयः देविश्वया

ह्रव्रह्मां सेक्ष्रम्यविव्यं विव्यं विवयं विव्यं व



सर देव'ठव'क्री'त्र'यातु 'ठंबपतु ष्वा | ऑस वि'कु द'रे ख्'त युर त्या | विन्तः भुष्त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विष्य विष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय हे गुजु तरा छु न भा । ५ गृष्ट गुरु गुज्ञ स् गृह न ५ गुरु गुरु । मिन् ञ्चरात्रीन् 'ग्रे' छ्वा 'रावेरावादरान् 'पर्। विः मिन्सञ्जे 'तर्वाना खुन'अ'रूर। |हे.वु.रू.र्टर,चु.टु.अ.चुन्,चच्चनश्राः। ।श्रेमशङ्काः **इं** इराष्ट्रिरक्वे प्रत्याति वेदार्थः स्टि। । साम् व्रिट्ट क्षेत्रात्रक्तः দ্রবা বিশ্বন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রা বিশ্বন্ श्चन देश्वन स्र र हैव। | वियाय में नाय देश में नाय स्र नाय हुरा। वित्र के 'रनवा कु ज्ञां वा भेव' पर देव। | हे त श्व व के दें वेद ' वें प्रवा पा | मन्द्रित्र्र्व्युक्ते हेर्न्युक्त्या । इत्राह्मन्द्रित्युक्षाचाचन्त्राक्षा बेर्। । शुक्षरम् में विनवा हेंग् हुता हु पन्ज्ञ महा । जुर् चा अं <u> न् श्रेन्य । विन्यम् द्रिन्यम् । विन्यम् । विन्य</u> क्षित्रयारुव क्रीपने व्यक्ष्याया । श्रीव स्थान्यन्य विह्यायाय स्था । <u>इश्चित्रम्भिक्ष्यस्यात्र्यम् । १५४, वश्चात्रम्भाश्चरम् । । १</u> नवि'र्रू स'हेन्'र् स्पन्त्रस्यापर'हेन्या । श्रिम्कुन्'यज्ञन्'कुछ'र्दे ह्य यविषा । गन्यसम्माके न्मु ह्याय हुस्य व्या । गवन् वया न्मु पङ्र'क्षेप्पर'क्षेर'खुर'। ।क्षेंब'वे'ङ'कुर'वेग'ये'पक्षेंबरा । १रॅ*व*' हुन्भेवराग्वेरातान्द्रम्प्रा । निन्धेरवदायापरिद्रता तर्चे राया । वरातर् पांचयाये विष्या शास्त्रेया । विषय प्रस्तान्त्रस्त्रस्त्रस्ति । श्रीष्ट्रित्स्य व्यवस्त्रप्ति । प्रम्पानिक्ष्याः । प्रम्पानिक्ष्याः । प्रम्पानिक्षयाः । प्

षर्म् स्यायर्षे र्प्यते शुक्त र्षे विषयत र्वापते श्रेष पुःवेग विश्वहत्यस्मानस्मानस्मानस्मानुग्व । महानः इंशयर्रग्रयंत्रे ह्यास्याने विष्या विषयं विषयं देव स्थाने विषयं हेता । हिंयान देख के बादेख अपी । अग ग्राम देख परं यो देख परं यो । नहुन्यम् नेत्र देशनेत्र वाहेका । सम्हे पेत्र कुन् कुन् नेत्र कुन् व। हिस्म्बर्शकाद्विमाने पर्वेत्परप्रवेश। हिस्मापार् नि ग्रिंग्यं स्वा । वसुन्न द्वा ग्रिंग्यं म्ये र विश्व में देश । कॅ रेश्वरुव के वाया प्रवास । दें त्यात हरा परि है न दूर न पर्वच्यं ने प्रार्थी स्वाप्तकृत्। । अर्दे अर ६ वर्ष विश्व स्वाप्त स्वाप्त पश्चिषा । मॅन्डोन्प्रवेन्प्न्यन्यं पॅन्यर्ग्ना । मॅल्रेवया त्रुम्भे स्पानम्या । मृत्यान्य स्तर्धाभे श्रेन्ति व्यान स्त्रा । तत्रवे प्रान्त्र रहेव प्रान्त्र | श्रिम ह्रेंग व हिंद प्रान्ति हुर है। । श्रुः श्रुगः न्या न्या निम् स्वर्था । विम् स्वर्था भीना छैन्। विकान्त्रिक्षं । क्षित्रिक्षं । विकान्त्रिक्षं । विकान्तिक्षं । विकान्तिक्

तुःस्व'न्न्यां सव'विवाद्धं रहें व'न्ना। । नः इस ने बहु न वी ह सि ला विषयान वर्षा में से मिल हिरा हैन महेर्द्रभग्रायां नहां क्षेत्र विश्व वद् <u>बॅ</u>न:डेन्'नडुन |र्ज़ेन'डेंस'हुन:ने'श्रन'वर्ग'या |नुबन्ध'डे'नाहुस' श्चित्रेन्द्रवायाच्या । वद्दाविदाः क्ष्या श्चित्रवा निवा । त्वित्रत्रित्वराधीन्य च्यू रहे। विश्वराकुर्ये कुन्धी इंग् मैदा न्ना (इ'न्तु'अदे'चन'ल'न्युक्ष'हेंग्'हेंन्। (ने'इल'दर्जेन्न' मिदिन् ह सम्बा । विसन् दिस्यदे त्या समामरा । पक्षे न्य न् उत्र छ्वा क्षेत्रव्य स्त्रेव। । वे हिंद् के देवा वा नि ने'नबाहितु'क्रन'रन'तर्वे बाक्रेंग्या । वेबाहे नर्वन'ग्रीबाने अन् वहन म'न्त्। यत्रितित्वस्यायाताः से यविस्वतर्ववस्य देवः परण्तर मशस्यादनै वर्षिकेर्द्रमः कुरावता कुःस्वादिनः सविगार्भन् पाने धन्वरात्रात्र मान्या

हे ग्रुप विप ग्रीहराय विष्य र विषय है । विषय स्थाप से विषय स बळ्ळराधवा । जुताप्रवार्धेष्वाचेत्रत्र्येयापाया । बळेव्यापा व्रहेन्यरावे व्यन्ति । यहेन्द्रन्छे राजाव्यवायाया । विनदाहेद'रा र गरेग वारा परिं र जुला नवा | जुः स्था वें 'धा हे 'इद र दर्। देव'चर'ठव'क्के'चर'क्षुर'क्षेत्र। । ह्युव'ब्टर'वहेंब'पदेक्षुर'देब'र्रः। । र ग्राय त्र त्र त्री र ग्राये र स्प्राय न न । विष्य प्राय में प्राय न में प्रा विंखतर्चेरानीञ्चर्भोगविना । यञ्चेरीयायस्थीरायस्यराञ्चरहे। । **८ প্রদারীর 'হ্রনমান্তর' ট্রা প্রমার্দ্রী**ল'ম। । স্নান্তর মার্লান্তর স্থান্তর স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান্ত স্থান স্থান স্থান্ত तमरमान्र्रेम। ।तर्ने हितु छ र र धि में क श्येव। ।हे पर्दुवः क्रीं विचरायायने गर्वायाया । श्रीयन्ग्यासुग्राह्याग्रीत्राम् स्थान् विश्व 'र्ने द'दे 'दे र सुरा प्राप्त । है । पर्द व । ग्री वाया प्रविश्व है । हिंद क्चिनेप्तराञ्चग्पतिञ्चयान्यस्यात्रस्यात्रने द्वासुर्यम् देशिविश्वप्यस्यम् सम् गुड्यारा

त्या | स्थित्रहॅं न्यं म्हन्त्रहें क्षण्यन्यविद्यायम् । विद्यायम् न्याः विद्यायम् । विद्य

शियन्यात्मात्रःद्विष्वञ्चतायरः । विश्वाप्रस्यायः यहतायश्च हेः यद्व ग्रीश्वायः यविश्वाहे। हिंन् ग्रीने यश्चिष्णां यदि गोदुः हे पनः सन्त्यः सन् देशाहिते वृश्वायदाय गुरानु गाद्य गा

हुद्विदुःहुनः वृद्दनः हु प्यनेदि। । श्वीरः नेष्या हुणा दिन नदिः র্মুন্ট্রন্র্য । একনের**'**গ্রীক্রন'বীকার্নি'ন্নি'বুকা । ন'ন**ন**' र्यर:बेर्'पतें:इस'वेदात्रिम् । क्रिं'वेपमः र्नेते'वर'तात्व्यवा । 第'A&'ロス・首心・大き、きょうと135'ロス・首心・対し、新たられ」 रःष्ठुग्यते पहत्यसङ्ग्रेग्युरात हेल। । ब्रु'हरा न्ग्रन्गर मंतरे য়ৢ৾ব'ড়'ৢ৸। ।৴য়'ড়৸'ৼৄয়'৸৸৾৸ৢয়৸ড়৸৸৸ ।৴ৢৢৢঢ়৸৸ प्रतेत्रकी । प्रतिप्रशास्त्राप्ति हेर्प्त्रका । प्रतिप्रशास्त्राप्ति हेर्प्त्रका हिर्म् ता । ग्रद्भान्यश्रे पान्यश्रुवाश्ची तस्य देव प्रवृत्त । त्र दाव देन ग्रायाकी न्स्राया । न्याया क्षु ख्याकी वाय क्ष्य वाया ह्या । पर दें दें ब्रुं न के का पान निवा | दें इस ते के रात के मेलु हे पिता बे'हुँर्'कुं'र्वरक्षर्र्र्यं सर्देर्। ।तुःभव् नर्गः क्वेर्'रेंके नरेरः प्रवित्। देशमञ्जूरयायय। यत्रिष्ठेतुःकुत्वीयाव्या हे मर्द्धव्यम्बा गृद्धः देविकाव्यम् अस्व प्रमार्थ्यायस्य प्रमार् गेतुः हेतैः ह्वेनः पारं ग्रां ने सुग्। सन् है श्रागुनः महिसामरातुः विसाग्रां तानाः । 75771

শ্বা বিষ্ট্রেশ্বর্শন্ত্র ক্রিলানের বিষ্ট্রেশ বিষ্ট্রেশ

प्या इत्यहंत्रीक्ष्याचेक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतायिक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतिसंक्षते। विर्णुदेन्यसंकृतिसंकृ

 मुन्ना प्रमानिकाल स्थानिकाल स्यानिकाल स्थानिकाल स्यानिकाल स्थानिकाल स्थानिकाल स्थानिकाल स्थानिकाल स्थानिकाल स्थानिक

तुःहितुःकुर् कृत्र्र श्रेषायातस्य । । र द्रार्थः यह छेदाक्री । प्राप्त स्वार्थः व्याप्त । । प्राप्त स्वार्थः व्याप्त । । व्याप्त स्वार्थः व्याप्त । । व्याप्त स्वार्थः व्याप्त स्वार्थः । । । व्याप्त स्वार्थः । । व्यापत स्वार्यः । । व्यापत स्वार्

श्चित्वार्था । विद्वत्वार्थित्वयाश्चित्वयाश्चित्वयाः श्चित्वार्थित्वयाः विद्वत्वयाः । विद्वत्वयः । विद्वत्

 तु'ळेव' नन्ग' कें व'केग' स' देव'कव। श्री र कुता विस्राधानता पत्रेशाउँ व वर्षा । प्रमुखा च वर्षा देन प्रदेश देश हो स्व । व्यव विरवहुग्रांतिःश्रनः झं द। । तक प्राप्तुः तक मानव प्रश्नन्य। । मस्वियायर राष्ट्री विवाधार्येग वराग रत। । यसमा मेरानी दें राता कॅन्'नेराबेर्। विरायर्गन्यंन्यंत्रायायर्ग्यर्गेराचंत्रा विर् हुन्यंदिः द्ररायञ्चरकुः वेत्। । नः कन् नेवाकुतायंदिः न्त्रं रः वहन्द। । कृष'पञ्चन'ग्रीवॅरपु'रेब'यें'के| | वृषयाशु'र्केन'पने'स'पर्यान्'ने| | इब्दान्यहेन्'बेन्'क्रिडे'र्ने र हुय। । मुब्दान्वेदे'इसार क्रेंट्र बेग्'स पक्षता |रोबरादेग'राष्ट्रेद्रक्र्रनीक्रव'र्'वस्था |वे'ह्रॅर्'केशे न्याप्तः शेलर्न्। सिंहिन ने क्वेन में लगानु नुवाया पर्वदाग्रीयायगुराने स्नित्राग्यापान्ता यत्राहिते प्रयापाना हें मर्डु ब्रह्मुत्रासुर्दि ने वाद्राकृष्ण कवानु वाह्य वाह्य वाद्य वाह्य वाद्य वाह्य भैव'वयाश्रवावय। श्रेशनु'न्यामान्निन्श्चु'यदीर्वे रातावीप्री पारा वा **यम्भित्रं विम्याह्य स्मित्रं विम्यादियाः म्रिकं क्रम्याह्य स्मित्रं व्याप्त स्मित्रं व्याप्त स्मित्रं व्याप्त** श्रन्त है। भूग नई न प्रश्न त्या द्या व्या व्या विदाय देश ग्राम प्राप्त द्या प्र

देव्योक्षामञ्जूनाधम्बुग्रस्य संस्थित्यायम् द्वा कृष्ण स्वर्थाय स्वर्याय स्

र्द् न क्रेस्यक्रम हमय हे उत्। | त्य क्र्रं न कर न्मार्य न्मार द्याच्या | निया बिक्त स्टर्य प्रवास मिर्म के हिन हा क्रिया | विषय हिन र्देन्। हार्जे के के नेया | ने ज़ग स्वन्यन्त थे त ही अवस्व | | ग्रॅंब्र् वर्षन् पुनकात इंदा स्व देवा रे देवा । दे वह न न र व व की सुन राधिव। । रत्यत्रम् वर्दे वर्षः राज्यस्य । ने न्या क्षा वर्षः श्चित्रिर्व्यभेत्। ।र्वर्तेदुग्नेर्यायन्ग्वरंद्व। ।हरायदाया हग्याकसप्यत्त् । विन्द्रम्भिस्यव्यन्त्र्भ्रेन्त्र्र । तिर्द्र न्'ब्रम्बर्किकोलयात्रत्र्वन्'ह्रस्यान्धेन्। ।त्यान्'नेयात्रिम्ब्रुस हिन्यतस्य । न्रहेब्क्न्रिंन्य प्रत्य प्रत्य प्रत्ये क्रियेव। । हेप् म्रेन्वा द्वा द्वा द्वा त्या । ने मार् व द्वा व त्या प्राप्त व हे पर्द्वाया प्रविद्या है। सुद्धिन श्रीकान्या प्रवत्र सुपा है। बीरिना त्रिंग्वहुवाकुत्रवाद्यायायात्राचेत्र्र् ह्वा क्रिंग्वे नेपस्स्वायित्रस्य करात्रत्याय्न् पहात्राव्याव्याविते व्यापव्यम् त्र्पहात्याया षु'गुन्यम्बेन्'र्ब्रम्ब्रम्न्। ।ध्यास्य ह्रेग्रह्मारह्मा यावरवा । न्यान्याः ह्याः स्वाध्ययम्यः कुषाः छेन्। । नुस्यनः नेयाः तस्या कुलाया प्रशेषाया । श्रिषाच र ये द 'ग्री पर्से व 'र र कु द ' वे द प द त इसात कुर न्याया प्राया प्राया विश्वन विश्वन प्राया विश्वन प्राय विश्वन प्राया विश्वन प्राय विश्वन प्राया विश्व विश्वन प्राय विश्व विश्वन प्राया विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्

इन्दर्धेन्येन्'रन्'ग्रात्यंग्रीग्'स्यर्थंठत्। विराप्त्रां केन्'यंदिः हृ ग्राधं व रहवा की त्रेव प्रयास करा | ने श्री सामा व में ने प्रयास व **१**व्यक्ते, त्रें त्रां त्रियं विष्यं त्रां विषयं है। विन्'वेन्'यि से सन्दरसम्बा । न्या नुगा स्ति गास्ता **इ.**प्रभूषे,रायः द्या । प्रयावेद,श्रम्याकु,रया,श्रुष्यया,भ्राया,भ्रीयाकी । नै'इत्यत र्हेर् रर्धिर्याचयराषित्। वि'हिंर्'ग्रीकृष्व करार वीतर्र्।। सुः भव निष्कुर ने विकार पति । के बाहे पर्दव विवास गुर ने भ्रद्गार्श्वरत्यायात्रत्या यदाष्ट्रितुःख्वर्ग्यत्र्यात्रात्रात्रात्रा राभगवा हिन्दिरंगहाराक्षेपविषद्यसा यगतः देव्विगार्वः **ह** प्रति: स्रवाया बेर् 'प्रया क्षेप्रग्राया के प्रयाप क्षराया स्वाराहेरान स्राप्त स्वाराहेरान स्वाराहेरान । हे बुल भु न र्वन द्रान्द हरा । इस अब्रिन या अर अप्र श्चित्र'रित्। श्चित्र'ह् गुर्श्वित्र'रा'राक्क'त्रात्रग्त। साञ्चित्र'ञ्ज रक्षपञ्चालन्या ।कॅकायद्विवार्तनुः कॅनायरकाश्ची द्वितः न्गत्याञ्चन्यतेर्त्यार्र्वस्या । न्यन्येन् मून्यर्त्वायार् নমন্ত্ৰমান্ত্ৰী ব্লিক্ষ্মা | ক্লুইকান্ত্ৰীবান্তী নানহৰ | | ব্লুইন্ট্ৰা ह्यरेशेन् सर्मेशा । शुनरा इत्या न्यान्य न्या । खर् अर्रे'सर ६ गया के जुन मन प्राप्त । । रान्य निर्मे रकी जुन मन गुरेय। विद्यमेन्भ्रवस्ति विद्यम्भावस्य। विद्यम्भाप्य ख्रायद्राया द्राप्ता क्षेत्रा क्षेत्र व्याप्ता क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र क्षेत्र व्याप्ता व्याप्ता क्षेत्र क्षेत्

तुःक्षपंभन्ने वेत् ख्राहेन्द्रा । नामहस्य विनात श्रीया परि बैर'इज'व। । नडुन'नतुन'डे'सु'दुदै'हॅ'अ'र्षेन्। । ने'देब'ळे**न** শ্রান্ত্রীশ্রামান্ত্রামান্ত্রা । স্থ্রীন্ত্রান্তর্ভরারী ব্রুল ग्रॅं बेन्'इन्'वेंदे'नेन्'ब्रून्याय। ।ग्रेंदिन्द्र्यं द्रग्'वेंदिन्द्र्यं पुग परित्या | तेयमार्चेयाचेषाचेत्रप्रेत्र्येक्षेत्रस्य नृत्या | वेसार्याः हेवा घॅरि:ब्रे:बेप'या । व्ययः पन्नः कन् प्वाधः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वाधः क्षेत्रः स्व खर-प्र'पाञ्चन्यक्रिक्नामन्प्रा । पर्स्नाम्यम् गुहेरा । श्विमकेशयहेन् प्रमाणी श्विम् हेर हो । नियायत स्विते क्र-प्राचारहेग्यारहेग्याव्या । वृत्रायाः द्राष्ट्रीरहेयाया पर्वेत्या । ५'यम्लु'हे व्येव्यवीय स्था । तुःह्वेदुः द्वम् हियानुः र्येष्यान् विना । देशहे पर्दन ग्रेस ने अन्य ग्रह्म वा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व हे पर्दुव इत्यत्र हैं रूपा द्वित् चर बेट में द्विप स्वार हैं गृ गृन पर की प्रदेशक । सर'न्वॅद'र'न्नेद'र'वेव'र देव'र देव'र तक नेर'वन्द्र'स त'द्रक्ष'त<u>व</u>ु ग्रापर' लुप्त कंतानेशलु में वृश्च मसुताया

हेर्जुन्यते इसार्वे रायहता लुगुरा ठवा । छिन् उरावेन विदया स्यान्यस्य विश्वता । व्यास्य सम्यान्यस्य स्वाप्ति मान्यस्य स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वा बेन्पदेश्यायम्ना अंभेन्द्रण्ये व्याप्तर्हिन्ने व्यक्ता । **५** पाक्षेप हेग्र हु प्रश्र द्वार न्यात्येय। । ५ मॅन्य र सर महंबरायु पड़िष्या । र मुर न्याप देगापाय। । दूर ग्राया है हि ते कु स्नर्म । कु स्न विन ने त्या विल । दि कु रायस्य इस्टियाधीयाप्स्रित। । गृतेन्द्रं विन गैयापापर पान । स्प्रज्ञ न'यह न'हे व'ज्ञ व'ग्रेशंयह या । नेन'तह न'हे व'या द्रयश संश धते हेव। । एके पर्वं वक्कि ग्राम्य स्वर्थ सम्बद्धाः । हण्य सन्दर्भाष्ट्रियाच्ल्य्याचल्या । विकानु न्यास्त्राचका हे पर्स्व मुक्तिया सबेका है। विश्वन्य कुर सहर सिर्म क्रियर र से विश्व म सुव १२ हुग नी की कॅस्प्र राजी भेरा। ने भारा मिरी हु १८ ने में व पा सुर स वया रिते वयाय द अगुर पु न वहार या।

ब्रह्मान्यस्य । विद्यान्त्रस्य । विद्यान्त्यस्य । विद्या

**दें व प्यान्य व संदर्भ की जुन्। । श्री न प्यान श्री न अने । स्व व स**्व 51 रास्त्रहरणरा । हिर्हेर्न्णग्निर्डें सुरवही । यर्ने हैर **छ**ण्कु'न्स्रेन्'यर'न्ग्र। । न'क्ष्ण्य'ञ्च में हेन'पते' गुन्'सेन्'य। । स्थ्रिंग्रिन्। । इंग्रेंग्रिन्ग्रन्यरन्दिः तश्चित्। । गृत्रेश्रवेन्। ষ্ট্রণ'র্ব'ব্মন্ত্রীর'বার্মবারা | ২০১৯ বিজ্ঞার বিজ্ঞান বিজ্ঞার বিজ্ঞান वृत्रकाद्वादायविदेशवार्ष्टराया । दुःवार्रः विकार्रे प्राप्टवा । महो गृतुग्'सदे दें द ह ग्रायक र कुग्'स्व। । ने दत्र द र दें र र प्ये শুঁগুমার্যাধীর। ।ট্রিন্'নেমিন্'ননি ট্রিমান্ননান্'রী'নের্ন্ন্। | भेंद अप्राची स्थापा हिप्राची हिप्राची हिप्राची रा ठव् की न्या ना ना सिंक यदि इस य य र हिंग या की सर र व पर । 35'

तहेग् हे ब्रायाओं संस्पां क्रे प्रसाद स्याद दे क्षणु दा प्रते स्याद स्य

हे इंग्नर्य से द्यार में रामा । यह साल ग्रा हुन परि प्रेर्वा वित्र । वित्ववार्ष्ट्र वित्र वित्र वित्र वित्र । वितर त्युत्राचाद्याद्यादेषा । १९४५ चर्चा स्त्री चर्चा ग्रुमा । देन्'त्रेण'हेब्'रा'इवश्रद्धं संदेन्। दिग्यन्त्र्न्त्यारा वर्षे हेश्यन्त मुश्युर्। ।तस्यायस्र्भ्रित्से द्राप्तस्य व्यापायस्य हितु:कुर:बॅव्प्यते:र्न्र्स्यादरी । ह्याप्यप्टावांकुवाकी प्रतारह्याय। । वारीन प्रिया विश्व विश्व प्रमान्ति । विद्या वार्य वर्ष विश्व प्रमान व ন্ত্রবা ট্রিঅ'অইবান্ত্রের্লার ব্যব্ধান্তবা্বা । ম্রি'র্লান্তবার্লার नर्ने ने हुवा दिन् प्रहेग हे व्ययक्षेत्र स्वित विवास दिन स्वास कुर्दिर्देश्वस्यम् । शियर्द्द्श्येगहुर्द्धार्यस्तु। भ्रन्'लु'र्नेव'ग्रॉब'प'यथा । हे'यर्डव्श्वे'वय'व्या सुर्हिन्'श्चे**य** ब्रिन्प्तवन् गन्द्रिकेन्द्रो न्द्राया वित्राया वित्राय वित्र तुर्दर्श मधारकेकेष्पर्रेग्पान्देरतुर्वेद्वराद्वार्षेता न्'क्ष'यन' पठरा'पर्देशकी द्वेन्'क्वॅन' सक्ष' नर्ने सेन ने क्षेत्र तर्देश पर्देश बादि संक्षंत्र वा वी भीवा दे प्रवास प्रमास मा विकास वि मिति व वाय व व म न र र म हान हार वा ।

र्द्राष्ट्रियुः कुराकेष्वया । वित्रां स्था केत्रां संस्वेत्। ।

| यर् श्रायरि में सं म् राजी नेरा तर्ने दे रूर् द्वर दें ह प्रायमित्। E.क्.य. इवयापाष्ट्रिर. धु.पड्रं या । ८ ४ हुँ र र्चेग र र प्राप्ट हु। या वियम्बंदिन वियम् वियम्बन् । वियम्बन्ति वियम्बन्ति । ह्य गुर क्य वेब व ग्रीप्य रहा दे। । श्रेन्थय ५ यम प्रविदे नग वय | ज्ञांतात्रा नेमात्रे वाशी मार्ग राश्यामन मारा 12014 ब्रुंब्रायसक्री खुड्याया प्राप्त । विश्वापा नेश्वाप ने में में प्राप्त ब्रिक्ट प्रेन् स्वितः सुन् निर्मा निष्य में व्यवस्य से व्यवस्य से व्यवस्य से व्यवस्य से व्यवस्य से व्यवस्य से बॅ्बा । बे हिंद् ग्री ग्रुट न्तुर र बे तर्द्दा । ऍव पर्या र र हिंबा दु र्थेग वा म्बर्। विवाने स्राप्ताया हितः हर ने मन अप्याया क्रीसत् केन् मंदिन्तिया हैन मार्सिस्य मार्सिस्य मार्सिस्य मार्सिस्य ष्रम्भेष्याप्रम्रद्वष्यास्त्रप्रस्तास्त्रप्रम् न्म्यक्ष्यात्रया हे पर्वन्यप्राथम्या हिन्वियस्रहेगान्त मञ्जेब्द्रम् मुन्यम् अपनिष्यं द्रात्रा ५ द्राया स्टिन् व्याप्या रही व *स्रयात्री र प्रशु वृ बा सुःप्रति:ह् वृ बा ग्री:वृ वृ ह*ा कें विवायितः ने खळे न्य साने गाणा चन्ना (अञ्चे न्यान चनः केश कुनः ना सुनः (त संत्या वे राजु का परा। क्कें वियावया सुने त्याप्यान हु सेन्। न पर्वययायानेन रेर ब्रेंस सुन्तेन। मुख्याकीनुबाबुनावृत्यद्वन्यद्यायस्यात्मे। न्गुदाया **8**.वी.वपुत्रियः क्रूटः विवास्त्रेट्रा ने प्राचित्रः यक्ष्यः प्राचित्रः यक्षा ष्ट्रेतु<sup>,</sup>कुन् मीनकवादात्यादें व्यन्नेत्यन कृतात्यावण्य गत्यन रूनः मीष्ट्रियनुः । ह्यव:उत्तराहे प्रविवाप:उत्तराहित:र्हेश:वुवाव:गवत:रय:कुवावयावु:र्नेव

#### 웹지성자기

हेत्यवाक्री में से मध्यापति स्रा । ब्रिन ने मध्ये वायक्ष में बाद क ग्रन्। १ रिक्रियरार्थ्यातुःवर्दन्द्रम्नामा । ध्रियःनेवर्ष्यन्त्रम् ठमाया बेरा । ग्वयामावेमा स्वाधी रीमारी । विम्रोसेयस सिर्या न् ग्राप्त ग्राप्त स्ट्रा | विष्या प्रांके विरार्चे प्रयान्य | स्यायाने व के व पारी राजवान में व । तुवान के ता हे न खुन व न प्रवास तह्न | देश ने हें न राष्ट्र के क्रिक्त | निवर दर हैं न करा तर्चे वायायतमा । तार्चमायार्चे वार्चा तर्चे वायाया । विश्वे सहना परितश्चिमान्या । अहे संध्यक्ष्यात्र्रां सम्बन्धाः । भूता स्राम्याहरू व्याचन व्याचन विद्या विद् मॅं अग्र हु अर्थ अपर म् इं रें प्रमेश । खु अग्र महत् वर खु र व्य अर् रान्। । नतार्मन् माने का की संवाद्यक्षित्। । सून् ने में न् प्रवाद्य [मानति:धारा | निष्ठ त्रान्युवं सेन् स्मानामा । विवास स्वा बेन्'रारक्ष्णयराक्षे विवेद्धियर्त्यराष्ट्रणयरमञ्जून। व्हिनै' इब्दिक्किंदित्या । श्रीनिक्षित्राचित्राचित्राचित्राचित्रा तस्राम्यारार्भ्रणात्माम्बा । प्रताब्दाक्ष्याम्ब्रा है क्षें नत्य सून् के वृष्टेव वित क्षें न की संदेश का साम हो हि होने क्विन्नेन्यस्यन्देन्द्रवेत्। । त्यान्तेन्यक्षेन्नेन्यस्यन्त्रला । हिन्गहर्के अर्कन्ग्वराधी ग्वन्यम्। । त्राञ्च छेन् प्रवेशया दर्वायम्बद्धाः । यन्त्रितः अन्त्रियः पुनेष्यपन्तुः ।

हें खुन्यहें वा वा निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के नि

स्वाष्ट्रेतिःकर्तत्वा वित्रार्तिः वित्राहर्तिः **५**८'| । त्र र स्वाराया द की यह ' ईर 'य' ५८'। । शे क्रुं व ' के द ' प्रव ' हर्ष्यापनी | नित्राधियापञ्चरहेपनायपरागन्य। । नि इत्यत्र द्वे र ते व साता न् र हु र हे र । १ न न र ज़ें र न के त्या **डॅ**८'। |र्नेर'रेडअ'र'र्नेद'यन्य गुरापु । थि'र थै बहाय हो' ण्डं वेत्। विष्ट्र पत्त् हे स्यार्ष्ट्र । वहाविष्यपति राया हन्यायार्श्वर्म । स्निन्द्वरम्रियम् दिस्तायार्ग्वरम् । वस्ति हैंग'हेर'दहेंब'चबांबु'च। १र'ने छैर'चबायादतुब'य'छ्र । ह्य ने गुद्र है स्ट्रर न् ग्रेस न् ग्रेस मही । । ता में र ता तहे न वा दा है ता वा न গ্রুন্। |ইপ্রিব্রেক্সভব্থেশ্র্রথেলেরেইন্র। |স্তুন্র্র্ণ্র वर्ष्टिण्ग्नाह्यस्य क्रिया हे व्याप्तरा । ग्राया माह्यस्य हिस्सा हिस्स हिस्स हिस्स हिस्स हिस्स हिस्स हिस्स हिस बर्धर। |ब्रॅंगराग्रहास्ट्रानेबरान्स्वराम्डेग्'रब्र्ग्गा । क्षःश्रेन्के पकुर्प्तशुक्षर्षर्। । सरभर्ने रसेन् प्रान्त्रस हर्गायाः गुब्द हे 'क्रेस प्रें का प्रें का अहिंद्। । स्थान वृत्य बहा स्वर्मा <u> রিম্মেশ্রর্মার বিশ্বামর্ক্রার্মী । শুদ্রার্মার্ম্র</u>

इत्यं वित्रात्र्यं वित्रां वित्राय्यं वित्रायं वित्रायं নর্হপাস্থাস্থাস্থান্ত্রপান্ত্রপান্তর | ব্রাহ্র षर्या । मःइतात्र्वे म्क्रीन्यान्दे वात्रे । । ततुःत्रेतिः ग्रेन् न ने'व'कुर्' । यवव्यानवण'में'वेर'दहेव'ने'व'दयेया ।ने'हैर ग्वत्वराखें ग्वासुत्वा । राग्तुसार्वते द्वरायानराप्तराचिता । हुनः ढंग्यनः पृत्रेकारीय । विष्यं न्येकार र्ग्रेमयहर्। । तुरार् देश्ययायाय दिवाचन स्वेत्। । तुर्हिर् क्षियामु'र-के'दर्ज्ञा विस्तान्त्रेष्ठाः अवरात्रेष्ठाः अवरात्रेष्ठाः । स्विध्याच्या । स्विध्याच्याच्याच्या हुः हुदुः छुनः क्रुनः दें त्र कें त्र हुन। यदा । हुः छे ने नः वनः येनः स्र्वां त्रया तल्या । न्युन्यवयान्नेन्यायुग्यान्नेन्ययान्नेन्य्याक्रा है पर्वत हिन् विमर्ग है गुर्क खुरा यह से पविहा है सर्व विद्या गुर से ग्रद्भान्।भ्रीयायाळेयाधेदार्र्मायय। १८ वेश्वेदालयायह्या वर्षाः हिन् क्रीं हुन नु देवाया सम्मन्तु । यन श्री र में होन न्या ही स्रोग *निव*रतृ'हें 'द'वेग'ॲंद'स'चे'क्रेद'ग्र-'दर्खग्रादशहें 'हे ग्रायीश'ल 'दें व्या 원 자성시'지

हे द्राय हों र के व में कु व प्राय व प्राय के व प्राय

**बिन् ।**क्र'खनसन्दर्भन्दर्भं ब्रायाबिन । ब्री'र्ह्हिन्'त्यान हन्दर्भ बेन्'**र्न** क्ष्रवा । येन् व्यवागुन्याव्यवाक्षुरः च मेना । शवा यन्या तर्जे वा वा च च न व्याञ्चेत्। |ने'यमःहे'मर्जुव्याञ्चावाचेत्रा ।तसम्याग्यमःस म्द्रान्द्वे निप्तात् । निप्तवाद्वि महुम्ब हे प्रह्माता । इप्ता ह र्षेत्रवान्त्रात्त्रवा । वित्रवातान्त्रवान्त्रवेतानावर्षता । वाहताता ह्मर्भरत्युं प्रायहित्। । हु 'त्र श्रुता शुक्ष ग्रीका ग्रेन विषय । विह्ना । पुर्वरः ह्याप्तरः वर्षः हैव'र्द'त्र। हिं शुदा मेंदा पृष्ठेव'त्रः सहसा सुव्या क्षित्र| |पर्वाप्यवास्त्रक्षेत्रप्रक्षित्र| |पिड्रिपर्वर्व्वर हेर्द्रश्रम् । सम्मत्रे श्रुम्यम् न्यान्य । इः इस्मान्यान **ष्ट्र-**दिक्षा । तुरु-देन-संग्रासन् नृत्य-देन । पर्गायास क्केश्वस्थ्यस्याञ्चरः। । श्चुःयार्वरक्केश्वयस्राहेग्या । वीप्टर्नर् क्षे'न् क्षेत्राचेर्रायाने । हि'इतावर्धेरान्यायायायावाया । विन् हर्मायर्न् प्रेन्स्याययाँ नाया हुन्। विनेत्र्यायाय स्वास्त्रायाय तस्याद्धग्राया । हे न्यापते हु ग्याधियाय न में न्यापया । पर्गाभगर्वा श्रीपाराकेकेल्या । गुलराहे पर्वा वर्षाकुराकुरा त्र। । इंकॅश्यीः ऋस्यायः सेन् :सेन् !त् : वि. केन् : क्रें : वि. केन् :क्रें :व र्हें । विवयः गुरुषे प्रायः सुरुष्य हिंदा । विवयः पर्वे वे वर **छै'अ'दर'। । पर**'ञ्चर'ञ्च अरबाज्ञबाबर्धर'अर्धर द्वा । प्राप्तर

द्रैव'ळेग'गहुअ'अ'र्घेन'व। हि'अ'यह यान' न्र-'के अ'त्र। हुताप्रवराक्षेत्राताहे सूर् रेंच्या । हुरायेंगास्तार् म्याराहें है। । दे मसन्द्रिंग्'रर्वेश्वाम्ड्रा । सर्वेश्वश्चन्त्रेश्वर्वेश्वर्वेश्वर्वे त्रान् भंदं साता भेगा विश्वता धिन् 'न्यायि कें साराम्य यया वया त्या त्या । मृत्याने 'त्या कृत्र'नु से मुँग'रा |हे'अर्द्रव'नेस'रुव'ग्रेड्यक्षेत्रायष्ट्रेव। । तर्णर ট্রপ্তের্বার্ক্রবর্ণ । বিশাস্থানানদ্রার্থ। স্পুর্বার र्मर-पराहे पर्वन शे हुन्या न में नसाय। मिन्न या सने रंग नुस्य ही'लक्ष'नु'चुर्राया'ने'लर्गत्रि'व्यित्यर्गरेय। न्'नेहियास्यान्हर न्मॅबाक्रुयानु न्मॅन्यावया मिति वुषायव यगुरन् नविया। तुःहितुःदुः स्प्रं वायन्याः दुं र वृं वायन्। ।हिन् न्योशेयरायन्व

व्याप्त स्था । स्थाप्त स्था । स्थापत स्था । स्था । स्थापत स्था । स्या । स्था । स

न्वर्यागृत्वराष्ट्रीः वृत्रं देवा । सुर्वे न्द्रं वे व्यंते त्यायानु स्ता । कुंबेग्'न्ह्त्य'त्वुंअंक्चेंस'न्र'त्रहेंब्या | ने'हेंब्'क्न्'ब्रॅब्'त्य नहत्त मत्त्र । श्रुम्यमद्भाष्यत्वेयभ्रम्यम्नेया । गुन्पविदे चन् कन्यस्य न्याय । नेयम् कन् हेन् स्त्रेया यह न्येरे स्त्रा । मनेवाधरामधिरावद्याचा । महेवाळवामतुन्धिपविवादनेववा विदा । परेदार्दे 'अञ्चयति विपार्केत्। । त्रकार्देर पर्वत् 'ग्रीकें प षित्। । तद्रैयानैनः तत्र दें त्र हेत् । ह्या या श्रीत्या । तर्नेन ध्येत् पत्रनः कुष्यायाधित। । तक्षेत्राचरानेकास्राविद्यार्थेत्या । वाविद्यार्भेव्य नतुन्'ग्रेसुक्रेंभिद्। ।नह्युप्नरादेशक्र्यंमिन्'ईद्'ग्रेक्। ।मध्यस नतुन्'ग्रे'नर्रव्रस्थित्। । वर्रायर्ग्नायर्थ् श्रुर्गनुर्देश वयराक्त्रप्तव्यात्रसार्भेर्न्स्याते। । तुरान्'स्पवयात्र'न्द्रकेद यन्त्रा । श्चिष्यक्षे प्राप्ते स्थाय प्रताय । विकार क्षे हेन रहेतानक्षेणवान्येणवा | वेशवाधिकार्येन केशाधनारहार। । तुरान् भूष्वयातम् पर्वन् विषया । शिन् हेर ने क्षेष्ठ व क्षुन् वा तिक्षित्रसम्बन्धसम्बन्धति । तहन् क्षेर्त्नर न्र क्रवराष्ट्र। ।वन'सॅ'क्र्द्र'चक्रुत्'ग्रै'ग्न्यरापंट्वेदा ।तु'हिंत्'ग्रै' सम्बन्धाः स्वाप्ते । इत्याद्धे रात्या के प्राप्ते । वितुः ख्ताः ने रेवरायान्युर्वेषा हेप्तर्व्याचीरान्युर्ग्नात्यव्याव्याव्यान्या मक्केन्यायस्य मिन्द्रात्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् **छ**ण्यर संग्वर्थार्स्नर पर्वाया अत्रार्श्चर । स्वाया स्व **र्श्या क्षेत्रा ह्वाप्त प्रति र्थ अपने हो पर्दन विन क्षेत्र ह्वान प्रताह न या व** परि'तुरा'शु'विर'वर' संब' पावेश'दिरशं वशा वर' विश्व वा प्रशामि प्रशामि क्रिञ्चेद'न्गरर्भेप्नः। कर्मेश्याचेरश्चरहेन्'सुर्याय'वायावेदावद्या मविन्द्यापान्नान्त्रायस्नियायया हे मर्वन् श्रीवाययया ब्राम्य विकारी प्राप्त स्थान में मार्थ के निष्य मार्थ में स्थान में स्था में स्थान में स्थान में स्थान में स्थान में स्थान में स्थान मे र्दूतायास्यायान् नन् तसुरानुसानिम मन् सरापानार निमा मन्सरा क्रीमागुरुम्यावया हैमईवानिमानुष्याद्वानिमानी स्वायानी में दूं प्राया पने व केंग ने न पर हें गया र तुया व्याय में वया विर वर वंदा म्वेरायाद्वेते र्रू राम्बुन् र्रेन्स् इवाकुताकु रूर्म् रून् र्। हे प्रश्रेन्प्तरे र्क्षण् के दुः श्रे इति तर्दे दाश्य न स्वार्थ । तर्य वार्य दे दार्थ द । त्वार्थ पति र्ह्मर-प्र-पात्रुअपाव द्रा व्याप्त क्रिक्षप्त क्रिक्ष विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष मनवान्ना श्रायान्दिहे नर्ड्व्यविश्वरान्ता क्रायानुत्रा मनरान्न्व्यायान्न्। नेन्द्रिन्यकेराधियाञ्चारान्नेत्रां दूर्पाराञ्चर मञ्जूताव्यान्त्र्राम्भ्राच्यान्त्रे। हिम्र्युव्यान्याः न्रुन्र्रास्य मस्त्र राव्याम्बुन्पर्देश्चग्कुळव्यां स्वयाव्ययाविन्तु प्रमुन्याने ग्नियरा ह्या अ श्वराया यह द्वरा इस की बेहा हु । अस दूर अ दूर हु गा हु या

हार न्य पा इयस्या छ्या तहता वा । हुन न हुन रहिन सहे उन Rदे हिन्द्वत्रका । सर्या शेषित प्रत्यकारण सुकारा है। । हितुः क्षन वि ना सन् परि क्षेत्रा नज्ञ व की वि न न न वि तर त में व व व व व व 5'पहेरा । चि'वयरामेद'यवत्दित्र्वं प्यंदा । । म. ५ 'स्रव'र्यं वाययायन। । इंद्यायाञ्च वयाने वायेन्यायान्य । श्रेष्ट्र क्षेत्रे हैं पत्रस्य प्रस्तियम् । त्रेष्ण क्षेत्रेष्ठ क्षेत्र स्त्रीयस्। मुँगवारम् न्याप्तारम् अस्तिवाराम् । गुरुग्धरः जुन्तुः हुन् धरः ग्रीया । ह्रांच 'ग्रेन' सर्ने न्'वा खेत्रवा । न्यव'वा ह्न वा लाईवाञ्चराचित्र। । श्रुरानु गुरा ह गुरा वा रामें रापना । र्झे वा एवन विप्त्रवाद्यायर मुन्या । इत्याप्त्य अत्यास्य । इत्य चकुर्'ग्रवर्यात्वाधेत्राक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्र म् अन् र्भेन्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वा । देवा ग्रान्य स्वाप्य हिन रेन् गुर्भाष्ट्रवायोवसारा राजञ्जनसावसाय व्यवसाव व्यवसाय विश्वसाय विश्वसाय

न्न'य'न्य'यदे'व्यस्त्रात्रत्। विग्नेश्र्वस्य रे। हिंद्रत्यान्यायार्श्वेन्श्वेद्। । सम्दर्शदेद्याया यन हेर। । वयन द्वा के के वा वयन हम हेर। । तमें दुवा के राव दा दर्शे दर्शे हिन्। | नेष्यन्न में व्यवन्। | हिन्दिन ग्रुसर्गित्रहुग्रांस्र्रार्ग्या ।स्रें क्रे. तर्ने न्यते त्या हुर्गित्रा व्याप्ता वित्राचित्र व्यास्त्र वित्या । प्रवीय वेषा सामित्र स्वर्था स्वया । कूँ द'र'ळेग' नेहें र दुने ला | दिने क्वें र पन है देर र द देने ला | इत्यत्र्य्यं राष्ट्रेन्यं राष्ट्राच्या । अवाक्ष्यं स्टाक्ष्यं प्रता मॅमा विक्षमययाउन् मॅमा ह्वा विक्षम्य विकास त्रॅंतिविक्ष्म्त्राया विवासिक्ष्मित्व्र्वाचतुत्वित्वाया विकासिक्ष्मित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्ष्मित्वा विकासिक्ष्मित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्ष्मित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित्वा विकासिक्षित केन हुन नुविधारिन। विभागन स्मान्य महामाधिन। विष्ठें वा मॅं या या हु र व पारे व पारे वे दा | विष्ठ में भू द भू दे व पारे व या या व हे गहिन क्षेत्र मा प्रमान मा स्थान के साम स्थान मा स्थान इंबर्विन्यन्यदेखं। इन्क्रिज्यवर्ग्यक्याञ्चनक्रा रशरां वित्तित् कुं कुं क्षेत्र र्वे वा स्वारं त्र न्या स्वारं वित्ति हैं कुं के वा स्वारं वित्ति हैं कुं के वित्ते हैं के वित्ते हैं वित्ते

मञ्ज्ञायाहे पर्वत्रायम् अर्थि । मायाम् विकाराया स्त ग्र्याक्तिका । शुन्त्राध्यम् कत् त्रिंदर प्रतिश्च। । प्रमान्या गुन्ने नु सुन्याया स्यापा । तनः हेन् पार्डेगा सु राज्या कुरा गुन्ना । ह्मां सहव में निवास राद ने हुँ राशी हेव। । नहामा प्रवास व स्वर स्वर प्रार निवा क्रीं जा । नदग देशं कुद निर्म प्रस्त स्त्र न स ह्यांन्नों ब्रूं राकी हेव। | न्यां स्थाप नार्यांन्य कार्यों क्या | निन्नांनेया ক্তুদ্ৰিব্দ্ৰিকাপ্তদকাতা ক্ৰিত্তিদ্বিদ্ধান্ত্ৰ ক্ৰিত্তি रन्। । तळें च छातळें तान्वे चुनको हेन। । ह्राफ् छन् वर्षे ह्रवादायते कु। | निन्वाने द्वायान स्थापा सुन्दारा विवास वादा | न्वार्श्वरक्षेत्र । विवरवार्षवायन्यर्भेव्वर्यस्यक्षेत्रः । वन्वा नैकागुर्रादिर न्यंन् श्रुर्वारा न्येन्। सन्ता । विवानहरू यया विष्यम् ५५ द्रां श्रेश्वायसाम् उपयम् से प्रताया । हे पर्वत्यमः भेत्र हु बनेश्वत्राञ्चाश्चार्थान्त्रायायात्त्राण्यात्त्राण्यात्त्राण्याः । णिवः द्री | क्षंत्रेण'र दिष्यं प्रच्यां व्याक्ष्यं व्याक्ष्यं द्राव्यां व्याक्ष्यं व्यावक्ष्यं व्याक्ष्यं व्याक्षयं व्यावक्षयं व्याक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्यवे व्यावक्षयं व्याव

## 

व्यां गुर्ड हो स्वर्ध व्यां स्यां स्वर्ध व्यां स्वर्ध व्यां स्वर्ध व्यां स्वर्ध व्यां स्वर्ध व्

त्तुग्याय। हेन्द्वं केव्यं या प्रवापन्गं हिन् हुग्यां या क्ष्यां स्वापन्यां हिन् हुग्यां या क्ष्यां स्वापन्यां हिन् हुग्यां या क्ष्यां स्वापन्यां हिन् हुग्यां या हुग्यां हुग्यां या हिन् हुग्यां या हिन् हुग्यां या हुग्यां हुग्यां या हुग्यां हुग्

रिव्यवन्त्रन्त्वादित्वादेवावाठव। । तवाहिताह्याचार्वेताहेवा **७** व । इसातर्वे र र धर विर ग्रेग हैं। । ग्रे कें व हर र र र नि दे विर स मा | इंबर्ट्स न्नाम देवान मुख्या । मत्ना है प्रामी महत्र है दे भी महत्र मुख्य ब्रन्या । भून-निव्यानपुर्वन्यावन्त्रीया । प्रविषः ह्रणः वर्षः सप्तद्पन्न । गृहेकाबेन् ब्रन् पें न्रायकेनका विकारन म्ब्यायते मिन्याय न ग्रा । न्या क्रेंग स्वयपते स्वय विन्दे । मेन्यापानेन्यतेष्ट्राचर्यावया । यहंन्त्युवाद्युरावते क्ष्म चड्यापया विषयां अप्याचेत् चेत् विष्ठ विष्य मही । तश्रानु त्रानु श्रेश है व है। । हिन तहेग हे व तरे थे रें व वर बारवा । नः क्रेप्यामान्वाकी संविधाना । क्रेव्यामा । क्रेव्यामा । षर'गक्षा |व्यासुन्यासुक्षीन्यम्बन्यस्यम् ।नेःस्रन्य न्येन्द्र'न्द्रवाराधिद। शिव्यञ्चन्द्र'ञ्चनवाराधिद। द्विण्य

र्गुश्यर्यस्त्रिं देवग्वित्याद्वा व्याप्त्रिं व्याप्त्ये व्याप्त्रिं व्याप्त्ये व्याप्त्ये व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्ये व्याप्त्ये व्य

हॅं ब रेंद न प्र न न न त है 'हें न ब ब मिद्र | विंद 'है ब स्त्र न देंदें ह्या हें व प्राप्त । वि प्राप्त हिंद की बार वे बार वे बार वि व विश्वादा विदेशियारसाराधिदा विन्तात्रात्राञ्चन्यस्यान्यस्य **पे**न् । श्रुम् तुराष्ट्रयाप देश्वेया छेन्। । इंग्यायेन श्रुम्या मति इतार्वे र भेव। | दिरे भग व महर मति श्वार हर है। | न्दः संकुष्त्रवार्यवायाक्षेत्र। । नन्दः कुष्तेनः गुवायसः नहरा । হ'অ'ব্'বর্নঅন্তর্পাত্র শ্বামা ক্রিমে ই'ই্রান্স্র্ব্র্ব্র্র্মেমা । चन्ति वे देव के व सह ता चन्ता | त्री वर्ष के के द ति का द वर्ष हा **র্মার্থা । প্রশের্ব'ব্ব'বা ভর্মীরাপ্তম। । ব্'ঞ্জ'ব আইন অস্তুর্গ।** तरे:रॅब'ब्रॅइ-'ग्रैक'र्म'अ'र्म । तरे-रॅब'ब्रॅइ-'ग्रैक'अ'र्म'न्। । तरे-रॅब मन्द्रिक्षतेष्वार्यसङ्ख् । श्रुक्षा । स्वार्क्षण्डः मन्दर्पः दे। । दिस् पतिः गृतिः सं पठन् 'पतिः ह गृत्। | श्रुष्पः र्वेगः स्टेग्सँ पठन् 'पः ने। | द्देर्डियार्म्यायाच्याप्यतिः हम्या । हिर्म्सिन् यार्मेरायाने । इस मतिः सन् म्राम्य स्वर्षा । श्राक्य न्याय सन् वित्य ने ने प्राप्ति ।

न्वितेवरावित्योप्तराप्तराप्तराप्तराप्तराप्तराप्ता । इंडिप्तर्माप्तिप्तिन्त रान्। । वेबबाग्रुग्वित्रेन्द्रायाञ्चरवापिते हग्व। बार्चे अपरात्त्रम् प्राप्ते । वित्यार्वे राष्ट्र अवाशुमेव परि हम्म इन्याखन् श्वापत्तुन्यानी । इन् इन जुन्य अपर्दे न्या पर्दे न्या । इन्त्यस्यत्यत्वित्रातत्वायाने। विन्येन्यविन्नास्यत्वामा इन्यं हैं नवान हु अत्तिन्यं दे । निवित्यं भुन हु अहं दः परि ह नवा । इंदिर्म्यायश्चरार्द्रे विद्रास्त्रे विद्रास्त्रे विद्रास्त्रे विद्रास्त्रे विद्रास्त्रे विद्रास्त्रे विद्रास्त हगरा | श्रु हुं वायात्रियापरायहुगापादी | इसाविद हुं सार्रा न्नयानितः हुन्या न्नियो प्रवाद गर वितः तर्हेर पदि । हिंदा ह्रा द्रै'व'वेर्'परि'हगरा | अ'य'शु'गु'रर्ग्'प'रे| | कॅब'दवब मययाक्त्रभूत्रायिः मया अात्राया विष्याचीयाः मिष्वप्रक्षिप्रम्भितिहरूम्य। । व्यामिष्ट्रम् ह्रियात्र्यप्रम्भि । मिन् क्रि इतार्द्ये रामर्थाया । इस हेंगा खं सें प्रमानि ह गया । खं केंग रेकायोप्यकाम र्जुव पाने । किंका र्जुताम विव प्रवास सुन मार्ग । ं इंग्वहें संविद्धित् दुर्दित प्राची । तिर्शेष्ट्र प्रित्त व्यादी ह गया । ञ्च वित्र इत्र श्री श्राम अस्त न् । इत्र वि स्टि स्टि स्टि श्री अपनि ह नव। | तकर पत्र र वर्ग के वर्ग देश पर है। | ह भी प्रवर्ग है। सतुरापति हम्या | श्वायाञ्च वर्ष म्हेराय हमापादी । इतात हिं राष्ट्रेरा दुसळे न ते ह ग्रा | र ग्रां अ से मान ग्रां मान हद्कुर्यतिक्ष्या दिल्लप्तिन्यहण्यादी । इतावर्धिर

वैराप'यहेद'पदि'हण्या । इग'तन्रस'ग्हेस'सुन्नेय'प'ने । हिप तह्ना'यय'र्'तहिरानते'ह्नाया । क्ष्मा'यनस्यानु वह्नवस्याने। । शुं मण्डमायान्द्रम्यहत्याचितः हम्या । द्रमायते हिन्दं स्यान नम्यापने । इयात्र्येर कुताविवदान् भ्रेरानदे हुन्या । श्रेक्षित्र विना अन हुन्य पाना विरञ्जर ज्ञान शहार हिर यदि ह नवा विरायम र नाम र्यः ग्राम्य । विश्वास्य विश्वास्य । नियाक्षेत्रमान्ववाराने। इन्वार्कन्वराव्याप्रमानेक्वा शु ती इंदर्भ प्र न गराया दे। विदर्भ प्र वा त्र गहिन परि ह गरा । वियार्क्षराह्मवा केवा यह वावाया दे। । यवा कवा वार्ष्ट्र वा श्रम्याय दे ह वा वा । पार्विते होत्याय नृज्याया दे। । इत्याये नृत्यात हेत्यत ह ज्या । द्रीयानु न्येरानाय हुन्यायो है। । अब्दाया अन्यय द्वरा स्रेनाय दि हुन्या । इस्यान्यान् ग्रान्यम् यह ग्रायान्। ।तुःश्चर्यायन्यान्यान् | इतावर्द्धिरायम् व्यवस्थायाने। । श्रीवृत्यम्यकारीका तत्तापतः हण्या निर्देवपार्यण्यत्दे परे विकासुका चन् सन् सम्बद्धान् । विक्षित् प्रत्यत् । विक्षित् प्रत्यत् । विक्ष क्ष्यं व्याप्त क्ष्यं प्रति क्ष्यं । देश्च ख्या प्रत्य क्ष्य विष्य । चन्-न्यंचन्यन्त्र्यः क्षेत्रः शुन्त्। वित्रं क्षेत्रः श्रुप्तः शुन्तः शुन्तः गुरा वित्यव्यक्षित् गुराह्मा स्वायह्या वित्यस्य 

क्रिक्षम्त्रिः विश्वभवः देः अगुर्त्तरहें नग्राह्मः । क्रिक्षम्त्रिः विश्वभवः देः अगुर्त्तरहें नग्राह्मः । क्रिक्षम् विश्वभवः क्रिक्षः ग्राह्मः निव्यक्षः निव्यक्षः निव्यक्षः विश्वभवः विश्वभव

क्वां अर्देदी महिरा में देरा तुर्या | निर्मेश तर्दे न शुना पराक्व शहरा है। शु न् नत्र दें तहें नार्ये 'अत्मन्यं पा । तहें अत्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र श्रीत् बेर्। |र्षद्ध्वर्भ्रधेर्भभारत्। |ष्ट्रेष्यं छःपरळाळका है। अत्रिन'न्सॅब'र्सेनाराबेन्'खायन्या । नन्'लन्स्यानुस्य सर्वेर प्रेर्। | प्रवर हुन बुद श्रेष्ठ स्थाप देव। । वर कं ग्रर रोयाचराळायळेयाहे। विनापनार्येनचेंचायान्याम् विनायता पः इवश्याप्रस्ताते श्रीव। । यशकुः तत्रशः नगनः यः नवे पः चहुत। । बर्चिन्द्रसम्बर्चित्रप्रत्रकायकेषान्। वित्त्रप्राचन्त्रविष्यायस्य वर्षाः। द्यन्त्र्वार्य्यायन्त्रक्षकेषाते । विभागत्र्यंक्ष्वंविष्यायण्याया । न्नतः वेत् द्वरातान्त्रत्त्र्ता । कृत्यकृत्वन्त्वान्त्र्यः हेरा विदेशनार्याकुपराक्षां विकारिता विश्वितार्या च तुनः स्वरंशिकेष वात्रिमः नेवा | न्युत्यनः वेत्यः च मकेवाने | हिन्'रुन्सं'तर्व'वं'यायप्याय। विशेषस्थ'रुव्त्याञ्चन्'न्यनः बेर्। । वर वेर दॅरकी गर्हर वर्र रे। । रर कुण समिव पर रहा बहराहे। विन्दर्स्ट्रियार्च व्याप गराया विन्यं न्तु रहेग मैकानहें न के मिन् । निक्तादर्दें न के तार का मान्ना । हे न वका रे देव र यादा महेया विद है अखन मेन द हैं न हुन में महाया । द्या यत्र्वर्यस्तु द्राया या केष । दे क्षेत्र्या या सेवा ।

विन्द्रायन्ग्यम् विस्त्रात्र **८ ই ঐ র্ব'**ব ছ অ' 5' ব র্মা इयरा । छे दिन वृत्येन क्षेत्रयम हेमा । विद्यम् श्रम्म वित्'विवाद्यायाववित्याद्या द्या द्या वित्याव्यायाव्याव बार्चब्राच्यानुबाह्याः हुण्युः पुरुष्याच्याः व्याद्याः द्वयाः हुण्याः हुव्याः हुण्याः हुण्याः हुण्याः हुण्याः ब्रॅंब्ययत्त्रेयाचात्र्व्याचात्र्यायाक्ष्ययन्यं चन्द्वीत्म्वा धन्देर्यः तर्भिष्या प्रमाण प्रमाण स्थान क्रीसार्च्यतस्यवाया न्राहेगान्वसायायाः स्वाधवाकी न्तर्वेष तर्वाराज्यार्र्रायाचेत्। यरक्षेत्रयान्त्रकेरात्तुन्यान्याके। तुला ने नः राज्ञेला नर्षन् व्यवागान्य ग्वापत्र। वृनः ने संबु हव्यन र्घ'र्षर्'प'क्षे'त्रवॅर'। वित्रेक्कुर्'राग'रे'र्षर्'प'वावॅर रा'पेत्। रा छेन् पायान न्त वा के ने न चेन्। वा के वि न क कर वह त के मायमात्रिव्रस्त्रव्याक्षकव्रात्रात्र्याचित्र। व्रिन्रधीयाक्ष्याचेन्रमाक्षेत्रा নণ্ডেশ্বাতীশ্বাস্থান্ব্ৰা হলটি্ব্'মাস্ক্ৰ্ৰ'মঞ্জান্বা ট্ৰিব্' रम्यम्प्राम्याम् इति इत्राम्याम् इति इत्राम्य न्त्रं हुन्त्रं स्थान्यात् श्रुन्त्। हें हुं अत्य हुन्त्र हुन्य स्टन् में ने त्या के त्या विश्व का विश्व के त्या व र्ग'ग्रॉवर्र'र'व। वी'नेश्रांश्चेश'र्'त्वें'प'मेव। हिन्'वि'क्रंस्पित्रें র ব্যব্দ ট্রীমানির'র'ব্রুনার্মামের্মের'য়ৣয়'র'ব্রীর'মানাতীন'মরাগ্রুনার্মন র্জমানহী **भै**न सुन्दे न सन्धे '**वेग**'यें न सन्धेन। सन् 'ते 'ते सन्धे हिन 'ते सन्धे स रेट्येश्वरूट्यायरक्षायहर्या खन्यान्वेन'र्कसप्यम्यकेरानुस्रीस्रिंग्यर्गन्त। नेपसन्निर्नर *ଞ୍ଚିଷ*'ଧ'5୩'୩'75'ଧ'**୧ଟି**'ୟଷ'ଅ'୧ଥି\*'ପ'ଜି୩'ଥିଷ'୩ଥିଟସ'ଣ୍ଣା मर्द्वान्म्वाञ्चरामविकारः श्रेंबकाक्षीक्षातुः तार्चिवामवा सावार्चनः विवादा ह् प्रसंख्या राज्ये द्वें द्रारा विषा द त्या रा ने वा दे। इत्र'त्र्चेर्र्प'इय्याण क्ष्युग्रांतर्भाराक्ष्यव्याद्वापान्यः भ्रमारा द्वार्णः नीव्यवा *बिद*'र्र'ब्रॅंबराग्रीक्वॅन'परार्द्रग्वात्त्र्व्यपाग्रीत्रायात्तेत्र्रिन्'न्नः हेरः मरा हे नर्दुव भेवा विन्यमा स्वाप्त के कार्य निम्य के निम के निम्य देन'सप्पन'रा'न५न'रुन'ब्रुन'क्रीसभिषं ने'मबादेन'सपबानगर्यदे' त्रेत'प'त्रहेंग'हैर'५'व्रकाकुति हैं'प'विवाक्षं र'६८'वाहरायमा राधिन'राह्य ने कें ने परंक्य पर्दे । देन 'रन ने खन्य श्री कें कें कें कें Rदि: सूर न्याया शु: भेव 'चेर| विंर म: वी खाव या शी सू क्रें या शुंद 'घा कुरा यर्यन्त्रवाद्वित्र्त्र्वस्य स्वाद्वार्यात् तृषाषि चेत्रप्रया हेर्यद्वर्श्वीष्वत्र म्बार्विराम्बारहेष्यां म्बार्वे स्ट्री श्रीयाम् माहे। श्रूरा नुष्याम् श्रीया ळे 'दर्दि' सें'दर्देन 'शुक्तेन 'तु 'भेग 'वग 'या न स्र बेर्'र्'य'ग्रुपश्व। चतिः सेन् देन् वाक्षिः कृष्ट्रीयार्श्वेत् भारत्य स्वयाययार्थन्। सराय सुरायार्थित्। विवाः ।

#### वगुरत्रे गुजुरकार्य।।

लर्ने न्या व्याप्त व्याप्त विकास ग्वन म्वा वारा के के देवा विकास के वार्ष के वार के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार के वार्ष के इश्च विश्व द्वीत्र व्याचित्र स्या विद्याप्त के क्षेत्र विद्यापत विश्व विद्यापत विद्यापत विद्यापत विद्यापत विद्य सुन्वितः ग्यम् त्यास्त्रस्त्रम् । इत्याम् भिन्त्यसे सेन्या । वस्य बरि'त्युर'त्वावापडेरबाबवा । परे'प'केव'र्येरे'हेर'रिहेव'रे।। राते। |अर्थन्'अर्ने'रूक्षाग्रीकायाचिरकालवा |सूरापाञ्चावरङ्गेका <u>বুৰান্তা | নিল্'ব'অৰ'মান্ত্ৰ' মৰা | শ্ৰমণ ছূল্মান ই' মৰা</u> व्रव्याय। । यन् न्व्येन् यर्थायम्न प्या । रन् येय्याये दर्शाहरा न्याया । इत्र न्न पर्वे व्यवश्याया न्य । व्याया न्यायवायाम्बराचर। ।शुन्याररान्मरयाश्चरान्य। दर्देते बे तर्दे द्रांद से ब्रायका क्या | वितुद्रां के वित्र कर् व्यापे व व्याप वुन्द्रमन्नक्रितास्य हेन्याम् । क्षेत्रम्भ विषयां भवाया हेन्या व यत्र'क्री'अर्मे' म्रॅप्न्यायुष्ट्र' स्वस्थित्या । त्रिम्र'प'र द्र्रेस्टिं ज्ञास देव। |देवज्ञप्पराद्यां ज्जुदाया हेव। | रदावर्देदाये व्यवस्थितं वहूरी । द्वानश्चरवात्या हैवारा सेवासी राज्या युरहे। मैन्'तु'यर्'नेंयसंरक्षेत्रेत्र धुण'गर्थताव्यश्चेत्र इत्यादर:रु:यन्द्रद्राच्याद्यापञ्चेद्राचगुरः सुद्राध्यळेव्यायाध्या है।

त्र-त्रह्मान्द्रभूर्द्र । विकास्त्र-तुः कृष्ण्यात्रम् न्याः न्याः कृष्ण्याः विकास्त्र-तुः कृष्ण्याः विकास्त्र-तुः कृष्णः विकास्यः न्याः कृष्णः विकास्यः न्याः कृष्णः विकास्यः न्याः कृष्णः विकास्यः न्याः कृष्णः विकास्यः विकास्यः

### 

ह्रणयात्र क्षिट्यावे स्वरा, ये दापा मुख्य प्रचान विचान विट्या प्रमान विचान व

नुसम्बर्ध । हैमईन्गुस्येययम् न्वेन्निन्ति स्वाप्तः हैन्द्रा ।

विद्यां मुन्यतः स्वाया स्वयाया स्वा । विदेशासु स्वाय स्वाया म्याक्षे | यहास्य नुप्रमानी र्स्स्य प्राप्त व हो | १८ में में के पा स्था यहास यग्या ।ग्रेग्'तुःर्श्र्ग'र्से त्र'ग्र्न्, नुःस्त्र् । ।ग्रेन्स'स्'रोयरा'नेन्द्रः बॅर-५:७५। । गुड्य-५:२३४४४। य-४-५३५७५। । ८२-५:४५ इस ग्रुस्य ग्रामा । ग्रुप्, दुः इस्य प्रमाद प्रविद शुप् । ग्रुप् ह्युन्द्र ने से सर्वे द्वा सुन् । वा शुक्ष दुः ग्वत दे दे शुक् में से स्वा स्वा । मृदेशशुक्र मिन्द्र स्मित्र मिन्द्र मिन है। पाइरा नहुस्य ग्रा | ग्रेग्फ् केंग् ने ब्रेप क्रूं रास्त्रा । ग्रेक् ह्य दे 'नदे त्य दाया । या शुक्र दु 'त्रे य दा के द ' के द 'या पया । बर्दे'वे'याप्रयाप्त्रयाग्रुअप्यग्य। ।ग्रेग्', कु'यदे'प'न्द्रस्येन् **ब**र्चर'| |गृष्ठेबाशुःङ्गर'प'कृत्'यं'बर्चर'| |गृशुबा<u>त</u>ुःक्षेग्'त्र पुःशे इवरा ॐ वराशुः ८८। विवेदाशुः प्रेरवाशुः न्द्रवाराशुः ८८।। गुड्यानुःसम्तरंदर्भे केंग्याद्यात्ति। । तन्ने ने तनुः पाद्यापाद्यात्माया । रीयराग्री-प्रॉयर्न्द्रकेशुःग्डिम । इतार्द्धनः क्रिंतान्द्रवस्य। । श्चिर हं रायह्न द्वाराया ने हिंग के रा विकास में से प्राया ने से ष्टेय। | न्वंयन्द्रस्ययम् कुत्यत्वत। | नेविर्धर्मरस् श्रमां क्षेत्र क्षेत्

# 워[주·중도·주롱·의·주도·의토씨·드리·취**조**]

स्यं गु.द्वा हेपद्वप्तात्वार्यात्वार्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्वार्यात्

श्रीन्द्रपान्द्रविद्याः प्रियाः प्रियः प्रियाः प्रियाः प्रियाः प्रियाः प्रियाः प्रियाः प्रियाः प्रियः प्रिय

**६व**ास्य प्रशासीय। । यथा छन् न मुनः न सुय न ने न प्रेय गुद्रक्के हुन स्प्रीदा | ५५'स' ठद' ग्री' तर्ळेन राषा भेदा | क्रि' तळे स'तहेत' पदित्रिक्षित्। [म्ख्यायाञ्चन्दर्भनेन्याचेत्। । न्वयायानेका माबेर्'याधिव। विंद्र्र'याचनराव हर्'बेर्'माधिव। । हरासात हैव'कता बेर्पाधिव। । ब्रह्मासन् बेषा चर्चन छेर्पाधिव। । वृज्वा बर्मा सुना ह क्र प्यंभेता | र प्याचेर पर्ने न प्याचेता । प्रवित प्राचिता विदाळण्यक्रायाचेद। । अप्याप्तायाचित्र। । मन् में व दवरा के क्रें । ज्ञान राषेव। । विवादा दवरा के हे । दे न वा धेव। । इल्पत्र्यं र जुल्द्रवस्य द्वारस्य स्वर्गात्र्य । विन् द्वारी स्वर्गानने परप्ति गया विकाग सुरस्य स्था विराह्म स्थान दे हे पर्स् क्केंबर्न क्वेंन ने स्रम्म मार्थ है। देन तु क्वेंच इवस है स्रम्म किस विवासका प्रनाहे न र्वन श्रीका समय कर कर की हमा पर भी व स्मक स्वाधीका विग्'ठेशक्षे हग्'य'न्ये 'यञ्चन्'यन्यम्'यम् मुरुषाया ।

होन्'तर्र्स्त्रं व्र'न्न'य्व'तुःक्ष्रं प्राय्वेषा । व्राप्त्रं व्राय्वेषा । व्राप्तं व्राप्तं व्राय्वेषा । व्राप्तं व्राय्वेषा । व्राप्तं व्रापतं व्राप्तं व्राप्तं व्राप्तं व्राप्तं व्रापतं व्यापतं व

सु'सै'नेत'ने प्रन्ता । वन्तर से तह सह नारे न सन्दर्भे । त्र'र्द्रण'द्रिण्याये'ने'न्न'थ्। |दॅन'तु'नेद'केद'ने'न्न'हुण |क्रेयाण्ड्रव त्र'न'ने'न्न'मतुद्रा वि'तु' वेद'केद'ने'न्न'मकुन्। विंद'कन'केपा त्यात्रभुत्त्रअर्धुत्। भूभुन्देशहेशहेशह्याअर्भ्यत्। किंगुन्देश्नर्भहेश् महाक्षेष्ट्रमा विष्याने महामान विषया निष्या न्गुन्नुप्यत। निसंगुन्न्ञु'यदै'न्ये'न्डेन्'यळेंदा नि'यन की हुना ह्वंता पुनि । भिंदा ने ता के अवस्त । । नासु । किना ना से क बॅंबे'हेंग'सन्'ग्रेस'होता |नेस'ग्रम हु'सदे'नंदे 'मरेन'सहेंदा | नेप्यत्ते हण्डुं तानुष्वता | द्वाने ता संस्थान स्थाने सु'यो बेतु कुर वर्त पेश्या वर्ष | दिश गुर हु वर्त दे प्रे प्रिम वर्षेत्। |ने'यम्'वे'ह्रग्'र्ह्स्रानु'ग्नर्। |न्द्रंने'त्यंर्वेवर्गतां स्रु' ह्रें अहिं | विन्ति धित्र वा ह्रिया हुन हिंदी वा विन्ति हुन हु बतिर्न्धेष्विष्यळेंद। निः धन्त्वे ह्याः खंतानुष्यत्। निंदाने वार्शवराताक्षे स्थायहर्। । च.प्रग.प्रेगयाचेरामचरामयाज्या । नैकागुराञ्च अति प्रो महिना अर्छेत्। | ने प्यराधी हमा खंता नु निरा र्म्यन्त्रियार्श्वयायाः स्टब्स्यस्त्। विस्तुन्द्रवाकेवाकेत्वस्ति। नैसागुराञ्चु'यदीःन्येष्वस्य अर्द्धेत्। ।नेप्यराधीः हवाः स्त्रीःन्यान्त। । र्म्यानेत्यार्थ्ययात्रात्वात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या । विद्यान्यत्यात्र्यात्र्याः । देशगुरुक्षुःसदेर्द्येषाठेग्सर्वेत् । देणर्द्येह्ग्राईवर्ग्य्ता द्वाने तार्यवयाता क्षुं केवा वर्षेत्। | वित्तु देवा केवा क्षेत्रावयामी |

नियन्षु अते न्ये प्रकार स्वा विवास स्वा विवास स्वा विवास स्वा विवास स्वा विवास स्वा विवास स्व व

[B] र प्रेरेश श्रुप। र र प्रेरेश श्रुप। प्राप्त । प्राप्त प्राप्त । प्राप्त प्राप्त । प्राप्त प्राप्त । प्राप्त प्राप्त । **इंतर्प'न्ग्र'बॅर'बढेरा । हिन्'न्'क्रॉयन'बेन्'कुन्'याक्रेश**। 13' यस्त्रा | यस्त्रियान् यन् मेश्वर है अहेश | निष्य स्य तर्सेवराचरानुःवै। ।इतातर्धेरानः यनान्यं गर्यव विनः। । यव न्नाष्ट्रेन्'गुन्न्ग्र'वैद्याया । शुद्यायादन्'न्नः व्येन्'केनः। । क्रें त्यं पर कर् 'में क् बेर्'पर | विष्ट्र सुरु द्र त सुर् पर देव | र इत्य तर्चे र **कुल**[ब्यम के न दे र तर्जें। । विद 'म के म सुग' गुव' गुद 'से न स प्रवृत्। देशप्रवृद्धम्यया गुव्धित्रहेःपर्वव्श्वे भु'न्नःव् न्यस्तातह्रात्राह्रात्राह्रात्राह्यात्रात्राह्या धुनान्द्रभ्रम्याधुकावकार्यस्यायाता न्वविष्यान्वेनानेवालु पाववा मुक्षास्त्रान्वकाहे पर्द्वप्ट्रॉव्क्रूपि हे त्रे तार्चे व्यादी सुवा है सार ज्ञानका पक्ष न्नर-न्र-गन्यराध्राञ्चेदार्ज्यायायर्गेन्'रानेखायार-कुर-रर्थायावेरा" द्यापने प्रति श्रमा विवा द्यारा । अरामा विवा द्या वर करार ना ना おたなられる。第七天

## スペンロックス・30mmのでは、10mm

क्रिन् सब्के तक्षेत्र विवार्श्वर न्वेष्य विवार्श्वर विवार्य विवार्य विवार्थ विवार्थ विवार्थ विवार्य विवार विवार्य विवार विवार्य विवार्य विवार विवार्य विवार विवार्य विवार्य विवार विवार्य विवार विवार्य विव

हे मु अ इवरा शख्या (त दसर्थे। विव के श्री श्रायक्र मार्य स्दर् हु न राया । रायायन न हेना गुरु हु न चर में केंद्र। । धुरु देना त्र्ज्ञांन्व्यत्रांक्त्। विःन्त्रांच्याविःक्वत्यांक्त्। विःनेःक्र्तः न्यतार्श्वेद्राक्षेत्। शिन्त्रं न्न्राचित्रं द्वाक्षेत्। शिन्यं नेना मन्द्वन्थे ने सर्वन् । तुः वृद्धेवः ने वः परि द्वितः हुनः स्त्। । द्येः **७** इस्र श्रेन् प्रिया विषय विषय । इस्य देश क्र विषय । **धर्**यन्गःन्व्यावर्दरःतःवविधन्। ।रःतरःवर्धन्ःहेन्न्ग्रस्टनः **ध**दा । न्याञ्च्य कत् 'त् ग्रुत्यास्य स्रुत्य अर्जुतः। । न्येश स्या मान्यस्य विनाय दिन्य । दिः यम विना गुन् कु म न म दि । द्वा भूषात्रवादाश्चान्तराता । पहिनाहेदाश्ची सूरापात सरावर्श्वरा। स्यविगायम् प्रमान्य । ग्रम्ययाम्य विष्ठुर्प्य । विश्वाप्तिन् श्री सुर्भेन् स्वर्षे स्वर्षात्र स्वर्षात्र स्वर्षात्र स्वर्षात्र स्वर्षात्र स्वर्षात्र स्वर्षात्र व्यवस्त्रेशन्त्राची । क्रिश्चि वर्षे १८६ वर्ष वर्ष द्यायव्य । अपने सूर ग्रामार्झें दा के भीवा । र र से व्या के पेर हिला दशयक्ष्व। । त्रम् व्यव्यम्भवर्षेक्षम् व्यक्ष्यः । । श्रीन् व्यं प्त्र

धते'ङ्ग्रंभे'नेया |तेरङ्गे'यतुन्'ध'वर्ज्ञेया |क्यावर्ज्जे राता **इ**.र.इ.स.चूर.कर.वेर। ।जूर.कर.के.र.वेर.वेर.व.स.क्र.। । म्वारा भेग रमा हुए भे सर्मा । मा के राज्य वे नाम र त म्वाराय। । ग्निराप्त वृष्णिः सृग् । तम्पाने न्या हिन् । वि । वृष्णि सेग् प्रति हितुः हुनः । वैवा । जुलानते वतुन जुन् रहें वायाया । दूरवान मला जुन कं वर्षे अर्डेन्। । निर्मे क'इन हिन्यविरायवग नेया । अर्डे दायदि में स्रायं क्षेत्र द्वाराया विवादवादि विवाद्वर विवाद्वर विवादेया । यह १८६५ विवाद अधिक्षेत्राचाया । विवाद वाय हाया बिंब'यार्बेट'। (धेंब'यर्ग'र्युक्ष'गर्डर'र्यवे'रेका (८क्टंप' त्या शु क्रें र पाया । शि क्रियायण पर्दे र श्रेन् था श्रेन्। । दलाय केन् राप्त्रां व्यक्षां वर्ष्ट्रप्राधिव। | यहेव्याह्या वहेव्याधिव। | न्गरपंक्ष्यायन्गरपंभव। । इत्पाक्ष्वर्वा । र ने खेर अकॅ र हे व र गर कुर भेवा । वेबा ग्राहर वा वें वा रे। ने'गुवार्टेंबर्कर वैवाहुक्षेपराग्तर। ने'बैवार विरामिर परिष्टेंगवा क्तीः क्रॅब्ब्य प्रमान्द्र क्रिक्ट विकास क्षेत्र क तर्भेष्ठित्यार्थे।

द्यान् प्रतिस्ति । वित्र देश्याच्या । वित्र प्रतिस्ति । वित्र प्र

चर-दुः के व्राव्या हवा उद्या । व्याय सः य तु दः व्याय के व्याय नैसागुरान् कर्षे प्राचा अरकाराध्याया । ने व रातुः सामा स्राप्याया । तुःन्नःसंभ्रःश्चनात्रह्यात्रःम। । पनःनुःहियायव्यक्षेत्रःश्चेन रेनःम। म्यरप्त्राचेत्यव्यव्यव्या | देशगुर्त्युः झ्ट्यप्थव्या | नेवश्रवस्थानरावद्गाराया । १८८ संवर्षन् द्रार्थे तु'बेर्'वनष'बेर्'प'हुर्'। वि'बर ब्रुर् बरि'ब्रुं है'र्द्र। दिष गुन्देन्स्स्युन्यप्तिम्या ।नेत्राश्चराताव् हेर्यायहन्। ऑप्त्र'व्याहे'वर्ड्ड'प्रॉड्'र्श्चेव'द्रप्राह्र'ग्न्ड' डेश'ग्रुट्श'प्रा इन्यान्त्रेवानगुरस्ववाह्यवार्ष्टवायाप्त्रया स्थाप्तान्यवान्द्रवाया महात्मरा सुर है न प्रमास हो है। विश्व हो पर्द व प्रमास हो है है। न्त्रातान्त्रव्यात्रात्रात्रात्रायाः सामान्यात् । **२ गराग्रे:तु:ग्रॅंद**'तु 'वेग'.त.तुग'रा'ने'हे' यर्ड्व'या अर्ह्रग'.तु'न्न'रा र युर'''' ब्राञ्च अति वर्दन पाद्यवा उन् दिय कराय विवर ततु व लार्च्चित्रास्यागुन्द्र्णित्याद्यानुन्यमासेन्द्र्योक्चेत्रान्तेन्त्र्वत्यात्रान्त्र्यान्त्र्यात्रान्त्र्याः *षद'*नु'हे'पर्दुद'ग्रीस'सगुर'८नै'गह्यद्रस्रो ।

तर्नेरतिस्तर्यान्न् रहन् श्रेष्ठ या इस्या । श्रिन् त्यां न्यां न्यां स्त्रां त्यां स्त्रां स्त्

विश्वरक्षः विद्रा विश्वरक्षः विश्वरक्षः विश्वरक्षः विद्रा विश्वरक्षः विश्वरक्

स्वाङ्गाः त्वाः स्वाः त्वाः व्याः त्वाः व्याः त्वाः व्याः त्वाः व्याः त्वाः व्याः त्वाः व्याः व

होर। क्रिश्मुं वयायावर सुन्या 15में शतर्देर धेर प्रवे**वा** वॅरातुः पर्देश | येदवाया येदायर क्रेंया तुवाव | १८ व वातुः सु म्बुअर्वियः सर् देव। | दिवका मृबुअर दिरान दे मूँ र ब्रिय व। ्रेष्णराहुष्/तळेट:पतिःङ्षष्राञ्चेष्/पर्षेष् ।<u>ञ</u>्चायतिः**स्रयः ग्रेर**ात्र्यंस नेशव। । तिर्वरमान्दर मुलानु तिर्मे पर देव। न्नि'य'ने न'के न' क्षुसुत्व । ग्नित्वस्यम् न्यापते द्वा विग नर्म । न्नापा हुं वेन श्चित्रात्रमुद्दात्र्वा विवाधित्रभूवाः स्त्रिताः चरादेव। नुबुद्दापय। वृ'याद्वयाद्द्र'द्र्यायेग्'र्यूद्र। व्रुद्र'यद्र्द्रेन् र्ह्मको होन् परिष्ठपमा के तर्ग पाया स्थापनि दे लगमा है र तर्ग न्म् भाश्रुवापति प्रतासम् स्ति है। हे पर्वत् प्रम् व्यूप्ति प्रतासम् क्षेत्राधिवःबनः र्रेशः वृत्रश्रार्देगः यश्चैशाने दुष्या राज्यात्वेत्राचतेः ननः वर्षाः " न्धिन् ज्ञाच छन् नु र्यन् है। है से त्या दर्जे न विन् हर छे ल स्वया छैया स्रायान्य मार्च मार्च वार्षे वार्षा के वार्ष के म्लानुः स्टरः द सायळे ग्रानुः प्रतिः धारी दे दे दे दे ने वा सामाना स्थात, स्थयापा के सूरा श्री र तर्था पुंचा विश्वाची पा लूरे । चे श्राप्त स्था ह्याया व्यवसासु प्रविद्याने स्यु म्या केंद्र श्या वर्गी के याने या या दर्ग स्यु । 

द्वा प्रमुख्यस्य दुः स्याप्त । विश्व द्वा स्याप्त स्याप्त । विश्व द्वा स्याप्त स्याप्त । विश्व द्वा स्याप्त स

| इब्सूर्यामा मेरामा तासरा इयाहेंग हेंशासूराया नेशाव। चुनवयाचुन पुरस्य अन्त | निर्मेयक निरम्भाव निरम्भाव । गुरः बेर 'बेब' बेर 'ख' कॅर 'व। | 日が、口質ログ・ログロック、マングー ५'सुन्द्'छैकासार्ह्र्न्'व्। ।तर्षे'भूर'मञ्जूनसार्व्या'सार्यर्'। |स्वश्रांत्रायः रेप्यश्रावात्यायरः। न्'स्'रार्चन्'र्ज्यायायात्रा |बर्चून'रेपश्चाम्यावरा न्'स्रेरोगरा'स्याय'श्रुन्रान्। 15' क्षुंचन् कॅन्यनहर्न् । डिश्चान्त्रवर्गन्यन्। । ५ थ्रं यहरम् अर्केन् व । श्रिकार्यम् नुरेष्यकाषा । विकास शुस्का पता विरोधनिकाक्षेत्राही हरानेर्नाराचनाक्रेन्वराम वर्षामुन ग्रम् है। हे पर्दं व शिख्या हिर त्य म्यापाया नम नम जन्य रा पर ब्रैव'र्ज्ञ्लायापानॅन्'रा'ने'या'र्हे 'र्ज्ञ्चयार हारा'न् र यान् तर खुग्'युग्परी' हे 'नरी' युक्षम् किन् द्वाराधिक् द्वा । सुर्यातक्ष्यं रक्षया प्राची द्वा प्रा ぬ月でつれ、ダナ、ギー

## वर्ष्ट्रवंब्रक्ष्यावत्यानि द्वा

त्रित्रंपति'ग्राच्या'द्यारा क्रुंत्रंपत्रंप्राच्यात्र्व्यात्रंपत्रंपत्रं **र्सर्-स्। ।** हे-पर्श्वर्न्ध्वर्श्वर्श्वराणुर्-अर्क्षस्यम्याग्नीःत्रम्यर्-सुग्-सेन्द्राः पति'ळे। न'र्र'र्नेन'कुन'बेन'श्रेन'नेश'गुन'हे'पर्वन'न्नेन'र्श्चेत'ग्री'बुन मुग्रान्त्। है'त्रे'तार्त्वे व्यतिर्वे कुर्यस्य वश्वे रावस्य के स्यायस क्चैं। त्यु अपु पु पूर्वे द प्रसु द हु द हो। दे ने बारु द अपने बाया क्षेत्र हु बा न बा है' पर्वव' न पें व' श्रें प' त्या हिन ' इस रा' ग्रान द संधिव। ग्रान ( त र् ग्रें ने रापा त। हे'नईन'ग्रैस'देन'इयस'य'है'छुनदेरेरे'बिन'न्देग'वराधेन। है 'शे'त' क्रेंश'त् पॅन'प'धेर'ष्ठ्रप्रहत्यापय। विंद'मे हा ही 'क्रेन' हा प भिन'चेर'पर्य। हे'पर्वन'ग्रैस'र शे'श'र सपा ग्रुप'भिन'न ग्रुपसप्य। यान्तिं वारी दें वानान्या है 'से प्रायक्षं या मया तरे हिंदा रूप प्राय कुर्वश्याप्रवादारक्षेत्राया केष्या देव्यायायक्ष्यक्र 왕) षा'य संब्रहे' सुनः सेन् 'संब्रहें सः न्यनः 'यतिः से भीवः पत्रा ति से इन्'द्र'दर्दि' शुग्राकी में द्राष्ट्रेन 'न मृत्राचेन माना हे' मई द्राष्ट्री सरी' यरयाश्चराशिपत्रवारहित्श्चेताश्चरापरास्त्राराप्त्रवारित्रेतेष्व। इता मःशिक्षान्यायाः व्यायाः प्रश्नात् । प् र्भवामा इसका स्टर्भ प्रमुप्त स्वापा क्षित स्वापा स् क्रिक्रमाञ्चेन् व्युद्धः। अञ्चेन् व्यावव मु स्टार्मिया ग्राह्म स्याया विंदानी विन्यविद्यातम् निर्मत्रीय क्रिन्यत्मिक्षित्रात्म्यत् कुर्पालेगायतुन क्रिंप्संसहर स्वालेगाधिवावा व्रिंप्पर हैं 

भेर. १। । स्थान्यका स्थान्यका स्थान्यक्षेत्रिं भेटा प्राच्यां विश्वास्त्र स्थान

वास्त्राक्ष्मः स्ट्रास्त्रा । स्ट्रिल्यं स्ट्रास्त्रा । स्ट्रास्त्रा स्ट्रास्त्रा । स्ट्रास्त्रा स्ट्रास्त्रा । स्ट्रास्त्रा स्ट्रास्त्र स्ट्रास्त्रा स्ट्रास्त्र स्ट्

इन्यानियातात्वा । श्रम्प्रयाश्चाम्यान्यः । श्रिः द्या बरपरिप्रग्रदश्चित् । हि सेरि ग्रास क्रेंस रुपरा । तर न्वतः र्वान्वेशञ्चरायि । वित् भ्यायाः उदा की रवायाः मग्रिय केन्या व्यापव सुरं भेकार हरा। विनयन गरि के मुं के मा रेशम् । वित्यक्ति । वित्यक्ति । वित्यक्ति । वित्यक्ति । रायसम्बद्धाः अर्के मुक्तिम् । सुन्देन् सुप्रियम् विवादाराने । किया इत्यान्त्रपरावसुत्रपाधित। १८ वे तार्याप्यसुक्ते व। वित्तव ब्रिंग्ड्रेम्ड्रिंप्पेद्री | व्हिप्तिंद्र्युवसंद्रश्चित्रा मिनु शुक्त निवास दे। विकास निवास कर महाराधिया । समान मेर क्ष्म पत्रुर परी | (द्रॉवर पत्रे कु ब क्षें प्रकृत पार्णिया 15 इन्तेवसन्देशसन् नन्यम् । इन्हेन्यस् । इन्हेन्यस् मा विहेन हे द है तारन यासना विहेन है है है है त्री श्रिम्यम्याज्ञ्यापङ्गवासद्वाचययाः उन्। क्रियः क्षेत्यज्ञुन्'यरः यरुवात्यं न्यनः। । द्विन् 'सूर्येग्' रुव् क्रीपेव् सं इयव। । हुँ वायान्याकः वावयानु संदाया । श्रीनः पाना हु त्य श्रुता दन्ने ता हुँ ता । वियान्य प्रस्य व्या अरणराज्य सम्बन्ध साम्य सम्बन्ध सम् **स्थानवराधि भें**ना स्वाया स्वयाया नार्वे न 'धा ये न 'धन्य स्नि' धना ब्रार्स् प्रवास्त्र व्याप्ते न्या वित्र व्याप्ते व्यापते व् है। ८ पश्चेपवाराक्षावश्च वश्चर्य द्वरवारान्द्र तश्चरक्षिक स्वार मन्

हे ब्रायाशुक्रिक्षे देरावय। हे पर्वव श्रीतियावय। ए हे राष्ट्रिया 지정기'न्याय रताकेंग्रेन्।तिष्ठार्,तहना'राते के यामान्त्रार् हें।तहता' क्षे'त्युव्। वित्रर्राहरे इंबाओ मेत्र्वा गवदाग्वव पुर्वा ग्रुत्याम्या मिन्दारे। द्याग्युत्रहुत् गेर्म्द्राह्याग्रेत्राक्षेत्रा । हुं'त्रध्यात्यव्'व्यहिंत्'रत्ख्याव्राद्र्रार्र्त्रहेंश्चन्त्र्व्यत्यूं। ने श्चित्रं हें सम्बद्धार ग्रीत्यात्रात्रं ग्रीत्यात्रः तुर्वे स्त्रा स्त्रीः त्रा हिन्या हिन्या तन्त्रात्राह्रयायरश्चित्। नेविद्यत् श्चार्म्याह्यात्राह्या इं नेर। मिं हे से तार्मन स्रेर दु र्सर। हे नईन प्रंत स्रा म्रॅरलाईं दापता है सेरे जुरम्रहेर मेलुरमिरे वर मार्चर छेवा विन्या न्याद्राप्तिः सन्याद्राप्त्रीं चेराहे पर्वन् श्रीष्ठिण वर्षात्र होद्रार्थे मुन्द्वित्त्वा इत्वर्ष्यम्भावता त्याम्याप्याप्यान्य व्यक्ष्म्र र्येण या शे त्र्री इस येण शे हो न ने न या हिन र र र दे है पवित्र क्रें र प्र क्रें र पाय विषा पहिला। वित्र में दे से ते स्वाप दे र पहिला क्रेंचरत सेव् स्त्रंरत सेव्पति प्तराय। सर्वेद ने क्रेंद व्यक्ति गादि विचराहेरा हुए है। देते से हे चर्ड्य के हु परा द्या के हु राय रा मॅब्'मॅ'र्डरा'ब्रॅन'ल'विन'वया है'येते'ड्डन'क्वप'तु पश्चेपरा'डे। मिं'व् **美口袋す** क्रिंब्याव्याने हिन्दर्भे नुस्रायाया महारस्याया क्रिंब्रे न्यम्बिन्दुर्भःकेकेल्र्यानेविष्टुर्भे। न्द्राण्यन्थे स्यात्य्य

मःरूपः केन म्बिनाना परमान्य नामना राज्या नियान हाता नुपा **∄**≺! हे न दुव गुरे वा कुर में व में दि गुर है दे कि मार कि मर में ने है का त शुर दंशंविषाप्तश्चा यन्विंदिने न्विद्यानिहिन्शुत्रव रेभवनिकेशकुत्पायकाकुतानिके केंद्र ५५५८ हता देशका नेरापाय ቒ፟፞ጘ'ጚጚ'ጙ፞፞፞ቘፙ'ዼጟኇ'፞፞፞፞፞ጜጚ፞ቜ፟ጚ'፞፞፞፞ቜ፟ቚጙቘ፞፞፞፞ጙ፝ጚቚٳ ন'লু'লুহা'ন্থনা है से माथे नमम भेव। हिन पहला वयहान माराम संसानमा देना रतार्रदापति क्रियां जुन किला गुन कुराया हिन हिन। हा तहता प्रस्ता पहन महार्हेना नहारा हे पर्वन हे खेरी नुपार्हे नहार प्राप्त की प्राप्त स्वापन चॅन'चॅ'नेते.भर्डे गुरान'र्थन'र्थायरा हे'चर्ड्न'क्री बचरा प्रविग्रा त्रपंत्रे व संवित्र नः में ह्यापिनः में प्रमा विमाने में साथाय सुन साने विप्र हे सा ন্ত্ৰণ্ড্ৰা ট্ৰ্ৰণ্ট্ৰখন্ত্ৰল্পেই ন্ত্ৰিৰণ্ট্ৰখন্ত্ৰণ্ড্ৰান্ত্ৰণ্ড্ৰা ग्रन्त्र न्यु न्यु त्राया मन्य न्यु न्या ইব্' व्यायायराधीयाधिवाद्वयराष्ट्रीयव्दान्तर्भेन्याधीयव्दान्तर्भ मॅं दुर बर् वि के दिन देर देर देर के स्थान है कि स्थान के से स्थान के से स्थान के से से स्थान के से से से से स वि'र्चेब'ब्रॅन'ल'र्सन्। हे'चर्ड्ब'र्ह्स'ब्रॅन'वि'ब'ल'येवराज्या 적5 है सेरे कें चुँ व बाबु बह्यान दे कें कर देवा नगरा वापया बीका कर पियानेन कार में बादा र त्वा राखा वित्री वादराय है ते प्राप्त राज्या दिग्'नव। हेन्'ने विग'त्रात्रायान्यन्यात्रात्याः विन'न्न्'त्रम्याः विन नीय म्याव्याप्याप्याप्येव वेरापायया मार्चर केव मंत्री यह अ

दें अप्याची म म्वा উন্'ন্র্দ্র'খন। ট্র-'র্ম'র্মা। ই'নর্ত্র'শ্রীর'দ্রমানগ্রনর वसान हैन या पता मिंगाम में मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग में मार्ग मार्ग में मार्ग में मार्ग में मार्ग में मार्ग में राद्रेम ब्रम्बर्थं याया प्रतासन्ति । द्वे द्वे त्या मन् मन्य व्यवस्य तिमा । द्वे द्वे त्या मह्न विवायम् विवायम् विवायम् विवायम् ळग'र। ५'होर'र्नेग'गहुरश'रश रते'रे'हिंर'ग्रैश'यरग'नेर पर्वा इ'त्रध्यात् ग्रव'क'कें क्या'रा'ग्रेन'रा'भेव'कें न्या निया म्त्रिया करा तर दे दे हैर वा की होता में माना तर हो र में माना वा तर वा पस् पर्वित्राष्ट्ररकी ने भूतु लेगा गर्ग गरा दस्तरे गरा सर पर अस अन् हे पर्द्व में का के में प्रति भू क्रून का अहे न प्रकारिक दे TI'NAI म्स्याप्त्वास्याप्त् व्रित्'श्रीस'वित्र'किवा'लेर'प्तरा। हे पर्वन गुरा म्यात्य्यार्श्वराचरान्या व्रिन्'ग्रीयार्थन्ययान्यान्यां भेदाचया हिन्'रन्'मैबाले' सेग्'हें ब'त्य'र्देग्'रेग्'ग्रुन्यायय। विवाश्रर्पणन ८२ वाया पर प्रस्था प्राप्ता वा सेवा पर श्रेवा रेवा सेवा स्वापा हो पर्दुव्रक्तीः वित्यव्या रास्रक्रम् सुव्यव्यान विवासिता विवासिता विवासिता पतिःइतान्द्रिं रापतिःइतान्दाः हुन् हुन् हुन् हुन् हुन् ইন্ন'র্বঅন্ত্রীকারী প্রন। নকাঞ্জান্ধনকান্তরা নীমান্ত্রীকাঝব ব্বস্ট্র্ন'ন্তীকা म्मिन्गुम् कर्के सुन् पर्दर त्वा है। दल दे हिन्दर क्या द्वा स्वा विवादा षद्भाराज्ञवाभाववारात्रायाङ्ग्रह्मान्याद्भारात्राधित। द्राष्ट्रीद्भारात्रा **छेन् न् सुन्याद्यास्य । या केन् ने स्यायस्य न् या स्यायः ।** 严呼 됩니.통화성리.함드시 वर्षेश्वतियावश्चरात्रेत्वयाप्रदेश्वरा विनयाहेबाह्या न्ययातनुषान्यहात्यान्ययान् व्यापयाण्य <u>रन्-रन्ध्रण हेलाचुर्ना नेत्रा सुरत्स्य स्वण हुण व्याप्त</u> देवें छे यन प्रव'त्र्याङ्गतर्थव,केषात्रप्राध्याधरश्या । योचय.त्राराङ्गतर्थ्य, रेटाः ब्रं मंत्रव खट्टा न हे राह्य तहारा है। स्वाय मार्थ मार्थ व्याय मार्थ है। पर्यं व स्वी बर्दर्दाः इवराद्देव करहे प्ववित्व मुद्दार्द्ध वर्षे वर्षे वर्षे विन्दाराष्ट्रायायावन्त्रेरहे। स्वायक्षळे विन्दर्यत्र्र्युः यायावन्तुः तर्न <u> वित्रिंशे इ र हिलाने क्वरालान भेत्र के कापमा न रन ने महिला है या</u> तरिति छेश्य पर्छ श्याप न र का है। खेति हे सं र खु हो न । या अहु व का या दे र है की **र्मरमान्त्रेर्'केर'अङ्ग्'नेर्देशन्त्रमान्यः व्याप्त्रमान्यः व्याप्त्रमान्यः व्याप्त्रमान्यः व्याप्त्रमान्यः व** हे न दुव में अरे अर न अराम अर्डन हो हिन पर न वर्ष न वर ह्यवांग्री:ब्रून:पात्रावर्रूवा वीन्निकाशुन हुन्दिवारा क्रीन ने न्देशशुपार्वे पारायायेवयाशुःन्नाव्याव्याव्यान्। ने'वर्धर प' त्म नेन्'की श्रुप' श्रुप् के इंद्राप'त्म दुन्य व द्याप क्षेत्र प् में वान कुर वा प्राय हिंद् 'ग्री'रोबर्य'द्रद्र'दिशेबर्यायायवर'द्रव्ये**द्र**। ইব' খ্রীবা. <u>र्राह्मश्राष्ट्र केंप्रा</u> श्चरापानु श्वर अनु अनु प्रति गाय तरा। त्वियामेन'न्याक्र राश्चित्रह्म ।तह्मताह्म वर्षाह्म राश्चित्रह्म ।तह्मताह्म वर्षाह्म राश्चित्रहम्। ५'हे'रेदि'डे'ॲरखु'अर्धुपर्यप्यण्डें५'र्घ'ग्रेन्'रेनेरप्य मुद्रान्द्रियान्त्राम् विकाने स्वर्गायस्त्राम् । नित्रे संदर्भ में ब्राह्म वे मिंतर विक्षाया प्रेम वेदार प्राचीय विद्यापाल देवा मेरा त्रा मेरा है पर्व व क्रिक्कें न्याया वर्षा प्राची निष्या वर्षा व रत्यशुःर्यतः छे। दःरं स्व'क्रनः दे हं व्याणुंद वरान ननः त्रिंगावेनः E'A'विदाने'द्रायम्दितार्यात्में'च। हे'चर्ड्द्र्येनुत्रेंत्र्त्रेच'द्र्यराणेद्रान् निदा है। इंपर्वयान्वयाययायन्याय न्याय रयायन्याय हेरपर्वया व्रस्त्रं व्रक्ष्यां व्राव्यात्रं व्राव्यात्र्यम् हे हे सेती नेप् मायायरमञ्जीवसार्वरः। हे पर्वद्रिन् निर्म् प्रकृष्ण स्वस्मित्रं सामा प्रका ब्रुलानाय विद्यास्याते दानु नाव दानु वाद्यायान् स्यानु स्ताना मुन्ताना वाद्याया वाद् हे मईव में शिक्ष है कि दर्भ में माल हे न वहा न हैं का न माल है म् राम्याम् भे व्यापत्में संवुषायर में समाया समाय तित्व दे व्या है। बातकरानु'क'प'न्म'। हे'मईद'केद'र्यश्चम्'रे'म्लापाम् वर्षामा ग्रिका न्त्। व्यवस्त्रातग्रीग्न्याकुर्यावर्त्यवर्त्वातस्त्रिं अन् दिन्।ताहे रोते हे राये प्राचा प्राच्या म्यां के अपन्य प्राचे हुन वह अपन्य हुन चतिःस् :स्वावात्रिरः न्नः तरुवायः न् ग्रेवाचतेः स्वतः नुः विः सर्वायः न्त्वावः ... ८ नुग'रा'यह्र्य'श्रेयदी, यह्र्यंयाया ह्रम्, व्यव्याता, व्रेट् व्यव्याता, व्रेट् व्यव्याता म'विव'रु'न्ग्रेग'विन'र्बे'प्रम्युर'र्ह। । नेति'ळे'व'र्स'र्मव'रुन'प्पन'र्हे' রিবি'অগুন'ব্'শ্বমন্ত্রীন'স্তুদ'ন'নগা इ.पर्वश्वाश्चित्राश्चर्यः मर्झर्'रार्व्वयंयित्रायवासुराक्नेर्त्वाचीसाहे स्त्रेते भूष्ठं च्यावायायाया विदे र जुल र र दे गुरु र जुरु र है। र यह र 

য়'ঀৣ৾ৼ'য়'য়য়৸য়য় ८'यान्वरायदी'अई८'रावेग'तुर्वेद'राद्रेत ガイは「ログー हे पर्व में के नियान मार्किन त्यात है गा हे न तर नै ते स्व हेराशु'यहर यदे हुव कॅर में हु 'रह्ना कुर बर 'र तुग'वरर'। र रर <u>ॿॖॣ</u>८ॱऄॱढ़॓ॺॱॺॖॖॖॖॕॕय़ॱय़ॹॹढ़ॕॺॱॺऀॱॸॣॕड़ॺॱॿॖय़ॱॾॕय़ॱय़ढ़ऀॱॺ॒॔ॱॾॺॱॱॱॱॱ ह्यराप्ता हु 'तह्यतात्म्य दुरा के दें सामित व वानुवा है 'तेरे हे 'केरे' ¥ॱहेतेॱरःताधव्यो∙वेशकुंभुःद्रायात्रॉवर्त्त्रःश्वाधतेःत्व्वावाववशः...**.** हुँन्'नर्जून्'पदि'स्न्नर्यायेन्'रुन्। न्'यद्'न्यानेन्'ह्या तप्रक्षियातक्षेत्ष्वे राज्ञायानां म् तास्ययायानात्र तावियात्राक्षेत्राक्षे भिव। वयायागरावराञ्चरापान्राहास्याज्याने ট্র্র্'ঝ'ন' कुलकेव् में त्र्वापस्य दे परुष्य परिदेश राम्या द्वारा भव। प्राप्त स्व तरिते सप्तरत्में प्याप्तर्दि तुरायायाय हे व वहातमें प्रेया दाया स्या *स*दै-ॡ'तु-ॲन्'चदे-क्वु'यळंब'सदै-द्वयश्रॅप्न'घशकृव-देग्'ग्शुन्रावशः" वगुरः दर्भे बहुदशः ह्या ।

इत्। ।इतार्वे रक्षां रक्षांपाया ।इतार्दे रक्ष्रां के बरा । विक्राक्षण्यान् । विक्राक्षण्यान् । विक्राप्ति । हत्यविगाद्धरा। |र्दे हे तकरामी हत्य विगाद्धरा। विह्न दारे ग्नबराम्ग्रान्थ्वरायते। सिम्देश्वर्यतेस्त्राविग्सुम्। वर रात्रं दृति स्वाविषा हुना विवाद स्वाहं प्रवाद र वराये। सि मात्रीक्षेत्रस्विन् वुत्। । न्द्राक्ष्रम् न्याप्रदेखस्वन्युत्। मिन्दाक्षेत्र'न्देववारा'न्यां नवाद् | क्षिंयापात्रे भिस्ताविवा हुना | र्द्र-विद्यात्रक्ष्यं स्थाने वा स्ट्र-। विदः म्र स्वा धर्मे द्वा धर्मे स्था म् । क्रुन्यतर्भेषस्यत्वाद्वाः । स्वायत्वाःस्याः प्रतिस्य विवाह्यता । क्रिंग वेद पर स्ति वेद पर बाद । । त व्याहा तर्दे विस्ता विवाद्यन्। इं.क्रवासरम्.ब्रेलस्थादेवादिम्। विवादिन्यवर महेव्म्युम्य प्रश्व | न्यं ह्रेयां दर्भे ये दत्य हेवां हुरा | वेका सुन् सेन् परि स्ताविषा सुन्। । में मान्य पर्य से साम स्वरा प्याप । वृवयाये व्यवद्विष्यं स्ताविषा चुर्। । सूर राः क्षेष व्यवस्य स्ताविषा चुरः। । र्गाद्युपश्चित्र्वयस्यम्यम् । इत्यद्वेर्र्र्र्र्र् हुत्। विभारवादिसम्बिग्हुत्। इतादेवार्स्यायम् स् मक्त्वया | मन्यद्गारहे सेन्द्र्य हैन । मन्यत्रित न्याक्रॅबाम्ब्र्दायान्त्। निक्तायाः वीनायति यात्रिवायेव। । ग्रंतात्रवहर्द्यो नेश्वः । विश्वाश्वरत्याया वित्रारी <u> इंत्रिक्ष्यं प्रस्तान्तः वृत्रायायायन् क्रियाः स्वतं रहे।</u> न्ताया त्रव्याः विवाद्वर् व्यक्षः विद्याः विवाद्वर् व्यक्षः विद्याः विवाद्वर् विद्याः विवाद्यः विवाद्वर् विद्याः विवाद्वर् विद्याः विवाद्वर् विद्याः विद्याः विवाद्वर् विद्याः विद्या

## **国可说'美'美'圣'至'奇'郑文'寒'**绝'四月

. व्यंगुरु हो हे पर्युव्यंश्वास्त्रार्ग्न्यंव्यंश्वास्त्राय्न्यंव्यंश्वास्त्राय्न्यंव्यंश्वास्त्राय्न्यंव्यंश्वास्त्राय्यंव्यं श्वास्त्राय्यं श्वास्त्रायं श्वास्त्रयं श्वास्त्ययं श्वास्त्रयं श्वास्त्रयं श्वास्त्ययं श्वास्त्रयं श्वास्त्रयं श्वस

मै कर्'शेर्'हर'। श्रुःश्यायर'कर्'शेर्'गर्रे'शेरादिर्ग्यार्ग्यस्य सहस्यापात्रिरे श्रुंश्येश्वराधिद्'तु'गरे 'स्वावा। श्रुंश्यादे 'स्यूर्'ग्रुंश्यायर तु'र्र् लेखानुस्याय। हे पर्वुद्'श्री 'द्याद् स्यूर्'र्य् प्रेर्ट्' स्यूर्'र्य्

क्षेव्या ७ व में म व व्याच म प्राप्त विवा । य ध्रुय इम् राम प्रे द्राय तर्वे रापदी । इ.मनर क्रेंग । यश्क्रीयाया प्रवेदा । यहरात हैव । व्रा मिरेन्यार्केरपरी ।रेप्नायाज्यार्भ्पपायविता । महिनास्र **इ**न्प्रतेद्वयत्र्र्वेर्यन्। । इज्जयद्वयत्यन्प्रवेन्प्प्रविद्। । स्व मण कॅन केंद्र स्वाद केंद्र प्रदेश विषय स्वाक्ष प्रदेश हैं से स्वाद श इंगरान्न वर्षात्र द्वार त्री रायदे। । खनान यर न नर हिर्म प्र चवेव। । व्ययः द्वनः गया श्रुनः चते द्वार द्वार द्वार चने। । न्ययः श्रीनः हुता क्षुन्यं प्रविद्या । तयं त्युर वेन् प्रतिहता तर्ते र प्रने । कुर्ते केव'र्येते'कुव'प्रवेव'त्। १९यय'कुव'क्रन'षेन'प्रते'द्रतातर्धे,रप्रने।। हुरविन्दर्भेक्षेर्रं प्रविद्या । इप्यार्धर्भप्यते द्वयाय है रापने । इ बर्ळेंदेवरानु दें पश्चरप्रवेदा । श्चिर शेष्म्ण प्रदेद्याद श्चेरप्रदे । मामामान माना प्रति । वित्रामान स्थापन दे द्रापत में र यन्। । विनः मृत्यते विंवाचे ववायायवित्। । श्रीकाश्ची यायेन प्यते इता तर्वे र परे। । न्वारमा इसार वें र परे पा परुषा वें मारे । । वें न वि सरि'देशपन् रूपं भे अवस्ति । देशां ग्राह्म रामा १ वास स्वया ५ र महोद्यंगं के संराह्म। ने द्रा हे महंद्र ग्रीयान सहित्या है न्या

म्मारेश्वरात्र्युत्तर्व्यव्यत्तरः हेष्यव्ययः क्षेत्ररत्यः वृह्णव्ययः यद्ये श्वेतः । क्रेत्रः सम्भारत्युत्तर्व्यव्यव्यत्तरः हेष्यव्ययः क्षेत्रः वृत्यः वृत्तरः वृत्यः वृत्तरः वृत्यः वृत्तरः वृत्यः वृत्तरः

सरत्रेष हेर क्राण्येश पश्च तहा । मि दे धर प्राप्त प्राप्त प्राप्त विश्व स्था गुरेन। । जना जैन गुलेन प्रस्पात् प्रसुप्त । । न न गुरेश केन वृत्रवाशुः वेद। । तिर्वितः नृतः वृत्यवाः वैवायत्रु वहुः तद्र। । नः दे वहेवाः स्र रे दिन पर होया दिन र न र स्था है स्य है सह । । र है पिन न इंस हिर ग हैं र। । है इर न ते स्था गुरा नहु नहु नहु । । र दे वर गेरेबरायायहा | इसप्र हेंग्परायहु पहु तहा | र दे थे। नेबाह्यशुरुप्तरः। । इबाह्माप्तरे मृत्राग्रीकापश्च पश्च रहा । मन्द्रे देश द्वाप हवाया विवाद पान्ये स्थापश्च पश्चाद । र वे अव' पक्र ने के न न वारा रे मा प्राप्त में अव । वा अन प्राप्त प्राप्त में अव । वा अन प्राप्त प्राप्त में अव त्र्। | द दे य पर्रं श्रुष प्रस्ति । तर हे त है प है य है य प्रस्तु मञ्जल्हा । माने हे हे ने नाम निष्या । माने साम निष्या मञ्जू मञ्जू । त्र । । नः वै देणाप ते प्रत्यस्य क्षित्। । ते वर्षा त हेव क्षेत्र क्षेत्र प्रत्य प्रत्य पश्च । । निष्य प्राय प्राय प्राय । देश प्राय प्र रशकुर परि ह्वा सामा न्ना अन्य कर सन्त्र कुरा परि सामा प्रमा परि हे सामे प्रमा देश। ८.८८. वेशकापुर, वेश्वकाता देश के स्वार के स न्यित् अव। रन्ये कृत् विंग् ये क्षेत्रें क्रुं न्यं ग्वन् द्रेये ति व **मॅब्रम्**न्स्याम्या

स'ञ्चाया हे पर्वत् अत्राप्त्रेत्र प्रत्नाप्त्रे । । पर्या केंद्र पर्वे केंद्र पर्वे केंद्र

रे अन । सुन्य हे ६ न य प्रयान तर र् न र्या राया यः ह्ययाश्च । यद्यतः प्रतासुः चार्षे राहे । मन यासुगया गहरायास चेवरार्या । विर में र पा वेरा के रा के रा रा । पर पा रा में रा रा इं रहे वर्षा । विद्रारा पर्जेषा सुरा दर्दि । ज्ञार देरा प्रे मक्ष्यकाश्चा विवाधार श्रीन श्रीन राष्ट्रीय राष्ट्रीय राष्ट्रीय स्वाधार स्व यत्रूर्'र्। ।इयाइनाम्बेर्राकुर्याकुर्याच्याद्या ।इयार्नाप्य **ह**र्यः क्रूर हे चल । या क्रां ण्वेताकुर्भवस्थला । रन्तेयवायान्यक्तिहेन्ते वता । क्रिन्तुः **१** मन्या अत्यत् देन देन । त्रेन्या या के व्यक्ति अस्य व्यवस्था । । तन्न व्यक्ति स् मिलेक्ट्रिंस् हे मिला | रम्प्रिंस् मिला मिला हे मिलंबर देव'र्घके। विराधनायगारादेव'ख्यावाहेवायग्रुत्व। । नात्ना Rम्बार्येन्'म्बुन'र्नुव्यार्थे । विश्वाम् र्रायान्य निर्माण्याः हे'नर्ड्व'क्री विस्वता रहा हरा पहिराय ने अधिक परि वस है न रा ने न परि है **४**५-पर्य। स्थान्यर-५-शे.युर-प्य-५-५ र्य-युत्य-हेन्। हेस्यन् ह्य-स्य मन। हैमईन्के हन्य सहराने समा र सक्ता प्रेम के समा तमरहे। यम्परवाद्धम्परवाद्धेन्यायत्वाद्यीत् में वादने सुत्राया । म'स्र'काहे' पर्वुव' पग्रदार्रेव 'ग्रेव। । हेन 'पं पत्रव' ग्रे में व 'वेग' | ञ्चनः प्रते व नः व का क्षेत्रः पा के न । । नः न ने का के का की व हैं गरा।

मग्रीन्द्र। क्रिन्यदेवनव्यक्षाम् हेन्। १५ मुझेलप्रन् क्रिया

मगुन्न्। । इस्मन्यद्रन्द्रमा विश्वेन्। । न्तर्वा स्वार्यन्

अग्र-दे, पश्चित्यः स् । । त्याप्तः प्रस्ति विष्यं प्रस्ति विष्यं प्रस्ति विष्यं प्रस्ति विषयं स्वयं स

इत्रान्त्राम् कृत्या कृत्य कृत्या कृत्य कृत्या कृत्य कृत्या कृत्या कृत्य कृत कृत्य कृत्य कृत्य कृत कृत्य कृत्य कृत्य कृत्य

हे न्न य इवराया द्ववात्र देवा या | यन द्वन हेन विद्यारी न र में व। । हना कर छी से पास्तान बेरा । इस हैना ने शुपा सहत र त ही तह्रवा । न'क्षेत्रे वेन'र्ज्ञ सवायन्या । तन् क्यान्यायन्यां ने ह्र यनवा । ज्ञनशहनवा इदारहेन वा कुरा निर्दे हिंदा ष्वेदशुः परम्द्रा विष्वर्षशुः न्देष्वराञ्च द्रायायायायायायायायाया मर्द्रम्कुः त्रेयवात हैवार का की होता । वा मेरवा मृह्या विते पर र पुर हेया । तर्भेश्चर्यात्पात्वाची क्षेत्रायात्वाचा । हिष्याचा व्यक्षा क्षेत्रा क्ष्यात्वे प्र णुनः न्द्रं च चुंबेर्। । हन्य राज्य व त्रः न्या या तरा दें दा । चना प्रकरा हु के दूर में न्या १ तरे हैं या तु न पर्ना की क्वें र पा सन्या । <u>भॅ</u>षाबाइत्यातर्द्धेन्यतर्द्धेषाबागुनःषार्द्रनःकुःबेन्। ।श्चेंद्र'ठवाश्चेंद्र'वेन् नर्भेंद्र । इस्रामर्म्यान्यान्याचेन । विषे हु इताह्यान्या क्षेचित्। ।त्'क्षेप्रत्येवर्यात्यत्त्र्त्त्त्व्यात्या चन्वा वी न्द्रा छेवा त्यवा । त्रें व व्य वि अव्य स्व ( ८ छेव व्य गुरः व वें न ह्युः बेर्। । तिर्विरत्सम् वैसक्तिः चर्रेष्त्। । सरसः क्रसः सेयसः उत् मृ के शहु ' बेर् | दि'र्मे प्रायस हा स्त्र ही ' स्मिर् नि है हैग नह्यानने नरम्य । १८ने व्यातुन नर्गाने सम्बद्धायन्य। । र्नेव। विषयप्रतिमञ्जन्धायायायाया विः स्वयायायायाया डेन। १५'क्ष'र्श्न-'र्श्नेन'र्क्रंश्वरप्ता १८ने'र्ब्थ'तु'न'नन्ग्'ने

**हॅन्यायाया ।** हिन्दा नेदायदात हेन्या गुरान्दिर हु हेन्। **देश(वु:प:सुत्र:पञ**। ञ्चार्य:पेव:पु:बहेर:हे। रक्षकुर:प:वृबक्।हुंर: **हाः या य हे स्पष्ट पर्या गाह्य या** या वा प्रतास्त्र प्रतास्त्र स्वास्त्र स्व **ब हेलागर गुरा। पर दु** ईबायब अश्वीतह्न क्षेत्र अपिनागर हेना ए छेन्। र्भे ह न बाक्री झूँ र व न बादीर। व व बाब से व 'सा है र द बा र हे र 'हे र ' नर्झेद्यश्चर्य। व सर्व्यश्ह्रं ग्राष्ट्र-'पर'क्व'द्रेशकुश्वर्त्त्वा बीय। ५'विप १५'ळेण'वी संज्ञाताळा ५ वातरा ईवाव वर्षा हा सेवा हिर्नुन्द्रिन्ग्रीकान्द्रन्र्वेकायाञ्चवकानेष न्यायन्त्रायावरान्द्रे हरावया अर्दे कुन् की नेशक अन् कुन की साम्राम् के पार्टी साम् स्रात्सर पर। पिवर प्रें क्रिंशया झा सरा के न हार ने प्राप्त पिवर क्रें स्राय विव नहारवारादे नहार छन्। पर उन्हर्यस्यकाय पहेन्। पर ज्यका हा हत्वाचव। तिरंग्पात्रंत्रंत्वाप्पान्म। प्वान्वाति हत्वावाकुनंत्रा क्रेशपाधिव। ॅंक्ट्र-'गुन्'न्दि'ञ्च'अ' अ न्द्र्पति'ग्राधनः प्रतिन्गुंश्निग्' नशुम्यायय। रक्षक्रिंपय। हे'नर्द्व्याय। न्नायायरामसहि'न्निन् महारवाराने इयवायन्य तायवर पर व रूप व हे'गईंद' मुक्षाञ्च व्यत्रे महाराष्ट्र विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्यापत विद् -महारक्ष

तुःहेब्'तु'न्जॅब्'अर्ड्ज'यज्ञन्देरं'न्युन्। |श्रॅन्थ्रसु'न्न्'रा'हेब्र' क्रिन्'न्युन्। |ग्नॅ्ब्'तुःह्याक्रॅन्'स्टेर्र्'न्युन्। |ग्रुन्'तु-स्य केर्द्रमहान्। विवाद्भुरायकेर्द्रमहान। ।ययपुः अवाद्मानहिनः र्दें बहुद्र | सुद्र द्विता हदः वैक्ष द्वेदः दें बहुद्र | किया पा क्रें विकार दिवा अपनिष्यंदा । तर्जें पद्मण हुन हुन वें गहार। । पर्वे प्रवास त्रत्वकाका प्रवाहात्व । वरायते यते विष्या विष्या । की न्ने परु सं अ क्रा विष्यं विषयं प्रति । विषयं कूर वेर ब्रेस हें अ पर्से अलव । असर दिग लर ल के राजे में पान शर। । ळें ८ ने र यह या कुरार्चित '८ में न | ये यहाय ये हरा ये न में में न्युन्। विन्'ग्रीयहर्षुन्'यहुन्यपरि'न्द्र। वित्यत्रें रह्ना स्व'र्झेंबरादिग'नशुर्'। । गन्बरारग'वहरादिग'रहरापदि'र्द्व।। न्यर ह न्या वन्यायय क्षेत्र विन्या न्या । केत्र न्या न्या रहे। श्रुणव्यत्वर्त्त्रा । यत्त्र्रिष्ट्राव्यत्वर्त्त्र्याः । यत्र्याः यक्ष्र्रः माववाराञ्चित्रायावा । तिहेग्यायतीम्मापतायात्रात्रात्त्रात्ता रीयवाकु यार म्यापिधार्य । विर्वयार्य क्रिया विदायक्षे प्रवाधिर। । र्सेंद्रवारोबना पश्चेत् केरें गृह्यता | क्षिता ह्ये केत् प्रवत संग्रहता | व्यवारेष् व्यवस्थायाः चरार्चे गुरुतः। । । । स्वा रेष् सुनः श्रीयाः भेवाः नुशुन्। । क्षेत्रं क्षेत्रान्त्रीया त्रान्त्रान्। । न्याना हेत्रा हेत्रा देग्'**ग्**शुर्'| |बे'ळे'पेर्यायायाश्चेयाग्रुर'| |र्रावेयवा**श्चे**'वे**र्'** हुँचःभेग्।म्बुनः। ।<br/>दूषिरःपरःपरेःपःयःरेःग्बुनः। ।हुग्।पद्यः ब्रुंब्र-पु:संभागात्रन्। विस्रहर्मग्रासन्यक्तराध्येत्रवं नग्रन्। । वर-तृष्ट्रेंबाय'वीन्ब्रांबायुर्। |न्वानेतावायायावेन्न्वयुरा।।

त्रिप्त्रिक्ष्यक्ष्यः स्ट्रिक्षः स्ट्रिप्त्रिक्षः स्ट्रिप्त्रिक्षः स्ट्रिप्त्रिक्षः स्ट्रिप्त्रिक्षः स्ट्रिप्तः स्ट्रिपतः स्

पाञेन्यते हेन्द्र देश । मि कर्ष स्रा गुरा ने जेव। 155 ঙ্ব'ঙ্'ৰুব্'নেধ্ৰন'ন'নি| | নদুন'ন'শন'শুকার্ন'রাখীব| |क्र्या नेयाद मंद्र संक्षेत्र या तरी । । चर्या दें मानता ग्री सार्में ज्ञा थेद। 一度。[6] बरपालं दुं तरी । शुरार्वि प्यता ग्रीकार्ने हा बेवा । रर से बरा सु ह्रयाक्ष्यात्त्रे । भिन्यावयाम्भित्रां त्रेश्व । इसायम् राज्यान्या प'र'। क्षिमळेब'सता ग्रैस'र्ने हो बेद। व र छ बेन पति खुस सं तरे। [ब्रुव्यायतानीयानें व्रावेश | यदान्विनान्याव्यापता त्र्ॅ्रेतिःळॅन्सा | क्षेःन्स्याप्तिचेशःगुरःन्स्ययाप्तरःन्त्र। |दॅन्ः न्ययादनैगान्ययार्यरम्द। । बिर्चे प्रश्चिष्णुरार्चे परम्द्र। । रबाकुर दरी गाई परान्ता । विष्यने प्रकुषा गुरायने विराम्ता । श्चु'खबादिने'ग्'चने'चरान्त्र। । शिंड्न'चश्चीबाग्रन र्ड्न'यरान्त्र। । क्षे'ययदर्भभार्चेन्'पर'गन्त। । यने'रुळें सर्र दयादर्वे रप्प। । च्रणाश्चार्से हे अर्घ अर्घ। |च्रणाश्चार्से हे जी यर्घ जा ।द्रणा व या चरा ५ मान्य केला केता | विं मान्य माझ मानाया के के वा | ने कु खु मा कु केला त्रव | गृहुवाविते रकार्मेवाविद्वे द्वा | प्रतारवाकुरानेवाविताई | | चक्षां हुन्। तहेव या चेवावा । किया वा त्र हेवा वा तरा पा क्या । । ग्रुन् कुन् कुन्य तसुन्य व। किं बेन् क्रिया कें प्रार्थ किं प्रार्थ किं प्रार्थ वि बदी'ग्रव्यव्यन्ग्वी'त्रम'व्। । यतुन्'न्न'यन्कन्'हेबाबी'र्दन्। इत्यत्र हुँ रहें प्राया के स्वावा विकास रिहें र के त्या त्री वा विके र्गञ्जाकावावरापिदेवे। ज्ञिपत्यव्यक्तिवार्गेर्वेर्ग्यः । विश्व

स्त्राराम्भवन्त्रं लेकाश्चित्रः व्याप्ति स्वर्म् स्वर्मः स्वरं स्

हें श्र अह वहां प्रिन्त क्ष्म वहां | क्षिन्त क्ष्म वहां | क्षिन्त क्ष्म वहां | क्ष्म निर्म्त क्षम वहां | क्ष्म निर्म्त कष्म वहां | क्ष्म निर्म कष्म वहां | क्ष्म वहां | क्ष्म निर्म कष्म वहां | क्ष्म वहां | क्ष्म वहां | क्ष्म निर्म कष्म वहां | क्ष्म वह

न्द्वेत्रवेत्'न्युवा । तर्ने न्युवार्न्द'क्केन्नुनवान्ययम्य। । नेत् गुन्दिन्त्स् सुन्यम्बर्द्धन्य। विन्युन्दिन्यः सुन्यव्येव्या। ট্রি ব্যান্ত ব व। विश्वास्त्राकुष्टान्द्रवाय। विग्-न्द्रम् सद्रे करान नगरा। म् र्राचित्रम् वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा व तिन । तिके में न्री देवा वार्य वार्य वेतः रेत्र वा । न्री ने वे वे वार्य में न 我心思到 日本中不受到四个海子海不利口 一点如时到日十日十 हरायायर्ह्म । इंस्पान्तके तायह्म रंजा । निर्माता सुतानितः श्चर्र्स्य विवा । ने ता न्या त्या दे के ति या न विवा । वे या ठव्रतक्षेपायर्वर्षं द। । द्रोक्षा क्षेत्रपतिः क्षेत्रं प्रति विष्ये । दे तारक्रेंट्रां देवर्ग्य विश्वास्त्र विश्वास्त्र के प्रवास इं र- न् मुं दे र- क्रें दे र- दे के दे दे दे ते हैं व र- हे दे दे ते हैं व र- हे ते हैं व र- है व र- यक्षेत्रम् । मन्द्राप्त क्षेत्र या अह्म । क्षेत्र क्षेत्र प्रते श्चित्र्व्यंभवा ।ने'लाश्चिं नकाके'त्रुव्यं प्रम्'यम् प्रम् । विविव्यं प्रात्रके पायहरार्थं व। विर्माराये क्षेत्राचि क्षेत्राचि क्षेत्राचि विष् गर्डेव्यत्त्रुवाकेत्त्रुवा प्रकृषम् प्रम् । । यस्यन् क्रिन्यः वति विव ष्री [नु:धुन]सन्भानिकः प्री ] इत्रयायन्य सुतिः देनान् स्रा ।मुन्याबुरायाकेकास्रा ।स्यायायायाच्यान्याया रोता । तथाय तुर्वाता केळ प्या । वर्षे प्रवासी है तेर है ता प्री। विवास्त्रहेंन्त्याकेंस्प्ता विकालेन्। विकालेन्स्रिन्यायसुर्वा विकास 問いた。 | 日本に発えた。 | 日本に対している。 | 日本に対し、 | 日本には、 | 日本には

## न्नेन्द्र्भभारस्यान्द्रभहत्याद्रिः स्रूरा

व्यक्तिकाषपरत्ये श्रेष्ट्राचित्रा । श्रेट्र हिन् के द्रेन यर न य के की । ब्रह्मापर'रू'पदि'क'हेर्'द्र| | 134 | 3 美・美元・美二・4号・4 4 | न्रान्स्निप्तस्त्युर्यान्त्रः। । शक्षात्र्वां क्षात्रः विक्केश्चाः पर देश । हेर दशके दूर पर गुराप भग हे पर्द प ग्रेक ग्रुर मातरार में ते खार यह व तु र में र या वया। प्राधि प्राधार में वा पर 5.स्वा, इ.ध्वा, र.प. व्यव्यापा, र्या इपद्व, व्यव्याया, या.स. व्यापा द्यायायरायान्ने ग्रायायायां स्वारायाया विष्टेन प्रतिन्न प्राप्ति हो। हे मर्डुद्र'याविंद्रम्मे निक्षां स्थाप्त्रहर्ष्य हुद्यापाया। हे मर्डुद्र में का विंता पश्च द्वाराष्ट्रस्तिर्यति हे सन्दे न्यान्यात् के स्र बिर्कु हर्या इसरा नम्राप्ता विते बुर्या में करा ने र्मा के सारे त्रवीया क्षेत्रान् देवकावित्र वाद्यात्रात्रात्र वित्र तर्दे:यर्'क्रिन्व् वैषायुर्'न् वृषाय'येन्'य'न्रः। व्राययाप्राहरू पत<u>्र</u>ेन्द्रग्'तङ्क्ष'ने'क्षक्षाँच्'नु'नुन्द्रन्'क्'नेन्'न्पत्रे'क्रेवरायकाग्रीक्'सुन्' द्यातके पर्वम् कुरायात्रा ५ देला सम्पर्म स्थानियात् हेराया मा हे न खुन कुना विभाग दिन ने नित्र मुला कुन कर मार्थ मार्य मार्थ चन्न'त्र'क्ष'क्षे क्षेत्र'च दे खुन्दा'क्ष'न विन नुक्षेत्र'क्षे क्षेत्र' दे विन निर्माय स 37 हेग्'नबर्मे'सुताव्याङ्ग्'नस्तातायव्यापिःह्या<u>न</u> बेरानाया 更

मर्ड्ड'में अप्ति'ग्रस्की'प्रस्किष्य स्वाप्ति प्रमुख्या हिंदारी पति'तुर्राह्यभूग्वस्त्रार्श्वेषराबीर्षराचरान्तरहे। धरावेशवादाँदा मान्नाविराविर्श्वण्यस्याद्वव्यायस्याद्व्यायस्य जुन'र्'यरे'प'विग'स्गरं हेरातहेन'पर'लु'नेरपर। पर्द्धव भी वा कुव पुर पर्दे पर प्रेम वा क्षा कुष्य प्रमा के प्रमा कि का प्रमा कि र्धितः कॅसन् प्रवेदानेन प्रमाणा हिन्दाने देव प्रमाणा कुर्-पु'नदेन'तर्द्र्पस्न् ग्रायंदि रूस्योत्। अवदि व्ययंद्रेर प्रिचिन्यराखि खिद्याताया है पर्व्यक्षियाया कवा क्षेत्रियाय रान् में द्या ं विषयः श्रीराविषान् यान् यान् । विषयः श्रीराविषान् । इ अवाग्री दर्ववावळवा युर्धे श्रीबात्यात्वर पर कत् है में रवापावेवायु" त्र्वां या इ अवा श्रीकाया कुषा 'हे वा द्वा निर्मा था ते पा कि प नतिः शुन् नकृत् चुन् ना कृता हे न दुन् प्यन् ने न दुन् दुन् *सॅॱ*ळे*न्'सॅ'*नु'अर'सॅ'ॲन्'स'ॅन्रॅन्सॅ'त'अळॅग्'नु'ॲश्रप'विग्'वन्'नुग्'सॅ'विग्'' ष्ट्रीया जेव प्राप्त हो विते तु विवा विवा विवा विवा त्रा त्रा ही व प्राप्त के विवा विवा विवा विवा विवा विवा विवा ब्रुन्-नुष्ण्या न्यक्तं न्यक्तं ख्या नक्तं द्रवर्गानवन्यन् द्रव्यं द्रव्यं न्यन्यं द्रव्यं গ্ৰীৰাব্ৰস্কৰ্ভৰ্মান্ত্ৰা ৰ্মান্ত্ৰ্মণ্ডৰ্মান্ত্ৰা ব্ৰামান্ত্ৰা ग्रावराधिन प्रति है। है पर्वत्य ध्राय ने न के पर्वा है। प्रनु के प्रति हैं लेब्द्र-चुन्द्रन्त्रात्मात्रक्षंत्व-द्र्यम्ब्युन्द्रवाद्यात्म्यः। व्याद्यात्रात्म्यः

देर्द्वर्द्रत्रं व्यापेद्राचाद्रवा हेर्या हेर्य देति विकान् के विष्यान स्वादान ब्र'देन्'कु'ब्रे'ब्रेडेश'द्र'रूट्'ब्रेडेव्'ब्र'प्रदेव्'प्रेन्'ध्रस्केडेर'र्श्रह्मेर्र्याचेर'प'या <u>हे ८ ईद में जैरान क्षेत्र पराक्ष्य में ता विषात क्षेत्र क्षेत्र पर्वेत्र पर्वेत्र प्रवेत्र में जिल्लाम</u> वितः इवल ग्रैल गुन् पर्देश वहा प्रमुख पर्वा त्रवेत्रद्वराष्ट्रियायाँ राष्ट्रद्वर्यस्य द्वेत्रत्त्र्यायाः मर्ड्र (प्रयान्न ह्राँस पुरास्त्र) वर्ष प्राप्त हे मर्ड्र की व्याप्त स्तर अन्नण् सूर्र प्रत्युर प्रति पुर् हेपड्डा शिवामन वसातह्र में हे अपने निया निया ने हिन स्तर में की सदी त्या हु न सहिता न्द्रेन्यात्रस्याचेर्यं के अप्तरमहत्वित्यान्त्। हेपर्वन् ग्रीराहित् न्यान्न्यायन् रंथायन्या हेवायन्या न्याह्नियं वन्या *শ্বাবানন্দ্রবাৰ* শ্বির্ণীকার্সনে নির্মান দলে কার্ককারীন 'বুকা'বারা'''''''' म्बुट्यप्य। पर्गव्रादर्भियार्ग्यक्ष्वाञ्चर्भवाद्यार् श्चराकेर स्थानेत्। तुःइवयागुर स्थानु तर्वा राष्ट्र वा राष्ट्र वा वा वा वे वे रायवा। हे'र्र्युव'ग्रीमुग्यन् मॅन्याय। यातर'त्र्रेते'सुन'राष्ट्रव'यायेन्यार्ग्वन् ब्रैग'या ब्रुंरपान् ग्रामें प्रोपारात ग्रुराविता वेववा उन् के में वर्षाता यर:भॅर्'त्रेरप्यप्र'तर्ने गरततुग्'र्मेररावय। दें'व्यायग्'र्र'र खुग्। तर्ने इवयायय न् दुनः हिन्। त्ये व्यव विनः गर्वे नः या वयवे न । तर्ने इवराकें बर-र्-कुष विन्दर्द्द्रित्रा विन्दर्द्द्रित्रा विन्दर्द्द्रित्रा विन्दर्द्द्रित्रा विन्दर्द्द्रित्रा विन्दर्द विता द्वितः स्टायान्य स्थाया स्ट्या इंद्याया वित्य इंद्याया वित्य इंद्याया वित्य इंद्याया वित्य इंद्याया वित्य बेन्पति हैन्द्र में द्रारा या बेंदा हैन। से दार्म द्रारा प्राप्त दे इयलाईन्यानेन नलाईन्यासन्यतिहन्दन्दन्दन्। इद्नन्नद्रामना दितै-तुःक्षे-पान्न-ते-सेन्न-से-ज्ञानन्त-क्षेप्य--पत्नु ज्ञान्न-साग्रु--क्ष-ज्ञान्य-सन्-प**र्जा** क्षेःर्र्षण्यायम् वाराधाः स्टार्यस्य स्टिन् द्वार्याः विषयः वार्षः स्वर्षः स्वर् ह्मण ही वित्र की बत्र भी बाद में निर्मा के कार्य के निर्मा के किया की कार्य के निर्मा के कार्य के निर्मा के कार्य सरामकास्वाकु सेन्। वनामा मार्गाह्म स्वासा स्वासा स्वासा विवानाग्रम्याया वर्पान्येर्पानम् व्राप्तान्यः वर्षान्यः वर्षाना विग'नेर'परा हैं ग'यादव'न्र'ब्रुव'रा'हवरायहंररा'रारा बेहररा बाने ने अर्थे पान् मा बुदारा धारा है व स्थार है राया ने हैं बारा हुना मश्रञ्जन्यतिष्याधुष्यार्थे विषयित्वया हेर्यवया नुव्युष्या प्रस्तर्य गुर् चत्रें हे व्याप्तां व्यापायां व्याप्तां व्यापतां व्याप चर्ड्य भीशान हैं वा नेन्पार श्रुन निमालका महिल हैं। निमाल हैं वा निमाल **र्हे** 'ग्' दर्ने र 'वें व्' ठेग्' ग्रुन्' । ह्रे श्रुष्ठ 'र्मे व' न् ग्रुन्य हुप्य हेग्' ग्रुन्य । स्वत क्षेकें,मु:संग्रेनवार्यान्ये प्रमान्येयम्

विश्वत्तर्थं संज्ञेष्ट्रविश्वस्य । विश्वत्तर्भं विश्वस्य विश्वस्य । विश्वस्य विश्वस्य । विश्वस्य विश्वस्य । विश्वस्य वि

মউল্লামনি'অন্ন-নে'অৱৰ'ল্<u>ল্</u>লি'ম| | সল্'মতলানইল'ইৰ'মন্ত্ৰ' नित्रं सम्मा । मार्न्यं सम्मान्यं सम्मान्यं । सिन् हिन् यापन्यः पुःच तुर्वित्यते। । सान्यस्य स्वत्य स्वार्थियः य। । से स्वार्धितः स्थारा में ह्या थालया । ने पहेश होन हिन ही सारा तथा । सि ह्या हेन्द्रियाम्बरुगहेन्यद्वरः। दिःहः इयम्बर्द्धन्यम्बर् 용화·첫도·형·영·회화·다·월도·| | 다크로·폴·형·영·종·제·형치·월도·| यम् तम् में मुन्ति मुन्ति मुन्ति मिन्ति मुन्ति हुन। वित्र्वाष्ठ्रयाम् हुन्। र्वान्द्रम् वित्रवित्र मज्जूर'रु'दुर्'। |व्र्रंदेग्य'मवि'मज्ज'रु'मवि'दुर'। ।मज्ञर'स्र कुरित्केर्रा । प्रचर इंदे श्रास्त्रा । मिल्ला मिला हे सामिता मिला है सामिता वन्'क्रीस'नेव। । वी'म'न'मि'न् गु'मिक्ष'न। । वि'म'ने कं निते वन्'क्रीस नेता विव्यत् सं पा शेष्ट्र त्राया व्यत् पति त्रा वा वा वा वा वा - दिवा । ज्ञर्'रे'ग्रचिरे'त्र्'ग्रैं स्त्रेत् । तर्द्र'ळग्राग्र'प्र द्रात्वित । नर्तर्त्त्ववेदाक्षेत्रस्यवया । नर्द्रवित्रम् विव्योग्यानेव। । यन्यायहेव'न्स्राक्ष्मेन द्रम्य हिला । यन्यय हुर'गेवर'ग्रेश'नेव। विव्कृत्व'त्रंयप'ने हुरावर्स्वा ।क्षेरवा तनुषायते'वन्'ग्रेशचेव। ।यन्ग'यक्षेन्'ग्वन र्क्षेन्'हेन् तर्हन्या । न्यानिम्दिस्यान्तिम्यान्यान् । महिन्द्रस्य तः अर्मे संगठन। । निगे नित्रे अर्थ के जिल्ला । निग पि हैं A 新四丁丁爾 1丁可養不愈對不由不過可之首 1丁可內因內 動

सन्याञ्च वरा यह रात्येद। व्हिंदाय हुन् की वयन द्वा वर्षे ने द्वा चन्य । इंतातक्ष्या इन्द्रम्य न्य निम्। विग्य चहिन् निनेन गुरुष्यवत्यानक्ष्रः । त्रिवरात्वितः नतेः स्वाधाः वर्षः वर्षः । तर्न्यते त्रम्बं रक्षेराय विद्या नियम् हि: व्रम्य वित्रे तेतु क्वेष विवास | |दे त्य व्यम प्रमान विवास व ने',य' सॅ न्न में न गुरुष्य व। नि' है न न ता त हैं न सं है न है न है न हगागुन्ह्यान्तिन्द्रिक्ष्यान्तिन्ति । व्यायायायान्तिः संस्थातगुन्दा । ५५'रा'नहवार्रिते हुवाकिषानहेरा। । व्यापितान्ति सुवाकिष्ठियाः र्या । म्रिक्याम स्थान द्रम्य व्या श्रीत्या । वि द्रा न न स्थित डेशल्या । व्रायायाम्यापतिः श्रायायया । त्युन्यायते स्थानाः स नगुवा |हेद'रनेयान्डु'ग्वेकाग्रि'सॅझॅर'नडेवा |इवावेकाळेग्व নজ্ব'তী'শ্বশ্বব্যা | বিশ্ব'ইঅ'ব্শ্বনি' ব্লু'নি ব্লু'ন ব্লুনি भैग'गहेरा'ग्री'न् म में गरात स्वया | विंद ने परा हेरा ग्री तेतु है। गहारा गर्भ | विंवायम्बर्मित्वयं वित्वयं वित्रं शंहिकां शे प्रज्ञन् संहित्र प्राप्त विकार प्राप्त विकार विका त्रांबं भी निविधन है। विश्वा देन तिविध निविधन हैन देन विष र्गाः इतः क्ष्यापतः वर्षेत्रं क्ष्याः स्ता स्रा वियावियात्र्रात्राचेत्यक्ष्याम् । विः नेवाक्षेत्रः सः ग्वम्दु"प्रा न्याः क्षः र्येगः दका बेन्। । क्षः नेः ग्रुका ग्रुका मदिः नन्य वेदा ग्रुका। ।

तरे अप्तर्म् प्रमानित्त्व प्रमानिता । तिरे व के का नामित के प्रमानित के प्रमानित के प्रमानित के प्रमानित के प्र मब्बार्या । ह्रायायहर्षा गुवार सुना वीसना ही समा हो। रमरक्षे पर्त्रवर्षि । १८६५ स्व सङ्ख्रा विषय प्र नर्दि । विते अग्अवायवैषयाक्षिय यतुन्विद् । निः कुत्र हुन गर्दि । । ननः तर्देन् । यः तर्देन् श्वः विदेश वि तनुषान्यात्वातान्या हिंबाकान्या । नर्रम्यान्यात्वात्रान्याच्या रत्। ।रनःञ्चनः प्रेगः परान् ग्र कः नत्। । व्यान्यः त्रा विराने वा विषान्त्रेत्। विष्टक्ष्र्वाक्ष्यवायत्रे सेतुः क्ष्रेयविष्यते। । त्वे द्रसः त्र्वेन्द्रविषाश्चेत्। विवाहरूचेव्द्रविषाश्चेर्द्रवा । नगद्रवृत्तः ल्या वित्रास्त्री । त्रास्त्रा व्याप्तास्त्रीते कृति । व्यास्त्री गुल्यक्कीक्ष्मित्रित्। विश्वानस्याक्ष्मियान्त्रित्वर्ष्मित्त्। । र्यकेंग्गर्रम्यरेग्म्रियास्यत्। ।कुर्क्यति के छेर क्रेंस मर्जुग्या । ह्याया विद्याचेन् मारी खुन् किया या हेना । यो वेदाशी व क्षा षरपत्र । वर्षेष्णविष्यम् । पर्वे केष् क्षंग्रेरापा । । १५५ प्रवेदि में द्या क्रिया क्रिया । ५८ रेग्'गेर् मु'क्ष्'येग्'य'या । विद्यार्यरायेग्'गे मुद्द' हेग्'यहरा । त्रेष् हेर्केषप्त्रुत्'ग्रेषुष्यत्र्त्वा ।त्र्त्'वेत्'रेष्'पत्रेशे इर

विषायज्ञा । स्षायस्य गुरायस्य गुरायस्य विस्तर्भया । यने छेत्र प्रीत्य शुःसद्वापानुस् विष्ट्राक्षेत्रस्य क्षेत्रपान्तुन्त्र । क्षेत्राके बैक्ष'र्वेन'राष्ट्रिं। तिर्नेन्'हण्याञ्चल्युण'क्षेत्रं'यतुन्'ता विवक्ष वित्'क्रॅन'पते श्रेय र्या ५वा । महि ख्या खुब तमेप रा की खु पत्र्त म | इर पर र ज्या की यु प कर । | र कुल र र प र त हुं प की का र्मेश क्षिरावेर्षे पेशकी मार्च नहा विन में न केर मर्च्द्रभगवाय। । मुःशुपाये नेवाक्ती अन्तर्भन्य व्या मनेब्राध्याप्तिः अर्थेषा । मन्याय्वव मून्यि सुरु ह्या । रम्प्रद्रिष्यः चेत्रिः स्राप्त्रे व्याप्ति । यम् ग्राप्याम् वर्षाः स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति सुपहरा विसर्वपाक्षवाराश्ची विवादरेग्या विसराहर कूँन्यते तरे दुन्छ्या । कुन्तरे भून्य दुन्। । नून्न रेवरानेन्'र्द्रायाक्चेप्रकेप्येन्। विष्याक्षान्त्राप्रविष्युरान्त्रेष् रम्बुम्र्यं व्यायायम् त्रात्र्यायेत्। विश्वकाम्ब्राम्यं व्योज्याने हेव्। तरम्बायति देन्यात हेन्या वेत्। |देन्य कात्वाय विव्यक्तिया हिन्। कॅर्न व स है के ग रें व की वार्य हैं ग | क्ष्यर व मायर है रें व ही वार्य | हुगाप्त्रसम्देश्वसुद्राप्तस्तावरातकर। । मुन्दार्वस्वयाक्त्रम्य श्रीयापर्जेन । इन्यार सेन्यान द्वाशी मेत्र खेला स्वार्थ है। स्वार के है। सु स्वेद्वार्य । ज्ञिं सर्वा त्रिकार्य त्रिकार्य द्रिकार्य । यन्य तर्देव न्यस्तित्वव्यन्त्रम् । इत्रम्यत्रम् यदेन्यन् ।

यने ग्राया है नार है व कि वा । विकास ने काय विकास के कि वा विकास म्बा । ५ द्राया वर्षा वर्या वरा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष हितुःहुनः यनः छेन्। । इसः हिन्या संकेन संदे ने से निर्मा *ढ़*बहातह्माकेन् क्रिंन्पतिः हे प्राप्ता । हिन्या देवा प्राप्ता केन्या तर्द्वा । ज्ञुन वे प्तवे पी खग के ना तर्द्वा । वे के न प्ता व व के न तर्द्व। । अनुस्राया नेदा की महार्थे मह मॅ'व्रव |सून्य'वेन्'ग्री'तब्रन्जुराय। |व्यापययायर'ग्रीयावया विभाग्निया । तर्म्युन् ध्ये भेवाक्षिय त्यान्य रामर्श्ववया । यह मानवा गुद्रायाष्ट्रवारामा कृता । ब्रिकाया विष्या गुद्राप्ता । विष्या गुद्राप्ता ग्रुअश्चि व्याप्त वित्रा । न्याप्त सुनः स्वरे वित्र में स्वा व्यवस्तिषान्त्रेवाकुर्वा विवासुग्तुव्यव्यवस्ति । मेग्'रा'रेअ'न् गुरी' ग्रम्भा'नेवा ग्रांस्य । ऑन्यासुर्'ने ग्राप्टरी'न् ग्राप्ट्री स्वा विश्व क्षेत्र पात्र अधिक पात्र क्षेत्र क्ष वा विन्'वेन्'यवै के' तबन कुरात बुवा नि'क्र न्या स्थाय केन् विवादारार हुदा । वह स्ट्रवा वी वेद हैं हुवा सर्वे। । विन् वी रखना ग्रायम् ग्रायुक्षां विवाने द्वारा स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वा बहुद्ये भेदारीय। विदारमाई दार्ये देन्य होत्र न्या हिंग्य NA पृष्ठित के कि स्वाप्त के स्वाप 

ह्यापर्ता |र्वेद्रक्ष्येकेव्राचित्रक्ष्या |विद्रकेत्या मनि क्रिंन्, तुः तुन्न । सुः न्यु अ सुन्यु नः क्रिन् मर्द्य न्या । क्रिन् येन् मिने धिभेविषाञ्चर। विवर्णाहें ग्रायम् स्ट्रिश्चरायरायर्थे । । ववस हैशहरातहण्खरायरायहें द्या । यें दाने रायर या दी पर राय स है। दिगलहुगदहुलन्दिः जूनहुन्द्रा । इस्टिंग्याह्रवाकी वर्षे मन्यान्मक्रीवया । विनामम्बन्धन्यम् व्याप्तान्यम् । विदानम इत्'स्व'ग्रे'ञ्च'स'स। । सव्'रह्म क्षेत्र'स्व'र्द्धे द्वा । सव्' **८ व**्षेत्र्क्त्रेत्र्केत्र्केत्र्याया । वर्षस्याञ्चरः छ्वाकेत्रेत्र्याः । शेशरा उत्राद्यां दश्य देवाप देवाया । । न्यन संदे नु न्याया धेग'ळें*ताऱ्*रता |ळेग'रॅव'ग्वेस'त'ब|वसपते'ञ्च'य'त। |रं'च<u>ज</u>' इन्निति हे ने देन्या । तत्याविष्य श्रुन्निति ने विष्ति व्या । विष बिन्-न्ग्नापते भेन्-न्न-द्वन्य। । ह्यु तञ्ज्ञाने सपते व व व व मन्ग्'ग्वन्द्रंद्रं युप्तंश्चित्रंद्रस्य। अक्वियेन्ह्रं यूर् तर्वेरत। विरेपकेन्पॅतिकेतारे दूरत। विश्वप्यक्वितानि न्दरामहरूला ।गुरुलासर्पते क्रिंगुस्र रूर्या ।ग्रा ह्र ग्राह्म प्राप्त क्षेत्र प्राप्त । यहे के द व व व कि के हिन क्षेत्र हैं द व । श्रां हरा क्षेत्रा पति क्षेत्रा केव्रामा विषयमामा वा ग्राम्य विषयमा विषयमा वा ग्राम्य विषयमा श्रुपायम्यार्ष्ठिष्याक्ष्माये - ।गुन्नाम्यायम्

इंट्या विषय इंस्वयं स्थान विद्या विद्या के सन्'ळेन राष्ट्रें त्रा | तिहेन्'हेद'वेद'र्सन्'ने'न्-'चन्'त। । हन्द बेन्स्य वर्षे श्रीय देन्य । यह देन् के के विन्या । वर्षे वर्षे है ज्वे के राक्षे प्रत्ये द्वे प्रत्ये विष्ये व ग्नश्राम्याग्न्रिक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्र त। वि'त्रकारीमञ्जापित्रकेषार्भेत्रा [८५'स्वान्डंबा त्यु र छे य त। । वन सने स पहे स ग्री वा त स र द र त। । । स र र र र्ये न जे है अया था । इन में ब हैन अपशक्ति है या में न हिन का त्वतायेन् क्रुन्पति इतात्वेराम। । पत्रुन् स्वागन्यवादि हेप्न इत्या । मून्य इययाय क्षेत्र मुन्य द्वारा ते तित क्षेत्र द्वारा । गुव् गवि गरिया द्वेष्य अभि । यत्र म् व्यक्षेत्र क्वि हिन् प्र स्पन् । देगलक्ष्र्प्रभ्यतिम्ब्रुगलपर्द्धन्या । ग्राह्यप्रस्थानम् ग्रीहिन विग्'ईत्रा व्रिग्'हेर्रत्यत्यत्ये क्ष्र्र्याया हिंग्वेर् वर् मृग् निहर्न्न इंत्या वित्यदेन्य वित्र देन् के श्रेन द्वाया विश्व वायम्य भेराया । देवायाय अष्टारी । विवादाय अष्टारी । हुनार दे 'वन' र्वारे ने वर सुर्दे र या । सुने य सुराम रहे व की मारा मा वित्रमुद्र इंद्र पंतर मृत्र देन या । द्रमार पद् हें छैर **ऍ**यपाया क्षियपाठ्य विकाशीक्ष हे दिन्या | जूरास्यात श्रीयपादी

**हराराया । इंशर्य श्वरारा दे इंग्सर्य हें राया । १८ व्हर या १६८** श्चॅंप'रा'ल। । मन् लक्ष गृर्वे प्'केरि' अके र'प'र्वे प्रता । गृन्द्रा' गृहिरी' <u> २ (१८) विकास विकास</u> सार्हेग्रा हैं बरके व ता कि के न शिया हैं म राशी सके बर्दे में में म राशी सके व के व वृत्रकारेद्राप्ति देशके द्राप्ति द्राप्ति हैं न्या वित्रके द्राप्ति हैं न्या वित्रके द्राप्ति हैं न्या वित्रके इत्या । ध्यक्षक्षेत्रकुर विश्वेत्रयम। । धुर दुर घर विशेषा इत्या अर्याचनम् र्यान्यम् विषय् । विषयः स्राम्यम् परि <u>चर'भ्रॅ</u>गबर्ड्र्रया ।हुब्द्रयानन्द्रं चेत्र्यते अंत्रया ।हुधी हुब्र **छ**'क्षेर'खग'र्द्रेरय। ।कु'त्रव्रक्षेद्रेर'क्षेरे'ग्राचग'त। ।हग'कर्' महरक्ष्मा विश्वहण्या दें दर्श | द्वी द्वं त्या विश्व विश्व विश्व दें दर्श । रम्पशुंग्वतातकिते ग्वमाने दूरिया विग्वत्राते वर्षाति विदेशिता राता । महि अना अने मा अने पर देन ना । के हे मा अने प्राप्त होने पर मा । तिर्वरतरत्र्वेष्णयतेत्वषण् श्रेरदेंत्य। । ततुः तद्देश्यदेवः हम्बर्कियाय। ।गुन्यायविषयित्ना हेन्द्रिया ।हेन्येन्यहर क्रुँबराग्चेन्'पाया । म'ई न'ळेलारे न'क्रेल्'ग्रेल्च । पर्वन'क्रन ₹ न्रलके पला | रवान्दि केर्पिकेल या नुर्दे हरा । विकास क्वॅप'न्यॅब'ग्रेन्'याया । शुंखन्य'सुग्यदे'यॅन्प्यंन्द्रा । व्याया न्दं र्न्त्रं र न्रंन्याया । अरत्र्वे अर्के वेत्रार्द्र्या । नित्र रामग्री क्षा वित्र मित्र मित्र

इंत्रा । धुनार्चे त्रेरः बूकाव डेटबाराया । वर्षे वरा वेटः तर्वेरः वर्तेः कॅ्रप्राइॅरका व्रिंदर्भवाईरप्तदेश्वरः च्याया व्रिंक्षवादरः बह्मिष्यार्चे हिते कुर्वे दूर्या | त्रवत केंबर येते वायाता | वर्पन ह्न्यतेर्र्ण्यार्य्ह्र्य। । इन्येन् ब्रिअन्या ब्रेन्याय। । तन् ब्रे শৃঙ্কার্ম্ন ই ইন্মা । ইশ্ব্যার্শ্বরিপ্পার্ম্পার্মি बेन्'त्रस्यत्रस्यक्रिभृषु'द्रस्य। ।ॐश्रष्ठै'यम्यकेन्'यते'ग्नम्'न् मा वि'लॅंग्स्ब'क्षवार्शीत्रवाबाक्षवांद्र्या विन्यंद्रि'रोशका ठव'वार में ता विकेंद्' श्रेव'श्रे मु श्रु गुव'ता देंदरा विव'म गुव सहिव्र खे. ने वा ग्रैया । क्षं खार र क्षेत्र की प्राप्त प्राप्त । वि ने वा <del>"ইব'</del>ন'র'রম'র্স্ক্রীণবান্তা বি'বং ন'র বার্নির'। বি' म्यायम् न्यवायन् प्रत्राच्या । मृति रताया म्याया र्षेत्। |र्'न्'अ'र्ने'अ'रूर्'यात्रमुर्य। |स्व'र्वेरे'येतु'क्वेराकुर्' रार्दे | १५'वे'पर्वर्गवर्थाक्रीक्चेर्वर्था | वरवाक्चवार्द्वराया स्व'गर्सेव'रूप। [न् में व'वहेंग'क्षे'यर्देव'न् च्चैनराव'न् वुगरा। । ह्रांश नहीं ने कुद्दु प्रत्नावा । अकेद् में नवा न्या नद देशपर पत्ना । कें शे हमा गुन् श्वॅन मेवा विमा केमा त्राप्ता । प्रमा नुस्य **ॿॖॴ**ॸऒ॔ॴऄॖॸॱॻऀॴॴढ़ॖॸॱढ़ॎऀॴॱऄॕॸॱ। । ॿॱॴॸॱॸॸॱॴॱॸॸॱॴॸॕॱऄॱॶॸॱ <u>বীঝ| |ব্ৰাঝাৰ্ব্যাল্ডালীঝাল্ডব্যামন| |ব্ৰাঝাৰ্মব্যালীঝা</u>

শ্ব'্য'খা | चु'न्दें राख र्टन'न'न्द्रही | सम्बं रादेग हे स्हुन इयर। |गुतादरैरःळॅगशइयश्याराईन्परःग्रंस। ।न्देः मनत्र्र्मन्रज्ञलक्षेत्रुविषाकेत्। ।मन्यान्रामंत्र्यानुराचंव।। ই'ৰ্মৰ'মামৰ'ম'স্তুগ্'ঘ'ঋ। । इ.ম'ন্ট্ৰ্ম'ন্স্ক্ৰ্ৰেল্ড্ৰ্'ব্ৰিণ্ডিৰ। । ने'वहार्थे'सुर्'सुर'र्छ'द्या । ह्यन्'यरवारावेन्'यर'ग्रेन्'रा'प्रे। वि रातर्मन्याकेन्याने हुन्यां धिन् । निवराक्ष्या हेन्रसं ह। विश्व त्याया या देश ने साधा थे। | इस दि है र ज़त हा है र उदा विषाधिव। |ने'वबाब्रेन'यज्ञेंबाषा हॅन चं'व| ।गुवायाय चेन'यदि वायव में भेव। १ वस्य क्षें में इंद कें में हैं में दें न वि वि त्र वि ने वि महिंद्र ग्रीता विविद्य हिंद्र नामि है द्वार के के कार देवा विविद्य विविद्य के कि हु'न्नः हु'भैनें व्। । मनतः ॐ हे'नु 'स'ग्हेशं वं । । महन्य भँन'व' মূৰ্'ग্ৰীৰাৰ্চ্চৰা । অভিচৰা'ঘা'অন্'ৰ'মূৰ'গ্ৰীৰা'ব্ৰিনা । মৰ ৰ'ঘা'অন্' ম্বান্ত্রবাত্ত্ব বিষ্ণু বিশ্বনাত্ত্রবাত্তি ইন্টাই। । শৃত্তিব্বন্ত मुं हर्हे रेरे | विवस्ति हैन्द्रग्राह्मालासा । ह्यस्पति कुण्यान हवा भरारात् । यदे क्वेर क्वेयन वर्गन देन विस्ता । उसस बेब्द्धुम्बद्धाः हैताते की । छिब्द्धव्यादर मुद्देशे । ५ वृद्दे भुद् मॅंब्रबरेदेव। विन्द्यायहरायदेशेतुक्षेत्रायदे। देयर्व ग्रैकाने १६ ग्रापे प्रेन् इतकाय स्ता विवाद प्राप्त कर्

वन्यावन्यवर्वायात्रिका वन्यानेतिसुद्वन्वप्यादिकार् मने रान्ता नक सारा न बाद हो न रावा हु केन राव है पाय र खुर। धारा के इयश्युर्व्य द्वर्ध्यत्रक्षेष्व्यक्षेष्व्यत्त्व व्यव्यक्ष्यत्त्रक्ष्यः क्के'च'भैव'चर'त्तुग्'चेर। गुव'हे'चर्ड्व'यखे'छेन्'चर्दे'न्न'यॉर्घेच'चर' शुराहें | देवेळे दरायारे वारे | श्रायारे हवायारे दायाधिदार याधिदा परतित्व पर्वाष्ट्रस्येवास्यवादाविवासववादी राष्ट्रवास्यवा विराधित्'केशपरापत्वा'स्तु'गुब'क्रंशर्श्वरातह्वा'परावु'वेरापय। हे'चर्ड्द'ग्रीक्ष'ग्रुम्'न्द्रमं क्षेत्रं रम'न्म्'विदे तु'चक्कन'तिन्याप'गुदाळेल''' র্ম-(৪্ল্প্র্যান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্ত্র-(ব্রান্তর-(ব্রান)-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান)-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান্তর-(ব্রান-(ব্রান-(ব্রান)-(ব্রান্তর-(ব্রান)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা)-(ব্রা) *न्दा*र्हे ग्रापर वेशप वेशप प्राप्त पारी हे पर्देशन प्राप्त के साम के धेन'परे'न्न्'रा'र्घप'दय। धेर'ग्रेस'न्स'र्संस'न्न'श्चप'पनिव'पनिय। क्र्यान्त्रक्रयान्तर्भात्रक्रात्रुयावत्ता स्याधिहित्तर्भि क्षेप्तइ पात तुग् कर्। हिन्ध र झूर ग्नेवप्तरे केंग्व व अहेन् कें तहेग हे द के से विंदा तार्चित्। तके के म ने न कि प्यान से न कि म स भुग'गे'रर्'व्यातके'चरत्र्वापय। र्'र'यर्'नेव्यवह्यानेर्' नेर। हे'नर्ड्र'ग्रेंडग'डेर'तत्रर'नर'तुब'रा'नव। हे'नर्ड्र'ग्रेब' गुन्न गृत्यामु अत्याय्व पुन्न गृत्याय्वा ग्वन हे न न न न न वया रग गैका श्रेव किर में भागर राष्ट्रकारा दे भाग विषय के साम कि का श्रेव कि साम कि का सा के.नदे.स्याप्टेपाचिनाचेनाचिनाचिना सान्नाञ्चनाचेताचिनाचेना

## イグ・他になるという。

व्यं गुर्व विद्वा विद्

न्हें नुस्यतित्तुं सं न विव्याध्यायशैवान् हेन्। तुः महेमस्वय। हे स्द्वारामात्र्वात्ते कृतः त्र न्याया व्याप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता

क्ष'न् मॅब'बर्ह्र ग्'न्युख'ल हु नव्यहु'बर्ह्र | हिन्दा हे उव ग्रीहा <u> चैव'ग्रैश'र्ह्हेंपर्य। | हे समाईंब'ग्रेटर्याय'क्य'ग्रेहरायं। । भु'ङ्ग्रह्या</u> क्षेप्तराज्ञराव्यायवाय। । तर्नेरार्ट्यव्यक्तिप्त्राक्ष्यं सं सं गुत्र। । ब्रेन्प्यह्न्यायम् न्राकेण्याया । मेन्प्रम्प्विष्यु मेण्याकुत्व्या इसमा । हा से यहान ही रेमार्से वर्षे प्राप्त स्त्रमा । हैन से पर्दे र र्भे भेक्ष कर्र्स्ट दार भेदा | द्वार में कार्य हेर के निर्देश कर यादिन | हिन्दस्याम् केसायाल् पायम्या । मन्सिन् मन्दि से स्निन्या है। । वायाँ एक त्यां श्रें के न । । गर्या में लाकी यक न हे दान हारें सन्।। वर्ष्ट्र-त्यक्षुन्त्र-त्रमञ्जन्त्र । दिःसर्वेष्यम्यन्त्रम् । दे'वहत'वृत्रवं कुरापक्षर'पावरिष |दे'वहत'त्रुत'र्देशपञ्चर'पा न्डिन |ने'त्यन्त्यस्यस्यक्षेक्ष्यन्। |ने'त्यप्यस्यस्य क्षेत्रक्षेक्ष्यन्। बह्नसार इरिं सूर्। विवेद व्याह्य र प्राची विवेद विवाद ळय<sup>®</sup>श्चित्रप्राम्हिन । ने'श्चिक्ष्केन्यत्व ह्यापान्वहेन । ने'श्चर प्रा मुग्नेवायभ्रंराम्बर्ग |देवार्यंबहरहेकुब्रिन् |देवायाबहर र्रुः छेष्यरः। विग्'त्यर्स्ये वर्षे भूत्रपन्। विवर्षे चर्ते वर्षे स के'न। [म्भा रेन केन हुन्यस्तर्रं मून् । अहन नया हर्ने

নষ্ট্রনমার্ক'র। । স্থান'মেরণ'ইনের্ন'নারীকা । নি'মার্কারারকার <u>ब्र</u>ेशरा'न्डिन् |ने'सद्यद्यक्ष्यिस'न्ज्ञॅन:च'न्डिन् |ने'याँन्सस्यस्य छे'कु बेन्। |ने'स'य'यं वंबन'के'के'यन्। |हिन्'रशं केव'रशंक्रन'झन्पं दे। |अवर्षेन्वं न्वं त्वराञ्चाञ्चेष्व | शुराष्ट्रवाह्य व्यादर्शेन्य वावर्षे न्नर्। विवेद्द्रवादुर्द्र्र्पत्रेयश्रवंद्र। विव्वविवाद्दंद्धेत्र्यः ग्रेश द्वियंबेर् ग्रेर्ज्याचेर् प्रांग्रेश विष् रा'पड़िया । क'खगरामर'र गर हूँ द'रा'गड़िया । खरायार सार्वेस मुँद्रायान्त्रेय। । तस्त्रीयाञ्चरा स्यास यान्त्रेय। । व्युरायान्त्रीया चेन्'रा'न्वेरा |ने'त्य'र्द्र'यहर हे हे येन्। |ने'त्य'प'यहर्द्र हे हे ष्ट्रा । शुक्राया में रापा नहिना से दाराया । दाक्र वा में रापा देवा रेक्ट्रा | श्रुवायादीवायावीवायाता | द्वरवार्वे स्वायान्तरा हेंग्राह्म । शुक्रायमिंदाना हैग्राह्म । दे दिरायमिंदान क् हैशम् वेरा । शुक्रां संस्थान विषा के दाया । दि ने द से साम स्याप स्था र्रेयान हवा । हिंद् 'प्यत्' ब्रुक्त्यायदे न्युत्त्' दर्के चान हेवा । प्यत्' ब्रु पत्र'क्रियर'कर'धुर'। | (अअ'दर्ने'न)वेलान्डेन'अवापहर'कांबेर्। | नेप्यन्यतुन्भीयरार्कन्धुन्। श्रुप्तेषानेश्वाय्यवानेषा बे'नेश₹स'तर्त्रेर'धारा'तात्तुर्। डेश\ईंर्'राते'शु'सुस'तश। **हे**' पर्वत् श्रीः वतात्र वात्र वास्त्र स्था वास्त्र वास्त् तर्वाधिवासुरायम्बद्धाराय्याम् अत्रार्धाः अत्रार्धाः व्यापायास्य न नृत्यं व्या त्रिक्ष स्वार्थ के स त्रहर्म् स्वादर्भे स्वादर्भे स्वाध्यक्षे क्षेत्राच्या स्वादर्भे स्वाध्यक्षे क्षेत्र स्वादर्भे स्वाध्यक्षे क्षेत्र स्वादर्भे स्वाध्यक्षे स्वाद्य स्वाध्यक्षे स्वाद्य स्वाध्यक्षे स्वाध्यक्

हिन्दिर्द्धव्यक्तिन्न्द्रम् व्यक्ति । शुः हो द्यारा व्यक्त रित्रेग्विन्दाद्वय। । क्रेग् श्रेनः श्रेन्दारेन्द्रार्थे । 159 न्देगसन्सम् सेवान्सम् संस्थानिकान्यन्ता श्चेर-१६ वित् ग्रीयायानेयात्। १८८ र या केत्र र या कर हा प्राप्तित। १८ वि म्बान्यायस्य व्यात्रा विश्वास्यात्र्ये राष्ट्रायायेव। विरागह्य रा'न्येंद'द्रान्यः १२ न्याया | १२४१ दुर-'र्नेर' नुन्यं प्राप्त । अदा मदिकेग्'र्न्द्रह्ररम्बेमबाद्या | द्वेष्यदि'मर्'यव्र्र्र्स्यर्र् RB । विश्व हिंग्य प्वित्वयान्य विश्व विश्व । दिव प्व विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य कैति तुगारी वस्तार्वेग । ग्रास्य न् ग्रास्त्रे स्त्री स्त्राप्त । वस्य वस्त इन्वराञ्च केन वितान्गरकी वर्षन् हेवार देर अन् विवर् व्यातुर-तुःपञ्चेमवार्चन्व। १२:वर्गे।वामवाम्यम् वर्षान्वर्मान्वम् १२:वर्गे। मिप्यश्र म्रें म्रायं दे। विवाय दे प्रमे म्रायं के प्रायं के प्रमान में म्रायं में मार्थं मार्थं में मार्थं मार्थं में मार्थं मार्थं में मार्थं रिसंग्राम्यार्थ्या । श्रीरात्रं साम्यान्या । येरा में न गर विते त ग्रीन स्थित। भितान गर शेव वित्र हे दात इ पाने। । न्यतान्तिरतिष्ठापतिष वर्षेत्। |नेवमत्वर्गन्यनेवानक्रीरत

रे। |र्ण्यायर्अः स्पन्नुरेप्तत्ववायावस्यवा ।वेपन्नुर्ण्यानुन षहें न्यते हेत। [ने वहत हुन ने विवन्ते में रामे | किंगन न हेत धते श्रे दें भेद। । श्रुव भे । गृर्व श्री गृर्व **ध्याप्तर्वे व्याप्तर्वे व्याप्तर्वे । विष्याये विष्याये विषये । विषये विषये विषये । विषये विषये विषये । विषय** स्व इंर-ने प्रशक्ते पायेन्। । या यहंदाने प्रवाहे पायेन्। । या यस न्य अक्षेत्र न्यान्। विषयम् न्युन्य कुन्य विष्येत् यक्ष त्र्रे अन्। | वर्षेन वर्षा हुन नु पत्रे पर्वा । में वर्षा करा क्रिया न्दान्दिन निंविन कराक्ष्रिन्दिन्दिन विवादिन ग्रियासन्यम् । विक्रमान्यानिकान्यम् । श्रिम्द्रम्यवे ८तृषाक्षेत्रमा पित्। । वृष्युवाद्गवराक्षेत्रपञ्च । व्या म्धितेवहेलात्र्यारी शिक्तिप्तक्रियां विष् विग्राय न्याया दे। । यतुन् के र्ये अपि खुक्यित्। । स्थि अर्कन् श्रेक बद्यत्र च्रतः न्तः च्रणः मैरा पक्रतः । ॥ पद्मनः इवरुक्तिः पतः वर्षेतः भेरा । विनातस्यातु है 'प्रते हुं 'प्रवासीवा । इं।तस्यातु होना वे साने ता इया | दिंशकर दे नगरे के पार्थ | | प्यां वर्ष वर्दे पार्थ | | चग्'न्बर्स् अर्ध'स्रन्'रा'ने। [अवर्धन'कुन'वदाञ्च'ळेप। [चग्' रेव'केव'शुरुषप'तर्दे'श्रुत्। |वर्षत'व्यादुत'तु'पश्चेपयार्थ'व। | इन लाइग रेल पुरान गुडेन । इन लाइग रेल पुरान रे। । ह्रेन मन् न्ने न्य वित्र केन् के क्षेत्र प्रमुक्या । रेक्न में दिने न्य केन् प्राप्त

षित्। । धरान् स्यात शुरा हता श्री स्वा । श्री राज्य होन्। न्द्रेशकीर्शेवळवराधिद। किंक्ष्णिम् निर्देशियाराधिद। निर्दा ब्रुवक्कि ह्व निरम्भेव। । व्या नेव केव ब्रु ह्या पार हार है। । हु इता ইনিংক্ষরাক্তির্মান্ত্রির বিশ্বরাক্ষরের বিশ্বরাধ্য भिन्। । स्र-रत्राग्री शुन में न पत्रात्राधिन। । ने समत स्रुधिन नर्भर परी । गुन् भुक्षानर्भे दाप्त ग्रादा भेना । दें सह र दे पक्ष **छे**'प'बेर्| |**ण**'ब'र्ब'र्द'प्रशंक्षे'प'बेर्| |देर्'रशंकेद'रशंकुर' म्नन्यान्। । वावर्षन्कुन्ववाञ्चाकेया । शुप्तविपद्यात्र्र्रेर्धवः इ.सेर। विह्नद्यार्थेर्यंश्चित्रात्र्यंत्री विश्वतिह्या ग्हेरा । म्व देव राष्ट्र के वे द रापे | विक्र विद का है ग्रा विद राष्ट्र के विद र विदा वियवेर परेर वया हेर दे । वहर परेंदा विवाद र म्यानधीत्। । काशुनावानान् न्नानक्ष्रं नामाने । । नास् वायति संक म्नाराधित। । वित्राञ्च छन् तेत्रापन्। । वृत्रवार्धन विन्द्रवा न्रान्धित्। । खनायारकार्मेनाकुँदायाने। । गृतुकार्वादेश्यने दून त्यर प्रेषेद्। | तर्कें पः ब्रून विश्वाचा पाने | तर्ने न प्रेष्ट्र प्रिप्ट प्रेष्ट्र प म्बद्धन्यप्रेया । व्याप्तिन्याकेन्याने । व्याप्तिन्यान्यान्याने मन्यविष्याभिवा दिन् अत्यास्य ति देव प्रति श्रास्य भिवा । न्न · **६व् ग**्रव्याम् वर्षाम्याः विष्याः । विष्याः प्रमान्याः व्याः वर्षे स्थान्यः । बाप्यानव्याद्वास्य वार्षान्य । अस्य छन् व्यवाहेन्य

त्रज्ञासक्षित्। । श्रु तर्ने प्रस्तर द्वा पर्केन । प्रकेश विष् सुन्य नृत्व सम्बन्ध भेव। | न्व हुं सेन् सम्बन्ध मुन्य स्वा रेअसन्तुन्अपरार्धर्ख्यायाधेन। । । सस्ति हन् न सञ्चर्या हिस्स धित्। । ननः न्वः स्वासुः हेवायायाधिव। । श्ववायाहेवावाव नंदि होन्याधिव। दिंशकरातरीताबकेयायेन। । यांसकंदानरीताबके प'विग'वेन'प'त। स्वि'कन'पम्निराप्तापुत्र'विव। ।न'पम्निरा तरम्बर्यस्ति । ब्रिन्सि है न्या है व्या है व्य हीन'रा'न्न र हें गराभेन। । ५ 'त्र में न हें में मन न द र सरका । हो ५ 'ख बर्धर प्रतिवाबिर प्रांभा विवाबिर विवाबिर प्रांभिता ।र यक्षेत्रं अप्तिश्चराक्ष्या । वित्याध्याराविषाक्षर्याया । विवा ळन्'द्रंशयाक्ताक्तात्रेव। ।न्'व्वाव'ङ्गन्यकुन्'ग्नवशान्गावेव।। हिन्यमहेद्यम्बिन्यन्यम्। विवायन्यन्यम्। विवायन्यन्तिन्यम् यहैव'व'त्र'त्र'य'न्यप'हैव। हिन्देशहेन'रा'वेग'येन'रा'व। हिंद' म्ब श्रीमिवसायव मुन्या निर्मितसायस्य स्व निर्मा स्व वार्ने प्राचित्रा खुरा कुरा कुरा । दिन्द्र तार कुरा की कुरा माना प्राची हैं । हिन्'व'या इयता ध्यानु प्रापाया चरता । विवाग हुन्या परा इयराग्रियम् वरान् त्रायायाने प्रमास्याप्य में क्रिया स्टिप्यायम् पुर व्या श्रे'व्'य्न्पतिव रहान्त्। वर्षितिव व्यन्ति।

है नहुंब् कु व्याप्त वर्षा प्रत्य प्रत्य वर्षा प्रत्य प्रत्य क्षेत्र है व्याप्त क्षेत्र व्याप्त वर्षा प्रत्य वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्

हिन्दहेष्ठरहेन्य कुन्य है। हैं से दूर राज्य नि षवा । हैं वें दूर्रे दें श्वरूष दा । न गत पश्चन वर्षे द्रारा ने। । म्रु म्रु र वर्षायायायायायाया । म्रु म्रु र वर्षाये विषया हुए हु। न् ग्रात्राच्छुन् परिन्दें अर्थर ठद। । यह्यालु ग्रां र का केवा अर्था व्या समा अनुपरित्रास्यान् ने स्मान्या । नासुन दूर्वे नास **ಹ**ररापरिश्व विग्रिक्ष वि बेर्। । संरक्षपति भुषा सुराह ग्राया तर्रा । यर्ग तर्रे र बे'खर्याचें पागुरा हु 'पान्यवा । इं'के राष्ट्रेन् परि रमान्यमा वा र'रेश'हे'पर्डव'द्येव'ऋपश्चीका । रर'रोवकार् र'प'वाहिर'व्या क्केषा । श्रेभी दॅरस् देव केव ५८५। । वर्षे ता क्वेंदा देव व्यव दिव त्री |हेरवाया हेर्पाय स्थाय विषय विषय | विषय देवा हेर्स ग्रायम् । हिन्द्रायाकेन्याकिन्यस्थान् । व्याप्तान्यस्था वर दुर वर्ग इर परिसु वर वहार दुः वहार । वे काळ वा क्षेर ८६ ग'र्ने रापदे ग्रंबार पर ५ प्रायम हे पर्व द की वाय या ট্রি'ট্র'বি'র্বি'র্বি'ব্রে'ব্রি'ব্রে'ব্রে'ব্রি'ব্রা **ট্রি'র্ব্বরাষ্ট্রি**'ব্রবার্টরা

हेर्से हे तक प्राची वायह प्रकार । है से बुर्स दे हुव हुए हा । न्यात्रमञ्जन्मिक्स्यळ्यक्वा । माम्मन्याकेकाञ्चानिक्रे य। अंधिराधरापायायायाया |रेपीस्वयस्ट्रारस्टराया षी | १८.४८.श.५४.४५८६ | १४.श.५५४.४८. ब्रुयः व वर्ष ५८८ | षा'या ग्रुन्' र्ळ' न् ग्रन् जुन् धिन्। । नः न्रन् र्वे स्पर्नः न् प्रत्वे स्वे न । र्षेद<sup>्</sup>श्चेश्च तत्रक्षेश्च पर्या | देन यश्चन पर्या द्वरा व्यक्ष करा परिश्चेत्र | | यन्भेत्रिं केन्द्र ग्रान्य विवया । ह्रा स्ति स्वर देन ग्रा स्ति निन्यमार्याच्या । नामक्रिकेन्द्राच्या । मन्त्रानुनामं हेस्र नेना मुँवा भ्रिःसेन्ह्र- ५८ प्रमुग्य मेना । माहरीप स्पार्ट् हुव'रु'तुरा । अ'वेदेरेन्द्रं स्ट्रांच ग्रन्वग्रम्था । इव'ग्रद म्र शुःगन्द वादेन शुकार ख्रे गवा । देन वा श्चन वा स्वापित स्वा पन। |हुन्।मह्मकी:पी:सुन्।मईन्'भ्रन्थदेन। ।ह्र'स'न्युन् हून्' <u>र्रः रूप्ते विश्वास्ति । विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास</u>्त्रा पश्चमत्। |ल.ए.५८.अ.बेबाइव.२८वापते। ।सप्तके हिवाय हेव

सुन्यायहरा । निनेष्टिराययम्याविनायम्बिता हेर्द्रसः न्यभे देश हैन पक्र नर्मा । इं.स हि स्था न पन न न न न मः तर्दू नितः कृष्यं मुज्जन वकार्षेत्र। । तथान् गतिन कुन्य हुन् नु हित्। । माद्रेन कत्ने धेल नवाह्मात्। । विदेशे वारवाया । व्यः ह्या : अर्थायायः न्यः विवयः न्यः मकरा | दिव्हें बर्गान भी <u>सार राज</u>ी साम है न कर देश क्ष्यान्त्रा । भूपत्रमान्यान्यान्त्रान्त्रा खुग्वा चरा विते में ब्रुन्ना | इनवा मया ब्रूने में के रहिण न्ना | ह्रीयाययान्यरायवित्रासुत्र्वान्या । न्ययास्याद्र स्त्रीस्यायया त्या भिन्'केशवत्यन् वर्षायक सप्तरम् वर्षः। । दर्षा ग्रहः ते त्रं स पश्चिष्यर। । कें तर्ने हें संयह र पङ्गे बराय । यह द श्रे क्रेन सर्वे दे स्थाल्या । दाइता तर्जे राष्ट्र हिता है स्थाने हिता सुअंश्कीर्भेर्यायायवित्। देशनश्रास्या वितः द्वाराहे चर्ड्न क्री इस मर त्यं कर्ष प्रत्ये हुन प्रतिन् न प्राक्ति स्वा हुन हुन त्तिन्'न्म्**रायते'लु'च'दद'ग्रैस'स्या**च'सम्। हे'यईद'ग्री'लयाद्य। ब्रिन् इयस श्वा सिंदे न देस श्वा नेन 'ग्री श्वे । ता श्वे द र न श्वा शे मेन केंद्र छेन्'न'तरे'सु'दुते'न् गत्र'च'ब्रुंन्'न् ग्रायम् अ'सन् नगरा वर्ने 'मेन्स ग्युर्य। मिन्द्रवयातार्क्षे ग्रे प्रतिवशुर्दि ग्युर्यार्थ।। अ'शुराबराधादे विवयातात्तुन्। विनादिराह्ये वारा सुर्वा स्ति। किर्न्यक्षं क्रमन्ति। किर्न्निर्देशण्यन्तिन्त

व। भिन्दर्भव्यवस्तरम्भवन्त्रिया । क्षेत्रर्भवे पठन र्मा मॅंीय। | ७ गतः श्चनः हुनः तुनः तहं गवः चवित्रः तु। । इः अरे चन्दः म्बर्भान्त्रवार्ष्या । स्थानित्र्र्भीयस्वर्म् <u> দৃশ্দু:শুদ্মাৰ্মাশুদ্। । শৃত্ৰ'মাই'ট্ৰ্'দেশী আৰু মামামা। । শৃত্ৰ'</u> व्यव्यत्त्रिक्षेत्रवादी । ग्रेन्य्यस्विक्षेत्रेत्व्यव्यव्या बर्स्ड व्यन हो साम हेड व दा बाबा | निकार्ते राय तुन की महा हो निहा | हुन्दुन्न्याहे अन्यान्यान्। विक्रां न नवान्यान्याः न्स्राधुण'त्रहरायेष्याञ्चरवाद्यागुर्"। । गृतुवाद्यरेतने द्वेन द्वेन तुसाराय। |गॅ्रिप्थायान् गारार्भेगायाञ्चानस्य माग्रामा । विःसेन् सुनः **१**८-८ में अनुस्याया । तहेन्। हेन् केंबान कुन् श्रुट्याय या गुर्। भ्रुं पार्वान्यन् क्रांत्रे व्युवायय। व्रिंत्रे दि ह्या है वाश्चर्यान्या गुर्। |व्यातके देशका दुस्यवा ।देग्व व्याव दिस मृंग । नगतः पश्चन 'ञ्चायते श्चन 'श्चन राज्य । ग्वर : स्वर स्वर स्वर यस मन् वर्षारम हिरा | तहम र्झे 'न्यन'न्न हैन' क्रयस हेन। रेशामगुम्सामग्री सुर्वे ने स्वयान्यत्वमु धिनम्याने सुर्वे गर्रे য়৾৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৸য়য়৸ড়ৢঢ়৸ঢ়৾ঀ৾ঀ৾ড়য়য়ৢঢ়৾৾ঀ৾ঢ়ঢ়ৣ৾য়৸য়ৠৢ৾৽ पान्यवातुम्। गुवामविदेशेवकातार्थावावाविकानिम। द्रिमानदे विसान्द्रेग्यायस्यस्य । स्रायदियम्द्रयादिन्त्रस्य स्रायस्य स्रायस्य लक्षर गर्तराया ध्रम हिर तिर्पर हा क्रूपर छ न करें हुन्यां अद्वित्यन्तिः गृह्णेन्यायाः प्रमुख्यायाः प्रमुख्या हे न्य स्थान्यायाः प्रमुख्यायाः प्रमुख्यायाः स्थान

मते र ज्ञुन दुर्शिन खग् धैर तम् निर्मित पिति व में व ति ज्ञुर स्ता । स्त्री ।

म'बर्जन'स्न्'ज्ञ'येन्द्र'यंत्रे। ।गठेर'त्रि'शुर्गामान्ने'वर्रहा पतिव्यवस्थात् तुन्। |देन्'दिन्दत्रेच्यवस्युक्षं श्रुव्'स्ने। ।के तर्रस्क्री'यान्यद्र'भग्यग्रम् । जन्यक्रपार्थ्ययायार्थ्यये अर् त्रिंरनिरे हे सन्वेष सम्बन्धान स्थान । न गत्र श्चन दुन दुन दुन मंभव। । इप्रदेश्यम् त्यदेश्यम् वर्षे द्वार्यस्य मधी। । वर्षायाय ५५ कि 'ঘউৰ'নবী | দুগ্'রুপ্রমেলব্জ'ই'্র্ব'নগ্রীঝা | শুলীব' অব্'নত্ব' श्चिम् स्थादने प्रवादे । इत्याद् श्चरवा वद्या हा या प्रवाद स मत्र'क्रीमक्कु' वेर'रे। । हम्'तु श्रम्बादबार् ग्रास्तुयामक्रीर्। । <u> न् नुबाह्यम् क्रें अने र ह्यन् बायन्। । मृतु अक्रिये पने द्वेन ह्यन् पन्।</u> मग्री | ग्रॅन'स्यान् गर'र्ज्ञग्याञ्चनवात्रवात्राण्डा | श्रीवेन्'स्रन सून त्रीयायस्यमी विदेगाहेदाळ्यान् न्यान्यान्। अभि माजुबान्वव क'माजुर परापश्ची | केंद्रनेदे हग देशजूर बद्धा गुरा | व्यापके नेवायेन् पर्म्यायर पर्मु । वर्षे र व्याय य मग्रामित्रमञ्जून। । वर्षमञ्चन ज्ञास निकासिके। । यन् गास्य संस्वाध्या । इयि स्वया है स्वति प्यार है। । या तर है वास के वा न्दरपरत्। विवातवापवा हेपईवाग्रैवायवस्य भेर्त्रप्राय र्भेरकरे अग्वैरवित्। देवेतुक हेन इंद्रायम अवाग्र न केंद्र देवु

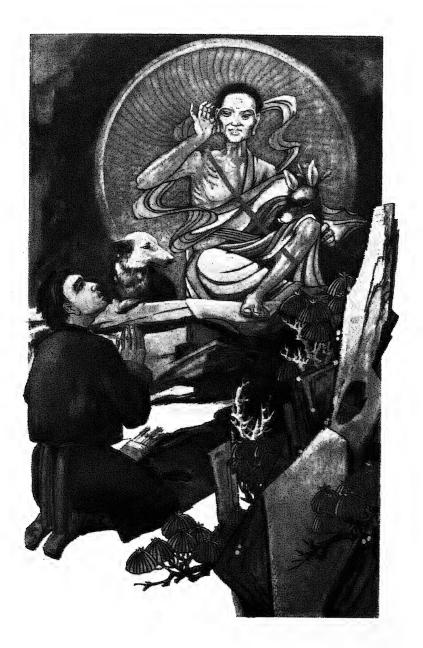
हिर्महें व मुक्त के स्व स्वकाया में म्यास कर मिन स्व मान स्व

बर्कव्यविद्वे 'बर्बाक्षे'ब्रांदर्क्य। । सुब्राद्युन्यविदे वन्युक्षिक्य । শ্রুবার ব্রুবার শ্রুবার বিশ্বর বিশ ५वे श्वराष्ट्रिं व्यास्त्राया । येव हिंग वे संस्था स्वास्त्रिया स् सम्मान्य विश्वति । व त्र हेता | स्ट्रिन् प्राचेत् प्राचेत् चित्र हो । । वार् त्र प्रवास सं हें र ही ଦ୍ରିମ୍'ନ୍ଷ୍ୟା ।ଞ୍ଜ'ଶ୍ୱଦ'ଞ୍ଜ'କ୍ର୍ୟ'କ୍ର୍ୟା । କ୍ରିମ୍'ନ୍ଥିମ୍'ନ୍ତିଖି' सुरावे ग्राचार विया । तर्म सुन् व्यापिक स्वाक्ष स्वा तल्लान्यात्र्वात्र्वात्रेप्तर्वतात्र्वत्। विद्यात्रह्नांक्रेन्थ्वाक्षेत्रात्राः ता हिन्दा हैते खुन्दा के तक नात है जिला निकास में हैन ठवा । निर्ण कॅं र्वव कॅंत्राय दर्र पुंजर्वया । हुण्य हेरे 'इण्य श्रीयान हर दुर्गार्थेया । विवाद वायवा हे पर्वव भेदा दुराव देश है। बळव' स्व'श्चे क्यातर्धे र अ'र्श्वे न'चादे'र्ज्ञ वहां हु'दे बादा वहिन' हु'ने बंदब'''' वर्न्। त्रवर्ग्यान्त्रम् वर्ग्यान्त्रम् वर्ष्यः लाई न् श्रॅन' अर्भुन' पायायाय याचे प्रमाणा स्नी हे बाह्य हिन्य हीना ग्रुत्राव्यान्यात्राह्मायायाव्याव्या रेविग्गोपन्रान्याहर ह्यवारान्याक्रीक्षवायायस्त। नेव्यान्यान्यायायस्त्रुवाः स्रिके सं तारण्यक्त्वस्यायम् नियः त्र्यास्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य । ब्रद्रश्यिक्ष्म् राप्तकुप्त्र्यंत्र हत्र्यकुत्र्यार्श्यव्यायायायाया हॅगवायदिन्तुः शुराववा भुः संतर्ने केन् ग्रीकायायतः शुन्तुः गर्ने ग्रायः मिन'र्ने। । हे'गर्दन'ग्रे'शुराह्मयराग्रे श्रेन'ग्रियराई।रे'त्रेग्'यळवरा

## कुंबक्र, नेतिक्र, नेत्रक्र, क्रम्य, न्यं स्थानिक्षेत्र, म्र

## **色'不'不利'红'一一口'田里田'口角'滿工」**

व में गुर् हैं नर्द्धव के सार वाराने केन की हुण वा ख़बाद बबारन मन् संस्थानिक विवादिक स्थापनिक विवादिक स्थापनिक विवादिक स्थापनिक स्यापनिक स्थापनिक स मळवरवागुः निव विवयावने प्राप्त मान हे विवयः मान दिन्दे विवयः ब्वैव 'न्राव 'ख्व 'दवेनसंय' सम्बन्ध कुव 'क्र 'बेन्' पर विकर न्यकारी: सन् वार्षे स्थान सर्पायान स्वरं नासन् स्वरादरः न्नन् क्वेंग्रिन् द्वाक्यकेंन् र्वेंस्ट्राया ग्रेंब्र रेजून्रे हुआयात इकाया ला रे'नुष्यं प'रा'न्रा न्वें'या ग्वर'रा'इसरा'रर'द्वेद'ग्रेख मग्मेनकारे हे वितार हैं न। यह वावावावावावा माने के हिंगा हु ळॅगरान्या परिवर्षा शु. ५८ होतु द्वरायर समर्हेन न शहा तित्र हैन मुर्भेग त्र तन् न मृत्र ने न न सून वा न मुन्य न मुन् बर्वः वःवरः गणातः सुग्रान्यासुः सं स्रुक्तवयान्या सुवः कर् वेर्ायरः सुरः क्षर अव प्रते श्रे श्रेण कर तराया र नेव विर विष्य अश्रुप्त गताया मर्चव्यायमुव् मुव्यत्र संस्थायम् देप् नेव्याप्त्र म्या व्याप्ति स्वा <u> न् गर्स्य गर्भ ग्रेशे अध्येत इस सम्मित्र स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्</u> य'व। कुर शें हिर दें तहें व शें र र ता यह व का रा ता हिरा द वा देवा वे के ग्वरादेते स्टर है अद् स्ट्रिं स्टर स्टर प्र द्रा द्रा द्रा हिया हुग है के दर्श हिया



च्यात्रस्य म् न्यात्रस्य म् न्यात्रस्य । च्यात्रस्य म् न्यात्रस्य म्यात्रस्य म् न्यात्रस्य म् न्यात्रस्य म्यात्रस्य म् न्यात्रस्य म्यात्रस्य म्यात्यस्य म्यात्

Rक्के पाक्षेत्र क्रांस प्रॉचेत् प्राय | | शेराय देते र्येष या व्याप्त स्तृते । हं देते:लॅप्याय हेव:ग्रीकार्द्र । | रेर्द्रप्याप्ट द्यार्विरप्य र र प्रुवया । **इ**निक्ष दुः र स्थाह्य ने तिनि देन 'देन' तने ने या । अने के देन से ते र् स्था विग'क्रॅबा विकामग्रन'कंरकायदे'न्द्यन्याक्षुतुःईवावाक्ष्वनिर्धन्दुः त्राँ नग्नर के इ सक्षर् रूप्त थर भेर्दर स्वाप्त स्वीत् प्राप्त AT'71 हे पर्वन शेष्ट्रण सहितान पानित तिर्तित ষण्र-ने अन् । गुजुन्य प्रश मुन्द्र्याप्त्रवार्ष्याके त्रार्वित्रवार्षके साधुवायक त्रिहे पर्वित्वारा व्राच्यत्ता वृषा केटा हे पर्व वृष्णे गर्भव सुषा वा वा ন্যাম্ব্ৰ্মা हे' पर्वन श्रेष्ट्र गरा न में न राया व्रतः व्रवायक्तं तर्गायाया गिष्ठिः अन् ने राप्ति ते ता गाउँ न कि ता में न ने के न ने के ने न में कि ते गायँ न ने सा हे भुषु विवायन न्यान् विन्यान ते न्यान ते न्यान वि संन्यान सं का वना में ते 'क्रें का तु म ह न वा मा खेर म म वि म स वा कि म न न न न न न न न न न क्षे न्राध्यम् दंशक्रेन्या विद्यान्य न्रिया स्वाप्त विद्यान्य न्रिया स्वाप्त विद्यान्य विद्यान विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य व रर्देन केर चराञ्चर तार्ज्ञेन स्राप्त हिना पानेन निन्ने केरा हुत्यामका मायाम म्रेन्डित रहें प्राचीन प्राने रहे भेवापर रहिन मित्रे हे सूर नति न्देश्यान् अर्धर अर् न्यूर्यर करे ले क्र गेप्ययम्प्रतिस्थान्यरिति वे क्रियाति वे क्रिके न्कॅन्यावया भेन् क्रि. म् वाग्रेवा गुवावारा प्रमान क्रि. क्रि. हे वार्टवा र् गुरापतेवगुरादरे हि सं सः गुरु दश्या ।

हेर्ड् अग्यरपदिवन्ययात्रति। । त्रियर्षक्ति वृत् विपर

व्रैन'क्रैसक्रॅनरा । दर्ज् च'क्रेने'खसत्य'श्रुद नेदि नर्दर । श्चर वर्षर व्यापर श्चर व्यापर व्यापर श्चर व्यापर श्चर व्यापर श्चर व्यापर व्यापर व्यापर श्चर व्यापर श्चर व्यापर व्यापर व्यापर श्चर व्यापर व्या मया । बि.र्चर मयश्रर व.लुर. प्र प्रिंग । क्रुंग. रुव. क्रिंप्तिश्री श्री था। हुनामहार हुन्यायस्तर सार्च्या । वृत्यंस्या हुन्ह विद्यायेना। व्र-र-रिवर्गत्वर प्रकार व्या । वि ग्रह्म व्याप्त प्रकारी | ति है व'व'रूट'रोबरा'तहे व'यदि'तुरा'स'यय। | श्रेबरा'ते 'सूट' र्श्वेन्याय तर्ने उ.र्सेन्। । न अ.व्रिन्के सून च'या । वृत्र सन्याने स्न र अप्तर्भित्यता । रे.स.रेते.प्रवास दश्मिर ग्रीमे वाता । ह्रं रेते.प्रवास सः चेत्र'तृ'ते। १ते'न्षारामा सार्वारामा सार्वारामा सार्वारामा सार्वे विकास सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे स हैं बाहु या वी ति दिन है या तरे नवा । इया कु के दारि क्रिया विवा है दा वियाग्रह्मत्यापय। हे'यर्द्व'ग्रीयात्रुण्याहे'केव'ग्रेरि'८८'व्याकेट्या पति'न् ह्यन्य'ग्रीस'र्रू स्वापाद्याप'नेया <u>डि</u>'र्कें ने'हेन'क्वेले स्ट वि'न्से न्नन्त्रं वर्षातम् वर्षातम् हेर्न्यं वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया व 夏,口至之,到 न्यकार्चे न्यास्यात्रन्यान् देवाश्चीयरः तु यह्यायाय पहना द्वार्याय के या " वैताये मानान्त्रा स्रीते द्धारानु वता व सात तुग् मी ने व साहे पर्दुव छै। ম্বামন্ স্নিমানা বিষয়ভব নেই শ্রিক ট্রান্ট্র নেই ইবাভব নিবা ॲंट्र'वीव'ॲट्'टेब'हे। इट्'कॅट्'व'तर्नेट्रश्चेप'क्ट्रेपंट्'ट्वॅट्रब'स्रवा रे'वेग'वं राबे'८अ'ग्वग्याबेग'स'तहुग'र। মু'দ্ৰব্যত্ত্বপৃত্তিব্ मर्केन्समा हु'मात्र्यसम्बन्दिन्द्रम् विस्पत्रम् द्रमा

हिवायारात्रायकुषावयावानात्राप्तराता सवायायायात्राचा विन न ह न वा विनः तर्सन वा पा द्वा विन पु (विवाये न विना से न सुनः । । । । । । हि कॅ' न्राम् वाहे'वर्ड्द छै'हुन द'य स्री दिते हुंतारु' ततुषाय न्रा इंशकेन्यं तर्रे राष्ट्रि न्याम् प्रायम् न्या विष्युत्र राज्य क्षेत्र विष्युत्र राज्य क्षेत्र विष्युत्र राज्य व हे |वॅदि दे | रहाया प्राप्त के के वारा प्रति के प्रवाहित के पार्श परिवाही बर्च 'ग्रन्थ'न् ग्रन्शें 'ब्रेन्थर्यु' रे'न् ग्रां ग्रॉन्'यर ब्रेन' रेन्। न्यतः ह्यु' <u> न्रात्म्यार्थेन्त्रेन्यारश्चेत्र्येन् वैदायत्वाप्यः। देरोमविद्यामविद्याने</u> हरके क्रंपरतिष हिर्धेशन्ते भाग्नि के विषय हिन् के स्थानिक मस। व्रिन्किनसर्गेसक्रियन्दियन्द्रभानके सुनानक्ष्मिक्र हेन व्यायन्त्रप्रान्युन्याङ्ग्रित्व्यायर्थन्यान्त्। हेपर्व्याश्चीह्न्यः न्मॅन्सलानुन्त्र्र्वां स्वारेग् परियम् प्रतिन्द्र विवानु सुरायायायम् हें साम्मन् मलम्बिन्तर्ग्या विंशेताह्रयामन्पर्वाहेणन्त्रम् न्ना वतावराक्षेष्ठ्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्रा श्चात्र हर्ने व्याप्त हिना हिना नही स्था स्था स्था सहित पर हे न सारा **र्**र्व्यप्तिर्द्व्यस्त्राचेत्र्याचित्र्याचित्राचित् मगुरातरी गुजुरकार्य।

हे मुपर्मितः इवस्यान् स्याप्तात्ति । त्रिन् हे विष्या हे विषया है विषया है

बाइंस्क्'र्भेन्'कु'बेर्। ।श्रेन्'र्सेरे'ग्ह्ग्रारा'क्रिन्। ।दन **श**्रम् द्वप्राप्तम् । क्षेत्र देते त्रम् क्षा **ब्रै**ग'यस्तर्देन'रा'बे'तशुन'ङ्गे। | व्रन'वेब'रा'र्सेग'व'न्देशशुन মের্যা । খ্রি'য়্র্ন'ন'ন্দুম'য়ৢ৾য়'য়ৢয়। । ফ্র্রি'র্নার্মানন্ম नरे. नुसायाना । हिंद्भाना नया नया नया हो । व्याप्त मा इत्राप्त विश्व न्यानदेख्र'कॅराप्तराव्या विन्थात्र्या विन्थात्र्या तनेत्रवा । ध्रम् कुं केन् रॉनिः क्रेंबः विमा क्रेंन्। । विद्यम् श्रुट्यप्तेन्नरः ता वदावितायम्त (तर्वा मे विति प्रवास पात में वा ने स्ववारताय देवा राळिरवेर्'रे। छि'र्र्प्प'रा'तर्'ग्वेराष्ट्रराधेद'द'वे'ख्र्र'र्र्प्रहेग्द्र म्नुग्ने राज्य में नः मून्य राजे न राधिव रापा ने ने ने न मिते न प्रतान पित्र व स्रव : इंब : या तु ते : इंब : या तु ते : या तु व : या तु बेर्'पर'त्र्योतार्केर'पत्र। तर्रे'यर'द्र'रव'ङ्गकावाद्रव'विग्'येव'पर' महग्र्वेशक्रयव्या श्रुपासुग्नेवरानु हैव वया महरापया **र्षे**दे:ऋ'न'न्नंविक्तंत्रेव्पारक्रेंन'न्नप्पं'चुन्'र्रु:धन्त्री'ततुन्प'त। न्न्' म'त्र-'त्र-प'विषाक्षेत्रवय। न्नायायायाचे न'कीन्नायान्यावया १ वर्षा वेद' इवराहे 'श्रन' मुना भेदा ग्वरान्न मुंग्य विनया हुन 'इवस' है तर् स्त्री यन् गुरुत्स म्या विना श्रुत्स म्या तर् ते से ना स्त्री ना स्तर मा स्त्री ना स्तर मा स्त्री ना स्तर मा स्त्री ना स्त्री ना स्तर मा स्त्री ना स

ब्र्'याने स्प्राप्त व्र्रं स्वराया महावा । नि महा व्यक्ष स्वरि म्रायाधिव। । न्नायत्रिन्वाष्ठ्याचीस्यान्द्रान्द्राचित्रेष्ठात्यार्वेन । न्नायायान्यायात्रात्रा गुहुवा । तर्ने गहु अञ्चलित । वर्के न गहु का कि न गहु का न गहुवा । वर्के न गहु का न ग म्बुअभीक्षाक्ष्याद्यादिश्चिष्याक्ष्य । यात्राक्ष्याक्षाक्ष्याद्वाद्याद्वा गहाव। १२ गहावाकाकात्मित्र महावाकाकात्मित्। । श्रुप्तकान्य वात्र दे ग्रुवागुरायम् द्राप्त देशियान् । भूपा क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ग्रुवा ने'ग्रुअकीयदे'न्वयायेव्पेद्। । नवंययेव्दरने'ग्रुअनीयप्रस्व रक्षप्रतिश्चिष्यार्भेग ।ग्राधारारेप्राप्तान्यारेश्चर्भागुवा । १२ने ग्राह्य के सिंदे श्रुपा गृत्राधित्। श्रुपा गृत्राभे गृत्रु अधिमान्य स्तरा प्रति श्रुप वार्मेम् । मानान्में नाम्बरानम्ब्या । वर्ने मह्याया स्वाप्तान षेत्। । धुन्यन्ते नाह्यसंभित्रा व्याप्य दिश्चे स्थान् । नाधे ५८ तस्र राश्चर गे प्रायुवा । तर्ने प्रायुवाकी सदि र्झे हि पेदा । र्झे हि रे ग्रुवाचीरापेन्द्रन्राधिक्षेप्तान्त्र । च्रित्रह्राक्षेर्त्र्त्रं र्त्त्रं र्त्तन्त्रं न्युवा दिन्युव्यवीयदि द्वियम्पेन विव्यन्ति न्युव्यन्ति व्य म्दर्याचित्रेष्ठि त्याम् । विकास्य नाम्नर्या गहाम। । तर्ने गहाम के त्यति

ब्रुव् न हे न राधिव। । ब्रुव् न हे न राय दि है। ल'र्नेष । इ'न्नातरे'न्नार् नार्श्वा । तन् ग्रुयवी तिरी ही अ बळें राधिव। विवायळें राप्तने ग्राया की राधिन दान राधि है। त्या मृत्या हु र्र होतु के देर महुवा । तर्र महुक्र के तर हे के मून का विवा । हे ब्रॅन्यायत्री महाद्या ग्रीकार्ये न व्याप्य देशी । त्या व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य के हॅग न्युवा । तर्ने महाकाकी सति हुं ज्यावायिता । हुं ज्यावा तर्ने गहात्राग्रीराधेन्द्रान्द्राचदिन्धे त्यान्त । त्र प्रत्याप्त ह्यान गहात्रा। त्रीमात्रुअवीयिति। । स्थाप्त्रीमात्रुवानीयाप्ति। । स्थाप्त्रीमात्रुवानीयाप्ति। । स्थाप्त्रीमात्रुवानीयाप्ति। । स्थाप्ति। । स्थाप्ति। स्थाप्ति। स्थाप्ति। स्थाप्ति। स्थाप्ति। स्थाप्ति। स्थापति। स्यापति। स्थापति। स्यापति। स्थापति। स्थाप **धै**'त'र्नेग । गणत'ङ्गग्रय'ङ्ग्ह' ङ्गग्रुय। । ८२ 'ग्रुय'ये' सते' नतुनः क्षेत्। । नतुनः कुष्दनै ग्राह्यः ग्रीक्षः मन्द्रः न्याय दे श्रीः व्यान्त्र । इर् न्रःकुरः न्रःचेगः ते गायुवा । तर्ने गायुवा वे तति कुं व कुं भेव। मॅबादर्ने नाबुद्धा ग्रीकाप्रेंट व रकाय दिश्वी त्या मेंना । देवा नाबुट वायवा दिते। मलकांप्रात्मावर्धन् क्विन् मालुन् खुन् वा वाह्यन् परात्र ना क्ष्या निन्धा स्वा परक्षेत्र। बक्षेत्राक्ष्यापरम्। व्यापर्यमावपर्यक्षेप्रराह्मरया है। हे पर्दुव देव में हे त्याप के त्याप प्राप्त है। में हे पर्व व प्राप्त के त्याप के इयरात्रतानराषुताव्या ५६४म् १६६ इयरागुराञ्चायात्रताया न्न्न, रेन्हि, ब्र्, पर्म्यायेन क्रियो स्थाप कर् क्रियो स्थाप कर् क्रियो स्थाप कर् क्रियो स्थाप कर् · धः शे पश्ची न वि अ श्वा वि श्वा श्वा वि अ श्वा व भारतिक वि वि च वि अ श्वा वि अ त्रेव'पर'व। भृ'प'वग'र्ये'तर्रे'मर्नेकेव'श्चेत्रअत्रवार्म्र्र**्ग्रे**ला **मन्ग्**ष्ठि'रूप्'अर्गेत्'र्से'हें'हे'ल'य्यू क्रिंश्यात्र द्वाप्त्र द्वाप्त्र द्वाप्त्र द्वाप्त्र द्वाप्त द्वाप्त

## **5.**गर्ः। वेशलः द्वास्तिः स्यामुरस्या

द्भिष्मा स्वाप्त त्वाप्त दिश्व पा ववा में तुम उमे । विश्व करा **८२ प्राप्त व व मा प्राप्त के अपने के प्राप्त के प्राप मन्गृत्यक्षेन् ग्राञ्च अ**द्विन्त्यत्त्व्या । मि मान्यान्यां सन्दे केन्यान्यत्य इन्दुन्न्रल। ।मून्भुन्द्ररम् इन्द्रन्त्ररम् इन्द्रन्त्रयायान्द्रन्दुन्न्यता। म मॅब्र से हे बराय दे न व राह्य दूर मुंच र्या । प्राप्त व व त त त न स्देश्वे कें क्रें मृश्रुम्म् बर्के त्री । प्रत्यं वयं बायते सुः अम्में क्र र्दमन्दरलम्बन् । । दर्ने के न विकास सहित्या दिना भागवन्मिं परे केन निवस्त स्ट्रिं निस्ता । मिन मुन्दि सर्वे हिरा **छ**पालवालाइमार्ग्याला विवेदार्याई'हेचरापतेवादवाद्यु'त्रमार् শ্রমা । বশ্বানার্শ রেশ রেশ নি নার্ল তবা । বেই কানগ্রশ বশ मिन्तित्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् । । तन् सिन्त्रम् सिन्त्रम् इं अहिर्भातस्या । न पंत्रवार्में परे केव वव वास प्रमान विकास व्याप्तिक्तात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र ঘরিব্যব্যস্ত্রন্দ্র্ব্রা বিশ্বপ্রাপ্তির্বাদরিক্র বিশ্বস্থা বিল্ল मॅव्यन्ग्राम्यान्ग्राम् श्रीकृत्वास्य अपन्द्रियायग्वाने। १८ने श्रीनायाक्ष न् में राञ्च अष्टिन्यात स्था । भारा वर्णामें मने के वर्णव वासु इन्स्र न्रता - विन्धुन्त्वर्वेषुन्द्वन्न्वर्श्युन्त्र्न्त्वा र्भे हे सम्पर्भागवर्ग्या प्रमान्या । । द्रिंश्यम्प्राम्यायात्राम्या नते ज्या ख्रायत्र। । कें नियस्य के पि क्रा । तरी नक्ष

लात्स्या ।मापादनार्मेपाने केन नद्रश्रहार् र नहेला । हूना हुर न्यर्में गुन्नु स्ट्राच्या व्यास्य प्राप्त विक्रम् स्ट्रे स्ट्राच्या विक्रम् स्ट्रे स्ट्राच्या विक्रम् स्ट्रे व्यवसां सुर्द्र र पुर्वा । विषेत्र व र सुर र वि संहें व र व र की वहा। क्वां कुन् में प्रिति कुन् ठवा तिनै यतुन का का की तहुवा कुन हैन र्दमान्तरम्बाराही । तिर्ने केन्स्यकेन् में साह्य साहिन्यात सुवा मापावनार्मामने छेवानवरासु इत्रुप्तिया । भूना भूमा निर्मा स्थान क्ष्यां नव संशु द्र मानु मानु । य में व भी में हे हाराय मिन व साशु द्र मानु म्राया । विद्यान्यायायायाया । भारती ह्रानाप्या हिः व्यापार्याचा स्व त्त्रांना इय्यासुता द्वा व्यायाच्या न्या गुरासुवा क्षेत्र त्वरा चरा <u>चि'लगल। चु'ञ्चन'द्रवलागुंलग'वदातकं हुगल ज्ञन्तलं वलार्यना</u> ह्मा अन्य व्यादनी प्रतानु प्रवास वा वा प्रतान वा का की ना वा का की ना न्दर्यत्र्व (व्यापना हे पर्वत्यापराम निर्मेन । व्यापना निर्मे म्रिंद्रश्यात्युर्यान्यात्र्व्यायात्रव्या वि.र.प.यात्रुक्षेण्याञ्चरयात्र्या **५ वि'न'नक्षुन'रान्देंबळ्टरळे:श्रेशवान्स्नि ग्रीकार्यन्दिन्नवस्यारान्दिग्दुः** वियाचान् गतःविना इवान्द्रिवयान्तरम् व्यवस्थायेन् स्यर्भन्यस हेन्यर यम प्राप्त सन् मार प्रसाने प्रसाम स्थाने प्रसान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स क्रुन्नर्दि है प्रदेव के साम है व द ने में मान प्रति के के ने में के प्रति के कि **ह**ावळव् तर् क्रम्भव पायुम्यावयायमुम्पर्ने पायुम्याया ।

য় ৻৻৻য়য়য়ঀ৽ঽয়৾য়৾য়ৢঀ৾য়ৢ৽য়য়৸৸৸৸

क्षेप्रवास भ्रम्म । विश्वसम्भ्रम् वार्याः स्टरायाने कुरार्टा ध्रम् ह्म'गहुसर्र'क्रॅंबरा'ब्ॅ्स'तु'हेर्। । युरातहुत्र'नवि'ग्रॉनदि'तह्म'र्स्स | न् गुद्र' ह्रा' गहुअ' द ग रा' अदे' गरेप' हुः ईं अ। । हुन् ग नुग हुप' क्द'र्र्स्यते'श्चित्रं प्रिता । र्धित् त्रं मृशुव्रं मृप्यतः रूपः श्चित्। हुन्यन्ग्रद्धिययदेश्वरुग्यंभेदा । न्युन्न्गुद्धेन्यरः क्षेत्र तालेत्याबेन्'या ह्या । शिक्षाय शुन्याय हिनाय दिन् सुना हिना । नुषाक्चन'नु'सेरवाबेर'झ'र गुर्हेर्। विद्र'सरवानुग'स्रेरे'तह्सवा हन्याधिय। । त्राकुर्नु क्रिंशायात्र न्यानी । इतात्र क्रिंग् त्युकाळे पं भेव । वेबा गहा द्वापका है र पं व दे हा अ दे सूर धेव'दा'दें'वळ र छे प्रन्या क्रेन्द्रवा केंबा नेया होन्द्राता तु ब्रान्द्रवाराता षर्भार नृष्विषा सम्भी ह्र्याश्च वादा विवा ग्राम हिमा वहा श्चर मु दिना च त्रवास्यवा ने प्रस्ति विस्वविषयम् व वेस्पाया हुन। तुर् नु का द का है का हो न पाया है का जुन का ये न का या विना के न में का <u>र्रः नेरः मे त्राक्षानुः तार्रम् या यो नेर्रम् माराष्ट्र वा यो व्याप्त</u> के केंव्यातकेंकायेन्धिवाविनान्धिवे वितान्धितायायायाया न्द्रं रन्द्रायने राष्ट्रन्। तुः ज्ञन्त्रायान निष्ठेन प्राये मेंग बरम्यार्बिन्यम्यायान् विषान्धेन्यस्तियात्रेत्रा गुरुम् वशुर्मिन्य गशुन्दार्थे ।

**ढ़ॅॱड़ॱढ़ॕड़ॱॸ॒ॸॱज़ऄॕड़ॱॸ॒ॸॱऄॗॱॸॱॸऻ**ऻढ़ॹॖज़ॱढ़ॖॸॱॿॗॱक़॓ॱॺॸॱॾॣॕॸॱ भुष्पेद। |तहत्राम्प्रातेष्यागुर्ण्याय्याद्यात्र्या ।तहेषाःहेद्रा *नृबबा*शु:८ न्द्रायम् द्वीप्यार्थय। । ८५ ५ प्रेंद्रायने पाळेप्यम् वैग्पारी <u> न्या उ 'क्र' । विश्वास्त्र पर विश्वार ज्वा । द्वेर पवर प्रश्</u> मञ्जूदर्यापामार्ग्यु द्रिक्षे । श्रिमा स्टर्मिया ग्रुक्षाचा स्टर्मिया महिना ্ মর্ম্ নেক্তুনি বৃদ্ বৃষ্ণ সদ মর্ম পৃতিষা । গ্রেণ্ র্ম রের্ম নের্ড মে বৃদ্ নেতৃ দু ंह्यं । प्रज्ञतः बरः वहः वहः स्राप्तः वहः वहः । प्राप्तः वहः । स्राप्तः वहः । तुरात्राया । व्हें तर् वे हग् बुर्र् ति । व्हें राय वे पर्वे प्रवे राय वे उदः। । पञ्चे पति पृष्ठे व गुरुषात् किन्य प्रस्ति व । हा सा प्रहे व पति । तुसायायमा । क्रेंसरी तुप्यरे त्या क्षेत्र सुर्। । त्या क्रेंस होत्र प्रते तुस लायम् । देवान्यसम्मा हिन्द्रन्यं देन्द्रे हे प्यत् हिंद्रे क्य विंगंपर्राप्तरे स्वांपर्दे स्वांपर्दे युरे व्वा सुन्नु पुण्ये यर अधिवापर दिन् विश्वस्य में अर्था मा क्रियं के विश्व मा मा में क्रियं मा में मा में क्रियं मा में क्रियं मा में क्रियं में में ५.१८८ वेशश्री पुरं वे तीया का की बार अक्षर वा विवाद के वा पह के वा प्राप्त के विवाद विश्रामय। हेमईव्यवेशहेर्ष्य, हेव्यकीयर्थ, याञ्चेश्रामी राज्यस ह्यु देव खुन्य या सरी स्ट्रेस मी या मेना मा सुर या व या या मुर सरी मा सुर या या । ञ्च'अ'न् अप्यापायहेव'य'ला । ग्राह्मायायहेन'व्हायम्'यम् हिन्। । धिन्यायातरत्त्रें झ्रेंयाचदिःहें। । नहुन्देयायन्यन्यायन्त्रेन्य

|व्यातके'क'येन्'यन्पन रिक्षेत्रंश्चित्रं मुंग्रं रिक्षे गुला র্মথথা विग'के'के द'र्रा झेंय'च देखें। | あべら'まいら'いて' |रीयराक्तरामायरार्भेयारात्रिष्ठे| |यरायरार्भेवायरा ইবিথ। |多名,口至人,当口,实,数对,口少,实| শূকা 多け、これがいいばれてた गुरा । न्याक्रं यहत्र र देव परि है। |बर्धें 'न्वव'वेन्'रार'वररे श्चित्रा । क्रिंगन्ताओ अनुन्न स्निति स्रे। । इतः श्रेतः श्रेतः तद्यः तार्त्रेया ।श्रांत्राक्ष्णंक्रं क्षांत्रेन् पाया । तिहेगा हेन् ता पाया विवास इंट्या । पक्र्यक्षेत्रअश्रक्षेत्रयाया । विगायश्चरायायीयाय बेत्। |र्वेरःङ्ग्रायर्वेण्यः व्यवेत्रवेताय। |वायतः तर्जे क्वेपाः धिव। |ने'छैर'छैर'ग्री'प्रवास क्वेंर'वेंर| |ने'छैर'कें' हिने क्वेंप्रवा इर्था । र्ध्याचित्रव्या - रेचर.रेट.चेर्चयर्थरचे.चचे. ह्रियाराया वर्षाय स्वयाया व्ययह प्राय वर्षा हिन्स रसप्विषानुप्रमुन्द्रम् सुन्द्रम् न्या मुन्द्रम् न्या मुन्द्रम् न्या भारत्ये स् प्रवास्त्रेर्द्र्याः वीश्ववायस्यायकार्ष्यायाः भवाद्याः । स्वादाने विष् रप्रश्चिमानदेश्वर्त्यावुष्पर्युत्रार् कृति प्ररामुर्वे प्राप्ताम् न्द्रेप्तातगुराहातुष्व्रवाद्यात्रवाद्येप्तात्राच्यात्तावाद्येक्ष्र्र्या ।

[리[대화] 화다·건화(화麗스·영스·왕·국도·화화(화회화(교육)

व्यंगुर्द्

गाः इति सुगान्यम् सुनः य उन् दे। क्रुंचें कु व्यक्तिहरा तर्हें राता यह वारा **यम् मिले प्रमानि । याप्त मिलि । याप्त मिलि** मदेखें। **ग**शुन्'य**ठ**न्'त्राक्षुंष्ट्रत्यात्र'यत्व्ग्याय'यहिन्'यत्राहिन्द्रस्याहे स्टेसः" **इ**श्चित्र प्रतिवार है। दे विवार गुबर दें का संस्तान सुरूप पर प्रेंदर व स्वाव वि मर्हेग्'यर्दुग्राहें पृद्धित्'केष्प्रिव्'द्रक्ष'यद्रे'प्रवा क्षेष्प्रव'द्रक्षेत्'यह्रायाध्येत्' रात्रम्यर्'तु'त्रेर्प्पाया हेप्रदुव्गीरान्युर्ध्यान्यर्पत्रम् रम्'ताम्बुवायाया विम्'द्रवयां श्रीकार्षेत्रायमः तुवा यम् त्यमः सं मज्ञन'यस्य मुन्द्रस्य ने हेस्य मुह्दः त्य श्रुरः म्यानस्य स्यास्य स्रास्य स्यास्य स्या अवुरामस्यम्यत्यावस्यक्षेत्रम् न्यार्थेषयाः सुन्याः स्वा श्चर के व में त्राय पर दे न प्यार ल प्या हु र प्या हु ल प्यार पर व व व व व A'अरेग'र्रअर्'र्व्यद्रव्यक्तिंग्वराम्याम्येवर् तु'तसुर्द्रवाष्ट्रराष्ट्रीयराधेनवादे'ग्राह्मावाद्मानदेम्माराध्या गुन्भायकं न्यतिन्यंग् र्राट्या स्वराग्रीस्र रेषुग् ग्रिण् न्यसे *८२* ८५ प्र'विष्'८५ प्र'च क्षुप्रायक्षक्षे रारका विकास क्ष्ये देशे हैं । " बर्वरागुर्देर्गेष्टंगी प्रवर देशप्रदिश्वरार्देश्व यहर क्रिं ने द्वारा मुन पर मिन परि ह न राधिव। तुन र में राधिन पर में राधिन राधिन **ष्ट्रिंग्रिंन्ट्र**ने कि न्ट्रिन्य मान विकास **ሻ**'木二'差刻' **छे**न्'परि'र्से' कुराह बरायञ्चन वापता गुन्न् न्'रेन्' गुरापर युर'हे। हे पर्वव के अन्न मान व के काराया स्थान मान मान के निर्मा न्न्रिं विवाकी कुतारी न्दिन् विन् राम्नि स्वात्र म्हे मर्द् व की कुवारा विवाद वा

षाय इं वित्तर्त्राच्यात्रा शुक्षाय र युराहि। । देवे के विविध कुतारी ता नतार्थे हें व्यव्यक्तिराविः नर गां करे ख्या या द। दर् **कु**द्रियार्थ्ये रापास्य पश्चिरासुना स्थान स <u> ने</u>ॱल' सुल' के ग्'ल ने ' श्रेति' नॅ ब' ळे ब' में र'त शुरु' पा प्रेन ' में ' शुरू ति' खुर ' प्र क्षु **ब**' कुत्रार्थे संगुर् के प्रेन् भूत्र भेरापा विषा यह राय हराय हो। पर्वत्रप्रस्थानि नियादेग्री केरिन् में स्थापन स्परियादिन हुँ न स्वराउन वं वितान ताम स्वर्धित है। न्न पर कुर वरा प्रया केरकेलधेवपरात्त्वाङ्गा देव्यान्य वर्षेत्र होत् त् वेद्या सुन्या शु'द'हिंद'शु'हे अद'द्यापेव। मनत्यहर थे बेद'य' दर्ने शाह्रण हु देशवुषायव। हेपर्दुव्येषुवार में द्रिक्षेत्र प्राप्त विवाद्य पाइत रहें र राविषाभेदा ॲं'चुन्'येन्'रा'स'ङ्ग्'यङ्स'येन्'स्र्ग्राच्याकेन्'सुग्राचा **८इ**:ॲ५'डेब'यगुर'८ई'ग्राइटबार्चा ।

5्षाल्य द्वा प्रस्ता विषय रात्रा रात्रा राष्ट्र केता राष्ट्र केता । मुस्याक्ष्याः भेषाव्यास्य स्थान्त्रः स्थान्य । नेमः स्थान्य स्थान्त्रः स्थान्य मस । मान्याक्ष्रवार्ष्ट्रसाह्यात्रात्रस्य हे । । १८: में हिम क्ष्रा स्वा न्या न्या । पर्रित्ववारा गरि हुन राष्ट्र वेता । वासर वस्तरा है। लातर्भित्याचेन। विन्यास्यात्रां साम्यान्त्रां विन्यान्त्रां वित्यान्त्रां वित्यान्त्रा हुनाम्बर्भावेत्। । नर्भुष्णाः वेत्रहुनाम्बर्भावेत्। । वासरस् श्चर द्वर्ग प्रमूस केरा क्रिंग सर्मिय केर देश में केर में कि स्वर्ग हु हमा <u>শিং</u>দ্দ্'মেৰীৰ'ক্কুমেৰ্মিই, বুদ'র্মুগ্রীৰ'ব্রমান্তীমে'ম্যামেন্ট্'লুম্ र्'तर्गानियार्गे क्या इया इया मार्गा मुलारी पर्रा केट. गुरुपर युरावरा वेश के तर राया ने बुदार में द्वाराया देश मेंगा राह्यां कुतायक्षुराहे पाहरायशा हे पर्व्याप्ता वस्ता वसामि विवादरा षे रम्द्रिक्षां कुत्राया केया यह वाया रा ने साम में न्या में में श्रिक्ष में हि क्षेत्र है व हुं "" यहरायेष्वायकात्र्रेव्य्वेषात्र्या हेर्प्व्येष्ठित्राव्या रः मॅरिन्स्रिक्षेरिह्य। प्रमार्यमुन् ग्रेस्रिक्क्षुन् प्रमार मेन सेरिन्। ह्र्याचेर्'कीयर 'चन' ह्र्ये यही 'र्र तिष्वि यही र ने 'यह मा हरा र हें मा कुरावेरा जुलार्गे प्रदेश्वापति के देशाल कार्ये नर्दे । प्रदेश त्रा वर पर्देग्पन्द्रपदिव्यञ्चयापद्यक्षित्र्ज्ञ वित्रप्रम्प्येन्यक्ष्या

क्षित्रचं क्ष्यां त्र व्याप्त्र क्ष्यां क्षेत्र व्याप्त्र क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां व्याप्त्र क्ष्यां क

कप्रमान्त्रीयस्तिः समायात्रिया । वरम्युर्गरेवमा उद्यासमा। कुल'र्य'र'पी'रागत'श्चर'र्नेग । देश'ग्रारकाराय। विंद'रे'रे'हें वाक्री खिन्यश्यतिन्यं प्रसम्यद्भा इंगी.कुर्यकिः श्रुप्ते व्स्कर्म्य तर्भन वेद्यातस्तात्वे स्तित्न प्रमान्ते स्वद्यानाः वे नादे रद्या प्रमान्ते स्व मुत्रासु ग्रापुत्रायवायतेवाववायम् यान्ता क्षेत्रायस्त्रायतेवाया र्स । नेति कें र राख्ट पा न पाने वार्से या र राषा श्रुवात ने वार्ष श्री वार्ष . हे पर्द्ध द'स्ट 'अ'र्के द'प्र र माने 'मर 'द्र प्रश्येत 'ह म 'प' द्र हिम 'वर्ष' "" त्रवारात्रेष्त्रवारात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या मिन्द्रेरव्यव्यवं उपमित्र स्वापित्। सर्वेद्रम् म्याप्य राज्य राज्य स्व श्रेश्युम् श्रेप्त इत्यागुम् श्रेपतित्र। ग्यम् स्यानश्चर्यः ग्रेव्ययः तसुर्भर। विविधानुतार्थरागुराग्रदकीतर्द्रद्याराविगार्भरानेर मन। स्वापाञ्चित्वसङ्ग्व मन्यम् मन्त्र । हे मर्जुव प्रमासम हे गां ने गरि रहा दे भु या गहारा अप उप र इस जा जारे दें से रा दे गां ने हेरा इ'यल ग'व सात तु ग'र्मा दे'व सार सारा ग हे सा ग्री साहे यहं व 'या छ ग' स्यादना भ्राप्ययामनेत्यावेयाभ्रव र्भे वियायना हे मईव श्रीविया <u> শৃত্য হথ হা।</u>

या निःस्तिः स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स

[ब्रायाक्केर्यरायक्षेत्रवाचयायने। । गृत्याव्यत्रिः यने दूर्पररा त्यर्यन् । मु. लुका हंका यमुन रन मुंता पने। । में त्या तहायाया रदाराद्या पर्ति । विद्रान्यायायाचे । विद्रान्या पर्झें बरायर वा कुराय दे। | प्रतः में पि के पा के मा के म शेन्'यने'केन'न्धैनलन् यने। । माने'क्रायने'यि क्राया। विमा विग विरायत्रास्य कुरायत्। । इ.स.मूर देते स कुरायत्। 15ँवः ने तार्राययात्म पार्या । विन द्याया न पार्याया पर्याया व শ্র্মণ'ন ই শ্রেম্প্রান্ত্রের্মণ র বর্মা। । বর্মান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র্ श्रम। विन् मिं श्रम्याने मा स्थान निष्या ५८.चला । नेवय बङ्ग्रस्थ्र व्यानु वा स्था । विद्यान्य विद्यान्य गनेव क्रेंग्रन्थराव रे। हे पर्वंव सुर्ग्तरे स्तारमें राधाया मनेखन्यान्ता न्यान्तावस्य वर्षनेष्ठात्रार्यन्यस्नेन्यन्व तद्रेक् 5'स्र-'त'सम्बा ने'क्र-'व'न'शेष्ठन'वि'वर'तवत् के'न क्रेंबाचका · र्वन् ষ্ট্রীনেম্বেক্সই ব্রিণ্ড্র'বর্ছণ্মান্'শা রিমকাতব'ষ্ট্রাইর নবান্মাম্মির। मॅन्'लाडीव परार्ह्ण परान् वेव ए'विव पहेव पति है न वे हुँ र प्राप्त षेव'हे। ब्रु'यरे'चग्रद्देव'चर्यप्पंत्रा इस्रदर्धेर'पदेश्यायग्रक्रीयंव् <u> ह्व. घवरा कर 'रे ब्रिंट 'रे ब्रें प्राप्त वित्र केंद्र में वर्ष केंद्र प्राप्त वर्ष प्राप्त वर्ष प्राप्त वर्ष</u>

तृत प्रेष प'मक्षेत् प'इतात्र्र्धे रापते'प्पतः ह्वाधित'प्रशाहित्द्रयाः । गुर्दे वित्रु'त्रवह्यवात्रापरः ग्रीवाविषाक्षेत्रवाधित प्रवाहित्द्रवाः ।

ই'য়ৢয়৾৾ঀ৾৽ঢ়য়৻ৼৢ৾ঽ৾য়৻ঢ়য়ৼঢ়য়৻ৢঀ৻য়ৢ৾৽ঢ়য়য়য়ড়য়য়য়ৼ यर। ।देव अव क्वापायातहतायां दे। ।हे पर्वव संदर्भपायाताया है। । शुन इं न गुन शुक्रेर के न धेन। । गुर पिरे कुर हर पिर् गुर |भै.लट्रस्म्र्रित्यद्रश्चित्यत्व। | वर्ष्यत्रेत्ययावित्ते। २.२ वश्च वश्किर्पर द्वापिय। । द्वें चे द्वापं मा वदः दी । द्वें वश्च कुर्रर्प के त्र या | द्रम् का कुर्र्ष्य प्रायायम् है। । गुरु व महत् ळेद'र्रादे'न्यद'र्ख्यप्रीदा । तुराक्तीःश्रेदः खुखन् गुरुखं ने। । गुरु यन्त्रप्त्रं के तह्यात्। | त्र्जें के ने प्रायमिन है। | किं या के न कुल र्वते प्राय कुल धेव। । पर के कुक क के पर हो। । प्राप्त कें तमर गर्डे द'द' द्रार द्वा भेदा । बिलार यादि क्रें या त्र्व ता । तिन्त्र हान्यम् क्रिन्न निष्या । स्थित्र निष्यम् स्थित्र निष्यम् । <u> বির্ঘামণামরি সমান্দ্রীর বির্মানরি রুক্তর রূপ নেই স</u> म। | निवेद ग्वस्रेन्द्रिन् प्रश्चेयान ने। | प्रह्मुल श्चीस न्याया स्थित है। । शुप में पञ्चे भे दय वर भेव। । ८२ र ळे परा शुरा सुर्वा ।। नग्रद्वियराञ्चः यळ्यरान्यान्। । विन्द्यं व्यत्र्न्त्यायमेवः हे। । वर्षस्य प्रत्रं प्रते द्वा वर्षेत् । । त्रता व्व प्रतः प्रतं द्वा द्वा वर्षा । ग्नवरारगञ्च उ लेव पन्। । छ छ वेन पायमिव है। । इन पायमि

धिष्ठगःश्रॅलधिव। | वेस्रग्रहत्स्य। त्यक्ताया नेद्वस्य ष्ठ्रण्यायक्रण्यादेत्वंद्वंद्वंद्वान्त्रंद्वंद्वंद्वः स्ट्रिस्याद्वस्यात्वः स्ट्रिस्याद्वस्यः स्ट्रिस्याद्वस्य

वे र र विविधानुषा स्वत् । वाधीय र वा से कि धी है। 1 E 21 कुल'गुर क्रिय'रोबराद् रात्या |हे'यर्ड्द क्वेंल'बराखर प्रसूद हिन । मलार्मे म् इति सुग्या | श्रिलार सामाश्चर तरे दे व गुना | १८ १८ है। मसारहेन्यव्याया हैव'यय। | ययाया क्रिया क्रियाया थिय। | वैद प्राय न्गरतहस्र सर्वेदात्री । सम्बन्गतुस्र सेति त्र्वेवदासुर। । इसकुत्रश्चर वर्षेन लाउ रा १२३८ निवर मीन हेर संस्मान । शक्षेत्र नग्रॅते स्रम् स्र ग्राय दिन ান্স্'গ্ৰুৰ ই'মন্ব'ৰন'দ্দ' न्या । वेबाग्युत्याया नयायाग्वेबाग्रेया तहेगाहेदार्ट्या यक्त 'के है र के 'तर्चे व'पर'क्वप'प'र र 'यर्द प'प'त्र प्राय हे वाप तर । प् **ঽ৴** <u> ५८०७ वर्षात्राष्ट्री कुथर्</u> दे अव्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त विषय ५०० के देर 'अञ्चल' हें पर्दु व 'सेर 'हेर 'गे व ग श स्या व 'रेग श र व 'शे नु सें **बॅटवर्क्केन्'रेट'न्ह्यान् ग्रन्श्चिक्षे'बॅट'व्रहेन्बर्धावर्यक्रम्यायान्यः'''** मैयपर वर्षर। देति श्वे व्यवहर खर व पत्व ग्राय देतु व यद से देर बाञ्चल'रु'र्देरवायवा 🐪 हे'यईव'येर'में लक्षितवायदि'सु'ताचलकेव' न्नरम् सुग्राभितान्तुताराक्षेत्रं गामित्रायाक्षेत्रा केवान्तः हारा

म्यास्य म्यास्य स्थान्त्र व्यास्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

## **ਫ਼**੶ਖ਼ਜ਼ਫ਼ਖ਼ੑਖ਼ਸ਼੶ਖ਼ੑਖ਼ੑਖ਼ਜ਼ਖ਼ੑਜ਼ਖ਼ਜ਼ਖ਼ੑਜ਼ਖ਼ੑਜ਼ਖ਼ੑਜ਼

व'र्वे'गु'द्र। ग्राच्यं ठव'कून्'नु'भु'त्रष्टुन्य'गुन्'। ।तहेग्'हेद' **श्**वरश्चैत्रायाम्यत्रान्ता । व्यास्त्रीयान्त्रायाञ्चेत्रा । न्नात्रपञ्चन्पते संवर्धन्य । । त्र्ज्यात्रे वन् वर्षे ब्रव्याते वर्षे के ज्ञाक्र म्याया है के या विष्य प्रमाण विष्य रश्रापानेत्रायुवायुवात्रस्या वित्यायुन् खेन्यात्रायाः स्वाक्रीत्रेर्जुन्। क्षेभ्रद्रभेषाद्यक्षेष्यक्ष्याच्यात्रम् । विश्वक्षेष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष न्यम् क्ष्यार्थितः व्याञ्चेत्। अत्राद्धित् प्राप्ते व्याप्ते वित्रे वित् त्त्रा शुरिक्तयमं तृत्भ्ञान्त्रापरिष्यं प्रत्। देरावेदशञ्चित् रन्प्तिवृश्चीसात्रेयानदेशानिवृ। ज्ञान्तेव्यांकेसानिव्यीन्प्त त्रापतिः स्राधुं ग्रा हे 'क्रॅं ख़े 'क्रू द्वाराण' देशकें देर 'खते 'ग्रॉक् 'हुर। ंग्रयाद्भाग्ववानेयाग्रीयान्त्रीरानदीर्व्यया वर्षेग्रामाणरावनन चति'ञ्चव'खर'। | सुर्चे'वें' हे 'ह 'चि' शुर 'त्र गुव। गवरा हुव' शुवा नक्षन्य स्थान क्षा निव स्थान के व से के व इसार्वेरपाने विन् खुर्च बुद् खी इसार्वेर डे मार्डम हम् इसविना न्तुग्राप्ता कुर्वे तहुग्ने विन्तुरहारहार निर्मा

क्ट्रें'ञ्चग्'रा। ।८'ऋष'स्व'ग्*5*८'राश'ग्रॅल'८*नेपश*'व। बहॅद न्द्रीन्य द सह मृद्य न्द्र ने स्वाप स्व **५२२.२। १८.५.५.३.५४५.५३.५५५५५ । ३.५.५५५** ग नव क्षेत्र दुर्दे । विवयत्त्र व्याप्त नव वा ग्री क्षर प्राप्त । दि वर्षर तर्रस्यळॅग्यरावे ग्रम्थरावेत्। । ष्ट्राप्रसङ्ख्यापते वुत्वेत् स्। । ब्रे.सृग्'झुत्राचदे'म् हुग्रा'कृद्रिद्र्। ।ब्रे.चन्ग्'त्रावर्ष्यराप्नुग्रा चक्षुंशे । चरम्ड्रा्ड्यां कुग्छेर्'तु कुर्। ।गेर'तुराम्बर्'पदे छन्'वेन्'हेन । हैरन्यंयर'नु'देनेन्य्यं वर्षेर्। । न्वर्वे विन् तर्ग हे ब्रुट प्रदें । । ब्रु अर्क्ष हु प ग्रीकार देवका पा अर्वेट । । रव ८६गरांगभेव देरे गहण्या ठव या । वे ज्ञाक यर देरा या वर्षा । रॅल्प्नदेशुर्'बेर्'ग्र्इरवर्। ।ग्नल'ब्रूर'घर'व्यत्नेवव्यःप

वर्षर्। विव्रतुःक्षेत्रप्रक्षःव्यतः न्त्रव्या । प्रकृत्रके द्रव्या सुन् बेर् हेन । तर्ह्वाविर महु होर् होर् प्रवाहर । |শ্ৰহ'খন'শ্ৰুমা धते'ग्रॅंन्**ब्रे**द'द्वया ।ग्राच्ययंत्र्यम्'याक्चंत्र'याव्यस्। ।हिः निर्व्वर्ष्टियात्रञ्ज्ञतात्र्याव्याच्या । राह्यात्र्यात्र्यात्रव्या ষ্ট্ৰদ্বানন্ত্ৰিবেৰাট্টৰানপ্প্ৰন্ত্ৰাৰ্থিত । সঞ্চলৰান্ত্ৰিয়ন্ত্ৰাৰ্থিত पायस्ता । वयायायत्यायेयावेत्यायायस्ता । व्याविः स्योका वित्राप् अर्वेत्। वित्रः भूतः गृतः नित्रे के व्यथित। अतः वि वि खेत्र मन्द्र । निर्नापदेर्द्र अन्यस्त्रमा । ब्रिन्दर्रे उथादर्ग र्स्टरानेगाभूत्। विरायाद्रताश्चित्ररात्रेग्यानेता । देगाराहेदा इत्रात्रवार्यात्रम् । विदेशतहतिः चराष्ट्रक्षात्रहे । ब्रिट् चेद् क्रम्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्या मदीन् शुप्रापदी द्रापदार्चे द्रा | द्रिकेट साम् वा मही द्राप्ति स्तामिता | परःग्रॅन्'श्रुट'प्रदेखंशक्केंट'द्रवया वि'मिं'स्ति'क्र्याहेद'न्वग्'हु [छेन्'यह'न्न्ह'तह्यसन्ध्राप्तक्रेन्'य] |न्द्रयात्र्धेन প্রঝান গাড়ীর 'শ্রীঝার্র নঝ। । রুনার্য়ন ব্রেঝান বি:চাড়ন 'ভর্। । । এই न'न्हेंन्यकेन्:इयानदेख्या |मृतुयकेन्:इयायुर्द्धं संस्था | लायानिवाहेरीन्त्रन्तिन्त्रन्ति। भिवातुन्तिन्त्रहिन्तापरिश्व। व्यायापत्पान् निते विं वेषाया इयस। ।विताव्याये हिते व्राप्ताया वित्। । त्रञ्जाञ्च म्वाया क्षेत्र मं क्षा । वित्र न्यतः क्षेत्र स्वयया म। । निव्निप्तित्वित्वित्वात्वित्वात्वित्ववित्वा

न्ध्याद्दार्ज्ञन । विष्दुर्श्वाचरह्दा विष्दुः पर्ज्ञन । वदा रोगरा विष्टुः æन्'वर-नु'र्स्य। । मुव्'र-व'मुर-ख्न'ग्रीयअन्'न्युर। । प्रेंव' ८ द'क्:पॅरि'ग्रव्८'याम्बर्ग । ने'ग्रयद'व्यापीन्य'ह'गेरि'ळॅग्या । हिन्निन्यद्वयायाव्यापाया हिम्बुद्येश्वरायगुरने सन्तु मलेकाव्या अध्याधान्यायायायायान्यातुः मन्याया याराया वर क्षेत्रं रायक प्रमुन् क्षेत्रं न्य के प्रमुक्ष प्रमुष्ट रे इस्त्र क्षेत्र प्रमुक्ष प्रमुक्य प्रमुक्ष प इतार्व्वरापतिते हेरासुवाया क्षेत्र विते सेन् नुति सेन् नुति सेन् नुति सेन् न्या हॅग्'र'क्ट्रेशव्याप्रप्र'प्रत्यत्रम्'याया प्'रेप्'रुग्'द्रवश्चेर'ह्रग्या क्रेन्'ने'द्रनःक्रुयान्य। इनः चन् प्नात्विनः द्रव्युनः न्'नुन्वितार्क्षेय चति नुवक्ष क्षा वर व हैं गवा परी गनेर के में र वी नेवा परा तहे गवा वित्यान्त्राची क्षेत्र्यान हिंदि रोग राष्ट्रिया के त्रेन् वर्षा भूमते मे ने एक त्राम्यक्ष में वाक्ष्य पुरिवर्ष वर्षा ने स द्वर्षाया राति स्ने १८ ते १ द्वया ग्रीया पर १ सत् १ शुर । प्रे व १ ग्री अ १ ते हैं। पर्यु व १ ग्री \$4.2.841

विन्-ने-व-द्यन्-स्यान्त्र-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्त्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्यान्य-स्य

गरेरकी गरेंगपार वा १५ गुर सहरात केर ने देंग रेखा । देंग राम्य वेराद गरास हिंद्या । द्वे ख्रुत प्रम्यक्ति दिन देश है। ८.च्यां वित्रायत्रः कवा की ब्राव्यायत्रः वित्रायात्रः वित्रायात्रः वित्रायात्रः वित्रायात्रः वित्रायात्रः वित्रायाः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्रायः वित्र र्शिष्ट्रिन्धर ठव क्रेंक्रिक्षर च कुन्या | निर्मुन श्रूष हिन्दे वर्ष रादे गुन ऍलवा व्हिन्यान इन्द्रिन्य विषयि । दिन् क्रून विन क्रिन राते झार देग्या । द्याय परि झार्य व्यव कर कर व्या । यार्ग्य क्रिंप छे भव'रू ५'ग्री वि'रूप'र्श्वल'र दे'मह्म राज्य उद'र्स्यया हि'रह्म ताला श्चिर्तिरहेराङ्ग्वराहे। विन्देरवागुन्ग्रारदिवेसवास्वरविता । श्व र्द्धेगरान्म् क्रुंप्तव्र्क्षुन्य। । नर्स्रंप्रयान्द्रकेर्य्यस्य विक्रुंप्य । **ॕॗॹॺॱॾॗॕॸॱॻॾॖॱऄऀॱढ़ऻॕॸॱॹॸॕॿॱऄ॔ॸऻॗ**ऻॗॎऀॹॱय़ॸऀॱॹॸॕॿॱक़॓ॿॱॻॾॕॱख़ॖॱ विना विनायरम् वाकेव्या विभाषाना नेहे व्हेरवा विवा हेरा न अन्य में मुग्य बेर बा । यहेग हे द अय की श्रेद बें पर् देन'यर्नेरळेंगवाकुं'स्रेश्रीब'ग्रेवाग्रवा । इंबाम् पोनेतुन्गरावगः ब्रिन्या विन् मिल्यमित्र नेनामका हिन्यान्यया विम् बन्यानित्र नेन नश्कृत्यानेत्। अस्यापादराख्यायात्राहराच्यात्राहरा रन्न्यन् सेन्यरि हैर। । ज्ञान्य के श्रेषा त सेषा हु रेन्य। । न्युष त्यु पञ्चि वर गर्डे द्रिंद्र हा विद्वा विद्वा में वर्द दिन द्रा देश हरना विसन्वित्रम् द्वा स्ट्रां न्या विद्वार के निर्म् वरः वर्। । तके वर्ग वर्र प्रिति उद्गा । सम्मी वर्ग स्था वर्ग र्ममनेत्रम् । मृत्यव्यक्तिक्ष्यम् । १८ देशमः म्यार्थः न्येयः पर्वा । क्षिं न 'र्खे व 'क न 'पुर्वा परि' स्व ब स्व स्व स्व स्व । [त्वा न 'स्व 'र क्षें न 'रा' ॲन्द्रियं बेन्। विन्'न्नेव हेने अं'वरा चेव्या । ति के र्वेन् के त्र्रां काण्यन् न्यावेन्। विन् प्रवास्य क्षान्य क् तहेष्राधानी प्रेमान्या । ने इता तर्वे महिना तर्वे न भैव। । । सर्दाने सारे दारी है रात इता दारी में सारे । । सारा की पारे का है देरे Nअवामन्ष्र्या | प्रराप्तिः क्रूपा अन्य हिन्या पा के । । अवह पा अप रुप्त्र्भ्रप्त्रभाषा वित्युवाञ्चनवाञ्चेत्यात्रक्षेत्रप्त्रप्त्र । ८गः श्चेंब्राया श्चेंक्राया विवादीय । भिन् श्चेंन्रा हिन्दा हिन्दा हिन्दा । भिन् श्चेंन्रा हिन्दा हिन्दा हिन्दा । भिन् श्चेंन्रा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा । भिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा । भिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा हिन्दा । भिन्दा हिन्दा हिनद रदा । क्षेत्र क्षेत्र द्वार हिंद या । हिंद या पहें व वेद विकास बेर्। श्रिंग्डर'षार होर्'यरे'य। । र्गेंद्र'यरे'यय दे पर्में र्प्ति गर मर। क्षिन्यं बेर् म् केन् स्र स्र क्ष्र प्र क्ष्र प्र । क्षिर् व्य तर्ग व्य तत्वा'ल'तुर'तर्दा । वेश'झ'तर्दे इवकाग्रिकाग्च'ने अर्'हेकाश्चरवा मन देपर्वन्गुन्द्वन्ग्रिन्द्वन्निन्द्वन्निन्द्वन्न শ্ৰব্দাস্থন বিন্ধীন্মনি ইবাদ্যকাত নৃ'য়ন বিষ্কানী ক্রা বস্তুবারা "" ग्रेंग्रायम्बर्यंग्राव्यवायेन्यान्यात्यम् जुन्यस्वायस्याच्याच्या वसम्बद्धाः सेवसंकुद्दिन्दः प्रविव कुरादिन मार्थाः विदः स्र्वायदेः वम्रत्मवकाठन्द्रः म्रायाय्यास्य प्रायायाः विष्या श्रीयतुन् देशास्य श्रीया तर्-तर्भेद। शेवशक्तिरः चित्रं श्रेंश्रिष्यं गृत्रेन् स्पत्रे त्यां गृत्रेद्रः हेरीः **ब्रेश**नुचे'प'तुन्'धुराग्चे'न्यग्'नैयायम्राप्त्र्यंत्र्यस्यस्यस्यस्य **টা**ক্তম্মনাশ্রুমা। ব্রহ্মর্ভিম্মের্ড্রাম্ম্র্র্মর্ভ্রিম্মা

तत्राभैर<sup>-</sup>भॅन' हन श्री' सञ्च प्रक्षिया श्रुरः। विस्वाप्तरः प्रस्थितः नम्दार्भेरान्ध्रेयासुक्षेत्रभी गुनियायान्ध्यापादि **५५२ क्रेंश्वराग्हर दहें दलें द**र्शस्या शुनाया **र**म्धेव। গ্রিণ্ট্রান্ডরাগ্রীপ্ত্রেণ্ট্রিরান্রিণ্ডার্মনে জ্রান্ট্রান্ত্র **Š**5' ठगृञ्जः त<u>रे त्यान् में बावा वेवायक्षम</u> न्हें बाया विवास व त्युरामति:र्रूबारुवाम। **नुबान्।क्रे**रास्टान्मरा**प्र**ामित्।म्बिन्।नुःबेश्वा গ্ৰীমান্ত্ৰীৰ'ম'নদ্দৰে ইৰ'টৰ'ম'শ্ৰেমাণ্ডীষ্ট্ৰীৰ'নম'নগ্ৰুম'না দ'শ্ল' न्वर्रत्रेष्त्रह्रतान्तरे हेन्यायास्यक्षात्रेते ग्वन्ययान् इत्यवेराविरा म्द्रिन्द्यं म्द्रिन्द्रं श्रून्यं दिने द्वारा स्तर्भे स्वराप्तयः देवा क्वा श्री विष्या स्वराप्त तह्यायाक्ष्रतिरात्राह्यायावेत्राव्या क्षुव्यादेवायते प्रतानवा स्वायान्यति कुन्वेययापायया चुन्यति क्षेत्रायति क्षेत्रावर्षे वार्य क्रीं इरायर हेंगाय बेदार र व्यव विष्यु प्रेर की देशाय हे गया ने र सुग यत्व। यन्त्राचेर्यन् ऋयन् गृबै गृब्द्यायुग्वर्येन्त्रन् मुग्रायव्य श्रीतिहेन्यार्गिर्द्रिक्ष्यां केर् 디노,디얼리,디쇠 शुर्म्भते अगुर्म दे प्रवेदकारा ।

स्ति स्वाप्ता विर्मित प्रिया श्री विष्ठ प्राप्त विष्ठ प्राप्त के स्वाप्त विष्ठ प्राप्त के स्वाप्त के स्वाप्त

इंश्रामितः सुन्यरत्। । हिन् दूर्मा स्वापकान स्वापका के स्वापा क्षेत्रव्यात्वव्यत्रध्यायव्यव्यत्वया ।यद्याः द्वेत्रधेः यव्यक्तिः या कु ग्रायि शुर्द्द्वयायात्रत्वेदा । दे वाश्वरायं वितय है। । कूं रेन्द्रेत्रेश्चर्वस्यम् द्रियार्। | यस्या ग्रीका श्रीष्ट्रियायरः स्ट्रिस्ट्रेयाया । विर्परत्रित्रायि श्रीव्यापि श्रीव्यापि । विर्प्ताया श्रेव्यार्प प्राधी । विर्प्ति व्यायार्ययान्त्र्त्र्त्र्यं याचेत्। | नित्रक्षेत्र्वात्र्यत्रहेण्या व्या विवयत्तके वेन् वृत्वा वित्रम् मान्या विवित्रमान्त म्यापिक विक्रा विक्र हेव'बेर्'ग्रेर'तु'तरी । त्यु'प'र्रस्ययरयाद्व'परी'ग्रेर'। । र्<u>ठ</u> प्रतास्त्र प्रतास्त्र चित्र वित्र वि मंबे विंदा म्कुन्या तहे प्राय दिप्या द्या विंद्र प्राय दिने स र्वेगयन्र्रेवया अन्यार्गेन्यक्रग्गह्ययाः हेस्याया १५८। ৸য়য়ৢ৻ঀয়য়৾ড়য়৻য়৻ঀৼ৻ঢ়৾৾ৼ৻ঢ়য়ৣ৾ৼ৾৾৻ৢ৾৾৽য়য়য়য়ৢয়৻য়ৢৼ৻ श्चरत्रायता । प्रणास्य गरा श्चेरा पारी खुवायता परु । । दूरा पारी सूरा श्चिम् हे नहा | निम्दुर्सन नहासाम हुसार है । निर्धा निम्हें निम्हें स ग्दर्भत्रे प्रमुख्यायञ्चरस्य प्रमा । विष्याद्य ने सूर्य प्रमान सम्बद्धाः । त्रिम् क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क

स्मिष्पम् नुस्र सेन्। । त्र हिन् रुग् रहिन हेन् इं र र्रेत्। 3 त्रॅंते के र्रेन खुतापा द्वारा । त हु था गृह ग्रा ग्रेस्ट्र पें तरी ही. हनातहेनायते ह्या ठव हो। । सर है या ग्रुट के हूँ दार दें राया सा । तरे **ॅहिंदायाद कें बादाबु द्वादाबेटा** । श्चिट दर्शे पार्येट बाकी श्चर 'दु' वाहेंटा। **इ**ंशर्डे ब'रुब'स'यारे 'र्ने ब'र्नु' सर्थे। । तुरा'स'त्वण'यार्के नृष्ट्वे ब'रुन्ने सर्थेश वित्रात्मात्यम् नारायम् निराम् स्थान्यस्य वित्राम् । स्वाम् नामित्रः पार्चेग के दार्शी विश्वें वर्र में स्वाहिंग हिंदी पार में में र्विद्वान्तरायम्बर्दि । विवयात्युप्तान्त्रियावेन्द्वेन्दाने । विदेष **ह**र्नायसम्बर्गायम् अस्त राजेत्। । नुसुलावसस्य रूप्ते प्रकृत्त्वर सरवागुरा | तिहेषवार्वाश्रुखादाराताकृषवा | राष्ट्रिरावेरावादिः इसार्वेराया । तिष्ठुसार्वरेने केन् नेकार्यते हैन। । तने कुन्य व्यानः तहेष्यायायेत्। । सराम्ययाकत् त्रोयया ग्रीके तसुताते। । अर सारवयान्त्रसार्विराचितेस्य। वित्रत्वेन्सूराचर्षेत्रस्ति। ৾ঀয়ৼ৾ঀড়ৢঀড়ৢয়য়৻ৼ৾ঀঀয়ৼ৸ৄয়ৼৼৢ৾ড়ৢঀৼয়৾য়য়ৢৼঀ৾য়ৢঀৼঀড়ৼয়৽**৽৽** गुजुन्। यन् व्यापि क्षेत्रा मीवायम् व्याप्य प्रमास्य व्यापिताया विवा वित् वत्रावायान् भूष्यवार्कत्नु ग्राह्यवार्वे न् श्रीवादीयान् नित्। हुता स्पर्यामयत्वापति अवाके चंद्रावेषा मृत्याम्। स्वाप्यस्तुः **छे**न'ग्रीक्षर-में तयत'वेग'ययग्रामिन'ने वाबेन'ययापर में रायया। **५६१५**,कुरायाञ्चर्छ्याच्याचराबेर्। रात्रेशख्यातकुरायवीतनुषायवी मन्यात्रकारीयुर्द्रायेक्षान्यत्र्वर्ष्यात्रमञ्ज्याक्ष्यात्रम्यत्रम्

हिन्दिरळेंगरायते झेपरो इस्रायान में साद देते है रही हेर है। वर इयरामवाद ग्रामिव केन्दिन पार विवा ग्रेर पाइयरा की शुन् न निहारि ... र्वेदे अरुप्तरी प्रकृत या विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व षव'कर'य। क्ष'पढ्र'ग्रेशयर्गे'र्र'यकुंग्रुअ'र् परायें इयाप्ट्रंद्र् क्षेराह्म वर्षे वर्षे व्यापाद्व प्राप्त करार् क्षेत्राचु। यून्प्र'न्नायून्कु। लग्गुन्नार्वेनायून कुप्ननार्वेनाया न्द्य वर्षन्तः क्षेत्रं व सन्दर्शन्तः न्यावा यग्रायप्त्र देश तार्चन्यार्च्यंत्रेतिः भेन् त्यान्तरत्ने न्याह्मवर्गा नः सुन्ते न प्तु हिन्या ह्या <u> ৰিন'ন্ গ্ৰীৰা'বা'ৰ ন' শ্ৰুন'উল শ্ৰিৰ'অন'ন' দ্ৰুণ' গ্ৰেৰাণ্ট্ৰ' অৰ্চন'ষ্ট্ৰীৰ'এই'</u> स्यान्हेन न्या ५ श्विन कर्षान्य दिश्वेन स्थान स् **ग**तुग्रह्मराक्षेप्रवाद्याप्रदार्भ्यत्वे वित्। कुत्वग्राय्वेत्रप्रदेशेत्रहेः **ळे**व्'रॉसप्पंटराशु'गट'टा'वेग|विंदर'युर'रेग श्रेट'हे'देश'वे'टर'येव्' परिकु'८८' इद'ठेग छे८'परिक्वेद'छरा दय। ५'छैद'ळ८' क्रेपर र्रो सेयय **७व'र्'** ग्रुर'र'द्रबर्गताम् वॅर्'र्डर'तर्ळे'च'क्षे'ग्रेडोर'रे| वॉर्डर'र्डर'तळे'च' Mयाश्चरत्येग्'न्यानेव्'नु'पडे'पदि'रोग्रया न्रम्थ्य'हे। प्रमयापान्र' स्वाषु अर्ळेष वापित्र में त्राप्त प्रताप्त स्वाप्त युर् देव देवा है। पर्व वाणी """ गुसुन्द्रम्पति श्रुव्यास्य देवस्य विकास वि **इ**'तरे'व्ययाठर्'श्चरवॅशकेर्'नेर्'तर्वर्पर'गुर'ने। क्ष्यार्व कॅप्तस्याग्री

इस्यापनि इस्रायन्तुताव्यावि पाकेव मिति प्रायाव्यापर शुरि है। दे इवराग्रेवर्वराग्रर्वेदानुवैरायुवावरात्रेवरावरावरेकागुर्वेदार भानाद्वनीयाद्यस्तित्ते। इतात्र्वेरायवित्युकातायनकारीयवाविका स्वारायेन्'पर'न्'प्रवा' यर्केन् श्चेत्र'न् वॉर्नेन'प्'नेव'तुः संयर्कर'के'व'यर'" दिन् ह्येन्थ्य श्रेन्य माया वद्या महिन् किन्य त्रे दे हिन्य <del>१</del> अरा सम्राहे न सप्ति न ने पार्क र ते न स्थाप की स ৡ৽৻য়ৢ৻৸ৢৢঢ়৽ঢ়ৼ৾য়ৢড়ৢ৸৴ৼড়ঀ৾৽য়য়য়৽ঽঀ৾৽য়ৼ৾ৼয়৸ৼৼ৾ৼয়৾৽৸৻ঢ়৻য়য়য়৽ৠৢ৾৽ ৽ हिंदाग्री विदायात्र विषयी नियाया प्राप्त प्राप्त स्थान का की कुन्य के के निया **ह**ेंग'कीयानमन्'रा'झेर'व। किंग्रेंग्ठन्'तर्नेर'झेनयापाद्वययाग्रन्भेवपुर न्द्रन्दिन्त्र्युन्पर्युर्न्द्रा । न्यान्द्रवाद्युर्न्य्द्रिन्भेन्त्र्युप **8ु 'च र' मे तस्र 'कॅ र 'या ये यया हे र 'ख' यह बाप दे र र र पु 'य ह या पर 'बॅग'''** चरकें न्'रेन्'यश्याव ब्'यं कंटशय दे'तहेग्' हे ब्'यव कें न्'य्य विन्द्रियत्यम्द्रित्यह्रिय्यस्थित्वर्श्वा । विष त्राताचुर पर। पतिःश्चेव्यॅर्सः <u>व</u>र्षे ने प्रवासिकाय श्चेव्य विष्युः स्वत्य विष्युः स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्व रुश्वापर्भियामध्याम्

क्षेप्रस्त्रम् द्राया वित्रम् द्राया

चलप्राचलके धिला । न्यात हिं राहिष्य रादि श्राया प्रवा । श्राद् त्रायम् । श्रुप्तायत्रे । श्रुप्तायत्रे । यहात्रायत् । यहात्रायत् । यहात्रायत् । यहात्रायत् । यहात्रायत् । यहात् यहर् | दिष्टिर हे स्वरूप में प्राप्त करा है । दिन मारा प्राप्त स्वरूप स् तहेग् हेव्या । ज्ञें ज्ञें रा नववायस्य ना नेप रवा । क्षे पा नववायस द्युन्थेन्'खुर्स। व्रिन्याया यस्य वर्षा महिन्ये यस्य वर्ष हिन्'ग्वम्'इन्कुं हें ग्रायां के ने सामस्य । । मन् महेन् पाकेन् ने सन्ये बर्ळेव्वया |र्नेव्हेर्यन्यग्गन्वयायनेवर्याण्यन्यवेवया ।र्ज्ञ यन्त्रंपरक्षंत्रक्षाण्यः। अष्टियाक्षंत्रहेत्परक्षुंत्रवि ग्राह्म परकुषेप्रमापेकानिक्षंत्र । किंग्रिप्रप्रमान्त्रप्रमानिक्षं व्रात्रेव्यक्षेत्रुन्यन्त्याय्यायाः । श्चिन्त्याक्षेत्रुन्यविष्ठेष् भिन्'गृतुम्बायकर्ष्मेग्यां भिन्'न्रा । छन्'ग्रेशम्नः रून्यो ज्ञुत्रा स्या । शुन्न्यायेष्याम् अत्यान्यायाः । व्यन्त्रीन्यायाः । व्यन्त्रीन्यायाः । **ब्रु**ट्य:मेग्'यर्द्रट्याग्रु:तसुत। [तुत्र:क्र्ग'म्बेग्'कुत्य:पॅदि'तस्ट:क्र्रं व। शिक्षक्रीयान्त्रीक्षंत्रात्मा विन्विक्तीयानेर्यम्यायम् व। शिष्त्रसुत्यत्रिरञ्जन्यशैक्षकेत्रहेन्वश्रीका । दर्ष्ट्रन्वेर र्वेययानेग्'रह्माक्रेञ्चं । ब्रें'चयायं ह्'रहग्यक्रीस्याययाद। । र्दव'र्व'श्चव'श्चेर्य्रर्मा विरम्भ्रंख'वर'वश्रयम्रत्। श्चि'व्यव राष्ट्ररहिष्यक्षेत्रहर्भेता । भिराद्रराष्ट्रियकाभिषावष्यक्रिया ।

ण्यसान्नेवायाचेवाकीस्नित्रता विनित्रीतारसारार्भसाननरारी । बराइसाइनापर्देश्यामरसाद। । विषाद्वारायने नामा तहेन्ययम् । वर्षेयसं बुर्षेद्वर्मिन्यसेन्। भिर् मा । हिन्दि इंशे वृष्दि हिन्दि हुन व्या । हुन छुन सेयरा कुने मुंब्रिना विकारपाश्चिर हेते सळेंब्रायहरा है। । यहरायविते न्यग्वैवायवत्यम् रायन्। । ग्रान्दिव्यो मूर्निन्द्र वे येवक मिन। । मिने व्रंहेरे तहे मा हे व्यन् मन्य सम्बद्धाः । वित्रम्य सम् ही: सका कुला प्रस्तेश । सिरा ही प्रस्ति । स्वरा हे प्रस्ति। स्वरा ही । स्वरा विष्वदर्शकीयराधा गृहद्वीर र्सेन् यर। । ध्यान् ग्राम् न्राक्षेविद रा'तर्ज्ञ ष रा'स्व देना । क्ष्म 'यह र मे से र कुव स्व देया । इस हेंग्'नेक्ष'रदे'र्ग्'वनकायायाया |रे'र्ग्न्यकीरस्ट'रापञ्चन्य मञ्जुग्राव्या । नः मन्या ने विषय स्वार केन हे व स्पन्। । छिन् इव्प्राचिक्षयविव्यं ग्रीक्षयेवाळे ग्रीका । हिंद्रित्व्यप्रम् श्रुद्वाकेषा इत्य तर्चेराया अवासक्ष्यायते प्रोपति में वर्षा । क्षेत्र अवर्षा प्र शुःहेनामहरतामकुर। |द्वानरामकेन्कार्मन्त्वनराममा। |दे बाह्येवायरान् में त्यायेणां मायाय द्या । वेदाया सळेवाय दे प्रेपे प्रवे र्ने व'न्न' यर वाप वि'शु'हें यर्त्त वृश्चिः कृ व'तु' स्वाप पाया वाप हें पर्त व वृश्चिष सव्यात्राहरूम्या श्रीम् केर्स्याय तुन् किर्मेषायात्र विश्वास्य स्वर्ति सम्प्रतु या केन्या मन्यास्त्र व्याप्त स्वाप्त स्व **3**5°

ठण्चेरप्राष्ट्ररपदेव'व'यारपेद'इत्यातर्हेरप्रितुष्वाराष्ट्रीया श्विन्द्रुं की तक्षक्षे | कृषान्द्र हैं तह्या श्री ह्या राजि हुन पदा बिर्न्द्रम्पिर्दर्द्द्र स्ट्रिन् कुर्न् कुर्या क्षारम् मे कुर्न्द्रम् स्ट्रिन् मलवा ग हव हुर र र कुर था है प्रति हु हुर थ। यस में सरा भेर पह व पा विष्यायां इयकात्मा दी प्रदायां के के के किया ही महिला स्वाप्या के का स्वाप्या के किया स्वाप्या के किया स्वाप्य श्चित्रत्यत्र्वत्वित्वर्तित्वर्तित्वर्षेत्रिक्षेत्रः स्वार्श्वर्षः नियात्रहेवःवद्या B८.किटाकीश्रवायाकिरान्तराक्षीं विराधकाकीर्त्तवा सूराव्या मॅॅंन:तु'तडीक्पर:छेन:र्ने। । तुरु:नेते:बावरु:ब्रायराक्परात्ति-रेवाराहरू **ब्रु**ट-५'वयातयुर्गवेट'। हराक्चेट ब्रुयाञ्चर अवेट पराक्रेव'८ देशयुरा परक्रियां क्याहेंग क्राह्म रातकर। मञ्जूप'पर'छेन्'न्। । अहर'हुग'नेरु'घुनै'गनेरु'या'झे'न्न'तने गहेरा ग्यम् प्रमुत्ताः हो। रेप्ट्रं ग्रार्श्चर्ति स्वीयस्व विष्याः रूप्ताः स्वायः स्वायः च'नवि'बेन्'नु'हॅ नव'नेन्'त्विर'च'खन'कु'केव'चॅर'नर'च'ने'य' क्वें'चुर' कु इयापराहेंगायान्धेन्यां हो हा पाने के सम्भारतु तात्रायो न पाने का ये न पाने रु: य १ पार कें पाछ त्राज्य। दे 'त्या' में दें द' हैं पार छ 'यठ त' दे 'पाछ तरा 지

मुतापति विर विश्वास तर्स होर तर्देन। । यर रामुराप हेराप हेर

म्पारापिता वित्राप्तस्वापितास्वापास् वी दॅर सु'क्रा । गुन्ची रायगुर दिन यक न्या निवा । अवाय दे प'न्द'भु'न्छन्य'छैय। । ॲंग्यंद्रययागुद्र'हु'छ्प'य'दे। । हे'यन्तर महेन केर महुन तहार या श्री मारी थर है । इस मारी म्रत्यन्तुन्यति म्न इत्वादान्याः । यद् न्द्वाद्यक्षक्र प्रताह्यन्य है। अंबुदाद्रवसंगुद्रधीसंसम्बद्धाः । पर्नेष्वेष्वसङ्ख्यापः वेष्व ह्यासः ठन। क्रिश्यकॅग्यर्पर्रिन्न्र्र्ग्युर्। विश्वर्ष्यः इन्यायम् क्षात्रा । वा ह्रेन्यान्यान्यान्यान्यान्यान्या तकेर'परानेत्। |हॅगयापाद्मवयायाद्युवराङ्गरा। ।ध्ययन्नरावेवया क्रीज्ञां प्रशासकर। । समरामुण में बाया सूराया श्री मा श्री केरा केंद्र श्चर्रन्गार्में गहार। विरादशुप्ताधिर शिक्य ने बादरी वा हें गय त्यादायादेगाय। । सवावृद्धां स्वागुद्धां में विद्या । हें ग्रादा रन्देगाचे ने वाही । नगर रिते पवाह वाहि वाहि रात्र वाहि । हुन्द्रिन्थाये ने कायेत्। । कॅकाइ बराचन्त्र स्क्रुतार्थे न हुन्। । **हे**र्सेब्ग्व्रव्यक्षियुर्द्स्ति । । अर्ह्व्यान्यन्यन्यस्यान्यस्य स्या विक्रं स्वापस्याने स्वापस्यान विष्या विक्रं सुर्भे सुन्तर विष् है। विश्वतालेद्यान् व्यान् विश्वान्य दी श्विदाञ्चयायाम्यः स्रम्पान्यां गहारा । गर्ने दागर्ने रश्विदार्थे विरोध ब्रून्यत्री | अक्रिव्यत्यव्यत्रिक्षेवाकी | अर्घेप्तळेयस्य

हुन्द्र प्रमानिता । हिन्द्र द्रायने न्या द्रायन हरा हिन ही । सुरित्र न्द्रश्चित्रहिन्त्रश्वरहित्। विचर्ष्यत्वार्द्रवार्थः तर्ने वेत्। विच **ह**न्न सन्य स्थान स्थान । श्री सम्मान सम्य सम्मान सम्मान सम् <u> ब्रोक्षेत्रा । व्रिक्तिकर्त्रे महन्य सम्मानम् नहारम् ।</u> इर ह्रवर्ष् याने अनिरा । य ने वर्षे 'कु या वर्भे वर्षु केंद्र या । दर्षे वर कर्'र्हेरलप्रवासर्वे प्रतिरा | सर् रेग्'त्रहुवापति'र्छर'तु'वुग्वा | मन्यूर्यं मुंद्रिः स्रेप्यर्वे व्याप्य प्रति । प्रायुप्य विष्येप ग्राय देवा श्रीया । तिविन्तर्यान्ग्ग् श्रुपायेन्यारम् । के सूराध्या श्री के वि म्रा । तिष्ठुवायामिकेकेन्द्राह्मेन्या । देनायतिः स्त्रह्महून्या **र्**न्या | दिन्याया के ले या श्रेन्य श्रेन्य श्रेन्य स्तर द्यायरय। । इर्याचित्रयम् । वित्र्याय मैग्वर वरात हर गुवागन्त । । सरत्रेर दर्देव गुरु इस हेंग रेवा मॅं है। |गृबिक्के वेद किंग्यायाय देन सम्बद्ध सके | विकाहा विदे ग्रु र छन् वर दहें ब किर। ग्रवार ग्रामे स ने स ही स पर दे व गुर ने दवराहे प्रदुव मी सप्ति सप्ति । प्रदेव के व संप्र मा मुन् की गुरुं र्दर ब्रुंबाय दे ने रहे गुरुं यदि कुर दे दे बरा करे | क्रिन्य ह कर्य विष्यतिः इत्यवर्ष्त्रस्य स्तुष्याया देन् श्रेकाने स्ट्रास्य ने का हे त्र्युन्यक्षयर्वेन्याकेन्यंप्तिवेषात्रस्य। न्ष्युन्कन्षुन्रेष्व्यन्नित्रः

मिन्द्रप्ति स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

2.सं.ची क्र.जूर.तपुरीच्य.क्ष्यांची स्वायांची क्ष्यंची क्ष्यंची क्ष्यंची क्ष्यंची क्ष्यंची क्ष्यंची क्ष्यंची क्षयंची क्षयंची

स्तिश्रुद्धत्यपतिश्रुवात्। वयामहद्रापतिन्गतामति। रायं त्वार्श्वन्थीय वयाश्युष्टी वयाया रे दे श्रादी वर्षे न प्रता श्वापा वर्षे গ্রুব'কুব্'ক্টব্রিব'র্রবাঝ কুব্'ঝ ক ব্'বাঝ বা গ্রীর্থুব্'বা मे भे राशुप हुन पाय हिन विदा यहतालगराक्षेत्रपति क्षेत्रपत्राक्ष *ॸ्ॸॱ*य़ढ़ऀॱॸॸॖॗॸॱॸॕज़ॱढ़ड़॓ॿॱॿऺॸॱज़ॾॕॸॱय़ॸॱक़ॖॿॱय़ढ़ॎऀॱॸय़ढ़ॱॸॕॱॾ॓ॿॱय़ॕॱ दे। हुन्यक्रिक्षेत्रेन्पत्त्वायादेः स्टायायान्येयायावे वर्ता हेव'र्यसम्महवर्ष्द्रवायाम्भगवाद्या == न्यरायहरायतिः क्रेष्ट्रवाहरायाः इरायके इरायमा कुर विराधिया कुराव द्वारा प्राप्त । यम्पाय विदाध हारश्चराञ्चर्ळेन्या नहून्न्यान् ग्रान्युं न्यायान्नान्यिके न्रिके स्राधिनः त्रवार प्राप्त विदेश वार्ष प्राप्त विद्या वि <u>न्युर् ज्ञारामदे छेवापकु विवा वीकु मार्थ असर हुवा दिन्नु ह वादा देवा</u> **छ**न्'बेन्'पन्न-'बॅ'ख़'वपब'ह्न-'नु'ॅर्रन्बव्य| क्रॅन्पवन'नु'ठ्याख्य' हिन तुः मेकापान जुन्। यर्थ ताव्या पाये वाक्री दिन प्रेन साम हा ये वाक्री श्चेंगरा गरा छगा र दुरा व या गर्भव । तुरा रे या शु ग्रायाय वित् हो। **७**ग्'तुन्'बेन्'स्'र्चें'तर्ने' हे'पर्व्वव्यायेबश्चात्रक्केन्'त्वर्यं बक्केब्यायात्रम् ग्न्ग्यत्रस्या वेरव्यानु पारस्यानु वुरापाया ই'নৰ্ব'শীৰা हुन्य न्ने न्य न न न न । यन प्रते क्षेत्र देव में के वे क्षेत्र वा हुन्य र न्दुन्'याः अर्ळव्'ळे'न'स्'व्राक्षां अर्घन्'निति। त्राः स्राप्ति त्राः पायम्बीमिन्दीहिन्या स्वाप्तम् मेर्पान्यम् स्वाप्तम् तर्भेगुव्यक्षंपर्भेषवायरप्तिवायक्षेत्रयम् स्वाविव्यव्या

विवार्श्वेन्यस्य विवास्त्रम्यः विवास्त्रम्यः विवास्त्रस्यः स्वास्त्रस्यः स्वास्त्रस्य

हे भु प्रवे ते से पे हे तकर। इर विकाय है वाप दे की गरांख परःइ:वा दिःचेंग्नवः ठवं जुन्।वने दा ञ्चि श्वरुरः संः दूरः शुः ह्यस्य | विष्यस्य स्राप्ति स्याप्ति स्यापति स्याप्ति स्यापति स्य केर'। । झु'ने' में श्रापार्चया ग्रीशागुरा। । र वात ग्रीलिंगाय राशी कुरा भूत्। दि'श्चर्'हैर'द्'लु'नदे'र्द्दा शिर'स'नक्ष्यपदे'दर्ज्ञ'कुर्' [छैन्क्रमबान्दिबागुनाहेताने । माह्येन्छिषुन्यहेने इन्रायुःभेव। । तर्न्तर्वेत्। यर्तेवरान्यं वेता । हन्यायि इंगुं नक्कें न 'त् न वें मा नि हे में के बें ने प्राप्त कर ब्राप्तिः ब्रेन्प्रवाद्या । क्रियानः श्रदान रुद्यान वृत्या । ना चेन'केन'सराक्षेत्रसार्वेरपा ।नतुसन्निरार्के'सन्वेप्या ।क्षेत्रेन्छे हुन्य हेरे हैं अथी । तकरन्य दिन केंद्र प्रधेया । केंद्र या केंद्र कुर्याभेरा । वर्ष्य सेर् प्रति स्वासेतु प्रत्तु ते व्यवा । ने नेर हेर् रु Aष्ठ्ररः यरः अर्हेत्। । ग्रायः ग्रायं व्यव्यावितः प्रति दिवा यहरः व। । श्रीतः । बाहिन्यादे हार्षेत्। दिप्तादे वप्याववप्यायके याते। हिन्येत्या स्र'तरे में वानेया । हरिकेर खराया पायह न उदा । हर अवह र नते वें न दुवा था विकर हुन के न दिन दें हैं के

सुर्वे थ। विन्दर्भे कुर वर्षा सर्वे । विन् वेन वेर द्वा व्राप्त्रं ज्ञा । श्रुण्युवाद देव राष्ट्री व्यापने वा । यह ग्याद्रा के महब्धायप्रस्याचेत्। । तर्ने याक् करा भेन् या केवा । ने वहा ययात् विषय रंदा । शुर्रिण पहराया प्रज्ञुनाया प्रविदा । मिणा वे दर रे **४८.ध.बहूर्। । विवयायान् वयापिया पर्वेव.** वया। ।८हॅ.श्रेया मन्दर्भाष्ट्रियं स्ट्रें में द्वार के विष्ट्रियं में स्ट्रियं में स्ट् **श्रिक्र केद** पति वा | देश ग्रेक्ष हे 'लु प हे 'लु प हारा | 15' वर पर ग्रेप **६८:इ८:४१**वराग्रेया । श्रीरायतिः स्रायते प्रेमिन वसास्रया । यह गया ब्रेंग्रेन्न्न्न्न्न्त्र्त्र्व । सन्द्र्न्यम्वित्वेग्रान्त्रुत्या ।स् बिद्द्र मिष्विद द्या है। इंदर् क्रें र न्या व्या व्या वेद् क्रिया । क्रें र पा में 13g छ्यान्यस्यवराष्ट्रितराष्ट्राया । श्रुव्ययान्यस्यान्ययान्यस्य त्रेत्रागुर्क्षात्रेष्पेन्परानेता । यतुन्गुत्रापन्सतिराष्ठ्रगातस्त म। । न्मुह्म्यायस्य प्रस्ति । देसदेस्ति एत् सुद्रस्य । ग्रेग |दे'दे'यर्ड्द्बॅदे'द्वग्यत्रिम् । तर्त्याक्षेत्र । तर्त्याक्षेत्र । तर्त्याक्षेत्र । सन्या । इन न्यू न्यू न्यू न्यू ने न्यू ने निकास गर्डग्रा । अग्नायमञ्जेरापदेखन्या । ग्रह्मा । ग्रह्मा बहुन्द्धंतर्देतेखन । बिन्यान्द्रन्यम् देखन् हेन्दरी 18 बेव्रॅम्पाश्चित्वसङ्ग्रेगवा । नैवाकेव्रक्ष्वेग्वाद्यान्त्र्त्या । १२५ ब्रे भेशकी हैन 'इ' तर्ने ते वें न | निः ब्रे न व हो राष्ट्र ग ने राष्ट्र न व हिल

रिश्रः व्यापान्त्रेन् प्रक्षायक्षायक्षा | स्थिष्ट्र कवा श्रीवर्षा हान्या । म्बारायु न न्या कु रामन 'शे हे न्या श्चानव्यायाचे तुराक्ष्याव्यापा | श्रुव्याचे पद्मित्र येव से त्रिक्षे | | | यावळवाळे मति व्यावस्कुरा | Rद्धें त्यं या व के संख् 'द दे दे ते त्र स्था । य ह या या व व प्राया त्र संव व द है। १९५ पर रेगर पहुँ ५ पुर भू । १९५ प्र गर में दे हैं गय है क्षे'अ'भेत्। |पङ्गन्'य'रप'र्न्न्'प'रुत्। |ध्**न**'ह्युरयप्ना १ व के प्राप्त विव प्रस्ता । विष्ट्र व जिल्ला के प्रस्ता । व क हुन'ग्रीरा'अ'नश्चन हुन'र्रेन र्रेन हुन। । विन'न'वनवार्र नरायागा'वना র্মন্থ। । ব্রন্থর্গনাশ্বন্থন্ত্রা । ইণ্মনাইন্থাশ্বনাক্ ष्ट्रा |रेग्रांशवाकेंग्वं व्यापान्तुं गहें गहा | | न्यतः हुन्यवाने के र्रंडी |र्रेंश्च्राहे दिर्हेर हेर परवा | विरंप्र हें व कर्पा दुःदस्त्। । मृत्राम्बद्यस्यस्यास्याद्याः स्र देव। । यगदायहिन् स्ति में दे दे दे हैं से विद्यान में स्ति है से स्ति है से सि है सि है से सि है स **य**र'हे'त्रहुत'ठव'ग्रै'तु र'बेर'ने'र्ग'गैब'केर्'रु'यक्कुर'हे'श्रूर'लुब'या **हे**'नढुंब'क्केरियु'नवाप'विन्क्कि'के'क्ष'वायानर्रान्ववरानवान्यनिः"""" **ঈ**্বৰাগ্ৰীৰানু**ৰা**নেই শ্ৰুবাৰ্ষণ স্তুবাদনি স্ত্ৰায়ন্ত্ৰ বান্ত্ৰ সাহান্ত্ৰ **मत्र्'डे'न्द्रन्'ने**द्र्र्'हेर्ड्यारात्रायरायरात्रेत्र्हेत्र्हेर्द्रायकुन्" **र्**रत्र्पित्र्र्व, विद्यास्यक्षक्ष्यः स्ट्राह्यः स्ट्राह्यः स्ट्राह्यः स्ट्राह्यः स्ट्राह्यः स्ट्राह्यः स्ट्राह्य

च्याचा विवादा विवादा

चेत्रापर्झें अपितिष्ठेर। [न्'सु'व्य'वितिष्ठें स्पादर्झें स्पाद **इंश्रम्भेर्यः म्योब्या । अव्याधारम् प्रमायः वर्षायः प्रमायः वर्षायः । अत्र** परात्वुरापति क्षे 'वके र 'क्यवा । विष्ट्रर नेता ग्रीका गर्दे द पा र । য়ৢয়য়৻৻৻য়য়৻য়য়ৢঀ৻য়য়ঀয়৻৸য়ৢয়য়য়য়ৢ৻য়য়ৢয়৻য়য়য়ঢ়৻৻৸ हिन्थरन्रपरिक्रें देशस्य । रयः हुर्गरिकर देशस्य रयस । पर शुक्षायगुरः विदः वर्षे दः प्रतिः देव। | द्रायाः स्वाहेः र द्वादः ज्ञानितः वर्षेत्। । कुत्रश्रवायवर्पा हिर् हेर्ता । विषय देव प्रविवास प्रविवास है। |देन्'रुग्'नर्केन्'व्यवान्यवान्यदे'रेग्वा |यावदःयाक्चुंनदेः बी'स'भैव। । ५''क्षु'ब्रुव्'स्र-"तिर्द्र्राप्ती। । घ५'से५'स् चें'तरी द्रस्य मा । परे पाकेन प्रमाहिन नेन हो। । हिन राहे प्रभाप रे हे न स्प मर्था । विन्द्रित्रायान्तुन् हैते कर मन है। । गृत्यान् गृत् हें न संस्या मानति कुत्। | रन पुः कें अविन नक्षत् कुर वरा। । व्र के न से ग पा बर्ह्म वीरोबया | देव केव सुगा पश्चे न पुगरी | हे पह तालु पाय ब्रुॅंन्पिंदेन्ने विन्द्राक्ष्य । इसार्व्ये न्यन् खुन् ब्रिन् वेन् खेला । हैरः तहें ब्रेने पारे देस खुर याया । मृत्व कुर् विस्तार् र्रा राम मॅंन्रा ।६ग्रान्रद्यान्रहें तत्र इयय। । यत्रे वा ग्राय मराग्रीग्राब्यपा |श्रीस्रहेदार्स्यानुपर्देश्वित्सेत्। ।हिन्रुग् ह्युंधिद'व्यक्षेत्र'म्बुद्र'। ।देन्'ठग'दिन्ग'हेद'म्द्रेन्'ह्वेद'वां। । गर्य विकारिक्र र हा निर्मित्क प्रति क्षेप्त । तिरेग हे वर्षिण हिर

शुपःकेष्यमञ्जेम। १२२'न'तम्यात्रयायायायायः यात्रात्रयात्रया । श्रेष क्किंप्तराष्ट्रेष्ववाद्यरम् । विनेत्र हायाविवाववाद्यरम् । द्विताकु न्रस्यानुत्र्र्त् । प्रकाराक्षाक्षित्रम् बॅरक्रॅनर्दु'वर्जे | देर्'कुर्व'ज्ञर हेव'यादी । देर'यर्ने'न्र'वरे'ये न्यकार्यन्यत् । न्यास्यस्य न्युयान्युरान्देश्यम्या । क्रिंप्यव् नेताकी तुरस्तु न्या दिन न्याया है तान नियम के साम विमान स्थाप के साम राध्यक्षकन्त्रा । श्रेक्षन् न्या स्थितः की में न्या स्थान कन्कन्मि | व्यवस्थिति । व्यवस्थिति मर्ख्याक्षेत्र'त्र'यहत्य'म्पर्' । व्यवेत्र'त्युराञ्चर'रापा |वर्षे तक्षयानरःगर्दि संस्ति। वित्यं राष्ट्रित्वि । श्चिरः यदः द्रगरः यदिः क्रंशं करः यद। । गुवः गुदः दर्गुदः दिवेदः वर्वेदः न्रंत्रासुत्र। १२ देर हुर रु द्वारायरा । विवस्त क्रिंतर हिर् वित्री । वियायसायम्यायम् तत्रिक्ता । यतुनायसाँ सावित ग्रुत्यायग्याय। । न्यापायत्न्रं सेते सुजुवाग्रीय। । ग्रुत्पायायाय र्डेग'क्केरातु'यर्ळे**ग**। ठेरापदि'र्नेद'ने'न्ग'क्कद'रग'क्क्षर'त्रात्र'त्रादे'यदा Rनेपराशुः श्रुनः पासरा हेः पर्द्वन श्रीरास्य नाशुन्या। प्रविदःपत्रन क्षाह्मेर् इंब कर्षे वर्ष्ट्र वे प्रश्चित्र वित्र वित् त्रायान्त्री हुना पति ह्ता यू केंन्य विश्व नित्र केंन्य विश्व में प्रति वर्षा पति मर्पर्युकाही रक्षर्प्याक्षेत्रवाक्षित्रात्रुक्तिविता **१**९८ देन् प्रतास्त्र प्रतास्त्र विष्टित स्त्र स्त्र विष्टित स्त्र विष्टित स्त्र विष्टित स्त्र विष्टित स्त्र स्त्र विष्टित स्त्र स्त मायान्यान्यान्या वर्षाः व्याप्तान्याः वर्षाः **इस्राह्य न् राज्य वर्गन् नः ज्ञान विद्याद्य स्टिन्स् राधिवर्ग्य दिश्चे स्ट्रान्य रागाणा** वगदावगान्ता त्र्रांपायतापार्ष्यायात्र्र्रप्टिपात्रे प्रस्पुराया र्ष्युक्त न् मुक्षाप्ति श्रवाक्की ह्रवा मुन्या ता न हेन हिन त कुन শ্বীবা শবা षिष्ठेर**णरःगर्दर्'रेर**'रकेंपरकी चर्षा केर्पराया **ब्र**म्पराद्यार्थेययान्त्रेन् ब्रिक्तान्तर्तिन्तिन्तान्त्राधिवादास्तरस्यात्र् **८ देव अहं के पान पर प्रक्षित करा हैन पान करा हैन के वार्त हैन पर दर्श** मत्यं नन्द्रायते क्रिन्द्रिं द्राय्ये क्रिन्द्रे मुन्दि मु श्रियामध्यात्राचे न्याचे न्याचा स्वाद्यात्रा स्वाद्यात्रा स्वाद्यात्रा स्वाद्यात्रा स्वाद्यात्रा स्वाद्यात्रा स्वाद्यात्र स्वाद्य स्वत्य स्वाद्य स्वाद ग्रव्यापा

या कि. त्यर्र्यक्रिस्यं विष्णं विष्णं क्षेत्रं विष्णं क्षेत्रं विष्णं क्षेत्रं विष्णं क्षेत्रं विष्णं क्षेत्रं विष्णं विष्णं क्षेत्रं विष्णं विष्णं

विग । तमुरानदेखरायाळ ग्राचेत्। । देळ के नेया गरेरा न्या बारवा वित्याके मेन् केन में ते देवा । मन् केन या केन का में या दु बेर्। |व्यायमिरीयर्स्व वित्रायस्य नित्र । वित्रायस्य स्वर् षय। | निर्श्वे नापित्रस्यात्र्वे स्तर्यापान्ना । विनिष्हे तहास्वर्या घुन्'बेन्'स्। । शुंभ्रर'ग्रेग्'र्ह्हर'ग्रेग्'येव्'र्'ने। । हॅव'कन्'र्ह्ह्वन त्रवाच ह्यापरादेवा । वितान के सव कता है से वेदा **शॅं प्याप्त पार्या । व्यावीपार्या श्रीप्राप्त । श्रीप्त । श्रीप** ब्रॅंके । नर्डं ब्रॅंब्रॅंट्रं न्युंबर नर्षया नयस्या । तहिना हे बर्श्वन चारिन्हर त्रे<sup>,</sup>ळॅग्रा | ५४५'चवि'५ अग'गेरु'५ सञ्जर | दिन्नच'र्से५'ग्राखता र्नेपन्यराष्ट्रपाण्डा । वृतुवाः द्वायळे दाण्चे करात वेच हा नि कै'र'य'नर'गर्रेन्'डे'अ'नुस्। |र'ब्रूर'प'तेसस्राशु'वग्'हॅन्'डेन्। । रोसरा है न हिंद पर ने हा पति है र। । विद्या है न पत्री व रा है हैं न हिस मा । विष्ट्राच्यां कंद्रीन् अर्थेन्। । श्रीन्यमः हिन् उना वर्धेनः उत्राचीया । <u>र्गर्संक्रिशीप्रहर्मकरम्या</u> । विर्श्वरःषरःव्राप्तरः युरा मिं'लेंग'लेंकेनेर'लर वा विस्र रहिन'स्वर्धित'सेर् |पर्नेरवित्रप्रेंरवित्युग्पर्वयाव्या |पायवंद्रवेपदे ह्यव'न् नवा । हे निहेन गुराधकारा हु रवता । रन हुव द्यतः भ्रेम् मेलु प्रस्ताया । सुनः ख्रमः से स्वराक्षे श्रे क्ष्याया । यहनः रेते क्या कर स्वता हेना अत्। । हिन्ने स्वयं गुर्या पति सेवया स्ति।

क्षे<sup>-</sup>र-धे<sup>-</sup>र्रे-रायव'र्वे र-तु'या । संग्राह्यायज्ञते'ग्नवाक्षेर'वा त्यवाकी में अन् प्राप्त के विषय । अप्राप्त के स्वाप्त के स्व वित्राप्तृते हुं तानु पत्र वा वित्र हु व को हे हु दा हा ता वा वित्र हिंदी है ता हा ता वा वित्र है है बेर'रगर्येदे'देर'दर्श्वायय। । गृत्यानुदे क्रेर गेगु खु रा बर्देशप्तिके हेंग्विकेष्वा |हेंग्विपति देवुत्वा ग्रेंग्वर हेरा । दे'वर्वर्रर्यतिहेग्'हेद्वेग्'ह्युर्या |वावर्वर्'क्वेप्पाकेंवदि'ह्येर्।| बिन्यम्बर्ययाद्यद्यस्य । वियावीयम्बर्यस्य विष्ट्रीयः विष्ट्रीयः र्ष्ट्र क्ष प्रश्चित क्षेत्र **श्चैत्रः अन्यान्य व्यान्य व्याप्य व्यान्य व्यान्य व्यान्य व्यान्य व्यान्य व्यान्य व्यान्य व्** व। । प्रमुद्रापार् द्रावाल्दायायवादा । प्रवीप्राधीया इयथाय। वि.पंचयार्चात्रयायययाय। रिव्यूराहिनायविष विवागुरातक्रमा । तर्ने न प्यंत्र क्रुवानु या प्रकारी । विवास वर ब्रायायान्त्। । त्रिरमित्रमित्रं वर्ष्याः श्रीमान्त्र। । वर्षा उत् सु बरकेशपतिक्षेत्र ।गुन्तस्युरम्नेन्रंगरेक्षेत्रपरातस्य। ।त्र्रं हुग्देव स्व संस्था । विकास देव दुः से मुझे व। । विव सं द्वा स म्बानिहः मुन् । निः द्वीनः निः से नाके नामिन। । विनः स्वनः रोगना मह्मप्राच्या विषयायम् निर्मे हेन् हेन् हेन् व विष्केन सम क्रीह्मपात्र हुँ न्या । दि स्राप्ति न स्थिति । या द स्थानि । या द स्थानि

মর্মুব্'ঘরি'মর'অহ'বউব । অব' দ্ব'ম্থীর'মম' মহার'ষ্ট্রীর'ঘরী। र्गाराः सर्वर्ग्गते विद्यायस्य देन रि. श्रेपात है यारा रागा देवा थे |देशपति'र्द्र्द्र'द्रप्र'द्रप्र'हेप्तर्ड्ड्र्युड्र्युड्यायगुरःदुःपदेशद्रश्रद्यायग्रदःद्वर यविव प्रस्त स्वरात्राकृष्ण स्वरे सेवास स्वरं में वास त्यापानिव तुःनवायमध्येवभ्यवा डिवाउर-तुःवावेवभ्याञ्चेभ्याध्यमधिकपुन् ग्रायवा रनःरनःश्चितिः जुन् 'स्टेन्'न्नः श्चेन्'या के दे ग्राया दे'न्या यकतः विशासिन्या यवैव'यत्रम्'अ'इवकाग्रीका गर्से याया **নি**বা'উঝ'বাগ্রদঝ'নঝা मर्ख्यात्रवाद्यक्षित्रव्यवाद्यां महेन्या हेन्या हेन्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य कुर्दें बायाकेन्'नु'मञ्जूराविन'व्दान्वनु'ग्रुत्यायार्ट्विसंराकेराकेवायान्। नेवानीवापरायम्भावापरायम् 5'अ'य'रे'ब्रॅ**र**'ब्र न्न। गृतुवार्थे स्थानवायायार्थे प्राचा विन् क्रुन् भी स्थापतार में धा इवका न्त्। इत्यत्र्वेर्यक्षेत्रवाई त्यार्वे न्यार्वे न्याया श्रुवाया नहेलाय दि हे प्यर्वे न्या दन्दिन्य राष्ट्र क्रिये के राष्ट्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र में दे प्राप्त में दे प्राप्त में दे प्राप्त में दे वग्नेक्रंस्यम् नुर्वस्यस्य न्नेक्रंस्यम् नुर्नेक्रंन्यु *ढ़ेशन्* कंप्रसित्के इयापके हुना प्रिस्ति हेल के नपा हे रात निया नतरा.... विन्देन्द्रियान्ते नगर्याम् वृत्वास्य द्वारायान् वर्षात्रीम नेत्रं दे तत्वा "" म् देन हे न या परे में न या न हुन न दे है र न न न नगर'नम्बन्ध हैते *छः र पह र पदि श्चर्'न् पङ्ग्रायां वा महिं प्राया विश्वण पाव वा गर्दे र 'त श्चर* 

बर्केग्रान्थेयरानक्षेत्रपंगवरायरावुष्तवया वेदावुष्यातस्यात् सुर नेरहेपर्ववर्षेक्षवरायरायहर्ने यग्राह्मयाय मत्वि'मत्रम्'अ'क्यश्रिद्दिद्दिर्द्धानु'यवान्वपनु'मञ्जूर'वेद्दु'प्पत्रस्य प्रातान् दिते है र के ज्वरायम् दे तर्जे र प्रते वर्क न प्रान् व व्यान्यम त्यमुग्न्रायक्रम्पामुकानेष विष् विर्वेश्वराम्भुन्पतिः अवस्तर्भन्ता न्द्रशर्में निव्दारी तर्दन्यक तहेन हे क्य दे न्द्रश्या मुनाने रे न्या सुरा तार्शे र्रा र र र र र र ने वि र र द स है र र देग म शु र स र र ता स इयरानिव्यु मुंचे प्रविद्यु प्रमाद्य में पा स्रा प्रमाय मुनरा हे मारा दुरि विद्यु व रतः तृ गुरापा न्रायक्षाप्याचतार्थे श्रुपाते अ<u>न्राय</u>्याया स्वित्राकुर्वित्वराष्ट्राव्यं स्वास्य विवादारी प्रत्वादी स्व क्रिवार्ड संत्यवाराहे। पर्वाकी सेर है प्रमा नेराहे रेर स वेदाप्यी। श्चित्रश्चर्द्रम् वाक्षकुत्रत्र वेतर्यत्ते तृत्त्वाश्चयत्त्र त्याश्चयत्त्र व्याश्चयत्त्र व्याश्चयत्त्र व्याश्चय न्र संदे न्या संयोग राष्ट्र । यून ने से द से से स नेवयन स्थावेशन भी। सूर नवयम स्थे न्रेस सुन र सुवान या व 数当て別了! नेति न्याया स्वाया वा वा वा वित्राया वित्राया है। मेविर्देश्वर्भव्यव्यविद्यायम्यावेष्यय्ये। यर्वद्यं द्रिर्देश शुपायस्वयापायवादाद्वां चेराञ्चरा वहां ब्रिंग्स्ये व्यव्याया विष्टित् चेर् नन्गानीश्चर देशेन्य में क्षें नहराय वेशन्यी। गुरुंग'ब'री न्या । व्याप्ति विष्या विषया । विष्यं व्यवित्रायं विष्यं व्यते। यत्षा विवेदः विष्युत्र प्रत्ये प्रवर्षे प्रवर्षे

संबेशन्त्री। म्रामित्र्रित्रात्र्रीं समेशामितर्देशस्त्रापातस्याया **新**美工第51 देरहेप्तईक्षेत्रक्षिराठग्द्रवद्यायार्थ्याद्वित्रुः मुनयात्र्राप्त्र्र्यं वर्षे भ्रम्यो सेवाया स मञ्जेन्'इबराइंग्रम्बेन्'न्'वरा **養知可劉子可口了了** ्चा इयरा चुरापर प्रमृत्पायरा तहे गृहे दार्थ गृहुर के हा गेरा दे इयराप्त्रप्त्रप्त्रिटार्टें यळ्यात्रावित क्षा द्वाराद्ये हे पर्वुवा केव'र्रोते'व्याव्याप्रहात्याप'सूर'हें 'अ'हेंग्यानुत्र'हेवांशु' अनुव्पर हूँप' र्वतः यग्रत्यक्षक्षे तत्रायरायश्चीयात्ता। यगात्रे व्यवस्था रग पहरावया है पर्वव श्रीवयस श्रीवर हरना ब्रॅं र प'शब् 'गुर्च 'रु अर गुरु व बाववावर्षे र 'वी' पर 'रु 'हु 'रहु ता गुरु 'दस्र बिष्टरायातस्य ने'दबाजुर'नेर'चॅरकॅर'च'न्र'। व्यार्थर न्नुन् यह ज्ञान नेति छै । यह निर्मे के लाम हु निर्मे मीवुरावें।व्यव्यक्तांवांत्रवेववांश्यांत्रांत्रेवांवें।यज्ञुन् नेनवारा ठव'ग्रेश्वे'न्रॅव'र्'युर'र'ने'इवश'र्शेंसॅर'रर'रर'वी<sup>5</sup>,गब'र्र'वसुक्''' पति'त्रिंतर्न्सुर'सु:खुर विंहेंग्यान्राम्यक्यारान्रा श्रेष्प व्रत्हेग हे ब'येग्' ह्यू र'श्रेट्ट' ग्रे' अ'द्रवर्ष भ्रेग्' केट' वहें श'रा'ये' वॉ ब ब'द्र दे 'क' शुर् -5'पश्चरत्राक्षेप'क्षेप'न्र'श्चे'र्म्य'न्र'| देव'र्मे'क्षे'ब्र'र्स्च वर्गानु वर्गन्र'| न्सन पर्नेप्राह्मेन पर्यायस्थापन्न। के के मेंप्राह्म वाद्या कर्मा क्रिक र्नर्नुमञ्ज्य हो। इब्र्न्य मूर्यम् त्रिय तुः स्त्रिकेम् रान्य प्रस्था

सत्व भी त्रास्त्र का कर्या मान्य ति का मा

हाबेर्'यहॅग्'तृ'रोयय' पहेर्नेर'रे। । ठे'यरॅन्'र्नेस'शुप'प्रयाहरक व्या विक्राम्यावर्षात्युर्व्यावया दिष्यर्द्र्यं हुन्'येन'महिन'महन्या ।ग्राम्बुर'क्षेग्'स्रि'क'हुन्'ठत्। इत् द्वाप्तरकी वापहरात्ता |द्वापक वाकी वापहराया है। न्हें संदिर्श्वेश्वर्रत्यान्द्रतावया विपन्निर्देशस्य श्चित्र । व्येन्द्रन्त्यन्य व्याप्य प्रमान्य । दिण्याय सुद्राद विन **ৡ**৾ৼৢঀয়য়ঽয়ৼয়য়৻ |বয়য়৸৻৸৸৻৸৻৸৻৸৻৸ৼ৻য়ৢৢ৾ঀ৻৴৻৻ ₹ ८.इ'@ब्पिते'त'त्ररू'८ | शुंळें व व रेता वें खुता व वा गुर्ना | देशम्बर्म्बर्म्बर्धालुपाने। । ब्रिन्ब्र्स्त्रीन्ब्राविधावम्बर्धाः। ध्यः ने न्नन् क्रें व क्र प्रस्त्रत्। । प्रणः परे व प्रयाप्त्रात्या व गुवः गुनः व्या १५७ र अने र हा ५६ र वे वा । हिर प्रवरा गहावादिर नते शेवज कव्या | १८६५ पते हिन कुर कुर के विकास त्रेंत्रंक्ष्ण्याश्चान्त्रंभित्। ।नेंत्र्वांश्चेंत्रंक्ष्यः व्यं व्यं वित्रं । ।निंदे यन्या तु द्वा भीवा तु वर्षा । वित्र में न्यवा द्वयवा की प्रवास वर्षा नि रह्न व वर्ग गुव यहिव यर यह का शिवा । विवय ठ८ में ८ देव गारि क मध्येव। |र्नेव्ययन्वेव्यत्यिन्यनः दुवि। । यगेगुव्यस्यवस्य **इ**रावेन्'गुन्'बेन्। । क्रॅंबर्'संबेन्'न क्रॅंब'स्व'बेन्। । न्यॅन्'स्व'क्र' र्म्याहन्यवेत्। विश्ववातुःशुःन्मधेनेवावेत्। निष्ठित इ। ८ द' ८ द वापा थे द । विष्टः द र केवा विषय क वा वापा विषय

ग्बुयमहरूप्ताप्रेंपरायक्या ।ग्रेंप्वयायायुपक्षेप्यवेत्। । ण्वि'येन्'क्षेत्र'रुण्'क्षेत्र'येन्। । । यत्र न्नः भवाशी हरा श्रेत्येन्। । दे है रत्रिरति वेर पर बेर्। | बहर हुण दें व य दे हर करता | क्षे'अ'रोयसा स्वायेत्'युराव। । नुसा गुरुय'यत्सा जुरा से त्या सुता। । हु सेन्'त्रस्य सु से विष्य । गुन् स्पायने न परि न यन दु दे। | হ্রমান্তর্'র্ম্ব্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্ न्बुत्य। |भॅन्पन्द्रंश्रं रख्टान्दा । बेन्पाक्रं रावते **इ**शक्ति, यो । इ.स. हो र छ र त्री क्षा । प्रत्ये की र विष्ये । प्रत्ये की र विषये । प्रत्ये की र विषये । प्रत्ये की र म्बद्रारेग्'र्स्र्'हे। विषयाक्र्यंत्र्रित्। निःस्राहेन्यायित्वायायायाया ।इयानेवायावहरायानेवायहरा। । মুখ্যথা করা প্রারাপ্রনার্শ প্রারাপ্রনার বিশ্ব প্রারাপ্রনার প্রারাপ্র প্রারাপ্র প্রারাপ্র প্রারাপ্র প্রারাপ্র প্র बहर्। दिलक्षक्रेर हे.स्वायत हरहे। द्विनयन् र बेर से म्बर्यायार्थम्या । यरयाक्चयार्थम् नृत्याराधेन्या । व्रारस् देव'केव'क्यानु'त्र हुन्। ।ने'इतातर्हे रान्धी हें प्राक्ष केन्धिया । <u> ब्रे</u>न्'यर्नेर'ळॅग्यक्ष'य्रेने'इ'य्यात्। [कॅबान्नप'ॲ'पबागुर'पॅन्'ब्रु' क्षेत्। ।अन्हे र यो कुला विश्वरा । विषयपा पर्याप् क्षेत्रा वैदा । तुर्दिन् खुरानदे संखुन इयवा । वेद्वेदे न रंबाद हे गृब वैनः अग् । तग्राविगा अता स्वाधिन श्रीनः वा । तने ने वाह्य राज्य न्नदर्भे नु ने मिले किया विषय देव गुर ने अन् प्वार का निष्य के स्व

श्चीर देवाप शत्या श्वारा श्वी विषा व या स्था शी सुत रग गेर्ने द्वर्य भर थ। য়৾৻৾য়ৢঽ৽ঢ়ৢ৾৻য়৾ঀৼৄ৾ৼ৽ৼ৾৽ৡ৾৾৾ঀ৽ৼ৾ঀ৽য়য়ৼ৽ঢ়৾৽ঢ়য়ৼ৽ঢ়৽৽৽৽ न्दः लग्ने क्रिंदिन्दः प्रसुद्धः द्वर् द्वर् देवग्या सुर्वेष वर्षा सुर्वेष वर्षा सुर्वेष वर्षा सुर्वेष गरिगार्सिने'गिवि'र्केश'हिन'या बनरमुग'राभुतारा'ग्रेग'तारा'वेर्। মইখ্ন'দ্বি ने'भैन'शुग्रानेसम्बन्धे'म्रामहे। ने'स'सक्ष'की में में में मार्थ के में हैं न मार्थ की में में में मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्य के मार्य के मार्थ के मार्य के म ঘ'ষ্ট্ৰ'দ্ৰ'ব্ৰুম'দ্ৰ্মীকা **लक्ष कुर्य में देश प्रमाय अ कुरा के किया दा है 'क्रेट, हिया लूट,** धवा बेन्'त्'तह्वेर'तहंत्र'र्वे जाबुदर्यप्य । स्'र्वाश्चेद्रने'द्रवर्या क्रींदर द्रवा <u>इ</u>र्र्मशुः बेबबा पङ्गेत् पुरुष्परि हु गी 'बाङ् पॅ ने 'न्या' कृदासबास स्वाद बा '''' न्दिन्ध्नियात्रात्रादिन्ने वर्धिन् वर्षिक्षात्रात्राद्यात्रात्राद्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रा **後内部**口管了'七'口管了'七

त्गुत्वात्रात्रात्र्वां व्याप्त्रात्र्वां व्याप्त्रात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्या

व। । नग'बेन'गडेन'वुनै'क'वुन'ग्रीय। । नेगयन व'तु'बॅ'येन्य र्श्वेर'हेर'। १८६८'र्गरके'यर नहुन्य'बर्झर'। । नर्गर्च थुक् ক্টিই'নেধ্রম'শ্রীমা । রন্'দন'শ্রু'মঞ্জন'নম্বর্'মুন্'। बेन्द्रअयागर्भे अप्तायम् । ने अर्डन्में वर्ष्या वर्षा हैवा । बन्दान्तन्त्रान्त्रयान्त्रव्यूतानुःदिन्दा । ब्रिन्नेवान्नानदेःनेवानुन्त विदा । अर्गे या अर्हे गारी दाय या ना जुना । शुक्रा या ज्ञान विदार । सन्। नृत्रेश्वान् नृत्रान् न्यः नृत्यः अर्थः व्यापा । न्यः न्यः न्यः कुत्यः सं র্বিব্রুজান্তুন'। বিষাম্বিন্ট্রীন্তার্ড্রান্স্রের্ট্রন' বিরুষ क्षे<sup>-</sup>ञ्चर'पाय'न्नराचा । नि'तानर'कन्'ञ्चनरावाकेन्। । नुरान् वैदः न हु र हु। र पाया । हु न दिया वहीं र शेश श की न यत प्राप्ति हिना । हैनः तर्देवः परार्केन् 'द्युः ऋवापय। व्याप्ति 'क्युं यहं केव् पॅति 'क्यूंनः न् खैता है। । शे'न्स्न'त्रनरातिः मृंबां बुंबाविना। । वर्गे तातुना श्रुता हिन् तुः चर्डेरया । रस्य शैरि संस्य क्र पंग हन् 'दया । यतु र हेरे नि द **ब्रि**य'गुर'पठबा भिर'पविवर्षे रसुर्श्वर'रु'डे। |रै'पॅब्रुर'बेर्' त्र'प'यहॅर'| |र्ने'स'स'यळव'रे ळेंबाक्केष| |ह्वेर'रेग'प'रोयय य'र् यर'यहुर'यस । अूर'वेर'के' अूर'ह्यूय'य दे'गहुग्रा 13 <u> ज्ञ</u>ंप्प:८:बे८:६८:पक्नेबरा**५**८:व्या ।शॅब्राके:२:५ॅगवाञ्च८वापते:छे८।। 

नरःकन्'र्जेल'नवाकीतहेनवाकीत। । श्रामःकेन्'सुं'तुतिः द्रवादि र म। ।वतायर्मेन्द्रन्त्वत्विन्त्य्श्चुःन्मं। ।वस्यविन्त्रेन्त्र्याः र्दयाग्रीशणुर्। ।ग्वरार्द्रवागराळ्त्'रोयागरीक्षित्। ।येत्'गवेव' इं रासु रेब् पांके | हिर्वायायाय वर्षे व पारि द्वार वर्षे रामा । वर्षि व बदि'न्येन: नराक्षे न्यू नुंदिन। विन्ते वे न्य दे नुंदिन हिन् वा ना परःसन्'यतुन्'ग्रीराञ्गपायाङ्गेन्। ।देन्'प्ररःसन्'यानेरायम्'तस्यया पत्रा । नर्देन् रेज्ञरा पराकन् प्रहेन् । ह नरा नरा कर त्रुताकृष्टेंग्या | मिंवहर्न्,यान्ववान्यान्। | गहुन् रग्'यरेब्'यश्रक्षं रामन्'रे। । म्बर्का ठन्'बे'यरेते' सम्रायायाँ न्। । म्या नेवान् गुनः हा खाया । म्यया कन् विद्यापि हा थे पादी । रेव'ळेव'ह्यु'गु'राक्षेत्र'रा'गवर'। । सार्वे रामसार्द्धव'र में परि रामेशा । त्रांनदेन्यवावर्ष्यहेम्बंद्रा । विषयदेनुवाह्यम्यस्या बह्द्र्प्त्वादिव्हित्र्रित्रहेग्हेद्र्य्त्र | विष्ट्र्य्वाद्र्यक्षित्रह्वित्र मदे। हिन्दा शुर्वा सुश्चर देव हैं। । या हा या देन या है दानी। र्पत्रेंद्रःगें'अंद्रवर्ग्न्रः। |वर्ष्यंत्रेष्यंत्रेष्यंश्वेष्ठं | | न्त्वयन्तः कुत्राय ईवर्रिया विति श्री विक्ति श्री वित्य विश्वी वित्य विश्वी वित्य इयश्यीय। विव्यक्षमञ्जित्ममुत्रवर्षेत्री । विविद्धित् न्दराश्चन्नेनराप्तेल। छिन्किन्यस्टन्न्यस्टन् पार्वे प्राची अधिव | दिप् चग् प्रावे प्राची प्राची विश्व विष्य विश्व विष यदिवाद्यवादिन होन् पर मृष् । देश हुन् पर ही व्यव्यादिन

ह्याप्ता प्राप्ता क्षेत्राया मिन्ना म N'EN'D'NN हेदाश्चित्रायत्रत्त्र्र्यं यातरी द्वयया श्रीत्रश्चर्वित् वि**द्वर्तुः** वृत्ताः तरः नृत्याः परः नृत्यः परः <u>५,२८.८श.म्बर्बश्चरावेद्ववश्चरत्यत्र्वश्चश्चर्या</u> मग्राह्रसम्मविव मनम् अद्भवश्ये न्याने क्यानु न्याने क्यानु न्याने क्यानु न्याने क्यान तुराष्ट्री वाता श्रें नामवात ने तरामा हुन हिन् की न तुन सेवल प्रन राम्बद्धरक्षेत्रवा न्केन्न-नुप्रस्वप्राधनाकन्निष्रस्कान्त श्वरापानुराकुराशेशशार्पिशेष्ट्यामहास्यरास्यर्पाक्षत्रापतिः। मानक्ष्रमाधिदाय। निष्ठन्यमानुग्यसाञ्चरत्वन्यसाद्यमान्गतः मः अन्धर्भव्याः नेवायात्रिव्याः स्वावाकीः न्दाः स्वा प्रात्रः हिव्यारः । हुन्द्रवराकुर्वन्निक्रम्पानिक् गर्हे र अ विवय नेप केश गड़ा द व रा तथा অন্'ব্ন-ত্ৰা' इवलाननः तृत्वत्वित्वं न्यायुरि । बहत्यान्ति वहिर्याक्रिकेवारी व्याप्तरक्ष्रं राष्ट्रवाच्यान्यम् वर्षान्यस्य इन्निक्षित्रां ने ने स्वाद्यां ने स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वाद्यां के स्वत ष्ट्रर शे मुतायविदात्रिं दायाया देर हे यहंदा शे श्रित र वाया हैं। सं ब्रें तावरि रेग पान कर परि द्वार प्रमुद वर्ष । व्रे व्या गु र गु हे पि न्यानुष्यं क्षेत्रः या ज्ञाराय देशान्य स्वार्थं प्राप्त स्वरा यद्व व कृत्रुप्त्वकाते। यग्रस्थानायवैवायवर्ष्यक्षान् वैवाहर् **प्रतर्दर्स्य वर्षः इसका न्यास्य गृजीवः यङ्गायदेन् यवः श्रूपः विवः ।।।।।।** 

क्वॅुन्'सवाद्यापिक्षाप्ताप्ताचापिकेचेन्'स्प्राप्ताचार्याकेन् TIMI त्रेन्य हे स्पन् सुन्य म्यून्य न्येन्य केना न्यु अअय न हें न्य ইবিবা रदे इं र्रे ग्वर्यं यद्भा क्षे क्षेत्रप्रमायविष्मुक्षास्य प्राप्तिः ग्राद्य षश्पर पेव थ। वर्प्त कुर् 'ग्री' शेवश कब्द स्वरा कर्' प्रे' र वा ग्री' सु त्र्वां च न न वहन प्यन् व स्व निन त्रु व प्यन् होन न व का है। ग्रॅन्किन्त्रळेन्न्न्न्ने विन्छ्तार्क्ष्रार्क्ष्र्न्यम् अन्छन्। कुन्छेन् केर् मत्। तुरान्ता इयामा वयवा उत्ति हेरीना कुरान्ता या वरा मेरा विवा केश्व गुर्यारा'श्या श्री श्री स्टार स् भगवारीयापार देवापास्यवारीहिष्या वाक्षित्रा कुरातुः भवाराम् द्वारा स्वाराम् चनश्यम् त्रात्राये न् यस्य स्त्रुच्य । विन्यस्य न्य ळेंग्'ग्रह्मत्यं यग्रद्देव्ळेच्यायवा नेन्'ठग्'यन्ग्'यदे प्रशें कुन्'द्दिर व विषा'याबेन'रा'दरापष्' कषारा विषया प्रति'कुद'वसुष्'रा'न्न'। पर'रु'यर'सुर'बेर'क्के'प'र्वद'वेर'क्कें श्रेंश'वद'पडा हे'यर्व'गुरा ग्डार्प्यक्र्रजुर्भ्यक्षेत्रेशकुरा यग्राक्षिश्वान्वित्रावित्रः यञ्ज्याः यन् चरीते । ग्वन्तित्रें हुन्तेयया उन्नु युर्दायाय भिन्यकी स्राप्त गर्दे न्'केन'तळे' न'त्रशक्षां मृग्रान्ना ध्याया ने प्रत शुर्रापाद्ववरात्रादीयद्यपाद्रापाद्रापादे प्रदेश्यापि देशवरात्री द्वारा **कृ**रःक्ष्रेन्द्रप्राचित्रक्रित्वत्यात्र् रेग्राकुत्तुं ग्रेंग्राया प्रवासक्ति । स्यान्युत्ति वित्तम्भूता स्ति।  **र्धः**ठगःदग्रस्यराष्ट्रियःपञ्चनायरःपग्नीदे। । विवाधसञ्चरयःदशः ब्राच्यायाष्ट्रण्य कंत्रावित्रं क्रें रापायवायत्त्र्त्यात्यु राव्याय 数二、第二、六 मत्र पार्दे हेल। गर्दे वें राग किया के रेप वारा न्तु वर्ष प्रिति हेग हेद'वेषा'बुर'की'ह'भी'याथ्'प्रेस'वेष'रा'वळॅष'षीवेवरा'राक्षेर्'रादे'दॅद''''' द्रैयायव सुर हर रापा द्रय रा छैंद त्र्या देन या देव छी प व्यव हरा यग्र'नेकान् रात्राक्रीवर्ष्वन्यवेदारेते हे त्यात्रत्याष्ट्र खुटकारा उदारकारा है त्र<sup>ॱ</sup>रॅंद् 'ग्रैक'श्चेद'ॲं'चग्र'केशकें'देद'अ'केद'अ'द्देकश्च, कुबक' तक्कद विद'" र्ते 'बेन' यम' द्रायापा देश हे पर्दन है न की विकास की का इसरा न मेव गव रा वसरा न मत्वि न सुन रा न हे राप में रा दें से खुन """" न्मताकीवन्यतन्मवाह्य नवाहराहेवामानिके दें संन्ता हला तर्त्व रप'वि'प'र्दर'व वे का श्रीका अ'र्दरका पदि'वार सवा 'स्वा प'रा' प वन्दर्दर्व विदेश विद्या परः व्वाप्त्रम् व्याप्ति । स्वाप्त्रहें न्यां क्षेत्रा वी श्रेत्र या श्रेत्र स्वेत्र स्वेत्र स्वेत्र स्वेत्र स्व विनेरः नर्भेर्पायतुर् से र्भेर्प्ये सेरा प्रे विषया स्वार्थे ।

द्रांश गुःदा देव के द्रां चुन प्रति हाया निर्मा । विष्य प्रति हिं चुन प्रति हैं चुन चुन प्रति हैं चुन चुन प्रति हैं चुन प्रति ह

|श्चेव'रेट श्रॅंय'यर्ट् 'अयान'ठव| । श्वा'रा'यमर हैवा वीय। | न्यतः स्व प्यत् न्यते व्यवस्य स्तुन्। 1岁美型 イグバル महंशवरावुरापवेषात्। ।तस्र म्र्रियान्तर्केषर ने त्यूरान्यताचेत्रिं सन्। ने नहर्या । क्षें न्यन् त्र न्या ने स्वेरान्ये हे रायमेत्। । <u> देक्षेत्रयात्रसम्बर्धम्य</u> पाष्ट्रयाचे व्याप्तम्य सम्बर्धम्य सम्बर्धम्य सम्बर्धम्य सम्बर्धम्य सम्बर्धम्य सम्बर्धम्य ब्र्यायत्विर्वेश्वायदेवर्षे अधिक्षेत्रं विष्ये रेगायाम्बु द्वापायक्रेन् प्रति स्राव्यान्य मैं 'अशुअडु' इ'ग्रेस। माद्रवरावत्व भीववावादरायाचनुष्या नरात्र निष्यु प्राचित्र विषा न्देन्यानित्रेन्ति न्तित्रान्त्रान्तान्त्रान्तान्तान्ति । र्मताम्बर्पास्'हे'हे'बेशयुःचाने'वेर्। हेल्यं द्रंपाळेव्सॅते'न्युरावेश श्चित्रायां त्वा पृत्रानु प्रसुत्या परि हिन। शुक्षान् गृत्य सुत्रा शुक्षान् गृत्य सुत्रा सु द्धवारा न्दायक्षाया वाया स्ववाराञ्च पारा दे वाया स्ववारा से वाया स्ववारा से वाया स्ववारा से वाया से वा क्रीके'प'इं हें न व यस र धुन हो। वियश क्री खुरा द ने हे न व रा तहत्रहेंत्'हु'तिरेजिन'कुंभु'नेवापर'खुग'कु'केत'र्यायहंग्'वीन्देवासुय'" महेरापित हो महंब हो हो हो स्तार प्राप्त संब हो हो न हैंव'ग्रे'नर'हें गया वित्र गुंचेंब की सहता क्रे'नेंद्र हिंदा है दे द ब्रेन्स्र तहेन्स्य बहुन्द्र विषय प्रति व ই গঝ ग जर हिया तह्यावयारीकुनित्रस्या भारतिहर्ष्या नियाक्षेत्र स्यायाञ्चर क्रेन्स्य प्राप्त रेक्षा क्षा यह नाया वर्षा क्षेत्र विक्रिं स्था वर्ष

यत्न'डे'न्दें लागुपाकुं हुर्चे इयान्वे सन्ता कुरात्वा की सत्वा प्रति सुन देन्ता। र्ह्म स्वयं या कर् 'ग्री'ने 'विं'न् 'केन्' ब्रें सामा स्वयं या कर् निमा सामा হ্রদ'বা विट सं हिते लें देव हैं राय दि श्री राय विवास दें दे प्राप्त प्राप्त प्राप्त ANI पति'खरारें रार्चर' कं वार्केंद 'ततुकारें दा सादीवा दे रारे सकादा ता के वार्षे ''''' ममलाहे। वर्षीरेव्यास्युरामात्र्यस्यात्र्यस्र T' रेवर्गामुग्'रह्यु'न्न्'। कंन'शु ब्'रझेनरून्न'। विश्वान्तात्रात्रात्रवादायत् न्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् न्नापा नेति है। या देव ना ना तिना में रा रा नित्ति है। या देव ना ने र्मेर्स्से के अन्बर्ध्य केंद्र के वा नहर कुन देंद्र वा नहर कुन देंद्र छन्'केन्'न्रन्ग्र क्रे'क्रेंक्शत्तरात्वरात्वरताक्षेत्रके हेग्'स्व के'हे'क्र स्वर्श्वर्था" शुद्देशाय। शुःनद्गन्द्र्यास्त्रेः स्थाप्तिः स्थापान्त्राः स्टिनः। गुनः विनयः **इ**न्या अ हे ग्रान्य के इव त्र क्षर देश शुर् श्रेष्ट श्राया निर्देश स्थ द्देश्यम्प्रित्रेश्वयम्ब्र्यन्तुः चहुन्या ् व्यान्त्रेश्यम् वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः व मक्र्यारेशं शुन्रेशं पां शुन्रं पां विवादित्यान् याव्यश्चित्रं हत्याक्रं रापः मन् गर्न व्याप्ता स्वाप्त्रा स्वाप्ता मन्यात्रिंशं कन्ने में संस्थितं कुर्ते त्र स्थापन रासुराधकान द्यारा में रिराराण वर्णान्यं वर्षे वर्षा 子で見

षर'र्ने'त्रप'त्रेर्श्व् । यर <u>वृ</u> र्ने'र्न'ठग'ग्वेश'ग'त्र्रेंग्यातात्रेन ग्राम्याया यम् वाद्रायाया विकास वाद्रायाया निवास मसळें व वा वा व केवा दे ने ने ने केवा कुर व वे वा व मर्जुव: ग्रीकाने तद्भापति त्यायान वर्षेत् पाषेत्र प्राचीत क्षापेत प्राचीत क्षापेत्र प्राचीत क्षापेत्र प्राचीत क दे'तर्नदे'त्रस्यस्य विद्यास्य । विषया वर्षा प्रमान विद्यास्य । महेंब्रहेरतर्भूत्रायामुत्राव्याद्यादेषीत्रव्यात्रावेष्यायायावळे"""" नेर हे न दुंब की लगसन्त्व मार्च अधी सम्भन देव न सम्मान पति'शुन्'र्चअ'सबाक्ष'स्न्'यर'सर छे**न्'न्य'ग**्रस्न् **디**'회작'디 aু' बेब' ফ্রি' হব' হব' । অ' बेब' ফ্রি' ইব' হব' । तुन्ये स्वाराभिन हु दिरे हें व सुर यह या देवा वे व व व सुर के द यह व মৰ্ভুগ্ৰাম্য शॅं रतापति जरा तुला है रापा वर् पुरा हो यही यहा स्वाधिका वर्ष वर्षा स्प्त्रराष्ट्रिया यो पा विया स्राध्य व्याय में सुरा स्त्रापित है। हे पर स्त्राध्य व्याय विं सं भेव पुः चिं पर कंत्रायर युरायस्य युग् यग् त्येश ग्वर पर कंत्रा नेर गणा नेराहेपाईवाग्रीकार्याया विनानीवासिता श्रीतारी कें वहाया परी पृक्षेत्र श्वाह दे दे विहा विष मुन्त है सामा स्वा ब्र ने वि सं में १८ संया प्रमासुन परि मुन्दे। स्याप्त तर्वे स्वारा है। **इ**यराग्रीरापार्वर प्रमान्यर वराकेन में मृत्या 月口(型)煮二味 दामिं संभावन प्राचीति क्रेन् श्रीकामि संभित्र देवान र श्रुर है। । त्रा दीन राम क्रिंदा हो मान देश वर में दिवा कर हिन क्षा कर है क **घॅ**ति:ळेब्र'मञ्जु'ग्रेग्'व्*षा*भैब्'तुत्र-'ग्र'मन्'ग्राश्चे'मञ्जूब'ळेब'घॅ'ङ्घब'''''' विं श्रेंदि'वि'क्कटकार्यवा'मकास्थयति दिनः सम्बे'वर् १ द्युः म्रायायाया **द्वारा में या वित्ता में वारा वर्षा वर्ष दिर हे न ईवर्शे** हुन्यायायाँ दान देर द राशे न तायायाया शे न न वार्ये न से " धिव'रा सः ततु व्याप्यक्ष। प्रश्चाता प्रमाणका स्वयं विष्य वा व्याप्यका <u>५'२४'ऋ'र्वे</u>र'दबाळ५'यर्ने'ग्रेन्'र्वेब'५वें মুন্র্মানাগুন্বা म। प्रवित'प्रज्ञर'अ'हिंद'अर्थंक्द'र्राभेशनुर'कुप'ग्रेंबर्क्ष, हु' शेवर्ष धिन्द्राक्षे धिन्त्रज्ञात्युन् र्वेग्यायश्च त्र्राक्षे क्राने रंद्राविग मन्द्रवहार्ष्ट्र-प्रथायां विषय् क्रम्या विषयं प्रवास्थायां यने पारावा **६अल्पन्निन्धिते होत्। अ**हेरापदित्र्राप्तिन्दिः देअल्पन्निन् <del>ୡ</del>ୖ୕ଽ୵ୡୖଌ୕୵୳ୢୖୠୣୄୣୣୢ୕ୣୄ୷ୠୄ୕୷୴ୣ୵୶୲ୖଈ୕ୣ୶୲ଵୗୄ୕୶୕ୣ୵୳୲ୖୄ୵୕୕ୡୡ୲ୖୣଌଵୣ୲ୡ୕୵୕୴୕୳୕୴୕୷୷୷ ष्ट्र'वरि'क्र्यायायक्षे वाव्'व्रिन्'याकुन्'विषाधिन्'वाकेवायव। न्'नेवागुन् **धा**या तर्नेते प्राप्यका व रूपा मान्या विवादा प्राप्य के विवाद वि पित्राद्ये तेत्र व प्रमृत्र प्रम्प प्रमा हिन् प्रमा व न्या<u>न</u>्न्य क्षंत्रपः तृःश्चेषाः केरः नृः भवा नेः हेः यर्श्वन् क्रीः व्यवस्य यह वा ववा **देन'रोबर्याञ्च वार्यानेग्'रादी'रामः यवि वार्यातञ्च यापति वन्'यगः रंगातञ्चनः** रुप्तरामसन्भ्रद्शिष्युराम्मानु क्षेत्रमान्द्रम् निवास

कुःक्षंप्रदेर्भवश्चार्षायायाः क्षेत्रक्षं स्वाप्त्यायाः विद्यात्रायाः विद्याप्त्यायाः विद्याप्त्यायाः विद्यापत्ता **८ळें प'बी' हो ५' ई**५'। भ्रूषागुरा विश्व र विवाद विवाद के के केन्'नु'न्येग्स'ने'तर्शें'प'इवस्यागर्वेन्'या यमुक्षपत्रअपम्पुर्द्रकृत्यपायाः अकेकाने। न्येराममुक्षक्रान्यः हा मा **ढ़्रायान्य्यत्रे सुर्चे वृध्यायय।** देव्ययस्य स्वरास्त्र व्याप्य त्युर प'ने'पिबद'रु'वि'ॲ'रुग्'गे'रेग्राराराके रंदारु' गर्ने ग्रापदे देरिरार्टा च मुंद्रम् अर सं प्रेंत्रप्र र स्वर्ने द्व अरा श्री सा मर्दे द 'देर' त से पा पश्ची सा सु प्रसा ने'प्पर'वि'र्वे' मने'म्पर'युर'द्र'हें मर्जुद'श्रीमग्रद'वद'मत्रा छै। नाने इवका की में वन प्रनि की कार्या नरान की न का कार्या के वका कार्या के विकास कार्या न्देशम्बाराहेशमञ्चवसारकतातेशल्यान्त्रम् ह्वात्रारम् नेराहेपर्दुवाग्रीयानेपादित्यार्थेपवायक्षेत्रेपक्ष्यायक्ष ब्रायान्मान्त्रावाक्ष्यां वात्रावाक्ष्यां वात्रावाक्ष्यां कृत মট্ৰা इयापर कुलायते र्झें व बाळे प्रश्रेर पाय हर् प्रश्री देते व र यापर व बा बत्यव्याध्र-विन् स्वग्ति हत्यानेवादा संयानु सुन् । यत्व रं अ रु देव प्राप्त व कर केर देव मी क यह यश्या व हर प्रवास में व ह यने'वहा ब्राम्यागुन्यन्न्याम् देन्। याग्याग्युव्युव्यास्याय 디지겠지하니 यन्द्रेयर्व्यक्षियानगर्द्ध्यानानवे वाननन्यर्ष्ट्रन् रयः तुःपन्।पार्दे रराधिवाधीया राध्यसञ्च ग्रामुकी द्वारायावादा **छेन्'न्'न्या छेन्'इयस** छैन'इयस छैन'य**त्र**न्य दे हे नापान भित्राय'न्ना

**२**अजॅ हे 'क्रून क्रेन 'खुष बान 'या र्डे बा नेपा' के बा ने बादा या या । हे पर्व श्चिषायने प्रस्तवा द्वारा स्वार्श्व स्तु प्रमेश्य स्वार्थ । 35 ठवा'तहेव'हेब'पति'द्व'गी'ठा'ह्येति'त्ठा'ळेव'प्रेव'पद्याचिव'ठा'ठा'ठा'ठा'व'ग शे चने विद्राति विद्राति के प्राप्ति के स्वार्थ करें *টীঝ'ঀৡৼ*৾ঀ৾৸ড়ৼ৾ঀৼ৾৾৾৾ড়ৢয়৾ৡৼয়৾ড়ৼয়ড়ৼয়ৠ৾য়ৢয়ড়ঀৼড়ৼ৾ঢ়ড়৾য় न्नेन्रायित्न्र्व्नार्द्र्याः द्र्याः क्षेत्रः संक्ष्याः म्यान्यः । मेग्'रा'ळेद'रॅरि'सर्ने'स्रा'सर'र्सर्गास्त्र क्षेत्र'रा'त्रा स्राप्ति'स्येत्र म्यू 'वेर' ब्रॅन' ब्रेन् क्री विर स्वा' तु व ईवर्षा पठन 'प'न्र'। नगर सुन्' **८८.८ वर से८.५४.४ व शराया क्रुवा शर्टा व हे र श** के के व सं प्रवस्थाया पि য়য়ৠৢ৾য়য়৻৸ড়৾৸৻৸য়৸য়ৢঀ৻ঀ৸৸য়ৄ৾৸য়ৼ৻৸৸ वि'वर'रे' रेर हे पर्वन न्यायवरायने होन्यन् वे संस्थानन क्रम्या व क्रे वे न हे कारा प्रेन्या ८<u>५</u>ॱने'ग्ॅं'८ गुत्राग्रुवान्यक्षेत्रप्रिः स्रु'८<u>ने</u>'गुब्'८ष्ठुग्वान्यव्यप्रिन्पर''' तत्वाप्तवान् नेअर्जेति:ब्रेन्'खन्यातने कृतः नुष्ठैवायानः ठव्नुः भन्युन्'''**'** हमारा हुता विवा वर्षा न्या भाषा धारा मा श्राम होता है न इयलायः ह्रेन्य-एक् स्यक्तं हेन्यं यस्य व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति क्र्याश्चिर्याच्याच्याक्र प्राण्या हेरावास्या থাৰাইথোন'নদ্না ने'वबारीन्'पति'क्षे'तन्ने'मवबाकन्'लान्यूं'पावर्दन्'ने। पनेव'पति'क्रूंपबा त्र्राच्याः क्ष्याः व्याच्याः व्याः व्याच्याः व्याः व्याच्याः व्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्य

स्तिन्त्राक्ष्यं विस्तिन्त्राक्ष्यं स्त्राय्ये विद्याः स्त्राय्ये स्त्रायः स्त्रायः

प अर्ज्य के निते श्रुव 'सुन भित्र। । त्रु हुन् व है स्व । त्रु हा ठाः हें पाः ळें व्रांळे प्रायाः निर्देशीतः । श्रिवः श्रीमें रूप प्रोचे प्रायाः स्था । स्थारः **इति:रेन् प्राप्त वि:रेन्य वि** पाइपावर्द्धरयायवायया । ब्रिन् भुं के स्यर्क्षवयायवायाया । ५''सु'वे''सुरा देव'केव'र्वेच। । सुन्म्म्'से'स्विवस्र्न्दे। । त्रवस् बेद्रप्तरायान्त्रप्त्रभ्यायदिः धैन। श्चिः बेद्रपेवरात्री द्राहेन्य न्या । तहुतात्रित्युकातात्ररः न्यरः व्या । यरः कन्ष्येरः पर्या वे ति है ग्राया । दे में पूर्व ते इता तर्वे राय। विदारी विदा ज्ञान्यस्य श्रीत्राया । पार्केर पुति श्रीकाला पार्के स्वाद स्वास्त्र ।

प्राप्त ।

प्राप्त स्वास्त्र ।

प्राप्त स्वास्त्र यह्रतालुगवार्श्वेन'राष्ट्राळेगवा । तर्जे देन'ह्रगवायहन क्रेकारी रा'ने। । श्रुप्तक्रायम्बर्धम्बर्गुः श्रुप्तक्रि। । श्रुप्तव्यन् सेन्दिन् क्षिप्राच्या । तुन्न प्रेम्प्र गुन् छेन्। या । वि ण्डर मन ग्रेस हेर नश्चर या । त हुर न हिन्द र ग्रेस मेर संद গ্রন্ । বৃধ্রমেণ্ বৃত্ত স্থিত স্থিত স্থান স্থা স্থা স্থা স্থা ळॅरपा वयरा शुर्केरा | वरा त यु पा हे बार् रार् दे तु हा या यु रा त्रद्भे द्वा चन् कुराये विष्ठे । विष्ठे प्रेष्ठे व्या स्ट्रे देव व्यक्ष स्वा । **डैन**'क्रनगरमॅ'नदेस्यान्दर'यह्री | न्न'राम्नन्यक्रीह्रयद्या महें व। अके तक से प्रति रोग सर्मे श्री । विकारी का है प्रया

तस्यार् केया विर्वत्तर् पास्याय विश्वेष्य देन्या । अया वैनः चत्राक्षुः चुनः धनः विनः चने। विश्वरुग्धः हें गुरुग्धः स्वा । हें 'तुरु' देव' ५ के 'च दे' चरूद प्रमुख । दें द' यह द'व रूप याया च र द स् छ्रा । र्युष्यश्चे वर हर्पा श्चर पर अनु । । प्रेन् हेरी मं ज है तब हा पहुन | हे प्रमात देव है दे दिया तर्हे र या। | त्र प्रमा क्रे'ग्रस्य स्वर्पित श्रीपाय प्राप्त । क्रिम्म हिम्म स्वर्पाम द्वा षर्। । तुरुप्रिके अँग् असुर्धारी । वे पर्रिता यहेर् स्वरुष ळ्ट्रांचा अत्राचित्रा । अत्राच्चा विष्याचित्र वार्या विष्याचित्र विषय न्देशश्चर्यत्रस्यान्त्। विष्युद्धन्यम्यस्यवेतन्दरम्य। । तुशायने व्यापत्त दे व्यापत्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । **ब्रॅ**ब्र'लय'र्ग'पदे'कु'कुंद'ग्रेव। । अब्र'र्र'श्चेप'य'हे'पदेव'र्] । শ্বন্ত্রাপ্রিবর্মার শ্রুবর্ম। শ্রিন্থেইর্বন্মার্ক্র युरापरिकें। । गृह्याया सुरापति तापति विदायवया देन। । व्या र्मेण्यमे:पर्नु : के.प्रमुट्यान्य: मेंग् । ने.प्रमुट्यायतुन् के.पे.प्रमुक्त गुरु। (इंसर्गु:जुत्पर्श्चन्द्रं पायसग्रुम्। (श्चे.नेशर्झ्मर्यापद्रिःदर्श्च इयराया । पशुः पः इयः पति देश्चे वः स्वेग यायय। । शुःस्य वर पर्न देवे करारपावया | तिशें गुवारपातु केंद्रा शुरू देवा | देवा राञ्चन्। पर्वन्। प्रमु प्रकेषे ने ना अकान् नुः सर्न् 'कुः से प्रमु से साहा सिका हे ...... मर्ड्न केन् मॅंने कुन पु: ने अन् न में सिन हो। न न न में अन स्था पु: म हमा

प्राप्तश्र प्रम् न्या स्वर्ध्वर्श्वर्ष्य स्वर्ध्वर्ष्य स्वर्ध्वर्यः स्वर्ध्वर्यः स्वर्ध्वर्ष्य स्वर्ध्वर्यः स्वर्यत्यः स्वर्ध्वर्यः स्वर्ध्वर्यः स्वर्यत्यः स्वर्ध्वर्यः स्वर्यत्यः स्वर्

स्वाप्तिः व्याक्ताययया वित्तात्वेतः स्वाप्ति स्

न्द्रम् । तेवरायासूना प्रस्थाय विष्या विषया । प्रमुन्याय वि ह्यस्भुःह्यस्यात्रात्यन्। ह्याँगःक्षःह्याःगर्थः पः नेद्यः कन्ष्यः। ने'र्स्व'कन'सरानव'मरागवापि द्वीत। ।न'स् इयाह्वीव'ने'स्ताह्वीना । ५५५ मुंद्रिप्तरीयायायाया । व्यवपान्यायायायायायायायाया तुःशन्देशवाभे र्षे त्रे कुषा । हिन्नन्य देश में व्यवस्था । क्षेप्रकागुराक्षेत्राहेरागुन्वकामक्षरया । ग्रायराङ्ग्यायनेन्धाने ষ্ট্রব্দ্রব্দার্ট্রমা বিজ্ঞান্ত্র্নার্ট্রা ग्नैद'हेरीप्रवराष्ट्रग्रा - १६४१८द'वेग'रा'ग्यर'र्'ग्रह्मा क्वेद'रद'पर'हर्'छे'र्'पञ्चर। । ब्विर्'र्षदर्'हेंर'रअ'पदिद' पडर' वा । सर्ध्वरायाने सायान मात्रायाना । हे न मात्रा है न मेन मु हेर्दे विया | म्या क्रेब्र स्ते हेया येदा यह स्त्र यह स्त्र हि है त्य ष्ट्रग'पर्युत्र'केव'र्येदे'स्या । सः क्रुप्यां ठव ग्रीं झुं प्रवि ५८'। । प्रजू ५' <u> नृ गृत्रक्षे प्रिक्ष पञ्च ५ जी विषय । इस स्थित स्थित स्थाप स्थाप । स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप</u> मत्र'मत्रेरे'हण'मश्रमुण'मते'श । तहर'भेग'मर'र्ने'गहाराष्ट्री तर्रा | मान्येन्परायञ्चलाव्याग्रम्। |हग्रुप्नेर्धिय मन्त्रापतिभवा विनानेवाळेवाब्रीनानेवा विवासन्याभवा गर्नेद्रश्चीत्रा । वीरानेरामा वर्षत्रीते हेर्ना । नामी कुन्यारी वळरळे। विग्रापाई हेपकर केवावया विश्वकर में प्रवा करा ह। निर्नर प्रेव र हुल र अल्य राया विर त्र कुर परा

प्रत्यक्ष्त्। [नेष्ठिर-पंत्रेर-प्रवेषवश्युक्ते। प्रायम् नुपर-पहत्वा ब्राञ्चा छात्रा । द्राता वू रें से दें से दें विवा गर्ता । विंदा से वार्ष ष्ठुं प्रायः इयस्य विषयः प्रत्ये के राष्ट्र विषयः विषयः हे । हे शुरा में राष्ट्रिक छैक छैक राज्ञ राज्ञ राज्य । दि हुँ स्वय अराध कें दूर भेव। । खुक्षञ्ज'न्र-'श्रेन'क्ष'नविद'रु'दश्चेंग्वा | हे'ग्रुर'नदे'नग्दत्यर्कर्' बर'पहर'। । हुन्य'निर'द्यायहेस'परे'न्द्र'ग्'रेय। । हुन् न्नपंबें न् ग्रेक्षपति हैं हे न्म। | विन् क्रवका कवा श्रेपने विक्राना । क्रैन्सं वाङ्ग् व्याप्पते कुन्। । न्यता व्याय वित्रं कु खिरे नवान ति वा ५८। । नगरखुर ठदाश्चेष्व द्वा निष्टा । ह्युलाय वर्ष कुरावि प्रतिकृत। विन्यवर सुण क्रेंन परि क्रेंन वि क्रेंन विन्यत क्वांबळें सूरा स्वा कुर्र त्रोताया । पद्र्र देर त्रे देव केव पहिर द्रा ब्रुट्या । गुब्द् 'च्य' न् गुर्दे 'हॅब्' क्रेट् 'खुर' य' इवया । गुबेर 'बुब् अ'क्षे'चर्र्द्रेल'क्षागुर्रा । न्द्रे'चड्ड्व'क्ष्ण'कर'भेर्'रे'वेगा । हु भी द्रम् पर्द्व व्याद् तु प्रसुद् प्रसुद प्रस्ते । अन्य प्रसुद की व्याद् स्थाप ह्रिन्दारारान्वरा। । सारान्दार्देश्केष्वरात्रात्रवरात्राद्रीरा। । देश देव। हिन्द्र ति द्वार प्राया निर्म्न का की हैं दिया माननेन्द्रं बुना विन्तर् प्रात्वित्र विवास विन्ति । विक्रिन गुन्पर्पत्पत्रिप्पत्। विन्नेन्द्रिया वैन्तर्भित्व।

र हुँ न दूँ बायार पतिव दें क्रेंबवा । नुवादने यायय मु नेव हे पर है। हें हैं या सब हत हग हु परी | १५ दें शुरु ता बर विरा | । रोब स ग्रीस'ळ' जूर-श्चॅर-पाषर। | बॅब'बॅरबाज्यु धे बेर-सेब' ५८। | ब्रॅं गुर मुन् गुन्नाय स्वरा श्वर त्या । हर पुनाय य गुन्न य श्वर पुना । र र इंदर्श्चित्याचा ने स्वत्या । दिने स्वत्या हिन मस्तर्वस्त्वस्त्वुरुवे नामिश्रा । स्वर्भेरुप्तेव्युप्तर्वे न् गत्या । द्र'रग'र् झुल'नदे सुग'रम्ल'षर'। |र्द्र'र्दु'ङ्गर'न'र्फेर्'रा'केवा । कृषा अञ्चर प्रमास महार हिसामा स्था । वि स्माक्ष्या प्रहास हिना हिसा य। व्रिंदारायत्यक्तरापुग व्रुवाय। विंहे हे ब्रेट यं या व्रुवाय दे सदा दिसपार्द्वा श्रेयर्देवसाग्रुप्ता दिश्वीरागुदा महन्ता त्वितानित नवि। विश्वरा ठन् त्रेश्वरा शुःश नेश्व। विन्यनित त्रहेग् हेद प्राप्त मुद्रुर परा | नियान ने पार्य प्राप्त विद्रा | वहवा यवगानिष्यित्रस्यान् द्राया । यञ्जलायरान् स्यागुरान् सद्रापति त्या । मञ्जू रूप्या होन्या हेन्य स्थापन प्रमाणक प् ब्रॅटबाज्ञी ।श्चितःबर्धवाद्यान्यवाद्यवाद्यश्चितः। ।विटःद्यतः रेयराग्रीकुन् इंसविता | यसराहिन् हे सेर् न्यायस् | दि भूषान्द्राप्तवाध्याचेताराधिव। वि संभूषावान्तराध्या । मर्सेन्'त्युकाळेन्'मॅकार्गे'मर्गेकाकेन्'। ।ऋन्'स्नि'सन्'स्याकायेन्त्रा पर। दिव शुर रिश्च नका नेगा न्नया न न से स्वर पविद्रपत्रम्य। विकर्षेत्रविष्तुःपन्रपतिःश्चः नेद्रवयार्थे।पर

मुक्षायाष्ट्रन्पर्रं नुप्तस्वायास्य र नुक्ष्यायान्य विवासकाया *ૹ૾ૢ૾*ખેઽૄૡ૽ૡ૱ૹઌૢ૽ૹૢૢ૽૽૱ૡ૽૾ૺૡૺૹ૽૱૽૽૱૽ૡ૽૽ૹૄ૽ૹ૽ઌૹ૽૱ૹ૽૽૱ૡ૽ૡ૽૽૾ૢૼ૾ઌૻઽૣૹૢ૽૱**૱**૽ૻ राम्याक्त राविशामुमाकुन्मान्न्याविषाः वावव वर्षायर्थाः तुः 451 रें ब्रॅम्बें पर्चे रोबरा ठव'र्'बुर'रायात है प'दें र्'वर्या हैं हा बेर'री पर-र्ने'न्ग'र'येंन्रार्चुन'ईग्रापति'शु। श्रु'पाञ्च ळेंग्रा টাসা **७**ग्वायान्यात्रकाशुर्वेन्द्रेन्द्रायानेया नेन्द्रमेन्यायासेन्द्रायास्त्रवाहिता <u>मञ्जू</u>न्'पत्रि'ग्नवश्र'रग्'चर'र्थें'प्रत्थंकन्'प'न्ग्रेंश्रपंधेव'ग्रुट्रप्या অন'বিন'কগ্'ৰ্'ই'ই'মৰ্ব্ৰ'মগ্ৰা मिं ञ रुगा मे श श्रूप प्र में द र म है। तळ्यकाताखेद'मकाश्चरःखन्।कुःन्वद'र्यतेः त्रेतार्दन्।तुःयदद्।हेःपन्तरः"" त्यम्बायग्रीन्यम्बाद्ववायायय। नम्हन्यार्श्वन्येश्वन्यं वर्षम्ब देते'तुराव'यर'यरें'ये'श्च'त्राराशीकेंग्यर'तु'र्चरा শ্র্মান্ম্র্মা षरकु नरकी तर हिन् अद्या भे भेग देवा छ नर श्रें पार से न से न से किया चहुत्र'लुग्राञ्चेन'यं'व्यायं'व्यवायायवान् श्रीतात्रिनः केव्'येनः <u> वित्'यत्र-त्रेशकुर्वे त्र्तिक्यं र्यं त्रे श्रावे संत्रेष्ण स्त्रेष्ण स्त्रेष्ण स्त्रेष्ण स्त्रेष्ण स्त्रेष्ण</u> ब्रॅंट्र प्रति: ब्रेंट्र वेश्वरा कव्य प्रस्थाय दिः हुन् प्रकृता स्वराम् प्रति । परक्षेत्रहो नेपर्यव्यार पुराष्ट्रवाष्ट्रमार परिपार परिपार वारीपार

र्मात्रावयावातरार्दिर्कीविराम्बराव। श्विवायाप्तराम् यर्ग् बेरापरी [यु:जुलारेग्राज्यम्ब्रिंग वर्षेत्र केद्र की । पाः यहंदा सु'रसुतानमॅन'रा'भैदा भेर्वन'रो'भैरंग'द्रा'द्रां सेर'ना । नरासूरा **पॅब**'पॅरलक्वॅंन'डेन' । शुःचर डेन'तहें भैव'तुंन पता । धेव' क्ष'च'बैर'वे|देव|देव| । ब्रुड्'र्व्व|राज्य विरादेर'ठा विरा सु वै सु ग वव ग न न र श श न र में न | वि न त वै ग र न क न त त व व व पर्मायुःधिश्चरः में बैरवायाय। । श्रुव्धायः केरे हेर् दें केर् वेर हे। । यर ब्रुव्युत् वेया क्रेन्रिं र दे। |दिव्यु खेप्यत् अर्ह् द खेव्य प्रति हैर। | डै'यडुन्'पॅनबार्बेन्'राधुन'यरिय। । मृन'यहै'तुन्'रार्धे'रायेरा प धैद। [८र्देग्'ने'व्'न् नेव्'णव्यान्वयान् गराना । ह्र'न्नर श्वया भुति र्थं प्रान्धित्। । ग्राया ने प्रांश्वेशाय के गाया या कवा कवा । यहे वा पत्रेश्चरव्याचे वर्षे गुन् श्रेपाया श्रुं प्रायम् प्रमा । श्रुणा श्रु विप्रमा प्रायम् । श्रुणा ळॅन्या हु 'द्रष्ठुला कुन्य संत्'ने। । गुन्य सहिन सेस साहिन सेन साहिन से स पर्या विश्वित्वापर्यान्यम् पञ्च स्वित्। विश्वप्ताप्त्रव्य पर्दे प्राप्त में बादी हिंदा हैन स्ट्रेन सदे मुं में प्राप्त । नेन सून विर्शेर्पदेश्वः ५र्दे द्वया । १८ पदेश्वर्यं ग्रेयः पन्पत्या ।

मग्रात्यविद्र'वृद्र'विद्र'गुरुप्यर्यम् विद्युत्र व्यात्र वृद्यः विद्यु গ্রী | ব্রমন্ত মর ক্রির ক্রমেনের সুমা | ব্রির মেনের ব্রমের ইরা श्चरायमा । तहेना हेन बेना श्चराहानी सा । शुराबेन नाहन स ठव्यिं वें ठग | इंव् कट् दिन्दा चेंग् वेट् ग्री | व्य देग् व्युव नतेरम् बुर्'र्र्'। शिर्'पते'वेर'यसंस्या हुरान्या ।र्र संबोक्के ते वनसंग्रहा | ५ खुन विवार्ष्ट् ने के सम्बाहा | ति छे । मन्यायमिन हे सन्याने विस्तर विन्धे श्रुवार या बुंबा वा रहिला । बेर्। । तसुर पति खुरा की अर्र स्वार इंग किया । वर हिंग मी र्मर में त्र गृग्धर हिन् । दिन्द स्पर र् दिन्द्वर । इस ह्यत्र्र्त्रियात्र्यत्र्द्र्य । प्रहे वित्र्यं है प्रवेद्र्यत्र्र्या । व्यामन्यत्राचित्रम्याच्याक्ष्याः । निःह्रवाद्यान्यत्राच्या रे। । तम्मान्य कुर् र्राप्य प्रमान विषय । का ये र स्थार र खुस बेन्'तिन्। । रन'न्यन'बेन्'परकें 'गुरुषातर्वेता । तिरिन्य' इ क्रवाहिर ज्ञाया । श्रेम स्पष्ट श्रीर तपुर श्रेष्ट्रा । निल्ला पहिना च क्रवरावर्श्वर्पाय। [स्वाकराव्येरायाश्चरवार्यः | १८१२सा ब्रे'न् र्वेद्'व्रेन्'ग्रे'बहुरा । व्रन्'क्वा'रोबर्क्षाग्री'ग्रेन्दरायकरा'द्रवा । त्रहेग्रावेन'क्षु'चते'तुन'र्यम्'न्न'। ।त्नेन'र्यंत्र'म्यं'न्येत्र'र्येते' ब्रैन्। । त्यसंग्रीकुंश्रेद्रदळें नःसस्। । ब्रेन्द्रेन्यस्यन्ने नस्यसुनसः व्याग्रन्। म व्यवस्ववाराव्यस्ति हिन्द्रीनः। व्रिक्षेत्रावास्वाकेवा

सम्बद्धाः । तथार्रमः स्वापाः स्वापाः । निराप्तर्वेशम्ब ন্মাৰ্কিব্'ৰ্মাৰ্য্টিমা |উন্মুখ্য মুৰ্মান্দ্ৰিব্'ন্মান্ত্ৰ নের্বিশননি শিশ্বনা প্রসাদান বা व्याह्य । ह्वीन गर्भेष रा ग्रुव पा के रा मव्या किरा न्ठव्यावव्यादुन्याय। ।अर्वेन्ययादिन्याञ्चयायळेप्यायह्न। । सम्भूत्राञ्चन्। तृत्वेववायाः द्वाता । वित्रान्याः ने स्वात्ताः । कः खेळाळे न राष्ट्रेय राष्ट्रेय गाँधी । ज्ञानः के रान् गारा हेया होना । वि तस्र तहरवेग ग्रुअयानमुरका कृष्ववा । देन स्वाकन कर् बेर-विंद्रपरी-र्नेर-तु-पश्चर। ीनुस-र-रेस-सु-पस-प्रवास-है। । **मॅ**लप्पाश्चर्यायुम्'के'र्स्चनस्यति। । १५५८'म् वेन'छिन्'ग्रीयस्**'**स्न्यस्य | तहेन्यापरेभयातस्य वर्षानरे हैर। । तके वर्षन् গ্রীকা न्यवार्ट्टराग्रीसु। व्हिंबासुः सिंड्वेदाग्रीः मद्ववादम् वु। विसर्दे र्वापते हु अवता वित्वासु में हु न् कु वित्वार्या है। न्दर्गन् केरे रूर् प्राप्त विद्या । श्रुवा के स्थित के निवस्त निवस्त तस्र-देग्बहुअपम्बर्धानदेश्य-र्ताव। । परक्र-प्रतृद्धवार्ष्यानदे वा वितहेन्यमञ्जयन्तम्यानदेशय। वित्वेर्म्याप

न्द्रकृष्टिया । द्रन्द्रन्यद्रयद्यदेव्ह्रात्वर्यदेव । स्ट्र् IRT बर्ग्द्रायास्त्रवा अस्ति। भिर्मायास्याकीयस्यास्त्रवाही । यायहर्ष्यान् क्षृत्पर्वि । विराम रति गृत्याशु वृत्यव्य हिरा। बर्भव्यवेन् हे क्षाव्यत्नेव्याद्यवा । तुत्राम्बद्धाव्यवेव स्तरे हेन् [त्र्रातुःभुःपवित्रदेवःयुरःवु। | वेद्रान्द्रायायाम् प्रान्ति RI न्ह्रमःन्गर्छे अपॅन्मःग्नेयर्छेपङ्गरेष्ठः देव र्षे छे सुर्खे न्या कुन् वर्गन्या विग्यकृत'र्'तरात'र्'भुर'राता हिपर्वव'ग्रीस'ग्रारसमा मदीव मन्दर्भाष्ट्रिन माने देश नु सं सागुराहे दीन हे सादने ता वद न्दर र'रर'गे' शुन्य राष्ट्र चैत्र क्राये चेत्र प्राये विषय 5'9'31 ট্রিঅ'ব্রেন্'র্নঝর'রিণ'বার্রন্থেমম। বিন্তবারীর'ন্'ঐ'র্ন'র্ম'র্ন ल नश्रु हुग रु केंग रा दे रें हुन नम् मानि केंग हित स्वाहित सह लाला महेब्'व्यामित्'ठग्'श्र्'त'हें'मर्ख्व'ह्मार्य्येत्र'क्ष्य'म्बुर्'देग्'क्षेत्र' बतिः खुण्यां सुप्त्यम् यम् स्विम् द्वेष्ट्रम् स्वयम् सम् देश पर<sup>्</sup>र्गदर्क्षित्यरःक्वेंत्रभुःग्रुअर्देक्वेर्क्षेग्रवरायसर्गर्ग्यानरेः" केन् क्रेनिन: नु'न में न्'ख गरा तर्ने इसराय गुरानु पाने सारा।

स्यक्षेत्रसंक्ष्येत्वेत्रसंक्ष्येत्वेत्रस्य । प्रमृत्कृत्यसंक्ष्येत् । क्ष्येत्रस्यः क्ष्यंत्रस्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्षः व

विद्रा | वळ्वाखुब्बॅरान्द्रश्चाचानहेबायानी ।हेवू रूपाना केव्'स'याव्यव्यव्य | नि'नेन्'स्रवाक्तियांक्रियांक्रियां । मान्यातः याञ्चरप्रतेष्ह्रवयातुषाठवा द्विः स्ववायात्रार्थात् वेता । वाह्यवा ल्रा श्राम्य व स्वाप मु स्वाप मु स्वाप मिल्या स्वाप भूगाञ्चरापकृत्पतिक्षेत्रवायाय। विःइवराक्षेत्रुरायेटराक्षेत्रप्तिवा । मतुन्देष्यान्दः इत्यान्ति श्रीत् । त्यास्य देने स्वत्यान बेर्'डेर'। |नेशचुरी'यद्यर'य'कॅर्'तुराबेर्। ।कुर्'बे्'वाह्येन क्वांत्रिंदर्स्याप्य । सुञ्जावादाश्चित्रांत्र्राह्मात्राह्मा । वित्राह्मा गुन्ते संवानग्री सही | देसमा श्रम् सामित नातः प्रविदाहेस श्राच वदा | नर्ज्ञेयराप्तरा - । वयरादुर चर् कुर्प क्रेश्य **पॅर्। ।** वेयरा स्वावे महिन्दिमा स्वाप्ता । श्री रादे स्वाप्ता ह्या रेवरा ठवा मा वितरम्दिक्षाहुग्वेशगुर्त्त्वमा विमान्दिर्या मुखुकाक्कीत्रहुद्दित्रहुन्। निव्याम्बर्यामुख्याद्वित्रत्रस्यद्धाः प्रविध्या | तिस्तित्रहत्त्रवेष्ण्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः । सित्रान्त्रतः बर्गेंद्रां से बे बहु हा या विस्तान के बार्म के बार के बार्म के बा न्सन्नेन्न्स्व ग्रुअन्न अत्र्वाष्य । क्रुब्र बेन् तिहे ग्रायक्ष ळें न पाइयय। अयम् न तिम्यान स्थान स्

न्दर्भेष्ट्रेष्ट्रं वृष्णुय। विरुवेर् हर्षायाययद् न्युष्या । त्र् बैद'ब्रुंस'यदे'गृहुण्यत्येद्र'देर'। । यञ्ज नदे'ळेग्'वैद्ययेद्र'यञ्जर षत्रक्ष्य । इस् बुन् बुन् बुन् स्ति । व्या । व्या । व्या । व्या । व्या । वृत्रवाशुर्केन्। निव्यायवाशिह्यात्वन्वाहे। श्रिन्यन्तिन मतिः मर्रे व्यन्तरः तहुण । न्यर् व्यन्तिः स्वायः स्वर् न्याः रेशः हॉर्यर तर्यापर में द्वा | प्रवास प्रवास में में निविद्यानान्त्रायात्रेन्यागुनात्रस्य । इत्याने देतित्राम्देत्। । रेग्'रा'रोबराग्री'स्त'ड्डर'हैर। ।तस्य'राह्नेर्'र्स्ग्रा'व्हेरास तर्रा कुर्त्रहम् । तर्त्रहिन्ययाकीयर्द्धः । मह्मायाये नेस देश्य वहर हिन। । इन् प्रकृत प्रीप्य न सर्गा प्रक्षेत्र यह तस्य। । क्के'Aअ'मु हेन्'ग्रे'नर'र्ने'द्र। | यम्'ङ्गब्यंAअ'नु'पञ्चरप्रदे'हेन। | हर्न्न्ययाञ्च स्याञ्चर्या । वः अञ्चर्पा । भु'न् शुक्ष'वर्दन्'तु'कुर'द्वाकुर'। विर विकाम शुक्ष'तु'त्वूर'कुर' र्दें । अँब तथा न पा राज्य व वया श्रु र वया । श्रु त न या वे या थे श्रु तै हेद'रहोत'ग्रेय। |५०'रहें र'रहें य'पत्रेश्य में प'रें र'। । इ' बदै:सबद्वं:बद्वंच्युः। |सब्द्यंक्रेंद्वंवद्यंवदः। रेट्संरक्षेष्ठं वृष्ट्रेन्दु। व्रावास्त्र व्याप्ताने स्वया वि हिन्पायस्य संबद्धाः निवास्य स्था । हे निका सुबारस्य निवास्य स्थान

प्रस्तात्वयात्वरात्वर्गात्वर्यत्वर्गात्वर्गात्वर्वर्यत्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर

पर्वत्त्वतिश्वतान् । श्रि पक्षेत्रश्रद्धश्वत्व व्यक्ष्वतान् । श्रि पक्षेत्रश्वत्व व्यक्ष्वतान् । श्रि पक्षेत्रश्वत्व व्यक्ष्वतान् । श्रि पक्षेत्रश्वत्व व्यक्ष्वतान् । श्रि प्रवाद व्यक्षित्व । श्रि प्रवाद । श्रि प्रवाद व्यक्षित्व । श्रि प्रवाद व्यक्षित्व । श्रि प्रवाद । श्रि प्याद । श्रि प्रवाद । श्र

ल्यास्त्रादे स्वार् भेतास्य । व्याप्ता । व्याप्ता म्याप्ता म्यापता विमा | निये चुन्य कं व गुर्वे श्रुवा य विश्वेत । । जुला श्रुवा ग्रुवा विवा बु छेन् प्रायक्ष्रिया । अ. यहार व्याप्त प्रायक्षिता । ण्युर-ञ्च-त्युर-राञ्च-रापेद्रे चित्रेश्च । ञ्च-र--ञ्च--ञ्च-राञ्च-राग्चेत्राश्चेत्रा मन्किन्त्रेर्नेत्रेत्र्भ क्रिंग्या । मतुन्न्र छक्षेत्र अभिग्य सन्दिर् म्नस'स्व'ग्रुर'राशेस'अर्द्र'य। ।ग्रुर'र्न्स हॅग्य'यहरम्ब मसन्द्रि । विवास के छेन 'श्रेन में हे भून। । वेस हिते सबन विगागिदापाया । सि.च.गीदाझेटयाययायापारापया । विद ह्मारीयसामुद्रिन् चेरमीया । मनुत्र पुत्र खुद्रापारीय यहन्या । ह्यायात सुरा विद्या त्या से स्वार स् हुन्या । भूळेन्यन् न्र्यामुन्यत् हुन्यते हुन्। भिन्यते व्यं न्यतः क्षित् हिंद्। । कुताय ळव रहे सें श्रेषा रहें पार्व । हिंद् 'राव 'ग्द्व' स प्रविषयं द्रवाणुर्यं । प्रविधार्यं प्रविधार्यं द्रवा । प्रविधार्यं बेर्'पर'वेब'बळब्'र्। । धुग्'गुरा'वळॅर्'केर'ग्रांय'य वृप्'। केंतर्न्द्राम्ब्रंद्रायां वर्ष्या ।तर्द्र्याये द्वात्रवायां वर्ष्यायां वर्ष्यायां वर्ष्यायां वर्षायां वर्यायां वर्षायां वर्यायां वर्षायां वर्षायां वर्षायां वर्षायां वर्यां वर्यां वर्यां वर्यां वर्यां वर्यां वर् य। १८नर ने ज्ञल र्रा क्षेत्र भी हिर्देन र्रा के लाखना तकता न हैं । हिं की स्वाय हे बेद रहें वय यय। विदाह्म का ये जे सम्मान है औ। करत्यरादेंबदे कुन्देश । अत्यव्नाद्यत्यत्विषात्रह्यः केदाया । क्के म्बर्यादि के द्वार्या विद्वार्था विद्वार्था मान्या मा हॅग्यापते श्रुप्ता त्युप्त त्युप्त विष्या । यह म्युवा हे से देव पते ।

या भिन्दाल, नेबाप होदालया हो। जिप स्था अहिंग सिंद श्री या हिन्या । तर्में गुन् रच कु है अधेर या । रेर में र के मिन्य मञ्जुन्धरः र्नेष | नेशार्विमाकी परानुष्या। विष्ठापम्प्रीन्धा ৸য়য়ৢ৾ড়ৢৼ৻ ৸য়ঀ৾৾য়ঽয়৻ঀয়য়ৣ৽৸ৼ৾৻৸৻য়৸ ৸য়ঀ৾৻য়ৼ৾৻ঢ়ৼ दिंदाकेरानक्किन्द्रा | न्वादानंद्रवानदित्यो नेवाक्चिता मने कूँम हिमार है वास नव का किया। | नित्तु असे में बास हिना मिसे हैर। |ऍटल'शुश्चररापदे'नेश'रत'य। |वि'वस्य पीर्टि'पर' तळतालग्राप्या । न् ग्रेसामविनाष्ट्रन् ग्रेसामवनापरावाहन्। । हॅं नवायम्ब केंग नेबाय हथा । प्रायमित विवास्य मुहार स न्यां वर्ष्य वर्ष है। वर्षे राम क्षारित कार्य के राम विष्य विष् क्रवरातेव'पङ्ग परःवु। । ग्विव'यर हिंद छै वसु धैवा छुर। । ह्मार्यम्यम्यात्रुयुर्यम्य। व्रिक्षेत्रम्म्न्ययापरिम्बर् मला वित् न्त्नित्रं केंद्रा खुराव्या विवाप दे तत्र सातुः बद्यरहुर है। विंदर्दे देश्यर प्रांचिंत्राया किया पर प्रांचिंत्र मुळेणया। हिपर्वविद्यान्तर्भण। देवायहण न्नोपितः क्रॅब्रांभयान्नायक्षापतिः श्रु ने द्वाका हे पर्द्वाकी श्रुवान् खुलायाः मन। यन् हे पर्वन् गुरायग्राक्षाय। प्रविध्यत्रम् स्वय न्दिन्शुक्ष नुविद्वित्रयापान् नु क्षेत्र होन् क्षेत्र मन् कन् केन तथा होन्या

<u>षाह्यअवस्थान् देर'यम् र पत्रा</u> क्षारायः तृतः तृः शुरुः यः तृतः देरः देः बर्जुद'र्स'ग्रुअपॅर'दे। ग्नब्बल्ग्'गुर्ल्स्राव्यवाशुप्पर'ज्ञर्स धति'ग्र-'त्रण'्र-'। ग्रवश्रारण'्रेन्'त्र'व्यवाह्य'अ'त्र्रत्रापते'ग्र-न्द्रवारन् गुर्वे द्राता तुव्रवा शुष्पर्वा ह्रारवारी न्र **ヨ町「万下」** मग्नां वृ'यानेवि'श्चेन्यतेषयान्ना तमेग्राप्तेपस्निन्ना नत्र क्षेत्रुर अर्थे वृद्धा प्रदेश विष्य प्राप्त विष्य प्रदेश ব শ্বী অহা ঘাই ग्र्न 'ग्रीश'र्म् सामर्थित ही राम् । ही सामि ही में मानामा निमान हिन्स पाराचार्तरावस्थाये तस्राचे द्वारा सुर्विष्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स् ने। क्यें नहुन् क्षेत्र विन्दे विन्ति विनति विन्ति विनति विन्ति विनति विन्ति विन्ति विन्ति विन्ति विन्ति विन्ति विन्ति विन्ति विन्ति ताः स्टर्म्य कृत्राम् ते भाराचार्यः य उत्ताम ते त्या तस्ताने में गृह्या पारी प्राप्ता त मस्यावित्तान्यक्र्यं न्यातित् क्रियां मध्येत्राच्या स्वार्थित्य निष्ठिन् त्याक्षेत्र कुर्रानदे न्त्र प्यान्तः। व्याक्षंत्राक्ष्यं यदि नेश्वर्यान्तः। क्षेर् के बूंग्य दे प्र इंद र त्र शुक्र की के प्र दे वा विश्व के दिन के विश्व के विश तुराळित्रत्र्ञ्चरहेष्ट्रिये छैर्याचेश्वर्ष्यर प्रायः छ। र नेराश्चरं ग्रह्मायहारायहेर् त्युर्ने कें यह क्ष्ययायम् विव्'र्'पङ्ग्य्वाययातके प्रति श्रेर्प्यायात्यु पः" न्द्रान्त्रित्रित्र्द्राष्ट्रिव्दात्र्युत्र्वर्षेषु वृव स्यामितिकहराम् वचत्र्ग्या स्यामराष्ट्रियाम 三型(四) ब्रायापतः श्रेवं 'येन्'पाता है 'श्रेन् प्राप्ता है 'श्रेन् श्रेवं का श्रेन् येन्या स्थान । 'व ठन् छे प्रस्ति प्रस्ति केंद्र प्राकेत् की ग्रेश्व व्याय व्याय केंवापा है के प्रात्ति व

देरातहरामकादेगातहे पार्दि पार्वि पार्वि हार्वि कार्या है। ने धिव पा वाधिवायरम्भेवान्म्या नेम्भेवायराचेन्याया **万場所**刻 न्यम्बर्स्स्यून्यदेश्वव्यक्षव्यव्यक्ष्यतेः न्द्रं व वीप्पः बळॅंद होर' त्रसं क्रे देन 'ग्रायाञ्चन त्र हिन । त्र हीन 'द्रा प्रस्त हेन त्र हिन । **এ**ই-ফ্রিন প্রবাধ কর্মের ফ্রিন প্রবাধ কর্মের প্রবাধ মুদ্ৰেব र्दि-'क्रिपर-र्ने'द्र। ५ पर र्पेगुव 'हर्न' द्वेष राये वेन 'हेन' सबके हु सहस र्दि-, न्दः स्व पदि: खुरु: विवादिन । विवादि । वि पति भु भिन है। हु ए तह ग सि दे हु ए या हु या सु त र प ते द र व र र प प प हन्यास्य स्थान्य स्थान ने निष्याय र छेन् पायान् भुग्वक्केन् पाये ने समा स्रीते क्षु सा <u> নুমা</u> न्दैग्राप्पायलाप्प्राप् Aয়য়ৢঀৢৢ৻য়ৢ৻য়৻য়৻য়ঀৢ৻য়৻৸য়ড়ৣ৾৽য়ৢৼ৻ঀৢয়৸ৼৼ৻ঀঢ়ৼ৻য়ঀ৻ঢ়ৼ৻য়য়ৣঀ৻ঢ়৻য়৽৽ त्स्र दे न यह ल की है। ग्रस्ति है साम दे तुरा दे र व से हुँ र पा हो र पा &ज़ॺॱৼ॒ॸॱऄॗॖॱॸॺॱख़॒ॸॱॻॖऀॱज़ॸॺॺॱॸज़ॱॸॖढ़ॱय़ढ़ऀॱज़ढ़ॸॱॻॖऀ*ॺ*ॱॸॸॱढ़ऀॸॱॻॸ॓ॱ **इ**ंद्राचे देवशाच्या प्रतास के वे त्राप्त के वे सूर पं के तकर विरा नुया छेत्र क्त्राम्य या व्या के ता द्वा स्टेग या द्वा ता ने जैव पारा यो विषय सम्मेश ने वा न धरिश्च भेव है। पर्छेर्प्यात् सुर्म्तायायम् हुसर्से द्वा की के ने स्क्री नाप्रिया हिम् **८४८४४७७७० म् अप्याने हे व उद्यान् यन गृह्य या में गृह्य या दि में व उहार हुए इ**ंद्र प्रशास्त्र द्वा के प्रशास कर्

RANGA'', प्रायायदेव 'द्र' त्युर' सुप्राया ग्री'द्रस' द्राय कंगर दे द्रर'' मेशपरमधीर्वस्य हे के ज्या अराप दे त्या क की यह न हिन प बेन्'न्। । इतार्वे रायान्ते न्वान्यायी नवेन् स्वाया क्षेत्र हे वाकी ग्नेरः तस्ताव्यवाश्वाह्यरः ज्ञुः तर्ने तव्यवेरः यव। विदः प्रज्ञरः व्यक्तिः য়ৢ৵৻য়ৢৼ৻ৼ৾৽ড়ৼ৽ঀ৾৾য়৻য়ৼয়ৢয়৻য়৻ড়য়য়৻য়ৢ৻য়ৼয়৻ঀ৾য়৻য়য়ৢঢ়য়য়৻৸য়৻৻ वैग्'क्रुरअ'ने'ॡते'व्रत्वयम् <del>४</del>कॅ'नग्र'वेशकें'नेन अन्नवसम्बन्धः कें''' र्ने व · क्रीनें ब्रें न ' त्य ने व · तुः ब्रें क्ष ने न ' न न ' य न कु न य' ने का *ষ্ট্রার্ম বার্মাই* মর্ভ্র 'ম'নুম' মন্ট্রম' মন্ত্রম' মন্ত্রম' মন্ত্রমার মার্মার মার্ম विं वें ही नवेव 'र्'तहर वेर भग्नी हुन ही नहीर पर तह यानवा वर रुष्ट्रवारायाचार वारा तळता लेखाल चावव प्रवर्ष प्रवासाय वा स्वर्ष भूरपायवाम्यर्जारम् अर्वेतरर्भात्रा 
 其一章:不利口(ある)打(おある)口管了(口不)可以口径了口(口)不)
 त्र। तहेगाहेत वेगा हुर क्रिंट में अष्यित्रत्य क्रिंट क्रिंग न्तर क्रिंप रूर् য়৾৾৾ঽয়ৼ৾৽৸য়৾৽<del>ঀৼ৾৽</del>ঢ়ঽয়ৼ৾৾৻ৼঢ়ৼ৾৽ৼ৾য়ৢৼয়ৢৼয়ৢৼয়ঀৼয়৾ঀৢৼড়ৢ৾৽<mark>ঀ</mark>৾য়ৼ৾ৠৢ৾৽৽ ह्येर य वेशस्य থপ্ৰ ই

हेर्च र-तु-देव केव प्याप्त देव रवव | प्रदेश गुप्प पहेश परि रखपा प्राप्त | विदेश हेव विश्व के स्वाप्त विदेश हैं विदेश हैं विश्व के स्वाप्त विदेश हैं विदेश हैं विदेश हैं विदेश हैं विदे

कृद्रम्याश्चरत्रम्य। विक्रियान्त्रम्यान्त्रम्या वृद्यका कुन् मृत्या स्वाप्त । विशेषा निर्मा स्वाप्त विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विश्व विष्य वि न्न्न केन् नहेन् स्वातहेन्व स्वान्त्। विदेत्रा नृत्त कुन् तहेन याद्वया | विविविद्यां प्रमुद्धिर | व्यविदेश हिन्दिर प्रमुद्धिर । भिनेर हैका । सद महास नर र जिल्ला । प्रेशन देवा ग्वरायास्यायाया । वाष्ट्रवर्षे में स्राप्ताय विश्वरा । गृहा खुअन्याम् इन् न्याया चीया । श्रिन् व्याय चुन्या । न्यरमिन् व्यवा सन् स्याप्त । निये सिन् सं नियं निष्यं निष्यं ग्रुन्। [ज्ञां स्थेयानात ज्ञासन न | ग्राने नगर सव ८८ १ वर्षा वरा वर्षा श्रुषाञ्च तर् तु। विदादा हूर्ण या पद्गिय त्रा श्रुषा विदादा हूर्ण या विदादा हूर्ण या विदादा हूर्ण या विदादा हूर्ण या हर्-दिश्यरस्य । शुःश्वाभेन्ववश्चानिस्यम । दिस्रहर् न्यताश्चीत्वायात्न्यशास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र र्में गुडेब् मॅरे ब्रायम् द्वा । गु दु में है 'द्व 'हं 'न्न'। । यन् ग बेन ইন্'ক্টাম্মন্তেৰ্'ক্ট্ৰা |শৃত্ত্ব-স্থান'ই'লিন'বৰ'দূৰ'ক্ট্ৰা द्रै'केर'लुबार्ग'वर्गुबादबागुर्" । कॅबादर्ने'वरार्ने'दर्ग क्रेंगाय। । वगुर्द्धगरेरक्षे भेरपंत्री | द्वार्ष्ट्रप्ति । द्वार्ष्ट्रप्ति । विश्वेषां वर्षत् 'व्यवानात्रं वात्रं निया । वर्षे 'गुव' पर्रात्रं राष्ट्रे वा युरा देग । हेवववायां बेन् पाने इत्यात हुँ राया हेव् ग्रां रहा की वाया निरामित न्ना अर्कत् स्व की खुन कु सम्म निकार्क नेन्य हात स्ति हुन

सर्-तु'न्वर्-त। तस्-ज्ञेंत्राच्य्र्न्-ते। शक्य'व्यक्ष्य्र्म्-त्र्र्म् ताक्ष्य'ग्रेश्चियायग्रायम् प्रस्त्यं न्-त्र्म् शक्य'व्यक्ष्यं प्रस्य स्याप्त्रेश्चियायग्रायम् प्रस्ति स्थाप्त्रे

हेश्वर्धत् : स्व : श्वरं : श्

ष व इव खु खु दु न न न । ज्ञुन पा के न से न सु न मे न न तहेग् हेद् कॅश्चकु पायायरार्द्र। श्चित्पतित्र्व् दातित्वसा इता । म्यद्भरकेर्द्रस्यत्र्द्वराया । प्रत्याख्याख्यं तरी । इ'त्रह्मालुकाग्रीकातरीराञ्चनाकाही । क्षेत्राचारी क्षेनारा तहस्यित्रेर्म । केयनेर्द्रस्यवित्रम्र्र्भंत्रम् । । प्रमुख्य त्र ठन देशें उन् । श्रू देशें उन् द द स्य य पति । । पद् प उग र्रः पश्चित्रः प्राचित्रं प्राचित्रः । | त्रीयापते श्चित्रः पाया वित्रः स्वा यग्रात्कुर् श्रेन्त्र व सेर्पात्वा । स्रिन्स श्रुप्त व र श्रे व श्री । सुक्षं न् गुन् देशन् शुन्यायस्त्। । पश्चेत् प्रगुन्द इवशः ग्रीवनः दशः गुन्। । खुन्। कुंपा वर्ष द के देंन हुन्। । ने खेर पन्न का कन तिर बहरारी | ५'बहुद'पर'वार्च ५'डेग'इतात्र र्रंगा | १ वरेन सुति शुकारामा ने वर् रका ठवा | वेकाने अप प्रमुखाय असामा परा हे'यर्जुद'ग्रीसायद'ग्राप्रम्या

पुणिया जिस्कार्श्वेत् इस्सम्यास्य विश्वेत् स्त्रुप्ता । विस्तर्भाव्य । विस्तर्य । विस्तर्

घति'त्रमुख्युष्टित्। तिर्वित्त्रम्यम्त्यम् वर्षे 'द्व दादे। विह्न न न न पं पेता | ने प्यत क न के त त ते त्या क न स्वीत क्षा | न न के त ग्रन्। विष्यं स्वाधन म्हार स्वराय रही विन्यर सरवय पति'त्रमुत्राचाभित्। |५'छ्रम्'क्क् पति'त्रायह्रद् के५'त्रहेत। ।५५' कव'व्यन्त्रव'य्व'यने'याज्ञवा । तुन्'कव'व्यवान्गरपने'याञ्चन। । **র্ট্বানা । বিশ্বান স্থির : নুনান নি । ব্রাব্যান বিশ্বা** क्टें रेट वा विवार पाय राप रेप इंग्रा विवार प्रेश बर्द्धत्राच्यत्। । वनशक्तीर्वे रातुर्द्धः वृद्धत्राच्या । वनः क्रीकामा हैका गदिः वेग भि पर्य्य। विषयान् । वेश निर्मान्य वा विषया । विष् तह्रग'मने'मदेखर्केन्'मध्येत्। |न्गतममवे'न्न'भ्रन'केग'मवे। | भ्रु प्रिन्दिन के प्राप्त विकास मान्य मान् श्चित्राचाला वा क्रिक्त स्वामित्रा । विक्रियाचा त्राप्त त्राप्त विकाय क्रियाची व **র্ন্ত্রির্বাশ্র ক্রান্ত্র্বাশ্র ক্রান্তর্বার্ক্তা** বিশ্ব ইণ্ড দেব দেব কান দি मया । मि दे रं यन्यान दे पा भेदा । भवा दे द्याप श्रे हे न व छेता। क्वीने मने केंद्र वर्ष्यका क्वें महिता । अग के ने प्राप्त वर्षा ।

য়ৣ৽ঽ৽৻ঢ়ৼ৻৻৴য়৽ঀ৾৾৽য়৻য়৽৻ঽ৾ঢ়য়৻৸৸য়৽ঽ৽ঀৼ৽ৼৼ৽ঀৼ৾৾ঀৢ৾৾ঀৼ৻৸৸ न्धिः ज्ञान्यादिकी अवाद्येत्। । खना दीयति स्टिन्दे स्टिन्दे स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स श्चित्रिक्षेत्रत्व मुम्मिन्द्रा ।क्रुंबबातहण्यमुन्यमुन्यमेन्द्रित्या । चग्'सेन्'चन्'नस्मन्'नदेशस्य। ।ग्रास्मून्'न्द्रस्युन'त्रुन्'नदे |के.ह्रंग|ब्रॅंबाचलाळ्यासुदेला | प्राने केन्प्रांतरार्बुर ह्याया म्याया विराया निर्देश हिताया निर्देश न्यताक्षेक्ष्मा चुन्तिह्यालय। ।यशुन्याचेन्यं करनेत्याचा ने हिर्ज्य व्यवस्था हिन् गुर्ने व्यवस्था हिन् गुर्ने व्यवस्था हिन् । विवादित्वगुर्ने अन्यविवादय। ने हिद्याहन तमा की हा वर्षन्। चन्नतः चतु न्युः द्रं अ चति ह्वी व चन्या अं चुला क्रिं ग शुअ ही व कर् वित्रान्यानम् नित्रायने सारान्य स्त्रान् । श्रीत्रान्या भी राज्ये नित्रा य'न्र'। य'छै'ग्रच्युर्थेत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यं य'न्र्र'। वेर्र्यःत्र्य् ने अद्भव सं न्दा प्रतासं त्र सामित्र के अद्भव सामित्र मित्र से मित रूतिःन्वित्त्वाक्षंत्रः यूर्वेदाहेत्वर्तः श्रीत्रवाश्चिष्ववाक्षंत्रः । वृत्यरः तुःतस्यवरायायाः विकाले नेत्याया । विवाधिवः क्रीतुः विवाधिवः क्रीतुः विवाधिवः त्युग्रात्र्व्यापति क्रेयात् व्यापा कव प्रात्यापत् प्राप्ते में हे प्रा ক্টিনেন্ন্'র্ম'ন্ম্'প্রাঞ্জ'ইন'ঝ'শ্রীজান্ত্রামর'মগ্রন্'মন্'নন্'" कूर्यं ने बाबे व की बेर्प्या ने बाबे व किया है या ने बाबे व किया है या किया ह स्यान्यान्यान् ग्रेयान् व नावत् नायापा मु क के नेत्या प

## नस्यादें हें नन्न हैं न ने जिन

द कें गु द। हे पर्दु द की या रकारा दे के द हो द हिरा बदि या से द रेन्'य'तृष्'ठव्'क्रीक्षेन्द्राच्ह्रष्यायदिश्चे। सुर्श्चराद्राद्रायादाया वित् पहराद्या द्वार्पाय्या प्रमा श्रीर गुर्या द्वारा सन् र्दे हुन । विन्ध्य दुन स्वाधिन धिन धिन विन्धान न पर्देन कना "" विवायत्वायानेवा हेवयायान्ययान्यवान्यस्य न्नायाविष्ह्री विन्वित्यदेश्वर्ष्ट्रायदेश्वर्ष्ट्रण्यायानुवित्रते। हे'न ईत् सन्य। नन्य'त्रिंग्निते हेश्च हे या या न्य स्तर ম'ম্যুষ্থ্যাব্ र्द्र त्रेन् र्संस्ट्र स्ट्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्ट्र ग्रस्यका . हेन्दर्व क्रीसुग् हैर्रस्य म्हान्स्व कर्ने व सर्व र नुप् पेस बेन्'नर्ज्ञेंबर्यायस्यतिन्'नर्यात्। स्वाधानुन्'र्यान्नाहेम्वर्ड्व्'ग्रेसुनी ऍद्राप्तद्रशायक्षाद्रायहिन्।हेद्रायदेन्नोत्रेन्यायाद्वरात्रान्नेवः।" बेर्'रु'ग्राया दरेंद्रं व्योक्तं विषायुर्'ग्राया विषा विश्रासमा हे पर्वन्ती स्थान रहि गहारकारी। रतिः जुन् राई हेपल माले क्षेत्रित्। । यन वेशहे केपे माना

भिन्। । बेरायं नु र प्राच्छेन भिन्। । य नन्य यर ए संर् धिन्। ८:४८:४:४:४:४:४४। | ग्रस्थः८ग्'त्रप'कें कुद्रक्ष्याराधित्। ने'वे'भेव'रा'क्य'हुग'यग्या १७'वे'शेयदे'हुन'हुग'दळ८। ।हु' वैदः तहें बबार दिन् में बारावा । वि गवस ने रायदा हुवानु गन्ता । Ħ ॺॖॕॴॺॱढ़ॸऀॺॱॻॖॸॱॸॖॺॕॺॱॼॖॱख़ॸॱ। ।ॴज़ॺॱॸॺॱॺॸॱय़ॕॱ**ॠॱॸ**ॱळ॑। । खुरायान तुरार्थे तर्रा इस दुन नेर्रा हुन नुनिता विश्वरीत्रीत्राग्रम्प्रविश्वर्ष्णुः इतः। विषाः श्रीतीः ष्वत्राच्चमः मः श्रीत्रीत्।। हिरातहेव नराशुं वेबार्च व | निकर वे राप हुव पु निता विवायावरावसार्वेगार्च वा विवासस्याचे रापासुवानुता न्र्या तह्ना तर्शा ग्रम न्या श्रम । विष्ट्रम हिमान श्रम ना श्रम । क्षेर:दुब:क्रॅंब:पञ्चरपञ्चेर'र्च:द्रा ।तु:क्रॅर'ते रप:ह्रव:दु:ग्रह।। बह्रान्द्र् अर्ध्वर्षेत्र्याद्धरः। विश्वण्यर्त्वे श्रुरातकण्या [अव्राच्युर्ग्न्वरार्ग्न्यर्भेगरार्थःव] क्रियापन् धिव। बरायं हुन् पुरापात्र । श्रियापाने सारिया ग्रामा में श्री हुन् । देशगुर्~ जुलक्षे न'धेव। |ह्व'हुग' अव'र्ग में हेरे'श्च। |वेश पर-गुरुष्य में पर में रहा । विश्व ग्रुट्य प्रश्न यह में स्वत्व स्वया **र्**चियक्षेत्रक्षेत्रम्थ। यन्ग्'र्सम्बय्यन्भिग्'यदि'रोग्रयः ठव् द्वयस्यीः'र्न्व 51 पर्यवस्य केंस्य श्रम पुराप्ति । विस्य सम्या अप

## वगुरः ८५ वगुरकार्य।

श्रीनायकेनार्यन्यार्श्वना | जूर पति हैं न'रहें न्'है र'र्! | ५'नेश्रिक्षिक्षिक्ष्मित्र्वाचन्। श्रिक्षिक्षेत्र्वाचन्द्रंत्। श्रिः र्ह्म श्रुट्य अहा स्था है। । ३३ व 'प बुट् 'ग्रव्य शटग' हार ' है। वि'य'रशप'र्स्थ'रश्रद्ध। व्यप्तुर्त्ते । न् वै बे भरे ने दुग नम् । बे बेन् खुन हूँ न ह्न न ने । ह्यां अति ग्राम्या राष्ट्र मा स्थान घग'स्ग'क्रॅन'रा'क्रेन'राने। ।त्यन्याक्रंग्याक्रंब्र्यानिक्षुं सुक्रा मरी । तस्त्रात्रिरसुक्त्रिक्तिस्त्रक्तिक्तिक्तिक्तिक्ति ८८, दिया प्रति । विद्यान स्था स्था स्था श्री । । वस्त्यं रनः रोबया गृहेवाबेन् 'स्या रु.५५। विनयाहुनः चया वा वा वा त्तु। १८ वे अलि हें र हुन चन्। १८न अप प्र हिर हुन हुन परिहित्। | न्याप्यरवर्ष्ट्राख्राख्राचिता | न्याप्यर इति नेत्र सुग सुग स्पा । सग नगर ह रूप न्स् स्र हैं र्रः कॅबाहुग् पर्वेद्यापायत्रम् । मध्ययाययात्रयात्रे ह्युन् पायत्रम् । भ्र ग्रुवः क्ष्वं ग्रुवः तम् वार्वः वम् । । प्राप्तः वक्षुतः स्वारं मे विकास पञ्चन्। शियारश्चां ग्वश्यश्चन्। शिन् प्रिन् स्वश्चन्। पञ्चन्। शिन् प्रिन् स्वश्चन्। पञ्चन्। शिन् प्रिन् स्वश्चन्। शिन प्रिन् स्वश्चन्। शिन् स्वश्चन्यः स्वश्चन्। शिन् स्वश्चन्। शिन् स्वश्चन्। शिन् स्वश्चन्। शिन् स्वश्चन्। शिन् स्वश्चन्यः स्वश्चन्

## 事あば、命、イス・お月中、日の、別人!

व्यं गुं तु हो हे पर्डव्यं श्रे त्या रक्ष स्पारं ने के प्राप्त स्वर्ण परिष् स्वर्ण परिष् स्वर्ण परिष् स्वर्ण स्वर

दारेष्यायस्त्रेज्ञुः अर्वव्यस्याः हित्र्व्यस्य हित्र्युत्रः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप

हे न्न यरा है मुक्त परा शुप विषय । दि सह र राय रा हु स मह्य्यप्रन्त्। |मने्श्चेन्'दर्शेनदेर्मयानुप्त्र। |हेश्चमध्म बह्मक्षेत्रदारी । स्रवास्त्रवादिरेष्ट्रपदि ह्नावा । देन रैते'न्ब'रा'रारवाजुरा'न्र'। ।याहूँन्'गु'रुळेंबवाळेव'न्र'। । नयमं विष्यान्त्र में प्रत्या । क्यांनर इ.स. से इ.स. १ विष्या स यामरापाद्वया | तेवराह्यामेग्राउयामेग्राव्यामा रम् अर्थे हिंदा शुभारम् अर्थ । शिवस मम् ग्राम शेवस में शुक्ष गुम नेय। विषायक्षरहे तह्यागुन् गुराव्य। विप्ते ने केराहे ग्रह्मा । तस्याद्यं स्त्रां व्याप्ताद्यं स्तर् स्त्रां विवया हु - जुल हु । तार निर्मा १ केर दुराविदायन - निर्मा ग्वर इवर्या हुन्पर या बढेरापरा | | - वि बहरा नु वे र वे परा रु:छेन्'इयरायहत्र'रुक्ष'गुन्'र्यरय। ।ग्वन् सुँद्र्य्पन्'रायाधिन्' है। । ५ व र्रे न य प्राया ये में व प्रत्य । ५ प्रत्य थु । नु प्रत्य नु य व । पर ब्रॅंबा | में क्रेंबा वा ब्रेन् क्रें गरेन प्रेन्। । के बाग ब्रन्स परा क्वॅुं द'बेन्'द'ग्'वे'द्रवयां ग्रैक्'वे'त्र'न्क्षप्र'ठग्रा'क्य्य'व्याचे क्वं वे'त्रें द्रव्यात्र'' '''' तत्वाचेरभुरावानु वरातत्वापवा देवागुरातर्वेदायातवरायावा वुकारा देश्य व्यनु स्दर्भ मुह्म कार्या ।

हेशुन विन इससाय महास्याप दिन्तमा विस्तुन न्यापर

त्राक्ष्यः प्राप्ति व्याप्ति वयाप्ति व्याप्ति व

¥ं हे गुग्रायावे तर्भे न । व्यायाय हे न पार्भे न पार्थे का पार्थे का पार्थे का पार्थे का पार्थे का पार्थे का प गुद्धन्तव्य। हिन्दरम्बस्यस्य व्यवस्य स्वर्भा गुह्यत्य। तुःश्चॅन'इयशः ईद्यायानह्यत्याय। हेन्दर्वन्दर्भेद्र व्यं शित्र्रीं व्यव्याप्त्य ययापति से कें स्रायीम् मे नितिर्दरायात्रायां हिंदा हु"" हे'रार्ड्न'ग्रैराञ्च नेयाग्रे'यर् न'हेन'रु'ब्रुय'नग श्चेन'रु'क'न'ला ब्र्मरः अन्तः तस्य स्वारा प्रति व (नुः में व वा सुव) अन्। परः व वा वा स्तः तरा में वा प तुःश्चेतः इयसः ग्रीवरः दुः पुँवःय। इतः दे हैसः यहरः तसः र बर्ञर पर शुर हैर। तुः श्रुं प इवश हे रहें बा न प हे प ई न वया बादर दशर्हें व प्रवाद प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य व प्रत्य प्रत्य व प्रत् में है विभवन्यवाहे। में नृष्टी के मानवापाय वा स्थापवा ଶି' गुन्द'इज्ञ'र्ने' दे मर्वागुन्देशयान्यापाचन्द्रापरधिन्देवानिन्। ग्रेबा म् यास्यव्यान्यम् के व्यवस्य क्षेत्र के विष्यम् स्थित् विष्यम् स्थित् विष्यम् स्थित् वर्षेत्रांपति गृत्रुन् श्चन् वर्ष् प्राची इत्र में देशहे पर्वत्या **B**5' षडिग्'स्रर'पतुष्वायापर्राप्तासुष्वायाप्त्रीय्रापर'स्रित्वायाप्रेस्य संराक्षे **₹**पर्दुव्युक्तिस्वर्द्धाः स्वर् न्न'अङ्गुत्र'पति'भु'त्यन्वस्त्राचार देवस्य । प्रान्तरं च जुन विवा ह्यराग्रीदीयाग्रीसह्त्यरा । ज्ञानराइज रें हैसान्हें यर्ट्यरी । **८**२ैन्द्रेन्यञ्जलाङ्क्पलार्वेन्व्रियपाय। ।वेन्क्रीक्रायत्वेन्द्रवेत्र

प्रसार्या । व्रवसार्थे नियान्त्र स्थान्त्र स्

तम्म क्षेत्र म्हार प्रत्ति द्रा केर्य प्रति । व्याप्त स्ति । व्याप्त स्ति ।

महार्यायम् इत्याद्विकायम् । | वित्याद्विकायम् म्याद्विकायम् । | वित्याद्विकायम् । | वित्याद्विकायम्याद्विकायम् । | वित्याद्विकायम् । | वित्याद्विकायम् । | वित्याद्वि

ह्मात्रभुत्वात्रेत्रभुत् । सिन्ध्येत्रभुत्वात्रम् विद्वात्रभूत्वात्रम् विद्वात्रभूत्वात्रम् विद्वात्रभूत्वात्रम् विद्वात्रम् विद्वात्रम्यम् विद्वात्रम् विद्वात्यम् विद्वात्रम् विद्वात्रम् विद्वात्रम् विद्वात्रम् विद्वात्यम् विद्वात्रम् विद्वात्यम् विद्वात्यम् विद्वात्रम्यम् विद्वात्यम् विद्वात्यम्यम् विद्वात्यम्यम् विद्वात्यम्यम्यम्यम् विद्वात्यम्यम्व

## अन्'न्न'ने'हेन्'मह्रात्र्मान्न्त्र्मान्न्न्न

व्रवेंगु'द्र। हेपर्द्धव्येत्रायन्त्रायाने विन् ग्रीकानन सूनान्यन हु त्तुरामसन्वर्ष्ट्रन् नेताग्रीसर्वर्षे । ज्ञानर्श्वे इंगर् हेस्युन् सुलानशक्ष्वाम् वर्षक्षाव्य। म् वरावरानी ने प्नी महावाद्या **१**८-१गुन्देन्द्रित्रयस्य स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित **७वःश्चेन्द्रम्हण्यन्यात्रात्रात्रात्राम्हत्याद्रम्**र्ज्ञन्स्याःवान्याः । । नेति कें अर्वन ने न की यु जा विना पन पन ने ने हिन पा स्वरा है'चर्ड्द'य'द्य' द्य' ये झें दर्या सुद्देष वा क्रें संयोग यापव धेन चे र सुर तुरा इग्रां होत्रायर हुत्दी । त्राव्य विग्रां हे ग्राद्य रात्रा के स् चन्'रेग्'सुन्'रा'शय। ध्रा'शे'इयय'ग्रैय'र्म्'य'रा'श'राव'र्घनय'रा क्रॅब्राया इयवा वाने। देन् इयवा ग्रीवा केंद्रा येगा शिनेवा यय। नि'न्ने'न्स्रव्द्नेति'त्रस्तात्र'र्द्रेन्'र्स्न्कु'न्ने'सेन्। ティスト、まるかり ॅंदॅ र अत्यद्ववरादे <u>चि</u>त् छेत्यमें के कॅत्प्य दे के बाद अत्य न्या क्रें या या हे र छै। """ 

*स्*यां श्रेप्त न दः विषा वा दे। । वे श्रेष वा क्षा क्षा वा देव वा प्रवास क्षा क्षा वा विषा वा विषा वा विषा वा व तर्ने हे ते भुगरा प्रवाह पर्द्व त्या वु . स्त्री है . तर्ने र न में रापा तत्या परात गुलार्च न दें वापाद वर्षा यत न होना निमा धलान में वाद वर्षा नेति कें क्षेत्रायां दवरा की निगायां में तान के तित्र ८७४। न र हें ब'न्र'या में जेंबा वेबा छ। पाया रेंग्वा हे हें ब'पा सवका **८ गुअ' ५ ५'।** য়৾৻য়৽৴য়৽ৼ৽৻ঀৼৢয়ড়ৢঢ়৽য়৽ৠয়৽৻ঢ়ৼৼ৾ৼ৾য়ৢয়৽য়ৢ৽ঢ়য়ৢয়৽ৼ৽ ক্ৰী'শ্ৰ্ৰাঝা <u> ५८ मा ज्ञाप्यात भेजाय शे व्याप्य शे व्याप्य</u> र्हें स'र्येष 'सेव' दुर' से व'दुर' स' सेष स' सर र त दुष ने 'स' हुष 'सेंब' सुन्'ब्'रन्'रे'इबर्शन्संक्षंबिन्'खुल'प'इबर्शलप',हु'तर्शें'पश् **Š**5' कृष्यः अः । अत्र क्षेत्रः क्ष ইপ্ৰ'শ দুখ্য मिंतामान्यान्यान्याः हे त्यायेन्यान्याय्या 到初5六1 यक्कुंश्यः खुत्रः तेर्दंशः बुदः दुदः। वि:दुपः दृदः तह्नदः तह्ने वर्षः ग्रीता हुन'हुन'व्यारन'सुन्'यात्र्रीं'च'धेव'ग्रीयानेर গ্ৰৰ'নমুন'ৰ্ন্বৰা'ন্টৰ प्रविवायहरायवा क्षेत्रपात्रशुखानकाकुरायायकुरावता हेप्पर्व्वा **र्रायहत्यापाधिवानेरामुरापवा रह्याम्यार्याराम्याराम्याराम्यार्यारा** क्षेत्रकृत्व्वापय। ह्याः क्षुः <u>च</u>्चाः वरः पतिः वताः व्या ট্র্ব'শ্রীশ रीयरा कद'राखुरा म्पा धिन् प्राधुरा शुः क्षें 'द्रशम्ब प्राम हैं प्राधुरा । स **ব্**রেরিঝাশ দ্রাব্দাস্ত্রীদার্সার্কার্যান্তর্গালার ব্রাক্তর্পার্যার্যালার বিশ্বার্যালার गुैकानाश्चरकार्प्रन्।या। वर-रु-में रकानेना नाश्चरकारा क्षेत्र वर-रु-प्रेका।

इत्राह्म इत्राह्म व्यापक्षण्यात्र व्यापक्षण्यात्य व्यापक्षण्यात्य व्यापक्षण्यात्य व्यापक्षण्यात्य व्यापक्षण्यात्य व्यापक्षण्य

प्रश्चरात्म् विमान्त्रियाः । स्विन्त्राच्ये व्याप्ति विद्यात्म विद्या । स्विन्त्राच्ये व्याप्ति विद्या । स्विन्त्राच्ये विद्या । स्विन्त्राच्ये विद्या विद्या । स्विन्त्राच्ये विद्या व

स्वित्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्व्याः विश्वाव्यक्त्र्व्याः विश्वाव्यक्त्र्व्याः विश्वाव्यक्त्र्व्याः विश्वाव्यक्त्र्व्यव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्व्यव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्व्यव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्व्यव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्र्वे । विश्वाव्यक्त्रे । विश्वव्यक्त्रे । विश्वव्यक्त्यक्त्यक्त्रे । विश्वव्यक्त्यक्त्यक्त्रे । विश्वव्यक्त्यक्त्रे । व

यन्गामिकासम्ब्रन्दिनानि । विकासेन्दान्यकान्दा । विकासिन्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्दान्यकान्द्रान्यकान्त्रविकान्द्रान्यकान्द्रपत्रविकान्द

किर् हैं देर पहेरा वरा गवर दियह । विवरा रगर <u> न्यर गुवेश में वितायहतायश । विश्वरायने गुरुत वे हिंग सुद गुवा</u> । क्रें में कें क्रें क्रें क्रिन् प्राप्त प्राप्त क्रिन् क्रिन् क्रिन् क्रिन् क्रिन् क्रिन् क्रिन् क्रिन् क्रिन इन्द्रित्र । दिन्यवस्यस्य स्य इन्द्रिया श्चेन्'त्रम्'यदि'सुन्'र्वे वे । इन्'र्हेन्'म्डिम्'र्हुत्रस्य हेन्यने । **इॅर**'र'र्ने'स्थर'र्5'अ'अर्थ'ङ्गरा रे'र्न्वर। ।८ष्ठिर'प'र्र्नेडेर्र्यस्य ३र् वेवान्यस्य पर्वे द्रे त्री त्रु नवावा ロケイ・インジョ ऍग्रहुञ्चान्पविष्ठमञ्जून्ग्रिण्गेन्न्रायास्यस्त्रम्रात्राविन्म्यान्रहत्यः हुरा नुःद्धाराज्ञ्यानुःपावरातुनः तद्ध्या शेश्चनः पाने द्वाराज्ञनः गो प्या ह्रवाधिव है। रोबारायाधिव ह्वा हार रंबा या बेर् हिर् की क्रा **४ व् पृत्र रोग्र रा या पृत्र रा या वित्र प्राया** 45-5-5-451 श्चित्र'ष्ठुग्'क्कु'ळेव्'चॅतवा'ने'हे 'सून्यक्केंब्र'नेन्य नत्तिसव'न्'वगुन्यन्ने' गह्यन्य' 到!

पर्वाक्षियाञ्च विश्व वि

क्षे'यन्ग्'ने'न्न'स्टें'यर्ड्न'ने। । तन्'युन्न'त्स्य'न्ग्'न्रान्यानुन्नि विता । कुर् शर्म पर के केरे ही। । इस स्नि मारा यह दे प्रवा । विवय <u> स्पर्याप्ताके ह्वति यत्व। विश्वाके देन हें राधा ह्वा विश्वेश</u> खुशंच्वार्देग्हेंप्रकर्। विदेवानेशहुगास्वाहेग्रांचा क्रियास्य इ'च'बु'र्रं'य। । नगत्रदेव'ब वर्ष'वे न'वर्ष रच देखा। । तत्र संवे न ही र्वेते जुद्र दु: प्रत्निया । हिंद्र व्यया गुराये ग्रीया प्रश्ने भेषा व । हिंदे तकर दर माने वाह्य थेर। । ५५ मुका श्रीका मार्चाया पर देवका ने वाह्य । हुन् वाहिते हुन् युन् तिनाता । विन् क्रिन वाहिन करा कुन वाहिन तकत्। विवयाने वृत्ती याव केत्या नियान् । निर्देश सुरा ही निहेर्नामस्य उद्दिन्। विद्यनिहास्य क्रिन्यान् सुद्रिन्। निह्यनिहास्य रम्प्राच्या अन्यत्या क्षेत्र विद्या के स्वर्थ का स मॅं य'रेप' तह्युता प्राचा तहेषा हेदा तरे दाय स्टारे हो सेरा पे मन्द्रपर ग्रात् देन् कुषिन् त्यके सर्वे ब्रायते क्वां के वा के न

मानाविषाधिद्र'यरात्र्वा'कुंबाक्षे। हिन्तार्द्रकाळन्तात्वद्रात्वत्र्व्रह्रव्य बेर्'र्'दर्ग **इर्इं**न्'र्सेन्'च्रिश्चायां अहितां संप्राप्त का होन्'क्री हा संने इयश्राशु'चुरामीयायर्वेर'कु'वेद'परात्रुग'हे। हिन्'रराताव्यागुराचुरा न्रतान नहनामा न्र्या नुष्या कुन हो नि मुन्त स्तुन सक्ष के नहा यन्ग्'रुग्'इवस्'य'यन्'ह्वेन्'श्रीसंग्नवस्'रग्'ग्वन्रं'यर्'तु'हेरःगुर्सः " गुराक्षरात्त्वापाता हे पर्वन्यामा वेदापति वान्यान्या न ग्नर्न्व्यक्ष्यानु प्रस्या व्यया हिंग्यक्ष्यान्य क्ष्यान्यक्षे रोन वे तर्भन ते हैं गय एवं ग्राज्य सुन पा भेद हैं। । ने दशनुरा दय विवा निःळं। गृतरः त्रः दुः क्षृत्रः क्षेत्रः क्षेत्रा क्षेत्रः विषान्तेतः चरित्रतः । हे पर्वतः न्यंत्रः श्चॅम'न्न'। व्हॅन'म'गुन'श्चन'इनचाने। संव्हेन'न्न'न्य श्चेत्रेरे यहे गरा पति' में गरा तार्हें व' पति 'मुल' न्रां। हे' यर्ड व' त्या थर हि' गृहे गृ মই গ্ৰাম ব্ৰামন্ত্ৰ্গ্ৰাম হৈ উগ্ৰাম মে মহামাৰ্থকা গ্ৰাম মে মহীগ্ৰাম হৈ \*\*\*\* ब्रेन्'ब्रन्'र्दंब'व। ब्रन्डेन्'य'य'यह दःचदे द्वेन्'य'ग्हुब'र्य'न्देन्य रा'सॅ व्रॅन्प्प्र न्या हिंदा हो से स्वर्थ प्रदेश हैं निवर नमून् ननेन पर्ने स्तार् सून् न्राम् न्या नेन् ग्री नमून्य पर्मेन पर तर्गापवा तत्रेयान्त्रात्रेर्पः स्राध्यात्रात्वरायाः स्रवा बादराज्ञैरासुन्'न् में राञ्चराज्ञयां ज्ञायानानः ने गाना हे नर्जुदाया वा के दाना है। इत्राप्तर्श्चे राया क्षित् । व्यत्राप्तर कत्राप्तर । विषाधित । या राया । वित्र व्या त्यायायम् व किन् वे यावयायम् अति । त्रीयायम् व कार्याः विकास व कार्याः व व

कुं पद्भव्यापं पर्वेषा करा राष्ट्र स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप मरुतः दुषः गुन् 'रा'भेद' राजा । केन्' सारी शुना समतः राजा रापा दिना दिना दिना राजा वेरपम। हे पर्वन् के ब्रायनम। क्रिंग्याम क्रिंग्याम क्रिंग्याम क्रिंग्यम स इस ज्वापत्य पुर्के स हैन 'गृहुग्'सदै' मन दुर्ग देवा 'स। हिस में पर पुर हें द बॅंदरायदि'ग् वेद'र्ये र ठे'दर्शे ग्री राप्टर। भेद'खग् राग्री भेंद' वृद्ध' विगादर' वसक्षे बिन्द्रत्याचीया ने बैब्द्र्यम् र्नेष्यायास्य वर्षात्रेत्र्याः स्तरिका तन्नरातुःन्द्र'र्सनः नुः पञ्चन्यस्य स्तिष्णः । स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स खतःशिकंन्यन्थिन्याने। नःननःगिखण्याशिकंन्याकेष्ट्रन्द्वायाकंन्या त्मन्वराप्त्नां कर्'या बुर्वा क्रिप्त द्वां कर्'यर में मुंदर कर्'यर पर्मेयरा र्राकुर्'यार्द्वर्'हण्यार्वर्'याक्रेश्वेर्र्र्र्र्य्याक्री'र्थेर्'यर्ग कंद्र'यात्राय केंद्र'ग्वयार्क्षद्र'या राष्ट्ररप्य। हिन्भेंपदेंद्र'शिक्षेत्र'यार्क्र् बर्यास्यार्म्याः कर्'याद्वेरः कर्रात्र्याः हो। र्युत्यायः कर्'यरः हुर्याः यहता कन्'अ'र्कुन-न्प्रायहन्। ने'येद् छन्'यरिकेन्'यन्यार्यकेष्विय। ने'न्पा मे|ॅॅ*व*ॱॹॖॖॺॱय़*ॸ*ॱय़ज़ॣॸॱॸॣॺॕॱॺॱॺॗॱय़ॸऀ*ॸॱज़ॕॿ*ॱॺॹॖॸॹढ़ॺख़ॹॖॸॱय़ॸऀॱॱॱॱ गुबुद्धाः ह्या

मुख्या मुंब्र् म्या । विष्या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स

विग'व। वियापति'तार्वे केतार्तेता वियापति'तार्वे या प्रतासदा विवास मिन्य हुर्वे बनुर्वे ने किया विषय हुर्वे बनुर के र प्रियं विषय हिर्मे विषय हिर्मे विषय हिर्मे के विषय हिर्मे के ह्याहे'न्न'यायहर्या । ह्यां हे'न्न'यायहर्यात्। | 考考' 口型了' न्वरार्ग्नायार्भेग । ३३४, पश्चर्मा वर्षार्गायार्भेगव् गृहव्यारेविंद्'र्रितारश्चेय। ।गृहव्यारेविंद्'यारश्चेयवाव। । व्ययः हेन्य इन् हन्य या न्य है। विययः हेन्य इन् हन्य या हेन व। । रवार्षेत्राकुर प्रवासिकार्येव। । रवार्षेत्राकुर प्रवास द्वाव। । ऍद' पर्ग' ॲ'जे'जे'ल'र्रा । ऍद' पर्ग' ॲ'ॲ'ॲ'र्र्'दा । ब्रिन'ङ्क्र पास्या र्नेया के त्या है। । इंदापास्या र्नेया अहे त्या । इंदापान् इत्य परण्यात्म् । यानीञ्चर कृत्यम् व । निःत्र व स्टिन् व । निःत्र व स्टिन् व स्टिन् व स्टिन् व स्टिन् व स्टिन् व स् महन्याय। ।रेष्ठिष्ट्रव्हन्वण्हाक्षय। ।नेप्रमञ्चन्ष्वियावष्ट्रा समा । तर्ने नेन प्रतः वर मेंन सुन व। । वित्यन कप दे पर्वा व्यवाया । व्यवानी हें वारा हुना हुने हुना । ने रूट हें वारा यह वारा यह। । **উর্'**মন্গ্'ই'ইনি'ন্ন্'লঝা ট্রিন্'ঝ্নঝ'নর্ব্'নলন্ম'র্ণ্'ব্ণ' ब्रुश | नि'रम् वाष्या पर्द्व (यहाया यशके | मिंव वे ने के वा नी हिंम श्रुर मा । मनेव'मन्य'तहेव'हेव'केव'हववा । हेव'माञ्चन'सुहेवारामस गुर्नेया किंग्रां हैंग दे हैं र तहर बार हर बार वा किं हुस न है सा हर रायार्वे रतित्व । ने नयानन्य तहें दार्येन में सुवा । हें पायार्वे पा हुं वा राज्य। विवाग श्रद्धाराय। दर्जे वरि। देशपरिक्ष स्रद्राणीयन

तनेवराक्चुःवेन्'यदे। या<u>नै</u>सायदेवीज्यायायर्गिक्चें सन्तुरुखी ह्याने देन् MATA वर्मर तत्वाकी वेववा हुव में इववा अवि पार्टे प्रेन से के स्ता रमः त्राविमातकतात्रात्रे विद्यायि। विदेशमाने सामानि स्वारम् विद्यात्रे विद्यात्रे विद्यात्रे विद्यात्रे विद्या Rदै'तर्'यार'द्रविष्यार्यात्रविषयां वेर। याञ्चर'ग्र'हे'पर्दुव्यश्ची'व्या यान् र्रे र शुर्प्तय। देपर्वन् शुक्षका श्रीका वक्षाव्या वहं या वहं र दे। दे ष्ठित्'न्वुत्'नेंक्षेन्'नेन्याकें'तरितेकेत्'तु'मत्तुत्' पति'क्र्वं'केव्'द्रयहाता'''' **ह्रबाल्यवार प्रमाणिया। क्रियाम क्रिया क्र ग** हे राताञ्चना क्वा नु कारा दें व हर के। प्रशासन व कार कर है व बॅटबारादिःग् वेब्रॉ राम्ब्रम्बाक्षित् क्षाराधित है। विन्द्रम्बराधित हैं मञ्जयसंक्रन् वृद्धं स्वास्त्रे ज्ञान संज्ञान स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स् न्दः ते'क्यका कॅबाञ्चन्'न्दः कॅबाखु व वा वा त्यायष्ट्रक् व बुद्धा वि नेतिः कें न्द्राः <u>ह्मर्भाय। मन्द्री, सुबदे अपूर्वे, पाञ्च ग्रह्म गुम्या सुर्भाय सुर्भाय सुर्भाय सुर्भाय सुर्भाय सुर्भाय सुर्भाय स</u> **बैग'**-ठव'स्दै'स्ट्र'संपञ्चस'द्। ४'सुन्'स्वॅग्'रेद'पञ्चस'व'ळेंग्राळे' नेरनेरण्णकेण्युरवस्यनेग्रह्णस्य हुन्न। हेनर्द्वप्युरायहन क्नेतुःरबाद्धरःपः न वे बातु बाबी सब पारी दे र । 💮 कृषा तु बाबी सब पारी प ग्वेद। नुव्या सेवाप्य दिर्ह्मा इवस सुन्द्र हेप्य मिन्यम। ग्वेद्र सं **कॅॅपश'पञ्जे**र'यर्'त्रव'पश्चरवादीय स्वादिते'त्रव'प'र्र्र्रेया'प'याञ्चया तन्त्रवायाधेवाव्यक्षाः नवाद्धनायायाचेवायाधेवायाधेवाया **८**र्-गहारकार्य।

हे'गर्जुग'गे'द्रॅ रातु'तर्जें'नदि'अर्गेज्। ।देव'ठव'ठ! रायदि'व्यक्ष'ता ८५५। क्रिन्प्न्यायान् श्रीमायम् क्रिन्या । त्राम्याद्धमायाः चेत्राप्र रहेग्'र्नेद्र। [स'र्देशरा हें हुर्'ग्रेडिंर्रापा हराया | क्रेंद्रा ८व'रा'चु८'तुबाम'या। |दे'र्र्र्-जुद्'र्व'र्यबार्र्-र्युव'व्वविवा। त्वरायामुनान्यान्वर्त्रायाधिन। तिः न्र केषाः व्यादे राग्रायाः वृद्। इंशक्षेत्रपुर्वि श्रियाचायाचा । वि. द्रवीत्रपुर्वि श्रियाचे स्वास्त्र ষ্ট্রদেলা । ছিদ: প্রবা:বার্দিবা:ৰথ:অ' এব:ইনা । মন্ত্র:ম'বার্দিবা:ৰথ:এব:ম' व। विष्यानेशाकी नयान्या कुन विष्यान्या । सुन्या कुन हा सरी चन्तरायाकुर्। किंशाक्स्याचिक्त्रायाकिक्ष्या । व नेनाचित्रका क्र-'यर'द्रथ'ब्रुं-रा १७'क्र-'यर'द्रथ'ठा'वन'देग । प्रज्ञ'यायर' स्याववायाव। । तह्नुयानदेन्यानुखन्वेवायान्ता । तुःरश्खनः म्रायदे प्रग्रद्भा । क्रमार्चे द्राया प्रमान । त्राप्रण रादेखेर सुग्या । येर सुग्या विवर्षेण । एक वायम् इताव्याप्त । इंबायक्यन ग्रीतु स्वाप्त हेवा वेदावा । सु'नबाकुन'म्रावरी'चगार'खाँ व। । कॅबारम्बरीरी कुरामानेवा छेदा श्चित्। विदेशान्यते स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया शेर्केत स्ट्रिया स् *ब्रं*केष । प्रकु'ताबेताळे व्र'पाद। । कॅरा हेन्'ग्रेवें रातु'त कॅरा हेन्' ग्रत् । तुःन्राह्मरः स्वाविः चग्रतात्रं व। तुः वेः स्टायहेः न्दा कृत्रपञ्चेन । वृंद्रव्यात्राक्ष्यां वृद्रवे हेत्। देशप्राप्तराया रशंकुर्पतिष्वुग्यंकुत्यते। यंन्यन्ग्वयाष्ट्रंन्यः इवसातासुर्वेन रशकुर्यायतर्वुरावित्र्व्यात्र्या हेम्पर्वुरायावे वरावराणुरावेका पर'कुर'हैं। देवबाबीह्यकारर'रर'रेंबिनेववाकुक्रेकारा'सवा कुँव'रा'न् र हिं हे पर्वव'न्यत'या येनश'पति'हिर। मिं मन् न्यतः स्ताप्राची व्याप्ताची व्याप्ताची व्याप्ताची विवासिक वि बर्पाहिरहे। र्रहेर्पास्वर्पातवर्प्तरावर्षा त्रुत्रायाधिवायस। हेः य दुंवा प्राथम् अहता पृष्ठी वा विकास **छन:पश्रम्भवारायन्थि:नविंग र्हेन्प्ययन्थि:नविंश्यन्** बेन्'बेन्'बह्स'यिन ग्रापा सु'रा'ग्वन ग्रीस'हे'न ईन'स'वृद्यायका ब ने बाव बा । प्राचित्र के बे बा हुर की बाटा विवास के वा धिदा है। हैन'यम्बारायोन्यान्यायेन'याय। ह्रेंब्याह्म अवादनानुष्टिन्यानेवा म्बर्याव्याव्याव्याप्तान्त्रम्या न्विंग्नेहें मर्ब्वायाय्या बर्राह्मेर्पर्वेद्रायराष्ट्रिप्रवाधार्मेष्यायम्बद्धायाम् विवादर्भेत्रवायाः भेव। न्यं ने तने द्वारा न्यन्यं न्यन्यं त्रा व्याप्त्रं होन् हरा है या है। न्रिक्षित्रप्रता त्रिव्यस्त्रप्रिक्षे त्रश्रह्यान्त्रात्रीन्त्रे सेन्त्रप्रतात्र हे पर्वुव ग्री वतावय। क्रेंव पात है ग हे व श्री पान ये ता वे या वे या न या न इन उन् अने वाचे नाय हिना के बाने बाबी ने बान ना वाचा वाचा वाचे वा बॅटबारान्ट्यन्यातह्रवाह्यस्याद्यस्यात्वेदान्। वृद्धारवान्ट्यन्या तह्रव्रध्याव्यक्र्यानेवाण्य-तेवाया चेवाण्य-चेवारायः हेवायावा यर्जे क्वेन्प्न् <del>हें</del>न्प्वयापागुन्नुकुलकर। यन्ग्वहेंन्प्न्वंन बॅटबाकुर्चेष्यायाम् र्वयायान्यास्य न्यात्रः विश्व क्रियानेश्वरं न्यानुवर्णस्य

स्याः ह्रेन् भी होन् सं विषान् र कुला तुर र न कुला हून प्राची विष्य र न र सुन तयम् दुर्वाच्या देशक्यम् वर्षानि द्रान्य बर्का ब्रेन्परायन्त्रम् व्यासुर्धेव्यास्त्रम् स्यास्य । यन्त्रस्य शुक्रायामुलारुट्रायम् श्रीट्राचेकानेट्रास्ट्रायाम् नेशपरा त्रिंरप्राध्य केरेरप्रप्राप्त वित्र केर्स्य केर् **बै्ग'र'ळे'रुर'यर'वे र'र'धेद।** अद'शे बेगशद'हुद'रॅदे बै्ग'र'दुर' **उ**८ क्षे मु:प'भेव'यश्र'न् गेपाने ने दां हो व्याप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र ऍन्प्याधिव। नेवारीनेवारीप्वारत्वेन्प्यांवर्षाया। यर्षे श्वेन्टिवा इयात्र्वे रपाष्ट्रिन्पर इंसाम्रायात्रे सपाम्रेग्मे विष्यान्या यस्त विवाविवादर्भ नेन् श्रीकारेवाका नेकासूच भेव। दें व भन हिन् पन नेन् र्ह्सादन्दित्रावीयावस्यायाम्ब्रयापादीयाचीर्विण्वायास्य स्ट्रीयामीक्षान्ता देन् ग्रैशंयव्यत्नियां चेरापाय। हेरपर्व्यं ग्रीव्यावय। ह्र्यंपारियाग्राप्ये व्यात् । रहाते गुरु गुरु श्री का विषय में हा । इस स्वया त्र्वावयः यशकः क्रुव्यप्पेन् त्या त्रेवक्षके क्रमः वेन् पत्रेक्षव्याप् केवायः म र्रे प्रतिवाश्वर हेर्। र्यायकतः मृडेवाश्वर तहेवायका क्रेंद्र प्रायर तहेवा ষ্ট্র উব্ ব্যাখ্যের ইব্যাধ্য কথা এই ব্যাইব্যাধ্য এই ব্যাধ্য ব্ मना मिन्देरी देपदांतरी वापनाकामन है। त्रिन्वावनानेन पर एक मुस्कार भेव प्रका सव र ने नका न में का वस मार में नका बेर्'लयादयाद्वाप्तर्चेरपाला हे पर्वत्योज्ञानलाव्या रयावयायावतः इविष्य च इक्षित्र चे स्विष्ठ स्वाधित्र विष्य । विष्य दे ने दे से स्विष्ट स्विष ऍ८:ब्रुच'८न्'रुपॅ८'वेर'नदेखें। हे'मईब'ग्रीना'नवा'वाहर'र् वेट' त्वरायां हैं हे वेराचु निर्दे हैं तार्थ देश पर निर्वाच बावतः ईव्यानस्याधित वया ईव्या वेव् धित् प्राप्त । वित् प्राप्त व्या म्प्राया चुर विरा रग गुर ब्रु से नेरा परि रर तारे विषा श्रहारी र्ता श्रीतायुत्राचक्यायक्षायक्ष्यायात्राक्षाय्याक्ष्यायात्राक्षाया यहर्द्रा निवयहेपर्वि हैरिय देव देव हिर्देश मिला मिला मिला है। वित्वय बाह्रतः ह्रण्या केन् त्यात ह्रण्या के धिव ज्या का ह्या हिन्ता श्चर्रात्रं त्र शुः ह्रेन वर्षार् त्र स्निवर्षात्रः श्चन । तश्चराः नेवायाः विनायित्। यरः "" त्तृग त्र्रक्ष्वायान्त्वीयाः अवाक्ष्याः अवाक्ष्याः व्यावाः व्यावः व्यावाः व्यावाः व्यावाः व्यावाः व्यावः व्यावः व्यावः व्यावः व्या র্মান্ত্রবার্ত্র বিষয় কর্ণার সেই ব্রাইন বিশ্বরার কর্নার বার্ত্র সামার করা বি मा हेनर्दुव श्रीन्यव्या वयायापरे हॅग् न् श्रेन्यं गुव शुन र्चेन् राबेन् 'तु' तर्नेन 'न्या तुन' तर्जे द्वया गुन् 'र्चेन्य' बेन् 'तु' ब्रु तथा ট্রি-'৴ন'ন্ন'ট্রি-'৴ন'নীস্ক্রিন'ন্মির'র্মগ্রাইল্বাইন্'স্ক্র'ন'গ্রব'গ্রন'ট্রিন' रन वैवाह्नव परायह राष्ट्ररावेता तव हवावाकी त्वापाधेव उत्राराय

हिंद्र'द्रश्यम्तर'यार्वेष्यपायम बैद्यार्वेष्वाचीवा दायनम्दरेद्याच्डतः त्रासुग्'मदी'ञ्ग्'दिनै'र्चेष्रां सेन्'धेव्'चेर्न्द्रा व्रिन्'केचेर्न्द्रस्यान्युन्त्रः मय। मिन्दानी ब्रिन्'क्रीक्षेत्रा'तहासन्नान्दवाह्मवाद्यकादाकानहेनाव য়ৢঀৢ৻৸ঀ৾৾৾য়ঀয়৻৸ড়য়৸য়৻৻য়য়ঀ৻য়ৼ৸য়ঀ ঢ়৾ঢ়য়৻য়ৢঢ়ঀয়৻য়য়৻ ष्टः स्र हिंत्रर ने दिश्व श्र र स्थ हिंत् श्रेण दिश्व दिश्व दिश कुवातत्वापय। विन्धियानयायविन्यन्त्वातन्ति विग्यवेन्तिहा नितःश्रेगातस्याविषाश्चिसन्नान् । वितः दे। श्रेगातस्यानेषा प'न्न'छेन्'प'उन्'अन्'शे'उन्'। हिन्'रून'शे'वग्'प'क्यवायमें'ब्रेंरघनवा शुग्रीशनेरायम। हेपर्वुव्शीलाव्या प्रतिप्रयापायाव्या नेरायाम्डन गुराबेर्पर तत्ना क्रुवाया हुराहे। ট্রিন্'ঝ'রী'ব্রন'বা तर्रस्याळन्'यरवाजुवार्वे पायवावर्गानुवायतिवीतुरायति करात्यपा"" पर'ग्रत'ग्रुर'। वें क्रॅब्र'व'रे। व्यायमित'र्घेग्र'पठराप्र'त्र म'मबैब'त। रमानिकार्द्वताम्मान्या नेति हो हो महुन मुक्तानम् परावद्यायाति हिरादे तहें वाया व्यापराय व्याप्ता स्वापायर वया वरावया सरम्बर्ध्स्यम् अति होन् न्या मि हे रस्य द राया स्वाराध्य हिन परिश्वहर। ज्यानेश्वायायनाव्याञ्चरायराष्ट्रयायीयाव्यावापरायापहेता परिभागामा द्वाद्धरायायामा द्विरा मृत्या मुद्दाराया। त्वाद्धरा महागुरामार्वेरागानायद्वानावितावितावितावितावद्वावायवा हेरानाव्या लाहे पर्वन शिखनाहे वानेना सुरापान हिते परातुतर में निर्में बॅर्न्ट्रवर्वा हिन्दर्यान्ववर्वन्यत्रम्ववर्वित्र হীয়া' त्रञ्जावी व व रेन् व्यवस्थाय तर विषय विन् प्रवेच व क्षे.स्ट्रिनेर्याय। हेयर्ब्द्रिक्षिवयद्य। ब्रिट्रिक्यस्यतर्द्रम् য়৾৾ঀ৾৾৾ঀৢৼ৻ঀয়ৢঀৢ৻ৼঢ়৾৻য়৾৾য়৻ৼয়য়ঀৢ৻য়৻য়ৼয়ঢ়য়ৢয়৻য়ঽৼ৻ঀয়৻য়৻ঢ়৾ঢ়৻য়৻ न् शुन्त्रपत्र। न् मं त्राने। ने न् ग्रीवन् पुन्। व्याप्तेन्। घतः इविश्वेर्वा स्ट्रिं चेर्या हे यह देव की विश्ववा रे में इविश बिन् धिव्यदि ह्वा विवा हिन् छैवावा व हिन् या व हिन् निते संस्व राप्त रहें ने प्रश्य प्रत्येय श्रात्व वाप्त र सुन् र से दिए। में देश इंग है। दे दवरा तर् वें हुर। देन हैंग ने पति है भेन करा पर-<
नेत्रायः प्रमानः

स्वार्वे रःपदेने इवकावेग तहाराया भेवापरः सवा **हण्याभेवावायामार्रातातुःश्चेवारावुणायायश्चराप्रावाया सार्या तृ** छै व 'रा'हु गृ' हे 'कृर 'द्रवश शु' ले व 'चे र प दे 'ल व ' तु' व गु र द दे ' गृ शु ८ रा'" 到一

स्तिः अति त्या स्वास्त्र विश्व विश्

इत्राञ्च वार्ष विष्यात ह्रा विषय क्षेत्र क्ष ह्रपःबळेंद्रःकःबेःह्रपःपदे। । गुन्दार्द्रप्तञ्च्रपःच्याः । तेः মৃষ্ট্রাদার্থারী বিধানার বিদ্যানার বিদ্যানার বিদ্যানার न्येन्यः व्याप्ति । हुन्यः पर्वे रायञ्जेयवा पद्यक्तिया व इन न ज्ञें व बाह्य स्वर न र न दे | विषार न न ज्ञें ब बार वा के वा व व ग्रम्प्रम्याग्याः अप्राचित्रं विश्वायते । विश्वायाः केष्यायते । व्यम् व्यम भग्भेत् बेन्द्रुत्यते। । क्वुंत्य्ययन्न्यक्वेत्यवत्। । त्रःकुन् **इंश**न्न श्रेन श्रुव पति। | श्रेन अंति प्रति व श्रेव श्रेव श्रेव श्रेव श्रेव । विव ॲंटरांतुग्'ञ्चयारी'गॉर्जन्'रारा वि'नेश'तर्नेत्'रा'र्येग्'सु'पेत्। स्ग्' <u> </u>र्नेग्'तर्ह्ध्य'यायावीपते। । घुर'बेशवातर्नेर्'प'र्त्रेग'सूधेव। । ५ऋँ' तातळे च या श्रू न या ये | विश्व में है । वर्षे न प्राप्त में प्राप तहेन स्वार्थन स्थाय स्थायते। | वाष्ट्रया केन पर्नेन प्रायेग स्थीत। | मन्ग्'तहेव'तम्'न्यें के'तनुषामन। विव व्यन्यम् मयाद्वीर मह्मं । व्यक्तिं क्षेत्र व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्त व्यक् गुरुन्। ।रन्कुन्क्र्यन्न्त्र्वेत्र्येत्र्रान्न्। ।र्नेत् वेन्'क्रेण्नेव्यम् वद् इन्न्युन । कें याया नर्से वरा क्वी वरा निता । तके मरा वे त कुन् चंया रेबईन्। विवागशन्यमव। न्यम्बन्ते क्रिंग्येवायम्यर्धेनः हुण जिथेन वस्ति व धर है व महु त्वका हु सेव व द है सूर हैन हेर मितिसव र् नुवागुराय देगा श्रुम्या र्था ।

हे मु हुरवर्पा भु देव का । दिवा है मु वा वारे वेव वा कर्प मुप

ज्ञानस्या । इंश्वास्याः र्मणः विषयः चित्रः चित्रः विषयः चित्रः विषयः विषयः चित्रः विषयः विषयः विषयः विषयः विषय व्यापार्या विषय के अवायतीय के निम्मा विषय विषय **हें गृ'त्म'रोग्रह्म'रोग्रह्म वृह्म | क्वें ह्युग्न'गृहें हा न दा** ५ है। व्यवा विवाधिका वे प्राची विकासी विकासी विकास विवास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास বৰ্ষা । ইন্থিন কৰ্মি থেনে ইন্ গ্ৰেম্ ইন্ । বিন্দ্ৰ ব্ इत्राचदेश्यः स्यान्। । श्रुवः याद्यान्यं ग्रान्यं वाये । । ग्रायः श्रु श्रु त्या पदेश्यः रसाव। व्हिंसिवका ग्राप्तां व्यवस्थित। |र्देवासिकी सुनामा र्स्याद्। । नर्सेन्'रा'सु'न'स्प्यादायेन्। । वृत्रकासेन्'रास्य स्याव। । नहें बार श्रुवा द्वापारी प्राची न । । प्रमाण व वाप दी प्रा र्स्याच् | निर्मासंग हर्न् सुनार्से ग्रास्य वासे न्। | मिन्सासुग हा है ग्रास पति'स' संयात्। | नेसारता मुना येंग्बा न्येन्। । प्रवार्कन् व्हेंग्वा कु मः राज्य । विराद्य विषान् प्राप्त विषान् वार्य । विराद प्राप्त विषय विषय र्साद्। । भूतका लेका शुःचा येण वा क्येन। । मृत्य के का शुचा परिषा र्स्याव। अवन्यसम्प्राचार्यम्यवाबित। विवासित्राचनाः सर्वा रेग'रा'व। । वे ने बाद्यारा'वें गबा वा बेरा । | दें वा व्यवा हा से वा वा रे स्रिक्षत् । विवास्त्रिं प्रतिः श्चातान् विवास्त्र । विवास्त्र । बॅ'कूंद्रकारी ने'इवका नेंद्रह्लावत्वत्त्रम् इतात्र रामहिन'रन निस्क्रिंग्'सु'तरुष ने क्रेंबाक्'वे प्रेन्'। बेग'तस्ता'न्न सुता'व ह्व **९**८-ताश्च हेन्याप्तातरम्प्त। स्रम्यस्थित्त्वस्वस्यसम्हेन्य सॅ हे 'सर्ने' नवा' वी' मॅं ब' व डिवा' कु न' ख' हु न' न' में हे सर्ने' नवा' वी मॅं ब' दिवा' यम'य'भैद्। ने'य'नेब'मु'दबब'ठन्'ढन्'बब'ष्ठन्यः यहन्यः दनेमबान्ह्यः परः हिन्यान्यके। हिन्यानेसादार्ये हे न वन द्वारा वर्या दे परा र्षेष्याय र र्वत्यायायद्वै प्रा**धेव्। दे**वै स्व स्वेत्रसम्बद्धाः व प्राप्य स्ट्रेर घरा। हिर्मी वर्षा हिर्म स्था हिर्म न्यग्वांवावळवाकेन्। तमात्राहण्यान्नात्रोत्राहण्य। सून्त्रावानेका पति ह ग्राक्ती शुवायम् द्रवया विग्नितः चे र सुरावया हे पर्वन्द्री विष व्या क्ष्रायाष्ट्रिन् त्रांश्वना तर्मन्यतन निर्म विन्दिन्यन निर्मेष **५८४७८८ श्रीकेश्यर ८५० प्रमा ५० प्रायम् वाक्र ४७८८ विदार् प्रमा** ही'ततुन्।व्यन्'त्यान्।त्यह्नेत्। त्याहित्'सन्।त्येक्ता ह्नेन्सेन्न देश्वत् हुन्'न्गृञ्चन्'ग्रेन्थांन्न्'र्कर्ष्र्र्येन्'येन्'स्वेन्'यदे'ळेन्'ययः रनः''" इन्'ग्रेडे'मब्'रेव'प्तेव'प्रह्मप्यप्य। न्युर्यप्र'म्'कुर्यंग्रेर्यंवेर्यंदे षर्भायन्वापङ्गिन् द्वारा सेवारा श्रीक्षेत्र स्वारा स्वार्म स्वार्य स्वार्य स्वार्म स्वार्म स्वार्म स्वार्म स्व न्ना अरायाम्वन क्षेत् क्षेत्र क्षेत्र विन्। हिन् मक्ष्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र गुरु तर् राम्य। यन् गृष्व त्रा वृष्य प्रविन प्रा श्रव प्रा विन प्रा श्रव प्रा विन प्र विन प्रा विन प्र विन प्रा विन प्रा विन प्र विन न्ना कॅबालॅग्र्वेग्,पुर्सन्यने त्राची सून्याम्बबरा ठन् रेवनाशुम्मन् कर्। रेवनार्द्रन्न्वत्यः क्रून्यात्रार्द्रभ्रम् वेत्यर्धित् केना मसंहेस्य न्यन न्यं वर्षे क्रिया केन यान वेन । तन्य तहेयान् र वर्ष स्यानेकापितः हुण्यान् में स्वात् देवा से ने का कुन् न्यापित स्वान्त तन्यान्तेतन्याः इन्याधित्। तन्याः इन्याने न्याने न्याने न्याने न्याने न्याने न्याने न्याने न्याने न्याने न्याने

तज्ञेयः हण्यध्यनः विदः। क्रश्रादेशमञ्जूषायाज्ञ वर्तुः सूर्यायायाया त्र्वेतान् वेशन्ति क्र न्य संस्टारिक्ष्य त्राया देशाय देशाय देशाय देशाय देशाय देशाय देशाय देशाय क्षेत्र देशाया ग्रुत्यप्रा वे सून्यम् म्याधियस्य रन्यन् मृन्दिर्त्रम् न्रह्म অৰ্মী'মেশাস্থ্ৰবা'মেৰী বা क्रक्रिंदायाद्वादेगाः चुरायश्राप्तायात्वा है। र्र्स्यानेश्च हुन्यायिश्वर्म्थ हुन् गुर्स्थ न्यान्य न्यान्य हुन् । हिन्यं तर्ने केंन् मेंन् हैं। सर रन न में खुवा तर्मेन लग मेंन् पर दे क दस ष्रतः। देवै:न्यनः यं राखुष्पन्। हन् अ नेवायवायन् वा यहून् छेनः ग्वन र्रेन प्रामिन व। विन् ग्रीयाहिन प्रमास्याम्या स्थान्या वर्षामा त्राप्ते दंश विगञ्चन मुन्यवाह्नन छैवा छन विन्या विवासन तत्र गाने । ने हिन्या नर्त्त वसकान्न भवा तस्र काया न भ्रमा तत्त्व ने निका विकास र्हेश् अन् 'ग्रीयवाद देवा कु' बेन् 'पदे। वे न में बाप दे दि व बा करा हा मॅन्सुपर्याक्षेत्रपन्देश्वर्यात्र<sup>ङ्</sup>यायात्रम्यायस्य मर्द्धन्कीः वत्रव्या म्यार्थन् मृद्द्रिन् की स्थित्र विषया रतिःहग्रावरितिः (याबीन् विवाह) तर्वा क्षेत्रं कुन् प्रवाह विवाह केन्'र्यो**प्र**ा म्यान्नियासन्याच्या स्त्राम्याद्वेन्'रम्यो निर्मायन्या न्नः। नःनन्त्रायक्ष्र्न्यात्र्यायक्ष्यायात्रेष् ठव'दवराष्ट्रीतेववादिन्'ग्राताकृत्रा'तिरित्तत्वाकुकुंद्र'म्'विना गुन्य में बारा पर्ने या गुन्य विदेश स्वाज्ञ वा विवाज राष्ट्र। सने प्रे वा वे वा क्रिन्सं विषा ग्रन्तु। सन् रनन्सं रन विषाय वेषा वेन्य रेवा रावा व्या विरा ষ্ট্রীর অনুনা ব্রুবর্জনকামানুনারীককাতব্যন্ত্রীনামনুগরকান্ত্রিনা

परातिष्ठश्रातात्त्रव। श्रेश्यानर्द्धान्यात्त्रेश्वेत्रात्त्रेत्रात्त्रात्त्रे वेश्वा ५८:इअ:५ग्'५८:य८याञ्चराञ्च वीचित्रं य कृ ग्रायत्वा खु८: तिन्वा खुर्रेट्रा "" धिव। ने'त्यन् में मह्यान् साम रहें साध्य (तन् साधिसाग्रम) यने पाने पाने पाने पान श्चेन्यं राज्यं गुन्यं प्रत्याय द्वारा । । दर्जे पा दर्ने न गाय शुन्यं या स्वास्य हुना <u> বৃথা কুপান্দ। প্রথম হব, ইরমার, গংখা শিক্ষা এই।</u> राप्ता रेंग्राहेंग्रावाये नेराधिवारायात्राज्ञानाववार्विया मतिः ततुः भेवानमातुः मक्ष्याममानुदे भेवानमा वेववानम् न्द्राह्य रीयरा हैं न रापा न ने राखन राजिन है। हैं न पाजिन का के साप राय न न ॕॖॿॕॖॸॱक़ॕख़ज़ॱढ़ॺॕॸॱख़ॱॺऻढ़ॕॸॱय़ॱ**क़ॱॲॸॱय़ढ़ॏॸय़ॸॱढ़ॸऀॸॱॾॕ**ॺॺॱग़ॖॿॱॿॗऀड़ग़ॱॱॱॱ ह्यारा विवाधिका परिवाकी विश्वास वा भारत स्था कुरा स्टारा त्तृष्यश्चित्रयाष्ट्रवाच्या विवादित्रक्षेत्र क्षेत्रके प्राप्ति विवादित्रक्षेत्र विवादित्रके स्व लग हें न् 'डेन् स्प्न' रात्रे हु' यह व्यानु वासेन् 'हे वारा हा हु' स्पन् वाहे वान्ता ही ळें इंग्'र्र्, श्रेग्'र्स्स्यां श्रुं श्रुं ते द्र'यश्रयं प्रमें राम्'राम्या प्रमा हे रायश्र हे मह्याति विषय दिन विषय दिन विष्य दिन मिन मिन के सामान मिन कि स्वा विवान वताने अतर तर्वाया नेते ने वें वार्ष द्वा सर्वार त्या करा मदिःहण्यवीव्यव्याम्बुर्यायवा विस्वार्थम् वर्षाः मर्दुव्शीवायप्रेन् गृह्यान्याप्रस्य वृद्धार् रक्षक्र राजापिते प्राप्ता

म्बेर्यायम् पुन्भेन् सहस्या हे मर्द्वाया दुन् से संस्थित स्त्राह्न रात्राञ्चराया विवाभिन पानेति त्यवा वत्ता विवाधिन वता विवाधिन राज्ञान ळं वित्रामु हेन्द्राच वित्र न व्या **ब्रेन**'हैन'हेन'हैं।। रशकुर्पार् ग्रेशिरिर गुद्रायायग्या पत्रा पहूत्र वरा अर्धरात्र्राचेर्ने प्रवादिर्वात्र्य में वर्षे वर्षे अर्थे वर्षे वर्षे वर्षे वित्रपृष्ठिराञ्चरायवागुवाधिन् केवायान्ता। वाक्षुवाधाराकी जुवाधिन छीवा <sup>कु</sup>अ'न्'र्सन्'प'त्रमुब्र'चुन्'चेन। यॅ'हे' इबब्र'ब्रेट्र'व्द्रायेण्'र्सन्'। े ने' रा'तिरिरावठराकी दीराभ्रा विवाधिन पाने अर्वे अहवा ब्रेंवा वरावाया है। तर्ने स्वराने सम्बुद्ध न वायदेव ने राद्दर सुरा स्वरा गुराय सव न ने दा पा भिन'पर्यान्या हे रान्यें याययय। जनसाय राहे पर्यं न् की हुन रुष्ठिन पया। र्षेण्'अर'रशकुर'रा'र्र'अहत्यप्रश् भूव'रा'र्वुर्'ग्रुर'रर'र्र'रर्श्व' पति'व्यवस्त्रेत्र्ह्चैरःयर्छरःक्षृत्र्'र्देर्वयःपेषेत्र'व्याग्रहरवायय। रः ह्य'य'य'न्न''वर्ष'यहत्य'तु'र्देनसम्धेव'हेर'व्न'तु'द्रसम्बॅन'च'न्न' 手 मर्दुव्वयातर्द्व्ययर्द्र्ययर्द्र्यया क्र्यामन्त्र्याचेत्रम् वित्र रमः इयरा ब्रेगः युनः नुः ५५५ नाम दे क्रांच्यरा ६नः माय में वार्या नुः येन् राधित। रोरान्हन्यक्रिक्रेंन्'तु'तुन'स्रिनेक्न्'हुन्य्रारान्न्। मनेन्ग्नाम् अति क्रेन्न्य कुन् स्वाधिन सम्बद्ध स्थाप स्तिन के समिति क B৴৻৴৻৴য়৴৻৸য়য়৸৸৻ঢ়৸৸৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸৸ড়৸৸ড়৸৸

अन्त श्रम् श्रम्य

६८-४००४ के नेयापा क्षेत्र क्

म्रु मुर्यं सर्पि देवारायात् तुन्। । भूवाकेवायवानु मु विवायवा। त्नातात्रेत्यात्रेत्यार्व्यात्र्वा । सुत्रे वेत् व्यावेत्र्यात्रेया ने'नै'र्रे वर्षा हेन'र्देन'ग्रायायग्या । पर्दयानु'र्वेन'म्हेन'परी' बर्केष |ने'वै'वेबकानेन'रेब'ळेब'ष्ठेर| |गनत'रु'बेन'व'रण्टवा परि'यर्केग |ने'ने'द्रयार्ग्रेयांनेन'रहेंन्'त्रया |पतुन'नु'येन'न्द्रयया परिः अर्केष | दे वै पुरासे अरा पतु द हिते कप | | दरा देवा की थे। मेबातरी । । रण्राह्रपहर्पियायायायीय। । १९वार्षे वाचित्रापति स्थारा बैब्दे । । हिंग ने नदिः यन हुँ त् खुताबैद्। । नभू र व न बेत् प्रदे द द हॅग्याया । २ परः गेयाळेग् गुरः रेपाद्या । याष्टे : र यवः ये र पादे : र वा हॅवाबाव। ।बाधाबळवा<u>कुरानेखा</u>डा ।यज्ञेन्'नुबेन्'पदीर्नेवहॅवब व। । तथा शेष्य केंग् गुर दे त्या । क्षे तके ये द प्र दे द हे ग्राया । न्म्बर्मित्रवह्मायुरन्देश्यम् । मृत्यानुवेन्पर्देन्ह्म्बर्म् व्यत्यत्यक्ष्ण्यान्त्रेष्याच्या । व्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्याः पदे'बळॅग'गुर'रे'वाद्या । पत्रर'र द'बेर'पदे'र्दे द'हॅगरादा वनशकीयह्य जन्दे त्या | विशेषा अने न न में वार्ष वा । भू नते वर्षम् गुरुने व्यु । । न्ये गवा गृह व्ये न परि में ब हिं गवा वा इंबर्यये विक्रम् । जिस्ते स्वीत् । विस्ते स्वीत् । विस्ते विक्षेत्र विक्षा विक्रम् । विस्ते स्वीत् । विस्ते विक्षा व

व्याप्त विद्यालया स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त त्रकार्त्वते सक्ष्णा ग्रुट्ने 'साम्चा । ने 'त्र ते 'दे ब्रुट्न 'से 'दे ब्रुट्न से दे र्ह्मरामक्तेष्यापरिः हुँ ब्राक्टेव प्राप्तः । विष्या वीषा प्रश्नेव सामित्रामा **५८। । श्रेर से व छे ५ पर दे अं अ के व पा श्रम** |ग्रेंथ'र्'रे'ङ्गे'नर्डन्य । गुड़ेश तहें व्यापाय प्रदेश सम्बद्धाः । गुड़ेश तहें व्यापाय प्रदेश सम्बद्धाः क्षेप्रत्राचरायके। । गृत्तारायमे बाह्य वा सुरापत्राचत्रापरायके। वित्र'तृ'ते क्षेत्रीय प्रमायकी । विवयः मृत्रुवा वित्रायम् की न दिशान्य स्थान्य। साङ्ग्रेदाग्रीका विनयाद्रेन वाञ्चन वाञ्चन तस्याना न्ता ह्रशतु न अञ्चर न अविष्य हे न इंदिया है। न्ग् स्याद्याय्या है। न्राह्माया के त्राह्माया के त्राहमाया के त्राहमाय के त् इवलक्षिक्षं न्यान्न देशत्वुन्न्य व्यान्य वेत्य देशे वाक्षं तर्ने वर्षा व पतिः<u>जॅ</u>णवाशुःतजॅ्तराजेणवाशुःतज्ञें सेनेवापरःतनुण शियादे यद् नेबान्माहु तहु वाक्री शुपा हवा वाह्य वाद्या वाह्य विवाद वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य वाह्य तर्जुन्यां क्रेबा मैन प्येन् देवा ब्रुबायवा न्न क्रेंब्ने हिन्न प्येन् देवा प'र्रुत'स्ट्र-प'र्-एर्ट्र्सग्री'यन्ग्'र्न्द्प'र्र्-भेन्'स्न्। न'ने'विरेस्ट्रेन् मेशन्नाह्यात्रह् क्ष्यरायम् कृष्या स्थायहराष्ट्राच्यावेषायरावेर् करा रक्षयरावेर ब्राक्षे कं स्वार्चे द्रप्त प्रवारा धारा बेदा चेदा वित्र प्रवार के दिल्ली वित्र के वित्र व **इ**रतास्यायति। यो दिन्नेवारीतिहेयायाशुन्तरायतियाति।श्रेशवयायवतः प्राचित्राविषाचुर्दा । देवर्ष्य्येवयात्राविषाय्या रामार्थ्यात्रेया घ्याययात्राक्षेत्राव्याययाय्यात्रेयाययाय्याः के प्राचित्राच्याः क्ष्याय्याः के प्राचित्राच्यायाः क्ष्याय्याय्याः के प्राचित्राच्याय्याः के प्राचित्राच्याय्याः के प्राचित्राच्याय्याः के प्राचित्राच्याय्याः के प्राचित्राच्याः के प

## **エミララララス・第二**

त्यं गुःद्व। हे पर्वत्यं स्वास्त्रस्य प्रेत् प्रेत्यं स्वास्त्रम्य हिन्द्रम्य स्वास्त्रम्य स्वा

तुः तर्जे दा तरे गः हे दातरे या विंदरात में या धेवा विष्या प्रमु तर देशकी ष्ट्रवरा भेदान्त्रसाय हरा द्वरा छेवा यञ्च यदा यहा नुवार ने देवा वेदा दुरा छेता य राजन्द्रस्ट्रिं ने देशपा सेन् केन्। केन् देन् संजुद्र ने सार देन् सा र्हेन्'यद'न्म'नेश्वायद'गुद'नेश्वायायादाहाःन्द्रीय। नैसप्पः क्रेंस विनः वृत्। सहस्य न वन ग्रांत 'तुस दुनः दिन नुस्यः बेन्'क्'रम्'न्वव'म्वेश्रान्'सुम्'राधेव। ने'बेब्'म्राज्यस्यसुः गुरुप्रा लान हे बाब बाब राय ते हुए दुर्ग गारान दुः वा श्वुर प्रें वा श्वुर । देवा वा क्षें हुन वया तक्के क ये न क्षेयाया देशाया क्षेन् जा हुन या या। रहा हुन यहा क्व'गरायात्र्र्भें निर्देशुपाय वर्षी साम्रामा निर्देशिव वर्षे वर्षी वराय वर्षा ॕॗढ़॔॔॓॔ढ़ॴॱॻॖॸॱऄॱ*ज़ॺॱ*ॎॸॱक़ॖॱॺऻॸॱॺॎॱढ़ॼॕॱॺऻॎॱ॔ॸऀॺऻॱय़ॱऄॗ॔**ॸॱढ़**ॱऄॱॺऻढ़ॕॸॱऻ नः झ्रें न्नण्य राधित द्वार व्यार्थ नित्त्वा अवाय कुत्राच कुत्र कुत्राच कु स्तर्द्रम् स्त्रीतिः क्रम् क्र्रिन्द्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् ब्र<sup>भ</sup>्भ्राप्तारः स्रतः वीसुः कुर् छेव्।व्यावृः स्रीः कुर्पायः विवावः वास्याः """ *বিশ্বীরাঝান্তব্'মান্যব্'ইবাঝাবাগ্রদ্'নেমি* ধ্রদ'নমূব'র্মদ্'ব্রদেশ হরামূদ'' र्मेय:र्नेय:पर्टिन:य:त्रय:पर्यायम्य। पःत्रंत्रेन्य:पःत्रःयेययःश्चेरुः चन् कॅन्धरातम् तो ने के पॅन्धरात हुन्। ने क्विन्स स्वाय प्रेन्स स्वाय के न हु गरतातर्शेतायाग्वेरन्त्रियाधिवाग्वुन्न्र्व्यात्र्वेताग्वेराग्वाया त्तुतान हुन न ने र नु न हो न ने द द र कें

मु.बुर्यरप्रतिष्वर्वात्यत्तुन्। । इत्याधरतिर्वापर्वेद <u>गुैबाक्</u>रॅपर्य। |तु:ब्रॅबाक्टन्*स्ट्र*्य:ब्रब्य:दा-दे। |बे:ब्रुब्य:ब:ब्रेन्:वृबका बिद्रपत्रित्। अत्रिप्याकेरः वर्षे द्रश्चित्रश्चायद्यतः श्चेत्र। ।दे द्रवायद्वीतः **ॅ्र**ग'पर्दे'त्स्-दि<mark>ग'मेदा । हिं</mark>-् चु'ग्र-ध्या' रु'दर्शें प'दा । प्रहः केद' ह्मन्थ्रित्रम्भाष्ट्राह्मुवेत्। ।त्रत्रम्भाष्ट्यम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम् तॅं र्द्रीवनवासम्बद्धन्य। । पर-तुर्भेद्धावाया द्वारा । व्याप्तनार ह रॅंदि हे 'ल' पर्से वर्षा | व यर व्याप्त वर्षे र पा | प्रेने वर्षे वर्षे द बेर्'ख्या रु'क्या ।र'ने शेर्'ने श्रर हर हर हारा । देवान स्मारहें र **ब्**या के श्रेन्। । नः ब्र्रें स्या वस्य दे विषय श्रुन्य है ने ल'र्पर्'नुवाह्या । व्राच्यवारवाह्यवारने क्षर्'न्यहरा । दिवर विवाह्य मुलानेब्रकेब्रति ।नेवाबाधानुतस्य क्षावेन्यां ।नेवाया ष्ठग् इंके न्रास् । न्यक्यं तर्भस्य ग्रास्य । न्राप्ति प्रमा

स्त्रान्त्रात्ता । त्राक्षः क्षान्त्रायः व्याप्ताः । व्रित्यार्थः व्याप्ताः । व्रित्यार्थः व्याप्ताः व्यापत्ताः व्यापत्ता

ह्राचर्ड्द्रभीकारकाक्कराराताक्षण्यात्रम् व्यक्षण्याः ।

ह्राचर्ड्द्रभीकारकाक्कराराताकण्यात्रम् व्यक्षण्याः ।

ह्राचरक्षण्यात्रम् व्यक्षण्यात्रम् व्यवक्षण्यात्रम् व्यवक्षण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्णण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्णयात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम् विष्ण्यात्रम्

तुःरक्षछन् म् नद्रश्चा । प्रश्चा । प्रश्चा चन्द्रश्चा । प्रश्चा ।

ग्वेशशुक्रिंगवेर्वेर्त्र्वरा [ग*रु:ठ:'5':र्ह्स'२:'२५':5|4':र्ह*ि| | **दे**'त'र्स्ट्र'याद्रस'न्युस'यार्द्र' । । गुरुग'तु'यदे'यदे'दें द'न्यायायर्वेद्र'। । न्देशश्चर्यास्त्रम् व्यायास्त्रम् । विश्वरात्तिस्त्रम् विश्वर्यात्रस्ति। दे'लाबाईर'प'इय'ग्रुब'बाईर्। । धुग'क्कु'बाईव'ब्ब'ब्रेंग्बरारु'ग्रेस। । व्यया ब्रेंन्यने पाने व्यापाने वा । ब्रिंन्या ब्राम् केन्य प्रित्पा केवा । नि मान्देशपाद्यान् शुक्षावर्षित्। वित्रान्त्वशत्नाद्यात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्व विश्वशाश्चिरःश्च-द्रितेवर्षायर्था । इतापत्त्रेरःश्चरः द्रिप्तिश्वशादायर्था । ने'सम्मन्याम्'इसम्बद्धायार्थेन्। । विश्वप्तुःयकेन्'र्ज्ञेववार्धः त्तु। । महिकाशुःस्रायतः त्र्मेळे व वात्यः ततु। । महास्रातुः स्यायः ह्युप्तत्। |ने'त्यप्ततु'च'द्रअ'ग्रुअ'वहिन्। ।शु-ने'र्नव'प्परायका'वहा वृद्धवानेवात्रहेम। विद्याग्युत्वाव्य। त्याकुत्रायाञ्चया क्रिक्रवाविषा छात्र स्वाया केव्या पानिषा विषा विषा स्वाया हिना पानिष्या पानिष्य पानिष्या पानिष्य पानिष्या पानिष्या पानिष नर्डे स्रच्यान्त्वरुष्कुष्यर्भावर्षिक्षित्रे नामार्थे स्रम्युक्तार्पान्ताकु **हॅ**न'त' तथेन'त्रवा गुर्ना कुर' चर्' चुर' पत्र । हि 'सु' पत्रि 'ब्रॅप' अ' झ' रे' अ' <u>र्मः यहता विविधक्तवार्मातार्थेक याञ्चरात्रयापीवा वृत्रापया</u> श्चिष्यः तर्दे त्रायते शुवार्षे वादेते श्विष्या श्राम्य विषयः पर तर्षा नेरः तर्दे दः राप्तिवृत्र्भीतग्राप्त्रप्रम्म कराष्ट्रप्ति । क्राग्राप्त्रप्राव्याद्याने स्राप न्नः बहत्यव्यक्तं क्रं गुनः तर्ने नः पान्नि वृष्टिनः पान्नः । हिः सुः पायनः हेः मर्द्धवायान्त्रवाञ्चेत्राञ्चायाया मान्द्रते स्वया त्रायः वियापञ्च रायान्तः। याववः षरःरशंद्धरःराश्च केष्वात्त्र्वापित्रं कुलार्वे न्रामहत्राहे हे न्रामा वेतः ग्रीः

मान्यस्य न्यां म्यां न्यां न्यां म्यां म्

### 到別、別別、大型、日内、強工

क्'र्झ'गु'द्र। हे'पर्ड्व'र्झ'श'र्स्सरा'ने'क्रेन्'पावत्त्र रः ग्रॅन्'रा'र्ख्या'व्र'
प्रवृत्त्र व्याप्ति व्याप्ति हेन्द्र व्यापत हेन्द्र हेन्द्र

मिन्केश के द्वाकीन्द्वा के सुन्दिन्ति । त्रि हिन्दि श्वा के सुन्दि न्या विष्य स्वा न्या विषय स्व विषय है स्व विषय स्व व

म्र हुरयरपरिष्वयद्यस्यत्तुन्। विद्यः म्र्यस्यर्ग्यव्यत्तेन्र ळ्याया गुरा । व्रवसार्धेन स्वापति हो सवान हो। । श्रु तने में वापया मते व्यवाभेदायाँ । यन्न प्रह्मिया उन् व्यक्ति प्रमाया । र्रानेग्नुवरातकरायरातकत। | ररानेग्नुवरायराय्या া খ্ৰান मन्भे कर्यम्रव्। नियमित्रे निश्चन्ते त्र्रायत् स्था 19व दान्तर्यम्पन्गुन्रत्रस्य। विवासन्तर्यम् सञ्चा । ग हेवा र्मेंदे सेयस प्रत्येत इस तहेया । क्रे के प्रत्येत हैं व स गुर तहेया । · हैं : वेर : दें व विषा व हें पार व । हिं त न व । या ता ता तो वा पार ता व । विषा व व व व व व व व व व व व व व व त्रिरत्रागृहेकायेन् में प्यम् तर्स्या । त्रिरत्रागृहेकायेन् स मॅं व। । गरेव्याविका हर तह्या झॅंडा अर तहता । गर्या यह व **र्**डेरबेर्'र्डेरबाग्रुर'रक्षा । पर्ग्'ग्वर'र्डेरबेर'यार्डेरब व। विराक्ष्मार्थययार्ग्रास्यात्रस्य। विषयपार्ग्राप् क्राप्त वित्र वित्र प्रमान्य वित्र व

ह्याभुरह्म् वृत्व | भूक्षप्तप्त्वित्तर्वा | क्ष्रप्तव्यक्ष्या | क्ष्रप्तव्यक्षया | क्ष्रप्तव्यक

प्रस्तानित्वा विद्यास्त्र विद्यानित्व क्ष्या विद्या विद्या क्ष्या विद्या विद्य

 मिले व्याप्त स्थापति क्ष्री प्रत्या क्ष्रिया स्थापत् क्ष्रिया स्थापत् क्ष्रिया स्थापति क्ष्रिय स्थापति क्ष्रिया स्थापति क्ष्रिय स्थापति स्थापति क्ष्रिय स्थापति क्ष्रिय स्थापति क्ष्रिय स्थापति स्थाप

# श'मे'देंन्'छे'सूना

व्यंश्वाः द्वाः वेद्वाः व्यापान् वित्रा वित्राः वित्रा दशहा अर्पे पर्पार अंश्वरामी हैं अपि पर्टे व वर्ष वा विर देवा विर प्रविष्यात्रे स्वाप्त्रप्रस्वाप्येपस्याप्ताया सुर्वे स्वर्वास्त्रे स्वर्वास्त्रे स्वर्वास्त्रे स्वर्वास्त्रे श्चार्यस्य द्वार्यस्य विष्यम् विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विष्यस्य विषयस्य विषयस्य विषयस्य विगानिषाञ्चात्रमञ्जूनायाय। हेप्पर्वनगुरुश्तुक्राञ्चारमञ्जूनपानायानः Rदेर'ब्रॅंबरतु'च'त्रुन्'कर्'त्र'र्क्ष'च'तर्देब्'व्'तर्देव्'वेंब्र'क्षे'त्रात्त्र् वसवर-पु:र्सरपायवा हेप्पर्वदर्भनेग्ररप्तिष्वयाप्रम्भ नेव्यप्त कॅ'ने'ल'के'लक्ष'पञ्चर'पॅ'चुर'प'५व'हे| ब्रेटिंग्डेलरकाकुकाक्षे'रण्याचीका षातुवारायापादावद्यार्थेदाक्षेत्रेव्यानेदा। छुन्यराहेपाईवाक्षेत्रायारवादा बेरप्परिःस्वाज्ञुस्यनेःभेवापातरःसेन। नज्ञायाभेवावासन्मानीकैःसम देवराविरानीषु नवाहे भेवादे वादावाद्यां भेवापाया क्षा क्षा कं या सुन्या विना हो र विवादवाहेग्वद्धवायान्द्रवाहे। इत्याद्धेन्याविन्यान्द्ववाधेवानेन्या मा हेर्व्यक्षिव्यव्या हिन्दर्मिने दिन्दे में स्वास्ति में स्वासिक स्

म्बुरक्षमका हिन्यान्त्रक्र मून्ख्य रीहे पर्वक्र के वर्षे के बावक के मेरपाय। भेवपुतर उर गहुरकायय। व्याहर विगायमें पाक्ष सुतिः न्न्यस्युः र्यन्ष्यस्ति । स्वाप्तक्षाकेन्ने गात्वस्यन्तावास्त्रम् क्षिः त्रस्य प्रमत्त्रं सुन् हेराय त्रा हिन्दु तुः विषा सुन् व गृत्वा प्रम्या भिवितः ब्रिंद 'येद 'यदे हैं ज्ञान है या तर्ना या स्या प्राधिन या वया है ज्ञा · **ๆ**१४५२ वुरःरदे:४५ 'ग्रैशंचर्ग'ने'हे'त्रं अर्'रूर्'रूरः ब्रायर वुराहे' न्याने स्वार्ति व स्वा **६ स ने ग्'** प्रेर पर धेव व अ हे र प । व त्य व र धेव पर र है र ग्रहर । **हैन:दे:८६६**४मीश वे**द**मीशनक्रमशन्त्रण वरावनः मून खना है द ने'व्यानेन'में'अ'र्से ग्यायर'कूरकी:सुर्से'ने'र्स्ग्याय ग्रेग्'न्न मिनामिनिनामिनाञ्चना हे व्यञ्जला व वाल में वाला राज्याना

ष्ठाः स्वार्त्ते स्ट्रा | विष्णु प्राप्ता स्वार्त्ते विष्णु प्राप्ता स्वार्ते विष्णु प्राप्ता स्वार्त्ते विष्णु प्राप्ता स्वार्त्ते विष्णु स्वार्त्ते स्वार्ते स्वार्त्ते स्वार्त्ते स्वार्त्ते स्वार्त्ते स्वार्त्ते स्वार्ते स्वार्त्ते स्वार्ते स्वार्त्ते स्वार्ते स्वार्ते स्वार्त्ते स्वार्ते स्वर्ते स्वार्ते स्वार्ते स्वार्ते स्वार्ते स्वार्ते स्वार्ते स्वार्

न्ध्रेंन्'नहरा | बर्ळव्'बें'ग्हेन्'बेन्'न्यवावार्वे नहरा | ब्रॅब'ळन् तरी | सॅन्ट्'ल्ल'क्वप'क्य'नेर्| | लग'न्ट'ल अरु'वर्क्ष <u>वित्। । त्रत्रिया देवा ग्र</u>न्ति के ताले। । शुर्वार्यून तुत्वा त<u>रा के ति</u>रास्तर मन्या । न्युन्यं व्यव्यादर्ष्णे यायायाया । तेययायययवर्षः महरामकार्त्रे वामरी । विर्पारायराय बुकामका गृहेर् वाहु ग्वा । मा हेपर्दुव् छेव् पॅति विषया हुए हु। । भिन्न वाप ते छ्या या वृत् व्या र्देरवा । ५ म्हें पर्वं ब के ब में वा प्रमुप हु गुर्वे वा । प्रमुद है ब के ब ग्वर-पुंगरेंग। विदावदाया। हेपईवाग्रीशक्राक्रानन्विव हुसारायायायाया न्रान्तित्र देवा हेवायाया इत्याव हेन् प्रायायाया हुन मन्प्रते है र हिन् की नारे र प्यन् की न में ना हिन् हुन रें ते तु संस्कर्म ह्र लाई प्रायम् वेत्। यक्का त्यात्र लाउ मार्टे लाव में विद्यापान न्यात्र <u>ने प्रवान भूग वृद्ध मुख्य व्यात है वा हे बागु वा पा प्रवा गाय प्रवा व्याय है विवा ।</u> वव्यगुर:5्षशुरश्य।

प्रताय वित्र में स्वा क्षिय क्षय क्षिय क्

गन्त । । नकुत्राहेन ग्रन्दिराबी गन्ता । में हे गन्दा श्री गन्दा श्री गन व। । तरुपति वर्ष समारी । विवप्त वा श्री र्यं दे। |बैंक्ट्'ब्ट्'क्ट्'ब्रैंशबेंक्ट्रिंग्ट्र। |यक्कं'वाक्ट्रेट्'कुट्'वेड्'ब्रे **वैया ।** छन् धुँग्यान्पा ठन् शुँखाया । पत्य पॅन् ग्वेह यशुः संयह यया ह्या | तर्जे पावया स्वया की वर्ष | रूप हिप्प है प्रज्ञा सं म्ब्रुवा | ने अत्राक्षेत् इवकान्त वे वहतावन्त । मकु तावहता षर्-प्रायेत्। । यहत्येत् १ वित्रायते कुः वर्षे तरेत। । गरेन **बे**न्'वृक्ष'व्या'त्र्जें'त' इवस् । । ८ व्'र्सेन्'याशुक्ष'श्चे'या वस्त्रश्च' ८ छुवस् । । न्याने न्यात के राष्ट्री राष्ट्री राष्ट्री राष्ट्र राष **श**त्रय। । पक्का सम्यय प्रयाग्य क्षेत्र क्षेत्रया होता । विवासित स्वराधा होता । मि । न्याय क्रें र शेख्य कें या व्याग्रन । । यने व्यायने या र स्क्र नदेश्या । न्याकेषाययानुष्ट्रणायायेन्। । नकुष्याकेषाञ्चन् वृष्य ब्रायम्। |न्याळेग्रंक्तामित्रं व्यात्र्यम्। ।माहेम्यर्ववागरेग्री चग्रदिन्थय। । इन्दिन्ध्यया उन्दिन्य । द्विन्यी हिन्यी म्बोत्रम् । श्चान्ये स्मेन्न म्ह्यां मेन्या । न्न क्र वावाया श्चात्यव्यह्ना हिन्न क्रिकीन्ना श्चा हर्षेत्र । हर्गानुत्यस् बेर्'ऑर्'न'र्ग्रा |र्ने'नर्रासु'र्कें'लॅग्'रा'त बर्। |व्यासुग्राहें हैं' इंशियान् र्नि । पश्चियायिन हम् ज्याया । यदा , क्रण्यातुः अति । वाक्षावर अत्र व्यापित विषाप्त स्थान विषाप्त । । पर्नेशविद्यतेयापायवत्वसञ्जात् । प्रदेशपादिञ्चन्यस्य स्वापाद्या

हिन्द्रा | प्रत्याञ्चायान्त्राव्याच्याः विश्वाः व्याच्याः विश्वः विश्व

त्रवाहरा होता हिंद्राया स्वाहरा विकास स्वाहरा होता स्वाहरा होता है स्वाहरा है स्वाहरा है स्वाहरा होता है स्वाहरा है स्वाहरा होता है स्वाहरा है स्वाहरा होता है स्वाहरा है स्वाहर स्वह

र्यर नशुक्षकी तन्य निविध्य निविध्य । विष्ठ देश हर परि र्षेट पर्य प्रक्रिया । म वाते ज्ञहा दे र तुर द हा हु। | दें द बे द 'के पी पाप पाप र हें दा | ति दें र नर्वहर्न्दि वहर्ज्वया । । ५८ यं से प्रतिश्वाचना करा पर-<u>५</u>'प<u>र</u>-५'सॅ'सॅ'वग'सॅ| | **ब**'बर'श्वर'सु'हर'श्वेर'ठव| |पराव**रा** विरः श्रुं पः वरः वदाश्रुव। | देवा वः तुः व्रें ः क्रं क्षान्ते र । । ज्ञा वहार् स्रं हे हुद्दर्दर द्र्येग्य। |दे द्रयस्य या क्रेस्य देख। । पर्येद द्रवस हन्यातरेन्यावर्ने । । न्यायराक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्रा 5्षां भी नश्र तर्षे पार्च । वा अरायपा पी वे रात् वे पार्च । प्रस्थ अरा बैट ब्रुं न वट व अब्रुवा | देवा व सुर्वे क्रुं के संजीता | । श्रवासु ने पान दे **छिउ'**छर'ग्रा । गर्डग'यर'र्र्र्र्स्य व्या । पर्डग्य मार्म्बर्भिन्दिरेखंबा ।दिविन्तिरेवर्सेबर्भेन्श्वावरिने। ।न्नासं रेवरायाञ्चनापद्यापञ्चर। । परानुश्वरायारयानुगापञ्चर। । वः बर विगारमासुर मायहर। । प्रवायक निर क्रें च वर वहा क्रेय। देशक्तिक्षे क्षेत्रके क्षेत्रके । विदेशको निष्या में क्षेत्रके निष्या के क्षेत्रके निष्या के कि कि कि कि कि कि यन् निनेष्या म्हारार्या भु वहण्या राष्ट्रा । र्राष्ट्र प्राची कु नाया महिष्य यते। । पर्नेराविराभवा इसवा देवा भेदा । दरा चरा कूरावा लातहरा । परानुत्वचुरायकालातहरा । वासरासम्बन्धिला ' ८६८' | प्रवयक्षत्रेर'सुं प' वर'वया सुवा | नेवाव'स् वें स् धैर्। ।विर्-रु'ररखुर्'म र्नेर'यत्य। ।गया हे सेवस मञ्जेर प्रस्

या विवा । विवादायर्थर व्यवस्थान प्रत्न हीत्। । स्वीदार्थर हीत हु वैराज्ञिर। हिषरासुगारञ्जर राष्ट्रेगारदिलय। । ५८ संर रहता रेश्यातर्देन् प्रशास्त्रा । परानु प्रज्ञास्य द्वाप्त्रा । पर बर र्गः र्युः न्याया व्याया । त्याया भेरा क्रिं पावर व्याक्रिया । देवावा त्रिंश क्षेत्र हेरा हेरा विवय खेन हे न वर हम केर हरा केर । रर हुँद'रर'मैराके देद'रर। विधि हुँद'रा हुद'रिक्ष । गुद'रर'यहद' यानात्मात हुना विकास ते दे वान्नाहाता विदायहो वाहें वाया स्राम्बर्गास्त्रा । वित्राम्बर्गास्त्रव्यास्त्रव्यास्त्रव्या स्त में द्रण द्वाया । दे हिर गुन द्राया वास्त विदा । विशेषश महारामरा नेदात्रा केर्। । मरा सरा पैरा हुँ मादराद रा हुँ र। । देश **ब**र्सुर्से क्षेत्र के त्रेत्र | | न्दे तेयय की न्दर व्याप्त के | व्याप्त क्ष श्वराया हो त' के त' हो सा | श्वर प' इस सं कर कि त ने से त है । स्वर ब्रह्म विद्वार विद्यार र्श्वराष्ट्रियाणुरात्युवा विद्याक्षेत्रते न्द्रवायात्री विनायरा **ड**्राया इवरा श्रेका पश्चरका । श्रु अप्राप्त प्रति नक्ष क्रेराया । प्रेगे परा श्चन्यसन्'व्यवस्तु। । तम् विश्वायम्यक्रमः इयसः ग्रीमः ग्रह्मया। हेर'प'यन्ग'में इ'पर्यार्चेया |ने हैर होन 'य'द स्याप'याया | ब्रंया मिति हेव परि मित्राव या गुर्म । | मिनात देव हे के या नवर पर हा। बेराव म्बा र स्यापाय हे पर्दन ग्रीश रूपि गरेर रे विग प्रवेश है श्ररणर्वे ररायाग्वराव्या क्रिंग्ने व्यने वेर्पर क्रिंग्वर व्याहेका छेर्

बिर्यानेत्राचीरा। विष्णान्यक्ष्मीय्यायक्ष्मेर्यान्यक्ष्मा ।

बिर्यान्यक्षेत्राच्या हिर्यान्यक्ष्मेर्याच्या हिर्यं विष्ण्यक्ष्मेर्यः विष्ण्यक्षेत्राच्याः विष्ण्यक्षेत्यः विष्ण्यक्षेत्राच्याः विष्ण्यक्षेत्रच्याः विष्ण्यक्षेत्रच्याः विष्ण्यक्षेत्रचः विष्ण्यक्षेत्रच्याः विष्ण्यक्यविष्णवेत्रच्याः विष्ण्यविष्णवेत्रच्याः विष्ण्यविष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्यवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्याः विष्णवेत्रच्य

व्यक्षत्रं व्यक्षा | विद्राय विद्राय

हुरापेंद्र हुत्रु हु पाया । हुन् हुना हेना यदे हो यह राद हमा । हुन् सनियान्ये स्त्राया । कुन्दन्येन परिक्रिय दिनायसन्। । स्रायदे ট্টব'ক্রমঝ'নের্গ'মা'না |ইজ'গুর'জুব'জন'ইন'ম'নের্কনা |ব্রু महित्रति से त्यान्ये सिन्द्राया | विद्यत्तु स्थेन् पति स्थाने विवाय स्ता | नद्रशासन्द्राताक्ष्याता । वर्षान्ताक्षा रमानुतारह्रमात्रह्रमा हिञ्च पहिलामा । प्राथम विषय स्थित हो प्राथम हिन्स स्था है पा बह्री दिवस्व वास्वर वेशराया । क्रेट हे गुद्र या ह्या पा तल्या । इ. वर्ष्ट्र वर्षायान्ये प्रस्याया । इनः हुन्याये ३५ र परि र्स्नेया विवायस्त्। । तत्रारीयशयस्यायुरायस्तायाय। । स्थायरे वासुता चतिवाञ्चरायातकता । साम्बितिकेतान्ये मित्रामा । त्युरायायेन् धते क्रिंय विवाय हिन्। । वन्य वार वा क्रेन् दुर्द रामा । गुन विवेर <u> ५५ मा न कर्यों तकता । ५८ तेयवाद के तार्वर केवाता । वाक्षर वेद</u> धते क्रिं विष्वहित् । ब्रूट पार्ये करतकर पाया । क्रिंच प्रेर र দীর্মার্মানরেল। | বুরান্দার্মাণ্রমার্মান্তন্দু। | মিল্বিট্রা पतिःकुष्या श्रेष्ट्राच्या । व्हितःद्विस्यासदेशपतिःकुर्याण्डेपता। गर्भिन्यत्रेन्य्याम् अवस्थित्र श्रुवा न्यास्याम् त्रियाः स्या दिव। । परायान नदायमन वापिते पूर्त मुज्जा । नेवाप्य दिन क्रिश्युग्यरः बर्दित्। । हा बरी देवः भवः ध्यायहेन् धरा । १९ वरा ५८ हॅग्यापान्न त्रामणीय। |र्वायहतापराग्रापात्यार्गार्वया। विश्वान्य प्रत्याया संस्वाय रात्त्वश केन्य त्रा वर्षेत्र वर्षे

र्में प्रमुख्या हे पर्वुवायापाराय वेदापति यक रापा सुरावया हे पर्वुवा शुःचग्रायविद्यं स्ट्रिस् स्ट्रायः सम्बद्धाः उत् प्रहरः है। स्याकीर्यास्यार्वेयार्वेयार्वेयार्वेयार्वेयार्वेयार्वेयार्वेया यार्चेद्र'द्रा न्यायात् श्रीप'येद्र'यार्थ्याची'र्द्र'व्राष्ट्रन्याच्या पळेद्रपंत्रारकाकुर्पाताम् वेष्याया नेताकी सक्रिक्रिंद्रित्रहेर मानेनामुर्दिन्दे स्प्रिक्तिम् स्प्रिक्षा ८व'रूप शत्रुपश्चित्राधिकाव्यविषातुरः न्यरः विषातुरः तर्ह्याः"" बिसर्बर पर्नर। दरे सुरका दुर या सामर हर देग वुर दया द विद् न्नान्सर्धे अर्च द्रायाष्ट्रिते प्रत्यात सुराष्ट्रेद प्रति व्यक्षा स तानेग्पन्देष्ट्रंग्याञ्चरासुग्रस्केन्द्रगुण्यवाचित्रम्यादेष्य मस्वित्रसंदेशिवा गुर्ने हुन्ने । नेर्यान देन विवय ग्रीन्निया र **छन्यायाविवयाया अवार्वेवायायरकन्यावुन्यन्** क्रेंश्रिवाकीयम्बर्धाः वर्षात्रम् वर्षाः र्दिन् बुक्ष ब्रैर तर्रे विद्युं वृद्य दे त्यक्ष पर पुः पव्दे ते प्रत्र त्य त्य प लाब्रेन्कॅंद्रेक्षप्रमा न्न्यंदिनेव्द्वत्वत्वाके ख्वाक्रेव्याम् नवा क्षेञ्च पर्गुन्षुन् पुन्युन्य प्रायः त्रायः विषायत् व इंश्रेञ्जे व विषा हुनः य र्झें अनु सप्पेने हुं न्या भेना भेना मन्यान मानि स्तर **८५'नेर'मबा** सर्वेद्याया वस्यान्ति व्यायान्ति । वस्याने प्रत्याने पर्वेद्याया नशुप्तालार्द्रे दर्शाप्त्र स्वर्ता प्रति वर्षे स्वर्ता वर्षा हे खुन द्रे प है। सुरावसार्वः भाराभी वेरायरात् नुगायाया हेर्यह्वा गुनार्वाते व्रवायान्

#### धरि है समगुर दर्ग ग्रुट लाला।

गद्रश्रीत्र्त्रेद्रायायहेदायाः । । इत्युत्रायत्वेयायदिः तिः देन्। विनायन वस्य सुक्ष क्षेत्र हा यान केता । क्षेत्र क्र नवसन्वन नेता **छ**्त'ञ्जेब'ञ्जल। । वनलासञानतुन् हैने रंजळणानक्षेत्र। । नयान**ते** ह्रसायानेसामेसामेसामेसा । भूसायाचर क्रेंट्रायान्याचा । **प्रया**न्याची इत्। इत्रव्यक्तः व्याप्ता । त्वायः क्रेवः वरः छत्। अञ्चलः वरा रेलाई हेन्'येन्'गुन्'येन्या । नलानुन'ठन्'सु'नुल'दम्नारणपायी । **इ**धार पर्तातक्षायक्षाया प्राप्ताय क्षाया । स्वतास्य स्वर्धाय विकास पत्तर' । मुःवन' में हेश्यत्त्रश्यायर'। । श्रॅन स्थि युर्वे हे न्नर तह्रणात् है परा क्षेत्र। । नगत् स्वराध्वर देन ख्वा ने वा ने नियमन त्र्वापाने हं वानेवा । सर्ज्ञानक वेववायायान्यन् । तर्नेतः परावर्ष्यायर्थयं संकेत् । स्वयाहितः स्वतिवात्रातिकारो । हॅग'चरि'तर्वे तर्'चग्ग'च'र्चबा ।त्रिरचरिक्क'वळं देशके र्वेशके वेश ष्ठ्रणाय संबद्धेया परि संब थिया | नियान पार्श्वेष या बेन् में सामान क्रिया। श्वरापरतहेन परिष्ठ श्रेश । पर र्रेरिश परिष्ठ श्रेश न्न्या । मञ्जा अन्त्रक्षिकं इत्येषा । क्रि. तम्मा अन्य दिन्न् हें म्य न्म्या विगाये दूर्रि इंद्रायेया । न्र्याये दे तहे द्राया द्राया न्न्या । सन् न्न्यन्तुः अक्ति विश्वा । अयम् अयम् सन् मन्न्न्यः विश्वा न्य । यहेशतहेन्यत्रप्रम्पर्यत्यं विद्यान्त्रकेन्यंत्र ६व। १६वायामः बस्यायाश्चर्यात्रा ह्या । इत्यायश्चरयाया। श्राशेष्ट्र इत्रोश्चित्रं क्ष्याया स्थाया

**६ंंहें ५००८ वें बुर्धार हें वा विंग्नियं पर दें वें वार्य वें वार्य कें वार्य केंद्र वार्य केंद्र वार्य केंद्र** विया श्चिम श्चिम प्रमुख्याय तस्याय सम्पादी । हिः सायु स्ति स्वाया हेपिय। विन्धेते न्वेन्या विवास मन् विवास स्तर् म। विवाय हेरि से हें वा स्वाय द्वर हुन। । नवा च ते र स कर हुने र्षरक्षेत्। । तत्रवाप्तवापन्याकुन्र्तियास्यरापते। । त्यवापन् क्षे <u> इत्रार्थे वरा पढुरावर्षे। । वर्ड्वा वी वें रासु रें दाके दावा । विदाद रा</u> **६८. गुरायसम्बर्गस्या**यस्य देवस्य । स्यात्रास्त्रेत्रम् स्यात्रास्त्रेत्रम् । नन्गःस्वां वा विष्याचि स् श्रुराया गुना हिंगान् सुनावास्त्राया মন্ত্রুব| | ষ্ট্রিব্'ক্ট'অ'র্মাণাশমানাশ্ব| | ব্রুব্'আত্মীর্'ব্মন্দ্রীর্ षद्र'डेर' । अ ज्ञां याच्य रा छैरा ज्ञां या य रा यहर्। । छै सुर्स्ट प्र तकरानतिः सूरापात्री । श्चाराष्ट्रायुरार्द्राञ्चरायया । रेगापार्ट्रवाहेरा बान्यायहर्मा । त्यु पार्येयवाकी कें त्स्याहे। । कु वर्षे दे ज्ञापवा प्रवेदार्राया । तहेवाहेवायाकी में वाया इसया । हिरान मध्यस्त्रं स्कृत्या के स्वाप्ति । न्या स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व म् । त्यार्वेट्यस्यार्वेद्वस्यार्वेद्वाः । त्र्ट्र्यस्य स्याज्ञस्य हॅग्यायया । ज्याहेदाननर में ग्यार स्वायाय। । ज्ञाय दे दूर तुः

व्याप्त्राच्या । वार्ष्यम्याय्यायकेन् व्याप्त्राच्याः ह्रित्तां त्रार् हे गरा नहीत। विष्यु सुर विषयि हित् हिताया नहीत। चिंगानी कें वितास अपना । निते अना निते समा के नाम के समा । नि न्य राष्ट्रेन तुर्द कुर्प्य हैन्य। बिराय इवराय न देन प्रत्य हुय। दर्भाष्ट्रश्रिं र व्यापें अर सर्। | द्वास्त्रण क्रुकेव् में दे क्या नगर |अप्येत्राक्षे गुरुष्टर्यायलग | अप्तर्दर्यप्रते वास न्। १इन्विन्बेन् देश्वास्यय। १८न्या वर्षन्यव्या बेर। ।ॐरु'दे:बेर्'यग्रीर्'रु'अ'यर्'बेर्। ।यग्रद्देव'उव'ग्रीन्न'य ला वित्यक्रियत्त्र्वेयत्व्ययक्ष्यं । श्रुवक्त्र्रायरत्व्ययं भ नैव क्या । भ्रास्त्र व्या अपन्य क्या विका हैं गय प्रायुत्रायय। हेप्यर्श्वम्यनेशनि सर्प्रप्रिं भेर् की मार्श्वम्य त्रा क्ष्णायर्वराषेक्ष्यराप्तराप्तरी न्ग्रेंब्राधेवावतरा টুব্'গ্ৰীকালনকাকব্'কাট্টব্'নাবী'এম'ব্'কুব্'নেরুব্'নাকা ব'রুব্'নী**র্ব**' यक्ष्वारा प्राथे व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व ロスロ数対対は対 म्याकी इतारम् रवा हे पर्ववकी स्वाहर विकास कर्ती है ए परिया पर सुर पति'लॅं चुरा' न व 'हॅ र 'कूं व 'पं 'ठु र 'खे प' कु ल' र्य को को पहे र 'पि ते' गृतु र राख 'के गेरवर्गर्यस्। अभिर्दर्भेक्षरम्।

## म्पना दुनि स र।

ब्राम्यान्तु हेम्पर्वव्यात्रात्रान्ते कृत्राध्यात्रात्रात्रात्रा तर्ते रः अश्वोत्वे रिन्शीर्वे वृष्यं श्रुनः वृष्यं । ह्यु वृष्यं श्रुकः र बाह्यनः पाप्तहुः निर्देः हैर न्ययाष्ट्रन यार्चे वन्ते। रे विषाने हे तर्ने न प्यवहिन नुपन् षया मर्गा रक्षक्रन्य गुन्न न्द्राय क्षेत्र्य न्त्। न्कुय कुन्न ्देग हुत **य**तिष्ठ्वरस्तुन्यः संदि 'न्यायाक्षीं म्म द्वारा ने ने निष्ठ प्राप्ता संस् मन वित्रुवान्त्रेवान्यवातुन्कुं वर्ष्ण्यान्यवात्रेवे इन्दिर्भित्रवर्याम्। न्इं न्द्रायास्य निवेश्वेद्रायास्य न्राया बारतानीयग्रादाविवायत्याकुषान्चीयकृषान्तान्तात्रेवराच्याच्या **8**वंदान्दा न्नां अत्रहेनर्ज्वं व्युवायाहेन्द्र-चिवाक्तन्याळे पायावाहे वया ब्रिन्-देवाबायान्यवाया नशुप्त्य ईन्'खेवाया ग्रेश स्वाप्त वा ग्रीन मर्दर्'र्यायययापिरेप्रर'व्या हे.सि.मसहेप्यस्यं र्रम्रामाञ्चेयास्य मतिःल ग्'द्रतैःख्वग्'त्वर्रेन्द्रश्चग्'हे द्'चुर्यःख्य्'ख्यां स्त्राप्तर्य। हे मर्ख्द्राख्यां मन्ग्रीष्ट्रम्बन्में द्यार्थस्य स्थापन्द्ये त्रुग्याप्त्रा <u> न्यादायस्य विवाद शुर्रातुरा। श्रुः अध्यस्य स्वार्य वर्षाः श्रुः यारावर्षः वरः यार्</u> नव्यान्दर्निव्या सुन्ययान्दे में सुन्ययान्दे में सुन्यया न्यं वाश्चेयाप्पापार्ष्याः रक्षायाभ्यापार्षा विश्वरापञ्चरः प्रत्रेष्त् 'यव्याराख्यां वृद्धां चे प्रवृद्धां चुवादाया तर्ने' मा हे न्यापरे प्रवादि प्रमान्तर मा नित्र के के वार्ष मा नित्र के कि वार्ष मा नित्र मा नित्र के वार्ष मा नित्र मा नित्र के वार्ष मा नित्र क

ण्टाव्यर्ट्स क्षेत्र क्षेत्र

म्प्रक्रित्यत्श्रीयश्चरिद्वत्यत्र्र्वेरः। । त्यश्चर्चेदः <u> ५ वि ८ वर्षे ५ वि १ वर्षे १ व</u> सपन्'यायकैशपन्'वॅर'वुर'। ।तरु'तहें'तेवप्यते'वायेरप्यव्रत्या। मुक्षेण्युर्रर्र्िन्यर्षेत्रप्रकायन्। । श्रुक्षेत्रयन्त्रियक्ष्यक्ष्र व्या वियेत्राप्तित्वेद्यायनी विदेगाहेद्यायनिष्ठियायन इत्या । गर्यम् तर्दम् येत् परिष्ठान यते । यावस्य दर्दन् न्ये छ य मञ्जामस्याया । तेयसम्बर्धन्यते प्रतिन्ते क्वें स्मिन् । ब्रु ८५५ न्य कुल'शेके'नरी । विश्वकुर्सेन'राबेन'रास्त्रनी । वर्षे क्रुंसल्स्व रीयवायीन्'राधी । मन्यान्य विश्वन्य न्यायन्। । मन्यामन् सुन क्रनाप्तरम्यप्रयान्। विवागन्युं व्क्रन्यक्रियुवान्। । अव न्ना इंकाक्रन्यक्रन्यक्रन्य । अन्ति क्रियक्र इन् क्रियने । म न्वाके तारमारा । मु हुर बर पत्रेयगत देव मुका । तिर्दर -८ द्यारोबरातार्हे ग्यापराव। । त्याद्यापरापर्रे परिस्थातर्हे र विवा | नरापाश्चिमवाबकेन्। प्रवासन्तर्भना | न्रेवर्पिरेशवा व्यवस्थित्रात्रेया । तुःनवस्त्राह्नः हेश्यवस्यः हिन्। । कःवर्धात ब्यात्मिर्भाववायम् । वृद्दिर्भावयायस्य वयस्य ५५ त

प्या रक्षक्र-त्यक्षियायक्षर्म् मुस्याद्वित्यायक्षर्म् सुक्षर्या ।

स्वाप्तर्यायक्षर्यायक्षर्यायक्षर्यायक्षर्याः ।

स्वाप्तर्यायक्षर्याः । मुद्रम् स्वाप्तर्यायक्षर्याः । प्रवाक्षरः मुद्रप्यायक्षयाः । । प्रवाक्षयः मुद्रप्यायक्षयः । । प्रवाक्षयः मुद्रप्यायक्षयः । । । प्रवाक्षयः । । । । प्रवाक्षयः । । । । प्रवाक्षयः ।

हेन्न'यते'नगरखर'ई'हेते'नबर'। ।नन्नुन'हेर नु'नर'धरार्' हैत्। । सम्प्रस्ति हेन्या पळा न्या । न्या हुन् स्वाप्त्रस बर्म्स्युर्म्। सिन्गुर्म्म्रारम्बुर्म्देन्हेन ।हेस्यान्यरहिन् **ध्रम्भित्म। । अन्तर्कत्र्यान्यत्रिः जुल्यस्य अह्य। । स्यस्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य** भैंद्यायर्षेत्। विविद्यादर्शेते शुराम्ब्रुव हर्गे श्री प्रायम् । सन रे'८ ५५ रायदे'वव'रग'दी । रेग'रा'खे' नेश ब्रेंब'बेररा' । ४'ह्र र'र **धैन'त्रिंग्स्' | १**२ ह्रॅब्बराष्ट्री खैशेयाँन'न्न' । नने केव'नशुन नी <u> श्रृष्ठाच्या । त्यक्र्याप्यस्थिवयायाय्याप्यस्या</u> *ष्ट्रिः*अप्तरः। । क्विप्रपास्याप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्थाप्यस्था तके वेर्'नर्र्'हैरे'नड्र्'शेष्ट्रां । गुन्द'णर'ग्रेर'र्र'तद्र'नदे' क्षा । दिं ब्रेन् पावन् के प्रस्निन्त्। । प्रयम् पान्व्यव्य विष्ट्रिन् पान्ययः म्बार्मा । यम् म्ब्बाबुबार्मिनेब्देव् । विवयाबुविद्यारिकेवा हुन। न्दा । क्रें तर्रर न् म्यायि न न यया न मा न यया ग्री या वि

मेशिटश्राह्मी | इत्युंब्रांग्रेश्वर्यां इत्यात्रिःश्चर्यां विद्यांग्रेश्वर्यां विद्यांग्वर्यां विद्यांग्वरं विद्यां विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यां विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यां विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यां विद्यांग्वरं विद्यांग्वरं विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यं विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्यां विद्या

प्रवास्त्र स्थान स्थान

न्य भेता । न्यंत्र न्त्र न्यं न्यं त्र हें अश्यापे । सिया न न न न न मते सुर दर्भे व | विषर दर हे में विषय हुर या | रूप हे द सुर मञ्जूनकार्वि सुर वेर धेव। विवाद दे जुति विवाद वा वे विवाद वा वि बाहरत्वर्षेत्रसुग्यदेशस्याधेव। सिंग्न्वस्यान्यंतर्रहेसकेनिन्।। ररः बुर्परव पर तर्रे र तर्रे र विवा | विवा क्रूर के वायमर बर प री विश्वरापनः क्षेत्रात्में गर्केन्यर्ने धित्। निराधिराधिरा क्कें परे | अक्षा अर्थे परिवर् के परिवर्ष विद्या । अर्थे परिवर्श अर्थे परिवर्श | मुँ ५ भरे भरके प्राये | भू अंक के द रे भर के व्याप्त | मूँ ५ याने भवा है पा के ना विकास है में मा का कुर मा का किया में मा किया में में मा किया में मा किया में मा किया में मा किया में मा में मा में मा किया में मा में मा क्टिपानेन्। विविधामसन्वस्येत्रस्येन् सन्ति। विविधाननेपाकेपा भेर्। । मर्द्वः महार्द्धसान्त्रियस्य सम्मान्य । दिसार् ने महार्यः सम बेन्। तुःरश्कुन्हेरनदेनदेवदेवदेन्। विवादन्दन्दन्दन में बुग्यस्व बुर्या । ब्रें त्यन् 'न् में र्यान् 'ग्न प्या सेन्। । न तके नवात हैन वापतिकी नवान । ध्वारी में के त्रापतिका । हिंद्र प्रविव्यु रूप डिराधे प्रविद्या । म् इत्य के मेंद्र (पर मेंद्र त्या । लगवान्त्रंतराग्ने दार्यरा । मु मुरवरारा मु देव कवा । मूर कवा मजुन् न्वन्पर धैन भैनाई नन्ना विश्व मुख्य नन्ना नन्न छन्। परी मेतु सुया न्या गाउँ दे सुवा दायर प्रस्था है। सुत्र सुवा की व्यव्य की व्य मुंबराय्यक्रम्प्रतात्राच्याच्याच्चयाच्चयाच्चया

## मबेन्द्रम्म् चुम्बकुष्तु म्दर्भत्त्रवाद्वेन्द्रम्बद्धाः।

र श्रुः अ हे पहल हुन भरति । पुरु प्राप्त हुन स भेर दहल के श्रेन । पगत्र दे व्ययेन पति गन्य सम्पाद्य या। । सः हे महं व ष्ठग्रात्रात्राचरात्। विद्यांबेन्वापत्रत्वेतिः ह्वांब्रेन्य। विर मन्या अवस्य हेप इंदर महेप या नर्ता मन्दर यह देश से व कें श्चराप्रा विष्टिर त्रें यह धी नवर केंग् प्रा विरे हे खे व्यक्ति म्बराखन्यम्म । शुन्य दे कुल संदे हुन्य न्सर्स् । । ने प्यन म्वारा हेलात्स्या । न्वतायरा ह्वारा श्रुरवा सम्बंदरा । वदा वा स्व प्रति अव प्रण प्रता । मार्ने व व्या स्व प्रते माव प्रण ने स्र मावा। मन्द्रज्ञाञ्चन्क्रीकुत्रार्थेन्द्रः । । द्रयत्र्देन्यत्व्रित्यः इत इयम् | स्यापिरिष्यायग्यादस्रार्थेन्य | स्रायदेपग्राप्टेव्यव रुत्युव। । द्वत्यळ्ग् ज्वयस्थ्यग् रही । अग्रव्यस्य यादर त्यूवा बर तः गर्राया । देव वर बेर पिते पात्र बंद कर व। । है सः गरार ह्मार्थर्म् द्वार्थर | इ.पर्वर्विट्टर्मेश्वर्शिता | ने.मायद्वे.क. मका ग्रेमका में विवादी | रामिता कर्पित कर्पित करिया | प्रते मसन्ब्रिकाने प्रविषय वस्य ग्रम्। । नियानुमा प्रविषय प्रविषय व। क्विन्यः द्वन्यक्तिम् क्विन्। । प्रमुक्षभ्रमः द्वन्यतास्यः मन्यवा | मग्द्रेन्स्रक्ष्ण्यक्ष्यक्षित्। । विक्रम्मन्यक्ष

तुः म न्रायह्रवारा भैवाता । गुवान्या स्वार्वा कुलास षिव। । मन्दर्भवुव्यय्भराकुत्राधिव। । श्वीद्रर्भवा भिन्ते। । सन्मार्श्वेषषुन्ते । प्रतमार्श्वेप्ता बहुव व भे गहा । देव भव अता व कता व भे मिन । क्विं न पा की न प बहुव व यहें या | प्रवास पांच के द में प्रवास हे व प्रवास स्मापा । हिंद क्ष्यराञ्चात्रात्रवेरामर्गर्दः। | रर्न्त्वर्रः देशकुर्गत्रात्राय। | ह्रश्रायान्त्रवाह्मप्रायाः वाधिवा । विष्यादेवा उन्याप्यायाः वाधिवा गृन्धाकृत्रक्ष्याकुत्रप्तक्ष्याक्षर्यान्यान्यान्या पर्दर्। । वित्राहत् हे प्रार त्र्रेष्वयत् के । तर्दे । वित्र वा कि न विनावा । नन्नर्में द्वर्षेवराके न्द्रिरा । वर्ष्यवस्य दे हे प्त मबबार द 'पेवा । हुद'र्य बाद मा पहेद संबे नेवा । खुब बेद' बावतात्र्ति केंबाक्रेराया । । तथा नु प्रकृषाय बायन पार्व न वे न । । **१९७१**वायर कृष्य स्ट्रिंग । क्विं प्रस्ट र दिले या स्ट्री । व्यन्दिन्युत्रप्रते कुल्बास्य | | द्राप्तर्यम् प्रति क्रियास्य विद् **र्रः अगिरः द में दें भागानः कें माह्म अगा । माम माम माह्य माह्य** विराज्ञराज्ञेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष्यात्। विष्याक्षेत्रविर्वेत्रव्यवराधे वेव। वि

भेग्। विंत्'वेशवरादि'यश्रह्मश्राय विंत्'यश्रद'रद'रेश्य ष्ट्ररके। वि'र्सेनर्द्रविषयस्यस्य सक्षेत्रः यत्। दिः वित्रत्रेव यतः विवान् शुर्या है 'न् में व 'क्षें न'न है वा न वे न वा व वा है व' **製ないて、マジー** है। न्यन्रुत्यम्बस्यानदेश्चर्हन्द्र्यहे। देवहाहे मह्न्यापासुकार्र्भेन्पित्रस्य पराया रक्ष्म्रापित्रेषेत्रायाम्वव्यक्री ब्रु'याभेव'व। र कु'ग्रावसार्विरागरी सतुव दुर्दे र दिस्य **२व**,पचरम्पूर्के। रदेख्यायत्रे,वे,विरायराचीश्च,वाववर्गान्य मनते सूर् हुंता यर तरे त्या वेर् म यर ता सूर्य व ना ता सेरा न्रात्रित्। न्यात्रस्त्रिक्षाङ्गित्रस्ति स्वाप्तित्वा ह्या ति र ग्री माह्य पर्ता हो प्रारा १ ८५५ दे पर पर करा है पर्ह्म कर प्रारा श्रुयाप दिन् कुलन् न्हें पर्द्व लाय्य केरि हें या रान्त पा हुन पहें पर्द्व "" मुक्षप्तर्वेष्टकारी सद्यापरायायम् उद्विमान तुमाराया हे पर्व्वर्णीः **ब्रायक्षात्रवास् धि**न्'श्रप्ततीः ह्वां खातनी ते स्वाद न दर्वि 'न हा निवा गुन् 'न ने स्वादा से न 'न शुन् न ना" प्रवित्यह्री देशप्रवित्विक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्ष विक्षा इवा तरे निर्देशितवा चतुर देशे त्वा मेर मेर वाल्याया न्द्रशर्में तर्ने दंश ग्रेश तकेर प्रस्कार ग्रुर विरा न्में बाप ते नु शर्थन

स्थित्या विश्व क्षित्या विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्

न्यव्कीप्राय्यायायार्थ्यार्थ्यात्र्यात्र्यात्र्या ८ परः। । सुःरः ५ रः अव्यव्यव्यामाना दुते वरः मुन्न । मवदः वरः मने त्यायम् रुपा ग्रायम् उति व मान्ता । र साह्य में क्रिया है हा ह्म-पर्वेग्पर्व | देश्वर्ग्वप्यवास हे देशद्यव्य द्या | ग्वस्य त्रीय'पराव्याप्ययार्त्ते'हॅर्य। विप'र्ययं यरात्रसम्बन्धार्यरा राष्म्यम् दुते वर व मह्म हि स्व हर में हुर र हुर र्रत्र | देशतग्रद्याहे देशतग्रद्वेष | द्याहे सपर <u> न्रायक्रयं वाष्ट्रा द्रिव । ज्राप्राय प्रायम् या</u> म्मण्या दिवे वर्ष वर्ष । सुरम् हर ने त्र इरा दे विराध दे सिंहिंग त्रा दिवादवादिलेववाहै देवादवादिलेवा दिववाहेवाचर द्वा ब व संव माया दि ते दर दुर्भे । माद सामर परे ता या र साम माया द्वित्रदार्वित्र । क्रिक्षं क्षेत्र निर्मे हेन्या । व्यवस्य निर्मे सुःसंक्षियं वेत्र व्याप्त व्यापत व न्रस्थायायार्श्वेन्प्रया । वित्यस्त्रः हैरन्र्न्ग्यर्षेत्। ।स्र्र् हरासुभ्यान्विवायान्ता । हान्यायायार्वेवायान्ता । वाद्या शुपायम् संपद्धेव्या भिष्या । भ्रुष्यायके प्रयामम् या या ।

न्या द्वा क्षेत्र न्या क्ष्या विश्व क्ष्य क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्य विश्व क्षय क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्य

माञ्चा अहे पर्व व देव देव देव प्रमा प्रमा । ति पर या पुः कु न देव देव **६**र युग्यारा । भिः भ्रमाञ्चर पात्र यहा स्वया । वह र या या या र तश्चित्र'त्र'ञ्चेत्र'त्र' । विकारे ग्राकेन्'स'रून्र'क्रर'ग्न्त। । तका मॅबान्न्यादुरः हॅब्दुरः ग्राह्मयायः ८ देवदा । १८ ५८ र अवस्य दुर्स्य मनुस्तुन्। विस्तुस्यम्। दिस्तुस्यम्। हेर्न्दुन्न्यम्। द्वर् बरावश्विरम्बित्ते। वद्यायातरायास्य स्रम्भानेगायहर्पाया हुरा विश्वेन'इवराशेंक्रिंर'नेरकावराले वार्क्से विगापर ग्रुटान'न्रा **छ**रःपते र शर्मे शह व राष्ट्रवया प्रवया । प्र किया पत्र प्रविष्य प्रति प्र र ता है पर्द्व प श्चित्वयाव्या त्रश्कुर्पायमु ररार्ग्णि हिन् मु गरायात्रें शेन् म्यार् गुर्नेत। ह्रमञ्ज्यां कुंकेन् संन्त्र दूर्र ह्रम हुया नेना हे साव का कु गर मां अहित पारि व प्रिति कि मान्य कि व मान्य कि मान व मान कि मान मृदेशतर्स्याग्न्रप्या। रुपायागियायस् ह्रेंबरायातर्हे वानुस मन। - नर्ति 'क्रूंबर्याचे न पिति तुर्याचे न पा वित्रा हिता हिता है पा

**धर्तः तुषात्रने गायण्याया स्वर्धः ग्रामः (द्वेषः स्वर्धः)** ই'ৰ' यय। प्रभूते श्वरं के त्या वें ग्वर श्वरं ग्वरं र या या र र र द्वर य य नर्भ देशकारा हे प्रहत्य। के द्रियाय स्थय। क्र प्रायाय हवा B.य.लच्या द्वार्थित्रम्या वित्रास्त्रीत्रम्या स्त्रास्त्रम्या स्त्रा **६**८ से र में देवे क्षेत्र हैं व द्वा यह प्रहें ब कर में व शुरु का प्रश्न हैं व का प्रश्न हैं व का प्रश्न हैं का प्रश्न है का प्य इत्यान्त्रान्त्रव्यात्रित्वार्य्यस्य स्वार्यस्य स्वर्यस्य स्वार्यस्य स्वयं ष्ट्र व्यात्त्र प्राप्त व्याप्त षत्री भेत्रपरतिष् हिन्द्रस्याम्यत्र्रिंप्यत्रिश्केषायाभेत्। *য়৻*য়ড়ঀ৽ঀয়ৢয়ৼ৽৴ৼঀৢঀৼৼড়ৼৼ৽ৼ৽ৼ৽ৼড়ৼয়য়য়য়ৢৼ৽য়৽৸য়ঢ়ৢৼ৽৽৽ स्रायंत्राच्या व्यवस्थार्श्वेत्राः विवाचेरात्वाञ्च वायपातुः सुत्राप्ता हे पर्ववृत्ती क्षावया दे विषय प्रमान के स्वापन स्वापन के सामा क्रवास्त्र प्रतातु त्या वृद्ध स्वाय व्याय स्वाय देवी संक्रित प्रता है विश्व स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय वया क्षेत्र चंद्रा वर्तुः परिदेशवरा गुः कें 'दे 'दे 'दि तु ग् वदा' ब्रुट् 'गुः कें 'दे 'वें 'वें ' मन्त्रिंश्यम्त्। हेपर्द्वाश्चित्रवा रवास्त्रप्रात्रवास्य **ह**्रवान्नः मृत्युन्ता। मञ्ज्ञाम्यायन्नः मर्त्रम् ह्रव्यवायाचीनः मिलाभेनः ने **श्वापान्द्रेन गुराक्षेत्र जुन् अध्या स्वाप्त में मार्च मार** र्वे <del>र</del> र्वायाययाप्त्रा स्यान्देवपायर्वञ्चरात्राचा इयरात्राच्यात्वेरानाक्यायात्वेत्राचाक्येत्राचाक्यात्वेत्राचाना प्रश्नात तृग्'रास्। हे नई व क्रील या व शासु न सकु न पा के सम्बन्ध करा तरे न्राया वर्षा व्यवस्था वर्षा व **प्र**ंतानवेशयार्थरत्त्रन् यात्रश्यर्भ, प्राप्त वित्रान्य प्राप्त वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य वित्रान्य श्चराया के वा श्वराया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स इबरानराकुरपदिवियायनः ५ ग्याने दर्शे ग्रानरापुरापरा। ८६ग हे ब की विश्व वाया सवा कर के ब मान विश्व के की वाया ने विश्व के की वाया ने विश्व के किया है न **এব'নথা ট্র'ট্রথই'রেব। চহাই'য়ৢট্র'বাগ্র**হমানথা বরাস্ত্র**ে** पश्चितायात्रहें अर्थापक्ष के तकत् 'प्रवेद क्षा क्षा के ते हैं मुद्रा प्रते हुं हे पर्वुद्रा <u> भ्री अप्तर व्यक्ति भ्रम् । त्या कृष्ट्रीय पान्य प्रमान्य प्रमान्य व्यक्ति । स्र</u> नेरदेरिश्चेरागरमर्खन्यात्रा रम्खरागतरिष्ठातिः तक्षेपाश्चे त्र्याचवराठन्'यापॅन्'पर्य। पॅन्'प्र'यं नेराप<sup>क्र</sup>रे'हे'केराग्रीञ्गयान **८८.५ अराया प्रस्तामध्यायः वर्षस्यायः वर्षः वर** श्चिन्द्राञ्च व्यदि न् ये द्वाप्तने अगुर पुष्प व्यव्या ।

मन्ग्'मरायामविद्राक्ष्रंक्रसम्बद्धारम् । वर्ष्ट्रीन्'यर्न्न्'गहण्य क्रीं में प्रस्ति । विषय बुता केन वुना न स्ता बु। । विषय केन स्या की कुरायाय। | रमाहेरायाहेरा हुग्यरेमा कृत। | रमानेश्वरायाह्यम न्द्रश्याया | शिक्राद्रे विरेज्र हिरत्र। । ब्रिंट विरादिन पक विषयन्तर्भ । ब्रिअन के के दिन्दान्य न स्वरूप्त । विद्यान्य सम्बद्धाः र्हें स'र् द'पर' हुर'। विषयर द'वे स'ब्रेन् न्नस वेन्। विच हिंदा हैं बर'र्गुर'र्गुःगवि। । नर'ग्निकान्द्र'यान्द्राची ग्रुन। । वेबकाह्रंग्र तर्भेन्'याहे ह्याप्तर्भे र विवास विवास विवास विवास विवास विवास हिंदी यह विवास मना अः हर्गः विराविते देवः तहा । यवगान रही र्यूनः हां स्वार ही। रीयशामर्ववाशाहेक्'वयान्साद्धराय। । यन्य महासारी हर्षेक्र इन्यर बुर्। | वर र्व वाका अवाका स्थाप । वर राम [यन्परे होर होर ये। विन्दा गृह्य सन्य विते प्रमुण विप्त प्रमा ळें ८२ त्यां बेद् शुप्रदे र वेदा । वर्ष युप्त ते न सुन्य संस्तर प्रस्त यय। । न्युग्यं वे हृग्यर ब्रूर व युव्य द्रा । व युव्यय व्या त्र्ज्ञें नबार्ज्ञें व्यापन्। । त्रुष्यं न्यार बार्ड्डन् प्राप्त व्यापन विकास मन्य मरावार्यक्रिक्षे क्षार्व पर सुन्। |नेषा वार वा क्षेत्रे पर त्र्ण्याक्षित्रच्ना । विष्त्रक्रिज्ञान्याक्ष्यान्वर्ष्त्रम्। । स्व् क्षे ग्रॅंप्य ज्व व्यंत्र हिवाय के यात्र । । तुः ने पायके व्यापने र वृंदा । त्र्यपदिस्वायाः स्राप्त स्याप्ता । द्विष्य विक्रा मास्त्र प्राप्त स्वाप्त मॅत्र। । त्रव्यव्यवस्य प्रत्यक्ष्यक्ष्यं या ने । विदेशपर्येष

वाल्यां देतुं - द्रश्चां विश्वे श्रे न स्त्रां विश्वा नार्या विश्वा नार्या विश्वा नार्या विश्वा नार्या विश्वा नार्या विश्वा नार्या नाय

न्'न्याहे'न्यंत्रस्ति। व्याह्मात्र्वात्रस्ति। व्याह्मात्र्वात्रस्ति। व्याह्मात्रस्ति। व्याह्मात्रस्ति।

पन्ग न्न सिंहु न् तुन् रं त्। विस्त्र न् न्य विश्व स्याप्त तुन् स्याप्त तुन् स्याप्त स्यापत स्याप्त स्यापत स्यापत

द। [न्ररोट'न्ग्रसॅ'सु'सुरीरे'लबस्य नेप'सर। [म्बद'सूट हिन গ্রীরাশুর্বিমার্রিনের। াল্লশ্বেনগ্রীমেশ্রেশ্রের্শর্বা । छ <u> इत्य तेन् भे तृत्रे वृत्र श्राभेग प्रा</u> | हे क्राक्र न्या है स् परी [र्ञुग्राञेन्'कुत्राप्तवरातश्चेवराउं'व् |सूग्राह्म-'उन्'प् पते<sup>,</sup>जन्'न्द्रम्'रुं'त्। । क्षे'र्रम्'यञ्च 'सु'त्रेते'तृत्रकारीम्'न्रा। तहेग् हेन् हुन् भी साम में सहित् नि । तहेग् हेन् पति हिन् न तह्ग र्दं द। । ५६ त्यञ्च ५ गर्ने व्यक्ष दिन वस्य मिना भरा । देन त्य में रूप बेन्यार्ह्वेत्रेयन्। । ५५'व्यक्ष्यत्रेष्य्येयःव्यत्त्वार्क्ष्यः। ।हेः मर्द्धन्द्रीत्राक्षुं सुति दुवाका देवा प्रा पर्वार्त्वे नेपान् । क्वांपन् पान्ने व्याप्त विवाद व नर्स्यापारने'यान्या सुराक्षात्रात्त्व । देशव्यापय। हेपर्द्वाशिल्या व्या ने क्यरा म् ज्वापन्य अवस्ता हा यरि मात्र देव दुः ने रामा में बह्नरहिः तकारेग्वारतुग्हे। वृत्रकाने ताकुतार दिन्ति विगान् विवार धेव हे बेर पातर व्याप्त स्थान स्थान स्थान

८ विक्रमहेक्षेत्रं त्याक्षेत्रं त्या । विक्रमहेक्षेत्रं त्याक्ष्यं त्याप्तः विक्रमहेक्षेत्रं त्याक्ष्यं त्याप्तः विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्षेत्रं त्याक्ष्यं त्याक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रम् विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्ष्यं विक्रमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्षमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्षेत्रं विक्षमहेक्

বা [सर्-भूर-धूर-पिते कॅलाह बर्यागुर्व] |रर-ज़्रीय कराकी क्षांता |मेबामु गर्नेसामाने वसार्च ग्रा | ग्राम् सामान मानि सामान नेशपदी। क्षेत्र छेत् 'दं व । तर् हुर देश परि खे ने शरदी । त्रता त्र र श्रेष्ट्रिश्यात्र । गुन्यविक्ष्यस्य सेश्वरं व। क्रियावस्त्रेरः विव्युर्ध्या | क्षार्य्य म्बार्या । त्रीव्याय विव्याय । क्रन्'र्ड'र्ज् | श्राम्मस्यम् श्रीन्'परियम्'र्ने'ने । श्रुताममञ्ज्ञापरिः बर्द्दायाद्वा । श्विद्दायाञ्चर दे द्वा । बेबबा श्वायादा यागद्यापान्। । इताग्रुवार्ष्ट्रग्यापत्रीत्ने (त्रा । इताग्रुवा कूर्यायायाये नेवायाया । यायायायाया मुख्यान्यात्र्या विवर्ष बेन्'बावत्'त'वे'न्रन्त्र। । ध्यान्न'न्वन'र्वे हं ग्वायन् छेव। । वेवव न्रायुर्भितकेरामग्कर्। विश्वस्त्रिक्केन्कुर्भगवान्। ।रा इतार्वे राम्या करव्यान्त्। । स्विं राम्ये त्रक्र कर कर् क्वेन'वरपाविषाद्वरभागा ने'वर्षहेपर्ववर्षेत्रकेलमाव्या न'दें भेरामा सुत्राञ्चेत्राकृष्येष्यवाद्याचेन्युप्ताःकृत्विषाः कृताः कृताः विष्याः न्मॅनप्राविषा हु खरा हु न स्वाप्त प्राविष्ट स्वाप्त प्राविष्ट स्वाप्त प्राविष्ट स्वाप्त प्राविष्ट स्वाप्त स्वा मासित्रुग्यायम्बाद्वस्याय। हेम्ब्द्रंद्रामुक्किस्क्रीमाद्यानेन्द्रास्त्री म्बिन्द्वरामसङ्ग्रहेश्क्र्यापान्त्रज्ञन्क्ष्यम्यस्ति विद्यस्या ।

<del>ব্</del>ড'নুম্ব'ম'ন্ন'ঝ্ৰাট্টৰাৰ্ক্তবা | গ্ৰহ্মান্বন্'ঞ্'ঞ্'ই':ভ্ৰন এবা | **ब्र**'अर्'ने शेयल ग्रीसर्क्ष्य । देस ने सन्यन्य स्ति क्रे लाय हे गाये दा। **गु**प्ततुव्यमं मुंद्रप्रकर्षेत् । यने द्वेत् वाहर्द्र स्त्रिते द्वा वहर्षेत्। । पहेर्भारतिस्याप्रकर्पस्यास्य । महिनासुःक्षेस्रेनसर्संदः भैव। ।इन नदीन् गुमार्श्वियायका हेन । न् शान्य स्वात्र स्था त्विगराधेत्। । मगेषस्यक्रेंन वेन् पर्में सरामसङ्घ । श्रुळेषसः त्रह्मान्यमाञ्चन । भिन्दाक्षनमञ्जूनान्देन । तदी म्बेन्बेन्देन्र्यंग्मदेश्यम् । म्बेन्व्दिकेन्देन्यम् । हिन् ्राष्ट्रवारीय । वित्राप्तिवा । वित्राप्तिवा । वित्राप्तिवा क्रिया । वित्राप्तिवा क्रिया । वित्राप्तिवा क्रिया । मज्ञानस्थन'ग्रुन्द्रव्याक्षेत्। । तर्राष्ट्रेक्षांबेध्ययव्यापाय। । ५८७ र्गः श्रुवागुर छ्र भंत्राधिद्। । पञ्जेयवाद पिष्ठै भार्मेन । वि पञ्जेय ট্রিন্'ন্ন'ঠ'নমমন্ট্রনা বিশ্বান্ত্রন্ম'ব্রাণ্ট্রান্মমর্ন্ यव। रबाइन प्रवादावर्षात् इवाहे। महान सवादु विक्राप मज्जन्गी'न्छन्यत्री'अव्यो।

न्वॅद्रायं खुकाग्रैकार्र्डवा स्वावावाग्रनः । वित्याकाञ्चाना हैकाग्रनः

 न्वॅद्रा । कर्त्वुनः नृष्याने खुल्यतः विद्रात्रः विवाश्चनः । विद्रात्रः विवाश्चनः विवाश्चनः । विद्रात्रः विवाशः वि

<u>क्</u>र्यारा, धुवा, बैटा । ८ मृत्युक्त, सीया कुथ, प्रयाप । विष्युष्य, प्रया **ळ**८'ग्र'प्पर'श्चेम। |ग्राया'त देमरा'मेतु'सुस'सेन्'समरा'सेन्। |देख' गुन्यं कॅन्यं पं विन् गुन्। विन तहेन् स्राधियं केन्यं न न व्याप्त । ८इ.प.जेश.५इ.ड्रश.येट.८ मूथ। [श्रुंवित्राम्याम् नश्यामहेत्। - नेशजुर्'अ'ळॅग'र'वेषा'ञ्चर'। | बिंशजु'गहुअ'ॲशळॅग'यपदाजुर'। । र्ह्स हरे देन वा नर यह देने वा विद्या की विषय वा सुधार की वा व ७८। विद्युत्र तह्र गृष्ट्वे द्रारा ग्रायम प्रमान विद्या । श्री ग्रायम सम्प्रमा बुःयतरार्थेत्। दिश्युरायार्केग्यावेग्युरा। दिग्राथार्चेयायसा क्रवालवराग्रन। विम्दलायाः भ्रांचन्यम्यत्व विम्ब्रन्न्याःस न्रप्राञ्चेत। दिश्युर्क्षार्क्षन्यः विनान्नुरः। विनेन्द्रारः तह्रव्यत्त्र्यात्त्र्याच्यात् । देशःग्रन्थः क्रेंग्रायात्वेगः स्त्रायाः बति'तुन'तु'तळवर्रामर'त्रेम। ।ग्न'द्रराग्रदाश्चित्'तु'रे। ।तर्ज्ञेत् रामन्याचीतर्भन्यविद्या सिन्धियानुपर्धेवामस्ता विद्या ব্র'মথা हे'यर्डन्क्रीक्षयंन्य। दे'ॲन्'यश्चरान्यन्वन्र्क्ष्याः परात्तुन केष्परान्याञ्चरावाहितायवेवाकेर्मापरात्तुन हिन् रिकागुर्देशेवर्गुः स्वावित्रं व्या देशेवर्ग्यं स्वावित्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त 利斯不美口

## 西二、胡凯二、多、湖土

व वें मु रु हे'नई क्'श्रे'सम्बादायान्य्यान् गृहेवाई व्यह्नास ই্র'ঈ'রীর'গ্রীস্বর্'র্বামীনঝ'ন'মঝ| নঝক্তর'নঝ| নর্ণ'র্বা तर्रः तस्त्'त्राञ्चेत् क्रिंपंत्'यत्ग्'इ वर्षात्रं स्त्'स्त्रः लु बायवा हे यर् व तु चैंग्'बर'ग्'प'तु र्श्वेंप'ॲद'पर्ग'गर'मैंब'गुर'ब'ळेंर গ্রী'বেথ'ব্রা पर्रोत्रेशायातुः गृहेशार्रार्शेश्यव्यात्रे गृह्या वहार। त्राकुराराह्यात्र के'अ'हॅंप'र्5'येवस'र्स्र| ने'वंसहे'पर्वव'क्वै'वय'वस| रस'द्वर'रा' <u> वित्'ग्रीश सुप्तत्य मृता हेना त्या से न हत्य सुत्र । त्या स्ताप्त स्त्र से त्रु</u> <u>चर-दे,लर्थानुराक्चिक्षाक्षर्यात्तर्र्यः व्यात्त्र्यः व्यात्त्र्यः व्यात्त्रः व्यात्त्रः व्यात्त्रः व्यात्त्रः व</u> प्रचिपात्यातु प्रचिपा क्रिया व्यातु दे प्रवृत्रियायातु ते ते क्रिया दे प्रचार्यायात् तु नेअपर में है बाव बाकु न्या पक्क तु पक्क कुन प्राप्त गुव के न वि से दिन पर त्या "" <u>न्यत्पन्नन्त्रेजुन्यस्युन्यः अर्ध्वः छेःचरःतन्यः क्रुअः रेःवियाः</u> *ढ़*ॖॸॱऄ॔ॱय़ॱऄॸॹॱय़ऄऀॱॸॸॱॺ। हेॱॸढ़ॖ॔ढ़ॱॻॖऀॴऄॱॸढ़ॸॱढ़ॺॱॸॴढ़ॸॱय़ऄॱ नेतु तुअ वि हे। हुव्य हे हेन में तै र र द्या ने द हेवा वृह्य या। ८शकु'ग्रायातळेंबारु'पहरापाखुशकेन्'अविरादर्जेते'ळवाता त्रंग्याहे''' নমুল্'ব''--'বিলম' তল্'ম'পল 'ইল্ম'ম'র অমাব্র'ল্মেন্ম''''' द्वराधिशञ्चग्रुप्तविश्वेग अक्षेग्यक्षिप्तव्यूव्यास्त्रग्राहिष्यक्ष्व

য়৸৴৴৻ঀয়য়৻ঽঽ৻৸৻ঀয়৴৸৻য়য়য়ড়য়৻য়ৣ৸৻য়য়য়৻য়ৢয়৻ঀ৴৻ঢ়ৢঢ়ৢ৻য়৽৽৽৽ विग्रंडेग्रन्तुरस्वसञ्जूरः सर्र्नेहस्य प्रायान वृग्यपितराय। द्येष कःश्चेत्रेचेन्'नित्रंनेन्'नेतातन्तर्नेत्रंख्याचुन्'नाकेत्यान्धेन्दाचेन्द्रंके| रक्षकुर्पदे प्रहे प्रश्नुर विज्ञुर द्वा करा की प्रगाप परि पृक्षुर की रार्वे प देव। कुरःगुद्रादेर् द्रवायाम् वेगः यज्ञ्यावर्गराप्तः। रवाकुरायदेः ष्ठुणवायानःने र्वयाविषाधेनवायत् त्र प्राप्ति वायाविष्यान्य विष्य इत्द्रिवराष्ट्रियरा वराश्चर दुर्चे वर्मना क्वेव समा क्वेव समा क्वेव समा क्रीं दें 'अ' कैया हुन पां नरा। ५ दें 'न् ये 'क' द अवाय ब्रेग वावा अवा श्रुवा ही दा मन। नेत्रमञ्जीत्वनमन् मून्द्रिताने तत्त्र प्राप्तन क्रेन्द्र त्रम् **छ**तै'तेबराबे'न्बद'नदे'न्न्त्वा नन्ब'बे'न्चे'क'इवरा'ब्रन्स्य **ब्रिं**न्'ग्रैबाञ्च'तुबायाब्वेन्'वा अनुनःपवा विष्या परा ततु ग <u>ॅ</u>ॿॕॎॖॸॱॸऀॱॱहै रॱॸॺॱॸ् ऄॱळॱॺॱऄॸॱऄॏॕॾॱॸॱॸऀ ॸॏॗॕॾॱॸऻऄॸॱॻॸॱढ़ॎॸॖज़ॱॱॱॱॱॱ कुवान् में वाबेन्'ग्रीन्ये कः इववाबे तान्ये गवा র্ট্র্র-ডিমেনের্স্ नुस्तरायम् न्याकुर्याक्ष्यं व्यारकुराये द्वार्याकरा हण्यास्त्यास्त्रप्रतिण्ये। वित्योवात्त्यादि संस्थित्व। त श्चरपर है सिर्दे हर दुष्या गया पर व ज्वयावयवाय वर्षे द्वां वा स्वय परिन्द्रपासम्बद्धार्यम् परिन्द्रम् । दर्रेन्यम् स्वापन्यत्तुन ने'नबायन्ग्'गैबाकुर'याचकु'स्यकु'स्'क्षेन्'कें'सु'द्वेर'यस्न्'पबस्यः'''''' सन्ताः हेमर्जुवय्रम्भैवान्वरः नदिः नविरः न्। नन्नः नेवार्श्वः <u> नुबुबाक्कें, त्यानुन छुत् पुरायन् नुबा</u> क्वान्य सक्षेत्र या में नुबेद पुरायन्य स् ग्रा राष्ट्रवाद्यस्यात्र्यां प्रमातुः चेरा र्रारायेग्रास्ते द्रय <u> तशुरायर पुनि कर तर्गायाया हे पर्वतश्चित्रावया सुरस्य</u> **छ**र'र'र्र'र्य'र्येग'शे'र्येंश क्रिं'रर'क्र्र'शेंस'लेररायहासत्। <del>ए</del> १५८ व्याप्त विश्व प्रकार के या के अधिक के किया है अपने के किया है अपने के किया है अपने के किया है अपने के कि श्चिष्वर्वप्राप्त्रित्रे विर्मे हेरि विरम्ह भी हिर्मे विर्मे विर्मे विरम्भी वि <u> ने 'हेन' में 'हे 'तळम' नम् ने हे र बेन' नु'यब जुन'य वे 'ह् 'यब ज</u>ुन'य वे 'ह्र' यख नर्ज्ञरन'न्र'। क्षुव'न्र'क्षुव'न्यकान्यंव'ग्रे'घर्'व्रक्षेत्रहाः २००८न द्व'रु'त्रें प्र'न्न। श्वेव'यवंययाव'रेंन्'कुं यहेन्'श्वं प्र'नेन् श्वेत्वा द्रिंग्न'न्न'
 द्रिण्य'यन्'अ'तन्न'नज्ञन'वे'त्रिते'गन्व'न्न'यठशयन'
 द्रिण्य'यन्यात्रे विकास वि इत् निर्देश्वेत्त्तु। दिन्कुष्युध्येष्ट्राम्युध्येष्ट्युष्पन्ध्येश्वेश्वय्याक्षुत्र्वित्रः बिन्दिन् चेन्द्रस्यान्ता वृष्यान्त्रदन् चेन्द्रस्य प्रतिन्यसमितुः इयश्डुताव्यायगुर्दिंगगुर्याया

तुः गर्रेगः ग्राहेन द्राहि । विद्याप्त विद्यां ग्रेश्वे प्रते गर्रेन प्रता । विद्यां विद्यां

क्षेप्र धेर प्रति हे में भरा । विश्व वर विषापर पर पर दे। । तह र है द क्षुं द्वते रत्या भूरा विवशं रूरं नेश्वरं वहरं तह्यां वे दिनः म्बर्यात्रवेत्रात्रीत्राचेन्'दाधेत्। ।तुःयाचळन्छे'न्दिन्हें छे र्वा । कुर'क्र्र'ब्रॅंके'अर'तुर्'दर्जेदेख। वि,अर'विनान्ब्रंव'रर'रशकुर केन'भुन्'पदे'क्यप'ठन्। । गुर्यन'म'ङ्ग्यर'कुर्द्र'में नेन्। । धुँग् र्स्यान्तुः अरः स्त्रेन् भाने। ब्रिन् में हिते प्वज्ञ स्यापति हिन्या । *चु'ढ़ऱ*'बॅ'ळे'ब'८२े'ळे'बॅर्। । कुर'ढ़्र्र'बॅ'ळे'अर'तुर्'८बॅंदेख। । चु' सन् विमान्यस्य न्दान्यः कुन्या । यन्नाः वीश्वेत्यरे प्रत्य संस्थाः व। विस्त्रुंत्रात्रात्रात्वा निः । दिः अन् अन् निः निः । । या विष्यः । विषयः । नञ्जुतापतिःदिन्। । या व व व के व ति के व न । । कुन व व के यन हुन'ल्ज्रेंदेख। दि'यन विषापार्वेन'न्न'र्राह्म या । निर्देश्वर्शेन! राञ्चानरे ६ ग्रान्व दे। । यज्ञानवर्मे तन् नामकन्या । वि ज्ञाला े शे गू ' थे ' प ह न श | किं हे न श ह न श है न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह न श ह नहेंन्' सुद्र न्या'र' बेन्। । हिंन्' गुरुप दे है या में का सुद्र ने सार् इयस्य र प्राची र प्राचित्र व विकास व व **६**५'ऑक्रे'अन'तुन्'दर्शेदे'द्य। दि'णन'विवानश्रेत्र'न्नरश्रुह्नःय।। ्रतेर्द्रंहेख्याश्चिश्चेर् श्वामान्य । दिवाकेव्यान्यसानेतुः त्रात्यान्य। सुभाष्यात्युरापायेन्याकृत्। किंदाकृत्कृत्कृत्रहेन्वेरयेन्यळेव।।

प्रस्ता क्ष्यां प्रस्ति क्ष्यां प्रस्ति क्ष्यां क्ष्य

 १९। । ह्यन्यक्ति स्टेरिन् क्रीयाय विस्धित। । अशेवारा येन्या ह्यन तिरस्याचा । अनुष्याधारी द्वारे विषया निषया । द्वारा पञ्चा यस्या राषी । ग्रान्ये हेरे हेरे प्रीकार विराधित। । श्रेन यह वर्षा तुरा र्गरत्विर्त्व । बरवा कुवा वित्य देश कें वा वा नवा । विष नैसरेग्राक्यें द्राप्टा । ग्रेस्येर हेरेर्चेरेप्रीयाद्रिय ग्रमा शिरंगरे के दार्विस्य । ग्रम पारत्यपारी भ्रम ळॅन्यान्त्ना । ४५५५: ग्रुट: येयय: ५ ग्रेट: येद: पार्ट । पार्ट: पार्ट वर चॅते: न् ग्रीयात्रिरः गव्या । तुः स्माधुः भुतः र् झ्रें अपीया या । भुः न्यरात्रीतावेन्'रा'न्रें बाह्यतहरा विषयतातु वारीप्रहत्तुवा त्रज्ञुन। ।तुःकृत्वां छेवादनैः छेवा ।तुःत्रः यावार्वेगः त्रगः सूनः ब्रुन्। देशम्बुद्यप्या नश्चन्यान्ते। हेम्बुद्या हन्यायाया संस्थित । यन्यान्यो स्वन्यस्त्रिं से विव्यायाया । **र्धेग्वद्रायर्थं वेरायया** यर्हेग्वर्वयात्रायर्थे न्रें रामें द्वायाया है व राभे न दिव दे व राभे न न । व रामें न व व रामुन रान्त्। द्वरेष्ट्रेंग्यायर्ध्वर्वेद्वर्वर्यद्वावायान्तः। सुरम्बसेयत्तरः विरञ्जातरारापर्रा भुनुःसरञ्जातमञ्जराष्ट्ररायान्रा वद्यायावरा वगुरः पर्ने गहारवार्श ।

 दर्शकुवायात्री सियायार्जेन्द्रवातुक्यादिःहवारा ।ह्रायाका मत्रेन् हुँ न्यात्री । त्रह्मामत्रेन्डिम् स्रोक्षामत्रे हन्या । अवा **स**रा वे'त्र प्रस्तुष्व प्रति । वित्'यर वेस के वित्र वे व्याप ते ह वारा । 5'यरत्वेर'हर'द्वर'पत्री । श्रुत्ययस्त्रीं र्व'व्ययदे हग्या। व्यायायर हुँ न्'यय हुँ न्'या नी ।हुन्'येयवा निहास में हर्ग्या ।तुःक्षन् वांके वांतरी के वांतरी । कुनः क्षन् वांके यनः तुन् **র্মেরি'ন্তা ুর্মেন্'ঞ্ল'রাইন্'ব্র্মেন'র্মনা ইরাবার্ডিরান্রা** हे'नर्ड् द'श्रे'शुन' ह ग्रां दीश्रांच दे'डे न'ॲ' हे र हुन **ス刻感にたる** <u> इत्पः नृः क्षेत्रपः त्रेत्राञ्चरः यः शुक्ष्याच्याया मृत्रे ष्राद्याया स्वतः व्यक्षेत्रे स्वरः पः । । । । । ।</u> ग्रा हैं मर्जुन ग्रीनियान्य। सुमायान्न पाया येंग के ग्रीयाम सन्मय हुरावासून सेन् सवराउन्दियेकरातकरात्वा नाववराद्यनाकुतानु ब्रुट्टिन त्रां न इत्यान हिन्दिन हिन्दिन हिन्दिन स्वाह्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य **८**इ८-'र्नेग्'र्य:विग्'र्थर्'प्रदेप्रग्नेन्'व्यःचेन्'केन्'र्य:विग्'र्थर्'प्र' नेदेप्यर'' र्चेन'न्या सप्टेंन'नेनन'स्रापठन्। सुक्राखन। तन्यस्रा महेबारा देशवा र पर्ने स्ने खुर पदि खु बु सके व में ने दे व स्नु खु प्याणा गुरुग्'वीबार सेव्'रा'क् बकायर्र्- 'राते'त्ररायावगुराहरी गुगुरकार्या । तुःषरः विवा ग्रांव्र-र्रा-रवा कुरः या । वा हुं ग्रां तथा तथा तथा र्

तुःषद्विषाःग्रॅब्र्न्द्रःश्चरःय। श्रिष्ठं ग्रंथत्यत्यत्य्द्रः द्वः इत्तर्देन। श्चिष्यक्षेत्रः स्वरं त्वः त्वः न्याः । तिर्वेशः प्यरं त्वः इत्रव्यक्षेत्रः गृष्यस्य व्यवस्य । व्यवस्य व्यवस्य

सन्राप्तं में न्या तका भिया नहीताया नुसा । ह्यु न में न सा तका भिया न्यु । तर्भे द्वरंत्रष्ठर । तर्वा द्वरं पहे व तर्भे द्वरं पहे । व त्ति द्वरं तमेव्यंत्रिक्रत्वेव। |स्यान्त्याक्यंवेयाव। |शेरहन् तर्न् प्त्युः कर्यविष्यत्या । ग्रान् प्रेश्वर्या श्रीत्या श्रीत्या श्रीत्या श्रीत्या श्रीत्या श्रीत्या श्रीत्या छेत्। । यात्र वदाक्षेत्र वदि के स्त्र । । मुन् वह से के यन तुन् वर्षे ह। दिस्तान क्रिया किया मा विकास क्रिया मा विकास क्रिय मा विकास क्रा छ्रायावारी न्याकीन्योक्ष्यान्यते हुन्त्रुवावर्म् वुरावार्म् हे'गर्ड्ड द'ग्रीशद'गत्रतर'ताम्मिन्द्राच्या इन्द्रम् वर्ष ग्रेन'नु'वयावापरायातस्य र हे मेंन्'स्र र सेर विर विर वास्य पत्र पान्या तर्ने गुजुरकार्थ।

त्यार् विना न संव द्रा विन् व त्र व

स्यावययाश्चात्रेन् क्रिंत् स्वां न्यायश्चरत्रे म्याय्यश्चर्याः वित्राः स्वां म्याय्यः स्वां स्व

तु'यर'विना'न्र्स्न'र्राञ्चर'रा। ।सन्देर्न्स्न्र्न्र्न्र्र् व। ऑन् न्व बेन पति हुन के हु। । अन् के व के न व न न न न X म्हिन्'ह्रे'बेन्'ह्रं बक्कै'न्द्रेन्या । तम्म बेन्'नु'बर'प्राप्येता। क्त- गरेग श्वर- गेर- रूप- प्रथा । क्त- हु ने न द राया न तथा । ঈর্'য়ৼয়'ৼৼ'য়ড়ৼ'ৼेग्'रा'ऄॴ । শ্বर'য়ৢ'गुर्न'য়ৢ'ग्नेर सं'ঢ়ৢয়।। म्बर्दारहें व'यावें राम्यापाधिव। वियारवारविश्वयाराधिव। रा हर दें हे मुन्यायाया । ब्रेट यें दे दें ब्रेट प्रमायाया । त्राम्यायाया रस्याप्तरम् | प्रमिन्पालसमीहारातस्याम | दिस्सस्य स्राह्म संस् चर। । कुर अप्तकुरि कुर्या । । व्यायक्षव भूर विकार है। । रशक्र सूर पंत्रवादि हवा । हिन्द हुला पाय हर दहन वैवा। ५'रुद्-'द्रद्र'यरबी'त शुर्रायदे। । क्रिण्यारुषाद्राप्त्र'द्रार्श्वेदाय। । मसवामिव्यस्तात्र्र्वे स्टेशपरात्र्विन्। त्रिष्णमाविन्नार्विन्ना रशकुर्या अभिनित्रेन्द्र जुर्मित्रे । विगुन्द्रित्र न्दरमन्त्रहे। । तर्वेयवर्ष्यस्तित्रम् विन्त्रवेद। । तर

बेबबाबर रुपुत्र केवार बाहराया । इपितर मुना र र उरा विरे तर्द्वतः। । निर्णयन्द्वसर्वसन्तरसम्बद्धाः । निर्नादिदः देन्यः म'तर्ने' त'ष्ठुव'तुब'बेर्। । यर्ग'तहें न'र्नेगब'य' हु स'र्ठेग' रहा हुर म। । ग्वसाक्षीमु: ५८ राज्ये हो। । य तुरः वः तेवः वं ५८ राज्यः है। [इन्देग्रस्त्रुयाचार्दियाचेन्दुयाचेन्] |रह्मयाचाद्रन्यवा ह्यस्यानेग्राप्तां हुन्या । विवासते क्रियान्तास्यासते क्रिया । पश्चपश्च के विश्व के विश्व के त्रा प्रति । | त्र त्रे विश्व के देश के नैयानुयाबेन्। विवयानेन्त्रीःवेन् र्झेवयानेगःन्यास्तां । पदेः निस्यान्त्रः चुवस्य देखा । निश्चरः दार हुरः देखा गन्तरस्य म है। । प्रविश्नाद्यान्य स्त्रात्र हिन्द्र न्या वेत्। । प्रविश्नाद्यान्य स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त क्षेत्र'न्याकुर'य। स्थियवायर'न्र'वर'गेविर। श्चिरवावा त्यं न्याच्यान्तायायाते। भिन्तान्त्राच्यान्यात्यान्या तुस्येत्। वितने द्वापवेर श्रेंद्यकी गार्यकराय। विकर्षि कुन'न्न'यहेरा'यदे'र्जुनाय। । ज्ञन्यान्दस्याच्या'न्दरस्याय है। । वसायने दें तह्या दरें तात व द्वानुका वेता । महि खुन रं नुता र्शेटल'नेर'रशकुर'य। विन्देते'रे'न्र'खंर'देते'व्य तर्स् नंदरायन्तरत्वाया है। विश्वेयान्तर्सत्ते त्यात्स् नंद्वा केन्।। रोबरा है द'ररावता दें राविषा र राख्या । ज्ञाता येथे राजाता नरा मर्जुव्यंतिखर्। विषाव्यव्यवर्ष्ययम्तरस्यवान्। ।तक्रेम्न्य ग्नैद्देत्रित्रवात्रवाद्। [तक्षेप्रवाद्यत्रव्यक्ष्यत्यक्ष्राःय।]

र्र जुर्र द्रायदे सूर पर्हेन । शुर्र प्रद्रायदे ह्राय गुर विन । **ন**ন'কুন'র্ম'র্মার্ম'রম্ম'র্মের্মা । বর্ন'ক্টানমভন'র্মানা'র্ম্বামার मन्गातहेन्तम् मॅति म्पार्या मिष्पर्वा विष्यर्वा स्व [ग्रॅंब्फ्र-क्रिन्ग्रह्मान्यन्यन्यक्रम् ।न्कुन्यक्रियकेग イグ・ゆう、ひ 一 विषागुष्ठान् विनाहे अर्घे हे अर्घे । अर्घे अर्घेन पर रहेन प **५८। रक्षक्र**'रा'त्र्युं र'रा'त्र्या'र्च' ५८। ५८'रा'त्र्व स्राम्येव'रा' विषाञ्चे या है। हेनईव्यन्पर्परत्नुग्र-रन्कुन्वाह्यायसन्धेः त्यात नारा हें वाया हें नवाय दें ने दाया है न हुं वा है न हुं वा है न हुं वा है र्दयाविषाः यहित्रत्ति प्रायाः के समस्यत् हे पर्द्वापाया विषाया विषाया महराष्ट्रीत्र्रत्र्वेत्रायत्तत्त्र्व स्वाप्त्रात्र्वेत्रायत्त्र्वेत्रायत्त्र्वेत्र न्नायायेन्यतेन्यतेन्ये कराकेष्वेन्। नाम्यन्यने त्याकेषाकेषाकेषा ळें न्यश्रम्बर्शस्त्र-(मु:हें यर्ड् व्:ग्रे)नुन्-(मु:क्रेश्वर्शम्वर्शस्त्रव्यस्त्रव्यस्त्रव्यस्त्रव्यस्त्रव्यस् ८ट्रे प्र-र्म्य हिन् हेरा श्रुव प्रकार हरा है। विष्ट्य पाव राय्याय निष्टा स बङ्ग्याया अभ्यापन् सुर्ग्यान्य विश्वापन् सुर् ष्रं हुं र हे पर्वं व र सुर परे श्री प्रथा हु र पा प्रा गत्र-परे-रगुरु पर'पद्यश्चराया *वियाग्रीया*न्द्रयाय|दर'यात्युर'यावुप'उर'। म्र न्न भीत्रा नेपान हे नर्दन भाषा अर्ग नुस्ता निमान निमा

यश्चान्त्राच्युंश्चा विश्वान्यात्राया स्थान्त्राच्यां स्थान्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्राच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्त्रच्यां स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्त्रच्याः स्थान्त्रच्याः स्थान्त्रच्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्यः स्थान्याः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान

त्। विवासहेकानश्चरकान्त्रीत्त्वस्याः । श्चित्वद्वस्याः श्चर्

म्यान्तर्भे विद्या विद

प्रस्तान्त्रम् वितान्त्रम् वि

रम्याया । मर्ड्या स्वाके स्वाद्धा [तुंलें स्ट्रंब केंन्ट्रंकुन्त्रेग । শ্ৰব'শ্ৰ'শেৰ'শেৰাৰ ইন্ধা **প্র**ণ'নন্থ নাম্প্রামান ক্রমান বিষ্ঠান প্রামান প্রামান ক্রমান ইব'মব'স্ত্র'ব্যব্দমনীরা বিশাগ্রদম্বানা イタ(会力、イタ)到 अत्यत्त्वज्ञ वाक्षी मात्रन्थित प्रकाय नेत देशक्षा मार्थियाय प्रताप्ता ঀৢয়য়৴য়ঢ়৻৻য়ৢ৾য়৾ৼড়য়ৠৼ৻৻য়য়ঀয়ঢ়৾৽য়য়ৢঀ৻ঢ়৽ঢ়ৼয়য়য়৽ঽয়৻য়৽৽ सव्'पते'न्ये'क'इबस्'न्स'कुन'य'न्न'वे'खग्'रु'चवर्याचुन'चस्। रून् मरात्र्यपति'न्ग्राञ्चं'न्न्। श्चायायायम्यज्ञयान्न्राज्ञीत्रुःवेया **र्**निकेत्रवार्यात्रयुराहे। स्याष्ट्राध्याः च्यावेत्वत्याहेत्। मञ्जीनवा न्'रीन्'यन् श्चिमंन् में बाक्ष्यंनुंन्यामकवाविनः न्यामकतः बन्नर पश्च तायिवार्वे। ने दर्भ बकेन में ग्राह्म बना न्राह्म बना माञ्चन्। गुन्तियान्यास्याखन्यादेन्।क्रेवराश्चित्रा त्रिंदः विषायह्र प्रतिमातात्। श्रेष्यवाद्याच्याद्याच्याद्याः विद्रा ॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖऀज़ॱय़ॱय़ॱॾ॓ॱॻढ़॔ज़ॱॼऀॱॶॸॱॻॺॗज़ॱॼऀॱग़॔ॸॺड़ॱॸग़ॱॸॣॸॱॱऄग़ॱय़ॱॱॱॱॱ गुनेशगं वुर्प्यं भवाकेपन। र्डं र्पं वुर् निहेश्रर्म् व्राह्मेग् वेर प हे'नर्डव'ग्रीय'नय'इन'रा'हिन्'ग्रीयखयंबेन्'वापत'त्रॉते'हं बा 第三部第一 पशःगुरः¥र्भाः ह्रेगःशुग्धान्यतर्भे प्राचनाः स्वारं स्वारं ।

मिन्यश्वर्याकृत्वर्याकृत्वर्यायायययक्षेत्रः विश्वर्याकृत्वर्यायः विश्वर्याः विश्वर्यः विश्वर्याः विश्वर्याः विश्वर्याः विश्वर्याः विश्वर्याः विश्वर्यः विश्वर

हुन्द्विन्दिन्द्विन्द्विन्द्विन्द्विन्द्विन्द्विन्द्विन्द्विन्द्व

श्चित् श्चित् व्याप्त व्यापत व्याप

## सन्देशन्यान्यत्त्रेन्

म्रवात्रात् हेर्पर्वन्थायारसायाने निन्ति सुन्यास्यार साहराया हुः गर वद्यात्र विराम दि तुत्रा हु। ज्ञा प्वार कें 'यह र ७ 'या प्रार हु हुन मत्रकेरत्तुवाधिते स्वावाया विषातु। वव्यावे द्वाया प्राविवा परकार्द्रन्तासुन् पङ्गन्ता असुन् गहुन्तान्त्र। कुन्तर-पुः लेख इस्राज्येशश्चर्द्रम्याने पत्राचारित्राक्षान् गराये त्राज्यान्या **धिद'**पदि'र्ङ्गे अ'केद'विषा'हे'पर्ड्ड द'ग्री' श्रृद'पदाधिद'र दिंष वर्ष हे'वता' प्रस्र र'''' ष्ट्रेर'देशेत्'वहर'र्घे श्रेराधसम्बद्धग्'तृ'र्**र**'पर'युर'त्रा| यन्गःन्वयायिः धुवया क्री क्षेत्रा केव्या केवा यावा स्टराह्य स्वादया **ह्रे व राष्ट्रके व्यास्त्र व राय दे विदाय व राय मार्थ व राय व** रमः ग्रीकार्हेन 'न ग्रीन' मह मा बकार्स्स्या से प्यमा ग्रीकार करा ग्रीन प्रमाणिक से प्रमाणि मॅं न रंग्रायमा मिलानित ज्वरा श्री न भ्री रागा र ने न श्चिम् त्या या हो। क्टि। श्रुषात्रिन्श्रीकृत्यार्षेत्राज्यार्केत्रानु रहेते द्यापायण्यायय।

्र्रशम् वर्षायर्ष्ष्यः व्याप्तिः स्वाप्तिः स्वाप्तिः व्याप्तिः व्यापतिः वर्षातिः वर्षतिः वर्यतिः व

र्श्वाराहेन्यायदे भेवायमाने। । गुड़ेबाद हेन् हुंग्वा हुआ स्राप्त मान हॅं प्रायत्य चुन्दि कृप्ने | प्राचुन्दि देव प्रायी सम्बद्धि स्टब्स् न्दै ग्राबेन्'मरावाग्व व क्रियापाने। । यळव व वरित्र न त्रावा व ह ग्रा राया । रि'क्रॅंबरा के रापते क्वें रापते के विप्रति स्थानित स्थानित त्या । शुंर्वतिष्यं पति । विषयं व्याप्ति । २८वा । जुन्'न्न्'य' त्र्ये त्रिया हुय हा हुन्'ने । में 'स्पा'कप' सून्य हेन्ययम । रोयया हैन् 'गृहुग्'या हैन् पाने। । श्रिक्तर गहेश छैस वानश्चन्'न्य। भिष्ठन्'यश्चियपये इयाय ग्रन्। मिनशुन् नत्र्णीयां वाहिरात्वा | देवावायां रेगातहितातिं सत्तेवा । हैं व्यवद्रतिर्वेद्रवेद्रवेद्रद्रित्। विवागशुरुव्यव। विवानी हूरन्यति व्यत्र विदारम्य ग्रान्ने यति व्यत्य भेवापते न्यर । न्राग्न वर्ष रण्गवर परावु 'बेर'प' क्रेर हे पर्वु द 'ग्रैक प्राप्त पर प्राप्त वर्ष रण्णा न्ने हुँ र हुँ श थे के हैं हर स्पेर। जूँ र ध्रायनु र जूँ र दे हैं ग रा पर सर प्रवितार् वित्रामित्रे अव्युवायक्ष्यत्रित्वे वित्राम्या

त्र्भं निर्देश्चर्यं हिर्द्यास्त्र्यं हिष्युक्त्यं विष्युक्त्यं विष्युक्त्यं विष्युक्त्यं विष्युक्त्यं विष्युक् विश्वरायास्त्रे विर्द्यात् विश्वरायाः विषयः विश्वरायः विश्वरायः विषयः विषयः

न्यपरेकुन्परहेन्पत्र |तिष्ठुराप्त्रिक्षरुप्त्राप्ताः -[कु:प'तुकाकु'र्वे नकारा'त्ना | तिने'त्व''स्व'व'क्तातर्ह्वे न भैदा । धुन्। कुळेद् घॅ पङ्ग्रं याप्या । बळद् यदि सेयराद हे द र्मेल्ड्बेर् । ब्रिंल्यल्य्दर्वर्ष्य्ररायः । ह्रेंग्र्डिर्प्वहरू यराके विषाम्। [इतारम्भेराक्रात्वारम्यागुव् । गहेवः <u> न्र र्भ वर्ष हें स्टें स्टें स्टें स्टें स्ट्रिया हिंदा है व्याप है वर्ष स्ट्रिया है वर्ष स्ट्रिया है वर्ष स</u> हॅम: मुचे मधेन क्षेत्र क्षिया । इस हिंग र्श्वेम: व क्वें व में सम्बा तकेष्ररत्र्युन्नेश्चरकेष्त्रया । विक्रादकेष्य द्वर्याधिया । वृत्र इत्यर्ग्यायाद्वे इव ग्रीया । तर्गे हुग गयरायाद्वर हेव गर्त।। हग्रुरेष्ट्रिप्रश्चायाविव्तु । विवदायारेष्ट्रियावस्वाव। । । । । व्यम्बर्द्र्युवाकेवान्त्र । १८८ क्रि. गुरुप्ता केव्यं भेवा । हे ला ग्रॅल'प'अ'य हम'व। विवलकुष्ट्रिम्प'प'र भेरा वेद'ग्रा । विचन् **इपाम्बर्धराप्त्रीयार्चेश । । अम्बर्धरायमध्यापञ्चयया । ।** वृष्ट्रां स्वार्या के वा के वा प्रति । हिन् पुर्ने हिन् प्रति वा प्रायमिका। े प्रवाहन निवाद राष्ट्रिका है। निवाद वार्य वार्ष वार्ष है मर्ख्या ग्रिग्स्रर्भे म्रिन्स्रर्भे म्रिन्स्या **हॅन|राराष्ट्र|परास्व,श्रेयावया हायव्य,श्रेव्यायायाया** 

बढ़ेशहै। वेष्यत्तुष्ठ्रान्दुन्त्रुन्त्र्रात्त्र्र्त्र्व्यव्यव्यव्यक्त्र्र्त्तुः 5'न्मॅबर्यक्षेसपराग्रीकाविणान्युन्ववस्यम्यम्रात्रिःव्युन्यस्।। तु'न्र-कुर्-अर्देन्युर्-वृश्य | नि'वृश्यक्याद्र्यं रहित्हेर् |क्रमायह्रन्द्रम्थान्त्रीम् श्रुन्त्रस्याया । इरान्न्यं स्य **हुँ**न्'हिन्स'नेग्र'ग्रुवा |ने'ग्रुव'इत्र'तहुँर'कुँचर'ळन्'पेदा। इंश्यास्त्रं द्वाया ग्रीयाञ्चर तह तयाया । गृते व र्रा राज्या प्राप्त या प्राप्त या ग्रुवा |ने'ग्रुवाद्यात्र्व्रःक्षेप्त्र्यात्रेत्रःष्वित्। ।ह्रावहन् इयम्ध्रीमञ्चरात्रव्याया । वरान्रारमजुनामहेनान्रास्या । ने'गह्यअद्गत्वर्द्धेन्दश्चेंकस्यंभित्। ।कॅस्यस्न्द्रस्यर्धश्चेर्न्द्रस्य | न न स्यान्यान्यां क्षेत्रं वर्षां न स्वा | ने न सुवाह स्या स्वी र क्री শা म्योर्पराधित। किंदायर्द्राद्वराधिताश्चरात्रवेताया । हायाप्र म्नबस्य म्नुर्पाम्बद्धा । नेप्नु अयद्याद्धे रक्षेप्नि हे व भेदा। क्र्यायह्री व्यवाधीया प्रमान व्यव्याच्या । र नेव प्रमान व्यक्ष्य तक्ष्यं गृह्युवा १ने'गृह्युवाद्यात् हें राष्ट्रीत्रक्षित्। ।क्रॅक्यवर्दन् इवराग्रीसमञ्जूनात इवराया । यायेन राजी हैं नामने माना वाहि । ग्रुअःद्रवार्त्र्वेरःश्रेग्रह्र्यंग्रायाधित्। ।क्रस्यस्त्वराश्रेसायञ्चा तहताया क्षिण्यास्य वारात स्तारा हिलाया । ने नहा वाह्य त्र्रेरक्षेत्रेरक्षेत्र । इंग्यंत्र्रं द्वराष्ट्रेयपञ्चारत्वरात्।। हण्याचेन् वृत्येन् वर्षे व

हृग्राधित्। ।ॐবামার্-('র্মমাট্রমানস্ক্রন'নের্জনার্মা।

मुश्चर्याया भ्रवः भ्रवः या प्रति द्वाः या प्रति

रराष्ट्रीयरावीयानेयावयापावयायायाचीयाचीयाचीयाचीयाचीया ८व्चॅ र वरा भरापरी । तिष्ठ्यापते हेराशु त्रारका वराष्ट्रगाप्त सार्श्वरा क्चे<u>त्र'मेत्रे</u>क्षं संपात्रवाष्पराञ्चन । व्यात्र ईवारतायात्वन्। दवाय गुर बेन्'रन्'बर्-न्ग्'पदि'द्रता'तर्चे र-व्य'यन्'पन्। । वुन्'र्सेन्ट्रेब्युः त्ज्ञन्त्र<sup>श्</sup>रव्यायस्य । त्यार्थियात्रस्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य ङ्गनः ताळ्याञ्च राहे वाया वाया ने रेने वाया हे ग्ळेटा ळ न पा ति दाया ताळी रा वाया !!!!! यन्पन्नि । नन्द्रसम्बन्धन्त्रसम्बन्धन्त्रसम्बन्धन्ति। । वयराय न 'रोयरासु'ने साद सार्ड र सून में वरासु ন'বহা'অন্'ন্থৰ तिष्ठेरानदे द्वारात हैं राव्यापरान है। । विकेश पेरवारान हुता व्यार के [मर्पर क्रेंत्र'माञ्चे प्रमेर केंबाया द्वाया । हें न्वा छत् वित्र तु: क्रुत्व वा *শ্বমা* এণ্ডাৰ্ম বিশ্বমান ই কাল্ডাৰ বিশ্বমান কৰি কালিক বিশ্বমান কৰি কালিক বিশ্বমান কৰি কালিক বিশ্বমান কৰি কৰি কৰি र्वितःनु । पञ्जा वदातुर । तुर प्राप्य प्राञ्चेत् । यदे के बाय वदा अर हुन য়ড়ৼ৻য়৻৴৻৻য়ৼয়ৢ৻৸৻য়য়৻ড়য়য়৻য়ৢৼ৻য়ৢয়৻ড়ৼ৻য়৻৸৻য়ৢৼয়য়৽ षर्पर्रे । माञ्चर् केंग् हैरात्यर बाववानेवर्गामा मान्य कर्ने **इ**श्तान्यत्रात्रात्र्या । तहिनाःहेत्न्यः मान्त्रात्रात्रेत्रात्रहतः **ग** ५५ 'इत्र' न दे द्वार दे दे र द्वार पर 'च दे। । इं खुल कृष । वहाग इरा **दश**तुन्थेन्'ग्वेन्'त्तुन्रुंहुन्'नितःक्रंशयाद्यायनःसुग । विवायादनः वशार्भेग्'वशास्त्रवशास्त्रमृश्चि'वार'हेंग्वापदि'इत्यतिहें र'ववापद'यदे। न्येर्प्तित्रात्र्विष्वात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्रात्र्वात्रात्रात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र | गर्सें व'त्यु ब' ह 'त' विं व' व ब' वर् र प दे' बात सार वें प्रांत व दे ता तर्त्रे र वरा भरायते। । शिर्यते क्वेंग्रानुः ईन् वरा श्रें र निर्मा के **छेन्'चर्रेकें रायाववाप्पम्'सुन ।** इंबाप्तवस क्वेंप्रम् व्यक्ष्म्प्वा शेयवायाक्षेत्रत्यायम् यद्री । विद्याप्तर्भे स्वायन्त्रत्य ब्रुॅं न्या स्थित त्रा है ने त्र है के स्थाप द्या पर सुन । रे में न रा हे किया है न दश्यात्तुग्'राज्ञुन'कन्'रोन्'रादीःद्रत्य'त्र्त्रीं न्द्ररायन्'रान्। । श्रुम्याःशे A'चैव'ववार्दे'नशुद्र'यमुव'तह्य'चेद'धति'क्रॅशप'वअ'धन'स्य <u>२ गु'कु त' हु' त शु र व श ह ग्' हु' छै श के त' के दे त' त कें र व त' य प र'''''''</u> यन्।। विवागहान्यामव। यवार्ष्मयावार्षणवानवान्यास्या ষ্ত্ৰণমন্ত্ৰীন্'ইব'মঝা ন্ৰ্ৰ'মন্ত্ৰ'ঐ'নন্ত্ৰ'বী প্ৰথম, এখিনা, হ্ৰিনা, ছী, हेर्दारायायान्यवारादेर्द्वयायय। हेर्बार्चनः हुग्याद्वारादेर्द्वरः रास्नेनः 別の一般なってからしている。 र्शेर'र् वे'प'यश्चर'श्यप्रस्थात्र व्हें न'पर'युर'हें। । मर्जुव्ययम् सुग्वयम् वर्षुः वर्षे वर्षः विमः। नुग्वयम् निवासं केति यमः वर्षे न् অব্বেদ্ৰাপ্ত্ৰিন্তাক্ষকান্তিল্লাক্ষন্ত্ৰন্থিৰ্ব্ नते श्रवाञ्चन क्षेत्रान्यापते क्षेत्र रहे।

## न्यायक्षयम् ।

इस्रात्र्वे राग्ने न्यराख्यायन नाम रिम्टे ने के राज्य व'ञ्'गु'रु। *ঀৢ৾ঀ*৾ৢয়য়৾ৼৢৢয়৻ড়ৢ৾ঀৢৼৼৼ৾ঀৢয়ড়৾৾ঀৼৢয়য়৸য়৽৸ঢ়ঢ়ঢ়৸য়৾৸য়ৢৼ৽৽ **षश**त्र्व की में बेन्' मुख्य प्रमान के निया विष्य में हो स्वापत ही स्वका क्ष्मा है नई नृत्यं मुन देन हे न स्था है न स्था मुन मुन मुन स्था है न स्था मुन मुन स्था स्था मुन स्था स्था स्था <u> इति:तुर्श्वेन'इबर्क्या) वर'वय।</u> वे'वति:र्ग्येस'त्रिर'क्र्र'वर्ळग्',तृखुर' पक्षत्र'प'त्र'। <u>इ</u>वायानपुर्यायक्ष्याचियाच्यान्ते प्राचित्रं प्राचित्रं विकास्या स्वायान्। श्रीमान्नियान्याक्षेत्रास्ति सम्प्रायान्यास्य विदा ष्ठन्'यर'ब्रेन्'हे'केब्'र्यंयद्भ'न्ग्रयं'व्या गुव'न्ग्र'र्वेन्त्रत्या व्याअर्थेन्यपतिः नुषावा जन र्षेषा वाक्षेत्र कुन् नुष्ते के स नि.प। रूप,कु,केप,प,प,केप,प,रनि,प,नियान। थरया क्यां या स्ट्र बर मंत्रापक्षेत्रप्रगुराय। र्गेपिदेश्चापक्षेत्रय। स्रग्धित्रवस रामक्रेन्या वेग्यकेन्यं स्पार्न्न्यायम् वास्या क्रेन्यम् स्य मदापान्तिये निर्देशका व्यापा वर्त्ता वर्षा वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्षा वर्ता वर्षा वर्ता वर्षा वर्या वर्षा राकेन्संधर-र्गापर-रवानुःहेन्दाविषात्वुन्वरात्वुरःदा। क्षेत्रवासासाम्यम् निर्देशम् स्वासासाम्य **अन्।यहान्यान्या** तर्रस्थळवानुगवार्यः स्टेबेराश्चेर्पामश्चरादागवास्तिः। ক্টব্

धत्यान्व'व्षंपा श्रायद्धते हेंव्याया सर्वानु सर्वान्य सेन्य स्वान्य स् शैवरान्यतः शैवरान्यतः केवः संदे। हेप्रबंबप्रमानिहासुमार्दिन ग्रायाकीर्मा द्राप्त्रीयाय। हिम्मे द्राप्तीयाकीयान्य वैत्रहुष्यां भुत्राप्याप्याप्रस्याद्याद्वाया हुन् र्येत्या है। या या मुख क्रु:पङ्ग'प'वेन'बॅर'बर्सन'केर'| त्रेबबाउन'इवशङ्खन'वेन'पदि'ग्रुन' <u>छ्य'यातर्भेन्'पर्यं वर्ह्न्य'प्रम्थर्ययात्र</u>्व्यं वर्ष्ट्र'त्र्व्यं वर्ष्ट्र'त्र्याः र्दशं विषा यह प्रा विष्ठ **मॅ**न्'ख्याबहराक्कीरे'न'ख्न' वृतुन'तुराक्कीय। सम'झ'हे'न्सु'वर्स'न्वर' ८०८ क्षियां । स्थायतायानाव्याम् । व्यायानाविकाः इन मदि गरे व में हे कि न कि व व व के कि व मान मान के कि हा मा त्रहेग् हेदाश्चे त्रुद्धां तायायायायाय दिहेरा सुदिन्य सारहेग् हेदाश्चे त्रुद्धा भूका गुरायाहका प्रतास सहित्या दे। प्राप्त संभित्र स्थान स ह्रणयाह्नेत्रयायाङ्गेतायाहेत्रयार् ५ कुत्रया ६ कुत्रया हिल्या केर्रुण्याया विवित्रेष्ट्या ह्याबाहेळेव्यार्ग्नावहेव्यादेख्या र्रणयाने हेन अति स्था में रखन नुष्या हैन हैन। रन में यदि स्था हुन न्गुन् संकुः शुः इ वृक्षेत्राय दे से ध्याने व न्यान के यदि हे न्यं व बर-प्रस्तिन्यु निर्देशित्र्यां यहंद्र-प्र-वृद्याः विवादिनं हुः निव्यः हेः """ श्रम् श्रीतः महेरा ग्रातः तिवित्याया स्या निया वया विना नी के स्यार्थ पे **८८ श**च्यार् ग्रञ्जायर द्याप्यस्य स्थापात्र । ने वदावग

त्नत्र्रात्तान्तात्र्व्वावाने स्वताक्ष्यात्त्रम्थे व्याप्तेत्रात्ते व्याप्ते व ८५५ पदे स्था हे'ने' केन' देव' संक्षे' गरी र क्षे हो गरा राया या गुड़न क्वॅुग'यर्=५'केन'यहुष्यायते'हुष्यायन्वॅन्याय। प्रारेखन्थन्यन्ति खुक्ष'तुम्कारमे दुर्ग त्रम्'कुक्ष'युम्को तके पारिने गुरेग'त्य'स गुर्वा राषीत्र'रा तद्र'न्बॅन्सवस्य इंग्जें'या तत्र्यानुस्यित्रं नते यळव व वेन्यां व नदे तेयरा उदा केंद्र दे न जुल। पदे प्राये प्रति दि दि प्राये प्रति प्राये प्रति प्राये प्रति प्राये प्रति प्राय **छे**न'पाइबनावेंदारेबॅट्या वेपत्रेता है। तही ताही। तथा द्वारा पाउटा रोजना ब्रुं न तुर्वा बुर्वा वर्ने पवि वर्षे म उत्ते वे वि वर्षे म उत्ते वि वर्षे म उत्ते वर्षे प्राप्त के हिंद्रिं धियायां कष्य वादान्य द्वान्य वित्व ही से कगरायाधेवायात्र। मर्ज्जवायाम् वराषीद्ररायाः ज्ञावान्षीत्रुवायाम्ब्रेवामगुर सतम्बेन्। रेंक्स्याम्बेलागुम्क्स्याम्बेन्।सव्योग्धेत्वेताम्बाध्याम्ब ग्रन्। सबार ब्रंकीन् यनः बैब्बिन् स्वाब्द सन् भूति हुन्यवान ब्रुन् स हिन्दर्भुग्यायसक्षित्रत्व सरहिन्द्रां वात्राह्म ने उत्तर हे का व्यापा विवां क्षे होन् 'च विष्ववश्रक्षे 'त दुवा' वृद्ध स्यायत। हैं 'क्षें व्यते। ह' न' दूं स्रह्म रकेंग्रस्तत्वा द्वेषाया विवासवार्षे रावारायतर सवादाया विवाही द्वा हेर्ष्ट्रन्यरायां कन्यायायाया हिन्यान्ना सुन् सेन् क्षेत्रम्या स्वा रते सु वें बा गुर क्रे ल है। सर सर दि हिस मिर पर हिस मिर है ता क्रे न के

स्'हें विन्पराक्षेत्र व्याक्ष्याम् तर्वाविषाः वर्षन् देन् हेन मन। देरहे विद्विक विद्वित संस्था द्वात तुना गुनः च च तरके के तहा तर दे। **ঀ৽৻ৢ৴**৽ড়ৠ৾য়৻ঀ৽য়ঀ৽৻য়ঀ৻৽য়৸ঀঀ৽য়ৣ৽ড়৽য়ৣঀ৽ৼ৽৴ৼ৽৴য়ঀ৻৽৻ঀ৽ঢ়৽৽৽৽৽ मञ्जूतायम् विद्यायम् देश्याद्या विद्याचित्राम् विद्याम् ह्य न्या स्थान स्य पर्विनेर्प्त्रा वद्रिक्षेत्रापर्वर्त्त्रा न्यन्यं विवा न्म्याचे र व्याष्ट्राप्त्राया न्याप्त्राप्त्राप्त्रा प्रविष्ट्रा विष्ट्रा व क्रीश्चेषयायः प्राप्ति मृत्यवण दयप्रासुरायविषायय। हेर्ने विशेष **इ**ंहें हिंत्'ग्रैसार्कस'न्निया वेना गुसारा गुसार ने नु र तुर वसाय द्वेर ..... वेर। धुन्यत्रातह्यावयार्यात्येन्छेन्रेन्यव्य। ষষ্ঠ'মাধুন্দ'ন' विनाप हें व व बाप श्रम स्थान अप स्थान में व बाहे हे ने प्री बाहे पर का नहा अपन् नन्यानि काम्डिन हे स्रितिन्ने सामान्ता स्राम्यान दुश्यायाताळळं न न्याक्ने वळ नाहे वानि न वान वाहे व्यति वळ नाहे वाहा मर्जुग्व। कःगर्रेग् हे रेद् में हे रर्र में केरर ने विक्र के स्कुग्वा रायाव्या द्या **६**•बॅदि<del>`हेब</del>ाकुन्दान्द्रबबाक्षराच्याह्यवाचाननेपनरान्क्रियानेनानेनान्त्र मुक्षके वर्षे म्हारा विवास स्पार्य के विवास स्पार्थ के विवास स्पार्य के विवास स्पार के विवास स्पार के विवास स्पार के विवास स् रोयरार्भे प्ररायं प्रथम प्रथम विषा हिन्दि र स्वार्या हि यह व पा है रा ब्रेन्सं विवाद्यायाया हेरेवयावयायातुन्य छन् सने ने प्रवाही

मने अवया अम् वृद्धम्याया अपु केवायाय विवय है। ने तर्ह कुर'अ'व्रॅंर'ग्रैक्ष'ग्रर'व्यापर्रवागुर'वे'क्रेर्। वर'र्रायर्देर्'ग्रैक्ष्वंक व्यापः कर् गुरू भेरा वेरावाया श्रुरा प्राप्ता पुरूष हुरा। नेराहे हैन छैबा छ। ष्टुंग्यहेन्'र्यंभगवायाया इत्यं ह्मा व्याप्त विषया यन्यार्थित। मार्क्षयाचेत्रायम्यायायायाया न्यान्याया लापुःवारी कंरों परेवान सम्मान स्ति। यह ते ज्वारी सार्वान के लावी परः वृद्धं नेर। दे वहां हे देव में के का हे पर वे ता इसका की का कर सरा तम्ब्रास्त्राक्षीन् मेंब्रायासाईन। साई मार्नेब्राकेव्यावाराकी हुन दु बहताहै। श्रुः सेन् सें क्षेत्र न् नृष्युतान् हत्य श्रुः नार्ड न् स क्रांतर दिन्हारायवाय। कॅश्रङ्गेरायह्यारान्ना नेवियायीकवागुन्द्रीन न्हेंन्य्रात्वाव्यापय। सुर्हेष्यतेव्यावय। न्याकस्क्रीरान्हेंन्जुः बेर्। हिर्'रर'ल'ॲर्'इ'हिर'र्नेग'कॅल'र्झेर'नडुग'नैवा'नशुरवाराता **ब्रै**रःग्रन्पानेहरःमृपुःबरःवय। श्रःश्वितयः इत्त्रिप्तः वयान्य मैक्षरीयकारवन् के र्वा सेन्द्रीन्द्री ने प्यमाहना या जुन के सुना करिया हुन्द्वायक्षेष्ठवायह। पञ्जयविन्वायस्यापाय न्वापित्रवायह। नत्तान्तरे नेव न्रास्त्य प्रतिष्ठ न्या हे है। हुन्य हे ने सवय न्रास्त मक्रतेयवारुवाधी र्वाधेर्पार्या श्रीरवाही अध्यास्या वाही के क्रांचा राज्ये तत्व'नवयर्षेव'लवक्षित्रेल'न'येन'मराने दं अवस्य सम्यक्षर है।

रे'विषास्यानु'र्येषान्वसाम्येरास्ट्रान्यसुनुषान्यस्'व्वसाम्येरळसाञ्चषरः मञ्चराहे। तमन्ध्रताकुः इगरान्ने तेरामुनदे न् वेन्यम्। षकेतापति दुन्द्रान्य त्यु चुन्द्राय श्रेष्ट्रा व वा यश्चेत्र व विष्ट्रा व विष्ट्रा व विष्ट्रा व बर्ळद्रपर्कित्ववर्षित्वेव् केव्रतुः गृर्वेत्याया । नेव्वराद् वी प्रमेरापुः प ब्रैन य' नन्। हा ततुत्राच तहेन या गहेश यथ। सम्भे कुता सम्न हॅग्राजुद्। सर्देद्रायां सर्देद्रायां रेग्रायाया दि केंद्राया पुणाया ख्यापार्त्ते ब्रद्धने राप्तपार ग्रेका हेर न्यार तत्या सर्वे न्यार वि जुन ग्री "" मन्द्रान्द्रियः वृद्धश्रम्याः अदः दुःबुद्ध। द्वी मने शंह्रुवा दुद्धारा न्'श्चर'य'वृव्यवाशु'येव'न्बॅनवाञ्च'ङ्गवय'रेर'रव्ववयावा । ने'यर हेरे'हेर्। वेशरम रूप। क्रिं हेरी राष्ट्र हेप। यर द्वर रूप त्रेंबादवायाविवातुः सुन्दाना न्नायान्ना स्वात्रायाविवातुः स्वात्राया ते<sup>।</sup>तं,र्नःश्रृंशभग्नेव्रद्धःस्य । वेद्रायरश्चेत्र<mark>ायश्चरायश्चश्चायः</mark> तावव म्व दे वित्र वर्ष में दिन । वर्ष वर्ष में में नियम वर्ष में नियम वर्ष में नियम वर्ष में नियम वर्ष में में मायार्वेष्यान् वीमितिः द्वामायाष्येयाम् सेन्। माराम् व्यापानि व्यापानि वि षीश्चैवःतुःबेःतन्तुःनःपन्नःवृष्ट्यःतुष्यःचेअन्तेःतक्षंपःअष्वस्यगुन्नयग्रैशः**ः** रावे बन त बिन सु खुराय ने प्रति व बरा न न व्वपा न न। तहेव कु जुवान देन त्यादन वासर राज्य द्याप रहा। क्या वासर राज्य पा ह्माक्ष्मा व्यवस्थानुः वर्षे प्रवेश्वादे प्रवेशान्य वर्षाम् र्वे पार्यते सृष्युक्त इवया है। सुरा पार्वे व सुरा है। । ने व वा त्वा व वा वे पा पो

क्रेंद्यम्यवयात। इतार्युराग्र्यंतरयाञ्चारा त्वतः इत्यार्थे स्वाप्तायावा अप्तारा स्वाप्ताया । स्वाप्ताया स्वाप्ताया स्वाप्ताया । स्वाप्ताया स्वाप्ताया स्व हेने केन की न स्वाप अव पाय विषय के स्वाप के स्वाप के स 智 स्ना अर्थेन ने ने का की के अर्थेन पर पर पर । व व का न न तर पर पर पर **५८। वेशपान्त्राचेनपाचुराहे। ज्ञामकळ्याचीनवीञ्चराविवायनपा** ने'ल'स्राने'क्रवायनन्'यव। न्ने'श्रॅन'व'ने। ब्रेन'र्क्रवातन्ताय लबर्गर्नु चुर् द्वा विवयस्य र्ग्ना यहुर मदे र्गे हें र ल। तर्चे ररा दर ब्रेंट राया बेंग बारा चुर व। यो द गर ब्रेंट रहु लाये व पश्चनरः कन्त्र बुदः हेवार्षन्। अविवासिते दुदः नुः की वार्षः पान गरसितेः खनः लुम। कॅन्या शुन्ने ततुन तान हें रायते हीन क्राया लुम। दे द्रराष्ट्रराज्यायरकन्द्रात्र्वेग्वेर्द्रराचेर। नेरावायन्द्रित्र्त्रात्र्वेग्वे प'न् ग्रायितिस्त लुका न्वीतितु ब्राह्म सकाता वृहें रखा पक्का सिल्या है। मञ्जेब्रायामञ्जूत्यामञ् । इराक्षेत्रसार्ह्यसार्म्यान्।त्रीयात्र्याताहायाःता र्सर बुर स्। तुरा ने उं दाहे पर्द्ध दार्श या र रापाने हेन वा प्राप्त सर र्श्वे प्रस्ति के त्रिया के अपेर निर्माण के प्राप्ति । र्रोग्यव'नवाय। तद्दी'भ्रीयानवाद्य। नव'हेन'भ्रव'य'वार्यवादाने'न्न तार्रग्रायतेषु अस्य अराग्रीका नर्ज्ञ स्वयान वृग्यापते पुरा हु। इतः र्नेन'न्न'रेश'न्न'क्रीकेशक्रीतिम्स्याम्भून्निरेके। न्यापानुन्पा इर्ष्य ग्रीयाहे पर्द्व तथा वृद्याय । प्रहे पर्द्व मुग्रम पर्देश प्रमा षायाने वितामस्यापावन तु वाक्षेषायाया श्रुताया वाक्षाया इत्रायाणा <u> श्रीराज्ञेष संस्थानमार्देष सार्वे इत्यान्य प्रस्थानमा स्थानमा स्थानमा स्थानमा स्थानमा स्थानमा स्थानमा स्थानमा</u> न्रज्याप्तिः धायाञ्चा द्वेषा देवा देवा प्रत्या । हे पर्द्वा प्रत्या ह्रणयान् छेश्याम् केणायान् वर्षात्मा इवस्य स्यापन स्यापन व्हायरत्यव्हायम् न्यायम् न्यायम् न्यायम् न्यायम् न्यायम् न्यायम् **२२ त्यञ्चित्रास्त्रं व्यापञ्चित्राचे रापाक्षे प्राप्तराय त्राया व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्याप** हे नर्द्व दुन्य व वे रापितिवयात्र व नियात है व स्थान है सहीयात्र व पतिःश्चॅपायाण्यन्दे। ने'ग्नाव'तत्ग्'नेंड्ना'न्यायुप्ययायन्याद्व'न्न्ग् र्देग्'ग्रुप्तरा व्यवस्य प्रमुख्यात्राम् प्रमानिकान्यायाः गुद्धानस्य वारापाया हे पर्वन् की वारावया रते प्रमृद्धारा विदेव ग्न अराम्ग् गुअपा ग्नार्डे खेत्वे विमान ह्वारा हुंग्य प्रतिक्षेत्राच्या मङ्रश्रेमातुवाराक्रवाततुमानामवारमातुः हुन्नदे न्वेश्वराक्षेर्वेदे वैदः ठवः विवा ह्यु रः दुः पॅदः घरः दत् वा ह्ये। वद्दः दिः हो भवाव। हा नेशनेयान् गराश्ची तुर्याया क्रेंन्या गरिना ह्ये राववा स्तिन्त्यान् गराश्ची व्यापान्त्र देशान्य ना वित्वयापर सेन ग्रीकार्चे पा देश मन्त्राप्तराष्ट्रिय। यत्राज्ञराण्चित्रवृत्रावेव्याः भूरानेत्रितः মীনমাতৰ'নামনেমাঘিনিইবাট্টির'বুমানমানেরণাড়'ড়'বীমা মন্বর্' উল वगुरः दर्भगुरुवार्वा ।

हे हा यह वरा भाष्ठपार वे भाषा । प्रमाद है व उदा या नहीं वा प्र तनेत्रम् । प्रसेहे: 'नगर वॅदि'दें अ'ने। । पदुन 'के'न र के'न र क' मन्। । इं'न्यर मंप्रक विद्युक्ष बर्याप विद्या । इं'क व्याप्त **र्वे**दे'बर्छेट्याप'दे। |बर्केट्याप'के'ट्ट'के'वर'क'बर्केदा'हे। |बर्केट्य पायत श्वामी प्याक क्षेत्र वेत्। |त श्वाम क्षेत्र हित्य के पाने | हैं 'हे 'हे' रु.ण.च.क्रेययायावेव। वियातश्चर्याकृष्यायावेवायाचे। विविधाया <u> ५८ | प्राचरक अकेश है । अञ्चर अर्गेट अपिक वेट । । इट राक्षे</u> हिरायान्यारी । शुःर्वारायेत्रहेवायंत्रश्चरवायायेत्। । द्वरावयाः त्रुग्'र्हेव्'र्के'र्हेन्य'के'न। |हेंन्य'के'न्न'के'नन'क'यकेयाहे।| कृपन्यस्यत्यव में नःब के कु से न । त्या व के हे न त्य के च ने । या न इन्त्वत्युन्वत्त्र्वत्यं विव । भरतेरः वेन्वर्वत्रं स्टारी। **ब्रॅ**न्देब्केब्प्निस्क्रुंग्यायायायाया ।ब्रॅन्द्राययानुक्ताया द्वन व्रिन्द्रन्थलन् हुन्यायान् व्रिन्यन्त्रकन्यायान् न्यान तर्वे। |हे'डू'र्र'खें'हेदे'ग्नवशंदग्ति । |त्रन'न्द'त्रन'मरकः बढेरागुरः। |यानर्सेयरार्गेरःयःचनःकुयेर। ।स्र्याग्रेहेरःयःचनः प'रे। वि'हें बरमस्य ब्रह्मस्य पित्। वि'यरसमस्य क्रेंबराय भिन्। |बीपारी:र्झेंबानुबन्धिन्।नाशुब्धी । गन्न्।नुःत्र्नायान्यःकः बक्रियगुरा । इर्विद्वास्ययाया हेर्स्युविदा । इर्विप्युवित्राव्य हेरपंभव। [तुः क्रॅवपं प्युत्व हेरपंभव। विवास देवगुर

ग्राम्यार्थं। देते के हे देव राके दे वित्र देव ग्री के के कार्य के न देश्रिंध्ययं चुन्यं देर्ध्यं ने के द्रांतिना चुन्यत्। क्र क्रेरिंदिना द्राञ्चन स गृह्यस्पेन् द्वेंद्र हेन् किन्त नुग्र देश किंग द्वे । न्यंति क्रु खुग्र दि तर्भा कुं इन बर्दे वे बाद्य परि न्ने व तुन के पत्र ना दे रैन व न वाप र गुवाळी पाळे बाक्षेव पा चन पोल हेव पा चुन पा चुवा बॅं'अर्डुंग्बर्नेसबेर्'पर्दें ठग्'गुर्द्ध्र्'पर्युवर्व्व। रन्देळेते म्नाया में साहित्या । विस्ता मन् विष्तु चित्र के हिना या मित्र मन् साहित्य का स्ति । **८द्विराह्यःग्८५ ग्रद्धम् ग्रद्धश्चित्रः अत्रद्धाः व्यक्तः स्वर्धः व्यक्तः व्यक्तः व्यक्तः व्यक्तः व्यक्तः व्यक्तः व** ग्रिग्वरी राष्ट्रिर्कीरेप्तशाकुरात्तुव्यम्ग्लेपा लाखेर्यस्यरेष पःशिःगरः रुधानुस्। ने त्यागवे रुखाय हुन। न्यान दे स्वा वर्षे स्व घ्या श्रुरं रह्मं दश्चित्रस्य स्यापस्तित्य हैं र्यम् मे स्त्रं न्यापने र नव्यानेवरी क्रेकायां हुंग्यान्य संवयत्यान्य न्यान्य हा कृषाबादमः क्षमः दाने ने सम्बन्धः चायम् । क्षमः विकासः सम्बन्धः विकासः सम्बन्धः विकासः सम्बन्धः विकासः सम्बन्धः ग्रेंट्। र्गेब्रॅट्वेट्ट्ग्यंविग्दुर्ग्छेरेलक्र्रेट्यंबर्ड्व्वेट् तत्वाय। ने गुन ग्रीका वायव व स्थान की किया ग्राम क्रिया के ना के ना के ना के ना के क्व'वाकुन'मु'न'भेव'पर्य। दिन'ग्**यत्यस्ति'ग्**तन'कुन'द्रे'वाबेन'य। **२५५/४:०:२५५५:७:४:७:४:४:४:४:५४:५**४:५४:५४:५४:५४:५४:५४ मञ्जूरायश्रम् ने वेद्युपाया छै । प्रत्येष्ठ राम्य । इत्यत्र हिर क्चैन्वराञ्चन्वीत्रार्थायां वेषाद्वाचा वर्षान् गृत्यवुचान्दाने राज्येत

ট্রীঝার ঐব। ব্যবর বেশকুন দ্ব প্রুর ইবি বের ইব ট্রীঝার ঐব। न्दरात्र्वानुत्रायार्त्राच्याद्वान्यायात्रात्र्यात्र्वान्त्राच्यान्त्रेगाःगः **ष**न्यरत्त्व नेते'तुन'न्रन'ळे'तने'त्त्रंशपन्रन'व्यावन'त्वात्त्रा राष्ट्रीत्वात्वात् ने विवाधनावात्रात्रे देवा वर्षेत्वात्रात्वात्राह्मे से स्वक्षेत्रा न्रेन्द्रे पर्वं वर्षी वर्ष वर्षे वर्षे प्राप्ति वर्षे प्राप्ति प्राप्ति वियावियात र्गायाया न्यन्थेन्धित्न्भः केन्सं क्रेन्यं क्रेन्यं न्याः क्रेन्यं न्याः क्रेन्यं न्याः क्रेन्यं न्याः व्याः क्रेन्यं न्याः व्याः व्याः क्रेन्यं न्याः व्याः व्यः इव्पाक्रिप्पान्राष्ट्रव्या अराया प्रश्ला वर्षाः वर्पायाहर। मबेन्सवसाहे मर्द्धवाम् वृष्यमा देश्वेष साह्य वृष्य साह्य मान हे' पर्दुव हे' पर्दुव प्राप्त हे बाज है ज बावे बाज बाव पर प्राप्त व पर है' पर्दुव हो पर है ज वसर्धेव हे न ने हैं र के नर्से में अवस्था पत्त व पाय है न प्राय । व से प्यत्र **यन्द्रित्र्र्रात्र्रात्र्रात्र्राप्तित्र्यत्रान्न्दित्रान्न्त्र्रा** B'は主'口気すら、「丁下'の月にいるがあれてれて、「する'なとれてから、「丁下' ब्रुन्दं न् शुक्षायं प्रस्त्र द्राज्ञ द्रान्त् प्रस्तर त्राज्ञ द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त रन्ने भेन् क्वें व्ययक्षियां म्याक्षेत्राय स्थाने न हेते'लय'वरा। रते'राञ्च ग्रैरा। रते'रा वाराग्रे'के वा'रा वारो राज्य राज्य हु वा'र्य न'राजा हे न' ने'न्याद्वेन्'रून्'अन्कंबाद्यबार्यकंवा'वाद्यन्यवा हो न'या होन। ग्विंद्रांग्वेत्रव्रेत्रव्रे देन्याकुरावेन्यग्वाचेत्। मद्राप्यद्रेन्द्र 

रग्त्रादेनार्विष्वुत्राचित्रंद्र्रा ন দ্বাদ্বি'অর্জব্দেরার। मश्रञ्जाकेत्रवर्षान्तः। यत्वव्यव्यत्तिः क्षेत्रवर्षान्तः विवाय नवाय त्वाया न्याय हर्षाया अक्षेत्र अवायाय प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प् पाता केन्द्रिन्गवाद्यग्रह्वेद्यान्द्रक् केन्द्रम् व्यव्यात्र मति नु न् बेन् 'केन्' क् दे ते के ले के लाह 'हु न ला के न न न न ला करे के लाह ने विनंत्रे र द्वार्थे अर्थे न विन्यु न वि ब्रेन्'इरायय। ब्रॅन्'रन्'तमुन्'न्नरेन्ज्वातने रखानन्। हुग्'बे'तेयवारुव्'व्यवारुद्'छिन्'ने'द्रन्'। द'वे'वे'यादुदार्हेव्वाराह्य त्याँचे र र्वेर प्रते वर्ष वर्ष का चुर हैं। इका है के द की वाय का द *ढ़ॖॱॾॕॸॱॸॸॱऄॱढ़ॺॱॺॱॺॵॱऄॴॏॖॴऄॗ॔ॸॱॸॱड़ॺॺॱॸॱॴज़ॺॱ*ॸढ़ऀऄॱड़ॺॺॱॱ नगत्गत्गत्यस्यी त्रं याद्यस्य या गुन्दे द के पर गन्त। र श्वर्ग नुगराइयराप्ते देवित प्रदेव पारे क्षें या केव द्वरा शुप्त नुग है। ज्ञान ঌ৾৻৸৾৾৻ঀ৾ৢঀৢঀয়য়ৼয়ৢড়য়য়৸য়ৢৼৼৢয়ৢঀ৾ৢয়ৢ৾৾ড়৾ঽৼঢ়৾য়৾ৼয়য়ৢঢ়ৼ৾য়ৢঀ৾৽ঢ়ৣ৾ৼয়৾৽৽ यम्भी क्षाने दे विर्पेत मा बार में । ने वस वि न र द में व का बार कर यम। हे'ने'केन'नन'प'नन'प इंबातश्रमके'पम। नते'न्न'य'नन'वय बह्याचेर। वयारवाश्चरकपार्रकीरव्या कंकवार्राया त्या पश्चेतायर श्रेपर्यापर विवास तया अर हिन् केश व्याप्य र नुभिन्यायय। बुर्विन्यन्तिः स्यान्ध्राति। न्यन्यायाया षर कुराविय संबेत। न्वें वर्ध राज्ञु छ पष्ट् चे राह्ने राह्ने राह्ने राह्ने राह्ने राह्ने राह्ने राह्ने राह्ने

র্মন্ত্রের বিন্তুল্লারীকার্মন্ত্রাক্রিন্দ্রের্কার্ पदिःस्याप्तर्यार्धेरः। अस्यार्धेयाः स्याप्तरायायाः स्याप्तरायाः ह्यर में बरेरे तुः कं श्रेन हे बाद इ.म.ने दइ वा हो न पर प्रवास्त्र का শ্ৰা म्भूव'र्प'त्विव'र्स्रत्यनेत्। ब्रुन्'र्पं'ने'इयर्छिराहे'पर्डव'क्री'ब्रुयापत् धिन के बार्च । ने व बार है 'बिन हैं व प्याय । मन में मि प्रेंप पर या हैं न चतिः छेन्दान्यन् विष्युन्यः यात्रेष्यम् । वृत्रत्यनः पतिः छेनः न्यं व म्चायान्यस्याने स्वाद्याने स्वाद् बिराञ्च न में न्'ग्रास्य स्वाकु मिन्'द्राञ्च के'निर न्राञ्च सामुन मिन ने। विद्युप्तर्यं विव्यविद्यात्रे रायवा ने सहिष्य द्वेद्र प्राप्त स्वार्थं सहस्र मुक्षाचेन्'रा'चूनम्हे। न्नत्रकेषाने'ळेन'न्रें वाकी वातावरात हिन्ने' ह्युव्रक्ष्मायर दुग्नेशेल। देव्यालय देशहे देर देते सर्धे प्राची नेयस राप्ता वरकेन्धं विवानीप् श्रीयान्य साहिता समिता सामिता मञ्जेषायह्रीताया वियर्वस्य म्याचितायर या म्याचिता भुगुनायहै **द्रुपराग्रीराहुन।पश्चरा**५ग्'रा'बेवा'वापसारमञ्जूषासार् वाश्चर्'र्'र्'र्सन। रलक्षेग्राक्षीमाव्यक्षरा। व्याधिन्धंवाह्यायाकेन। हण्याह्य शुन्द्वन्यम् न्यमेत्राचरात्राक्षेत्र्याम् श्व केर्पर्र तर्व विषक्षेत्रयामायाङ्केरवाष्ट्रयाम्यमाये । *नैर*म्बुग्बन्बॅन्बलन्कुंप्पत्रन्देग्द्रिप्त्वंब्प्न्र्यायहलकुंहेन्ल| क्षेत्राहे पर्दु न प्राप्त प्रतान कार दिल्य या हु प्राप्त है प्राप्त के प्राप हुत्रदेशपर मृग्डिवार्श्वरात्राप्ता तर्रेशियर मेंगायुक्ष दुरेश्वर यर्द्धव्येष्ट्रपायेन् देशश्चुव्यक्तायनः संयद्धवायेषावेनः गर्हेयायः स्व शुप्त न्तर्भे । ने'न्यानेन'न्देन'मुद्देन'स्यापति हेंन्द्र'य'न ग्राप्तन्यराय विगा सुर है। हिन्यर पुनिविषय प्रित ने शुरु कर यह। हुंग्याश्चे प्रवृंद्ये पपुंष्या विषाय से स्पर्यो प्राणिय हिरायश ( प्राप्त ग्रा क्ष्यान्ते हिंग्यान्त्र विवादवान हें वहार वाराना दिन्द ने हिंद पञ्चर गृति विषा विषा सेवस्य राजी दावस निषा प्राची प्रवा विषय सिषा गुरायानरे। विष्याः क्रिंयाया होत् भीका कु विषा श्रीतार्तरा विष्याया विन में बाक्ष विन मान त्या विन मान विन र्वरक्षेत्र-प्रत्वयान्यार्वन्त्।। नेत्रे हे रहं नहें पर्ने प्रा विश्वभूतः व्राक्ष्यं वृश्चनः यदे छे। देशन् वेत्रायायायत् वृश्व विषानु पायळव पृथ्व या विषा व्यापित पारिया। हे पर्युव के वा गतु द्वार वार वा प्राप्त रेयान् में नयापायान्व गया ने सामावन् में यहन्याने स्थाप्य में श्चॅप'अ'ल'भॅब' हव ब्रेडियापाय हो बप्प'ल प्रयाय । अलाबे न 'ग्रीक्रॅप'या ला विग हैंग क्रेशरा अधिव रा भाषा वाल्यराया र रा भाषा स्व र र मा भाषा करें तार्भुव'र्भवाश्चेरायानायन्यायार्धन्यायुन्। रेवाहेरवह्रवायावन्यादे मुँग्राकुरताहेग्राविषागित्रायान्त्रीतात्त्राम्हे। स्याध्यकारुन्न बिन्द्वायहे पर्दुव्या हो वाहे वाहे वाहे का कार्या के वाही का कि कार्या का कि कार्या का कि कार्या का कि कार्या का तर्व वित्तत्व ने त्यक्षेत्र हे या विवा कुत्त व वित्त हे ता है वा के का

型口公司公1 यन्ञुन्कन'नरीतादिन'तन्न्'पं'त्रवा दें'न्दें'नर्ड्न्'ग्रे'तुन'न्'न्व भेवरापरावित्रवृत्यायस् सरावित्रवाईवायात्रेपासकेवाहुरा। तक्षेत्र सत्तु व देते सहसाञ्च शुका चुका या ने 'यने 'के व' सराय दे व व का शु न्यत्र्रेन्यपरत्तुग्ग्युन्य। नेव्यहेकिन्नर्यम्य त्रवा केन्द्रत्त वा स्वाह्म वा अर्थे न स्वाह्म का स्वा तर्चै र क्रैंन् नर दुवा के तार क्या वे क्यु न न व व व व व न न न न न न न व व व ग्रुन्स्याया भवापन्यार्थेवारी ब्रिन्यन्वसर्धेवारेन। यन्या के'अ'न्द्रकाक्षेक्वत्वावयादवाहे'चर्डद्रत्यान् हन्द्रस्यायाधेद्राम्यहर्मा मल। रेंन्पन्ग्नैयातळेंच इन्नेयावन दुत्वीं वापर लु ने रावन दु ऍन'न्न्ग'र्संन'ने। हिन्'त्र्डेन'म्'हे'नर्द्धन'केन्'म्सार्थंन्न्यावहिन' हे'अर्देरवायुर्पनङ्ग्युर्ग्युर्व। मिन्नर्वन्द्रिर्देर्भुग्वक्रेयाच थर'प्रेग् शव्यादेर'दिहेन्'ग्रेशच्चेन'क्रप्याणुर'यह्र्। नैयायहराष्ट्रिन्धरातुः वेरावय। हेरीष्ठ्रग्यान्येहयाय। नेगा भैव'र'ञ्च'वर्षाद्वेव'ग्रेषायञ्चयरायस्य भेषाप्राचा ড়ঀয়য়ৢয়ৼ৸য়ড়ড়ড়৾য়ৣয়ৢয়ড়ড়৸ৼ৸ৼ৸ৢঀৢঀ৸য়য়য়ৢঀয়য়ৢয়ড়ৼ<sup>৽৽৽</sup>

न्न्द्रेश्यम् हेर्द्व्यीयन्द्रात्यव्य। म्ह्रायम् व्यापिति हेर्ह्या <u> छे</u>त्'ग्रेप्रस्थन्यम् अपस्यस्य वृद्धस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य पशुथादराञ्चणश्चिमरानिग्रानुनवा ने'दराहें द'यन्ग्'दें दें दुः इंद सहसाक्षु दुराहे। हे पर्द्व छै दुराहु हैं दायल। हे पर्द्व है सरका पर्वास्तिवारात्। तर्ने धेवाचे राखा छेन्। यहा प्राह्मा स्वाह्मा स्वाह्मा मर्खुन्द्रस्थारं विस्वादं गुप्तद् व्यासे। हे विद्यासे स्पार्ट् क्षात्मन्त्रीत्राच्युत्त्व्युत्तुन्त्रीय्य्द्रेसन्दाहते,तुक्षन्विन्यून्य्यप्ता सुयाण <u> न्युकार्ष्ठे न्या व्याप्य स्थान व्याप्य स्थान व्याप्य स्थान स्य</u> हे पर्वुव र र में इया इर विषा ग्रुट ष्वु हुट तु व स्था वु हा प्राय केन्'सॅ'रे'विग्'ह्युन्'नेक'के'पल्ग्रापते'सम्र । सङ्गानी'न्तुराज्या न्रेरचेन्द्रं न्रेन्द्रम् व्यवाद्यायात्र स्वत् । वर्षः कृत्रन् रावहर উণ্'গ্রদ্রমেম। ব্রস্থাদেশের স্ত্র'ব্ন রে প্রাথানের রাট্রর क्षे ष्ठियाया चुर्न्स् । देते के हे यर्ड्ड वाया कर हिन् में या मार मी मूर्वाया तर्षे तत्वादात्रीत्त्रुत्वावाद्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्वे श्रूर्वात्राय्या मन्ता वित्रवर्त्तुवामकावेवावव्याना हेप्तह्वाकीव्य इया ह्रेंग्'या वर पर त्र सुर वा गुड़ र वा रा प्रा ८हुन्*षाञ्चित्रा*र्देन्*षाद्वराङ्ग*्यायात्रुक्षायरान्त्रात्राच्याकुन्यानेद्वाः """ किता मृत्यवारम्यायास्यायतिः क्रेन् प्राध्यायतः विता গ্রীখ্রন বিকিথিব গ্রাপ্তন। पर्वेन्ववर्गर्भव केव चेरप भगवानुवा

रवा नर्सन्यवस्त्रविद्यास्त्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्यस्तिः

हुद्री विद्यायाद्ययोः हैं. ट्योपः यट्टेंद्या वियद्यक्री गार्षे दे विद्यायाद्ययोः हैं. ट्योपः यट्टेंद्या वियद्यक्री गार्षे दे विद्यायाद्ययो क्षे विद्यायाद्ययो विद्यायाद्यये विद्याये विद्यायये विद्याये विद्याये

द्या । केंदिरैरस्य ता जुरा विषया थी। । वा न्यरा म्या वा वा वा न्यरा न्म्यानुवा । सावान्या कुषा विन्यान्या वित्र निर्देश विन्या नते जुद्रापर्वे । अर्केंद्रान्स्य सुन्ति ग्वर्यान्य विष् **६८, विश्व क्ष्रेया, ५, विश्व विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य विश्व क्ष** है। । मैं नशुक्ष तर्र न्य स्वा वा न्य रम्र । । तुका नशुका य हो व परिश्व ग्राहे भेरा । यन् ग्रामे हुग्य राज्य अधिक परिष्ठित। । यहे मळेत् संबाबेर प्रांप्य द्या । मगार ममया विधि ग्रवस्य ग् इसमा भि पद्भन् देन कर स्तर्भन्त । १५८ हुन पति रहे न्दरःद्रश्युरः। ।द्रश्यम् इद्यत्रिक्षेन्यस्य। ।केंश्यास्यर्वेद् तके नवातहेन वामवाङ्गाम नवावत। । नहें नात शुवा प्रमाणे वा पश्चेयश्चरित्यत्वा | क्षिश्चर व इस हें ग्यायम प्राप्त । उग् ग्रुवरन्त्ववन्त्रिण्यतेष्ठेत्। भुःग्रुवश्चन्युपःस्तर्धन्यय। । कुन्परी चुन्द्रम्य व्यय हिंग्य द्या । अतास्त्र द्या तर्मा नरिधेर। । वरार्गुरतुषायरिष्य्ययारग्वयव। । क्रूर्यार्छेर् पार्केर.पश्ची विषयाश्चित्रयायायक्षेत्राज्ञेली विः हेत्.विषय बारी विवाल। विरोध कार्य दिवा विवास मान्य व इसमर देपविद्यम्या । ब्रेन्संविप कुरामर जैस्केरा । गरेर  नगत्त्व न्रीन ह्रवारा तहेवात ्त्रा १८ हिना हेला तारा निवा भूवता । शु ने ता द्वें दाय ते देशाय दायहें ना । देशाय हिन्या दे लाक्षेत्रपदान्ददावेत्प्रित्रपदिन्त्राह्यस्यायाः हेन्द्रप्रेदाह्यस्य वरावरापर। वर्षेत्रायनेत्रायर्न् पावेत्राने। नदाख्रापाद्रवराया **क्रॅब**ाचरिःहः सन्। तहारा नश्चाहः चुका नृषाः गुज्ञः चुका चुनः नः इवका नङ्गियः ॥ व्यन्तित्यं स्टन्म्यान्युत् हे पर्वन्युक्षाक्ष्या प्रस्तान्य । स्यक्ष्या प्रमु इंदाप्तर्वेषात् वेरापायाहे पर्ववाकी विवास प्राप्त स्था हे ब्रंडियें न् 'डेव्' खुत्र' न् शुरुषायश् न् न न् ग्'त्र' त सुत्र' हुं 'डे प्यन' से न् 'हे र नाय। है नर्द्वाकी व्यावसाद्वि निकाश्याया गरी न सन्में ख्रावसादे यद्येत् चेर पर्दे कं पर्येत्। यर प्राप्ते चेत्र प्रिचेत्र ज्ञात्र देश नेसंबेर्परेग्रवस्य विद्यारिक्षेत्रे । देपराहिर्प्यस्य स्टिन्द्र तुःग्रेरःपाततुग्रम्ब्रब्रद्यायरःहत्वेत्यरः द्वदेंग्रह्यः। हेःनेःहेत् कुरियेश्रम्ब्राजा इ.पव्यक्षिविद्या मित्राच्या है. यद्वे व कुरियं मित्र विद्या मित्र विद्य मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्य मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्य मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्य मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्य मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्य मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्या मित्र विद्य रेग्'य'तञ्जेसन्बॅब्यररत्न्ग्'ऋसय'न्रः। सन्बज्ज्याकुराकुरिन्'वेब न्राचीत्रवायात्राष्ट्रमार्के। |नेवाहेपाईवाधीवायवा न्युवाया इसरायन् नन्नि वन्नि सर्वा में पार्श्वया इसरान्ना नन्ने कुन्या हिन्दे तहें ब्रॉपेन् हिया नुवा मवा है । यह ब्राकी विषा व वा क्ष ਹੁੇ'ਕਾ नर्दरनायत्रसृषु शेषान्। श्रम्यागृरायत्रसृषु प्रमानिष्य। 523

प्राचित्रकाश्रम् स्वर्ण्यम् स्वर्ण्यम् । प्राचित्रकाश्रम् स्वर्ण्यम् स्वर्णम् स्वर्ण्यम् स्वर्ण्यम् स्वर्ण्यम् स्वर्ण्यम् स्वर्ण्यम् स्वर्णम् स्वर्णम्यम् स्वर्णम् स्वर्णम्यम् स्वर्णम् स्वर्णम्यः स्वर्णम् स्वर्णम्यः स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम्यः स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्यस्यः स्वर्णम्यः स्वर्ययः स्वर्णम्यः स्वर्णम्यः स्वर्यस्यः स्वर्यस्यः स्वर्यस्यः स्वर्ण

लर में से हे कूँ व रापा । ज्ञियमिव पर रेश छै रार में रेश रापा देश । রীয়রামরাগ্রব্র ঘেরীস্ত্রামার্করো বি । বি দীরাস্ক্রার্মার্ RZK'धार'ने'से' हे'सूँन'घ'य। | नेश'न'सूर'घ'घसरा'ठन'रर'ने'रोसस बुदिन्यापरागित्राक्षरागिक्षः हे क्रिंदाराय।। वेदागहारयायम। वेदा सर्राचेरावुरावर्भ्रवस्थान्यः वर्रे द्रिर्प्रात्रवर्थाः स्त्रा यम्बान्वेन्'नु'र्वन्'यम्'युब्द्रम्'र्वेन्'स्तुन् ने'न्वावन्'यनुन् नर्भेयश्चर्यम् नर्दे द्वार्यस्य स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्रः स्थात्र मह्मा श्रामानियातय। श्रमानियात्रया श्रमानियात्रया बर्धराचार्रात्रा तसूराचार्ते हुरानेवायायेवा क्रुवार्रा प्वाप्त म्द्रायद्रिवाम्बाद्धरा व्याप्तिक्षित्राम्बाद्धर्या चक्षेत्रकाराका श्रापंग्राध्यक्षराचित्रेत्रं प्रत्काष्ट्रिण्युक्षराध्यक्षेत्रं व्यक्षित्राध्येत्रेत् केन्द्रितितहेग्हेन्कीष्वयान्देतिहर्स्यम् त्त्व'यात्र। कूँट'ञ्चव'यट'र्य'त्रश्चात्र्वेत्र'त्र्याध्वर'रेट'वेव'यज्ञत्राप्तर यूर्। दे'व्याञ्चराताव्यायय। रंज्यापविवाचीक्राच्या रूरायाष्ट्र म्याहे के वार्य से कार्य से कार्य से कार्य स्तु प्रति मृत्याया । ज्ञानि दि प्रति स त्रिंदर्देर्द्रनुस्वाद्वपद्वप्यायस्यः। झ्रायायन्त्राया श्चित्रंत् मन्'केव'ग्री'त विन्तिन्तिन्ति तथेताम्पीव। क्विवापन्यीव इविवानुष्ठम्य। यम्बून्'हेन्'स्न् सुराचारीन्'वन्'वर्मम्'न्यातेव्'ह्य दशक्रेट.क्रॅट.टे.पक्रटयानयक्रेट.क्रेट.ट्या.स.वेट.। व्यात्यावयानया র্ব্বাহ্বপাস্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কান্ত্রদানবাস্কানবাসকানবাস্কানবাস **ह्य-भेत्रपाधेत**्हे क्षेत्रयंत्रप्य-'यन्'यन्येत्रपास क्षेत्रस्य गुरुन्स। ਰ੍ਹੇੜਾ वैना'८५ँ५'झ २ेग्बर्डुग्'नी'झ' इवसम्बस्य रायस्य र अर्धर परा में र वस ऍण्अयायतुन्'ईदे'क्र्र'द्येयबानेन'दत्व सं. स्ययं द्ययं ने त **कें**बराब्दार्तुग्राय। यन्ग्रीयर्क्नेयरीस्टके:बेन्द्रन्य्विष् बर्चर'। ब्रायायात्राया पर्न्'हे'त्यवायाने'वशेद्यायंत्रार्ब्रह्य क्वीतिर्देश्यास्य प्रमानिकारी देवा के त्राचित्र स्वाप्त के वार्च के स्वाप्त के कि निया हिन्य प्रेन्य विषय विषय विषय विषय हिन्य में स्वीय नियम त्रिंरः पर्वव्यव्यक्षे पर्वेषा (स्रेष्णः ग्वरः व्यञ्च प्राप्तिष्ठिषः प्रश् खुर्यातस्यराचान्दरातन्दराचान्दरा। ङ्कानावर्तन्याकुर्वाकन्योन्दरा। रन्द्रान्यन्थेद्धर्म्यत्विश्वदेवश्वद्द्र्यानुन्। वद्रेभेद्रव्यक्र्यन्न सायानुसायस्य क्रिन्य केंद्राकुरिन्न संस्थाने स्थानन प्राप्त । तसुता गुजुरवा ने'ववानाचवाकेरवी'न्म्बायाचुरा वेवावेपाचं वावनुवा क्कीं दश्यायायर है। ज्ञान है या नाज्या ने जान सहित का नाज्य रहे। ज्ञान है या ने वा हुपत्त्व न्नायायाव्यापया हुप्ते नार्रा कुप्ति प्राची कुप्ति मा ऍव्यान्यायाचीत्। यर्थं क्रेन्यरायत्याप्यायाचायाया শ্রদ্রা ন্বশ্র্যার্ড্রার্শ্বর্মাররা স্ত্রান্ত্রার্ভ্রাইন न्बर्स्स्रिन्क्रियात्र्वरण्डिण्यर्धरः। अवगन्देन्नेष्ठाननेष्येन्व

क्तीं से प्रमुख्याय प्रमाण के अपना के प्रमाण क aruर:र्घेनप्पते'रस्'पहवप्पधेव। श्रुव'र्धव'ग्न'धन'वेब'्9्वर ह्युम्राम क्रेंबरा महाम्या प्रमारय ने प्रक्रेंबरायया हे न परिण रंग **ब**्चन्थ्यह्मात्युः भैः पर्वः मेन्द्रकाकुः न् क्रीयः वित्रः म्हिन् व्यव्यात्रः **बुश्यम् । देःपञ्चयायदेःत्रियः संज्ञेनायसः न्यायेद।** प्रविद्यार्थ । सद्धवः ग्राम्य गृषी शुक्षः स्ट्री व्यायाप्रवे । प्रयक्षः स्ट्रा र्सन्द्रात्तुन श्रुन्द्रन्द्राम्नन्यमेतायम्यात्र्रान्नेन्वाहुन्ने सत्राक्षेत्रात्यत्यत्विषात्रम् वीवा रोबरास्व, इबरात्र्यापाया यायराञ्च राधायरादे सामविषात्रात्रात्रात्रात्रा वदानुराक्तः ये दापि दिरादे राजी ह्या के वा में तुत्रा हु वा दुः दिरावे राजिता ব্যানে ব্যার্থার্র্রাহণা বর্ণানে বারী বানে বিংক্তর বারা ॶॴॹॖऀॱॹॱॾॣॕॸॱख़॔ॻॱॻॺॴॹॖऀॴऄॱ**ऴॻॱॻ**ढ़ॱॺ॔ॸॱॸॖॱॺॴक़ॗ॔ॸॱॻ॓ॺॱॿॆॻॱऄॱॱॱॱॱ দ্রিদ্র্'ই। कुर-ने'भे ने का की कुर-ने प्रकुर-त संयान र व न तर নাগ্রদ্রাব্রার্ক্রনানী নাদুরার্থানার্দার্বানার্ম্বর্থানার্ম্বর্থানার্ম্বর্থানার্ व्यन्तान्ववान्त्र्राच्यान्ववात्त्व हैः द्राव्यान्ववान्ववा पुःर्वरात्रम् । सरावाकेन्परायापात्रात्र्यात्र्यां प्रवाद्यान्यतः श्रुवावर म्रु'यदी'वियात्रकार्केष्णन्'वी'कूँ'न्दिर्द्ध्न'त्यार्झ्यकान्न'वाह्यन ষ্ট্রবুণ্যবা है। हैर नेवेषयं रेतारे वदर प्रयादयाय र वारा प्रविद स्ट्रा रेवस **╙**८.९४.१५८.५५८५५ विवाबर,त्राच्या, क्षात्राच्या, कष्णात्राच्या, कष्णात्राच, कष्णात्राच,

व्यात्तुग्पायवेंन्। स्वायायवृषायय। तुनाह्यावतायायेव। तह्य पर-<u>ग्री</u>श न्युर्ग ने दश्रीं न्याधी न्याकी स्थानहास ह्या दय गुनः न्नायते इतार्वेरान् में वरावेरा नार्वायाना वरानु न न न हार रहा हुन स्याग्रीकुरानस्या सुन्तर्यात्राच्या विष्याच्या विष्या पामन। इरारद्रेनाकुराग् हन्याये रादि है सरार् देश मही नेर्यं बद्यां बद्दां प्राप्त देशे त्यां विद्यां विद्या र्नेर्याने हेंग्या हुर विवा के स्थाय । यर हुव्य ने नेर्या न हर বর | ৸৸য়৸য়৾ৼ৸য়ৢ৾ঀয়৸য়য়ৢয়৸য়ৼঀ৻য়য়৸৸য়য়য়৸ঽ৸য়ঢ়ৢ৾ঀ৸৸ त्व व दायाता व दाय दा केवा केवा केवा व दा के पाय पाय प्राप्त केवा व दाय प्राप्त केवा व दाय प्राप्त केवा व दाय चलेन्स्यत्रसार्चे द्रायस। हे चर्ड्द्रह्युन्चराग्री च्या द्रावारस्य साम् धिर ग्रीयकाव वाप विषय तर्गापाया द्वाप स्वाव वा हे पर्वव त्याव वा मन्नात्म में न्या में न्या हिले पा विवाय केया वा महिवया मरामित्र पारा ल् ल्याप्या हे पर्वन् श्रील्याय्या हिन्या ह्या है वा है वा हे वा हे वा हिन्या है वा य'ने'न'वरवारते'वृत्रवातान्रसञ्चर'। न'वी'यने'पाठे'र्भेन'य'वुवानेगु' ग्राम्याया व्रायन्त्राक्षायाक्षायाक्षायाक्ष्याम्याक्ष्याम्या व्हाराष्ट्री ने इवदान्वेत्याकीन्वे हैं कुर्त्यव्हाने विष्कुर्त्यव्हाने स्याना

हे'यह्रत्यलुष्यां व्यादिश्वस्यात् व्याद्यां व

धिश्रदायराष्ट्रियारा द्वाराष्ट्रया । निः विश्वानिः से श्वारा श्वेरा । निरः सरः व ब्रिक्त्व व दिवा देवा देवा देवा व विश्व के जुर भेर प्याय प्रश्री के है। । हवा स ह भे इसम्र प्रतिव। [दे:रग्र प्राष्ट्रिन्'न्न स्र सम्बर्ध। रेट नगर प्रस्वे व सञ्चा । व तुव स छे न ' न ट व के स छै स छे व स्व ह। । अर्थार्थ्य प्राप्ताय स्टेड में स्टुर्ब । दिन गुर्म स्वाप्ताय मार्थिः वर्षया विराह्मवार्ष्य्र स्वार्ष्या हिरात्। विदातरवारा निराह्म ब्रायहेन्या | प्राय: विरायन प्राय क्रिया क्रिया है। | साहे पर्द्वा रसप्ति न्दर्यस्य। विंपेंदि नरस्य सम्बद्धि सुरा । विद्राह म्न प्राचा मुर्चे व्यव्या वित्र मुख्य वित्र मित्र मित् त्रिरापति हेवाया विवादा या विवादी विव श्चन । तिहेना हे द द्वर पार्जिय यह रा । श्वापार्जे निका निहित्य द्वर क्षियापाने। |हे'छेन'की सुनाया हेने' क्षेन्य साम्याया प्राप्त । नि'की पहेन' सिं र्मिने रोवयातात हेन । तर्रात्त ने वावकेया र्यातु सही । वर्रा यून व्यापीन्यमञ्जेब्द्यायग्रीय। |ब्रयागुनाहेत्याग्राव्यायम् । नेहिका र्षुग्राईलकुर्लरवर्। । रगुर्र्न्द्रवसुरेर्व्यवाया । गुवेर् विवास्त्राच्याप्रियाच्याप्रतेले विवास्त्रीयाप्याच्याच्या मते। । या व व व से प्रवाद ने इवस हुए। । प्रहुर व प्रता है का ग **६**व। |बर्सलन्बर्स्नशकुनन्कुंशनकुदा |ने'लर्केन्कुंश्य द्यार्चिया । श्रीम्प्रियाम् सर्मे व्याप्तिया । श्रीयाद्या में स्वार्मे स्वार्मे मण्डव। ।र नव्यत्तर्म वर्षे के ये न न न व्याप्त के येन

**ळ** प'यायहें या । इस्याने 'तर्द्र' हुन' गुरुष' गुरुष' वार्य' हे या । शुक्री न'र न्गर्रत्यासुत्। विन्त्र्रेर्ग्येर्ध्याः वर्ष्येन्द्रेया विस्तरकी **ই**ণ্'শ্র্'বের্অ'ইঅ'হব্। |শ্র্ম'ন্'ব্রে:গ্রামার্শ্রর্মার । শ্র্ इट.प्यासियो.चे.प्याया । । अ.ध्या.झ.क्ष्यंयाच्या.पथाचश्वयं। । अ. हैन'र्रे शुं छ्रद्रिष्ठर श्रुवा |र्रे तिंदर न्युक्ष क्षेत्र व्यवस्थित । हार्हे द'रे दु'न् ग्रन्थे न्याया | प्रवें न्ना दु खं खं खं द्वा हा स्था । ग्रीन बद्द'न्द्रस्य के संदान निष्म बद्दन हेन द्रा के द्रा में क्षा श्र वं वं प्व प् वृष्य प्राप्त | देवाळेव क्षे प्रत्व वं स् प्राप्त दे। । तक रा बद्धव्यव्यक्ष्यां स्था | यार्थरः वर्ष्णाः यतुन् देवेः यदुन् खेता मग्रा | विंसितिविष्यं स्मुख्यव्य। । नेविष्याया म्यान्यं मुद्धिरया बैया । बुद्यानायानु र्देन्द्रान् देनानी । वृद्य-तुः विवयन ग्रायाः अ हैय। १२:५ वरा है: कृष्यवर्षाया । वर्षे ५ र पहिला व्यवाया । तरीयाविदेती स्वानु स्वा । स्वाया वर्षे वर्तु या वाया क्षेत्र। | ने हेवान प्रवास्य प्रमार यह या या । निर्वेर की जूर में देवा पत्रत्य। |नेतुःखन्यन्यंन्वरायःपत्रव। |विनेवाहुन्यहेःसुः क्षुयाह्मय। वि:हरान्यव्युत्रंत्रंत्रम्यव्या ।न्युत्रंत्र्व्यम् न्सन्यम। | वे हे न श्रुक्षे न राक्षेत्र वे न राम् । । वन् वे न राम राम ह्य पुरुष होय। | द्वारा के कृष के रूप में दे ही दे प्रायस दे | भी द हा द द प

कुरा गरीर सर्ने ग 'ठरा । एइ ह्यार यर ये ग न व हिर हा । ये स्व न्मते भ्रीतात्र म्यरुष्य देश । वित्व दुः दुः विषा महेता पः देश। 37 *पु*ॱरॅंद्'र्डेग्'र्राष्ट्रेय'च'बैया | युब्य'यब'ये'द्युद्'र्द्रन्र्राच । श्रेद्र' वानि ज्ञानर पार्श्वरा । य वर्षन हो वया ने इवया हुर। । भूया र वे तया क्षे'८ वे'५८८८'य'नेय। <u>। हे'५७</u>य'गशुक्ष'यष्ट्रिव'पदे'द्रत्य'दर्धे*र*'य। । ५६९' इ.पर्वब्द्धाःचलावरा ये.के इ.ह्रेच्ताविषराश्च 5'गर्रायापाया मने'क्षे'तळत्य'नरा'नेशप'र्झेन'ग्रीरात्रेंन'ता'त्वा'यहन। इयाहेंग'री'र् मर'मन्ग्'तहें द्'क्के' दर' र्कंट राजा मृत्यु व से स्वें आक्री अतुन्'या रूर विया नहेश्रायह्रवाक्रीयन्यास्यास्य क्रिन् चन्यासन्य हिया श्राचारा नहेंग। वेयवात नुपर्धे यायन यान इवार्षे यति न न निवा मञ्जू । अष्य तर्जे म्यापि द्राय तर्जे म्यापि व्याप्य । के । यथ तक न्याप्य न्याप्य । मेरा है'यमप्रमुद्धरप्परमेरा है'यमहीर्पंद्रिन्'हिर्ह्सह तन्त्रवादिःगन्दःपिन्दिन्। सराम्बद्धः सराक्षेत्रवाक्षेत्रे विंद्वःहेन् विन्तु **कुन्'रा'मैद'राया। तु'हिन्'**शैकाञ्चर्यायते'य ह्वन्'क्र्राने' द्वयरानुवान्'रेवा म'नव'र'धेरांळेग'वे रा'ळपरार्वे'रेरांशु'रान्'र्ने दार्ने झूर'ग्रेरा अधेरसपर'ग्रें**र**'अङ्ग्रंद'ङ्ग्द'वे 'ग्रेंस्'ठेग्'ग्रुट्रश् हे रार्ड्रद'ग्रेस' য়৾৾৾৽৸য়৻ঀৢ৾৽ঀয়৸ৠ৾৾৾৾৾৾৾ৢঽয়৻৸৾৾ঀৢ৾য়য়ৢৼ৻ৼৢ৾৾৻৸৾ঀয়৾৸৻

5'नगर'न्रवाहर्व। |न्वयाय'नवर यंदे हेर दिवाबरत। । ने'गुन्'स'ब'कर'के'कुबापन। वि'सबामग्वन्यकेन्'तहस्य। देशक्रेर्, येन्वर हेभीर नहेर्रा त्मन्य। विर्मेखुन्पङ्ग्पार्वश्याम्हेन्यस्य। विसम्बन्धःस्यः **डैन'य'न्या । बे'यय'यर'र्ग'य'येन'हे। । ग्**रंग'र्राग्रंय'र्राय' व्यन्त्र। क्षिन्भं वेन् देशस्य प्राप्य गृह्य । निः न्दे व् क्षु वदेः न् रे पश्चन्या । मेन्द्रन्यस्यकेष्ठ्यायरः ब्रह्मस्या । नेद्रवाह्यवय शु'अ'र्चे न'वय। सिन'ग्रुट'न'नेश'यहन' ध्रश'ने। । अ'र्से ट्रशखर'ट हुन् स्वव्यक्ष । निश्च भाषात्र्ये न्यानि ह्यानि । श्च व्यक्षे स ষ্ট্র্ন্তের্'ম'দ্রী । মর্শ্নাল্ব'ন্শ্নগ্র্র'ম'র্। ।ঞ্বরাদ্রাল্বন तत्त्वाचरित्वम् । इवितित्रः कष्याय हत्यः ये । विद्यावितः वितः स्'नर्नम्द्र । श्रुःस्नार्देनराकुं निर्मेग्ने। । श्रुन्यम्दरस्दर्शस्र र्सर ग्राया । कॅर्फ़िस्पॅर्फ़्यर्रे । क्षिप्तरे यत् हे स्वा क्रिके बेन्'सॅं वर्षेन्'नदे' । शुक्रक्षिय तुन्'ग्रेन्'ग्रेन्'स'ने। । मेग्'स' सुः भु निवे विनाय दे हमा । विनाय महिनाय मानाय निवास सुन्। । क्वॅग'न्ड्त'क्री'अ''सॅन'**ग्**रात'न'ने| क्वॅन'चत्र'र्म्स'संक्रन्यचिक्ठेन| | चग्'येन्'रर'न्गर'थे'यु'चर्। ।कुल'युष्णंग्वंव'तुर्वे सुंख'यवेव'त्। । यग्भॅर्वस्थायरार्ब्वर्षायस्य । १८८५ मरास्यार्थे व्यारी र्र जुर् क्विं जुराका में व्यवस्था | में र में र प्रेर मण पर्टें का दे। | कि

त्यूर्यव्यापायवर्ष्यतित्व । व्यव्याक्ये विग् द्वात ह्या क्रें र दे। । यहे परादर्भे द्वाने र त्राने र प्रति यह। |हें व ने द र र र स स प्रव ने प्रति । । त्रिरमाशुक्षके प्राप्ति । कुर्वे व्यापामाशुक्ष प्राप्ति **यह। । बे**१केंग'र्गर्येदे ज्ञुब'यहेंब'भैर'। । शु हेग'र्र ग्रीब युवादा दे। । नञ्जन'स'गबुअ'ग्रेस'रन'नज्जन'श्वेत। । गतुभ'छ'त्र'न'तदेन' परि'यम्। । अ. स रंव'न्व'न् सुग'य'ने। । नन'रुनेंन्'स' केन्'परि' यह । भैव के व स्थापत्व स्थापत्व माना । निव हे से पे प्रव हव सम्बा REF प्रतिम् प्रतिम् श्री । अत्यामकु प्राप्त प्रति प्रतिम प्रति । बैया । अत्यः इत्रहेश्युतिह्दापित्रम्। । स्वायावास्यास्यः हेवायायाः दे। । यने वकायने यम् लक्ष्य य में नु दे । । यम व मुक्त विम् मुन विवय मदिन्न । वर्षन दन्न दे हे न मुला । दिने हुन पानक न परिन्न । मतुन्दिते यहन् ग्रीयान्य नाने । विस्तार्श्वन्यने पास्ति पाने । मुर्वेर्ययर्ग्य्रिन्द्रिन्द्र्य्यः दे। | इयद्यद्रिन्ग्यव्यवस्येद्र्यदेश्यह्। । र्राष्ट्रियं राम्युक्षाय। दि ग्राष्ट्रियं प्रियं स्टिन्स् । १०ग रान्यंन्'तृ'होर-प'रे। विवया हैंद्रित स्वयाप से द्रापित है। न्यात् र्में वहें संपंदी । विराष्ट्रराययातुः श्रूराययाता । दिराचे वका स्यायानग्यानानी । हिनातह्यास्ययान्नानेसारनाक्ष्या । हेयाकेदा मुन्यान् अवारा अः केंचरक्ष्यं सुर्वेदा । देरावहेदानवानेवा Rकॅमिसेम्स । अग्याय्यंत्रिक्ष्यं प्रम्थायाः ने। । प्रवाधितक्षेत्रः

सर्छेन्'परि'गन्। |सर्गे'न्न'स्रेर'गति'स'न्त्रस्य। |मुन'ख्न'सेसस कुं कुन् में बरा मेन। विन् वेन प्रति ता कुन्यपि हीन। विद्याः हिनाः हिनाः नव्यारीयानवित्त्रम् । रमानिङ्ग्यानु । हिमानिम् <u> नुवेर्यवेर्यवे । हें ग्रायं कुर्यक्षें निरंपन्। । ने हेरा ग्रायां कु</u> सरमञ्जापत। |ग्रेरक्विज्ञर्गर्सेर्स्यम् । ही वर संव **५न्'कुर्रापदे'गर्| |वेद्र'ख्यां वर्गायायायाया | |कॅस्प्राचरा** विरः सुमरा ग्राम् श्रीया । त्रां मिरि दे तर्दि मुंदः मिरि मिरि । तर्द मुदार्श्वन्यह्र. मुख्याया । द्वन्यायस्यायम् व से न स्वता हुन्यहेस्रीत्रम्भून्यते पन् । वि हेस्नि प्रवर्त्त्र स्थापना । न्यायानेतुः वर्षान्याने । व्यायेन् हिन्दिन् कुन्नेयवास्य। र्गत्पर्नेतिः भेता अर्धर प्रति पर् । वि र्हे गृष्ट्र स्वे ग्रायक्त व प्राप्ति । इन्दिन्द्रवार्याचेन्द्रभाग्नीयातकर। । वृत्रवार्येन्स्यस्ववार्येन्द्रभाग्नीयात्र यम् । सिन्'येन्'यन'र्येषाञ्चग्'तळ्लाम। । स'न्न'मेग्ले'लाग्व्या मते। हि.में न्यर दुः ततुषाय दे यह। । न्यु का के ने ये र ये दे क्रीर विषयानी विरायहिंब हिंग्याप निराह्य विरा विषयिया गर्न बरारपायकुवायते। विविद्यार्थेवायवेवान् गेत्रवाद्यवा छिन् क्रिव्विर्द्ध्यद्वर्ष्यद्व । विव्दुत्वद्वज्ञक्ष्यवेरवर्ष्वा । मङ्ग्रं श्रुम्बम्बर्गम्बर्न् प्यम्। विश्वम्बर्श्वर् यहीत् विश्वम्बर्श्वर्। । यहा ८८ अधिकार्या विष्या । १८ विस्य विश्व अधिकार्या । विश्व व न्परिक्षेयगुन्परस्यायन्। किन्द्रस्येयस्य प्रस्ते । छन

इतः रोमयान्यतः वृद्धानु । ति मुन्या । ति मुन्या । ह्याभुषात्में 'र्व'र्धेव'यदे'पन्। वितृव'तु'रु'भैग'पन्तापाने। ळॅशकुळपःश्चे**र**'र्र'नदेःपन्। ।ज्ञपःहुःदॅर्'केण्'द्रक्षेत्र'पन्रे। ।ठॅर्' विवर्षात् ग्रास्त्र ग्रेंत्यवे त्या । शुक्षात्रां वे त्युत्र त्यारा दे। यने देंन्'वातुक्ष'विरेखे'-वेष'ग्रीका । इक्ष'ईवा'कय'र्रक्ष'तह'यदेःयह। ब्रैन या हा च पर पर दे। | देशें दें न बेन पर दे दें न पर विषेत्र पर विषेत्र पर विषेत्र पर विषय हर्गानुसम्बर्धान्य । तुः श्चे स्वराधान्य श्चे स्वराधान्य । तुष्य है। बरात्वुरायरायुरायह्रवायते । इसान्नीयरायन्तायं क्रांकीयह्। । **८२ है '८४'वर्ष व'हुव'ग्रायप्य | वर्ष्य वर प्रहुर व'र्घर** कर् भैदा । हु : यर ने हा दाया दुर सुरा । ही : यहा ही से हा सह ही से हा पत्र केश प्र भेश के गाय र प्र प्र | के तथ ब्रुट वारा वर्ष न गुर वर्षा । नव बेशपन न भूषान् वीपर प्रमृत् । । सर ब्रुव न न प्रव मृत ग्रायमा | वर्षेग्रात्यावधिवादी गृह्यावधिवादी ताने वन्त्रंवन । नवन्त्रंवन। संतु व दे हैं द रान् रे त विन्ता वन निरंदेशन्, संश्राधार्ष्ट्र यात्रात्ति संदेत्रात्राक्ष्यं बिटालं हैं। यप्ते संया है। य न्द्र' प्रेस' तहर 'ने सप्स हैं म 'है प' हं म स हु। यह' *ই্ষ*'হ্'ব্ৰহ'ব্যক্ষক্ষত্ৰ ভূতিন ক্ৰীকাল| त्रवाश्चिवास्तापनेवा ह्य म न्वायार्थे पर्वेष प्रमेश्वर्यस्थ व्याप्त विकासी स्थित । चन्'न'सु'तर्'चायाभैन्'प'ग्रेग्'ने'तृत्राक्चे'प'भैन्। तु'हिन्'ल'यार'तेवता कुर्द्ध्यानर्द्धानरः अवस्यत्रेत्रं निवास्य वित्यान्त्रः वित्यं निवास्य

तकरामधनाही केंद्रियमास्त्री एके न्हेश्यमान्यहे सक र्ष्<u>ष्</u>र्भ्न्यं केव् गम्पर'व्यं विगान्चेन् वि' हे त्या ही व हं व द्वा का यावर व । वे व ... क्षके विषापतुन्ति हुषापाधिक है। व्रावि विवास निर्मा निर्मा के वि रा ग हें ग रा रा ग ल र 'शे' ग हरा शे हे रा रा अप व द र रे अरा सिंदी है व सिंदी हु ... न्यत्रान्यं न्यो में न्यान्यान्यं हिन्द्रान्यं वर्ष मर्डश्यव्ह्यायाचेत्। ज्वत्युत्क्षित्ययायाक्षेत्र्यापराक्षुत्यातस्या चति'कु'भिन्। सरसिँ ब्रॅस'न'हु'केु'तके'चर'नेंदनै'तात् त्वाराचिते हुनाच **८२** हे अस है पर्ने प्राधित। विन्दें न्या हर परिप्रम् ह न से दे मुद्रेन्'तु'र्स्न्'र्दं व्र'इयम्राधिन्'कु'त्वित्रान्तात्रस् पर'र्ने' हु' अ'हेर' त्युत्यानु'च'षेत्। प्रमु'ह म्या में बहार' बहर हिन्दा Nशायशन् ने केन ने हिराहा तत्र ना के केन प्राप्त के केन के किया मान व्यक्षश्रिंद्यं निप्ताप्तराष्ट्रेत्रात्यत् देशे हेत्र नते स्तायवर धेव वरानर में वेंद्र वर्षें द्र वर्षें न नश्नुग्राञ्चरतायाञ्चरवावर्षेत्रम्युत्राया हेर्नुर्ग्नुवा पर्रेन्र ह्यरायान्यराप्तान्वराप्तान्वराश्चान्त्रात्रान्त्राच्यात्रात्राच्यात्रा विषायवा हे नर्द्ध द मुका व गुर दर् ग गुर क वा ।

खन्यान्देन द्वित्ररेप्ररेप्रेर्थ्यवर्ष्ट्र । क्वित्रम्रर्पर्रेर्ग्र न्यर-प्रः। । पर्हेप्-पुन्येप्-पित्रेययश्चिप्-पित्रेया । प्रवेप-येप्-पित्र्याः बरिन्द्र-तुन्वरेव । अँग्राचित्र-र्द्र-देश्यायह्न । । शुक्रविव्यञ्चन्वरे त्विताञ्चर'र्रः। |रर'येययक्कि'रा'येर'रा'मृहेय। |मृहेय'येर्' इन्देग् केरा सराप्रेष । हुन्य स्तर में ने स्वास्त्र । । वन्द षश्चार्या विषया हुं अं क्षु नुते र र र नु व कि । के स्वयं क्रियर में ने स्वयं में न ब्रिट. म् इस्य इंटिटा | रियाना क्याना मुण्या होता हो हे या ह्या स्वास देशरर र र नहेन । स्थान हो र इंग्रा की नर में रे साथ ईर। । वनका मया हुन् निर्देश कुन् न्ना | निर्देश निर्देश सा हुन् मिलेश | निर्देश मह्यसंभ्रद्भवाक्षेत्रसम्भावत् । मह्य महिल्यसंद्र । । सद महेरा । न्छेरवेन् महुन् वर्रिन्न । सु नहुका क्रिक्र के ने'त'यहिं । व'नग' हु' खरा है' यह तम कें नहा । नग'रा है' के इस राम्हेरा । परार्नेदिनम्बलाक्येर्टानुमेर्व । तह्यवाद्यदेषस्रहेने त्ययहिं । दिवाग्यात्वाहे। यद्यान्यं वर्षां वत्यव्या द्यवादा **१४९८५ मा १४६५ मा १४८८ वि. १५४५ मा १४४५ वि. १५४५ वि. १५४५ वि. १५४५ वि. १५४५ वि. १५५५ वि. १५५५ वि. १५५५ वि. १५५५** क्रे'लअ'क्षुग्राच नेग्'व्रद्यायर'स ज्वार प्रेश क्रे'लअ'व्रहग् ग्रीय ग्रुट्। नैर्रोबरके सम्बद्धन्य है। द्रव्यप्रहे पदि हे मुक्र स्ट्र व्याहे पर्ववायावन्तापन्याके यथापन्तापन्या

*ढ़ेॱऒॸॣॕॖॖॖॖॸऻॕॱॻ*ॖॾॻॱॸॸ*ॺॹॸॸॻॱॹ॓ऄॗॸॱॹ॓ॸऄॗॗॗड़*ॱड़ॗॾॹय़ॱॾ॓ॹऄ॒*ॸ*ॗ रशकुरारावारी यन्वायाखरायाकेवार्यावाद्यातुः हीवावशङ्गाराकेवार्या ८व'लुर्रा'धरा हे'पर्डव'क्के'वारावरा। क्षे'वारावरा'८व'क्षे'वेश'र्बे्र्य **বি**শ্ৰাৰ্য্যন্। নদ্ৰাণীৰানীৰানাৰৰ ইৰাৰাইণাইলানাৰ নিৰ্মাৰ্ मठन्द्रवारी द्रवारी न्छव्या स्वार्थित्य वित्तर्त्त्वा प्रार्थित स्वार्थित न्या मलर्व्यभूग्यं केर ग्रात्र व्यापना सुर्भूव्या है से न्म् नामण्या रेखन्यायमञ्जयार्थे । रोययाचन्यययचन्तर्विमा हिं (या रेपार रे के प्रराण राज्य राज्य प्राची वा नवा विरास्त के बी वारका क्रुयां की प्रस्वादा त्या क्रुया द्या क्रिया है। या क्रिया दि कि क्रिया क्रिया है। दर्भेर'मॅ'भेव। **ऍ**८-'ग्रे'श्रेथश्रमञ्जेट-'म्बे'क्ट-'पश्रप्त स्ट्रेस्य केंद्र स्था इस्यम् हिन्दर्न्या सदि विम्दु विषय स्याप्त विषय स्याप्त विषय स्याप्त ড়ৼ৾ৼ৾৾ড়ৢ৾ৼ৾ৼ৾য়ৢ৾ৼ৾৸ঀৼ৾ড়ৢঢ়য়৾ঢ়ৢয়ৼঢ়৾ঀ৸ঀ৻৸**ঀ**ঀঢ়ৢয়ঢ়ঢ়ড়ঀ৾৸য় खन्पान् बुद्धान् मुक्क न्यान कुन्य क्षान के माने का कुन् नुष्य क्षान विद्यान कि स्थान बुद्धान कि स्थान बुद्धान त्युरावराष्ट्रप्रवाद्या देवसहेष्ठ्रप्रायाके हेर्यक्षरायां वर्षेत् दा न्या में राज्य क्षा प्रमान क्षेत्र प्रमान क्षेत् व्यायवित्। वेव्रिंश्याकुर्गित्वेंदिर्देशकेंग्यर्व्या महर् र व्यापतार्थर है दें कुर् महर र व्यापर राष्ट्र विरामवरात्र "" RBवंशास्त्रवावार्वेरायवा ने तार्थेवशाचेरवायक कुराय हरा दे व

বঅ'র্ম্ব'র্ম্মন'রর্গ हे ख्रण व्यापस्य ने गुवालु सान् वीसायन। हे मर्खदा श्री नियान सान दे से न्याकृतिवासम्माकृति यान्यामु हुत्यामु महेतान् स्यास्यम् । इता भ्र नःन्डन्यान्यरत्न्ववीया सरम्यः नवापरः सुष्टिन्दुनः नुःर्यन् ब्रॅंड्र (मया क्रींप्र होता प्रसादा व्रिंड्र 'न् हाका शुर क्रा राविगायर् रायाधिकाती मसत्यानिष्येत्। न्यार्वान्यस्त्रियानिःतस्त्रान्यम्। सर्वानेशान्य र्दः दः इति द्वते पत्र पत्र द्वापा धिदाप समिव दः द्वापार पाया से । श्रीर थनः ग्रान् ह् ग्रां ग्रान् प्रांत्र त्युता प्रां ग्रां न्या ह्युत्र । सन् प्रान् र्से इं द'र्स जुरे कूँ नवा उदाया न तुन ग्री बाबी खुंग बारा भेदा है। **\$5'05** न्तरः में क्रिंग्रं स्तुन्यकात्तुन् ग्रीकाकी क्ष्रंन्वा निराशेवका कराता मना चरत्त्रत्वा<sup>,</sup>चर्या स्वायत्म् स्वत्यक्षेत्रत्वित्या स्वायत्म स्वायत्त्र व्यायग्यातुषापय। वेवयग्रीरेंच्यवेराव्यापह्रव्यान्राक्ष्रीरापाधिवा हे विवा स्रामान क्षान्य वे तह न ते ते बका की हैं दें स्वा के बाद है न नितः हैं नवारा मुक्ता कुन्या हुन्या हुन नितः नुवादा मान्या स्वास्य स्वास्य स्वास्य न्याक्ष्रिंगागुन्य। नेव्याक्ष्रिताक्षेत्रानुष्यानासुन्याव्याव्याव्यान्त्रा

रित्तं कुन्। तहत्वायात् व्यक्षेत् प्रं व्यक्ष्यात् स्वयः व्यक्ष्यः व्यक्षः व्यवद्यः व्यक्षः व्यक्षः व्यवद्यः व्यक्षः व्यवद्यः व्यवद्यः विष्यः व्यक्षः व्यवद्यः विष्यः व्यक्षः विष्यः व्यक्षः विष्यः व्यक्षः विष्यः विष्यः व्यक्षः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विष्यः विषयः व

हैं वर प्रेश्नर प्रवास | विराधि हैं प्राप्त कर हो | विराधि हैं वर्ष के स्वास के स्

तमन्यायते देरायत्वा विराह्या । विराह्यागुन् हु वरनेयायर बह्री । हिरासूर इंश क्षुर वृश्व शत्यु पॅर्या । देश तगर ज्ञें गय क्रीश्रर'प'तहर। |ज्रॅंप्रशक्तिश्रर'प'म्र ६ व। | 到可以到了下 हुर्ले नेशकृत्। । सर्जेषरागुन्हुं सरनेशपर अर्थेत्। । दिर बूर कॅश सुर व्यवासु पेरवा | नेवार गर हा यरे कूर पार कर | | ञ्चायते दूराय पर रं द। । तञ्च स्यो र क्विया विष्य । रहित्'बेत्'ब्रेन्'नीत्यीतातुं र्वेंबर्ग । व्रायायन् ब्रुं या ही तयायेवा । तरम्बर्यार्यन् कुः यरमेश्यापरः यहेन्। । म्रम्बर्यार्ये न्रम्केरेन् दे। । ज्ञलायां नात्रातायलुन्यायात्रा । ज्ञायां रेत्रात्नारा स्राप्ता | बर्बिरेन्द्रेब्रेब्र्ब्स्यायात् । हे.सं.देब्रेब्र्स्वाव R51 त्र । रिपर्व में वर्षे तर्र पर्दा । विर श्रम प्रेम की यह व त्र। भिनेषायमुत्रावामुत्रामुस्यन। भिनानेपुर्वास्यायाम् निनाने [सुद्विन् ग्रीकालम् निन्दानाक्षेत्रकी । न्यानकावकाद्विन् ग्री মূকা बिन'यन'न् ने ब्रॅन'र्ने हे तहे ब्र'च'तहं ब्राबीन' मन बर्धा विष्य द्यां च 'या म्बर्या नेवसन्यन्न् द्विन्त्र्त्रत्राष्ट्वीयाम्याद्वित्। क्रेस्म्बर्याउन् हॅग्रायराग्वराव्या अरुराग्वेरायर्ग्ग्यकेषायाह्यकानुः विकास नु'र्यान्यात्मभ्रम्यात्मिष्यात्म्या ने'न्याहे'हेन्'सन्यह्रम्द्रास्य शुम्नेन्न्यायात्रहेन्द्रम्भुवागुन्द्रस्याहेत्रात्राहेत्रात्राह्रहेत्रा विष्याने विष्याची स्थानिक स्था

नवन् ग्रीनामिन् स्ति ति मा स्यान् श्रीत् म् स्त्रीयाम स्ति ग्रीहिन क्रि **৻**ঀ৾৾ৼ৾৾৾য়ৢঀ৾ৼয়ড়ৢ৾ঀ৾৻ঀৼঢ়য়ঀ৾৻৸য়ৄ৾ঀ৾৻ঽঀ৾৻ঀয়ৼ৾ৡ। ঀয়ৼ৻ৡ৾য়ৼঢ় वित्रास्त्र के वित्राद्रेष राष्ट्रीत्रा वित्र के तरिते'ग्रॅशम्या'येर्'पर'रेते'सु'ग्रीया रूपम्यवाटर'ग्रेग्'सु'रेय पाविषद्धाः प्रत्य। सः मेब्रानः पायमः विष्यानः स्वा विषयः प्राची ण्ड्याकुरापतिकाप्तार्वे प्राप्ता विद्या য়ঀ৾৾ঀয়য়য়ড়৻৻য়ৼয়য়ৢয়ড়ৢৼ৻ঢ়য়ঀ৾ঢ়৻য়ঀৼয়ঀ৾ড়৻ঀ वरावि स्ट वे पविव तरम् वराये द राधिव। द्ये र व श्वासाय व विवार वै'येत्। ज्ञत्यमाद्रे'येत्। ह्युयाययव्यक्तान्यंत्रत्यां वि'यह्यतः प'न्न'बे' इवराहोन् 'डैन'बूनराम'म्डेग'ॲन्'म'ने'व्नाव'वे'ख्नाळेव्'सं" ॲंन्'पदे'हग्राभेत्। व्र-'व'वे'श्र्न'ळेव्'मॅ'ॲन्'प्राक्षे संयम्बब्बारुन्' <u>र्गर्यस्यव्यव्यद्राद्रर्भः त्याच्य</u> सर्यः वर्षः न्ता भेतावान्य प्रवासन्त्र विवासन्ति। म्यान्य क्रम्या षट्र्रर्न्म् अनेर्नुक्षेत्र्या अव्याया विवादि विवादि विवासिक्ष र्भेन्। नेते वर वर्ष नेंद्र कष्य कुराविवा विश्व वर्षा प्राप्त वर्षा वर्ष न्न्वन्।म्डेन्न्रंभ्याप्त्न्न्यः पर्झेयरायाव्यव्याहेरायाच्या व्याप्ताहिन्'नु'पर्याद्यायाव्याच्या वेरपर्भित्। देतिवर्ष्वपृति सुग्सुन्द्रस्य वेषस्य स्थित्।

<u> ने प्रमामके अन्य में ने प्रमामके अन्य में प्रमामके अन्य में प्रमामके अन्य में प्रमामके अन</u> क्रॅंब'दा'शु'मेव'र्रेक्स' न्द्र'मेव'र्नेक्। ने'रा'त हेब'व्यामें वे' स्ट्रायहरा <u> इस्याद का ज्ञां खुर परे पीका दरी के जेंदा छेता दें। । ज्ञार का ज्ञान का जोता </u> बुर्याने दे बद्य बेर् दर्शे चुर्यने त् चुर्य प्राप्त प्राप्त हे द्र द्रा न्वतः कुन् त्यः क्षेत्राः प्राचार्यत्त्राः न्वा व्याः कुर्याः तिः क्षेः न्नः त्र्र्येत्रः क्षे उत्। वृद्धंशवर रुव्वा यतुव्यव्या स्वारिद्वा यत्रे विदा परान्। नर्दरञ्च विवाहाले परान्। हिनाया विवाहाल परान्। ता कृष्या व्याप्त विश्वास स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स क्ष्या अस्ति कुरुके'त्स्द्र्र'प्रराष्ट्रस्यासुन्त्र्। प्रमाम्बद्धान्त्राहेन्'तुःर्मे'यान **ॐअ'८८'बर'चव'अ'ऋ'र'व'अ'ब८च'बांडारअ'बबा सुः। हें** हते ज्ञापित केवापकु प्रविष्ठ्वाया रिकार विषय केवापार मेवापा विषय विषय वगुरः तर्ने गुजुरकार्य।

ॅवेन |२े'मॅतअ'२*घुरूपा'ङ्गेब्'रा'*य। ।दु:२२'ॹॅअ'३२'३*ब्राम्*२'तृकः । र्द्धन वित्र 21 **पॅ**न्। [तु'क्य'कॅ्न'बेन्'पदे'न्न'य'व्न |ने'नॅतय'न्तुरु'रा'कॅ्न्य'रा म। । विःरम्भेयस्र्म्रम् वेत्र्म्ष्वासर्वः व। । विविष्ट्रम् व्यास्य त्रेत्र्रेत् । क्रन्यत्रेष्ट्रन्यरत्रेष्ठेत्यंन्। । तुः श्रुर्यायः वेन्यते ८८.पाष्ट्रेय । ने.म्रेप्यार विश्वास क्षेत्र प्राचा । वि.श्चा क्षेत्र सं.सूचा य ह्या । अराप्तमाप्त ने हें स्याप संदर्भन । वि हें माये ने सामा ने दर्भन्। । हु'अ'न डॅंब'ञ्जुग'पते'८८' हु'वॅग | ने'र्गेतअ'न् नुब'प'ङ्गेंब'प'२। ।हु' हग्रान्त्युन्यह्रम्युन्रंन् । न्यार्क्ष्यं छन् न्यारहेर्यं केया **ॻ**तुर्'ग्रे'खर'पङ्गव'रमुर'वेब'र्षर्। ।तु:केर्'रहेंब'येर्'पदै'रर'तु' विष । ने में तथा न सुरापा है व पा । सु र र से अया प हव ता त ने नया नुषाश्च। । वर्षेत्र वेदायर्भे प्रामा । न्याय क्रिया न्या । न्याय क्रिया न्या । त्षुर हेन् वर्षा । तुरे पाये द पाये द द त्या वृष् । दे वितय द तुरु या **१४४ मा १ विश्वाना अन्यान या है। यह वा क्री विराय हिते प्राप्त मा गा** है। न्युरुपाहें न्यां विन्यान्यन्यति। यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विष्यान्यां विषयां वि धैव'पवा ५ गरानर'ग्रैब'नेग ने'यर'झ' ५ नरा शुबाया सुर दबा खुश् झूरे न् ग्रैयार विर नु ग्रैन ग्रैश हैं न। स्वाय न् यन न न न वा न म वयान्त्राकृतवार्यात्रीत्रात्रीत्रार्द्वेन। क्रयान्यन्येवयायायात्रात्र्यस्य क्रु वेन क्रं सुर रें क्रेन क्रायित्वर स्क्री कर प्रतान क्राये विकास बेन्'रा'र्ने हेर्त्रुय'न्र्यंव'नु'यरत'न्र्यंत्राय'पेव'र्वे । गुजुन'हेन्दे

त्रहें त्रक्कीर यर प्रमुद्ध सर्दि है। दः स्त्री मृत्य स्वरूप मार्थे रूप किया **ऍ**न्ने हेरा प्रस्यापात नुगापका श्रीत्वा गुज्र रा द्यार्चेश हे विवश हुर हु श्रेय धर्रा व्याप्य विवश ह्या हिंद स क्षेक्षेत्रव्युत्राक्षेत्रप्रयाहेन्याधिनार्वे महित्यायय। हेस्से हेस्वव्यक्षं मतिव्देर् व्याह्म हैन प्रमेश सम्बद्ध स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्था ট্র্ব্'গ্রীঝাস্ক্র্ব্'ঝাশ্বংব্'উব্'ঝব্'দ্বা'মেই'মিব্'শ্বাধ্রুদ্। ব্'মন্নমেই্ল্ वदार्स्टर र होव पति द्वापर राष्ट्र पाने पहुन है। सन् पान से सारा भवा नप्राची रवागुर्रात्र्वरवादनै प्रविवास्य स्पर् मसहेश्वरहेर्ने किर् के हिन स्मार स्वाय पर हुए है। हा सरे अर पह न द्ररम्राष्ट्रंग्रायार्द्वंद्रव्या नुग्राक्षः श्रुव्यार्यरायहृद्रायान्द्रायेवका ठव् क्री: मॅव् क्रु: केर वर्षन् 'पते' संकुराद्वयश क्षेत्रा यें पारम् 'पी द्वयवर''''" कुरायावानाया। देवहाहायद्वेदाकुन्तरातुःभेनहाह। मुपासु भूगः देशयाययायायायय। के. हे. हें दें नाने वाय्यवान्य वानः में वाय व र्षेणयापरायत्राक्षे वर्राप्तरीक्षे ययावा रते यावयान केराये ष्टिग्'न्दुब्र'र्स्टुंग्बर्श्चुंप्रसुर्रस्ट्राचन्देरेकेद्र्यं'विग्'गेडे'यानन्द्राध्या"" मय। व्यवस्थितवस्य न्यान्य स्थान स्था व्यार्थार्थर ग्रेयार्थर प्रतिरादा प्रतिराद्य प्रति स्त्र स्त्र प्रति स्त्र स्त्र प्रति स्त्र स्ति स्त्र स्ति स्त्र स्ति व्यायुन्याम्बर्यारुन्यन्याम्नाम्याद्वा विर्माद्वार्या

## सं'ह्रन्'न्ने'ल्ड्न'छे'स्र्ना

यां म्यां म

ষ্ট্র-শের্বা বিশ্বন্দ্র্বা । ই পার্বব্য ভিন্ন ব্রক্তির বিশ্বন্ধ্র । বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র । বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র । বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র । বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র । বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্য বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্য বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্য বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্য বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্য বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ বিশ্বন্ধ বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্বন্ধ্র বিশ্

चक्षः स्वास्त्राच्यात्र अद्वित् क्या न्द्रियाश्चाः स्वाद्धः प्राप्त स्वाद्धः स्वादः स

पश्चित्राञ्चा ।

यद्मान्वयाश्चायाः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्यान्त्राच्याः स्वान्यव्याः स्वान्यव्यः स्वान्यव्याः स्वान्यः स्वान्यव्याः स्वान्यः स्वान्यव्याः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वायः स्वायः स्वान्यः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्

हे ह्य अ इ ब ब ताया हु ग त ह ताया । । वि न हूँ व हूँ या ग वे बा गी बा हु र हूँ यहरी वि.संपालर नेश्वरा के कि में भारती विश्वरा में के ने तरी । ग्रवारगामवादारहणामरावुवा । व केवादरावादा ग्रेशग्नाम्मा |८ इतार्ध्रित्रेश्वार्यार्यर् चति'ग्रेश'क्षुग'्यग्रा |८'ळेग्'ग्या कुग्र'८८'ईश'स्'अ'भेन' विरः। <sub>।</sub> ररः ८५ँ५'५र: तुरः त्रः अधिवः य। । ५ँवः वेः व राश्चेरः त्यः तराः पति छेन | मिंप श्चा बिन में बाया चरा | भेन वायवाय हन वाय वाय वाय 5.'८ग्रा ।र.वे.म.न.ग्रेशंचनर.ग्रेशंचनवारर.कृया ।ह्राकुन्ता मञ्जूबाववाका पञ्चे वर्षात्वा | व्यापतायाः चित्रे प्रेपिन् वर्षात्राया । क्रुनः स्रेतेः बहुद्कुर्वे भेरानेय। | दन्यादिन्यक्किक्षेत्रक्षित्रम् 13 क्षर्'र्रामः क्षर्'विरुर्'र्ग । अर्देन भेनार्रा हुं तहुतावितार्षर्। । Rर्चे र प'न् र त्यं हुन् 'वॅ'रर'पचर'। विवेशरेण'र'वि'ई'हो। । क्र्यान्त्राचीवावववाद्याचा ज्ञान्याचीना । ज्ञात्याचा व्याचा व्याच व्याचा व्याचा व्याचा व्याचा व्याचा व्याचा व्याचा व्याचा व्याचा यम् । क्षेत्रंबराकुत्देव् हेन् र्वेदायाव्या । तर्त्र प्रिं स्याहेन्। यान्त्रया । क्रूंन् हेन् क्रुन् हे के क्रुं हिना । तिर्विन नि स्थान न त त्यायेन् । स्गापस्यायुः गुः अधानुषायेन्। । नेषायुः यायवान्नायम् वा वैसंकृतः। ।तन्यात्रद्येयायस्यस्य हेन्यःहेन्। ।तनःकृतःश्रेनः परिकेषित। अर्दिन्दाः अति। वित्रान्यार्केषा वृषयामेन्द्रतंत्रम। १नै र्स्याञ्चन क्रियान्त ५ है। १ वर्षा सर्मियाया वा विःर्वश्रञ्जन्नेपत्रत्यम्पत्रस्या विके वेन्द्रः योग्निन्देः ने। । क्षेत्रेव द्वयायाय स्पेत् गुन्। । तन गैया श्वताय राया तुषा मम। १३ वन ममा केर नुसारेन परके। १८ के ये न पतुन है सर मन्। । तुराबेन तके तमा नर तर्र न्व। । यतु न हे र र जीवा तसु र सर्पत्रस्य । रंपकुंद्वप्रतेत्रश्यक्ष्यादे। । गरेवरहेते यहं र वर बर'पॅर'गुर'। ।रर'नेबात्र'गर'श'तुबायवा ।विवेद'हेलवाकेर प्रमुख्य व्यापकी । [मः स्थायक गः ने का के तामवा । प्रमुखाप ते वन प्रम मरतर्द्र्व । विषयकेष्यंतर्वेषायवत्यर्वत्यं । विषय्वहर्व पसर्थिक्ष्यम् वस्त्रिं च द्वा क्षेत्र वैदः यन्द्रायापदादेगा नवापदाया द्राप्ति विद्याप हुवा'वी'तवावा'केवा'वादर'म्रास्तु र्र्तर'वेदा'तुद्रामद्राध्यर'य्यम् व्यवारत्रे''''''' महाम्बर्सा ।

**ह**ेंग्'रम्'ब्रावशंपाबी'नेश'नेम'। । प्रमृत्'रमें'ब्राहन'मं'ब्रिन'यम

बैदा विद्यापर्प्रतेषानु यहिद्यान्य । दिद्यार हैद्यान्य हैद ्रान्'तर्य। । श्चिन'या कुलायं ते स्वाला वर्ष्यन । यद्ना'या के यद् 🏮 ব'দবাব। । মইব'মই'ৼৢ ঐদ্ভলয়ৢব'দইন। । ইমামর্ব'দরমান্তি न्येर्प्तिक्ष्य विवयम्प्रिय्यादिक्ष्यम् मर'लुग्राप'भी क्रि.प्रवृ'गुब्'ता'बेर्'च्यर्य'बेर्। |यङ्क्'प'तुरस वैग'तर्नर'नतुग्यं इयय। । नर्झन्'यं द्रनः र्झनः छन्' रूयां भेवा । पृण् व्यापतिःहेरातम् स्यान्या । गुन् गुराकुन परान् गृतानितः गृता नर्भन्दिः नयन् स्वायान्य विषयम् याज्ञ । । नर्भन् त्र व्यवस्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वयान्य स्वयाय स्यान्य स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्ययाय स्वयाय स्वयाय स्य सम्भाष्य । द्राक्ष्यक्षां श्रीतार् में सम्देशमा । दे दर हाता व दे स्मा तकत्। । मर्डेन'तशुर्वाक्' तथविन'न'प्परः। । क्रेंश्चानि में तरी त्राप्ति । व्यवः ह्याया । श्रुप्त हर्षाया मुन्याया स्थाप । १५ वि. मे व्य धुँगवामुः रूव। । प्रवास गृहवः र्ष्वेगवा गृहेशः वां यस्ववाधिव। । वां बळवरान्ग्राक्ट्रिंन्'न्व्राया । ग्येन्'न्चुन्'न्युन्निर्मा ळॅनवान्वेकागुन्तायञ्चरायरात्रळा । नेवारपारेवापते र्न्न्छेळवा । बर्वाक्चरागुन्की अहेंन् मुरेग्स। । श्चन्यस्य जन्म र्येन्सर्श्चेन् महेर। तिह्नेन हेन सेमा उन्यासमा । शु र्मातस्यापार र् चदिः इत्। विश्विष्ययम् स्प्राम्य विष्यः विषयः वि निश्चेत्रायराचेत्। विस्तिरार्क्षेण्यानेत्राकेत्रावितः । देशाणेया छत् चनःत्रम्यवश्चार्यमः। निःदेःक्षृतःचतःविद्यायनःभेव। श्चिवायान्ग्रेतः पर-५ में दबाया व बकाये दाय होता । वेशा में श्री दबाय स्था श्री पा मुन

पश्चित्रः केश्वश्वाप्त्रं वात्तः त्यात्त्रं विद्यात्तः विद्याः वार्षे व्यात्तः विद्याः व्यात्तः विद्याः विद्यः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्या

**वि**द्रा । दिस्याक्रीतकरतियात्राम्। विस्थाक्रीतकरतियस द्यान्या । वि.च.२ वाच स्याजीका इ.च.च राच । इ.च. हेच.च व इ.ट. श्रुम्यायाचेन्। । निवि चेन् चे स्थाप्तु स्ट स्ट स् । ति हे व चेन् ख्रा स्थाप्तु स्ट स्ट स् घुरतकर। । प्रेंबाबेप्तहरार्ट्यन्तुरतकर। । व्यवश्वेप्तवस्य वापराक्षेत्ररातकर। विवयाक्कीयहर्वाच्यवाक्षीराव्यवावा कुै' तर्डे शद्यनशयां में द्वा । श्ले श्लेर स्टेस्स प्रमानमा । वा क्रियराळे'यर'कु'बळॅदे'रर'। ।स् ब्रेन्'अधुग'गुर'वस'स्दि'रर'। । नेयायात्र्यायमाञ्चायेन द्वाराया । इसनेया **देश**प्रहेब्रज्जन्यश्रप्ताः हिरस् । विश्वप्राध्यस्त्रहेरः वृत्रप्ताः । हः स्वाः न्वित्रातस्र न्वराया । ह्वित्यतिह्वत् वर्षात्राया । क्रुंद्र'पत्रेश्चुद्र' वयवायायायाया । विदः क्रेव्र'त श्रीद्रापाद विवाद्र' ব্যব্য श्चर। । तर्म हो नाप माने मिन हो नाम हो ना ह्यत्। भितान्ति हिनापायविवात् ह्यत्। । तत्र मास्ति तस्य समान भुं तसुर। । निर्ने न हेर् भवायें र वाभुं तसुर। । ग्वाय पाय वि ह्युया भु'त्र हुन्। । मृतुम् अरुम्पि हेन् ग्रीभा । वीम् त्यायायाय देशुः यही **ऍ**न्। क्रिंशशुन्द्वीनश्रास्य प्रभागित्र येन्। सिन्म क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग न्युव। । नर्द्रश्चनर्यार्श्वेन्'रा'त्व्रशस्तुः हुन् । इत्यत्वर्धेन् द्रवश्यत्यत्पन् व्यञ्चरता । विन्युरिन्द्रिर्व्यव्यवस्यात्रात्वा । विवान्युर्व्ययम्।

ब्राह्म मुक्षण्य स्त्र वित्र प्रत्य क्षेत्र स्त्र स्त

म' ह्य' अ इ अ इ । त हे व । हे । त न न । हे । त न न । हे । प व । हे । न्यायकान्तरायित्यायकातन्त्र। । व्यापनियोत्रेत्रायकार्षेत् पर्दे'धुराभवादन्य। विःकृत् च्चे दर्गवा न्यान्य क्षें धे'धुराभव त्रवा । ग्रवाराम्याः स्वास्तिः वृत्रवासिक्षः श्रीवा । अवासायने र्देनः ब्रेशनश्रव। दिशनेशचनक्षंवरत्वराक्षेत्र। द्विरान्धेः भे ब्रें तर्रवरा कॅर्। । वनकातायानहेन 'रॅन'ये त्युन। । ३,व'न जुर्'न वर्गरम् रॅं बर्करहे । विवयम्ययाचवार्वे पर्झेवयायाचे । इत्यत्र्वेरप्राधी हेन्य ळन्'भेव। निः क्षर व्यवश्य हार यारा येग्या । विवास नरा। ग्ववः यर हूँ व'रा'प तेश्र वा रे हे व' गर तायर अप परता करा के गरायर अ न्नन हॅन्यान्यम्यास्य हुन्। ह्नयान्यम्यम्यम् वन्निन्न। न्ये न्द नैकागुर्वहें वृद्धेत्। न्द्रिन्यन्तिभाष्ट्रिन्द्विविया वैद्र हॅं न'ग्रेन'ग्रन'रे'तान्येतानेन्'र्' पर्झें यहां पर्या हिन्यापानें तर्हेन्'रे। विश्वायस्त्रित्रें तर्वायाळ्ट्। नर्ज्ञेयश्वायाय्ट्र ने क्वें तर्देवायाळ्ट्र पा हॅं न'र्झें अन्तर्राणी केन बोल इंप्यं हे निर्देश का बहिन हुन पा धिन हैं। । से

## 四首'蒙有'意'滿土」

प्राचित्रमण्डित्रक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् । इत्याच्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् स्वाचन्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम् स्वाच्यक्षात्रम

क्ष-क्ष-भाक्षे | निह्नेक्ष-चिक्रक्किक्किक्किक्किक्षे | क्षिक्षे क्षित्र विक्रक्किक्षे | निह्नेक्षे क्षित्र विक्रक्किक्षे | निह्नेक्षे क्षित्र विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे विक्रक्षे विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे विक्रक्षे क्षित्र विक्रक्षे विक्रक्षे

बर्ह्र-विन्ध्यत्रेह्रन्य । वि क्रून्यान्त्रर्वे स्वास्य 1छे। मेशकेन'र्यते ह्रमाळ हुर। । नगन में ए के के मे हिया । केर ह्रमाळ का की भु रुम्। भिषावण् पार्ये क बेर्यास्य त बेर्या । श्चिराविषया पश्चाय विस् मतिः सेवर्यं कवं त्या । में केन ध्यन में इंग्राब कन वेन । गन्यवानग चत'र्वेश'यळ्यरा'ब्रुर'तरा । भ्रु गशुठा'त् त्रताये न 'हेन'तहेद'तहरा । व्यद्ग्वायतके के मारे में ना । के साम बुद्यायस। विते भेरा ता यह ना वैक्षार्थित् : चेर्राया नेव्राया नेव्राय नेव्राया नेव्राय नेव्राया नेव्राया नेव्राया नेव्राया नेव्राया नेव्राया नेव्राया क्रुं को क्षेत्रप्ति त्र्रप्ति क्रुं कर वा न्नु अत्यव वा चर्ग क्रुर् हे वा वा वि पर'वु'चेर'वु'प'क्रेर वहार गुर्स'तु'चुर'पहा हे'पईव'ग्रीहा'सह ठवा গ্রীস্থান্ত্র বিভাগ বিদ্যালয় বিদ্য यहुग्'यव। यने'व्रवयायत्रसं'य्नरहे। हे'यहुन्'कु'हुन्'रु'क्यंत्र' बर में द्वेष्वयायदे नुवाष्ठिषायन्ष सरायाष्ट्रस्वर वरावने पाया पर " मर्थार्वे र स्रायाले व स्वायाक्षे पराप्ता दे पर्वं व के प्यार की ति है व प्रा ने'यने'य'वर'वयापरपरप्पत्य ५'यन्य'शुराहे'यहंव'यवेव'रे' विन्'दश्चिंयपर्'तु क्विन्'देन्'यन्द्राचे राम्या हे पर्व्यक्षिक् हो। ঽ৽<u>ঢ়৾</u>৾ঀ৴৻৽ঢ়৾য়য়৻ঀ৾৻ঀয়৻ৼ৸৻৽ড়৾য়ৢ৾৴৻ঽৼ৻য়ৢ৾৽য়৻৻৸য়৻য়৻ঢ়ঀ৻৸য়ৼয়৻৸য়ৼয়৻য় त्रॱऍ८'प'षेव'ग्डु८बाव्याक्षेत्'प'र्दे'बळर'पज्जूर'ग्री'वगुरतर्दे'''''''' गुडुन्सर्स।।

हे भिन् पति व दे र तु श्रु यापि ते श्रु । । ति र से पश्च र श्रु र श्रु यो । ति र से पश्च र श्रु र श्रु र श्रु र श्रु र श्रु र से र पि ति र से पश्चिम । श्रु श्रु र श्रु र

तत्। । वन'न्यरक्षं'वर्षे व्यव्यव्यव्यव्यक्षेत्रं । । व्यव्यव्यक्षेत्रे वि तर्'नदें ग्रहा | विक्वा हों नहीं निक्षेत्र स्था | न्या हों हे जुरहा है का मु विगायेव। । में ग्रंयपेया इन में या नह न उन। । तरे र नह गया नु श्चॅप'गर'व'पर'वु। । गवसाधिंगरा रेसाबेन परिन्दे सिन्दर्। । १९०० **है**८:५६:इंड्रॅंट्र-५६:५४:४५। ।०४:२ं५८:६व:४६:४५: न्वा । सम्बार्केन परमेन परिने ने के ने किया हैन बारत <del>द्र</del>रन्ग्रायत्रिकेष्यक्। त्रयुर्विर्धिन्न्र्यत्रहंन्यंतरी । त्रिस् नःर्भूतः नतेः सम्बद्धाः व । सम्बद्धाः न्याः व । *`* अ'रुं। ।हें नब हुन ने झून नहुन स्ति । हे के नव अप हुन् हुन मतिः सञ्चाबादवः भैत्। । सञ्चाने 'न्नः इतः चत्रे वे भेनः नव। । सन्नः होनः **=**५'त्ररक्षुंत्रप्नदेशेरक्षुंद्र| । ब्रह्मद्रादेश्यद्याप्त्रक्षे अर्के । कुन्'द्रन्'श्चे'त्र्'यान्यपादन्। । अर्भेग्'द्रन्'पान्येत्रपादेत्यय पहेन'यदि'शे'रे'श्चेन्। |येवयानेन'रर्नेनेश'य'दर्ने शे'य'हैं। ।युन' इॅं बेन्'पदे'रक'र्मेबादे । । ग्रम्काइन्'द्रमेवापदे'यवाबाद पेदा । त्याने न्दर्द्व प्रतिकी प्रत्व । किं ज्र ति हे ज्या प्रतासिकी ते श्चित्। । ग्राम्याया गुरुर ज्ञासे हैं । । प्रमे यह यस य व्रुं र क्रे ग्रव्यारम् तरी । तरम्दि तहेम्बर्धातहेवकार्य देवस्य स्त्र मित्। । तयाने न्दर्द्द्द्रप्यते के मिद्रम्य। । के तरी है बेद्यते के दे

<u>ব্র</u>ীবা |&বারীব'ব্রীবারারারীবারারের ঐ'মার্কার্রারার বিজ্ঞানী বিজ लयानमार्थे तरी विवयान् रया क्षेत्रायात होन्य विवया वा असने न्दर्वपदिकी प्रनित्व।
असने नद्रिक्ष प्रतिकी प्रमित्र । |र्ज्ञप्रॅस्पन्तुःसर्द्धन्दाप्तन्छाःसर्वे । व्रिन्वेन् क्रेन्हे तर्चेन्द्राचतिःद्रतातर्चेनःय। । मः ऋनः श्रेदाः गर्छनः पतिः त्रायात्वः मङ्गरमित्रे से से हिन् वित्र में हुता हुता हुता हुता हुता हुता हुता है। मन् ब्रॅं न क्रें कर पेया विवयकी न वित्यक्त के न प्राप्त वित् तिरः द्वेषाराष्ट्रीयुष्यान्याष्यायान्याञ्चेर। | इत्यादर्घेरः श्वेष्य ন্ত্রন্থ প্রবা । বি'অ'বইব'র বাধান্টাব্রীম'র'র বা मम। त्रे द्वारार्म न रापति र विराह्म समान न त्र म न रापता । त्रे क्रिंच वरे। ने गुव वेव क्रिंच ळ र छे पर ग्नित। न प्रन्य रूप **ल**भुःक्ष्रं अर्चेत्रत्वराष्टीः वृवदायेद् वृत्यात्राक्षर् । प्राप्ते व्रुत्यत्वरे प्राप्ते **রিণা**নু:রিসমে। ইেস্'দেই';দুস:রুঅমান্ত্র'র্মনমানীণা<mark>'গ</mark>ান্তুনমাস্ক**র**' वगुरादर्गमहारयार्थ।।

ब्रुंन्'रक्षा मिन्'र्दिकि-'रा-रःशक्रेबेश्चरि । र-रःश्चश्चर्याः स्वित्'रिक्त्येन्त्रिक्षाः । स्व्'व्यं स्वित्'रिक्षेत्र्यः स्वित् । व्याप्त्रिक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्रिक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्रिक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्रिक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्राक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्राक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्राक्षेत्रः स्वित् । व्याप्त्राक्षेत्रः स्वतः स

विव'रा'भेरा । स'प'र'भेर' पहुर'व्यादी । मावव'रा'सुर पार्वे म्त्रात्रंत्रा । इत्रात्रंत्रात्रात्रात्रं । न्रात्रं व्याप्त्रं यानुरापिता । में तर्पाया वरावया में नामरा । विनामया रेश्या त्यायान्यत् । व्ववर्षाकुङ्गेष्यायाहेन्याया । व्रूप्तावर्ष्ट्रायाक्षेत्रं त्रव्य । नेश्युः बूर् कूर् हुर् तह्रग्या । तर्रेर् पारराध्यये गृहर तर्वता । मूनारविदार्भेनायरतिहेदायां वेदा । वर्वदायां वेदार क्षे'नॉर्हेन्'तळेल। |त्रन्'मठरापने'मते'त्र'ब्रॅन्'तु। |हराहेन्'नन्यायाः हुनायाधी । ननेपतिर्राष्ट्रमाबीनप्रहेला । हिंगाबन्दि ग्रह्मा महत्रायाया । न्याया हेन्'तु बीम बुन्' तहता । कुन्या हेन् पात्। विवयार्बेर्विरावयार्थात्ररावेरा। । श्रूरापाद्येवाग्रीयाय पञ्चमया मरा । ध्रायः स्पर्वः प्रस्ता । अवस्य दे हिंगाया व वर्षा । विन परित्रहुषातुन्यक्षे मुद्दित्। । श्वर श्वरायम दुवित्व स्टिया । त्वर्रातुः अर्देव दुः चेत् पाव। | रत्रे श्रेश्य स्प्तिं श्रेश्वर्षेत्र प्रमा । वाववः व्याय न्या जुया तर्के या ना ये। निर्मेष या या वात र जी या है ना तर्क या महिमयामु मित्या प्रति सूर्रापाया । यरवा मुक्तिराया विदाय होता । इस हैंग के बाक्षु र वैवायाया | पिंद पायगायाय र वे यह दार विवा द्रवः हवः तर्रवः तथा वितः विवादाः । विष्वेषः त्राः परिः ततः स्रतः । क्षेन्स्यान्स्यार्थस्या विद्यान्य प्रत्या स्त्रेन्द्रवास देशनेश्वानहर्वा भे ब्रेशव्या रे वित्तु में अंश्वान से वित्ता में स्वान से वित्ता में से स्वान से से से से से स ताव्यवार्द्भन् इन् वाक्यियन् इन् विन्।यन् उन् तिविन्वार्गत्वे क्रेन् प्रमाणा

वियात्वरात्वेश्वाचात्वे प्रतिः श्रुकाह्ने वा क्षेत्र क्षात्वाचा गुनात् श्रुरापावेषाः वियात्वरात्वेशवात्वे प्रतिः श्रुकाह्ने वा क्षेत्र क्षात्वेशवा गुनात् श्रुरापावेषाः

## 的一葉本的一名 一种

न्वॅंगुर् देप्त्न्येयान्यपावेयाग्रुपरेकृत्याक्रप्या **धै**त'हेर'हे**त**'तृ'स्ट'नवेर'वे'नवेत'वेत'ऑन'धनेत। सुर्ह्वेन'इबराग्रीका **बु** न के सुवारुम् व गहान पर स्थित श्री वर्षी में में में जुन पहा महायहर है।गुन्दत्रान्य। है।नहन्यान्नादहन्यत्रहन्या ঘরি'ঝলন। ব্দ'র্'ব্রি'ব্রঝাশ্বাথানগ্রীপ্রানন্প্রাথা हिन्द्र में व तत्वायाया यदायदेवातळेवायरातुः चुरायहरायया वर्षरावदः ं बर ब्रियार तुषायाया यहेषार स्वा के मुका तुरा वार्षार गुवा ये रायर विर्मापरावर्ष्त्रव्याधिरास्त्राच्यास्त्राचरायाः स्वापा ८ त्व'हे'अ८'ताच हट:व्यासुन'यवागुर'व्यास अ'त्यापातागुव'यापासु त्या म रॅंट्र क्रर ग्रॅं द गुवाब दु बार दे रहा ता दिंहर इवबादव रहु द क्री रहर "" प्रविषयप्रवा मिन्द्रवर्षान् । प्रविष्ट्रवर्षान् । प्रविष्ट्रवर्षा ची बेर। यायान्ये। हुन्दरनुपत्वग्नान्धेर्यर्गा धैरस्रावादरनु **ऍ**८ः। तसुर् श्रेष्ठुरायातर् रेज्येव ने रायात। हे यर्ड्व मुकार कर स्वाप भेद'चयानयन्'दुन'कन्। यहनयदुन'कन्। वन'दु'यह्नन'दुन'कन्।

शुन्तर्व के भिव ने रामिया व क्रा मिन क्रा क्री मिन ह्या क

नेत्यं मृत्यं स्ति स्त्रे व्या विक्रा मृत्यं मृत्यं मृत्यं मृत्यं स्त्रे मृत्यं मृत्यं स्त्रे मृत्यं मृत्यं स् स्त्रे स्त्रे मृत्यं स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे मृत्यं मृत्यं स्त्रे स

य: ५५ 'इंद्राचायञ्चराचाद्दा । व्रवस्त्रें व्याप्त देव । व

विश्वन्य श्रम्यः । स्मान् स्वान्तः । मृत्रित्त्वान्तः त्रान्त्रः स्वान्तः स्वान्तः

बहुआराकेन्द्रः हें ग्रां दंव। वि:दुः त्रेलापायहेन्दे वत। विदाळण्य ठदाने पहेन गुराउता । ज्ञांतन्त्रायो नेवा हेण्या उता । ग्रुत्रात्र्वार्द्रश्यां प्रेत्रित्रात्रे । प्रति हुग् उव दे प्रेत्र गुर हरा । इन्बेर्केर्केर्बर्क्षियं वा । व्यवश्रुक्षेर्रायायहर ने'मल। |तमेल'तरीय'ठव'ने'यहेन'ग्रुम'तुम्। ।शुःग्रुय'रम करा हैं गरा उंदा | इं. धीरा ही देश राहे दें देश द्रते:कॅबाने:पहेन'गुन:रुनः। । रनःगवयात्रश्चार्यःहेगयार्यः व। । **ह**लाश्चरात्रवारातुःपहेन्'ने मल। ।गुन्हें पार्कराने पहेन्'गुन्दिनः। । कृत्पकुत्पात्वरार्गा पर्मेवरापायेय। । माकृत्पम् प्राप्टेत् ने'मल। [न'कुल'र्केश'ने'पहेन्'गुन'उन्। । सून'रीन'नये'कर हॅंग्रारं दंवा विगु द्रग् द्रो क्या हेन् देश विराह्य विराह विर ने'महेन्'गुन्दुन्।। वैद्याग्युन्द्यायत। यन्मकेग्'द्राने। यन्त्र कुश्याम् प्राप्ति परानु से केंद्रा न्रा में वार्षिन् परान्त्र प्राप्ति परान्ति केंद्रा पहेन् व्यं अन्तर्भेरानदेशवर्तुः वशुरादिः ग्राहरवार्षे ।

त्युत्रान्येववाशुः में नेवाववा । गृविवान्यम् ग्रीमः विगाकेन् रं व।।

तन् दें ताव्यायन्ति हुन के हिन्। | देवात हुन के हिन् । न्वराखन्याद्वरन्द्वरन्द्वर् व्या श्रीत। । सन्तान्यत्यापानुस्याने नित्राना स्वानाः सेत्राना हैनाः हॅं नवार्च वा विस्रवातारे में नवात हुन से ही । विह्यरान हेना म'र्ह्म देन । विस्तरा नहीं संस्ता देन मा से सार मिना । सुन हिना हा बारीयद्रार्यां मेरा १८६५ में वाबेदाबेदा मुन्दे हो । वाह्य पते'च'कुन्'व'पञ्चनवाहेन । शुप'ववत'वववाहन'कुं वे'क्रंबा । ॅुव्रॅंड्रा ह्या हिन्द्र हिन्द मेंबानुतैरमनबार्मरहात्रायान्वेवा ।हेन्बाययतेत्त्वादार्मपंन्देन्। त्रिंन्यायाः श्रीम्यान्याः विवादायाः विवादाः व वाचरः प्यतः व्यायात् कुः प्रेया विषा । या त्या कुरान्या वी वा बिनामहारयाच्या न्योप्त्तुन्युन्त्वस्यायाः स्ती <u> विवापि क्षेत्र क्षेत्</u> इयरामु दर्द्र राम्य राम्य राम्य देन् मे त्रु द्राय है स्प्र ह द्राय है साम्य म विषाञ्च षाञ्चेर तज्ञ स्यापाय। प्रमः प्राप्त विषाञ्च षा विषाञ्च षा विषाञ्च षा विषाञ्च प्राप्त विषाञ्च विषाञ्च प्राप्त विषाञ्च प्राप्त विषाञ्च विषाञ विषाञ विषाञ्च विषाञ्च विषाञ्च विषाञ्च विषाञ्च विषाञ क्षेत्र'रु'गर्खन्याया व्यापनार्म्यंन्य्याञ्चाराहेगर्खन्छीयुन्य हेन्द्रक्षपात्रिया गुवार्श्वित्रश्चेन्द्रवह्नापार्द्यायहित्र्या त्रिर्द् वुक्षण्यं राजीद्रवीयने वागुर्द्रात्रीयवाद्रात्तर्वे विद्रा नर्सन्न्नः क्षुव्यान् वाश्चित्रानक्षुव्यान्न्नः वेववा ठवातायवः सन् वासके नन् र्देर पातर्गा है हुआ हे पर्व व की हुए है व व वर्ष र र मे वर्ष य

मुं बुर बर पते बन राया तर्ता । मूर गुन राज्य राज्य र में निय त्र्राप्तरावरापत्रः। । वि'ग्रव्यादे 'सूर्र्र्युश्राप्येश्यादे । महादिर हु वर भेर के हा पहा | विराध दे नहा है र पहे है नहा है । बः विषयायायात् त्रापायेत्। । पर्यत् वयया है स्र र गुरु गुरु बहर् । (द्रिंग्यापण ब्रुयाय क्ष्यापण । व्रिंग वा वर्षा व्रेंग पति'अप्रकामर्स् व'स्। |शेअशतहेव'रूबाशुर-रकाराशुर। ।यू' राहि स्रान् ग्रेसान् ग्रेसायहिन्। । यत्रसारा हिन् ग्री नरा नविनाय। । হুবাধার্ম ক্রিবানের বিশ্বর বিশ वरायहरा विदुष्टे स्रान्धेशन्धेशवहेन । केंस्वेन हेंस त्रेत्'ङ्गराञ्चेग'न्यॉतादरान्हरः। शित्'एम् दुर्रेन् ग्रेरा'न् ग्रेरा बहिन्। |शेबशकेन्परायविवादेन्प्यायाय। |इयाहेगादेःया बाबर्धरायबा । हिंगु: न् धुन् खुन् राजें रावबायहरा । मा बुन् हे स्रर् ग्रेशं र ग्रेशं वर्षे र | किशं ग्राह्म र वर्षे द स र्ग'ने'गशक्त्राप्तरम् दर्हे। प्रमाद्रप्तकुर्कुरम् पह्रद्रप'र्ट्। सेवस ठव'न् अव'प'क्षवरात्मध्यु'र्वेष्वराळे'चनःतृत्व'क्षु<mark>व्यात्</mark>यात्मवात्रातुरा''"

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडतः द्वप्यं व्यक्तव्यव्यक्त्र्यं ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडतः द्वप्यं व्यक्तव्यव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडितः द्वप्यं व्यक्तव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडितः द्वप्यं व्यक्तव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडितः व्यक्तव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडितः द्वप्यं व्यक्तव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकाद्वापडितः व्यक्तव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकादिवापडितः विवक्तव्यक्ति ।

स्वकाग्रुट्ट्रें क्र्र्स्युकादिवापडितः विवक्तव्यक्ति ।

रात्रिराचातरीतात्रीत्वाद्याच्या । श्रीश्रुरवराचित नगत्रदेव्भेता । न्याकेंबार्स्य बहिष्य ग्राग्नित्राचारा । विःस्या सिपायार्थयवात्रह्याची । श्रु.श्रुच्याश्रुच्यते व्याश्रुच्यायाचा । सिया रु'ङ्गे' छैरपर्गित्रों री विस्थानसार्ग्य रहुं स्था हुं र्'पर विहास लुन्या हुन्या हैन्या । वु र्रेत्यन्वयान्या हेवान्वरानेया । नगरान्कुन्पङ्ग्राचेत्रदेश्यो । विग्वराञ्चेदारहग्रेवरान्छेन् प्रवेत। । रूप्प्रंत्रप्राक्रें स्पर्गा खेर्प्रे । । वर्ष्प्रे ग्रह्म रान्। । न्'स्'त्रन्'व्याक्षे'चश्चन्द्री । विष्ण्वश्चर्ययम् वे'क्रेंन ष्ठ र प्राप्प मा हे पर्युव की सुवाब है वा सून पर सुन है। हे पर्युव की सुवाब न्यान्ति द्पन्ष्णेषायुर्म्युन्पर्यः युर्द्धत् देशः क्षेत्रं व्यवस्य न हमः केरः । **ঐ**ন্'স্টিঝ'ন্ঝ'নকমে<u>'র</u>ণ'র্ম'স্ট্রঝ'র্ঝান্নীন্'র্'ন্'ম্মৌমাঝান'র'্ন' নর্ম্নীঝঝানঝা स्वाया कुन्याया त्राया त्राया विवाद में निवाद विवाद वि नितः श्रुवाते क्रूं र छ र ने चुन्न प्रिन्द्र। । ते क्रूं र छ र निते क्रूं र हे क्रूप स्व'क्के'न्त्राम्'स्व न्यास्य स्वात्त्रक्षेत्रस्य स्वात्त्रम्य स्वात्त्रम्य स्वात्त्रम्य स्वात्त्रम्य स्वात्त्र

## 

ব্যান্য। ইগ্নের্ব'ঐশেন্থান্'ব্রিন্'ম্ব্র্নান্রব্যে ইন্ ব্যন্ত্রণ্বান্ত্রশ্বান্ত্রশ্রশ্রান্ত্রশ্রান্ত

भ्रु.धेवी क्ष्म न्या क्ष्म खुन्य । मुख्य ने क्षेत्र प्राप्त के क्ष्म न्या । ह्याबाग्रीयळवाने दाने हे से दाने हैं स्था । विद्यापा हिताया । त्रास्त्रा मन् न्या न्या क्या के ने का यह ने का यह ने का के यह र 'इर'नश्चर'। । गुरुर'ने 'श्वर'हे' देर'श्वर'श्वर'। । हुन्दारी अर्ळद' हेन्'हे'स्'रावस्था विषातुषापया हे'गर्ड्वाग्रीया क्षे क्रें मृ'न् अळेग्'महाव। | नश्चन'महाअ क्रें अप' १ वयराये न खुन्य। । न्तुर्ने न्या द्वेन या नर्रे राष्ट्रीर्या । विन्या की यद व के न्या की या म। ह्याम्राक्ष्यं देवा हेवा हेवा हे नाया । वित्याम्राहेवा पानमा वार्षा ह्याञ्जादर्भे द्वाप्यग्ये प्रमेता । मानि वे देशत हु पर्या । Nस दे चिर् रे से साम होते चित्र हो । त्र स्व स्व प्र र से व स ८६व। ब्रन् चुन् वे विष् क्षु र्यव ८ क्षेत्र न विष विष **बै** 'क्वें ब'रा' हें गृ' के द 'श्र| | रिग' वै' श्री गुरु रा' के 'श्वे ' वे र ' | | श्रे बरु हे वे तुःकुरः विदायेत् 'श्रुंत्। देशः वुरायय। हेः तर्त्व स्थायितः स् ने 'त्यायीयन' व्यापेशावातने स्थाय स्थाय

न्य। । वार्हे ग्यन् बुक्षयाँ न्यन्य । क्रां हर केन्य तसुर बेर्। । सुर वेशकाबेर व न न व केर्न व व न न व न व बेर'क्दिं केरा किराम करिंदरिंग समार्थे केरा १८५५ मा न्वीत्रह्मवद्यारीनः पित्। विष्युः विद्यानिकः पर्वे । हैंग'रा'वुर'व्'ग्वर तहेंब'धेव। ।श्चरायमा क्रेन् हेर के केन्। हन्यं द्रार्विर परति हैन परि हु। । हुन पार्विन द्रार्गाय हन भेव। । न्यं ळेग् येन् व्यमित् हे भेव। | वे यह्य न्या ह्य क्षेत्रय भेव। हॅं पार्यायोन् वायीन क्रिंवा विवा विवा क्रिंवा क्रिंवा क्रिंवा विवा ग्रात्रांस् । सन्देगःहेन्द्वन्त्रुग्त्रम्त्वरात्व्यात्व्यात्व रक्षकुर्या देवा वैवाहे पर्दुव्या नेववारा देवा वादा वुवार क्षा वादा वादा रहि """ गुबुद्द्यार्थे। ।

प्रत्यम् संग्रुवस्य स्वा । विस्तृत्वस्य । प्रत्ये । प्र

पर्व दःश्चेषाःपान्ताः स्व द्वाराः स्व द त्र स्व द्वाराः स्व

प्रसास्त्र व्याप्त व्याप्त देशे स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत

स्वीर्त्तर्भे विषय्यात् ।

स्वार्त्वर्वात् विषय्यात् ।

स्वार्व्वर्वात् विषय्यात् ।

स्वार्त्वर्वात् विषय्यात् ।

स्वार्वेत् विषय्यात् विषय्यात् विषय्यात् ।

स्वार्वेत् विषय्यात् विषय्यात् विषय्यात् विषय्यात् ।

स्वार्वेत् विषय्यात् वि

क्षा विश्व देश्व स्ट्रिय स्ट्रिय विश्व स्ट्रिय प्राप्त स्ट्रिय स्ट्रि

बहुद्यम्प्रवास्यम् । यस्र्यप्रस्यनेसम्बेद्रयम् द्वीरम्ब रःकुलःद्रगःर्नगःक्वे'न्दरःकु। । न्यःक्वंशः व्यव्यक्षःत्वेवः तर्नन्त्। । षे'नेशक्विंदार्दित्वा वियायेत्वर्त्वहत्यविव्यव्यव्याया <u> न्यॅं व्'न्न्'म्ऑग्'न्न्'र्स्स्य'न्य्याम् । मुलेन्'न्यंस्रेस्याह्यसंक्रुः</u> मतिः हु। । गुरुगः सुरः वृधकाः सुः भेवः ५६६ । वृध्यं वा विष्या बेन्'बहिन्'यग्राया । बहु'न्न'दुब्र'य'र्घे' रूपशुब्र। । इस ८र्चे र र र र र्श्व मुक्के वाय दे र वाय है । विकास के बाद के प्राप्त के वाय है । त्रस्यार्वितः इयाद्यस्य हो दायायाया । क्रें सार ग्रा हे सारा हु रा हु रा মা বিষ্ঠ্য ইম্ম ন্বৰ্টি ব্রহ্ম বিষ্ঠান্ত ह्माराधित। | न्योपरायुन्द हुन हिनापर निया देश गहुन्य <u> পিনা নুসাৰ্যইকাপাৰ্য্যান্য চন্দ্ৰ ক্লাইন্ন্র্যা</u> ঢ়৾ৼৢ৴৻য়য়য়ড়৴৻৴ৼড়৸য়ৼৼ৻ঀ धैराखना'केन'न्न'कॅरा'इना'नी'नावन'के'न' इयराखनाराहेरा'तहेरा'नर्'तु । **लुका पका** व्यवस्थित स्तुंता पति वासेन विष्य विष्य पति स्वयस्थित । मक्षभेन्'त्र'ह्यन्यभैग्'ग्रुन्यंद्रस्यम्यगुरःतन्भेग्रुन्यःस् ।

म् शुः त्वात्त्रापति रहं त्या पहं वाण्या । त्यापार्ये त्या शुति हिन्द विस्त्रात्वा । विस्त्रात्वा शुक्षात्वा विस्त्रात्वा । शुः शुन्द सर्पति विस्त्रात्वात्वात्वात्वा । विस्ति वाश्चेत्यां विस्त्रात्वा । विस्त्रात्वा

र्हेन सुव्यापार्यवयायते। । साम्याव देशामाना सुन्या । **८**२ र प्रतुष्यास्य प्रतुष्ठितः इयस्य । व्रवस्थेन प्रतुर्द्देशः मते:र्नेता ।ग्रेकापायकुःचे शुःतरीःकृत। ।तहतःस्वाक्षायतीः **इ**'त्रु'त। । हर'तहग'रर'रविद'कूँर'य'ग्रेब। । तर्रे'ग्रॅद' रीयराग्रीक्रंप्तश्चराय। वित्रवर्ष्ण्यरानेवरा इत्रिक्षेत्र'ञ्च'याहे'पर्वुद्र'या । ज्ञुद्र'क्ष्ण्येत्'परि'व्यवानुद्राग् हेरा । Nरा तेन्'त्रायेन्'परि'द्यापाया । ग्रॅंशम्या कॅन्'परि'त्रॅंकॅन्'य्रेश । **इ**. क्रुंट्र प्रेंट्र प्रेंद्र प्रांया | व्यायेट्य प्रत्य प्रेंट्र प्रांय हेया | है 'यय हु' शुरु प्रशेष । वळवर हुँ र यह वप्प इन संनिर्देश । इस्टिंगराञ्चरप्राञ्चर हिर्ला । माने संहर कर्पि मर्वरारमा महेरा । सः हें न्या येवया कत् व्यवया कत्।या । <u>चित्रया न</u>्यः हेते : हुते : न्देल । तर्तेवलक्षेष्ठे वेर्क्ष्यभुषा । तेर्नेन्ववस्य विरोधिर क्रेस'म्डेस| | ५ॅव'ने'गुव'म्डेस'सेंस'भेषा | ने'व्रबसहार्येटस'नेग' हुःक्षॅप'इयय। विवागहरवामय। हुःक्षॅप'इववायानुगयानुन्छेपर ह्यून'य'भेव'व्या । ने'व्याहे'यर्वव'या'न्यांक्रन'य्यान्यात्यति दे'ये'नेया कुर्स् ब्रेन् । वृक्षा प्रमा क्रिया सम्मान्य विकास सम्मान्य । ह्या

द्रवश्यक्षा - द्रम्भीत्वुम्यविष्टं क्रुंबद्यत्व्या । त्रुंम्यद्यविष्टं

ये नेशम्बन्धात्रकरा । विश्वानश्चरवार्था । यदाहेम्पर्वन्थातारस प'ने'हेन'चेन्'छे'सु'ष्पन्'च'वेश्च'चर'ब्बेंब'चु'य'चुँ न'परा| पॅन'पन्न' इसरावारी याने न में बादा विषाद्यापा वासुनाया क्रीन में रूटा न हैन यह नेरामतुष्याद्यानेन् ग्रीसावम्यानेषा मुन्यासीवाने। यहार ने स्वारा सुरायान् हॅर्प्तस ने रामुरायस। सुनायान्या देने हे दिर्ध्य प्राप्त स NAI रम्भिया प्रिन्धिसम्बादातन्त्रसम्बादान्देश्वसम्बाद्धाः पर्दुव्दिर्<u>च</u>ुव्दब्द्द्यापत्वुग्रह्माया व्याञ्चित्र्याचुत्र्वेत्र्वेत्र्या व्याप्ति हिं या वा स्पार्मित ने स्वेग वा सं हित्र प्राप्ता हिव या क्षेत्र है। নৰ্শ্লী ৰাম্যান্তৰ ব্ৰীনা কৰা বিশান ব্ৰাণী কৰা বিশান ব্ৰাণী কৰা বিশান ব্ৰাণী কৰা বিশান ব্ৰাণী কৰা বিশান বিশা **८ वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर्या वर्षा वर्या** हे क्षंत्र स्वार् श्रेष्य द्वार स्वार स्वा त्यान्वन्यं वर्षाञ्चन्यं केन्यं न्यान्यः त्री त्रम् वर्षाव्यं वर्षा देन'इयरायान्यस्ययान्य्यस्यरात्र्व्यस्यरायत्त्र्वाद्वेन'देव'केथार्चेद्व'उट्'न'हेन' रम्'गे'ध्यानु'ईव। बे'तर्भें'व्'मेन्'न्यग्यम्'सम्बंद्याह्मन्किन् पिवीलाश्वराच्च्याचिद्रंच्चराच्चिरायय। हिपर्ववाग्चेयाक्चेराहेकेव्यंत्रेरीरर् व्यायगुरादर्गग्रुट्याया

प्रयद्धन्यः प्रयाः विद्याः वि

नलमान्यक्षे वित्रमहान्यस्य स्ति । वित्रम्यम् वित्र स् न्म्या ।क्ष्म्याञ्चरक्ष्याच्यान्यः स्थाः । । त्याः तत्याः वरः मनाम्बर्धायाः मृत्र । भित्रः ह्युः यरः मना स्टरः हरः येत्। । सम ८*व'*पर्यम्ब'वेर'र्द्रवंशे'तशुप। ।[सर्थ'ळे'पर्यन्तु'शेहर। ।हॅंर्' धिन्'र्न्न्'र्र्न्,चेंन्र'कें'र्र्मुस्याय। ।न'क्यार्र्म्युन्'र्न्न्नेन्'क्रेन् तर्रा ।कॅरसुलाह्रवाक्रीरानेला ।राह्मलालक्रियेवातुः ब्रह्म विवा हिंद्र प्रवस्थाय । विद्राप्त विवास ब्रीन:पॅन्:पंबुक्:ग्रीक:ग्रीन। । बाबकातिन:र्झेद:केद:बन:रॉन्स्न। । मन्त्रिः सः महिन्द्रिं मन्त्रा । मन्त्रां त्रिः मन्त्राः हिन् स्मिनः सः न्। । म्बारा हेन्'राने हेन्'राधित। १८३'८ने रार्के प्राया परिवा गुम्या ८ में মন । শ্ৰব নেই খ্ৰব সৈন কেব সকাৰ কিবাৰ ভাৰত নিৰ্মাণ तरेते गर्डें वाने वाने हिन क्षेत्र के निक्षेत्र के के का के का कि का ग्रीरा श्रापारा की हेन् 'पर' तनुषाचेर। गुर्वाग्रीरा खुषा परंता श्रीषा होना खुता न्यायाय हुणाया स्था हु त्र्या हु क्यायम् प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप क्रियर व्यापना तरे विभागवा समान प्राप्त वदायगुरतर्भगगुरयार्थ।

मुद्रा | अद्भारत्या | मुत्राव्या | द्वार्यां व्या | क्ष्रां व्याप्तां व्या | क्ष्रां व्यापत्रं व्यापत्यं व्यापत्यं व्यापत्रं व्यापत्रं व्यापत्रं व्यापत्यं व्याप

स्थित्। । विस्थित् स्वावस्य प्रस्थाय । विद्यादिन विवा वैराक्ष र्राप्तुन । नद्रशरीन् ने पक्षेत्र न्ना राष्ट्रिया श्रुपता । निन् पर् स्री प्राप्ता मुँग्रायकेन्धित्। ।नेपाले व्यन् मेंन्यायाः वर्षे संस्य। रेन वन वेन निस्ता श्रुव विवा । देश महान्या पता র্মব্দান্ন্য गुव्दन् वादःविदःद्वःपरः गुरःहे। पक्षेवःपगुरःस्ताव्वराहेःपर्व्ववावणः न्यानेनायव्यायाया हेर्नेवियान्नायाच्यान्यायाया तामन्यते देशिन्य न्या न्या प्रतामन् विष्या प्रता विषय प्रतामन्य । त्रिर्द्रा हुन प्रकारक के का माने के कि माने कि विवर्धात्र्याचित्रेत्रेत्रेत्र्ता विव्यत्राह्या 251 क्षे<sup>-्र</sup> तुन्। |न्यानर्द्धेन् क्षेत्रश्चन नुष्यु। ।ष्ठ्र विवयाञ्चन म'न् मॅब्रल्यवरा ग्रुम् । पञ्जेब्रायवरा केब्र ने संख्या श्रुम् प्रति से ने रहा । बर्हे देशचरपते सब्दर्भव द्राप्त । तिर्देशन दे ने वा वा विन्त यन्य ग्रन्। [कॅबार्झन लुन्य परिकोने लुन्। [सुन्य कुन्कु ग्नवश्राद्यां वतः स्था । स्टबारी स्था सेन् प्रायम् द्राया वा गुन्। वृत्रवाशुंभेव'रादेखेंदेखेंदा | निवाक्रवाद्यपाक्च केव्यांपा । विता न्दर्भेष्ठ्रायम् । विवयम् विवयम् विवयम् विवयम् बत्रिष्ठ्ववाद्यन् विद्यारेष्ट्रिन्स । ह्वायराष्ट्रियायश्चित्रस्य । 图'

मञ्जे'बेर्'पर'मङ्ग्रमप्याग्रम् । इँर्'ह्न्यस् इंद्र्पिके रे'हुन्। । **ୖଞ୍**ର''ନ୍ୟ'ନ୍ତି ଅଧିଷ୍ୟ'ନ୍ତି 'ଶ୍ର''ଜା | ବ୍ୟୁଲ୍ଗ'ର ବ୍ୟୁଲ୍ଗ' ବ୍ୟୁଲ୍ଗ' ବ୍ୟୁଲ୍ଗ' ବ୍ୟୁଲ୍ଗ' ବ୍ୟୁଲ୍ଗ' ବ୍ୟୁଲ୍ଗ' ବ୍ୟୁଲ୍ଗ विवाग बुरवायवा विरक्षे छेन् परिन्न पार्वियववा हे रहं वर्षे छन् छैरत्र प्रत्रात्रापायान्य र प्रत्य व्यवस्य व्यवस्य स्थान हॅन्दा स्वायत्राम् विवाद्धनान्। यन हेम्पर्ववायान्याने हेन्। रोयरा उन् की में न दुः में या सुः अर्धे न प्रति है। ध्राय में के न में विवा ने द्राया वाक्केश्यास्वयान्। जुलाक्वेव्प्रा यद्रस्थार्यव्यास्त्रे **३**८-४:बर-मॅं.बेर-प-८-। वर-बर-इबर-पयमबङ्गाह्मप्राबेर-<del>६</del>८.५२ व्याप्त, देश श्री वेश्व अप क्ष्म प्राप्त श्री साम श्री स्थान श्री स्थान श्री स्थान श्री स्थान श्री स्थान ग्विंव'तु 'या विग्व'ने व्राय हिन्या स्यापिता विन्या या हु वा हुन त्र्रेयार्ग्यव्येन्'रा'यण्यायात्रेरायाया ने'इयस्थिव्याद्व्या'रा' विना'ळन्'न्युरस'प्रम् सेंद्र'रे'ळन्'द्र'क्रस्य न्याने हेन्यु सङ्ग्रीयायः सुत्राविंग्वर्यस्य स्वा विद्वति । विद्वति व्यापस्य धिवा । विरामिक्री हे छेन् संधिवा । वा चंद्रम्मे वा वा ने वा वा मन्द्रित्। । मान्धुन्द्रिष्या मञ्जूति ह्रसाय हिन्दित्। । यदा से साहित्स बु रे पेवा | म वे घनवामी हुल में पेवा | स वे नेव नम नम र्वे भेत्। सु में न्यं केंग गर्डन या भेत्। । तु में नहें दात शुका हुण में धिव। श्रिन्वंन्न्यःक्ष्यावेधिव। ।नःरन्रनः सुन्धियः क्षेत्राधिव। रन्दे ग्वयायग्य गर्भे वयम् भिवा । १२ छुन् ग भेव १ व्या स्

मृद्धित्वाव्याः स्वाव्याः स्वाव्याः

**४**८.५.५४। । **४**.५४.३५.५५५५५५५५५ ।इ'वेर वर्ष धैयः चन्। त्रु। व्यान्यस्यार्थः हेन् द्वात्री |नतुन'क्ते' व दे অৰ্ম'ন্ত্ৰ্ব্বাহানহা | ने.पा.से.ट..घू.मे.चंचया | ने.ने.चं या.हे.व. हुँग'रा'८२। |ेर'पा'ब'क्रेंगब'८ हत्य'रा'इयबा । यग'बचें अे लाङ्गापात्र | निषातर्भन्यसम्बेरान्स्यस् । द्वे साक्षे हेन देवराय'८५। । **वेस'ग्रुट्यायस**'गुव'८२'य'**क्रुय'दस'**छग्'८८'राङ्गे**र** ন্শু শ্ৰহ'নু দুনীৰা ष्ठिन्पर सुः अं ने बाजन सु गान वाइन वाजवा *ଵୣ*ॻड़ॱढ़ॕॻॱख़ॖॿॱॹॖॖॖॖॖॖॖॖॹॱऴॕॻॱय़ॱख़ॖय़ॱज़ॹॕऴॹढ़ॖॹॱॻॾॣॕय़ॹय़ॹढ़ॎऄॖॱॄॺॸॱॱॱॱ Nश्रञ्ज्ञेब्प्यरायुरार्हे। । अराह्मेपर्व्वाकीलारश्रापाने केन्द्रराह्मेंद्रश कु इंबरनु'यार्चे दाप दे'कें। धाया के द' व्यं विषा चे प्रसाद श्वाय प्रसाद है सराचेन् चैन ततु वृद्य ते स्वर वृचे व्यवः यतु वृद्य द्या **प्रत**्व वृद्य ष्टिग्वीशव्रत्रेद्धारहेंद्रराष्ट्रिन्न्यायराष्ट्रेन्पायश् नेन्त्रीशवाया त्रेन्चे: ररेते देवपा ग्रेमे ने रहरा द्वारा प्रवासन विष्या करा । प्रकेष विषय ब्रॅं बन्ने इतार ब्रॅं न्यां के हु वहा गुन् से राया ने पाने वा वेत्र'त्'इत'पर्या परः ८ तु ग प्राज्ञे प्राप्तरि गुरुष् क्षु ब पा विषा गुप्तः हे ग स्य हु का पा सामा <u>चेर्राह्म ने'वयाविर्ध्वेते'च'याच'यर्ग्ये</u>व'प्यादक्रंप'न्य्याहार्य ऍव्यन्व्याक्षांनेव्ये असन्यन्त्रायार्ज्यायार्ज्या [म'न्यानदे: च'र्जुष्यं के'न्व्यं के'न्या होन्'के'वर्ने' प्रवाकि पःविग् नेवा<u>चेवाच्यायाव्यायाय</u>्यवायाया व्ये हिन्दिन्दित्रिव्येवयावियावियाविन्देर्नित्व्युत्ति न्यान्य २०४वा क्षेत्रच्या विकास स्थान स्

हे मुः अः इवरायाञ्चन । तहयाया । भ्रेरायन पर्दे न उन् ग्रेरायम् प **जू** न्वें त्रा | बिद्धेन् ग्रीकाम स्वापकान्त्रान्त्रात्रा | निर्माणीका पद्रवाचवानेतानेतात् । । ८ क्षे वे न व व त न व के व न व न न्याया मृत्या वर्षे प्रकेष वर्षे प्रकेष वर्षे । वर्षे वर्षे प्रकेष प्रकेष देन्'अम्बा ।कॅबावेन्'कॅन्'पदेखन्वन्त्रा ।वॅब्'बॅन्बन्द्रां न् महुत्रामहुत्राव्या । सालेन झून पाने र रेन पामिया । महून प्राय मुद्रेशवेन् श्रेंबहवशाह्य । न्यान्यत्वेन्त्र्यं न्युत्रान्तुत्य वर्ष। | नृ मुः श्रूपः पः तृ त्यापः ने रः पे न व्याप्तिया । वे यया हे न मृद्येक्षेत्रचित्रम्भक्षात्व विस्वराधित्रप्रम्भवस्यग्रम्भवस्या विसर्भेत हैं ब्राप्ते र देन 'स्वाविया । र र खुश कुरान वे र खेल होर र [तुःरेग्'राते:ब्रितुःकुरःग्रॅंशःग्रॅंशःव्रा |तुःश्रूपशःप्रत्रा 51 न्रस्य देर देन स्वाविवा । चुर विन् गुन्द न तर र य दा <u> इश्चापथात्र्यस्य राज्यवाद्यपद्यविष्यः । व्राप्तस्य व्या</u> वार्षिय। विवासुप्तयुर्वे देर्पाय। । नर्देगा ह र्सेर्प्य सुर्वे ग्री:८हेबापाया । क्षुत्राश्चरायक्रें ८ हे त्रायहे गरायहे गरायया । कं कं दिनवापर देन 'अंबिया । तुर महाय श्रेर में प्रा है 'रा। । दॅन्ष्वयालुब्यरप्रहेग्पहेग्वय। । इ.विषयत्यियप्रसेन् वार्षिय। पर्ने क्रूर-एडे रखेर वर्क र परन्तु। । यहवा नवन

**री**यराग्री**: घट'ग्न'या** । त्युर'वेन'र्ह्यंगरायहॅन'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र'युत्र मर्केन्पातस्यापरादेन्याविया विस्तरानेन्वस्यान्य स्वाप्ताया । **बिब**'बेन्'**यै'गे**'यह्य'यह्य'ब्ह्य । । 🗦 ब'হ্রিঝ'র হী'মম'নিন্'র'|বিশ্ব। । **इ**ंदारा हेद 'ग्रें इंदर 'इंदर है। | दिवा न शुक्ष दिवा थे शुवा शुवा दिवा | म १२ वि संभित्र हिन् स्वार्थिया । म १५ वि से स्वर्धिय हिन स्वर्धिय | ग्वेद्रप्त्राँ हुग् रोबबा ठद् प्रमुद्रब प्रमुद्रब द्वा | वे प्रहेरा **3**1 ষ্ট্রিদ'নদদিদ'অ'রিঝা বি'স্ক'ঝার্ঝঝাট্রাপ্তব্র্বাহ্রা ८ग्:ज्ञून्'ल्याचग्रल्यात्र्या । वःस्रशः क्वेन्'र्र्स्यनेन्'स्याद्याः । म्दर्भः द्वित्र्त्वेद्रप्रदेशः स्वात्रात्यः । क्वित्रं स्वतः स्कुत्र प्रस्तुत्र व्या । महि अन्महित्र प्राप्तिमा । मि तरम् श्रुव्य तुर्मे क्षें व्या । ग्रम्बर्गरग्रम् ग्रम्बर्गः ज्ञान्यः व्या 145 म नुवासना सन्दर्भ विवा । वेवाम बुद्धाराया मिन द्वारा ह्मन प्रति शुर्रि हे पर्युव श्रीता रहा प्रति व व व व व व क्रॅन्पाबरानुगुरामक्रेदायगुरासुदासुकाळ्यावारामञ्जूपवापदीतरा **धवान्यन्याः देवानम्यवानास्यतः या। ने इयवान्ने वन्यवाने वन्याः** मान्दिन्द्रो मन्न्द्रवर्ण्यस्त्रवर्ण्यस्त्रवर्ष् राज्यस्येव। तक्ष्माश्चराष्ट्रं चेरायरे सव्तुर्वत्रम् गुरुत्वर्षा । सम्ब्राया इवकात्मा खुन्द कताया । विन्याने कावे न पतिने विन् द्री ।इतात्र हुरू स्थित् मृत्यायम्या । ज्ञवाष्यस्य नार्यः

र्धः संभा । इतार् दुराराधार केंदारी । विवेर रे वितार् में वापा ।इतातर्वे रः व्रॅन'त्'त्र्जेत्राञ्ज्ञा । त्र्'वशान्द्रान्त्राचिः 13 ग्नबर्गरग्वरी विरव्हार्श्वरण्यर्भाता श्रित्वरेवर ग्रेरप्रश्यदी । तहेन्यसम्म्यान्त्रम्यस्यान्त्रम् । ए न्द्यस्याष्ट्रस्य व्याप्ताः व्याप्ताः स्वाप्ताः स्वापताः बळवरावानी क्विंग्डियार क्रिंबराईयात्पनी म्रायदे ग्रायक्ष म् ग्रायदे । । विष्यका व्यक्ष म् मुम्का विषय । सुक्षायानवर्षेतिः भैनः रकानि । निने निने तहः दक्षानि क्षाया विषा শ্ভীন'শ্ভীন'বেহ'ব'শূৰ'শ্ভন'আইন।। উঝাশ্বভনেমান। धुग<sup>:</sup>धुरःतञ्चरयाराताह्रंग्याय्वात्त्रन्तः विताधुरः विरा। ग्ववः ह्रयया ग्रैकान् बोन्नदे न्यान कराने ने पुरासी । यन हे नई वाके वासे ने हे न इ.श्रेंश्वराक्तीं क्रिंदितिते। अट्टेंदियं याक्री क्रिंदारा क्रेंद्रा अंतित्ता श्रेंद्रा श्रेंद्रा अंतिता श्रेंद्रा श्रेंद्रा अंतिता अंत अंतिता अंतित अंतिता अंतित अंतिता अंतिता अंतिता अंतिता अंतिता र्दे स्रतार्थे छे ततुत्रा पर्दे छत् त्राविषा तु ये नदा है । त छैं न न में हा गु हु हता । । । । । पर्या मुलासम्भित्रां दिस्र स्पान स्वराधि सं छन्। मूर्य न स्तर गर्डं में ने बन्दी इत्यत्र हैं र पहिन गर व राधिवा गवराश्चिया न्द्रित्र्वें वेरप्तर्यद्रित्रहेन् हे द्यी की हु या न्द्रिन्या स्टार के की के द्या तात्रीत्यायन्विषाधेवाषा स्याप्या देवाकाया स्वापादिकावया <u>चेर'पर्या</u> भेद'प्प'भेद'पे'ईब'पक्कप्'रे'देशे'वेब'पर्वाईबापदी' हुर्काः हुर्परात्र्ग्या बुद्धाराया नेपने वाहित् क्षायारवाराधिवः देश'व्यवित्'अश्वेव्यते'स्'वित्ते'य्याक्ष्यंग्न्'त्यंष्यत्वे व्यव्याः व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व पश्चत्र'त्र'वित्र'ष्यत्'त्रत्व देन'त्रवे त्रक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्षेत्रं त्रक्षेत्र्यं व्यक्ष्यं व्यक्षेत्रं व नते'अशुर्वे वित्र'वश्चर्यं वित्र'त्र'वे त्रवित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं तित्र'त्र'कु'व्यक्षेत्रं तित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं वित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं वित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं वित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं वित्रत्यं वित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं वित्रत्यं कु'व्यक्षेत्रं वित्रत्यं वित्रत्य

धर्ळे के द'र्स' विवायवा वा विष्ठं क्ष' यह का यु मा के विवाय वा वा विष्ठं क्ष' यह का यु मा के विवाय वा वा विवाय न्मॅन्यळॅग्'न्ड्अर्यंतन्दे'रे'क्कयःकुन्यंतेन्यंत्रम्थन्यःवय। ।ने'हुन्यः गुर्नापुरन्वं श्रेष्वर्त्रस्य वर्षा । त्यां क्षेष्रायदे स्यायदे सुर्धे देवा रवस राय। दिश्वरागुन्युन्यः वीत्रायवाया दिसार्वेदातहरा न'तर्ने'स्यापितेवहें रें स्वार्थाया |ने'साशुप्पन्तह ने के बन्दर यग्राया । ह्रुद्रायम् त्रुम् त्रुम् त्रुम् त्रुम् त्रुम् त्रु केव कें सुव में न 'तुः वे द्वं न व न त ता । त तु व विवस व ने त त न प न्त्रा | ग्रह्में म्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिम् केव्रक्षं ज्राध्याय शियाविरागान्या । परान्ति गव्याव् क्रे क्षे वया वि'यं कें वे पन्र रेयं वेर ग्र त्या वें वे वि यर स्थान द्वयान्य के तथा । वार्षे प्रमुख्या हिन्दे के स्वर्थ हिन्दे के स्वर्य हिन्य त्रिंदर्वात्रिः क्रूट्वा श्रीकार्देष्वा यापाया वाष्यवा । श्रुप्त विदेशे द्वारी विदेशे रेअविदःग्दरा । केंडि वरेश्वराद्यवादरप्रहर्ष्ट्रवा । स्वायन्यास्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रम्

### 首本,五,七世,五十

व्यं गु'द्र। हेपर्डव्ये स्वाप्ताने के स्वाया व्यं प्राप्ता हिप्त व्यं प्राप्ता के स्वाप्ता के स्वाप्त

रेवर्ष्यविष्यवेरः वृष्ट्वर्ष्युवर्ष्यविष्यगुर्वा । वृत्र्रं वृत्रं विष्टेर कॅंब् | रूर्-दुन्निन्द्निर्मित्र्वेनक् ।हिन्किन्द्रिंद रयातुर्श्वेषाः इयवा । सारावीः वयवान् वारावेशायाने । हेररररवा मने क्वेन भारत विकास के निर्माण क मिन्। [मःभिन्नवृश्च क्वांभेव पाने। [मग् नव पर्यान व्याप्त क्वा परिक्षा द्विपरेपञ्चित्रपरित् । ह्विप्रमेष् न्यत् चेन | ने हेश र स्था सु । या न द न न न त व न स न दे रहारा इयव। । गरहार दे हिंद छैका ने वास ने वा । गरहार दे भव्यत्र हे वें वर्षे | विर वशुव्य तुर वीय वें व्यवस्तर । वनुताहु नहता है देन तहर पन्न वर पर्या है देन मब्जेलाकी तरस्र ता । कब्दि केवान गर हेन मध्या । जेन मायब्क्वन्वन्य्वन्यवित्या वित्वन्त्रीः स्वत्रुव्युत्तिवेयवा वित्वी इग्न्यस्तुःहग्रुत्रया । तहत्र्र्न्थक्र्न्भेव्रहग्रुत्वरा । ने हु मुक्य कु च न पर तहें बकार दे ह न का दि न न का वर में कु न न विविद्या । अर्हे गाञ्चर कुवाळे वाळे गाया । श्रव वुवादा रुवा व्यवस्ते लक्षे। निक्षः ब्रवःगन्यक्रिके सहिन्धित। विन्दिक्षितः ग्वयः क्टे म्बामिया । क्रिन् द्वे प्यामियके प्रमान्यमा । प्राप्त प्रमाने स्थ केब.री.४ ह्व.तप्ति। ध्राचिश्वरवत्वा प्यात्रवक्कृत्वेव म्रायामितिः द्वानित्रः प्राया देतिः त्वानु स्तर्भे व्यात्रः स्तर्भा । विमालम्बाद्याः प्राया देतिः त्वानु स्तर्भे महास्याः स्तर्भा ।

मेश्वर्यास्य विकाल प्रस्ति स्वाल प्रस्ति स्

प्रस्ताक्ष्में स्थान्य स्थान्

राक्ष-प्राथनवर्षे । विश्वराद्यक्षेत्रहेन्द्र्यस्य स्वान् । र्ग <u> রি'নঝন্মুখ,৬,৫২,৮২১। । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১৯৯৮ । ১</u> पतृत्। |<u>५.५२.५५,५५५,५५५) ।५.५५,५५५</u> स्यत्र्युत्। वित्रक्षेत्रहेन्यां क्षेत्रां । वित्राचतुन्याः पर्ट्राप्ता विक्रे में प्रमान के स्वाप्ता के स्वाप्ता के स्वाप्ता के स्वाप्ता के स्वाप्ता के स्वाप्ता के स्वाप गुशुन्यायय। यान्यस्यायाञ्चयायीय। वीप्राचित्राययेव इस्या र्हे अप्रोत्ते प्रति स्वरापान । यहाँ प्रति । स्वरापान हे । स्वरापान हे । स्वरापान हे । स्वरापान हे । स्वरापान ह पर्वुवर्श्वीःवताव्या वेष्यभिवरम्या वेष्ट्रभाक्तीः नरः वाववर्षारः वी रॅन्'होन्'त्रर'ङ्गॅनराके'हे। के'रेन्'अ'तरे'शेर्ड रेग् राग्डिग्'यसन्ते' त्रङ्गवापात्रहेवापात्राञ्चवापाराष्ट्रपारात्रत्व राष्ट्रावे विष्यात्राच्या स्थापश्चर्व्यापन्तरायभ्रवयायया स्वान्ययान्त्रेयराया भैग'रेब'यगुर'दर्ने'गहादबाँह्या ।

मने क्षेत्र जुन स्वज्ञा । दव स्वर क्ष्य प्रस्थ राज्य वा **भव पर्याम् श्रुर अञ्चल पर।** १२ विर प्रशेषक नेर व्यव श्रु ন্ত্রন্থা বিশ্বংইব্ভব্স্ট্রের্ভ্রন্থাট্র্রা वैबाह्यरम् न मुन्दर्भ विकार दुर्ग मुन्दर्भ । त्यरश्रुप्यवस्थां हेर् श्रेय | | द्यद्श्य्यहर्पयक्ष्यक्षयः केमबन्द्र-प्रमञ्जान्यम्। द्विग्यक्षमञ्जन्परान्यन्यम्। ब्रैन:दशवुरायकाब्रैन:हेर्सुवा । गुरेग्धरायस्न्यायकार्वरः ब्रुपः वर्। अव नक्र नर्जे वर्ग न क्र क्र क्र क्र निया विष्टि क्र वर राप्तगारदेव कवा श्चिरिये वर्षण हु ज व द्वार विवास । पर दे न्यागुर्भूग्क्याचेव। । १८के प्रयाशितहेन्या पूर्वर्षाया । तर्रम्यवृष्यस्य स्वयं । विकेषित्ययः सञ्जेष्यम् । क्षेर-दुबावर्षेर्पयार्ज्ञेद्यायात् सुरुवा | विवागशुरुवाव्या हे पर्वुवः न्यंत्रञ्जयात्वाप्नवान्तरान्यविष्यायात्वा ळेळा च दुरि वर्ळन्यं विषा **উন্**যান্ট্র্বার্ন্ ব্যাব্যালালার বিন্তার বালকুলাম্নর मार्रःक्रॅवराव्यतुत्रावर्ष्या यात्राहे चर्डन् क्रीहुरातु स्नाहेरावरे हु प रशकुरायायकुर्वत्रश्चिरायाय। रशकुरायश्चरहेशयकुरी स्वाय म्यन् हे पर्वत या रहा पा इवरा शिल् पा स्वार है । वर्ष इवराया वर्ष ग्नबस्तिग्गव्दायम् । वृद्यायम् हेर्न्युव्युत्रं गुरावव्यवेदः म्रम्यरंपान्ता रसक्तायात्राम्यात्राम्यात्राम्या ग्रवक्षर हुग्रदि वंगुर दु ग्रुटकाका।

*सु'गराव''क्क' रुव''क्के'क्रॅब''पान्म*। क्विमातुकासब्दाक्कीमकाञ्चमारा । छिन'हॅद'र्झे**ञ'**गदेश'ग्रीश'न्तु'यर्दन'रदी । तिनैन्न्तुग्र'ग्न्द्र' न्दः रहाराधिकः । द्वाकेदः दुः दह्युरः दह्यः दुः दुः स्वादः । द्वादः देवः न्निग्तर्भेक्षरः व नुका केन्यावन। विरक्षिन्वर्भन्व हुन्से षिव। | <u>५ प्रत्यत्य व्य</u>वेद : हेव : व्यव्य : व्य हुद'रग'र्रे भें ह्या । र्'र्म्बर'र्देद'यर्द्देग'र्रं द्या । हें बर रहते'सकॅन'राप्रव'क्न'ला । हिन्'लासक्रलाहबकारहरें ब्रन्। । मयन्वेद'यकुग्निंद्रा । त्यानिष्ठेरतन्तिः द्रा **इ**बाळेबावेच्याबादर्भनात्राची । पत्नाक्षेत्रञ्चरतुः सहिरादर्भना धैव। ।तुःमःभैक्षानक्षुन्कावःबर्द्यन्यभिव। ।शैः।माराःवृव वः कुलर्स्सेव। | विप्तालन्द्रवादम् स्प्रिन्दि । इरावद स्या ब्रॅंबियें वर्ष | ब्रंचिन् क्षेत्रं के न्युं तर्मुं व्याप्त विष्यें के निर्देश के निर्वेश के निर्देश के निर्दे त्रञ्चरयायेया । यः वृषारेग्यिः सम्बुरायरा । यद्य स्व शेः रेग'यायागर्हे गरा'रा । यत्राग्री श्चग'श्च य श्रेव 'अर'। । प्रायारे मात्रेंग हेव ग्राप्त | प्रश्लेव श्रुप र्ट् प्राप्त स्वराग्रा | ब्रैन्स् हेळव् रॉक्षगृव प्रश्चनकाव्या । पिन्यन रायप्रति हेन्स हेवः मुना । पश्च परिश्वेद्व यामन्य परी । वसु प्राप्त हन्य अः हुपः अरः। । समाग्रेः श्रेदः येन्द्रह्येः केदः ग्रानः । हुनः रोगः <u> বন্দ ব্রেক্সক্র্যার্ড। । নুর্মান্থর জীপ্ত। । শৃত্র</u>

न्तर्धुराधुरान्जुन्यप्रवाद्या । विवादित्यर्थान्ये नुवाधरा तुर्वित्प्रकार्र्ययेवाळात्। । भावायायतारत्वीत्वियावेवायात्। । ग्रुअ'स्व'त्र'र्भव्यञ्चाअ'न्र'। | ई'हेश्चर'र्भव्ययान्रेंवर्या । क्षेश्चें न 'शूरा' बनद रे बे बनु द 'परे । । के बा मही न में न बार 'शु व में भर्। । अँथाव्यवाहें गरा नाथानन् । अन्। । श्रुन खुन खुन इत्रबाध्ययानेव मित्र। । न्याळेग हेंन् भाषा यह महावितः। । यहितः ह्मानु दु इया ने श्रूपाया । अव प्य हु प्याप्त । । वृत्रकारिते श्रीया श्रीया विकास निर्मा । स्थित । स्थित । स्थारीय । स्थारीय । स्थारीय । स्थारीय । स्थारीय । स्थारीय । यते। विवन् ज्रामिन विकार यदे। । वत्र अं केंग्राकु द्विर संन्ता । यह्ता बुग्रा हुन्य अ होन्'अर्'। क्षि:'दॅरि'धान्'र्यन्'वेद'नन्त्। ।अर'ह्नन्'व्यक्ष तुःर्श्वेन'इबराग्रीबेबराय'वेग । देश'ग्रुन्त्र'यब। हुग्र'त्र्य' इयराकुं द्वे व राज्य प्रताप मान्य स्वराकुं व दर दशम्बिद्र'प'ञ्जम् श्रेरम्बर्'नेर'प'इबक्यिश र'श्रेष्रप्र'त्राशु'र्यर' ग्नराया पर्गार्त्वे नवन् इवक्कि त्रें न्रात्ववकापिते वा ग्नर्वका विवागुरविद्यायस्य । विद्यायस्य । विद्यायस्य ।

क्षेत्र'त्र'त्र'व्यंत्र'त्र'त्युक्ष्य'इस्यया । विपायते'पक्ष्य'यं

स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यान्त्र स्थानिक्ष्यानिक्षयानिक्ष्यानिक्षयानिक्ययानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्ययानिक्ययानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्ययानिक्ययानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्षयानिक्ययानिक्ययानिक्ययानिक्ययानिक्षयानिक्ययानिक्ययानिक्ययानिक्ययानिक्ययानिक्षयानिक्ययानिक्षयानिक्ययान

### न्नन्वस्त्र-प्नन्नन्यः छै द्वर

त्तर्त्त्रभ्रत्त्व। श्रेन्वन्त्रभ्रत्त्व्यः स्वात्त्रभ्रत्त्वः स्वात्त्वः स्वात्त्रभ्रत्त्वः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्वः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्वः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्वः स्वात्त्वः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्वः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्वः स्वात्त्वः स्वात्त्रभ्रत्तः स्वात्त्वः स्वात्तः स्वातः स्वात्तः स्वात्तः स्वात्तः स्वात्तः स्वात्तः स्वात्तः स्वातः स्वात्तः स्वात्तः स्वातः स्वात्तः स्वातः स

हुन्, प्रचित्रं स्वार्ण हुन्, यद्मं सुक्राव्यः विश्वः स्वार्ण हुन्, यद्मं सुक्राव्यः विश्वः स्वार्ण हुन्, यद्मं सुक्राव्यः स्वार्ण हुन्, यद्मं सुक्राव्यः स्वार्ण हुन्, यद्मं सुक्राव्यः सुन्, यद्मं सुन, यद्मं सुन

मॅतिःकरःयमस्यान्ते। प्राःसर्चन् प्रवितः स्वाः हेः यहं व रहे स्वरायः व स्वरा

्राच्यात्रम् व्यक्तिस्यात्रम् व्यक्तिस्यक्ति । वित्तिस्यक्तिस्यक्ति । वित्तिस्यक्तिस्यक्ति । वित्तिस्यक्ति । वित्तिस्यक्तिः वित्तिस्यक्तिः वित्तिः वित्त

# न्नेत्र'ह्रम'झ्र'न्म'लेन्स'शे'त्रस्थ छे'ऋ्रम्।

दःशंगु'द्य। हेःपर्ड्व 'श्रे'श्राप्तापे 'हेन्'श्रान्ता संव्या अर्छ्य।

हुः न्न्य दे 'प्रव्या प्रव्या प्रवेद 'हेन् स्रें न्न्य स्रिक्य स्रे हे स्राप्ता हे पर्व्य प्रवा स्राप्ता हे पर्व्य प्रवेद 'न्न्

सहस्य श्राप्ता प्रवित्र हे स्रें स्राप्ता है पर्व्य प्रवित्र हिंग है । न्यन्य क्रिक्य स्राप्ता है पर्व्य प्रवा स्राप्ता स्राप्त

द्यात के त्याव का व्याव का व्याव का व्याव के व्याव के त्याव का व्याव के व्याव का व्याव का व्याव का व्याव के व्याव का व्

द्रंश्लेश्वर्त्त्रां प्रतिन्त्रम् हेन्या । श्चिः मः नः तिक्रिः सुः संप्ति । विक्राम्यत्रम् । विक्राम्यत्रम्यत्रम् । विक्राम्यत्रम् विक्राम्यत्रम् । विक्राम्यत

स्वाया व्यया श्रुं द्वा । श्रुं प्रस्ता । श्रुं प्रस्ता प्रस्ता । श्रुं प्रस्ता व्यया व्यया । श्रुं प्रस्ता व्यया व्यया व्यया । श्रुं प्रस्ता व्यया व्यया व्यया । श्रुं प्रस्ता व्यया व्यया

स्या लट्च्यं स्या म्यादिक्षणः स्या । स्याप्ता स्या लट्च्यं स्या । स्याप्ता स्या लट्च्यं स्याप्ता स्या

য়्वर्रात्रा वेद्रत्त्र्व प्रमुखाकुत्रा मुन्ना मुन्ना स्वर्णिक्त्र स्वर्णिक्त स्वर्णिक स्वर्ण

व्या विद्यान्त्र विद्यान्त विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्य विद्यान्ति विद्यान्त विद्यान्ति विद्यान्ति विद्यान्य

म्बाराक्षः क्ष्याच्यात्रः तत्त्वत्। क्ष्याच्यात्रः तक्ष्याः व्याप्तः त्रः व्याप्तः त्रः व्याप्तः त्रः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वय

ऍ'व'ऍब'प्रन्ग'नेश'रसुम'ठव। । तक्षे'नदे'सूग्'नस्यांसुःरे' | त्र केषात्र के प्राचीता प्रति है। विश्व केष নুব। य'व। । धुन'र्यते'र्द्र ग्रीकायक्षु'काबेन्। । न्यतः र्वेकान्तानः बुन् रावेत्। वर्दरम्ययान्यु वित्युस्येत्। विवस्यासस्यः ज्ञा न्यूं नाया वेत्। वित्यामयातु ना सुः या वेत्। । न्या प्राप्त कृतः सम्प्रत्रा । सन् संव रेग्ना सन् । प्रा मॅते'स्याम्हवराम्बरा'ठन्'न्ह्रेन्। । मद'नु'रे'नते'ङ्कद'मकान्ना । क्रुॅंप'तृत्रे'नदेशॅंपॅब'र्वेश । नक्रेंब'श्चरादेशंश्चर'यर। । यह ८८.व १ वर्ष प्राप्त वर्ष हिन्या । ८ वर्ष वर्ष है वर त्यु पाय हर् वतर्। विश्वायानि मन्दै दे अक्षाया दिन् श्रेष्ट्रण रंग ने यस्य व्यक्ति । वायान्यत्रः स्र स्थान्डे। वायाः स्वाप्तरं <u> ६८,४५८। । पापाचकार्टाच्यापाञ्चल। । ४८. वृकायस्य वारान्य व</u> मुक्ष क्षुर्। |रोबका प्रहे पायर प्राप्त मुक्ता सुर देशे। | गूँ न्य चन्नर संस्त्र गुरु श्रुवा हैं स्था | विदेश च देश श्रुवा संस्तर श्रुवा महिला है मञ्जूर। वित्र्यं चेत्रं कें विं मण्कित्। विः मर्चित्रं स्त्राण्यः

1R Kar सब्दायाञ्चन् क्रिन् श्चन्याञ्चन् । विवयः कर्त्रत्याना वर्षेत्र ह महे नित्र क्व कें के हो र अर। | दे तह ते तुना न के न हिर के न न्यापते भू के बाया सम्बाधा । मून मैका सब्दारा धेन पा से बा तके.तृषा शेत मुन्दियाने 'न में या । तके 'मन शेत केन स्थाने या हिन्। । ठेश'ग्रुट्राप्या ग्नेद'हॅर्झ'र्छश'र्झर'तुग्राप्याद्वित्पह्राप्र नर्ज्ञेबरामसारके विराधमाञ्चानिकामरा शुर्रा | नेते के विवादा से त्राजा गुरा इ.पर्वेब.लप.शंश.ध्या.पे.शु.पर्वेबय.२८.। ज्या.पेश.हश्र. ग्रन्तिवीयान्त्र्याचेन्त्रच्याग्रेयावी विवासित्रवा चति'चन्त्रात्मानुत्र'त्र'त्र'क्षे'यन'ॐष्वराळंळंत्रे नेचर्याय'विषा'ळॅन्'य'ने'हुन्' यय। विग्राची हे य ईवायया श्री श्री है त ईवायया श्री श्री है त है व व्यवेत। देन्'के'वर्ष्यं'ग्रान्यायय। दें'व्यने'देन'न्ये स्त्यान्तः रदारेते'वार्केन् 'विद्'नु' वार्केन् 'या तस्यापान् द्'। क्रिकं त्रवातः तरेपसम्मृणसम्हित्। सेयसंक्रम्भित्यसम् चन्न्। चे हुः इत् न्त्रितुः सुन् भारतः न् भेन्य ज्ञन्य स्त्रित्। हिस न्तः सून भुनः *द्यश्रापतरायान्द्रियान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः वर्षान्यायाः व* नुग्रादशर्वाः। हेः पर्वद्यापपात्रश्चित्रात्यात्रम् व्यव्याद्याः व्यत्रः मन्द्रिया शुन्दर्भ देव विकास विता विकास वि

स्यात्रीत्वित्त्रे। केषात्राय्यस्त्यात्रत्व्याय्याः स्यात्र्याः निष्याय्याः निष्यायः स्यात्रायः स्यात्र

र्गव्याप्ते केव् के इस विभावतायाया । ग्वित कुर बेद के देतु'सुन्।'तज्ञुन्रातज्ञुन्रात्र्या ।<u>वि</u>नाः व्यारेतु'सुन्।कुन्।तदेःसन दान्नैन्। विवाद्धवार्द्रदेशवात्रवाराज्ञात्रक्षात्रीयान्त्रीयान्त्र र्र्षेत्रहेत्यायाभेषा । रेग्पितेष्ठितः स्ट्रियामुर्गायस्या । इस्तरायन्त्रान्तुः अप्टर्नियात्रा अप्टर्मा । इत्र स्वत्रान्तुः संतेष्य মি'নের্রাগ্রীরাস্ত্রিনমা | দেস্পীরারীনেগ্রুনজ্রীনীনি চ্বামানা | হ্র राजित्राची क्षेत्र के न न्यान न्यान्य । तिहेश्राची क्षेत्र ने नका | नरान्न रर्भेन सुरहं न याय दे विन खाडुन। । नरान्नर र्बेट.पी.प्रविधायुव्यक्षेत्रयो व्रि.याल्यक्रीपट.क्रियाया । चवा. ऋष्याञ्च वाचान्तरमञ्जयाञ्चला । विन्त्र स्था स्थान्तर स्थाः अञ्चर'। । विरानदे छ्वायन्र सेवायसे (सन्ध क्रियमें रा म्र्यंक्षित्राधित्राष्टित्राष्टित्राष्टित्राधित्राधित्राधित्राष्टित्राष्टित्राष्टित्राधित्राधित्राधित्राष्टित मॅर-ब्रेर-तिष्ठ्र-पितेपॅन-अकुन्। <u>श्चि</u>र-पितेपगु प्रमुत्यायेग्याये त्रुवागुक्षवाह्ना ठेकाग्युन्यम्य व्यान्ते हेप्तर्वुन

सन्यान्त्रित्रित्ते द्वार्यत्ति ने न्यायम् वित्ति विश्व म्यायम् वित्ति विश्व म्यायम् वित्ति विश्व म्यायम् वित् मियान्त्रियाक्ष्य क्ष्य प्रमानिक्ष्य स्थायम् वित्ति स्थित् प्रमान्ति स्थायम् विश्व स्थायम् वित्ति स्थायम् वित् स्था ।

न्न' वर्रू न' क्रेन' हे केन' रा' ने | हितु रन है । त' वर्रू न रा' त न यन्ग'ग्वन'ग्वेश'सुन'भाने'क। |शेवश'यक्केन'वेन'पदि'कॅश'र्ह्युन' ने विवास वर्षे श्री रहाय दहा विदेन प्रांत्र रहा । ষ্ট্ৰব্যংইঝাডৰ্'ট্টাষ্ট্ৰৰ্'মা'ই| |মি'মেৰ্'ষ্ট্ৰ্'ইব্'ইবি'ই'ইৰ্জান হ| 13 त्पर्वा विराधानित्रं विष्याने देश विव मकार्देरः गर्रे त्या १५ 'पार्य | विद्वातामा विषय स्थापार्यः स श्रेम् हे बेन् प्रतिश्वेद्व पहिंद् ने । गा न देवेन प्रश्व प्रश्न प्रति रम्'ल'त्रिलाप'म'रे'क। |रम'कुन'महल'कु'प'दे। ।उन'र्मेण' च्र'ग्रस्ट्रेर'यत्र् । ह्युंत्रस्य ह्यु'ग्रस्ट्र'यार्रेर्स ।गवर' रुवार्यर श्रेयपन्। इन्ययश्रम्यानर तत्र नयपान्। 145 सॅंचेन्'रा'य'रे'क। हिन्दिसंयम्र कुन्'रान्। विंन्यक्रं सुंत्रहुरव्ययंत्र । । १६५७ वेदान्य ने स्वा । इंदान् वुर **व**रःवश्रद्धाःपःषःत्रेःक। । तरः ८ र्नेन् 'अःश्रद्धाः सञ्चरति । [美] त्यं वे प्रवास विकास লব্য' ब्रॅं तर्ये न 'राक्रेशने। क्रुन्ये मेरा दसम् थ न **可创厂公式公** रागरेग छग हे व र स्था वरा वि र व र छ र राया हे यई व ग्री व

# रिग्वातीत्त्व्यायाई हे क्षेण्मा स्वादि वर्गुरातु ग्रुप्यात्री ।

न्त्र। न्त्यस्यान्याकोष्यस्यान्त्र्यस्य स्वर्षः । विश्वर्षः स्वर्षः । तुःहेः चर्ड्यः ग्रीस्योष्यस्यान्त्रेयस्य स्वर्षः स्वर्णः स्वर्षः ।

वृद्दर्ग्यक्ष्यंत्रर्थेष्वर्थात्राच्या ।व्वित्युक्षासाक्चेत्रत्र् तत्वायाया । तत्वायत्वा वेवप्तराव्यायायायायायाया चति देर इवरा हुव्यर इंद्या । इव्यय विव्येत् चिति दर्भा । र्वायाञ्चात्र्वित्तत्वायाव। ।तहेवाकेवाकेवाकाराज्ञन्कात्र्वेता । ८.वियायरा अपूर्वा विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य रीवरायम्बराह्नेनायतुना । त्रावेवराद्वरायतिः क्षन्यायुन ह्यत्या । तिर्वित्तत्यामृत्रेशशुक्षेतिह्यायत्। । यत्रधाराहितः ह्य तन्त्राचा विवरास्त्र इवराता केट हे क्रेयरा निर्मा खर हुग्राहेळेन्ध्राङ्गेयर। श्रिज्यास्त्राहेन्द्राह्मा でで रा है न 'या झें या धवा हो न या हिलाय न हें न ते हु 'ये या है न ने म्। प्रम्भियाक्षे क्र्याचार्त्। क्रयाची स्थानिस्ह बर गुर हैं। । प्नेद हर कें दर विषय शेष तत्र की की केंद्र हैं।

# 内部·萬丁·萬門和·米可利·田凡·瀬丁

म्याद्वराष्ट्री । ग्रीत्राच्यां व्याद्वराव्यां व्याद्वर्यः व्याद्वयः व्याद्वयः व्याद्वर्यः व्याद्वयः व्याद्ययः व्याद्य

रेन्याकुर्यन्याचित्रस्याची ।श्चित्रस्याचित्रस्याच्या ब्रुव्यक्तीकाकाक्षान्नाकान्। विवाहन्यं विवादा क्रीकारपाय क्रव्यहि। । न्भान्यश्रीदेवराहे'यानर्षेत्। विष्युताश्चररानदेशेष्यागुत्। । ने शुर् अन्य न्र द्रंवाय विव न्यं या । या न्य न्र अव या के न्न्य ।। पर देर पर तहेग हे ब कें अधि शहेग| | त्रशं प्रगुर है : श्रू र श प ते | तिस्त्र न्या | क्रियान स्वाया स्वाया न्या है । ने'यम'विख'त्रात्राम्यान्यान्यान्यान्। । नम्मेन्यायम्यम्यम् विष्क्रियाः |मॅब्रानेतुः श्वन् ज्ञान्यत् क्षेत्राने नः ग्रन् । व्रेंब्राह्मा खुन्य **५८: इंतरप्र विवर्**म्मेया |दे'यम् र्दे तहस्ययम् वर् र्रस्यान् तहेन हेन क्ष्या क्रिया श्रीया । वाह्य हिया श्रम्या देश स्त्रीया विवादा संवादा सुवादा न्दा संवादा स्वादा स्वा यर्दवातात्वात्वात्वा । प्रस्तेरायमात्वेषाः हेवाक्षेत्राधीताञ्चेता । विन् के व् श्वन्याय दे विन कुर पर। | विं व् वा ख व व व व व व न्म्या विंतुन्यवर्थायन्त्र्यत्। । परनेर्यपनंतिहेग् मरावियायां मार्नि में भी हिंदी मार्मित में <u>पहिन्या । व्रिंक्शप्रज्ञ</u>न् र्श्वेत्रायात्र स्वत्याय क्षेत्रया । श्वन्यां ॲंट'तर्नेन'न्ग'न्ट'र्यन्। ।त्रिरंबर'र्यश्चम्र्रंबर्न्न्नंतर्मुन् महुव्वव्यत्युम्यायाञ्चेयव। । क्षेत्रां तुव्यव्यव्यव्यक्षेत्रव्यव्यव्यक्षेत्रव्या सन् राष्ट्र स्पान्य । ध्रान्य क्षेत्र स्पान्य । ध्रान्य स्पान्य स्पान्य स्पान्य स्पान्य स्पान्य स्पान्य स्पान्य पर्या | विन्दानेन् र्झेन्नायान्स्य व्याप्तः श्रीया । श्रीक्रं यान्तः त्रीय व्या न्रयान्यन्। । तन्न्रिन्धरम्ब्न्याः देश्कर्षाः । अस्य न्यताक्ष्रिं ने न्याया न न न न न न में की । तु न म क न ने में ये या न न म न्न्यारात्तिवान्त्र्र्यारायया वावतःवनःस्तराश्चान्यनः ह्ये प्रति स्वर्ता स्वर मं वर्षन् क्रूंबरायां वृद्धा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षे इत्या रग्याराम्यक्यानुप्रम्या ह्यामायक्रियक्वीयाने। सेययाक्य ग्रॅन् कुं बर सं प्रकृर तार् कुरापति न् तुराव कें व्यान व्यान व्यापता पात पा विवानीकाग्रुम्। स्वाद्यामाकेवामाव्यावामानम्म सः मर्स्याच्यायाक्यावार्र्राराखुगार्मेराते। तहेग्बाववाञ्चराळेवारीतिहेव हुन्द्रवायुग्ळेते'तुवाहेन्पते'पराय। हे'पद्रवाहेवाह्यव'टपायन

र्में प्रक्षियं विद्रां सुग् त्याद में पायह दाव शक्य में श्रामुद्रा खुपा त्या या प्रामें दाः । ब्रेन्ट्रे के व्यार्थिय वर्षे न्या दे प्रायत् । 31 क्षे'यात्रिंस्पतिः सेववा उव्दाह्या । वर्ष्यति त्यायायरः द्वा ५८। ।यार्च्यम्यार्च्यक्रिंर्रहे। ।यस्रेर्झेट्यक्रिं র্মন্বালা বিদ্বানমান্ত্রীয় বার্মন্ত্রালা বিদ্বানা रेळेन्द्रा अर्बेदे ब्रॅन्थ्य व्याया । जुन रेप्ट्रन या अर्थ दि है सुन हा या हिःस्र रहेन् कृषा पतिः हेषा खष्या । कि.रे हेन् विषा पी यहः खपाया ॥ कु. ५१% क्षेत्राचा न ज्ञान क्षेत्र क्ष युग्राया विग्नेरिकेक्वेरिहेरीकेर्ययान्यया किर्द्यायक्वियय इंह्याचरिया है अवाया । के ते होत मेया च ते सें व का या धिशः ह्युन् तर्भन् प्रस्ता विष्यु हा स्वादा वा विष्यु हिला स्वादा वा विषय हिला स्वादा वा विषय हिला स्वादा वा व क्रीप्रद्राया <u>दि</u>षारेप्रण हिंगिर हो हो स्थाप । हिप्प्र हो प তৰ'গ্ৰীনাথাৰ্থনা | খ্ৰীমান্ন্ৰ্বিটাৰ বিষ্ট্ৰামান্ত্ৰী বিষ্ট্ৰ बर्चर-वर्रितरेग्या । श्रेगःश्चर द्रवर्गः इव्विरः स्ररः पारस्य । थ्ट'| क्षिंय'व'रे'विंद'क्षेपवर्षाश्चामनेष्य। । प्रयाय'व'त्रा'यारे' নশ্বংইৰ'ৰ্মন্ত্ৰ বিই'ৰ'্ইণ্ট্ৰ'্ড'ৰ্ম'ৰ্ইমা বিই'ৰ'্ त्रेन्।हेन्क्रेम्पं | त्रेन्न्न्न्न्या | त्रेन्न्न्न्यायकरान्त्राय वैश्व हो हें हे राय हुँ या | वेश न शुरुष राय | रका हुर पापर ऄॗॕॱज़ॹॱॸॣॸॱॸ॓ॹढ़ॻॖॸॱॸॖज़ॱय़ॕॱ**ज़**ॱढ़ऀॸॱढ़ॺॱऄॗॹॱढ़ऀॱॺॗॖढ़ॱऴज़ॱॺॸॱय़ॕॱॸऄख़ॱॱॱ

विन्। श्रायम्बर्धः । विन्। श्रायम्बर्धः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्यानः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान

पराखुन्यान्न । इस हिंगानी मुन्यायमा भारती । पराया गहन छी इं र तु त हर तारा है। । ये द रा बे द भी दे ता हैं ही द र र र व। ब्रैगा'रुव'ता'त क्रे'न'ऍन'ब्रुस'बेर्। |देन'रून'रुस'व्हुन'ग्हेस'त'व्हे' न्द्रात्मान्नेन्ना |द्राव्यात्र्य्वत्रेन्त्रात्र्यत्र्वत्रेन् हरीं हर्या पात ही पात में दी विदेश पर होते हरें हिंदी हरें ते हैं विदेश हैं षे नेशक्तिक्षेत्राक्षेत्रायात्रस्त्रा । विक्षिण कवायात्रके पार्यपाञ्चयावेत्। । रहारे र बाह्य विकास है वह बारा विवास । अंतर है दें द्राह श रेवर्षे विव्यस्यकी ह्याराष्ट्रि रेखं विराद विक्रिक्षे न्रांत्रां के । यद्द्रम् नेष्यवद्याद्यं देर्द्रम् । विस्तिन् उद् तातके न प्राप्त क्षेत्र वेत्। | रूप्ते र बाक्ष म विकास वे निर्मा स विवेवमा श्रि.अ.स.मी.विन् द्वाया विवादिन अपू.स.न. नन्य | सिन्द्रं त्रेनियं सम्मन्द्रम्य । श्रु सदे विद्रास्य कव्यायत के निर्दार कुराबेन्। । निर्ने निर्दार महिनाय है ग्राम व्यवेगवा ।दिवर्ग्यदेश्च वर्षे वर्षे निर्देशवा ।देवायदेष्ठितः इंट.मुतारेर्त्वा विद्वितानते च.ताग्रीनः तम्बही । गुर्वेश थे र क्तिञ्चेत्र'त्रं दें त्रेत्रवा । विष्ट्रेग्'ठव्'या तक्के प'येत्रक्रय वेत्। र्रे रेर्स्ड्रिं पहें स्था है ज्रामा निष्य । तिष्रेण कण्या है दें [ध्रेंअ'मन'कु'तर्य'ह्नन'ग्रेन्रेन्र्ना न्न-जन्यात्रके। त्वुर्ने ग्रूर्ने द्वर्ते त्वर्ते वित्रास्त्र हे । वित्रायि हें स्वर्ते हे न्ये राज्ये |वी ब्रैग'रुव'स'तकै'रा'पॅर'ब्रुख'बेर्। । २८'रे'रब'द्धर'ग्वेर'स'है'ग्रक्ष | चेग्'न्यन्'ग्री'स्'र्झेय'ग्यन्'र्ग'के। |র্ন্ত্র'ন্মব'গ্রী त्य ने गर्य। वैश्पानुवित्यम्। |देवादाद्ववाकी:वायम्'याद्धम्'यदाळे। ब्रैग्'ठव्'य'तहै प'पॅर'ब्रुयंवेर्। । तर'रे'रबाहुर'ग्वेब्ययाडी'ग्रक् यामिगरा। वैश्वायुन्यव्यन्यं वृत्त्र्यान् वृत्रार्ध्व व्याया त्तृकाक्षेष्विकेषिकेषिकेषिकेष्ठे विषया केरायमा प्रमान्यमा केरायमा विषया विषय चर्ड्व'याच'त्र्रश्रायाच्य्रेव'चगुर्न्द्रत्रे चरियं । छन् वर्षः स्वार्यः स्वार्यः स्वार् मसन्नात्रेयाहे व्रक्षया कुन्दु त्रुया यहार या व्याया विद्याप राया है " ग्रवातार्भेदार्वे । तके र्भेर विग्रवासगरा अरी क्रेर राह्या

### 西二语诗游工1

ण्ड्रण्याः स्ट्रिन्द्र्यं स्ट्रिन्। यद्धत्यः स्ट्रिन्यः स्ट्रिन्द्रः स्ट्रिन्द्रः

हे मु अ इवराया ग्रांया पर देवला विवास मान्या मुना हु पा दी पराष्ट्रेत्रिक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रवा । सिंदाधिनुवासक्षेत्रः रेहे । तिने संदेप्तसवास्तितः क्व्यार्यात्रवे परत्र्त्। । ११ ५८ म्व । १४ वर्ष म्रॅन्'न्द्यम्रातेब्'मैव्'हु'र्चेन्। । अस्यन्व'यिन्मस्यन्'नु'क्रीसा। स्यान्वाञ्चन्दिन्न् अतान्य हे । वर्ष्य देश्य विद्याप्य । वर वनरावेन्'मराबेन्'रेहे | निक्रिं हेन्'रेन्'हेन्'यानव्या | ह्र'तहाराखनाकी पर्मेन'रा'या । विन्'तविराह्य'हेन'न्नारपायेन। इन्द्रिन्रेयर्ग्युक्षेन्द्रिया । तर्ने सन्त्रं स्वर्ग्यं वर्ने नवर्न्यत् *बिवाना शुर्वा व वा हे*। पर्दुव मी वा चर्। प्रस्ति हिस् हे। तहें वा ता व व्यापरा न्रकेषाव्याक्षेत्रदेतेप्यण्ड्राच्याच्या ঘৰ্ষ্যথ্য ने'इसमानि'वर'वयान्'वेन'तहेग्याह्युत्राचावेग्वरे विंग'ने'नेर'नेर'पर्या परिया'वैवाक्'र्वर'स्टु'स्ट्रैने'व्हर्'द्रर्त्त्व'नेर'हेतु' विवापञ्चरः वरः प्रवा हे पर्वव वीकारः सरी व प्रेनः के वासुः न देवापङ्ग तथाग्वं ५८६ वाया वया प्राप्ता या सामा स्राप्ता वया के १८ स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता यद्भव'ग्रन्'श्चव वाक हेन्'यं'न्न्। इ'तन्ने 'हवक व'रेन्'रन्ते हवक व्रत्वराष्ट्रीयाचेरपया हेप्पर्वराष्ट्रीयाह्यप्याहे केर्परित्रप्य

#### वगुरः ८६ भगुरु वार्षा है।

हुँ ५<sup>२</sup>६ व्यायस्य केंद्र ५८ के का धेवा । हिंद्र प्रवास ६५ त. दे. धे. ८ वर्ष परपाया । तर्ने धिन्यमान्स्र जुन्जु । । नाये महार जुन द्वाले ५ ट्र. इवरा किंद्र'द्रेग्व'यक्षिण'ग्रायात्रात्रात्र्रात्र्रात्रात्रा ग्वरापनर मंत्रुग् भेर हेर्पा भेवा |म.प्रग'चर्गश्रु'श्रे'च व। वर्षे भ्रम्भावरायाधिव। (८र्जे तार्वे पान्त्रमापाव। । उत् इत्रांभर्भ द्वा श्रीप्रेम्य स्त्रां । व्याप्त क्रिया में ब्राया है ब्राया में ब्राया विष्या । दिनो पा पा सुर्या स्था । इस व्याप । इस व्याप । इस व्याप । ग्नबर्गन्यार्में प्रस्ति । क्रें न्युक्यत्युग्या वित्रुक्षत्। । देग् तहेंव्यायायां व्हेंन् पांधिव। | न्यानकतः व्हेंबायायेव्यं क्यांव। 12 ब्रॅस'त्र्व'स'त्रस्य'पंभिव्। |ब्रॅस'प'न्स'सेग्'श्चर'द्रश्चा 154 यन्द्रियाश्वातह्रवाराख्या। वियागगुम्याया स्ति हे स्वया <u> ५५'स्राष्ट्रस्यम् तस्यारात्रम्यम् त्रार्थाः । ५'नग्रीत्तरस्य</u> पश्चित् प्रशास्त्र व्यापार स्थापार विद्या स्थापार विद्या स्थापार विद्या स्थापार विद्या स्थापार विद्या स्थापार विद्या इयरामाञ्चापदार्भे तेयरापश्चित्रियान्त्रा । स्याक्चात्राचारी ह्रा गुन्गुं अर्त्रेन केर र्र र्र र्या परत रे सुता व कार्र र से । ने व राहे पर्द व गुँदान राख्न पाना अन्त होन ।याहे हे तु विवा हुन व गुन रा नन्ग्रात्र्रन्ष्याक्षेत्रक्ष्यः अत्राह्नन् व्यात्रेत्रः स्त्रा बन्द्र हे पर्दु व की न ने अवा अवा दु न के ना मी वा हे तु विना प्र क्ष र र र पा हु तर

য়्यः इययायः स्वाः त्रिक्तः त्रिक्तः त्रिः त्रिक्तः त्रिः त्रिक्तः त्रिः त्रिक्तः त्रिः त्रिक्तः त्रिः

देश्यवाक्ष्यत्र्र्त्त्त्रुश्चर्याक्षया । तहेन्य्यर्ग्यवेशव्यत्त्र्यावात्र्यः । विक्रेत्य्यं विष्यत्यः विक्रित्यं क्ष्यत्रः विव्यत्यः विक्रित्यं क्ष्यत्रः विव्यत्यः विक्रित्यं क्ष्यत्रः विव्यत्यः विक्रित्यं क्ष्यत्रः विव्यत्यः विक्रित्यं क्ष्यत्यः विक्रित्यं विक्रित्यं विक्रित्यं विक्रित्यं विक्रित्यं क्ष्यत्यः विक्रित्यं विक्रित्

भ्रमायान्त्रव्याम्यां व्याप्त्याम्याः व्याप्त्याः व्याप्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्य

में ने बाके वर्धिते के विषाञ्चर। । समतः ५ गुका के ५ । यह तः ५ गुका विषाञ्चर। मन्यापानित्किमरान्धियात्। । यने पाकेन पॅरिखरायरायन्य। ग्न्यश्रम् न्यापरेष्यम् भेग्यम् । व्यन्थेन्यवे भेग्यस्नु व्रत्य । १५ अर्रे मुर्केष गुरु १ त्या । १८५ छे ५ सं अरे व ५ ५ ५ श्चित्रा । व्ययसंत्रान्ते हेशासुन्य । या नेवास थी कर्-रु'र्रा । १२५५'५ मुं त्रुं-र्नि सेशिष्ट्-र्या । सग्ये५' पत्न 'डेरे'कर'परंग्याया | क्रायास्यान्ग के राग | क्रेन्य कंश न्वेन्यने राम । वर्षाया के राम । र या में में ने राम। इ.प.इ.ड्रम् १५५ । देग्पाझेग्परेड़ेर्ग १५६ इतार्ड्र करात्वरके। । न्रांसंस्थानुराष्यायात्व । प्रेशारायेन्त्र सुराह्मियायार्याज्ञया । यहायाराज्ञायाज्ञराज्ञराज्ञराज्ञा हर्ने वेर्पति कर्मा । असम्बन्धन्ति हर्ने कर्म । भ्रताभेन्'त्रुन्'यावन्धुनः'र्वान्ययेन्। । यनःविनात्रुन्'पदेःन्येः यम् न्या । ब्राम्य द्यान्य प्रमान्य । क्रियं के न्यान न्यान । चर्यात्यात्र्यात्रे। । मासुस्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स न्याव्यापदेववीतार्थेत्। । त्याक्षेषात्तातुषायगुषायगुषायगा <u>र्चीतात्विरक्षःस्वायम्बेरायर्चिया</u> विस्वायम् श्रेन्यारंति । वस्यार्थेन्यन्त्रमुन्यान्यान् । तन्यान्त गुद्रकीतर्द्रमानश्चन। ।द्रायदेवाराद्वनानीकरःश्चनवाद्य। ।वृत्र च बुन् न्याये कर स्प्रन्ते। । बन्ने प्रबुन्य व्यने प्रायन्।

स् ने श्रु म्यान स्थान स्थान

# न्याक्रियान्य न्यास्ता स्ता

व्यक्तः मुन्तः व्यक्तः व

ळॅगराडुग'रर'रार'र्ग'रा'या | र्राक्षेंबराकी हुँर'रा'बी'नेर'रया | तुराळॅन्'न्नात्रेयान'विषाकुन्दुकी । नने'हॅन वी वसराकुन हेर रा'त। अन्यन्ति ग्रिन्वराम्या । न्यन्यनि र्न्द्रियानाविषाकुर्द्रुके। । क्रिंद्रकेर्किष्वयाञ्चरकेर्द्राया । रायराक्षीत्रायां से निरम्या विषयं हर्ष्या निरम्पत्रीयापाविषाकुर्तुः के। । तन्त्रेयराचन्यराञ्चेयानाय। । केंग्रेन्ग्नेयन्यज्ञराञ्चे बेरप्रया भ्राप्तविप्रयासविषाः ज्ञुन्पुः के। अप्रिप्यया हे दर्द त्र होता प्र विषा कुर्द हु के । दर्द स्व के रहे के राया । केंद्र Aर रोबराचन सुपर्या केंन् पाधिद। विवस्त सुपर्झे वरापसारे द याभेदा वित्रायस्य सत्र द्वाराभेदा वस्तर् मु नि म्रेन्'य'भेव। । तत्रकातु'केशवाह्य'व र्नेन्'य'भेव। । मश्रवाहरू' ग्रेग्', हुँ ग्रां राधित्। वेश्वा श्रुत्रायश गुन्धी शर्त्रें प्र इट्रायन श्रुम है। । यदा हे पर्द्व श्रीकार का छूट प्राया इंका क्रीटा व का छेटा व्यत्रि-न्यान्व्याम् ह्यान्यान्याम् स्तरीया

देग्'तहें द्र'तु श्रें न'हर्' । हिंश'व्ययश्च'येद'देर दे र्ग'र्ग्या । व्यद'वृद्धां स्वययः कर्'यक्चेर'रं' वेश । त्रिंग'ग्युयं यत्यः श्रुयः श्रुयः देश । हिंशा श्रुः रत्र'तु वेश्चर्ग्या । श्रुयः पेश वेश इंत्'र्यः रश्कुर्रां । वृत्यं द्रशं ग्रुप्ति । विश्वयं र्ग्यं । श्रुप्ते । । हुन्स्रत्र्व्यायतिः ब्रुब्य्वर्ष्यं पित्। । यतुन् हे रन्द्रिया वि न्मेंबा विष्यंदेशक्राईन्न्यन्यक्राया विष्यंन्यंन् ষ্ট্র্ব্বেল্ডার্ ব্রুব্র্ব্রের্থের স্থান্ট্র্ব্র্ব্রের্থের স্থান্ট্র্ব্র্ব্রের্থের স্থান্ট্র্ব্র্ব্রের্থির ব্রুব্র্ব্রের্থির স্থান্ট্র্ব্র্ব্রের্থির ব্রুব্র্ব্রের্থির ব্রুব্র্ব্বের্থির ব্রুব্র্ব্রের্থির ব্রুব্রের্থির ব্রুব্র্ব্রের্থির ব্রুব্রের্থির ব্রুব্র্ব্রের্থির ব্রুব্র্ব্রের্থের ব্রুব্র্ব্রের্থের ব্রুব্র্ব্রের্থের ব্রুব্র্ব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রুব্রের্থের বর্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রের্থের ব্রের্থের ব্রের্থের ব্রুব্রের্থের ব্রের্থের ব্রের্থের বর্নের্থের বর্বের্বের্থের বর্বের্থের বর্ব मन्त्रिक्षित्रं केशन्त्रिया । त्रिंगानेशानेशान्ति । त्रान्यान्त्रापा [5व'रा'पेरकाओन'पेन'केकान्म्वा [क्वांतानेकानेकार्कुन् न्यन्यक्राःच। विन्यं स्यानुग्यक्रितः क्रम्यत्री विन् मग से प्रेर के में प्राप्त विद्या | विकेर प्राप्त में प्राप्त के स प्राप्त में या | व्याप्तराचेत्रार्ख्नाप्तयास्यास्याच्याया । त्रीत्रावयवास्याचे व्याप्तायाः । व्यात्तान्त्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्रामित्र न्बेबा । वितारेशनेशार्द्धन् न्यान्याद्धन्य। । त्यान्याद्धन्य **इ.स.इयस.चयस.कर.ची वि.ह.म.चय.चारप्त.ग्रॅम.ट.**पटी । दयमं सुन्द दे भूषा मुन्द विद्या । के दिन यें दिन यें दिन के साद में या । व्यापेशक्षार्द्धन्यारवाद्धन्य। ।नेवापरारम्यावन्यवादन् तकी | महिन्'गुन'केर्स्न'तके नमात्र| | तके वेन्'क्रुनामधिन् हेशन्भेया । त्रिंभनेशनेशर्द्धन्न्यस्कर्मा । विश्वासुरस मकातुः क्रेंप्पग्वायानेका नेका क्षेत्रापा प्राप्ता है। देव का पात्र वर्षा ष्ठः व्यवकार्येशन्यक्षं स्पायक्षं न्यवकाराष्ट्रवार् देवार् विनापाय। हे चर्ड्याप्रैकागुराञ्चाराञ्चेराग्वेपरायम्यायसम्बद्धार्थान्त्रेरावेदाः रक्षाया ग्वर्द्वरागुर्द्वरानुसर्वराचित्रस्य। वहेवाचे र्राषु हुग्या प्राचित्र प्रवास्त स्वात् प्राचित्र प्राचित्र प्राचित्र प्रवास्त स्वात् स्वात्

हैट.ब्याय ग्रीटर्ट, चेशिट्याय्र्यं । हैट.ब्याय ग्रीटर्ट, चेशिट्याय्र्यं । विकाम श्रीट्टा व्याप्त विकाम श्रीट्टा व्याप्त व्

विवयायवान्वद्रायदेश्यरवाञ्चरावेत्। । यसः सः ५८ हुतः यव शुरापावेर्। । भुष्याचार्मेदायक्ष्याः ग्रुवायका ग्रेदायां ने व्ययान्ते मून्यविश्वाययान्य वित् | दिव्प्याया हे यर है य बिन्। निः तर्जे पार्ये नया क्रिक्षेत्र हिन्। । वार्वे र गन्वया पान्त्र वार् हु'र्येन्त्र। |नेस'मेशकुन'याक्षेत्राधित। |हॅग्य'र्चन'रन'यस हैं ५ दें द्या । हुन् ५ ५ दें मन् अर्था मण सेमराधिद्या । उन्हों व श्रेययाचन्। छन्। विन् केयाईन् हन्ययात्रात्यत्वातात्वा Bঅবাম'য়ৢৢৢৢ৴'বাৠৢয়'ঽ'ব| |বীয়য়'ঽব'য়ৢঢ়'ঢ়য়য়৾য়'য়৸য়য় मु'अ'यारयामु अ'सु'या में र'दं या । चित्रम्म नयार र'ने वात हर्गा या भित्र हुन्देनराकुँद्वेन्नन्द्रन्त्वर्ग्तहन्त्रं। |द्वन्त्रंप्रस्यस्यस्यस्य **राज्या । अर्थे ५ कुर ५ सुन्य ५ मुन्य राज्या । ५ ५ ४ कुर** श्चित्रयायने त्यायाया स्य नव प्रायने विते प्रायन वित्रा विश्वाम् स्वाम् वर्षाम् वर्षाम् अस्ति वर्त्तुः होन्याम् प्रमान्याः प्रमान न्गम्बगुः रेष्ट्रवायाधेवाहे। सर्दर्भ तृह्याह्य स्वायक्तर्थे ञ्चन'त्र'ळेव'र्स'ततुग'त्यकाने'ज्ञानकाने'ताञ्चे अ'तुकानमें कागु हानकानका अगुरत्रे गहारका श्री।

बतिःहर-तुः क्षेत्रात्रवाह्य । द्विवादावार्व्यवानीयासन् व्यान् वर्षेत्रवा इवाबाब्रुनार्वान्यग्निस्तिष्ठ्य । तसुनार्यायान् रायाम्हेनातुका ষ্ঠা । শার্ট ন'ইমে'ক্রী'শার্ষণা'মেই শ্বান্তা'র ব্যক্তিশা । রব'ব'নন' গ্রিন' A चुर में र A में | विरक्ष के र कि प्रकार म क द के अ तुरु हा | में गुरु र्मातायहत्याच्चन् अचेन् 'केष् । चुकान्यकेन् 'ज्ञॅष्याचीकान् ने क्वॅन् खुन् । र्गाराष्ट्रपाकुक्षितारुवाद्वेतारुवाद्वा । पाकरापीविवार्षे वार्वादेष । ५६'व'भेर्पाराक्षेप्रवाद्यां हो। । अह्रद'राकुर'क्किप्रवाद्यां स्थार्ज |नेश्रात रॅन्'कु'र्श्चराम् हेन्राखान्त्र क्षेत्र । इत्र्'क्'र्यम्'यदे'त्रस्य 211 5'तहग । दवेदायते रेला रूद्रिका हा। । तर्जे तर्दे द छा राया द द देग ।<u>५,४,४,७५,८४,५५५,५५५,</u> ।<u>८,३</u>,८४,०,०,४,<u>२५,</u> वर्षे प्रमुख्य । ह्रम् श्रुर् गुर्श्वर विरापते हुम् प्रवृश्य हिंदा । ब्रिंद त्यस्य के स्वत्य के स्वत्य विश्व के स्वत्य के स्वत श्चैर'कॅब'श्चरे'हॅगबारापरी । यु:पे'वृबब्धयाहें गबारार'मेंग । देवा ग्रुत्र्राप्य। रशकुर्प्यतेष्वर्त्यार्थग्वराष्ठ्रग्रवंशवेर्त्व न्वन्यत्री स्वयंया ।

स्यां वर्षः न्यां क्षित्रं क्षेत्रं क्षेत्यं क्षेत्रं क्

## 

ह्रम्युव्यक्षास्यर्थान् विद्वास्याव्याः व्राथ्यस्य व्याप्त्यः व्याप्तः व्यापः वयः व्यापः वयः व्यापः व्यापः वयः व्यापः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः व

क्षराधति'तुरा'तु'त्र्ज्ञी मन्पाद्यशहे पर्ववर्शे हु पर्नु पर्मे पायव त्रावयाविषाषीळे हे नई न भग न न ने ने ने ने ने ने ने ने रशक्रांपायायक्षेत्रागुरायन्या T/7.484.2.8.1.44 हे नर्दु वृप्यानक्षेत्रं नगु सह सम्बन्धान स्वाहित्स विरक्षे कुर्पति हु व हा न बें रहा या प्राप्त के स्वार्थ रहा सुव हा हो है। नर्डुव्रायादि, प्रमाणित्रम् सम्प्रात्ति हि. पर्वेब्राकी हि. पर्वेब्राकी हि. पर्वेब्राकी 5'इव'है। र्देश्र्रेय'न्चॅब्ब्रॅन'क्रुंनब्रुंद'नगुर्रकींचॅग्'वबारबाय'इयबा सतर केंग्रात्रिंद विग्नान्दर प र्ग्ना सम्मान्य समान रतेः क्रायाना वाष्ट्राया ने स्वाप्तान क्षाया विश्व क्षाया विश्व क्षाया विश्व क्षाया विश्व क्षाया विश्व क्षाया व पःरेन्'ग्राह्य'ग्रेग्'ळन्'श्चर'गुःन'ग्नन'। स्थाप'ह्यह्यं<mark>अ</mark> इअरात नुगामया - नया छन्। पान नियम प्राप्त नियम प्राप्त नियम हुन्यानसमाया क्रस्ति इयमाग्रीमानेन्यानमा न्यास्य कुष्यं द्वे त्यं कुरि त्यं कुरि त्यं या यहिया कुरार का की में दुरा रा क्षेत्रं राग्यु रास्यया "" परामुक्षार्वेदावतुन इराधेव'वाञ्चायदे'तुरानु'पर्वता नान्यवा रण्गु अर्ह्षे न यापान्ताव्यक्षार्रे ना क्षेत्रा क्षेत्राया विना छेत्। यस्य यापाये वा ने। न्'नर्न्'श्वादेन'क्'ञ्च'वादे'व्यक्ष हेंग्'हु वे'त्र्र्वे'व्यक्ष द्रेव्'तु त्रोंपरत्तुगप्य। वुप्तत्वतानुत्रोंकुसङ्ख्रप्तेत्राव्या व्यवस्था है पर्वन् प्राप्त स्थाप विवस्त में विवस्त में विवस्त में प्राप्त में विवस्त में विवस में व बल्द्रत्तृष्यं भवा रक्षक्रप्यतेष्ठुष्यं प्रतिवास। हते हास

तु'वें ब'न्न्'ग्रॉव'न्न्'रशकुन्म। । स' ज्व'शे'स'रशम'न्स। । रेशप्तग्राहरावेराव्यावेराञ्च्या वित्यवेराव्यावेराञ्च्याचं वा म्हे अग्रेंद्रम्मस्याद्द्रस्य स्मित्रम् स्थाप्रेंद्र । विप्तायार्थेद्रि ग्वन्त्रायोत्। ।गुन्गुर्दिः स्रायेत्र्न्त्रादाय। ।सः नन् केंतारसप्राप्तरम् । तेसातम्तर्भः विष्यः विष्यः विष्यः । सःविष्यः विनः भ्रें वा उत्तर वा वित्र वा वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वा वित्र वित्र वा वित्र वित्र वा वित्र वित्र वा व ष्ट्रा । बीमायाप्राने गुवायाबेट्रा । गुवागुमायने क्रियाप्राने व्या न्गत्प्राय। । मः न्यं क्षेत्रारयाप्राय। । देशारगतार विनः त्र्भेवित्स्य्या । त्र्भेवित्त्र्रभेवत्य्यं । त्र्भेत्र्रभ्यः चर-वेश्रापतिन्वत्रराप्त्वाध्यम् । श्रीपार्य्यप्तिन्ते नव्यत्रायेत्। गुव्युप्तर्तिः स्रस्प्र्वर्ष्य्र्वर्ष्य्वर्षायाः । सः मृब्द्धेयः रह्यः । नेबातगतार्चेन्'केन्'कुन्'केन्'क्रेंबा ।क्वेन्'केन्'क्वेन्'केन्'क्रेंबार्च'त्र्। क्वॅुं ५ 'यय कॅब' वे ५ 'र्' कॅ्य' न दे ग्न व बा र ग **प्र**न् । वे द त प्रें ५ 'रे 'गु**न** संबेत्। ।गुन्गुन्पर्नेक्रायेत्व्रत्नात्वाता पर्ने देर वे बबा शुर्वेरवा विवा झें आपर तेरवा से झें था । বিষাশ্রদেষ্ট্রশ্রমা নমান্ত্রদান্ত্রশূর্ণবাদের্গ্রানির প্র बर्चन्द्रः चरुष्यान्द्रं सुत्राचित्रवरः यदः वशुरः वदे सुत्रात्रा ।

व्या विश्व विश्व स्था स्था विश्व स्था स्था विश्व स्था

मेशिटयास्। ।

मेशिटयास्। लिट्ट्यक्ष्मित्रम्थाः । विष्यः प्राप्तः विष्यः । विषयः । विष

न्दर्ह्न्किरान्निर्म्राह्म् । दिन्दुः अत्यव्यन्तर्हित् 용도회 | 디프(씨·ᄎ드·오,'디디의·디크) | 네줘.노네. 실외설/회약 र्मे वार्याया । वार्याः ने त्यार्थेन् वार्याः विष्याः । वार्यः वार्याः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः वार्यः श्रात्यमाञ्चन द्वेत् । विद्याः । विद्याः मुं विषया प्रिया र्मिया मान्या मुं द्यया मेट विषय हित्वरा । ५'नेलाम्च सदीपानादायां देव। विन्या मून्य गुलाम्च माना मिना । बायवर्यंत्रानं वृष्यं कृत् वृत्य। | यक्किं त्यं यवद्रान्यं वा । म् तह्यक्रवयक्षियायम् । म् तह्यम् वयम् निराव महासूर हर्या ।र'नेशवास्त्रीयगरमानुद्रा ।सळ्डूर'ग्रीन संप्रेर विग् विंद्रा विक्रंसन्द्राच्य्रं न्यं न्यं न्यं विक्रंस्य विक्रंस्य सम्तः प्रभूतः प्रभावति । द्रियामात् मुक्या क्षेत्राक्ष म्या विषयः वेगःस्वत्रवेदःबह्रन्त्रियः हुत्व। । १८ देशह्य वदे यगदः सः हेव।। मुर मर्निरवाद्धर इरम्मवावाद्धर। । ज्ञात्मववादावाद्यर विर बिर्या । प्रकृत्यकुत्राप्यस्त्रम् व्ययम् । । व्यस्त्रम् यस्त्रीपस भ्रिक्षां देवाया विश्वका हेवाया श्री द्वा त्या स्वा विश्वका विश्वका

भाश्चां या देव वा श्रुव मा श्रव प्रमा । मार सा से प्राप्ति से प्रमा निमा स श्र-। विट्यकूर्ष्य्रस्थात्रात्र्यः । विधारताते व्या <u> ক্রমান্র বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র</u> नग्रात्यव्रः । विष्ट्रिं क्षेत्रं बर्च ब्रास्ट के व्यक्ति । वर्षे व्यक्ति वर्षे के ब्राह्म के वर्षे के ब्राह्म के वर्षे के वर वर्षे के व रशक्दाक्षेर्न्द्वश्यात्र्र्ण । न्देश्वाधश्यात्र्गद्वा । वनवान्त्रीयान्त्रीकृत्वान्तुः राम्याः । वनवान्त्रित्धारवार्याकी राष्ट्रित्। म् तर्द्वातेनवार्ये जुलात्वाये । त्राकुराठी वृत्तिवार्यात्वा । न्देशञ्च वर्षायम् त्रम् वर्षः व । व र्ष्टेन् ग्रीतः श्री व र व व व । ब्रह्मं ब्रह्मत् प्रम् श्राया श्री क्रुं रा |म्बेर् बेग्'वेग्सर्ये कुसर्वा बेर्। | रक्षकुर् अर्थेन्'न्वुकाशुंदर्शे | नि'नेकान्न'वकारगदावरः ला । ग्रन्द्राचन्द्रस्यान्यस्य । जिलावनस्य राजान्द्रात्र्रात्रा व्ययाहें वया ननर में ज्ञयात्या वेता | रवा द्वर दे वें ने त्रा व्या | ५'नेराह्म'र्यायमार'ग्वर'वा विरात्राराया हे'नईव'ग्रेरा रशकुर्राम् व्यवान्राह्म वयापायम् र याधिवाधी पर्राप्त स्वराया

## तमन्डिन्डिस्य गुर्त्रिन्ग्रुट्स्स्।

क्रश्म्र्याच्याक्षर्त्रायाक्ष्म | रश्करम् हे हे ग्राप्याप हुर। | ब्रीवॅर्स्टेनेकेन'तरीनेन'पराग्रीका । हिर'केकातर्रर'कीरर' रा'अ'क्केश्रायर। वि'तर्देर'क्किंशरा'अ'केर'केन विति देशर्यरे' न्द्राखन्यास्त्राह्मन्यास्त्र । भूनिति। निष्ठित्रस्यास्त्राह्म देन'यरि'स्र्यार्ब्वेन'यान्यारान्। [निनि'स्र्ना'ने ब्रुन्'र्नेयायानेन'रेन [ न्न वर्षात्न नित्र क्षेत्र त्रिने सारात्। धिन वना ने सना केंद्र अहित डेन । हिंदाचत वंदि क्रूं दायन व विद्याप्त । विद्या छन् ने वर्म र्भयाञ्चरहेन । नर्सन् वसर्या श्रीस्थितरा की नेरायन। । भी चेर त्यंज्ञाप्त्राञ्चेत् विवादाव्याव्याव्यायाम्। । १५५ हरा सिन्'की'यर्स्व'वेबायातकन्'केष । श्राचेन्'यर्सव'र्न्'याचुर्राधरा । ॲव्'न्न्ग्'ने'अर्क्रन्'न्व्रांअखेन्'केन । न्ने'क्वॅर्र्क्णेक्ष्णेक्वं क्रेंत्र्वा रार। वि'यते'हुन्'व्यायात्यन्'रेन वि'र्याद्धन्'यात्र्ने'न्'रेस र्ष्त्। डेक्षम् गुरक्षगुर्म वु न व व गुर्मि स्थानम् ने संयानु मारा के बागुमार के बागुमार के बागुमार के बाग मारा के बाग मार के बाग मारा के बाग वित्रत्मुक्षाञ्च वित्राम् वित्राम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् हु अधिव प्रवाद गृतः गृत्र प्रवाह गृत्र हिंगु प्रवाह है स ने गृत्र वा स्वाह यय। रशक्रायान्गतक्रियान्त्रं माविषान्त्रः है। विषात्रपरान्त्र हरा ह्व ८ द्वा अव प्रज्ञ ५ कि. या १ वर्ष १ वर्ष

वियायकार्वे वापिते के का ग्वय विवे निष्य वे । वाप्य तार का मुन ने'ग्'गर्राया ग्र प'तुर'ग्रुअ'न्र'प'येन्'क्रै'अ'-दुने'कुप'तु'पग्या য়ৢঀ'৸য়ৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢঀয়'য়য়য়ৢঀ'ঢ়ৢৢৢঢ়ৼৢৢৢৢৢৢ৾৸ঽৼয়'য়ৢয়<u>৾ৼ</u>'৸৻৻ৢৢৢঀৢৢয়ৢৢৢৢঢ়ৼ৾ৢঢ়ৢৢৢৢৢৢ क्ष्याल मा के प्रति के मा निष्य के मा निष् रैट-दु'तर्हे व्यादाधिव केट। ५'के स्ट्र' ग्रुट के वेश यगम क्रेया हुट ता मुँब'बबायापरयेवबाय'न्न्। हे'वर्ड्ड्यी'वयाववा न्'ब्रिन्'र्स् खन्यहिन्दरत्में नहार समान त्री खन्यत्रे नहार सहास्तराया बिदः त्र्या । हम् कर् कथाया त्रेयवा भैदः त्र्या । त्युरः वेदः सम्भात्रं हिन्द्र हिन् क्षेत्र'र्धरप्रविष्वत्रा |पर्नेष्वत्राहरप्रतिर्धेव्यविर्द्धा | विराज्ञेन्ययात्रवेनव्यवेनात्र्ज्ञा । दिन्याययायानुःश्चनविनात्र्ज्ञा । क्ष्ययावरायर राश्चर्येत् । | न्यक्ष्यार्थेत् यार्गेर यावगावया । मह्त्यः लुग्यः तुर्मायः वेद्यः वेद्यः विद्यः त्र्ज्ञ विन्येन्'सव्यन्'श्रॅन्वेन्'त्र्ज्ञ् ।श्रॅन्'प्वन्'यन्'न्वे' त्युँन्। ।न्यःरूबःन्यःर्वेगःन्येनःचलगःवव। ।इयःनगःवनः नित्रजीयाविद्यत्र्या । निष्यः श्चिष्वयायात्र नेत्रव्य नेद्यत्र्या । इत्य बेन्'लब'नु'ब्रॅन्'बेन्'बर्जे। ।न्य'ळेग'ब्ब'स्र-'न्'बे'वर्जेन्। न्याक्रमात्राच्यान्यान्या । श्रुव्यान्यान्या त्राँ दिन्वास्त्रवादिवस्त्रिन्त्राँ भ्रिप्तिस्तर्द्वां

विनः त्र्याः । त्र्यात् व्वापनान् वे त्र्येन् । हे पर्वव्यन्याः न्वेर्यविष्युष्य । अव्यव्यक्तित्वर्गे । विष्युष्य विष्युष्य । विष्युष्य विष्युष्य । विष्युष्य विष्युष्य । विष् कृत्क्रातात्रेपनानितानिताना । गत्यनात्नातान्त्रम् वित्त्रम् । हरायम्बर्धिरत्वर्षर्रार्धेत्र्षुत्। व्रामधियात्मेरवावग्वरा । ब्रैन:दुश्ह्यम्पत्र्चेसविनःत्र्या विःबंकसमानवेनसमिनःत्र्या । **२**इंद्रत्युर्श्यस्युर्श्वरावित्रत्यूं। । यहंद्रत्युर्श्वद्रथ्यत्त्र से तर्भुत्। ।त्रान्याकुत्त्रेराववग्वय। ।त्रवाक्वाकुत्वा त्रीयवित्रत्री विष्कुंष्ठयत्रत्रेन्यक्तित्त्री विष गुराययार् ह्रॅन् विन्त्र में । गर्मियत्र नेपरायव प्राप्त के त्र हेन् । देश वृत्रापय। त्राँ श्रुव्याये वृत्रा वृत्र प्राप्त वर्ते स्टर नर्न्वहुन्के इन्यदेइन्यन्द्रवाद्रियहा इत्रिक्षि हुन्व्वविष्यां विविद्यां भिव्यते । विष्युव्ययम् सर्वे वस्य स्तिवाया स्व विन्यहे न्य के तर्ना विन्यन्य मान्य मान्य क्ष्या मान्य क्ष्य रशकुरायशञ्चरकपायश्यावेराम्यन्याकेषा न्द्रताकुत्रन्तेवाकुव्यन्ति। व्रत्यम्त्रेवाक्षेत्र मल वे न्। न् न् न् न् न्या ज्ञाना विष्णु प्रमानु ने राष्ट्रे प्रमान वे न्। तर् है प्ररादेश्वर्षेष्ठस्य प्राहेश्वर्षे विष्तु देवातरे र्वरबाबुयाया।

म्याक्षेत्रयायहर्। स्थित्यायायम् । ह्याकर्

भ्रुत्रावर्ग्यत्त्। । ध्रुं ग्राह्म्यारार्भेत्रप्त्। । गृह्य त्रहेव'त'क्रेंट्र के के प' पेक्ष | प्यट्'ट्ग हें वृक्ष प्रति'ताता का ही व'प्यट् | सु'त्र'क्रेत्र'यावर्षेत्'रेग'रेद'र्घ'ळे। ।त्रेग्वाराक्षेत्र'रेग'द्युत्र'प्रति'सु। । क्ष्रियायदेश्यायायम् । चिनः में न् 'सुनः वायनः पान्नः। । हुं वेद्वां व्याप्तराया विद्यारा वित्राया हुना वित्राया विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या मं छ। । तमि न वा का क्रीया हैन । क्री न प्रति त स्ता ता त्र्रीं प्रवर्शयवा विवर्ध त्र्री ग्राध्य देन प्राप्त । व्हिता तर्हे वा बारचर र्वेग पर रहा। वि इंदेर हर्ग पर सूर राज्या विवय त्रुत्वेद्वेद्व्यत्यायाष्ट्रेद्व्या र्में व | तहेना व का क्रिया केना क्रिया पि क्रिया व व क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क हिना'यमस्यम् । विकायदे'नें इं.स्ट्र-प'र्ट्र। । न ने न चंदिः विया वियान्यतानान्ता । मिलिंगा विश्वेन या के ना विया । श्रि वेन र्गायनिः रंग्या ग्रीसाया निरायन। विष्या हेना स्वार्था 🔠 | तहेन्य रार्जेल हेन् ज्ञारा ते जी । तहरा दिले छेन् हेन् विदायसम्यापा । तिर्वित्तर्स्यसुतामग्देरःपार्रः। । श्रुरः तर्स रातल्य न्यापान्य । त्रिन्याया न्याम्याम्या । सुप्राति **प्रम्याह्मणयाक्कियान्याक्षेत्राच्याः ।याः भुषायायह्यः स्वास्याह्यः छ**। ।तहेन्य राञ्चेल देन श्वलाप ते श्वे। । त्र राञ्च राञ्चल प्रवला प्रवला तशैक्षानवकायवा । श्चुं खकाश्चेन् प्रमृत्तं केपान्नः। । विन्तुः न्नः

म्बिक्यान्त्रम् । विकासित्रम् म्वास्त्रम् । विकासित्रम् ।

रदि'कुन्'य'गन्'भैन'नेर'र्ठ'व। ।कुन्'य'वै'न्व'कुन्य' ロヨニー | 135-14 (本) | 135-14 (ロヨー) | धित्रग्'नेबार्नेग ।तु'रबाद्धर'रा'यात्रग्'नेबार्नेग ।ह्यायानर धेन' नेर रं त्। अंश्रेशन्त् अंश्रेशन्त्र । अंश्रेश वर्षे ग्रेश वर्षे भिन्। । ज्ञायानन् में ने भिन्न । तुर्वाद्धन्यायान् विश्वांनिय । न्याक्रं श्वानाः धिवा चेन्या उत्याक्रं श्वानियाः **ढ़्रश्चाय व्याक्ष व्याय व्याय क्ष व्याय व्याय** ने भिन्न विश्व ग्राचित्रचेरार्स्य । वित्राक्षेप्रवाचित्राचन्य । वित्राई े हे यग संभित्। वित्यानन संने धे नग निस्ति । वित्यान निस्ति । वित्यान निस्ति । वित्यान निस्ति । वित्यान निस्ति । ह्न्यायात्राप्तित्र्वित्रम्व विश्वक्षित्र्व्या विश्वक्षित् क्षे:८ब:४क्षाञ्चं८:प्रज्ञर'। क्षित्राञ्चं८'वायम्बद्धः द्वार्यः**पित्। ।** इस्र्सुं त्वा त्रा दे व्याप्ता प्रमान्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया म्य । सिन् स्थान ब्रिट्ट स्थान वित्र श्रेष्ट स्थान या भ्या म्न । निहेन्द्रास्य न्द्रास्य निहेन्द्रा । विद्रार्थ हिन्द्रा हिन्

वार्या विश्व विश्व । इंप्ट हुट प्ट हेवा वे वा श्वा 1574 इत्रायायाया विवासन । यने न्त्रन्यवा न्त्री हेंगान शुवा सुरशक्तारात्राया विवासम् । यात्रा क्षेत्रा यात्रा नि'मिलेब'ने में त्र्व'मिनेब'मं थिया | म्या'नेबाबी त्युर पहरुपर र्नेग |८:४८:या८ थेव'चेर'ठ'व। |८:४८:वेख:४**रा** राषेत्। वित्रतेत्त्रा वित्रत्ति । वित्रत्यक्ष्णायते त्रा नैश्चिम्। डेशम् शुर्वानेरामेवदायराव्याम् वस्या **Š**5' **ल** न् तु का कु 'कें 'बे वा' वे का जन न न व का तह 'न र त तु वा' पवा ने'न्र **डाअन्न** ज्याने व्यानहेन प्रत्मे कुरान्य स्था हे मई व ने न महान रशक्राध्याप्तार्भ्याप्त्र्यार्भ्याप्त्र्या **য়ৢ৾৾য়ৢঀৢঀ৻৴ঀ৾৴য়৻৸৾৸৴৻৸য়ৢ৾৾৽য়ঀ৾৽ঽঀ৾৸য়ড়৴ড়৴ৼৼ৾৸ৼ৾৾৸৴য়৸য়ৼৼ৾৽ঢ়৾ৼ৾৽৸** क्षेन्नात्यसम् न्रहेनासम्नन्रयन्नवस्यस् न्रह्न मक्षि'वेन् वि'स्निर्द्यान्त्र् हे न्द्र्य है **উন্' ক্র'-**ভিন্ন নে ব্র্রিপ্ত ব্রান্ত কা ক্রান্ত ন্' ন' ব্রভন্ন ইন্ ব্রান্ত ব্রান্ত ক্রা क्रियापायिन'वया क्रियान्म क्रिन्म क्रिन्म क्रिया वितालक क्रिया क् **এব'**দ্র্মান্থা সুদ্রেব'শ্রুণান্রদ'র্ম্ব'মার্ল্রবারী ন্বশ' रोर गेरिग्रीर परइ पालिया में बहुब्हु र राया पहुब्हु सहि। रहा म्बुर्वार्स ।

विन्याविन्यस्थितः विन्यस्थितः विन्यस्थितः व्या

प्तः। विकार्यः शुष्पेवः प्रतः विकान्तः। विकान्यः विकायः विकायः विकान्यः विकान्यः विकान्यः विकान्यः वि

 श्रा |

यहंब्र्ग्रीश्राट्याट्मां व्रिंग्याचर्नायात्र्वाच्याः स्त्री |

यहंब्र्ग्रीश्राट्याट्मां व्रिंग्याचर्नायाः स्त्री व्राव्याः स्त्री व्र

|बिंन्दराषीकिर्याय तु'गडेब'यते'रब'ऊर'न्द्रवाशु'वता | ग्वर क्रीप्र स्वि वे व्या | विवस देवा ग्रह्म क्रि ঘ্ৰ'ৰ। 「可はないからば、まない。」 | निरायां की महाया प्रशासिक 别51 |英村日本海山村城山村 ヨエ [इ'नरे'झ'अ'नहेर्न्त्राह्य |ই'র্মপুগ্রহান্তান্সব 24 रेवित्र्व्यंत्रात्रीयत्वात्रात्वा । वर्ष्यं व्यव्यक्तियायव। क्षेत्रच्चित्रव्यापान्त्रव्याच्याः । वाक्रयात्राः स्थान्त्रव्यायम्। हेर में राज्याया हुत्या । नियम्ययाय हुर में स्थित सर्वा । क्री 744

द्र्वाधाविद्याप्ते प्रयाप्ते क्ष्या विद्या विद्या

मिं ज्ञेन्य यत्र संदेश में प्रतास्त्र में प्रतास मान्य के ज्ञेन स स्तर्त्त्रवर्ष्त्। ।रशक्र ज्वारायत्र्त्त्रवर्षेत्। ।रमक्र षे ने श ज्ञान श अर्रे न ' द्रा' | च्रिं र श क्रिं र र ज्ञान श व श व श मिंह प्रवर्धितायावेदादरावया । प्रवर्धि ह याप्यार हिन्द **ष**र्। । त्रशंकर ह त्यान्यतिष्ठुन य वेर्। । इस नेशंकुर ने ह र्षे त। विःरशकुर्यां वित्वत्रश्रम्। वित्रं वित्रां वित्रां वित्रां वित्रां वित्रां वित्रां वित्रां वित्रां वित्रां व्याममा । नव्यक्तिं व्यायामा द्रं या । रश्कर व्यायामा द्रं बेदा । वृतुवावावात्रात्रात्राराणीयार्ग्यादी । तुःनवाकुरायाय्यवार्ग्यवा व्याम्या । स्थानस्यान्त्रां विषाणुन्यः विनः स्था । प्वत्यः सरीः स्था मावै अया र र में | र मा कुर न सामावे अया र र से र | वि र र है द रं वर्डण' वर्जन रे | जि.र बार्ड न पार्विन व विना वर्षा | विना मन्द्रं विषा गुरु हो र व राष्ट्रया | प्रव र श्रे र य र म र मुरू ये र । | रशकुर देरायान्या सुन् बेन्। । व्यन् पकुर भेन पाने व देरा सु न्ता । तुःनबाकुतः तर्जेवायः द्यान् श्वायः श्वायः। विवायश्वात्यः हे। बुरः चर् 'तुग्रां क्रुं 'पारे दस्यापं स्रायं स्रायं दर्गात् वृग्यं प्राया इवर्गित्र-राम्येवयाभयवेत्रप्रकृत्युवा हे पर्वन् मानुग्य सम्बद्धाः सहित्। त्रित्रः रक्षाः वित्तः द्वितः द्वितः वित्तः वित्त

गुन्मानीयविवासन्यस्ति। ।यहेव्सनिम् क्रिंश क्रीर मिन क्रिर क्रेर प्रत्य प्रति स्वा । तर छन त्र्वावारीयवाणीळेरायाधिव। |रवाळ्टार्यापवाप्त्राप्त्रां । स्वामा अन्य के विकास के के किया में किय स्वामा में किया में विवा । गहुर तहें व प्योर पार्श्वर पारवा । वेशवा है गहिण हु हिन्दारिकेने लुन्। वित्रायर क्रेन् वेन्य दि स्वारानी वित इंसराध्या कर्षिया । विक्रिया हर्रित हेरा प्रति । श्चित्रं ग्वर् द्राप्त द्वरं प्रदेश रे खुर। । क्वं वेद श्चित खेर पर दे हैं द्राप ने। विस्कुंत्यानुबागुरानेतामभेषा विषयानुत्नेतानेश्रादेष रा'त्या । ह्रमायम्पर्'स्म्पित्रेन्द्रम् । म्रिल्नेग्रन्नर्मस्यते र्यक्षियाची । विरार्यक्षयाच्चराज्यस्त्रेयाच्या न्यायकत्याव्यवापात्य। । तम्बेयवान्यम् वस्याप्यस्यिते हुन्। । तर्न्यम् मृत्र्यत्र स्वरास्त्र । विन्त स्वरास्य क्ष्यम् स्र स्वित्। । इस्य वेर म्हें र अविग्यार स्वा । स्वास् नेत् पदिके रे हुन। | विग येग य गन्यय मग वर्षे दे। | वर्ष वर्ष

८५'यर' नेव' र्रेक पेवा । गर' त्रग' श्रेर' रु क्र हर' पर या हुन्यर स्वायतिको रे लुन्। । हे तिरे वायके त्यापते क्रांपन्यं व रे। | बैर ब्रॅंप'न्सॅक्'चुर्रा'गुर चेल ब्रॅंक्'धेव। । गर चग क्रंबंदा गुराकुर प्रत्य। |यर्वन्थ्याञ्चायाम्बर्धिर रे.वुर्। ।वेगः चैअचेुर्'पदे'बॅब'गुब'री ।वैर'बॅब'गुबचेर'यर'र्रदेग'**ये**व। । सम्बद्धाः स्वतः बॅ्र-'कृष्'बे'न् बॅ्र-'कुःबॅर'ष्ठःबेंन्। ।बेन्-'न् बॅ्र-'एड्र-'कुन्-'ब्र-'ख्र-धिवा | ग्राच्यां क्षं ग्रेरांचा क्षं यापारा । ग्राम्या । ग्राम्या । पतिकेरे छुन्। । यगतान्यका छी पर्द्व खुन खुन देन । वेन पर्वत् छ्रा गुराख्या च हुराध्या । ग्राच्या क्षेत्रिरा द्या छ्रा प्र तव। ।तत्त्राविवयास्ये रेशुन्यत्वे रेशुन्। । मनुत्र दन्यो न्य त्रुं र अमें था । बैर पेंद प्रत्ग प्रश्न ग्रुर ग्रुर प्रत्न प्रत्न । युर् बेन् ळ क्षेन् इता हुन् नात्व। निक्षेन् नगुर हुन् न ने न हेन् पि देशेने खुन्। श्रिम् अर्गे दग् निन्द्रायाम्य स्ति। श्रिम् व स्व स्ति स्तारम् तर्भवश्यन्य । निक्तातर्भ्यम् । निक्तातर्भ्यम् । निक्ता म्बर्गः नेग्रां क्याया । यद्रांक्यां मुब्रां या वे राधायाः । विवा निरं त्रवारा भुग्वानवा । रे विर्वत् त्रवारा खुनिर वर्। । इतार हुन न्यारा वयरा हे ग्रात् श्रीयया । व स्यान्यारा ५५ द्राप्या । व स्यान हार्रायायर्र्स्यार्ज्ञता । विषये के के प्राया विषय शिया वि'यापानव'न्न'यद्यपेतु'खग'र्स्ना । हिन्'व'यासेत्रा

यग्रे-रायाविद्यान्यः सर्गे-रापन्ने विद्यान्तः । ।

स्वान्त्रात्विद्यान्यः सर्गे-रापन्ने विद्यान्तः । ।

स्वान्त्रात्विद्यान्यः सर्गे नाप्तः स्वान्तः विद्यान्तः । ।

स्वान्त्रात्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान

वृत्र'न्न'न्नस्त्र'न्न' अश्रेर'श्चर्य। । न्न श्रंह्रद्र' प्रान्य स्त्रेन्य स्त्रेन्य

भ्रा क्षेत्र स्वार्य प्राचित्र स्वार्य स्वार्य प्राचित्र स्वार्य प्राचित्र स्वार्य स्वा

पतिःपक्षेत्र'पगुर्विषश्रेष्'त्यस्य विष्यं विष्यं विष्यं विषयं वि

अर्वे तायम्बारित गुन्र्वे न्त्र गुर्वे । नेता विकारित विके हो ह्यर वृद्धेवा न्राम् वृद्धेवा । तुना स्त्रेन् वृत्र म्राम् वर्षा क्षेत्र व्यापा प्यापा प्यापा प्यापा प्राप्त प्राप्त 5्गन्त। । न्गुन्र्वाष्ठ्रिन् स्वाया । विः त्रा देन् क्रेन्य विष्यक्षेत्र नुपर्भे । में अक्षण्य न्या देखकारा विषय न्ग्र हॅ ब्राह्मेन हे ब्राह्मे का अपन हे निया में है निया है न मन्दरम्प्रमुक्षिन् । विष्यपर्यारम् अहत्यमित्र क्षेत्रवारमे न मदे वा दे नि में तुर्वा ळें न ' न्य वा स्नामका की तहे ता चा भना स्वा में न हिन' भ्रु'विश्वराक्तियनेराचलुग्वा । मु'कुतानेन्'व्यातयम् ग्रेन्'नु'त्र्र्जा । म् वर्षक्रम् में दे विद्यारायम्या । व्या द्विन विन में वायानियाया व्या विक्षयान्त्रंक्याक्षेत्रायाच्यान्त्राव्या विषापानापाना नुःयहतानिः र्रेव्ययात्रेनया । नगः नेवाक्रवायमुव्यन्या नदेः ब्रुंद्र (सवा स्त्रेन्स् । सन् ने न् नं क्राम्नु न् ने न् न् ने ने त्यात्रिक्तित्व ते व्याप्ति विष्या । त्या क्षेत्र विषया । त्या क्षेत्र विषया । त्या क्षेत्र विषया । त्या क्ष क्वित्रदेवान्यम् स्पन्तु । गुर्वन्यम् हिन् सु विवयक्वित्र

मन्या । नर्धरः करा हो दृष्धरः दुः अद्भाद्या स्था । वृष्टे दे दे दे त *|व्यापन'पन'र्'यह्यानदे*'ब्रॅब्यय পরের বর্মানা মুরা বরা तन्त्रवा । प्रमा भेषाक्ष्या सुन्दु । यह तापति श्रें न त्या । ह्रस्रदरिवर वी से हें व फ़्रांने दर विका | ने ता ति वर विराध ह्रवा न्वेग'न्र'न्वेय। । नुबार्ट्यन्'न्रबाञ्चान्याची'त्वेत्र'प्पन्'स्न्'न् मन्ता । विक्तिमा हिन् सुन्यका के यने रायत गर्या । विनाय ने न म्बर्तिके हेंगान मेंन। मिं बबागुर ग्रे ते ब्बाम त्यावा। विहेंगा ট্রিদ্বেদ্গ্রীশ্রান্ত্রীশ্বা | ローマート | できる | できる | ローラー | व्या । विभायमायमार्न्यहर्यानदेश्चेंद्रायमार्यम्या । न्याः वैद्या क्रंत्रसम्बद्धान्तर्भा अस्तान्तर्भा स्तरमा । सामान्तर्वर नीन अन्न'तन्त्रान्न'ग्रेग |ने'यात्रावर'नते'द्रयात्र्र्धेराक्षेयान्न न्द्रेश । त्रिं हिंद् न्व्राञ्चन्यां प्रत्ये विषय । ष्ठ'क'हिन'सु'विसर्यान्देग्यनेर्यातु गया । इतारहिंरान्यानुद्रासदेन्दे मिं अयाग्रम् गुः ने ल्यापा याया । विन् ज या सं तन्या ग्रॅंटवायेट्रप्रंच्चेया ।इतारम्चेर्र्यः विवयं हेंग्यारमेतायः मुखादे । ब्रायम्यम्प्राप्तः व्यवस्यानिक्ष्यं व्यवस्य स्वेत्रायाः । प्राप्ते विक्षं क्ष्यायात् विक्षं विक्षं विक्षं विक् नुःयहतानतेः श्रुवात्यात्रेत्रया विवानश्चर्यायया नःयह्यया क्षेत्र-विष्यं निर्वत् केषे क्षेत्र निर्वत् स्वर-विष्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य इयरागुर्-५-१-५१-५० (हायेन्-५) कुराय्यार्यर्मे । नेवयार्यास्ट्र

द्याप्त्र प्राचित्र व्याचित्र व्याचित्र व्याच्या व्याच्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्य

## 五七十七日,五十二

ब'र्से'गु'रु। ন্ত্ৰ্ব্ধ দ্বা न्द्रायाक्ष्यान्याक्ष्यान्याक्ष्यान्या हुन्'ग्या हे'नर्ड्द'के'हुन्य न्निन्यायायायने'निते क्वें तर्नेन्यान्दन् মিন্'য়ৢঢ়'য়ঢ়'৸ঀ'৸য়'য়য়য়য়য়ঢ়য়ঢ়য়য়ৢয়'য়ঢ়'য়ৢয় न् गॅराठी त्र्ग है। कुर्म् मुक्ष मुक्ष मुक्ष वहर में मुक्ष स्वर में माना स्वर मिन स्वर मिन स्वर मिन स्वर मिन स्वर मिन स्वर मिन स्वर बरळें न्यंत्रवर्त्यं द्राया कुष्र में क्रियायं स्वर्षक्र वितः तर्वा नवा नवा त्यापा नयापा नयापा वत्या श्रुवा दे स्था नेया ধ্য'র্ড' AS" इयराग्रीरास्यानेराधरात्त्र्गाप्नांप्राध्याप्रस्थेत्राव्याप्रेष् ঘৰা ব্যাহাপদাখাবনে বুলি অধিনা বিশে ইনা হৰ গ্ৰী ৰাই নে প্ৰবাদনা बहतानरान्सुताने। क्रेन्द्रियम्ब्रान्तिन्तुन्तिन्त स्थान्याया विकास हो स्थान्या स्थान्य स्थान्य

 तर्ध। १ने'इतातर्ध्ररपाराधिर्धुरायते'न्नेरा १र्धुरपायावरार **८ क्टे** 'ব'র্ম্মন্ । বি'বর্ষের্মন্ নির্মান ন্র্মা । বন রিম্মন্ ন্র্মান্ নর্বাবাট্টি মূল্'র্মানা ।বাবব'র্ন্ ব'গ্রুব'গ্রুব'ট্টি ই'র্মান্মা ।অন্স र्म्याः वेन् प्रतिः त्व्यायायायाया । निः इत्यायम् राम्यान्याः विन्याः विन्याः विन्याः **৲্ম'ঈন্'ষ্দ্র'ন'৸ঈ'ব্'র্বা**র্মারম্মর্মারমানর্মা য়ৄ৴'ঢ়'ৢঢ়য়ৢ৴ঢ়য়ৼয়ৣ৾'য়য়ৢয়য়য়ৣয়য়য়ৣয়য়য়ৣয়য়য়ৢ ग्रेश्राह्य वित्राह्य हिंग् वित्र ष्रेर्। । न्यंक्रं सम्बद्धार्यं प्रति हैं न्युं । विष्यम्य प्रिस्यस्य त्र्या ।त्यु न्त्र्यं व्याचित्रं वित्रं वित् গ্রী প্রদিশ স্থ্রী গ্রহা বিদ্যান্ত হাত্রী নাম বের বা तर्वे रायानाची तत्र वात्र ते निन्ता । तत्र वात्र वात्र तात्र वार्षेत्। । वि'व्याध्यापित्रायात्वा । वियाग्युत्यापय। त्यापित्वया वरा विन्किन्दर्भाक्ष्यं वर्ष्ट्रभान्तिष्त्र वेदिन्द्रश्चान्देन ममॅन्यमक्षेप्रन् विन्द्रयातविन्यम्यम्यम्यम् रा'तर्ने ताम्या'कॅन्'केय्'न् म्बारा'भिव'याबुन्यारा'ता हे'यहंब्'ग्रीसर्ज्ञ मने मन् कॅन्'हुन्'ने स**नु**रत्ने न्युत्रकार्य।

तर्न् न'न्यप'र्र्र्प्यायां यहिंद्। श्रिंया श्रेंया श्रेंप्राये प्राये प्राये प्राये प्राये प्राये प्राये प्राये त्र्वा विवयहेबाक्चियक्चियक्चियात्राच्याः । भ्रें अपितिः चनाः क्चितः র্ন্ন'বিবিধার । বিবিধার বিধার বি श्ववादायम् वीप्रत्वादवावाये विष्याद म्याप्रे विष्याद म्याप्रे विष्याद म्याप्रे विषया रत्रम्भूता व्रिन्धित्रम्भंकिन्द्रिन्ति। । यनेपननेपद्रन न्यायायम्यायस्त्। । न्यन्यसुर्विन्शिन्न्यस्तिविन्नेन् त्रञ्जा । क्षु 'सु दे अळ व 'या' नन्न 'या में ज्ञान । न्नन प्रसु नः क्षे प्रमा । व निम्न प्रसु नः क्षे प्रमा । व निम्न प्रसु नः क्षे प्रमा । व निम्न प्रमा । व निम्म प्रमा । व निम्न प्रमा । व निम्म प्रम श्चन्थेन् ग्रीन्न व्यावयायेन् तर्षे । श्चन्येया श्ची यह व्यान्न या मुँला । नुस्र ईना ने मना कर् किं रे मरी । मरे मरे तर् न र सम रम्प्यम्यहित्। । तन्नयस्य रेजेन्की रम्प्यम् वर्षेत्रत्र् रेन्ष्यक्षियह्यस्यायम् वर्षात्राच्या । त्र्यायात्रियाः क्रिन् संरेन्त्री । मने'मने'त्रज्ञ'न्याय'रूप्यप्यायार्दि । देव'ग्रुप्यायार्व्यप्ये' वियायवारवाने द्ववार्ष्ट्रवानु च्वा कर्। प्रतिक्री क्रायाया प्रविवाधी न्बॅसप्टॉइन्ड्रा डागरन्यर एट्डिन्ट्रायरेरेरेस्ट्रायस्वेन। न्दायायन्द्विन्द्विन् म्याद्विन्त्यायन्दाद्वीन् म्यायन्त्रत्वा वहान्य देशा व्यायम् । त्र्रीव्यम् प्राप्तायस्य विष्टा । त्र्राप्य । हे पर्वव्यम् विष्टा विष् द्यापानवर्र्, र्वेषा वरा पर्से वरा प्रवासी वर्ष कर्षा के ने के रामित कर में के प्रवास के प्रवास के प्रवास के प <del>ठ</del>ररत्र्हेंग्रायाऑन्'नेरननेरनने'यगुरानु'ग्रुन्'नरन्तु'तृत्रापय।

महित्यां । महित्यां । महित्यां । महित्यां । महित्यां ।

न्यार्क्स्यञ्जान्यस्याविद्येन्दि । गर्नेन्यार्नेन्द्वेन्द्रं सं तत्तार्च व । वह्तालुग्यात्र्वातार्वेत्रत्वतात्राचेत्। । स्वाता ब्रस्स्युर्र्स् व। १५ छैर्द्रस्या गुरुष्, प्रश्चे प्राधिद। । इस हैं गृर्स् बॅं क्केश उंदा विंद बॅंदर स्वायात स्वर् स्वराय हिंद र सेवा विच्या सुरः क्र्रेग्राष्ट्र द्वा दिग्रारे हेन्यर दह्याराधेवा । बरः यंदे न्रेत्रः वृं । न्रित्रं त्रा । न्रित्रं त्रा क्षेत्रा । व्रित्रं व्रा म्बर्ना विवा विवास्त्र वार्ष्य विवास्त्र विवास्त विवास्त्र विवास्त विवास्त्र विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त्र विवास्त्र विवास्त्र विवास्त्र विवास्त्र विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त विवास व तह्नाराधिव। विकाराधाराद्वीरात्र रंजा निकिराद्वाराय 5ु:बदा ।द्रमंहिंगःहिंद्वर्ग्न ग्रेमंद्रग्रेमंद्रा ।द्रमंहिंद्वर म्बायाश्वर्य । प्रश्चरायाहि स्रम्प् क्रियायहरी । प्रकेष्य चुर व'लय'र्'ब्रॅर'। । तके'मर्ग'हे'हेर'र्ग्छेब'र्ग्छेब'यहर्। । न्यक्रमञ्चन्त्रम्यत्वेचेन्तरी । नियान्ययक्रम्यत्रम् लग्य। १६ हे तकर मे ग्वर छे ग खेव। । यावर तर्मे हे रावे दे ग्न्यर्ग्यम्प्रेत्। ।हेन्'य्युन्'ग्र्यन्'प्रेयन्'र्ग्येत्। ।सन्'र्ग् वनराक्षिक्षेत्रे विष्ये । नियः क्रियास्य । निवा नुश्रम्याया हेर्न्द्रन्यहेर्यंद्रम्यहेर्यंद्रम्याः स्वारम्या

२्याचित्रवयाव्याय्यायायाः क्षुः ग्रिण्यात्त्र्वाः चीत्राः क्षेत्रः क्षुत्रः स्वित्रः क्षुत्रः स्वित्रः क्षुत् सात्र प्राप्ते व्याचे राग्यायाः व्यापः त्रापः स्वित्रः चीत्रः क्षुत्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्व

हे स्रायं इयरात्यं स्वतात्यं | प्राप्तः हैन रुन्ता सुपरा हु बकी | वीं बहुद् में द्रित्र प्रमा वहुद् परि त्या क्ष मर्द्रम्य। |इतार्य्वेर्र्यातारयायाय। । ग्वन्यपर्र्युर्यार्थ्वेर्य मेर । रन्यन् बुंत्व कुंग्य पुन्। । बुं निते बुं खुन्य निन् रं म् । विश्वें विश्वें कर्पां विश्वें विराधित विश्वें यत्व्याद्वे स्वाप्त्र व्याप्त व्यापत व् 저자다'전' 첫'월| | 다' 자다'원'대'자자'다'월| | 35 '다'축'産' 저표다 हेद'री अिंप्तिं इंद'शुन'ग्रेंद'श्रेंशां । यद्वेदाहे संनेद यनर'री । खण'कु'केव'र्सि'ण्द्रव'ग्रेश्ड्री । वेबास वु'र्स'राह केव' री दिन्दारायहत्यल्नव्यन्द्रमुक्ष्ण्या । यः त्रव्यर्धाः र्दः दे। । इन्चेंपिविधीप्त्रवाधीयार्थे । नियम्बें रीयराम् वेराक्तिमह्द्रियाश्ची । ध्रम्य देराये द्राप्त भ्राप्त श्ची न्वेग्रावेन्'रन'ग्रामाञ्चेयपाञ्च। । तह्र्य्वेन्'रन'ज्ञाच्चेन्'या ह्या । ह्या प्रमान स्थान प्रतित्वर् म्युव्या अति वा । हिंग्यः स्या क्येत्रे में यं क्येत्र क्ये क्येत्रे म्यू तरे गर्ने व गुरे व के के द द प्राप्त व । इव व के व में व कि पा व व व व व व हॅगरापाकेदार्यसम्बद्धान्यसम्बद्धाः ।क्रुपानुसपाकदानीः गर्रापः मैक्ष नेव। । १६ न व भे नेवा की कर प्रकार ने न । दिन व हिर दिव क्रीभूमानाया । विस्वापनि ह्रिंग वी क्षी मूमानाया । विषया मून्यया रग्'म्प्'क्रेर् ञ्चुग् ।कॅब्रिंडेर्'ग्रेंपर्'प्रबाह्यर्विष्'यज्ञुर्वा ।व् मत्रे मिन्द्र हिन्दि । हिन्दि सेन्द्र हिन्दि सेन्द्र हिन्दि । त्वरावरीयॅन्द्रिनेर्द्रवरातकी । न्यंवयार्थेन्य्र्वराव्याः भुः गशुक्षार् रः रुद्धतात् हुँ रः तक्षे । इतात् हुँ रः वे पते वर्षार रो । रूअतुः चुनः स्रायम् रायते । विः सूनः नः विः स्तिः रं विसर्वनः। । इ.रेश्यप्त, संग्राप्त शराप्त । श्र म हैं हैं पुर्व स्वर्ग राया हैं । स्पन्नामन्त्राम् संस्थान्यायते। विदेशायते हितुः सन्याने दत्र षा विषात्रें स्त्रे पते दे तरे तरी विषाय मु में मार्थ मदी विन् द्धन के व् मंदि सवा सामुना । मा वारव वारत द में वे चविषाग्रीय। |र मद्यानगत्।चज्जून् च्यां ।ग्यत्रे जून रे:वायम्बायते। । न्ययागुन्दुः चत्रनः चॅते रे:या हुँया । ५ र विन् स्य व्याप्ति वित्राचे वित्राचे वित्राचे वित्राची हेरहरूरमें दुर्द्वया विवागशुर्यायया न्यारा नेव दुराव हेना व्याह्मात्र्य्यः प्राप्ति न्या श्री त्राया स्त्राया स्त्राय स्त् क्वित्याव्यादः श्रीत्याद्वात्याद्वित्रः दास्य व्यादात्यास्य व्यादात्यास्य व्यादात्वित्याः विवा """"

मन्यकाराः मृग्यां महारक्षाया न्यायदे । ই'ব'ট্র্ব' **पॅन्'ग्**वैश्रप्यत्त्रग्'मदाराक्च,ग्रन्यत्याक्चेग्रात्रप्रस् व्यव्यनेग्'''''''' हे'नर्ड्द'ग्रेश'न्तु'र्वेन्'ग्रन्'प्र'न्न'पठर्गप'श्रन्'र्यग् महारहाराया सुकार्यः न ने कान्मा वाहिना चाहिन चाहिन सुकी निराम गायाचा या वदाग्तुअवॅति'शेख्नरपर्याष्ट्रर्पर्दिर्'नेर्'वि'र्न्य्'स्व'रु'पर्क्रेत्रप्रश न्याम्यातहन्यायत्न्ये हेन्द्रम् म् नत्न्यक्षेत्रात्ना **हे**'नमॅंद्र'व्यातह्य'अप्तृव्ये केट्र'तु'क्षु'नतुव्यमॅद्र'व्यार्टे व्यारी'''''' त्रिंतर सिं क्षेत्राया हुना व्यन् पु वर्ष प्याप्त देवा है। यह वर्षी तहना वर्ष वर्ष द्धरः चर्ष्यां गुना ५५ना दे गर्दु न गुना रामा । ष्रे बाह्य न्या व्यापा कर्षा या के विद्या वि सन्य न्युद्धः स्था ५ अपि दे विष्यु ऍनॱहनःयाष्ट्रप्रेयत्त्वान्ते। ह्विनःचन्द्रनेन्नेन्यप्रेयद्विन्द्रायत् व **अॅं**प्राच के राष्ट्र क्रिंत्र चित्र प्राचित्र प्राचित्र चित्र प्राचित्र क्रिंत्र क्रिंत्र क्रिंत्र क्रिंत्र क्रिंत इयरागुर्भ् हुँ न् गरेग्पर पर्प्रायर त्र्ग्य गुरुर् स् स् । ने दर् सह त्रधुत्मग्रीश्रर्भर्भर्भागव्याशुग्नेन्वराह्य।। क्रम्पतिःक्र्र्सर्म।।

## শ্লীর'র্ব, শ্রুশ্রম'ইরি'গুল্ম'ড্র'ব্র'র্ম্ন' ঐ'ড়'ভ্রন'গ্রুশ্নাব্র্লার'র্মিন্

व्यंभारा है। नर्वव्यं व्यं त्रां त्रां न्यां ने त्रं न्यां व्यं त्रां न्यां व्यं

त्यविन्दिन्यम् प्राप्त व्याप्त वित्र মন্ত্ৰাম'ন্মা र्वेन्'र्ये'सुन्'र्यं'र्केशयान्न्'र्यं विनाधन्'र्यं नेया ব্দ'ব্যা ण्वत्मुश्यार्स्रस्यरहेर्प्रदुव्प्तङ्गेव्प्यगुरःष्ठस्रम्यरः प्रम्यसः॥ **८व'लुब'द्यान्झॅबबाय'वेव'ळॅट्'य'र्]** ८क्के'द्र्र'ग्रैब'चेवबायते'ळे| ॲंन्'हे'पर्डुव'न् यॅव'म्ऑग्'अ'सुख'अ'ग्वस्थत्नेव'लुस्। 到了'不下 इयरागुर्छेत्रितेंद्रेंप्रयाधियास्य परिक्राग्रीस्य विष्टे र्विन इसका वन भेग वा खुर्का तरु गामा निमा है मर्द्ध न प्यामा श्रू का खुराखा इत्राक्षीर्मेष्यव्या सुर्वेष्यकीष्यन्यन्यन्यम् । स्वार्यम्य चुरायम। रेजेन्पानेन। नयामनपदिष्यको वन हैन्ना हेन व्यातके प्राधिव। हिन्द्र यसायत्र मान्या प्रवासिका के प्रवास यम। विनः इसरावः ने। देवः विनः निनः ने रापः यविनः प्रतः ने रापमा ৾ ৻ৼ৾৽৻ৼ৾৻ৼয়ৢ৾৽ৼ৾য়ৢৼয়য়৻য়৻ৠৢ৽য়৻৽য়য়য়৻৻ৼৢ৾ঀৢ৾ৠ৽য়৽ৠৢঢ়৾ৠয়য়৸য়৾য়৽৽৽ त्त्वाप्यवा हेप्तर्वाचनवार्द्रम्यानेवाचेरानेप्तराष्ट्रराहे। निवया चॅब'चॅदे'विक्वेबबादविबाहे'वर्ड्ब'न्चॅब'क्वॅव'द**ग**दाबुब'५८न्बिहेर' "" |पनःविषाः कृतविष्या नेंबानं इयवा ग्रीकार्य पा कृति । प्राप्त पा कृति । त्रिरशिस्यान्वपूरविप्तिव्यान्धिः हिष्ट्रायां विष्ये। स्त्राप्ति विष्या ८५ग'रा'से' नृक्ष'वर्षेट्र'र्र्'। से'नृ'त्य'र्वेद्र'र्से द्वर्ष'द्'रे रश्यां न्यां देन् क्षियात मराही देन् की क्राया मिन संवादन सुवादी ष्ट्रण्यायत्री त्र्र्वां यावेन् चे रायक्र यावे राष्ट्र होन् केन त्रुण्याये """

हराहे पहुंच याव्यापया ने पदिव में वे वा है पविव स्वरा भेर के मत्रे मुद्द स्पर् मार्थ दे पर दे द्वाराया दिने हे द स्पर्व द्वाराया **ॕ्रिन्'याहे'नई न'ॐ'याया गृहत्वनः ग्रॅन्'अग्'तु'न्ननः नमुन्रन्यां ग्रै प्यनः** बद्धन्दे के भेन के मार्किं में मार्किं हे पद्व जे शुन्य सहिर नेताया पर्नि पर है पार्र प्रस्प रहे साम र्में ब'र्येते र्रू क्षाताचा हुन्। व्यांके ततुव प्यान बन व व व वे ने ने ने ता प्राप्ति व ने ना श्रन्यने व्यवस्थि हुला विताले सन्याने न्या स्थित स्वारा सुनाने राष्ट्रसा **र्वरः ब्र**न्। ने प्रविवासं बैवायरा गुवा ग्रीका भेना के बाया नना। हे पर हुवा व्रीक्ष'त्रव'रा इसकायाहिन'ळेकामनेन'अयाय याईव'यर' तत्माही पदिन में तात्र सहिन पामिन पहार रायश में न में ते हैं है 'प' सबस न है। है'नई व'ग्रेसम्वित'रा महेन्यायायाया समहेन्यान'यासहिन्द्रर हूँ त'लु या या हिया व हिरा व हैं व कि तया न य न सुन मित्र की या न वी इतिर्ने याश्चान्यस्युर नते सु'या निव् दे पार्ये सम्भयाया विवा ने दिव व्या ततुः वारेन प्रवेगातुः क्षेत्रात तुगाः है। नवान द्वारा वर्षा देंन्पन्याः कयाः सम्माने स्वराधाः अन् स्वराधाः शुक्तेतानःभेवःगद्यन्ताना र्यर:र्'त्तु'रे'वर्यरक्षेत्र'ख्यक्षित्र'यर'वु'र्र'वु 'च'त्रा हे'यईव' मुक्षार्द्र व तर्दर विषा पश्चर। देर ततुका पति की इसका पर प्रकारी प য়ৼয়ৢয়য়য়৾ঀ৻য়য়য়ৼৣ৾৾য়ৢ৾ঀৼয়য়ৼৼঢ়য়৾ঀ৽ঀয়ৼয়য়য়য়ঢ়। ৼ <u>ॕ</u>ॺॖॕॖॸॱॸॸॱॺ॓ऀॿॖॱॴऄॳॎॸॺॱय़ॱऄॺॱॺॺढ़ॎॸऀॸॱऄॕॺॱॱॺॹॖॸॺॱय़ॸॱ।

स्थाप्तर्भे क्षां प्राप्तिन निर्मा क्ष्रिया क्ष

हे'न्न'याद्रवयायापावॅयपापत्रेपया ।य'यप्ते'न्नेव'यव्यप्तेपर पर'त्यपर'हेरा'तुरस्। | दस्यः अ'स्या'ग्री क्वें अ'सु'न्र'। । स'येश' द्वैन क्रीक्र मार्ग भेरा । क्रु. यदे खरा मार्ग मार्ग हा । इस मेरा मार्ग रोबरायानश्रेय। सिवरावेन् कुतानते सुग्यायानहे वय। । सुग्य ह्यातहरादेन्'वेन्'विययन्ना । अर्थान्नन्'क्रेंन् से से से स्वरायक्षेत्रया । स्र र नियानियान् स्य विषयि । र नियानियान् स्र निर्मित्रे नियानिया शुःदर्भा । स्वायान्यः स्टाः स्टाः स्टाः स्टाः स्टाः स्टाः । स्वययान्यः म्रात्विवरापानितात्र्रम्थ्याच्यात्राच्याः
म्रात्विवर्षापानितात्रम्थाः ष्ट्रन्। विवयः स्टार्श्यः वेदायस्य विवयः यो । विवयः व सुर्यः विवयः स्वद्धरहे। वियन्ग्नेबाञ्चनपानेन्पत्रेन्पा । व्यवस्त क्रिन् हेरी प्रमास्य वर्ष निवा । विवाधन वर्ष वर्ष वर्ष क्रिन् क्रिन् वर्ष रेग्राह्यं तिर्द्यति हें कें नरुत्। । नने वित्त्त्यं प्रति हें युर्वा मञ्जीग्या । र्गतः विराय हे साम दे सिर्मा जुन । पर्ने पा उन क्रिविन् [मबबार्या | न्यतः मन्यतः स्विन् स्वीक्षण्यः मन् में क्षेयं के 'न् में का में 'न 'इवा | विकाग् शन्याया में न में बर्डर के के

म्'हे'सूर'यहंद्'लु'त्रते'त्व्रुद्'यगुरत्दे महुद्यस्

हे' तर्जें पर्वः वर्षेत्र त्या गृर्वेत्यापाद नेपया । म'वरि द्वैत् यत्र ন্মিশ্বশন্ত্রীৰান্ত্রীৰান্ত্রন্থা | দেখানন্টিৰাপ্তিৰাৰান্ত্রিৰান্ত্রিৰা | तरः देवा व्यवस्य तरे द्वे 'र्ह्चे व्यवस्य में द्। । कु ५ 'खरः दरः अवः 51 रग'नी'तु अपा'तु । सर है व'हु ग'नी हु ब' करा हु गवा । बेर झु त ग' से दें ब्रेन'म'ब्रुर्य। |नगर'नकुर'ब्र'बरे'नतुर'के'पेय। ।सब्र'रग' रीयसामान्यनः पति पसुन्। | हिंग्यायस्यया क्री रेआपा इसस। । न्द्रेरबेन्'यन्'व'केन्'र्यर्यस्य भि'न्द्रियंन्द्रेरबेन्'रीकंकं न न । विष्यं वेद्रायते विष्यं विषयं तुरासक्रिता । महेन्यं तन्नरायेते सक्रिता । हाना हा हेन् चॅते'चर्चे'च'या । तराचे बद्दा द्वा चा ची क्वेंदायया च हुना । न द्वा न्राम्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्था वेद'ल'नमुल'नदे'यगुर'दर्" गुजुरकार्स् ।

 工場点、口刻
 1
 1
 1
 2
 2
 2

 四十分
 1
 1
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2
 2

र्र्स्यानेश्व । वर्षां पश्चमश्चरा केश्यम् । श्रे वेर्पराय न्राम्या विवादक्रायायन्त्रीनात्र्वायायन्। विवादवेयाः ब्रा.चात्रा इ.क्ष्यायायव, ब्रेच.स्था. विस्तर्थाया क्रैन्हें अक्रेशपय। दिंग्येग अपिन हिंग गर्न ह्यू यन। ।यनय क्षुराक्षे चैं पश्चित्रया पर्या । हें राया बेरायर दें राया वृत्र । विश्रया क्वार्यर्वाताश्चाम्बर्धा । मास्यानुबद्यागुरावित्राचितानु न्दः सहब्दार्य र के ब्रुवाद्य । वे प्राधेव कुराय्य प्राप्त । व्रुवाद त्यन्य द्वारा वित्राचित्रं प्रतिकी विस्थान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान क्रिट्र व बाक्षुण बाह्य के क्रिया व। । तस्य क्रिक्र के वास्य क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया धित्। विः सन् दे पर्वत् क्षे श्रुपः पर्या । ज्ञिष्यः प्रवत् स्य ग्रुपः वे त्रजुन्'यन्'। । अञ्चरम्भग्'नम् त्रम्भग्'नम् । विन्'त्रेन्'स्नेग् श्चीय'न्ग'न्ग'त्रा। वियागशुन्याद्याञ्चेयानुपाद्या'पयाव्ययार्हेग्या ष्ट्र-प्र- रुव् क्रेश्चर्पाय हे पर्दुव्य वहे साव्या क्ष्यां या वित्राप्त वित्राप्त प्रेति । मित्रशुर्दि ग्रुप्त्रार्थ।

वित्रित्तित्ति वित्रित्ति । वित्रित्ति वित्रित्ति । वित्रिति ।

क्रिन्द्राधित। |रद्रावर्षद्रन्द्राह्यायाक्रीन्द्रन्द्रा ।गह्यप्रयाचन्द्र धिन्दरम्बन्दर्धित्। विवयानेन्दरम्बन्दर्भात्व। विवया मुर्यास्तर प्रियापापीय। विस्वययान्य श्रु परुन् प्रापाय। विविद त्र्ति चैन क्रम्यत् हृण्यपेत्। । सेवस्य क्रिन् सर्ने न् येन पान्। । इयाब्रेबाब्रेनाचेनापाना ।क्रियाध्य निन्दा हेयाच्याचा । पाना कुल'न्गुन'न्न'अवअ'रा'धेव। सिवय'ल'र्वेग'तिविद्यंवे'ग्नित्द्।। र्मलर्चेर्मल्यल्बंबाम्बान्येवा । होर् ह्वर् क्वार् न्यस्वर् नेवावा । क्रबाश्चित्। न्यतःव्यानश्चरः वाष्ट्रेया । श्चायादेः ताप्याया नृताया चैत्र'क्रपश'न्द्रशाश्चा'त्रचुन'त'भेत्। ।विन्'नेश'पर'ग्रीश'य'न्यशासु व्या । त्रा गुद्र त्यने श्चित्र न स्याय श्चित्। । देवा गुरुत्वा स्या मे न्या दे न्या वित्रा मनः उन् के सद्यायु साइस्यायी श्रीनः मति ते पान्य सुरामाधिनः विनः। दे'तुबाक्वीर्वेब्र्चं इबबाकुर वे ब्रेन् पति न्न्यं मैं यापर कुर है। न्वैवर्द्वत्युन्यंहेते द्वन्यः यु-दन्श्वेन्वं ये कृष्ठन्द्वत्यः यर्ग्द्रप्र 第六天 1

# मिल्दान्यन्यस्मिश्चरस्मायदेश्वर

ब्रायां मुत्रा है' पर्युव्याधारमा विषा भी सेवायाध्या समाधारमा समाधारमा विषा भी सेवायाध्या समाधारमा समाधारमा

हिन्यम्पद्रिः हिरक्षेर्याङ्ग्यद्र । र्रा व। |श्रे'त्राश्चे'र्वरर्राष्ट्रीयायेत्। ।श्रुयायान्वराञ्च्यापीवरात्त्रा वा वित्याह्वं तर्द्रां वित्रम्या । त्यास्त्रां विद्यात् वित्रं षेत्। । ध्रताश्चे द्रप्पययश्चि प्रवाधित। । ध्रमारव रुषा रव श्ची यदतः वातरी विरायारेन्वर्वराळेष्यरात्तुम ।हॅमायार्डेर्केवरायरा तत्व दिवा हेव प्रवया प्रकृषा में हुँ द्रायम । मार्वे व दुर त्विग्रां या खेत्र रा केत्र वित्या । नव्यां के ग्रं हु अहेत् रत्या विवा विवासिक्त वा की विवासिक वा व तम्पाईं न् 'विप्तन् ग्रुन्हें। ने न्वर्ण्यम् पन्यां संस्थाने विराम्यानित र्रायां स्वाविषाम् रायां रेका प्रकृत्यम् स्वाविष्ट स्वाविष्ट स्वाविष्ट स्वाविष्ट क्षियावेशाविशाय। हे.यर्व्य, द्व, द्व, प्रांक्ष, त्यूं, द्व, हे. हे य् युपा बर दुर है र्डं अ ग्रात्। रे इयक्षि वर वक्ष मुत्र वित्र र्ं देश बहैक वियापय। हे पर्वन के वियानय। विन के ने में में में प्रमान के में ने संवर्ध र है। मारायावर त्यूंते खुन पङ्गात ने प्रविवर्ष न हैन। त्र्यं द्वातर् तर् शुरायाध्याविषावगुरत्रे ग्रुट्यस्। ।

ষ্ট্রীব'্ম'ন্ম্মমারীম্মারী (জুব'্র্রাম্ম গ্রহ'র্মার্ট্রমারী केन्-नुःसम्बाक्तुवार्षेयायम्भिष् । अर्थेयायम्-नुःयन्गःन्ने दर्नेया मेग के न मु या प हे न द र ने । विंश ग शुक्ष ग न र या प दे शुक्ष प हु र है। धिन्'य'तर्नेन्'य'गुब्'शुच'डेन्'। ।स्व'ह्यंब'ध्य'ग्ब्यंग'बे:ग्रेन्'स्य । त्रेरः धरः प्रते वृद्धः प्रवेदः द्ववश्यीय। । क्षेप्तः प्रवेदः द्ववस्य प्रदेशः र्श्वेन'न्न्। । तिवस्निन्निन्ने श्वेन'त्यस्य वयस्य । स्वन् श्वयः वयः यान्वराउन्'ग्रैरा । वरायदे'र्ज्ञन्'स'न्द्रन्'यांभा । परानु'न्द्रन्'या वि'गुरकेन | देश'न्युर्याया व्यायापर'व्यायह्व'त्युर'गुर' तिहुँ व्यामें स्वस् प्रकृष्णम्य स्वर्मात्राम् स्वराहे प्रविष्या स्वराम् प'य हप'प'लय। हे'पर्ड्र कें'वियाद्य। र'स्र स्थाय खेंग्या रेर सुन्दर्स्प्त्या द्व'न्न्याद्वय्युन्द्वर्भ्यून्'य्यके। न्त्रहे च'चञ्जुग'रु'ग्वव रु'दर्जी वाकिव'र्च ने ने नरायात ने प्वव देशी ग्रुप्याद्यायगुरादर्गम् ग्रुप्यार्था ।

हे बहर प्रवृत्त विवास स्तित्। विवास स्तित्।

प्रसम्वाक्ष्यस्य स्वाक्षस्य स्वा

दर्भेग्रायानु पति वर्तु पत्र पत्र पत्र । । क्रें वर्त्या गहेवर पति वर्तु त्यत्र देत्रत्त् । भूत्राभूत्रा शुर्वे वर्षा क्षेत्र हेते क्षेत्। । क्षेत् कें या पति व र पु र से व र या ग्रामा । स्या कुम प्रमापति व पु र त ह्रिया हिमा त्त्व । त्र्वात्रात्रवात्रात्रात्वत्यात्रात्रात्वेत्राचेत्वा । तरत्रेत्रे ळें न रा ग्री प्रें न प्र प्र प्र प्र वें द सम्म । । प्र या पर दे द के रा भेग या तु सान । । क्षे देन:र्ने पस्न 'प'रन'देन'धेन। | त्रायन में त्रन्य प्रंड्य त्र भिद्रा। विद्याग्राह्मरवायदा। वित्रह्मवायदानी नेपिविद्यान्तीन यन्य। हेपर्ड्वाकार्येन्यान्वान्त्रिकान्त्रां केर् सुग्'पत्रे'अर्ने'व्'र्यंत्रःविष्'र्यंत्'यंत्'र्'त्'व्यव्यश्हेर्यापव्य'द्रस्ति'य''''" ग्वरव्राम् इवरामु व्यामुक्ति हेव् मुक्ष ग्वर्ग व्याद्यका मुक्ष बार्क्षराचराईवार्दे।। जुन्दावराचित्नांवास्य ग्न्ययाग्युम्यप्ते र्रूर्र्

## 용'를'되써도'극라'했지

त्यं गुडि हेपर्ड्निया स्वाप्ति हिन्द्रिया ह

विष्वुस्यात्। हेम्पर्व्वप्रियाण्यात्मस्यात् स्यात् स्यात्

बर्टन स्नाम् वर्ति वर्षा तात तुन्। । या ने न न ता स्नाम स् व। । तर्वार् पृथ्व न्याया पृथ्वे श्रीव। वित्र श्रीवया यावायायायायाया है। विंभूव प्रस्त व्यक्ष प्रमाणिय । हिव प्र बर्केन'न'सुंचकुप'न'न'सुंर्स्य। विंक्ष'यर्यानन्नन्यंयायात्रि विं र्षेत्र्र्ज्याम्नर्दि प्राचित्रस्याञ्चित्रयम् । र्ज्ञ्याम्नरं र्षेत्राप्तरः स्र इन्गुन्। । राषीयीन्ष्राचीख्यानेन्त्। ।हिंग्नाहास्याचनान्यः कुँगरा । मिन् मून्याकायायायान्। । के ह्रवार्यसम्बद्धान्यायाया इयाञ्चेन'भेन। ।रोराञ्चेर्चेत्राप्तेन अतास्न गुन। ।हियाग्चे हेत्र छत्रै अपेन्त्र। निवार मेंन्य हित्य कें प्रमा । मात हे त्र का के तहे हुँ ५'रर-भेषा । इन-र्ने गुन्दर्ज्यकुः स्पन्। । वर् ५५ ग्रंथिय पतिः द्वाव प्यर्केषा प्यति। । द्वाव मिन्द्र स्वावी मिन्द्र स्वति। । व्वाव विषय र्स्त्रक्षेश्चरह्न्द्र। । अव्दर्गाम्बर्किशेगार्थर्। । क्रिंगहेका तमेन् न्यावी तमेन् मिन् न्याने विकाम सुन्या स्वका बर्ह्मण्डू-प्न-प्न-राष्ट्र-रहे। निव्यत्स्याप्त स्वयः प्राप्त-पार्व-राष्ट्र-रखे ষ্ট্রীন্মের্ম নকমেপ্রম। শৃকিশ্প্রশৃষ্টি মানর নকামার্ক শৃষা হ্ব

मल्यां गर्डगः सुनः मध्या द्वा ने'वर्ष'हे'यर्बंब'न्रेंच'र्क्षेय'हरार दिन दे द्वान्य रव य रायेनया है। सुन हे विन यास्य यादा ने दार व निन इन्दर्भित्युत्र्व्याय्या इन्हेन्यम्दर्भेव्यव्याय्या ५५'रा'के'प'विषाभं ५'तेर। देराईं व पश्चि बरासं विषा के प्राच व हेरद्याप्या हे पर्व द श्रीकार्य द पर्ना हिंद श्रुवा संविदा येव हे र देन्'इवर्यात्र'न्'द्रवर्याकुंद्धंन'बुद्धन्यवा विंद्रेन् **ॅं**इंग्ड्रेर'व्रेड्रेर'ग्रेशश्रायर'तर्ग्य'श्रे'स'रश्रप'त्र'व्यहस्य व्यवस्रंग''''" त्रवायान्येवाने। देन्'रन्द्रवर्गन्न्यहत्यन्देन्न्नत्यान्वेत्रत्यानेत्र हे पर्व व मुकाकी ताम रमाधिव तुरम उमामका कंप में महार किया म्युम्याया विवाने विवाहे पर्वविवासियाम्यापने सून्याम्यायान न्येर्न्त्रत्वकाक्रंत्राम्बुन्यावेषायन्यरत्त्वायव। नेन्द्रवस्य क्रियत्व क्रीस्त्र छ्वे क्षुप्त विदेशाद्ये ताद्ये प्रचार विदेश क्षा क्षेत्र विद्या विद्या प्रचार विदेश का हेर्न्यून्यित्रव्र्र्द्रियर्द्धवर्ग्युक्षिक्षिर्व्यत्र्र्वेष्य्यत्र् X11

वदात्रीं पळ वेर प्वा । ज्या श्रूप वा वे प्राप्त वा विकार वा वा विकार वा विक ह्यापायानेराराया । क्षेप्रतेषे ने यारीप्रकर्त्त्राप्त्र । । यारायार **ष्ट्राय्यायायायायायाया । व्याया व्यायाया व्यायाया व्याया व्यायायायायाया व्यायायायायायायायायायायायायायायाय** हुरान्न-पायानेरायम। । ८क्वेपान्नुयान-पायानेरायम। । हुग्पर क्षेर्भ्न'नेश्रापाधित। । सर्यान्त्र'ग्रॉन्स्निन्यः (स्त्रा । ग्रीन्यः ॅब्न'रा'र राज' अर्घे र'। । श्वेन'रा'ठन'तुन्'ने'श्वेर'र्घे त्र । । नर'राहेन' यहेव'य'इवरायक्रग्याधिव। |५वाववरास्व'यास्व हिर्दर।। न्यान्यवान्यवार्षाः स्प्रान्यवागन्त। । कॅवाज्ञन्विरापतेः र्वेवया त्र। ।ग्रारेकारेकाराइवलकुलाव्याग्रा ।ञ्चाकाञ्चनार्रा **ढे**ग्'र्रो'नर्रे'स्रापर'र्र'रर्] । गर'मशुर्रुप्य सुर्याप'द्रवर्य कुर्य वसान्त। । समान्तिका श्रीनापतित्रिमार्सेत्र। । व्याप्तिसा बादन'इबर्यारमान्यान्ता । तिरित्रात'तुना'नी छेत्रमात्ता । नाता श्वेताश्वेतायाद्ववरार्श्वेत्वेत्वात्ता । तक्केप्तन्यानेव्यतेशीयार्शेत्रा। यग्वापस्यादेवस्य राज्यसम् । |देवद्वतेद्वयम् केवाञ्चरकंवा। न्यापतिः कॅस्पेनिषाः अपन्यापा । अर्थेन् सुन्याने ने वाहन येन्यान्यान बेर्। । शुक्ष विपञ्चत्य प्रत्य प्रतिकेवा । प्रापित केवा यात देर् बादवां वेत्। विवित्रानि हिंदा निष्या स्वा भवा केवा । हिंवा भवा केवा स न्नार्चनान्तेन्। विद्यानातात्रमञ्जिनाञ्चेनान्ते। विद्यासनान्त्रम कुना हुना निर्म । विमान निर्म निर्म । विमान निर्म । विमान निर्म । विमान निर्माण । विमाण निर्माण । विमान निर्माण । विमाल निर्माण । विमाल निर्माण । विमाल निर्मा

म्ब्राह्मस्य विवासिन्त्रे स्वास्त्रे स्वास्

र्मन्कुंग्रेन्'केव्'स्रिंग्रन्नेन्व। ।कॅश्वंन्'येन्'स्विन् चर्रः इति कर। । तम् इवरा चरे के वाययायात में नाय दिना । हे भिन्यविदार्वे र सुद्विन्यान्हेन। । नेवनेयान्नायितान्दिन षर्द्र। । क्षेत्र'तर्देरपतुत्रायात्रायात्रायाः । विद्र'त्राविद्रायः न्यन्दिन्रस्थेत्। । मुर्यारायेन् अ्राञी मन्त्रिशे । मुर्यारादेग त्रुतिः हुतः तुः प्रतः वितः ग्रत। । देशः ग्रीशः देशः ग्रीशः परः वितः ग्रत। । त्र वृत्ताया विष्या विषया हेग ल्ला रु विर निर निर । । नर्डन चनका नर्डन चनका कु विर निर ग्रत। । कें तरे तारूराचात्रम्यारं द। । तके ना सर क्रेया मार्त है। । तके न विन निमानिका की स्वार किया नुष्य निमानिक की । स्टिंबेट्निर्वि । मुब्दिर्वेद्द्रिक्षेत्रं वृश्व । विर्ट्टित्विग्रं चलेन'र्'स्य 'वर्षान्ता । नरकें र'र्के रेग यर तम्म की । तके मन्यायात्रदेश्यविवासुय । क्षेत्रने न्नः है 'यामनः में यहाया । हार्यन मविव्युत्रु मुत्यात्यामञ्जीषाया । सम्पत्र स्वासेन् की सम्पत्र स्वासेन् की सम्पत्न स्वासेन् की सम्पत्न स्वासेन् ग्रा । वित्रंभेग्यदेशस्यायां वित्रंभवायां । त्युतानः भेत्वाय त्रिंत्र्भेष्ठ्य। । र्मण्केष्ठियम् त्रम्वेष्रस्ट्रास् त्युर्वेत्रत्र्त्व्यत्व्यत्विष्व्यात्वेत्त्वः त्युर्वेत्रत्यत्विष्व च्छ-प्यान् । प्रिकृतिःश्वमः प्रस्ति । विकासम् विकासम

प्रताम् र स्थापा | प्राह्मण स्थापा | विकास प्राह्मण स्थापा | विकास प्राह्मण स्थापा | विकास प्राह्मण स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्थापा

### न्डराप्टन् डे'सने स्ना

द्रांगुर्व हेराद्व विशेषात्र स्वापं के स्वाप

पर्वन्तायहत्यत्रमञ्ज्ञमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्त स्ययः ग्रेस-त्यायन्त्रमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्त्रमञ्ज्ञात्तः विद्वनः श्रेष्टाः विद्वनः स्वायः ग्रेस-त्यायन्त्रमञ्ज्ञात्तः विद्वनः स्वायः विद्वनः स्वायः स्वयः स्

मन्'यायकैस'मन्'वॅर'ग्रुन्'। ।तनु'तहे'वेद'पति'ग्रेन्'म् र्रा न्देग्स्रर्र्त्र्रर्त्त्र्वर्ष्य्यात्र्। व्रुःह्वन्यत्रेत्रात्रेत्रत्रः व्या | वि'वेद'ख्द'न'द्वेद'पर'नदे। | तहेन'हेद'हुन'ने हिंद व्याञ्चरवा ।तस्यानु'न्यंन'तह्ना'येन्'ययन्। ।यावरातर्न्न र्मेक्ष्य्रमञ्जूनकापन। विवनाम्बन्धर्पतेनवन्त्रेन्।। श्च पर्मेन प्राचित्र के प्राची | विष्य के विषय के प्राची | विष्य तर्ना ने न वात में न के न में किया | न न कार व की न च न म कर में । न्द्रान्त्वुत्र्र्क्त्राप्त्रान्त्र्यात्र्यत्र् व्यापन्। । व्यापन् व्यक्षिण्ययापन् वुन् पन्। । वीन् वित्या इयराहग्रान्यो । सुरराकुरायरे परादर्ग्याया। वेदा नुब्रम्यान्यान् भूमाने व्यक्षित् अञ्चराम् गुन्याम् नुम्यान्या रश्राया गुरुषा व्याने से देवा या हुषा व्यान व्यान व्यान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान स

प्रस्तर्थाः स्वार्थाः व्यायम् स्वार्थाः स्वर्थाः स्वार्थाः स्वार्थाः स्वार्थाः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्थाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थाः स्वर्यः स

च्याक्षण सम्मान्त्री व्याप्त स्वर्णा विश्व व्याप्त स्वर्ण विश्व विश्व व्याप्त स्वर्ण विश्व विष

स्ति । विश्वान्य स्वराया प्राप्ति । विश्वान्य स्वराया । विश्वान्य स्वराया । विश्वान्य स्वराया । विश्वान्य स्वराय । विश्वान्य स्वराय स्वराय । विश्वान्य स्वराय स्वराय । विश्वान्य स्वराय स्वराय

ब्रह्मराष्ट्रायम्बर्गा विद्यायस्य स्त्रास्त्र स्त्रिन् विद्या वि

र्म्यारात्त्रक्षेत्रस्य व्यवस्य व्यवस्य स्थान्य विद्या स्था ।

स्वा स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्य स्थान्य ।

स्वा स्थान्य स्थान्त्रस्य स्थान्य स्थान्य ।

स्वा स्थान्य स

रश्कुत्रः यश्चित्रं वृश्च यश्च श्रीत्रः त्रिः वृश्च दश्यं। ।

रश्कुत्रः यश्चित्रं वृश्च यश्च श्रीत्रं वृश्च वृश्

ष्ठिः दे ज्ञान्यान्मः स्वापान्ते। । ज्ञन् दे न्यायाययात ह्यापार्येव।। धिने मः ऋनः देवः तायावया । वययः ग्रेनः देने नः ऋग्दः तेया पश्यकृत्रकृत्वात्वात्वात्। विद्यान्यवात्वात्रात्वा। यत्त्वप न्दिन्'निक्के'भय'र्'नेब्रस्ट्र्र'द्रक्षद्धवारागुवा छ्वेन्'र्'युर'द्रवारस्र हे.वैट्रापराचनश्रद्धांश्रॉट्रायाक्षांचा इयश ही या लुका यथा। केंका यक्किन कें तरेते'मॅश्चत्रक्षवया । वन्ययमः दे 'येन' सुधियत् सुन्। । इयय र्र् केर हिते शुख्याया । व्हिन्य नहे अ ख्व प्र मेन प्र न निवा प्र निवा प्र त्स्र । । नगर्याया चुनः छुनः वैनः छेनः नगर्य। । क्षेत्रेनः यापतः त्युतिः नम् क्षेत्र हुन्। | वेदाना शुन्क की | यन दुन निकेन नी है। यह नु ॅॅंट्-तु'विषा'ताव'हीव'र्ड-पॅर्ग',सृ'वेव'द्रश'ने'निर्मेष'र्गुव'रा'क्षेश'रा'हे''''''' मेगाळेव में र स्ति हे हे लेवाया । तिर्विर य र गाया **নর্ভ্র'ম'লুর**'মঝা कुन'र्स्च प्राति । सुन'तर्बायत्व'र्'न्यस्य न्येत्। । ने'न'गुव्यक्ती रेगदराय। विदानहारवार्य। यम्तुनाविनानिके ययानु देर सुवर्गिर्मेग्र,म्मल्य रहार्द्रे वायेन्या सुरायार्गु क्योग्रेन्यायार्न्याया विगायायक्ष स्वाप्यायक्ष्में हेन्द्राय्यायक्षेत्रायायकां श्रीकाराग्याय

मा विद्यान्त के व्याप्त विद्यान के विद्यान

तुःग्रिगःग्रंवःन्तःरशङ्गःय। विन्द्रितःवन्शःक्रेवःयः रगःभवायम् विभान्यस्यःमङ्गेवःवुवःव। ।तमन्वेनःगन्ववःसः

श्वायात्रायात्र वित्र वाळण्यातेव्याञ्चरवादवादी । रेविंद्'द्र्वेंद्र्यातहेंद्र्व्व्यादी। **६**मन्नेन्न्सम्युन्द्वायास्यत्युन्। ।सम्बन्द्वायत्र्रंचा **७व। विरायः व गर्यस्य भ्रायः व न्यायः । व न रा**येन् विवा बेर्'बेर्'स्या । मर्'ळेव'त्रस्य स्वारास्यत् स्रा न् र्वत्रप्तर्भक्षर्मा । तिवित्तर्भरक्किष्मार्भक्षा त्रियं यठन् व्यक्षदी । त्रमं केन् स्वर्म् स्वन् द्वन् द्वा । विमा विश्व देश न्वा श्व रायशात हुन। हिं विदेश विश्व रायश्व हन म। [न'क्ष'न्याकॅबान्रास्यायाण्या |कॅबात्र्यंवायार्थाय्ये। मञ्जून पुरुष । व्राक्ष श्रुवान में बाबेन की समा । वित्र वर्त न में न स्व ह गरापर हा । इन्यं पत्र हैं यह में मार पी हा । हि गहेगा ग्रंद'न्न'रशंद्धनाय। ।क्रेन'दशंक्रंशंवर्दन्न्नंन्यंदा। इंश्रुंब्ज्रस्यमहेब्द्रंन्र्ज्ंत्र्यायय। वित्यन्त्रीं स्यान पर। वि'द्यवार्यक्षेत्रे, से र'त इत्यापाया व देव। वि'यहिवा व व न्नारकार्या । तत्रकातुःवानकाकुकार्विचार नेन्द्रा । क्रेंप्रनेदीः पने क्रीन अपसम्भावता | रन शेवल संपान में रापन | क्रिंवाप कुन्'याहे व्'र्डेग्'अम्। विवागग्रम्यावयानवानवानवान्याह्म **र्ष्**र् 'चुर्रा' गुर्र 'त्रे देर 'त म्राम्याप्तर्मित्वम्या संस्थि हैं न्नि क्रिक्षक्ष्या शुरोब्रा कवा की स्वा श्रीका नेपा रेका अगुर्दि प्रायुक्त का ।

स्वास्त्र कृत्या कर् । विस्त्य त्या विस्त्र विस्त्र स्वास्त्र विस्त्र स्वास्त्र स्वास

बियानुसामय। हेपर्युन्धीसामसाख्यापतिहित्याशुः क्षेत्रार्श्वेत्राचित्र वर्षाम्पर्याः

श्रिक्षाया । श्रिक्षाया विकास स्वास्त्र स्वास

पश्चित्राहेग्यस्य । विवाद्यावया । विवाद्यावयाय्यावयाय्यस्य । विवाद्यादेश्वयाय्यस्य । विवाद्यादेश्वयाय्यस्य । विवाद्यावया । विवाद्याययाः । विवाद्यायः । वि

श्रुवायक्ष्माश्रीतिवय्यायाच्यात्वयात्वयाः । प्राचित्वय्यायाः विद्याः । प्राचित्वयः व्याव्याः विद्याः । प्राचित्वयः व्याव्याः विद्याः विद्याः विद्याः । प्राचित्वयः विद्याः विद्याः विद्याः । प्राचित्वयः विद्याः विद्याः

णवः अत्। त्युक्षाय्वतः विक्षः विक्यः विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः

#### नग्'नेश'नहेनश'के'मून।

ब्रांगु'डा हेन्द्रव्यायान्त्रां नित्त्व्यायाः व्याप्त्रां ने व्या

सरअप्तर्भेयश्यम्न्'पदेक्ष्यंदिः एक्ष्याधित्। । अप्नरंदाहेन् षदेतु न्या सुन् तरे भेवा । अलुबान् ये दल हेबार्य हुन या ने। **८**८ : बेर् विश्व प्रतिम्बर के सम्बद्ध । इस देव हेव प्रति वर्षे क्रिंस इव के क्वेता | देश द्वा अवि ग्रात्य व अवव अत्। ब्र मंत्र मन्यात् श्रम् इं स्याष्ट्रीया । वित्यवेन वियाय दे वित्य वि **छे**न'यन। विकासेन'क्रॅंबल'क्रन'मेंपनेव'लेग'न्नन'र्यर'हेंवा। वेस न्युत्वद्या देवप्रस्क्रियोत्रेत्वर्यम्यान्यप्रभावत्यः <u> र्र्रियाप्तव्याच्या श्रुप्तावर्ष्यः मृत्यस्र्रियास्य</u> वाबी नेव पर तेव रात्रेव रात्रेव रात्र वा मान्य वा मान्य वा नेव Rर्-तिष्वेद्रनिक्त्राच क्रें विच्च क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विच्च विच्च क्षेत्र विच्च विच्च क्षेत्र क्षेत्र क्ष हुँ - इं. दे. पा प के बाब बालू व . ५ व . पु पु प कि ट बार्य व बात हैं ने त बात व रा'र्न्न्'यदे'प्रव' हव'यांबे'न्न्'क्'ड्डेव'क्र्च्यक्'बे'तह्रग'र्ने। **ष**र्भेबर्यायानुसाव संस्थित पर ने व हे क्षेत्र ने न ने सार्व र ग्रीसान ब्र--र्'न्नक्ष्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यक्तिन्न्व्यः चन्न्-क्ष्यः महेवान्द्रियः असीयान् अराधेर ने कार्यर गुरान् कार्य केंद्र र में कार्यवारा है। Bत्रवाहत्त्वर्कत्र्त्वर्वत्। यर इ.स.स्वाह्यम् म्यान्द्रम् हेन् श्चित्र स्था नश्चित्र श्चरः गुरुष्य । स्थान्य स्थान्य स्थान्य । स्थान्य स्थान्य । महेन्वराष्ट्रियापविष्यप्राचीक्षेर्वेष्ट्रान्दा वेस्प्युप्तयव्ययगुर

#### **८**दे ग्रुट्यार्थे ।

षदः वृत्र दर्षेत्र यद्गाद्द पा उत्र । । सम्पर् देव पा ते भूवन ने'क्षे'वेदारा विग'रुव'द्यर'ध्यंप्र'हे | सिंह्र'वग'र्सर'च'हे'स ग्नर्। शिश्चेर्पार्विञ्चर्रार्वात् । वर्षाञ्चर्षि प्रचराषे प्रचरा बेरा । शिक्षें सॅर'य शिक्षेया । ज्ञुव में शिक्ष स्यान् सेन प्रित । हिन्देशपरान्सक्ष्यहर्न्न्म्यान्। । अकॅन्पिलिन्सन्गाया দর নের্বামার্থানাগ্রীরা । বর্লাকুর্লের্বানার্ভুর্ । র্ক্রা वृद्यकालेन मेन्द्र अन्ति । द्वा । विश्वालेन अन्ति हुन संभिन्। नि मविद्र: कुन् माने वर्षे न हें र हें थे। विद्याना सुन्द्राया सन् मिन इवदा ब् ते दे इंश्वां में श्वारा से अवायायव पर मुन् परा न मारा प्रिव सुपापर ला ५'त्र'यन्ग'रुग'रुव'रेवराक्रीकें केंन्'न्र'खुर'वरा'वर'वेवर केंक्र न्दावरान्ते वदायरावा व्यापाया हे पर्वत की वया केन इयरात्रात्रात्रेष्वरादिः व्यवापन्। पात्रावृत्रः व यदः प्राप्टि दे वे वृत्रः व्यान्यात्रा देशाग्रन्द्रायसान्यान्यात्रात्रात्रा देवा सगुरादरी मुख्य सार्थ।

तकी |ने'दीर'न्याक्रंशयर्धन्'व्'तेग्या |ह्यु'यते'त्र'र्स्स्'त्र्स्ग्य क्ष्या निः हिरा हुवः यापा निः हिता हेवः वहेवः [मसराक्षेप्रसत्पत्तिप्रेर्याष्ट्रम्य स्ति । निःश्चिरःस्वित्रा न्रेत्र्यायस्तः इ.सेन्या । तित्राष्ठ्याययायाचेत् राचेत्। । ते हैर सुना नहरादः मेग्या विविधितीयान्यात्राचन्यावेन्। नियमञ्चारायकन्वातेन। । न्नवर्गात्ना न्यान्य स्पष्ट्रवास्त्रन्त्रा । व्रिवायम्बर्गन्त्रहेन् न्यानेवा । विषयां श्रीत्र स्था स्था । इ.स्. र्यं विषय स्था विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विन्या |विन्यायान्द्राक्किस्रान्द्राच्यान्यात्रीत्रायान्यात्रीत्राया | श्रेव रा व से ते के का माना कर्मा | के का ना हा द का के व नन्ग्'र्च:सॅ'क्वर्याताक्षुत्रयात्र्में रोवर्यात्रक्केत्'न्न'त्र्में न'ब्रूं त्राक्षंत्र'ग्वन नयाम्बर्यान्द्रं केंद्रातासूर्यात् सूर्यं है। देनेद्रात्व श्रें अं हेर्यात्र लट्यट्स् वट्यव्यव्यक्षेत्रायात्त्रिक्ते । यग् वेद्यवहेन्त्र のダスギー

#### ବିକ୍'ଶି'ଡ଼'ବ'ଅ'ଞ୍ଜିବି'ঈ୍କ

व्यं मुंद्र हेन्द्र श्रे त्राया व्यं क्रियां क्रियं क्रिय

दिन्द्र विवायात् त्यार्ग् प्रदे प्रति क्ष्यात् व्याप्त व्यापत व्य

क्रबायाञ्चर। |वापेरवार्राचेवा'न्यवर'पर'तु। |व्वेर्'वॅ'रवाह्मव**ल** लक्ष्यंभेग'न्म्या वि'न्न'इवकालक्ष्यंभेन्दा वि'न्न'मुकुल र्में न में त है । व्यून का वर्ष वर्ष वर्ष करा । वर्ष त है न ने ता करा के वर न्त्रा वित्रिन्ने ताक्र वाक्षेत्र । वित्र क्ष्मि वित्र वि न्यतास्ताकायन्न्त्रार्मेक्ना । मामामामामामामा मॅ म सने त्यार्के का सेन् क्षा वित्र म स्टिन स्ट मेगु छे । भर देव गें । अं र र । इस साम के स मेगु र में श । वें र र ने तार्क बाबेन वा विंन्स कु विन् तेव वा बीबाव हो । वा बुवाब उन् विषयागुरार्न्य में खुरा। विं त्रीराने तार्क्यनेषा र्षेत्र विरा ने'ताक संयेन'ता विंन्न'ते'न' श्रुग'क्न'त्रा । नर्चन'श्रुन'यात्र गुन्द्रिं में कुन्। विं म अदे त्या के स्वीया द्वीया विं म अदे त्या के स्व बेन्'व्। बिं'न्न'ल'डे'स'बें'त्रा । ठवाठवावन'पन'न्द्र'में'कुन'।। ष्ट्रिन्त्रस्त्रिष्यः इयस्यस्क्रम्भेष्-नृत्र्यः । न्यात्रिष्यः इयस्य ह्रथान्। विराद्धिर्व्यात्यात्रात्वा विरापर स्वयायाह्या वैना-्नॅया क्षिनान्तर इययाताक राये-्या । श्रानःताविनः नश्या 

स्वीर्यं स्वार्यं स्वार्यं विश्वार्यं स्वार्यं स्वर्यं स्वार्यं स

चिर्-छर्-श्चिर्-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |र्व-श्चिर्-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |र्व-श्चिर्-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |र्व-श्चिर-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |र्व-श्चिर-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्चिर-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्चिर-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्च-श्च-। |श्व-श्च-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्च-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्च-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्च-र्युव्यक्ष्यं-प्रचर्-। |श्व-श्च-र्युव्यक्षयं-प्रचर-। |श्व-श्च-र्युव्यक्षयं-प्रच्यक्षयं-प्रचर-। |श्व-श्च-र्युव्यक्षयं-प्रचर-। |श्व-श्च-र्युव्यक्षयं-प्रचर-। |श्व-श्च-र्युव्यक्षयं-प्रचर-। |श्व-श्च-र्युव्यक्षयं-प्रचर-प्

व्यायया । त्रःक्ष्णं त्रः व्याप्तः व्यापत्तः व्यापतः व

₹·≧·८वर'केव'यव'कर'वता । शुंशुरावर'रा'यव वर्'शुं। । श्रुपार्चपाकुन्।पतिन्नुःसाय। । गर्वसायायने नेनसार्वा वेदार्गीकार्क्रेयस। म्ब्रीयर्व्याक्षेत्रात्रियान्वाक्षेत्रात्रा ।क्ष्मपञ्चन्त्रायान्व्यापान्। न्येर् त हेर्द्र प्रश्चेशर्च व। वि. हेग् पङ्ग्र तापञ्च श्रापत्र । व बराधिव पक्षप्रसाही रेपने । एक्षपहेव एगिव वर्षण ग्राह्म या । हुन्दाहेरायेत्रायेत्र्यंत्रात्री । न्येर्द्राहेर्द्राव्येयारं न् तु व के राय न व त के न त हा | क्विं न ता के न पा के ने न न त व ব'দ্মন্দ্ৰীৰ'নক্লন্থ'মা | वे वह्र के द क्ष के ले पा पे दे | र्येर्न्द्र हेर्द्र प्रश्चित्र हेन् व विक्र हेन् यूर्य प्राप्त ही त्वाताने व अन्याने देवा । वाषव व न्यत्व कानिव व न्यत्व न्द्रसंश्चा द्रमं प्रवेशहेरपं दे। |न्येरव दे तह पश्ची सर्व दा IN श्चिराञ्चयश्ययायम् रापात् । । न्यायायम् रापान् सेरायम् 15 यत्व व कॅश्रुॅं र न्यायादत्। | । इस्तिर्ध्यात्रम्थाः विष्यात्रम् न्येरः व है रह प्रमुख्य के वा । इद निर्माणनात्मात्म के निर्मा । दे नवर्गत्युन'पार्त्वे'रे'नर्। ।र'क्रबाक्रेन्'क्रनते'स्वान्युर्वास्त्वा

मिन्'न्सद्'नेत्र'ग्रीक्ष'न्द्रंद'र्य'ने ।न्येर'द'हे'त्र्'नग्रीक्ष'र्वद्र। श्रेन्नेन्न्यायात् छैं नित्रा । वियान् वेन्यां हैं नेनने। |ই্রথ'ন' व्यवानियान्त्रिं द्वा क्या । क्ष्यं देन् व्यवित्या देन ना ने । न्ये र द् €'तर्'प्रश्चित्र'र्व । किंत्'र्वे व्यात्सर केंत्'यात्रा । किंत्'र्व्या श्रेन्'य'क्वं'ने'मन् । न्'क्वंन्'यं श्रेम्य्यायान्न्न्त्र्न्त्र्'या । विन्त्रुण्य शियान ते' मु'त हं या कुरा | दिये र द हे' त द ' प्रो शर्च ' व । 1회, 취기, इन्रास्त्युंपत्र् भ्राप्तश्रवासद्दर्तुःश्वर। श्विषाभुद्यात्माद्दर्भन्दान्दर हित्र प्रमुक्ष रंज्। १९ महोर्डम हित्र प्रें प्रति। विं रा'र्ह्चेन्'पन्। |न'म्नप्र'श्'हेन्यंपत्रेन्गुन्यंक्रन्तेन। ।भून'प हिला की का पार्टी | र्घर व है तह प्रकी का विधा तहा ग मामत्याञ्च ज्ञेग'त्रा । व्रापंत्रेन्'याञ्चेत्रंत्रेन्। ।इतात्र्वेत्र्रेत्रेला मर्यापाना ।रेविन्छेन्यवेन्त्रवेश्यानी ।न्येम्ब्हेत्रप्रेक्ष र्छ'त्। दिल्यम्ब्रायदेन्द्रम्बर्द्र। विदेवस्यविद्रायं चरी । मने परे तर वर्षा द्वारा प्रेया । शुं र में व्य दे द र र र द्वार में Rद्। विस्त्रहार्याची वार्याची के शक्षेत्र विषया वार्याचे न स्त्रहार के स्त्री र्यन्ति गहें । । यश्याय में रनः गिरीयशायमित्य। । तहे वर्षे तमूर्'स्याविमायहर्। । नम् नियक्षियम् व क्षेत्र तयातरेनय। । विवान्त्रीत्वंत्रवान्त्रां गुव् वित् 'क्रें व्याव्यान् मी' न' यान्त्रं व् त्यत्यु या रहत्। ने द्वय्या की वर्ष्य प्रविव 'य'त्यत हो पर्वव की श्रेष्य हिरत स्ट्रिंग्य था

प्राचार्या । बह्रान्य निम्नान्य व्याप्त निम्नान्य मिन्नान्य निम्नान्य निम्ना

## न5न'नवे'समञ्ज्ञस'न'नन'स्नास'सदे' हस'सन्'चे'ऄ्रन्

क्षांत्र वात्यावार त्यवाया ने वाया वात्या व

अगुर्तिन वश्चराहा । वित्रावादा क्षेत्रा न्यात्राहा व्याप्ता क्षेत्रा न्यात्राहा व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापता व्यापता

में ब्रिट्स में । क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्

पद्वः भुः द्वारक्ष्यः द्वेतः स्वाप्यः स्वाप्यः

इसातर्चे राख्याकी अहिंगातरी । श्रिंगात र्वे वर्षा श्रामा न वरा गरेना याभी । मतुन्भवायायत्यवर्षां याभिवाद्गर्य। । निवी मतुन् ग्रीवा तिष्ठिरः श्रुवाचेत्। । देशां गृह्यत्सर्थे। । ने वसार्श्वेताः वा सवसार्धिः होः पर्दुत् स्वा हैतान। न्यान तार्चुत्रा श्रु नैन नैयासुना पाइवरा छैता शुर्ह्येद राक्षिमाया विद्यासया स्वर्तास्य स्वराह्य स्वर्ता हेद स्वर् षे ने राह्य गुरा अक्षेत्राचर ने राधश्रीत है वरमान करा केरा कराय हुन कुर'यानभुरः नरा नत्र'निविष्मे भुरता सुग्न स्वापितः नवा समितः वासितः। र्दे चरुन्च वि सम्बद्धायन सम्बद्धायम् भेव दुरू दर्दि वि । ५ हिन र ते कु ५ भाग हु १ न हु अ हु न । भाग तु ५ कि के हिन व भाग न । न हु ५ कि स्।। ने,यया इ.पश्च. की. थे. ८.५ विया च्रिया या क्रिया या प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प हुन'नवा ने'ताबे'नव'रबायाव'ते। हिन्छीन्नवाहेंगवाव'व्युन' ष्ट्रपट्टित्र, व्यन् चेन्य्या शिक्ष भी का भी का मिल्या है वा खेन्य प्राप्त ने न नसहेपर्द्धव के वित्यवता देन्दर ने समुन में न दिन्द ने सम् शे'राव'व'रो हे'रार्ड्व'ल'यार'र्येन्'लग्व'रायात्वाराया र'ल'तर्ने'त्रः **प**र्-पाश्चरवान्यः यगुरः सर्-पाश्चरवार्थः ।

श्चित्रवायात्रवार्म् (भूष् रा) कित्रे त्रे त्रे के वार्ष क्रिय

च्यान्त्रः म्यान्यः म्यान्त्रः । व्यान्त्रः स्वावतः व्यान्तः स्वावतः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः वयान्तः वयान्तः वयान्त

त्रवर्णित् व्रस्त वर्ष न जिन्द्र वर

चर्न्यं चर्यं चरं चर्यं चरं चर्यं चर्यं

## G.强气,电台,电台,超上, G.强气,电台,超上, G.强气,电台,超上, G.强气,电台,超上,

व संगु द्वा हे पर्व व सियान सामाने ने ने व कुन मन व प्रमु व परि त्या हा हे पर्द्र त्वग त्वार वार वार भी वा श्री वा ही पार पार पार पार वा म् अर्धन्दुन्त्रवाशिष्ठाप्रवायायायान्यात्र्वाप्रवायायाया यम् गुन गुन्न से सहे पर्वन देन प्रमान्त्र अपन्ति प्रमान निवास महर्मित्रे हैं। विप्त्रेंत् ग्रैशहे पर्द्व विषय विषय में प्राप्त विषय मामा अर्थे मा प्रमा है मा में तर हैं व कि व का मा हुन की मा है न मा तर हैं कैंबर्स् । न'नेबायसुबवानेबायबन्'यतिः कु'वाळव केलप्या सुबायबा म्ताम्यम्वयाक्ष्याववायम्यान्त्र्वाव्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र् यने पा अर्थे न प्रता क्षेत्र क्षा प्रश्ने स्था अर्थे न प्रश्ने न प न्यान्याया नेतिक्वायक्ष्य हे स्रम्यायान्य न्यान्त्र न्यायान्य र्दित अञ्चर्या हैना सुता हैना ना सुता। अञ्चरा सुता व सा तु सा या । पा । पा सा रा इस्येन्य स्तुवा गुत्र त्याकें स्वयन् प्राधित राधित है। क्षे के दे पारे पार्र र्ने पंज्ञप्याव द्वरायाप्य यवराव र्मेर् म्र रव रार्म प्राधा द्वन्य प्रमान्त्रभून्य प्राम्य विष्य द्वार्य । द्व निश्चर्यात्रया द्रिन्द्र-रेन्य्यह्नन्यात्र्यन्त्र-द्रिन्द्र-द्रिन्द्र-द्रिन्द्र-द्रिन्द्र-द्रिन्द्र-द्रिन्द्र-द हुन्पर सु तपने पहे सु तु अके व तु वपन । सू ते पने पा तर पे न अ हेश तत्व न्व तर् स्राप्त त्व स्राप्त हाय हे वहार व्यवस्थ मा राज्य स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप

हेपगत्देव उन्यागस्यापत्रेचन। । वित्र क्रमसंस्कार स्रायाष्ट्रियायरम्ब विह्याहेदाक्षान्त्रीक्षेत्रम् । न्येर हिस् न्यानायिव र १ के विद्रात्त्व । अत् वि न्या त्रुन या विव र १ केर मञ्जूषवागुर्। |देलक्षेर्स्सेत्रुणक्षे ।य्वष्येत्केत् श्च.पध्यी ।पत्रम्प्य स्त्रीम्याक्षेत्रक्षम्। ।यर्म्यक्षिण्यय स्रिं येत्। ।देर यर द्वर के व्युव्यय प्रवेद। । प्रमुव्यय वर ॅर्म्स्यूर्याच्डेराणुर्। १३५'डेग'ड्याचडेग'अ'हेन्यायो। १२'य क्षेट. स्.ज. थ. वक्ष्या । क्षिट. येथ. प्रथार र क्षेत्रयं य अक्षिट्र। । ने. क्षक् कुर्वात्रवास्य वा विद्राष्ट्रापाष्ट्रक्षयां वा विद्यात्रवास्य न्यस्य मे त्या त्रकु त्र त्य कु त्र त्य कु त्य क्ष त्य क्ष त्य क्ष त्य क्ष त्य विष् र्म्यायात्र्रिं पृष्ट्रेराष्ट्रायाया । व्यात्र्याय्य्र्राय्यायात्र्याया दिः भे कुं कुं द इरा ब्रैद प्यता । विषय क कद कुं द वे पार्त । विष तह्रवारा कर क्रिक्स केर प्रताप विकास कर प्रताप केर कार्य केर इयय। ।प्राप्ति,व्रेब्यायन्य्ययायान् ।याप्त्यंत्रायाः स्वायायाया र्या । सन्दर्भ संद सं चर्या र न हुना । प्रथम र न हुना । प्रथम र न हुना । पर्यत्'व्यवाचत्। ।पर्यत्'व्यवाचत्'प्रवाधूर्रित्। ।क्षेत्रचेत् हैं चे हुन 'यह सामा विन हैं यम् दं इदः य स्तुन विन विन सम्म पार्श्व अप्याप्त विदानश्चरवाया स्वाप्त स्वराश्चि कर् मदि'न्न् व्या क्ष'यापेव'क्के'स्या नस्यापन्याक्र- नुयाद्यावेदाव्या पतिः तत्र नुः वशुर्विः वशुर्वित्वावा ।

न्न'यायापर'त्र्रेरि:ळॅग्य'याप्रियाप'रनेपया । हिन्देययाज्ञन् **या**क्के.प्रप्रीवाग्रीकाक्कें प्रका ।क्षाबिवाक्ष्याप्रवाधिकें के प्रकार शेवरात्व्ववरायस्य विवाधस्य । शेवरावेद्रवया स्थापस्य बर्गे'तिरित् । व्रिंग्यान्द्र'यशत्रु'नेवान्यवा । ग्रान्यून'न्या'ठ' **ঀ৾ব'্ব'্ৰা । নই ন'শ্গ্ন'্উন্'ऑ্ন' দ্বব্য'ঐ্। । এজ'**ন্ব'্নন'র্সুন্' **8**)म्बद्यापत्। । गृष्ठ्र'तायद्यात्रेयसङ्ग्रे पार्ग्वात। । हिन्दात्राया ग्रीवा ABप्रां ABप्रां प्रांची विकास मन्द्रायम्। । नद्रायदेश्वव्यक्ष्याः स्द्रायः द्रमः। । वाकेदायः सुव्यक्ष वैर'न्ग्'त'स्र'। |र'कुल'रर'वर्षर'र्छुन्'र'इवव। |लब'ग्रे'न्नर' मैस'र्येग'परक्षेत्र। । सम्बद्धान्य सम्बद्धान्य । इस च्चेन रव्यवात्र्यां त्रास्टा | भिवायावीवा हे छ स्ववश्राद्गात। । छिदात्रे रा ळेंग्रा क्रेंया थुन् भे र्रा क्रेंया । विश्वाम् शुर्या राया देर ररा दे इयराक्षेष्ट्रम् प्रस्ताधाराम् ज्ञारा पुरम् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् मुश्रम्यःस्।

स्थान्य स्थान

बर-संपन् र-ष्य-'कुर्'बंश्रिम् । व्यंग्राबर्'गुक्'तावीमक्'न् ब्रॅाव्य न्य प्रमान अर्केन् प्राप्त सम्बद्धी । विष्य विषय विषय विषय । ब्रेड्रपरेर्द्रम् न हवा सुन् न विष्येत्। । निम् तान् म्यद् ने सारान्। । वायश्रायश् हुव्युश्यन्ते पायेव । पाया वीवित्वे रावाव । क्रिंत्यापदि इंट्यान हरा गुरु ता नर्दे । । द्रेन पा रोग श्राम । इस् है । विन'न्वेनिते हु। । सन्नश्यक्षेत्रश्चे सव्यापेन् प्राथन। । वात्र न्न वित्यस्य विवास्य । वित्यस्य न्यान्य विवास्य विवास वि . हुन में मसक उन पेंद हुन भेदा | द्वार में मसक उद से द हुन भेदा | ऍर'ऄर्'ग्रेज्'<mark>ग्'द्रग्'नस्याधेव। ।तुः</mark>न्साङ्क्यानुरःव्क्रीन्'न्न्यस्य व्यायमा |देगीमान्यस्तिपाख्यानुर्म्यमा वेषान्यस्यामा यन्तुः श्रुं त'इयरा'व'री वे'तान्नुग'न्यताने'लुं तुः प्रन्ता हे'नर्द्धव ग्रीसः वार्ष्ट्रत्याया अञ्ज्ञाया स्टिन् न्या न्या स्टिन् वा स्टिन् वा स्टिन् वा स्टिन् वा स्टिन् व्याचित्रं भ्रावाक्षं भ्राया भ चय। न्ध्रयाचराक्षे निर्देषु न्ताचर्यापा नुस्ति नुस्यया यगुरादि गुसुरकाश्रा।

अन्याञ्च अर्थाया व्याप्त विष्ण विष्

<u>বিদানের বাদের বর্মান ক্রমান ক্রমান ক্রমান ক্রমান ক্রমান ক্রমান করে বিদান করে নির্দান করে</u> A त्व | कॅबायायेव भूवा ही बाद। | विरायते विद्या श्री प्रशासन् पराय R तुन् । नृज्ञेन् व्यक्ष्या धीन व्यञ्जन व्यञन व्यञन व्यञ्जन व्यञन व्यञन व्यञ्जन व्य मझ्या । तम्पर्यापर्याराञ्चर्ञ्चर्या । व्यानेयस्यायाप्ये **र्**यं व प्राचित केता । त्राव प्राचित प्राच प्राच प्राच प्राचित प्राचित प्राचित प्राच प्राच प्राच प्राच प्राच प्राच प सुरायार्वेषायदिक्षेषा क्षेत्र्या । क्ष्यायायने द्रायाये न से रामा । यदर भेन्'न् सुवाचर सेवाचर सेन्। । तन् वासर तुवान गात सर वान्त। । षु नव्यव्यव्यक्ति केट केट विट नट ल्टा | विक्र क्षाया गहें न त्या त विट व्य सार्ज्ञेयया । वेदान्य प्रत्यायया यान्य सारा इयया ग्रेस विवास ने हिं स्तिः सृगा प्रस्थार्यकारा वाद्या क्षेप्रा स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्त सेयल उन् क्रेन्व पुर्णे प्रवासक्ति स्वा प्रस्थापर वाह्य प्रतासिय। वैषानुषारादेश्यव्यन्त्रं वसुन्दर्दे गहान्यार्थ।।

म्यान्त्र मेया अस्ति | मिन्द्र त्र क्षेत्र पाक्षेत्रेत्र केत्र मेया अस्ति | मिन्द्र त्र क्षेत्र स्व क

स्टान्त्रीं स्टिंग् स्टान्त्रीं स्टिंग् स्टान्त्रीं स्टान्त्तीं स्टान्त्रीं स्टान्त्रीं स्टान्त्रीं स्टान्त्रीं स्टान्त्रीं स

हुन्'र ग्रेंदि'इस ब्रेंड्र स्व इस्य स्व स्व । प्रमन् प्रस्य सन् व प्रस्य स्व | सर्वे दें विग तारी सरा इता हुँ त्या | विश ग हु त्या राया अर रश्रायाञ्च वका ग्रीकाहे पर्व व ग्रीकारे व व द्वा पार्क व का का विवाद पर पर दशम्बाद्यान्याया स्थ्यान्ध्रियान्याव्यान्यान्यान्या बर'रर'रर'ने न्नायाप्रत्र'वहार्यते खुद्यापक्षेत्रवा हीं न्रात्रं वद्य पर्वः इंसायम् ने स्ति स्वायम् ने स्ति स्वायमे स्वायम् स्वायम् **२७%'यते'ॐब'७३'गु३'त|ॅर'२'५८'५८'द्र'ॐ५'गे'धुग'२ध्य' य' तहे व्या** है। न्यायदेक्ष्यायाञ्चन्यात्युर्व्य। भ्यार्श्वन्याचात्रायात्र मर्डें व पर कुर हैं। दे व वा धर विव विव विव वे वह बावरार्डे ब्रांब्या सु.रु.बरास्ट्रायाद्दा गुरुगारु सुरायाद्दा सु क्षे: इत्यते विश्व क्षेत्रेय वा श्री का के का बाधित 'ता न्ता है' तह है ता न्या प वेन्'नह्र्यपत्रेकेंसे'नव्'नस्याय्यान्त्रुन्'ह्रम्'नत्नुन्'ह्रे। द्रायान्त्र तस्र पर्याम् पर्यायस्य रेग्पार तर्शे पार्डस महास्य स्वा हि पर्द्रम ষ্ট্রীলেম'ক্ষা <u>দ'ম</u>লীব'ল্ল'অনি'র্মম'নুষ্ম'নেমিম'ন'মে'লীব'র্মেন্স্মীলমাভব त्मक्षेर् हे। बक्रेन्र्ज्यस्य प्रमान्य स्ट्रा व्यवस्य स्ट्राय इसराम्यान्यात्रम् स्वत् सेत्रिश्चानः इत्यादिन् स्तरे सहित्। विवर परातुः श्रूपः इवशक्ताः न्वीपत्रे देशुतुः अष्ठश्यस्य त्र शत्युः यने ः तेष्यः """ तर्ने अने असे द के अ**शुरादर्ग गृहारका** की

ष्ववर् क्रीक्ष्रियं प्रस्थित हैं अपने अर्देष् । । বদ ক্षेत्र प्रस्थित । यते। । मुप्तः हण्यान्देशः मुप्तः त्रेशः स्त्रः सहिन्। । भ्रायः मुप्तः नुण्यं स अ'मर्डुब'सर् । भिन्'र्बेड्'श्चें'हिन'रुद्य'रिने' अ'रे'अहिन्। । रन'वेड्' त्रेंद्राक्रीतिकेन प्राप्त स्थाया । विषयित्र के त्रीत्र विषये स्थाया । विषयित्र के स्थाया । विषयित्र के स्थाया बर्हित्। |त्रेंस्यत्रेंस्युंकेत्रेत्रेत्रंत्र्रात्र्यात्र्यात्रा | व्यवत्त्र्याकी क्षुप्ताति कारे वाहित्। विरावहित की हिंदी की वारताया | दिवा । हार्त्वा वार्ष्या वार्ष्या विषय वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्ष्या वार्या क्ष्र्यात्तुव्यः हन् अन् पाति अने अस्ति । । ति पात्र प्रवासि अस्ति। । स्वाया इवा क्ष्या राप्त दे सारे सम्हरी विस्वा हिराद स्वा ही रास्त्र सा क्रन्यत्। । वियानन्याकेन्यं तर्ने अत्यान्। । ते न्नि वास् संस क्रिन्यर। ।त्र्रात्रात्रुः मृत्युयात्र देशाने यहित्र । ह्यात्र्याह्रस षरक्षेक्षे प्रति। । ग्रम्भूगम् क्षेप्रति । क्ष्याया वृद्धेया स्त्र में प्राप्त या या या या विद्याय स्वा वी वार्या कुरादिन्यारे वास्त्। | यभ्ने परिप्यादाविष्ठी वृद्यादी । यकेत् क्षुम्य बने वादा पर्देश द्वारी । त्रारे वादा पर्देश । क्षं वेर्'तरे वेर'तरे वाने वाहरा | व्रूर्'न र्नर रुवात त्रापते | ब्रेन्'ना ब्रुट्टा होता ना केंद्र (दर्ने टार्ने वा स्त्र) । तर् कुन्म अताल ब्रह्म तमन्त्रायते। । तम् न्ने क्ने न्या सन् सम् सम् । । न्या न्या

त्र्रें व प्रति क्षुत्र प्रार्थे। | तर्रा से स्राप्त ग्राय व ग्राये न प्राप्त के स्राप्त के स्राप् वृत्रकार्हे ग्राह्म विद्वार के देश पार्थ | भूत्र व्युव प्राह्म त्राह्म स्वर्थ विद्यार है स्व रेयहॅं | १ वद्यस्य वा वी श्वद्या । वर्ष्य व्या पारिने वाने वाहित्। । पश्चिम व्याह्म वाहित्व वाहित्व वाहित्व । वाहित्व र्मेग्'गे|ब्रॅब्र'यय'दिने'याने'याने | | न्याकेंग्'ग्रंट्र'याये'यश्चरप्रा बावतःत्रम् क्रमाञ्चनः बावेशायात्रने वारेना । सन्देशायात्रम रग्'शे'स्व'पति। वि'कुन्'कु'त्र'यानम्तायहिन्। विदेव'मेश्र'न्न क्षे<sup>.</sup> स्व'रादे। । [म'हीर'राक्ष्राक्चिं व्याक्षे. तर्दे अरे अर्थे द ्र चेत्राबुबेत्'पराक्ष'हॅग्बायर। |रराबुत्'प्रसापराक्ष'पहराबहेत्। | देशनशुक्तार्या । यमायन्विनानिष्ठे। हेमर्दुन्कीत्मानुष्रा हिन्गुरम् भु-न्रें राज्ञे सूर्यात्। ग्रेययायया नुप्यायया देन्। यासव बर वे। वायवतहत छैत्। वायव छ। वायव गरेर हुआ छ। वा पय हुन वर्षे न। याम के यन है यून न ह वर्ष हुन न वा न रहा पा वे प्राप्त् 'ग्रीकाने' क्षर प्राप्त प्राप्त क्षा यहं वह के समा का विकास मा धेव'ग्युम्राव्यायगुम्तर्भग्यम्याया

. श्रे अर्घर विरा | विगामसञ्जा प्रमार्श्वर प्राप्त । यर राज्यस्य सु धिसंशियव्यया । द्विन् इयसं केंसायात्र द्वन्ता सेवा अनः। । न्याने नन् गुर्युत्र्यं भेर्। । जि. ई. राष्ट्रेग् र व इसराक्षेट्र रे है। विग् क्षुं न् वायव वर्षा वायत विग्न न त्र वाया विग न व्याय वि न त्र विश्व विग न व्याय विग न व्याय विग न विग न व ह्यन्तरम् ।देन्प्रनार्क्षेत्रयाध्वार्श्वनम्विग्षम्। ।केत्नेरादने हेन्'अ'नसबस'यर। ।है'अ'ईग'ॲन्'नसअ'पर'हीस।। गुडादयायवा तुःश्चित्रद्वयान् गृतःश्चे 'न्यग्'तुःवेन्'यार्चेन'य'न्न्। भ्रम्याप्ता वनरत्यापीयने यायाम्यापीय विषया मा क्येंद्रप्र हिंग् वे तार वापा दे केद की वा वा वा वे वा हे वा दर्भ दे रे वे वा त दे वा है। रोबराकन की में न दु मूर्य ह गरा मध्य विम्य गुर गहा मारा हु गय श्रश्चर्यश्रीकार्थियहेन्'पर्देन्चन्यश्चान्चन्विन्धेचेन्'न्न्न्यं थे''" *ख़य़*ॱड़ॱॲॸॹॹॖॱग़॒*ॺऻड़*ॱय़ॱॺय़ॱक़ॆॸॱढ़ॸऀ*ॸॱढ़ज़ॖ॔ॺ*ॱय़ॱऄढ़ॱढ़ॏॸॱ। न्गानि नहेंन्यर त्रापाय भेनाने । त्रार्श्वन द्रया हें नामहेन्या हिन हारहायानस्वापतिः क्रिंसहा वित्व मार्सिस्य स्वित्व वित्व स्वापति स्वापत मूर्कं नशुक्राग्रीकाश्चित्रश्चित्रश्चर्यात्र्रा वेसकारुन्तामन्यान नग्न पते'यहर्'य'पकुर्'प'कुष्पर'हे'यते।।।।

## न्तु'न। नृतुन्त्र'क्षु'क्रॅन्न्नेन्त्र'क्ष्मंना

न्ने'यनेश्रास्त्रा'सु'रा'सु'यदि'सूँद्र्य'रा'द्रॅर'सुन्'रा'न्द्रग'रा|न'र्न्ना'रा| देव'रा'द्रवरा स्वित्रां तिः त्राताः वर्षे नः तत्र्वाः दाः विवायितः दाः नेवा हेः पर्वदः ताः तस् ताः गुराः गुराक्षरावेत्रहरा सुन्यस्य देवानियान् मुन्यस्य देवार्यस्य न्न्वन्स्रिक्ष्यस्त्वर्त्वर्त्वर्ष्त्वर्ष्त्वर्ष् चुलान्साद्वे नायन संचेन्या निष्यं न्याया निम् सं हुणा निर्मे हुन्ता सं चर्स्ट्रिके। विन्दुक्ट्रिकेन्यंविन्निन्निर्मे ग्नव्यात्रा देर्वान्नियम्बास्यास्यास्यास्यास्य विवा स्ताय दाश्चा सर्मे स्वाय या या द्वा । यव विवा वा वर दि रे पा यय। मर्ख्य स्टर्म व काञ्च का वा में ने ने ने का की मान स्टर्स की मान स्टर्स की स्ट्रिस की स्टर्स की स्टर्स की स्टर्स की स्टर्स की स्टर्स की स्ट्रिस की स्टर्स की स्ट्रिस की स्ट्रिस की स्ट्रिस की स्टर्स की स्ट्रिस षर्न् राया स्राधिवयाक्रास्याविवास्यायास्य र्राट्या ८.स.च. ५४.५५, य.५४.५० व्याची स.स.च. १५०० व्याची व् नेसामित्रे ह्व द्रामित्रा विवादा हाता दिस्ता महामानिका विवादा स्वादा देश विगानुदि क्रुवावया कन्यते ग्लान विगान हे नव्या हे नहिन्ति 山東京的山村沿湖上,到 चन्ना'नी'न्न्वादा'सेता'चति'त्र हु'न्न्न्न' 月中のギケ・イナ・ヨイ・ライ・スペ

हे पड्राक्की विषया विषया विषया के विषय

ष्ठित्। त्र मेश्राच्या मेश्राच्य



 田田
 「山田一、山田一、山田、田田」」
 「田田」」
 「田田」」
 「田田」」
 「田田」」
 「田田」」
 「田田」」
 「田田」
 「田」
 「

विन्द्रेष्ठिन्द्रः विवादित्वा विकान क्षेत्रा विकान क्षेत्रा विवादित्वा विन्द्रेष्ठेत्।

विन्द्रेष्ठिन्द्रः विवादित्वा विवादित्वा विकान क्षेत्रा विद्रेष्ठ विद्रा विन्द्रेष्ठ विवाद विवाद

शेशशंक्षण्येत्वर्ष्ण्यं पश्चर्यात्र्वर्षात्र्वर्षात्र्वर्षात्रः स्वर्ण्यः स्वर्ण्यः हिन्द्रः स्वर्ण्यः स्वर्ण्यः हिन्द्रः स्वर्ण्यः स्वर्णः स्वर्यः स्वर्णः स्वर्णः स्वर्यः स्वर्णः स्वर्यः स्वर्णः स्वर्णः स्वर्यः स्वर्णः स्वर्णः स्वर्णः स्व

ब्राज्ञी प्रविद्यात्र स्तृत्व क्षां स्वार्थ प्रत्य प्रत्य

विंदाते। बह्दानेश्वर्णन्दाहेन्। स्राह्मेन्य्याह्मेन्याहमेन्याह

र्शें द'त्रे। श्वव्यायद्विद'यरत्यर'ग्व्युव्येत्र'केराञ्चेत्'केराञ्चेत्'केराञ्चेत्'केराञ्चेत्'केराञ्चेत्'क्रिं रूत्वत्त्राचा श्वव्यायद्विद्'यरत्यस्यस्याव्यायस्याव्यायस्याव्यायस्या स्रा र्रिट्याम् अवस्य व्याप्तर्मित् स्रेण्याम् स्रित्याम् स्

मिन्दान् वित्वासाः इयवायाः द्वावायाः वित्वायाः वित्वायः वित्वयः वित्वयः वित्वायः वित्वायः वित्वायः वित्वयः वित्व

म्नार्यं विद्यान्यं व

संनिश्चेत्यान्त्रत्यात्र्यान्त्रत्यात्र्याः इग् तह्मत्त्रित्त्रत्यत्र्यस्यात्र्याः इग् तह्मत्त्रित्त्रत्यत्रस्यत्त्र्यत्यात्र्याः मिलेकापर केप्पर प्रदापि सुर से यर्ग रर लाग्वर पर लु लुका प्रवा

व्वेत्-केन्त्रेत्-पाभव्-व्यक्षरकायम् सक्यन्व-क्यायन्व-रू हे पर्वन्शेषयावया श्रीराम्यामरे हिन् **८**ष्ट्र-प्रत्यव्यः विश्वः प्रश त्रमुत्रिर्ग्न् मृर्द्र्र्र्भ्यक्षेत्रहे व्याग्रन् वे पर्म् द्र्या त्रम् वित्रा किंगश्चराश्चर्तातम् वित्। स्रित्रत्यम् प्रेम् हिन्परात्रर षीतित्राञ्ज्ञतान्त्वे वन्'ग्वेशग्'हेंग्राव्याव्यावेत्।व्यायायाव्याव्या हिंद्कि अस्ति र र विदार तार्थ गर्द प्रका मदे त्रायाययायाय त्रवृत्त्रायात्रवृत्त्वाताष्ठ्रप्रेत् वत्या इत्रत्वत्वाव् कृत्रि वेषा अते। न्याने के में नाम र तर्गाम क्या तर्म स्वा प्राप्त नाम प्राप्त नाम स्वाप्त नाम स्वप्त नाम स्वाप्त नाम स्वप्त नाम स्वप नाम स्वप्त नाम स्वप्त नाम स्वप्त नाम स्वप्त नाम स्वप्त नाम स्वप्त नाम स् Rत्वाप्यवा विते प्रवास में विद्याप्य प्रमा क्रिन् श्रीका वाषा मिन ही र त्रम् प्राची । स्टाइन् महेश्य दे प्राची में प्राची माने **मॅश्ररायरायां होत् 'केर' तत्रा' क्षे हिंत् 'रे'या यविद 'क्षे होत्। विद्यार दे धेव'** खन्ययन् में तकन् केन मन्त्रे। यने व्या क्षेण मिने गुर्येन या **है**र:बॅर:बृबेब:ब्र'त्रवर्ष्ट्रव्यं क्रुं नित्रे:तुब:ब्रेव्यंद्रदा देते:ब्रें:तर्कुत्र **#**८कालारपार्से ५८ हुपारा हुंसवा देशहर्ष तर्र ५ हुन् कर् तुँगाला यपाद्धनायित्वव हेव्यदी क्षां स्वा हिन्यत् राज्य स्व **ब्रि**-: सग्'दाद्रवान् व्यापार्यस्य देन ब्रिन्: नृत्रेव: नृग्'तुव: हृग्'तुक्रेन: क्रेन्: बिर्-सुन् कें प्नन् के सार हुन से रास्त्र के सेन प्राप्त है र सार हुन प्राप्त हैन भेदिन्ध्राचित्। न्द्विन्यन्यवादन्तिः गृत्यन्यमितः परन्युः स्वतनः बारकत्। हैन बॅन्युन ग्रीकारेषा पानिषा के स्वार्यका

ने'त्रश्रेश'न्ने'त्रमेशस्या'सु'रा'त्यम् शुन्सने'न्या'त्रसुरःत्या सिं दारी वेरः कंन्'शे'तनेदा कें कंन्'शे'तन्ता न'त्यस्यने'पिते'प्र संन्यस्या'कंग न्'प्र'र्या'स्नि'नेस्या'ग्रीसवेरःरा ।

षुअग्नुवाक्कीयर्वराष्ट्रस्त्राह्मप्तरायराज्यस्य व्यायम्परान्यायरापा तहत्त्रं नृष्णु स्ट्रा व द्वा द्वा द्वा द्वा के व **स्वारा हे 'सक्रेन** 'स्वान्यवा' येन 'ग्रीका वान्यान्य न्या । ये हें वा |वान्या सुधिते । ■रत्यवाचान्त्। भेन्त्र्व्णचित्र्रत्य्वतिः अःअवायतः विवायान्त्। हरळेर:अर्ड्डेट'परे:दें 'वेअर्च'ळेर हुट'परा| कॅश'वर'त्रें'तहेट'र्च'क्र्स वाग्वयायाम्बर्वारुन् स्थिति र्क्षावृत्वाष्ट्रीयाग्न प्रेन् क्ष्यापति वृत्वया """ हुः अळव के अप या तुषा पया हे पर्व व की नाव या हि प्रेरे के या व व इस्रत्युं रापार्याचे प्रापार्ता। वा अश्रियाध्यावि रात्रात्रा प्राप्ता प्राप सन् मृत्यायनः सं भेरत्न नगरा स्वारा स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर् ग्रापाततुत्राततुग्राद्ववराष्ठित्राताक्षुः स्त्राक्षुः तर्द्राध्वर्ष्ट्रिः वर्ट्राध्य त्रवावित्वित्वेत्वायायत्त्वे प्रमुत् केत्रत्त्वाया वित्रव्यवा A' न अरा न न असे ब्रां शुं अं के श्रे शं पत्र न में दिन पति क्रुं अर्थ ब' ने भित्र'''''''' র্মের্'নদ্বা'ডবা'র্বম্বান্ট্রিরান্ত্রামর্ল্রম্বর্তি'মবারা ব গুদ্রা विश्रायम् स्राह्मवर्षात्रीत्रम् वार्षेत्राक्षेत्रम् वार्ष्यान्यान्यान्यान्या ततुन ने'इवरावर्धन'न'यामिते'वेग'र्धन'ववायन'न्मेवा ने'वेव' ब्रह्माळेवाराया हे सायाय हुन्या द्वापा हुन्या हुन्य य्राम् विवार्ष्टराष्ट्रम् न् विवार्ष्यवा द्वरि वर्षे में वर्षे न प्राप्त वर्षे वर्ष व्यात्रिर द्वारावर तावर्षर प्राचीत प्राची क्षावर्षर प्राचीत व

स्या विष्यात्र विष्य स्था विषयात्र विषयात्य विषयात्र विष

देव'रुव'यरपदे'व्वयायपतुन्। । तयनवातुः जुन् प्यस्र परः चैत्रं भुत्रे क्षेत्रं या । इत्यात् चुँ रः बैत्यात् सामाता । प्रातः स्वत्या र्शन्यक्षः नवस्यव्या । नगर्ञेनस्यक्षः भेक्षस्ववस्य । स्वनस बळवराञे ५ भन्य ५ १ । श्रुव थ स्व पाय भव व य । वि स्याप র্মর্ভির্ণাণ্মামর্ট্রণ্ | নেরাবীর্মমার্ভন্'মামিরামর্ট্রণ্ | রির্ गुर्-गुन्कुःसुन्दर्भ-तु। विभाग्नाकुःधिवर्र्भ्नाचित्रस्य। विस्वामातः तहतः द्रात्रं क्षेत्रं वारा । क्षुः ह्राक्षे कृषा करायायवा । द्रे विवा <u> इश्कृत्र व्या । भेरत्य स्था । भेरत्य स्था । स्था स्था । स्था स्था । स्था स्था स्था । स्था स्था स्था स्था स्थ</u> पञ्चन'त्र'विषये हेपेदा । विषयं हेने भे क्षुपयं देप'वया । है। न्दः अविदः तर्ज्ञेते छ्वा कृवा गुवा । अर्थेन प्रत्येत् वा । ष्ट्रिन् व्याप्यान्य प्राचित्र व्याप्य वित्र वित न्नत। विश्वज्ञन्नियाक्षेत्रन्दिन्। विश्वज्ञन्यस्यस्येन्ने पय। । तयकुद्धयञ्जेर्ज्ञराच्याया । व्यापन्यवायया चसवस्यायात् । १ मे पा इत्रम्य १ स्वाप्य विद्या षर्वा त्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा गुकेशयागुर्वेन्'राधिव। दिश्यरः सुग्'यस्याधीय देन्'व। ।ग्वव' にはして、日本のでは、一般、主ない。
 には、日本のでは、日本の

ने नः स्वाया प्राया दे स्वाया प्राया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्

महत्वर्षित्रं स्वस्य श्री सहे प्रदेश श्री महार देव स्व स्वस्य श्री सहे स्वस्य श्री सहे स्वस्य श्री सहे स्वस्य स्वस्य श्री सहे स्वस्य स्यस्य स्वस्य स

न्। यहिन्द्रिन्द्रेन्द्

द्वाराया विद्याम्या विद्यामया विद्यामय विद्याम विद्यामय विद्याम विद्यामय विद्यामय विद्यामय विद्यामय विद्यामय विद्याम विद्यामय विद्याम विद्यामय विद्यामय विद्यामय विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम विद्याम

हे पर्व विकास का दें व किन दें व किन विकास के वि

मुश्रम् अस्याधाराम्याम्याधार्यस्य मुग्नाम्याधार्यस्य मुग्नाम्याधारम्याधारम्य मुग्नाम्याधारम्य मुग्नाम्य मुग्नाम्याधारम्य मुग्नाम्य मुग

म'ब्रॅब्'मरा'वाचर व्रेक्'रामें परि'वाक्वा । भ्रे'ब्रुर'वर परि'व्यक्ष व्यत्तुन्। । तर्नरः र्ह्मेन् वान्य वार्ष्य व्यविष्युः श्रुप्य गुन्न। । विन् द्रवारा नन्ग्यानग्यानग्रहेबा । नन्ग्युनहिन्यानग्रहेक्छे। । नग्र द्वैव के व व व प्रति द्विया देववा विदेव प्रति विदः दुः यह या पर मृष । तर्रे राज्व प्रायम् या वा स्वयं कर् 'गुर्'। । वे रेरा प्रायम् । द्वराष्ट्रप्र-रहेन । पर्वरापं विनापाने हु दिना । इस्यायस्त्रा मत्त्रुत्परम्पन । ध्रमञ्जीवस्तर्रस्य न्या विस्ति। । अदर् त्रुव्यायां वेत्रप्रात्ता । वितिष्यात्रात्रे वित्रप्रात्ता । गुन् मुक्तियातार्श्वेत्'पर'र्नेन | पर्नानीलयायर्वेर'न्यार्पर्यंत्रा । इस वरभेत्'त्र'द्रव्रार्'त्र' | वर्ळव्'व्याक्यावर'वयाळ्त्'क्यवा | बर्द्रवातिविद्रवाह्यायर्भेष । वद्रवेषायद्याचित्रवाद्यावराया । ब्रॅग'न्न्'द्वप'यकॅन्'त्वरान'न्न्। ।द्रय'वर्द्धरानवेर्र्भुन्ना इयवा । वर्षेत्रप्रवित्र्यस्यानरम्ग । व्यव्यव्यानराचनाः मबबारुन्ता । नाताने क्वेंबारा हुबाब्रेन्वा । ब्रीविं वेंबान् नाताना

कृ अः इस्यान् न त्रायि द्वारि दि द्वार् म्या स्यापि द्वार मित्र म

म्या प्राप्त स्वर्णि क्रिया श्री स्वर्णि क्रिया श्री स्वर्णि स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णि स्वर्णि स्वर्णे स्वर्णि स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे

**ॸ्**ॺॕॴय़ॸॱक़ॖॆ॓॔ड़ॱ॔ॻॖऀॱॸ॒ज़ॱ॔ॻॕॱऄॗॸॱऒॱज़ॕॖॴॴॹॖॱढ़ॖॎॴॴॻक़क़ॖॆढ़ॱॴॸॆऀॴज़ॕऄॱॱॱॱॿ त्र्रेव्यवस्यायि श्रुप्परिक्षा श्रुप्प **ট্য**'ন্দ'ল্ম'নম্ব'ব্যা मसन्द्राय देश में शे प्रेस मान प्रमान प्रमान में स पर-तृग्'स्दि'द्रन्'से 'नेरा'स्दि'पने'पर-पर-परायाञ्चर'हुँरकी'न् केंदा न्' *५७*५८। या प्रत्यात अपने के ते देश हैं । या प्रत्यात के प्रत्यात के प्रत्यात के प्रत्यात के प्रत्या के प्रत्या के प क्वीप्रमान् में व्यापने विषय के तर्रः श्रेरः पञ्चन'त्यन् देशर्चे युन्नात्त्राचित्राच्यात्रेन्। कुला र्मितः नगरा नगरानि इसा सहसासि मानुगया हुगार्मिने देना श्च 'अपश्चिति स्वारा प्राप्त स्वारा प्राप्त स्वारा है। श्वारा प्राप्त स्वारा स् <u>まずずであずのであるまずにススであるこれであててあっているよう</u> द्वन्यायह्रयायात्रहेन्यानेन्यानेन्यात्र्न्यान्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या ह्रग्रात्पर्ने प्रस्त्युरावदिः स्वयः देश्ये च्या केंद्रिण्टा सार्थेन् ने ग्रान् ने न्दर्यस्तु नुष्याया देव्य विस्ति हारा यस्त्र व्यव यह्याब्रस्थि पर्याब्रस्था श्रेश्वाच्रस्था स्थान्यक्र स्त्रिक्षयान्त्र्यान्त्रिक्षविष्यविष्यविष्यविष्यवि न्त्रिक्ष् श्चित्रं शेप्रक्रया श्चित्रं प्रमायक्ष्यं स्वायित्याप 19 मिना नेबिन्निकेयमान्दरकेन्भिन्भाने हेरास्र तकन्मकाराहेन्

ন্দ্রীপ্রশ্বরিদ্রান্থা

हे नर्दु द्यो विताद राम द्वाम द्वाम निवाद राम द्वाम निवाद राम पुराधकार्रम ने से दाना वन सम से सराम होन 'शे साम हेन' परि सर ने के **८**नैतिकेन्तु। प्रारम्भवस्य स्वास्त्रस्य स्यास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स् **ब्रि**शम् प्रितिः क्षेत्रः व वा ब्रुव्। त्रा क्षेत्रः शासा साञ्च व । तरे व । या प्रितः के वा या प्रितः । ॥ यमा हिन्द्रमणकुन्रन्द्रिक्केंद्रने मिंदरे केन्द्रिवर्गात्र्या हर स्ता स्ति क्रंग्'याचेन्। र्राज्येते श्रे पेंद्रवयाया ग्रेंन् वेन्। न्यारीयया क्वा ववस ठ८.भी. मूब्री व्याप्ती व्याप्ति की. क्रु. व्याप्ति व्याप्ति क्रु. व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति व्याप पस्य रेअ में ने प्रश्र हैं प्राप्तर प्राप्त । ने स्वार प्रिये स्वार हैं से के ना मिला न मन्याप्रां के ने सप्रां तर्वा प्रां पह्याप्रवा पह्याप्रां प्रांचित्र ग्नर। वर्परेश्वर्प्युर्युर्येश्वर्ष्युर्वेश्वर् देश्वर्ष्यं वर्ष्यं वर्ष श्चन्त्यन्त्रित्या संस्थान्त्रम् विन्तर्भः स्थाने व्याप्तरम् तुःबे'यें त्राव् कें राप्येव पार्रा निवावी केंग प्रया त्राप्य रारापर <u> चैत्र'ग्रेश'नुनःदुन'ब्रुन'मदेशेष्वर्रायुनःत्र'ब्रुत'न्धन्'न्नःदेश'न्यं</u> गुन् ते क्रिंत। त्राया के क्रिंत हे वात हो ता क्रिंत क्रिंत हिन प्रवाह कर कर है

त्यान्यान्याञ्चर्यान् ने'क्'स्येते'म्त्राच्याम् वर्ष्याः स्याध्यान्यां स्याध्यान्यां स्याध्यान्यां स्याध्यान्य द्या स्व'नस्याच्यां स्याध्यान्याः स्याध्यान्याः स्याध्यान्याः नुष्याः स्याध्याः स्याधिः स्याधः स्याधिः स्याधः स्

यान्त्रम् स्वर्णन्याम् विक्राण्याः विक्रा

वसामार्राताम्या वयवायेवाचेत्रायावाचन्यात्रेवान्त्रात्रा दा'त्रवेत'चदे मुँग्राह्य'त्मुँ'विद्येत्रवारुव'त्य'ग्रॅन्'व'न्पे'चदे ह्रअ'द्य'''' त्वाः स्तिः व वे वार्ये स्त्रे विस्त्रे वर्षे वर्षे क्वारा क्षेत्र'पार'क्षर'पार'ट्रॅप्, पश्चापार, क्ष्याधिय, तथा चेथा, पशक्ष्य व्यवाश्वित्रेत्रेत्रेत्र्य्यः वित्रुत्व्यंत्र्यं व्यव्याः क्षेत्रं व्यत्ते व्यव्ये व्यव्ये **राजारव्याराण हेराचरा तुःगहरा राजा के सुरावधार के क वेर छै क्षें अपापा** रत्वेश्वेश्वादित्वेश्वाद्यश्रीवात्त्र्याय् <u>ब्रैका दॅब के लाग्रेक देलाय स्टारा स्टारा स्टारा के बाज दिलाय विवाद के बादा स्वार</u> यहा दे स्र में अपने दे स्र इस व भेग व मा ने द रे कर म त ने मा द तन्यादुर्। कुरायार्नेरा सतीर्नेरवाराप्रा हेश्यायवस म्बर्याक्त मुंगुन में न्यापा तरे रात त्यापाधित विता वे मना नि प्रवस्य रा'यर'रदे, गराहे वरारा भेदादी। रि. प्रयापा हे वरादा हिन् द्रया कुरिंदर्दर्वाकुन्यान्वयाउद्धरायाँ विद्वार्था है विद्वर्दिया है व न्रामह्यापित्रम्यार्थः स्वाराम्यवाषान् विद्यान् स्वारायेत् दे रहे "" द्ररावेत्रवाश्चरकेत्यव्यक्षेत्रश्चरत्रे वाश्चरवार्था ।

मुन्द्रकथा । पि.प.वेर्य.व्यं.प.टाचुर.वहूरी । ए.रेट.केप.टाचूट. भुवा । वि.प.व्यव्यक्ट.व्य-व्यक्त्री । वि.ह्याप्ट्याच्याच्यः भूवा । व्यप्तचूरश्चाप्तयात्त्या । वि.ह्याप्तच्याच्यः प्र भूवा । व्यप्तचूरश्चाप्तयात्त्या । व्यःक्र्याप्ताप्तयात्त्याः व्य भूक्षित्ययात्त्रविषयात्त्रप्तात्त्या । व्यक्ष्याप्ताप्तयात्त्रया क्षाभी विषयन्त्रस्याङ्ग्याञ्चरम्यः । र्द्रवाक्षेत्रक्षे त्रेत्रत्युत्रप्रित्। |नेवित्युत्प्वयस्टन्दे। |रन्यव्यः द्वा र् अत्रे प्रया | विस्ति प्रयास्य स्वाह्य वाही । इत्य क्रिया स्व महेन्'पते। | न्यन'यश्चर'वृश्यवाकित्यंयम्। । तनः हुन्'ईश्चन्न क्षे'नर्थे । कुन्'ब्रे'नर्डन्यक्षक्षयम् । तहेन्'हेद्युःन'स पर्टापते। |प्रशास्यापञ्चयस्य क्षेत्रस्य । क्षेत्र ख्रास्य । क्षेत्र ख्रास्य न्त्रं तसुद्र्यते । किं न्यु श्रामक्रियायद्। । क्रिन् न्द्रम् हेद्र र्घराक्षे भेद्र'पादे । प्रभित्रपादम् । भुवाद्याद्यम् । भुवाद्याद्यम् । स्वाराष्ट्रन्त्यः श्रम्यायते। । यक्षेत्पायस्य सम्याप्ता 135 ८६५५४१०अइ८अपते। ब्रिक्यान्त्राचक्रान्यक्रियम्ब मः बर्यं नेवायते। । ग्रव्यं यह्न प्रकंश्यम् । विवयायन् ग् बून्या हुन्यते । वर्केन् हेन्यवेन्ययक्तियम् । विन्यवेने इतातर्त्रे रहे ते तुरापते । कं कं प हपायश के तामद्रा । ग्राँतापा श्चित्रकारीतिनेनवाराती । तुवायक्ति। स्वायकारीयामने। । ग्निवाया रगःइ'नर'के'तहंग'नते। हिग्ननहलाचेन्'मक्केरामन्। ।गर्वन क्रें ५५'गुराअ होरायो | ग्राम विषय महाराज्य के सम्बर् M' न्यान्यात् वृत्यां केयायते । क्रिन् न्यां वृत्याया केयायत्। । यन्या धरायाव्य प्रदेशकी पश्चियाये । विष्य वर्षे के विष्य के व्याय व । विष्य इत्यातर्न्प्याञ्चरवायते। |व्यवार्त्रगानुन्यावायवा ।के गुरु छन् यरशेतहेव्यते। दिश्चेत्यन यंशकेयम्ब

मांभेन्'मदेश्चेत्रेन्'। । ष्वेत्न्'मर्त्वग्रुर्ग्यक्षंक्ष्णं षेत्रं । । केल्य्यात्र्यं प्रत्यं । केल्य्यात्र्यं । केल्य्यात्र्यं । केल्य्यात्र्यं । केल्य्यात्र्यं । केल्य्यात्र्यं । केल्य्यात्र्यं । । केल्य्यं । । केल्यं । केल्यं । । केल्यं । क

ने'न्याहे'नर्ड्य'केर'न्युन्'नर्देख्यान्युक्यंगरिक्षं न्यांन्यं ह्या'स्यायान्यं कर्ष्योत्रस्यायायां कर्ष्यं प्राप्तायां क्ष्यं प्राप्तायां क्षयं प्राप्तायां क्ष्यं प्राप्तायां क्षयं प्राप्तायां क्ष्यं प्राप्तायां क्ष्यं प्राप्तायां क्ष्यं प्राप्तायां क्ष्यं प्राप्तायां क्षयं विष्तायां क्षयं प्राप्तायां क्षयं विष्तायां विष्तायां क्षयं विष्तायां क्षयं विष्तायां क्षयं विष्तायां विष्तायां

हें नई व्यवस्त हं अवहं न्य्या न्या व्यव न्या है न हैं न्या है न हैं न ह

हे' पर्ड द'शे' ग्रान्द्र राय्या अया उत्पादिण में शुन्य प्राप्त देव से स्याप्त प्राप्त है। प्राप्त हो द्वार प्राप्त हो द्वार प्राप्त हो देव से स्वार प्राप्त हो से स्वार स्व

মিনিজিন্মের্ন স্থানির্বামনি<u>র্বা</u>ন্তীন্মেন্র্বান্ত্রার্বা ইরাল্যন্মন্বামের্বান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রা

दं क्षित् त्याक्षेत्र्य क्षिण क्षिण

শিল্পান্ত বাংকি ব

विन्न्त्राचित्राच्यान्याच्यान्याच्यान्याः विन्न्याच्याः विन्न्याः विन्याच्याः विन्याः विन्याच्याः विन्याः वि

वर्षन्थ्यस्यत्वित्वत्यस्यत्ति। वर्ष्यस्यवेत् सः स्वेत्र्याः प्रमा । त्यान्यस्य त्याः स्वाः । त्याः गुन्ने वाराः स्वाः ।

प्रस्तित्यं हैं प्रम् क्ष्मिं प्रस्ति हैं।

न्ने प्रवेशस्त्र स्प्रेशस्त्र प्राप्त है स्ट्रिस्य प्राप्त स्था । "" न्नर्स्त्र हेन्य स्प्रेस्य स्प्रेस्य स्था ।

**8**द:ब्रॅन:स्थ्य'तु'तके'च'कुत्य'र्य'न्यरयाष्ट्रीय'तु'तके'च'न्न'त्र्र'चय| **५**'कु'न्नर'तु'तृर'याक्षृंग'तु'तक्षें'गशुन्'च'त्य|

शे'नव्'नश्याय। हें'व्'नश्चन्'वे'त्रीशत्र्वेव्'य'हें'न्जुत्य'न गृद्दानश्राह्मेंके'ल'गृद्दाद्देव'द्मेंव'लुश्चयय।

स्वाप्तर्थं स्वाप्त्रां स्वाप्त्रं स्वाप्तं स्वाप्त्रं स्वाप्त्रं स्वाप्तं स्वापतं स्वाप्तं स्वाप

मत्र्व न नित्रिक्षेत्र हो 'मर्ज्य नित्रिक्षेत्र मित्र मित्र

ন্বকাই'নর্ব্রের্ন্ড্রেন্ন্রি'ঔ'র্ণ্ড্রেন্ড্রন্ত্রান্ত্র্র্বর্ক্রা''' ন্রব্যক্ষা

नेतिः क्षं स्र संक्षाण्युर् तुत्राञ्चरः प्रते क्षेत्रात्र हरः देर् तार्श्वण्याः । इस्र शञ्चर्त्तरः क्षेत्रास्त्रात्रात्रात्रां हेर् खरायाः गुत्राञ्चरायाः चुर्नासः ।

मिन्ना निर्मा विद्या व

(日後年間): 何本は、本本のでは、日本の

श्चेपार्द्रम् मन्द्रम् प्रस्ति । ह्य-भ्रम्भार्य दे हे ब्रत्रेय प्र-प रशकुर्याअश्चित्रपरार्दुरिदेश्याअतिग्धरात्वा विवा मन्ग्बे हे पदिन्तु व दर्नि । अग्या द द्वा में दि दिवर पदि त्या **ढ़**ॣॖॷ॔ॴॻॿॸॱॻ॔ॴॻॿॗॿॱॻॱढ़ॾॕॿॱॻढ़ॱहेबॱढ़ॻॖ॓ॴज़ॣ॔॔ॱज़ॴ॒॔ऄॴग़ड़ॕॿॱ मालाडेबाग्रन्तस्त्रापराग्रेबा नैनार्धरादन्दि।पार्धन् हिना सन्धर बर्ने त्वार्ट्सन द्वेंदाया होता । शेखन्या तर्ने शे पव तत्वारा होता । त्यापादी हरअपनिप्ति क्षेत्रप्रयापित् गृत्व वित्पत्ति प्रित् क्षेत्र सम्ब रसार्भे वायनी नुसानु राष्ट्री वाया होता व्याप्त करा से वाया के वाया होता हारी **ध**न्दा वित् न्या वित्र के प्रतिवित्त के स्था मुन्य कु स्थेन्य दे सू सु सू स्था कु स्थेन्य स्था सू सू सू सू सू सू **अ**न्दः चठराया गुरु श्रीक्षया चरत श्रीत् श्रु ता दिशेषा न स्वास के ग्राहरू मर्सेन्सपति न्तेर महस्य कर्नन् केन्द्रिय द्राय स्थार ग्रेन् खन्य के के ने र्रायक्याते। मर्गामायर्नेतिःर्यग्वाञ्चयार्थेन्'यय। रामिग्यतिहेराशु **इ**स्ताया के ने दिन्द न प्रति व की या किन द स्वाया के त्र स्व **न्युःक्रम्या**य्यम् प्रस्तार्थस्थायस्य विश्वेष्यस्य विश्वेष्यस्य विश्वेष्यस्य विश्वेष्यस्य विश्वेष्यस्य विश्वेष्यस्य सर्वि:के:सनस्विंद्वा हिर्म्पर्रात्ये। न्वेंश्राप्त्रा न्वेंश्राप्त्यः। न्वेंश्राप्त्रः। মনীশ্ৰব্যাস্থ্ৰ বেগুৰ্থপ্ৰনৰাট্টি ব্ৰুব্ৰান্ত্ৰ ব্ৰ षे भेराश्वरं उन इसराष्ट्रम्यान्त्रात्रात्रात्रात्रेषु दसराधिरार्भ्रम् तिश्चन्यरार्क्षः " **८६६७७**५५ वर्षे ५ वे पाय प्रस्ति प्रस्ति वर्षे **घॅ८पट्टरन्नवादनर्द्यं पर्ववानुग्दर्धन्त्रोबादवानंपिकाद्वा । देवा** न् हिन् इवया के तिन इव ग्राम्य तिन् नि नि नि हम स्वार हिन पता के वा

हे मर्ड्य भे वता दया रमात्री में प्रतिमाने के नाम हो। ने'ग्'न्ग्रात्रें'धेव। रन्'ग्रें'र्रेदितन्त्र्न्पान्त्व्याय। RT र्मनः चेन्द्रप्रान्त्राम्बन्दः निव्यान्याः क्षेत्रः क्षेत्रः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः विद्यान्याः व इंप्याबेन्'कुराष्ट्रिर'परा**कुराष्ट्रिर'प्**षत् श्रेसावे**रप'न्**र'र्रापरा न्दराक्षन्यसङ्ग्राक्षित्रर्भुग्वत्रर्भ्वत्यस्यस्य मानिन्यान्नात्राविनात्रमात्र्वेन्यात्राच्या चन्'चर-तु'तेबर्याक्ष्य'चन्'चन्'पबेन्'पय। व्रवस्तिव'तुर्याद्रत्में'न्व'ग्रुर्य मलं ह्रण्यते पुरावेण देन केवा ने नर हिन्दर ह्रवा नरा स्थान नरा निष् ঘরাশ্পর'শ্উরারীয়রাডব'য়য়য়'ঽ৲'য়ৢ৾ৼ৾ব'৻ৢ'য়ঢ়য়য়ৢয়য়৾ঢ়'৻৻ৼ৾৲ৢ'" व्या क्रिंग्न प्रवासिक्ष त्राचित्रा क्रिंग्में में मा क्रिंग्में में मा म नुसाम श्रुवात्म विकास निमान स्वास स्वर्भाता निमान स्वर्भाता स्वर्भाता निमान स्वर्भाता स्वर्या स्वर्भाता स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्भाता स्वर्या स्वर्या स् দুঅকাস্ত্র'মিনকা দীবা ক্রিকাডবা ক্রী দ্বাদীবা বা । দী আন দুলকা तेव'लव: तुःगहॅं न: नातात्रेन्'गुव्यंभेन्'लः ह्यन्यंभेग्'ग्राह्यन्यायगुरः तने ''" ग्युट्यार्थे।

हे भु शुर्वराय विक्रियात्रात्ति । इंग्यर् । विक्रिया विक्रिया । विक्रिया विक्रिया । विक्रिया विक्रिया ।

गुन् चैत्रज्ञवराख्ना । द्वन्वस्य स्वयं अ'ल्यायते। । चुन् चन **ह**ेंबा'जैबारम्'हेन्'त्रहेन्। । जुन्'बे्न्यम्'सॅर'ख'मत्वा'यते। । त्या' **बेब्रम्बब्बर्क्, वृंब्रम्बद्धाः । अब्रम्बन्यं व्यक्तिः व्यक्तिः । अव्यक्तिः विद्यक्तिः । अव्यक्तिः विद्यक्तिः** महरः चेरः नरः सुग्धित। विवाधित्या विवाधित्या विवाधित्या विवाधित्या विवाधित्या विवाधित्या विवाधित्या विवाधित्या F क्रेट. दश्चिया ग्रुट. तम्रास्य द्रिट्रा । नर्स्ट्र वस्य सम् ५ द्रिसः नर्स्य स मते। । तर देव परिष (४ १० विस्पार १ जु । प्रमाय पर्य के साम ज महत्त्वते । पञ्चित्रराष्ट्रन्थन् ह्ना चेत्र । किंग नेत्र वतः वरा **बाब्रुब**रपदे। । बदः संग्वार्वज्ञात्वर्द्द्र के भे देन। । बदः ने पदे क्रीत्र ब न्रायते। । वै'भैपर्ने क्विप्यम् स्वाप्य ह्यापति। । मुन्यत्र द्र्राप्त सुन्य सुन्य सुन्य । विन्यत्र द्र **१**वं व्याप्त विष्यात विष्यात विष्यात विष्यात विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषय रक्षित्रेत्वर्वर्वर्वत् । विर्म्यवायनुवायन्त्विक्षेत् । व **बे**स्राञ्चित्रान्द्रान्यात्रा । मुडेनासुराञ्च्द्रान्द्राञ्चन्रान्द्रा बह्या | न्वन्यन्तिन्द्रान्द्रवहं यद्त्रेत। | न्विः क्रुन्न्द **ब**र्मुन्यप्रस्त्रेन। । मुप्तप्रहर्द्द्द्विक्त्रित्युन। । विप्रसम **इ**ट्यार्ट् डिरापवाप श्रीना | क्रेंट् डेर् हे बरा व क्रेंट् हे ही | क्रेंट् हे Rर्जें दें द त्युप व द प्र प्र यह ता । प्र प्र यह ता क्या

র্মনা । নিন্নান্দার্থনে ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র বালার্থা । নির্ত্র করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তিক করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি । নির্ত্তি করি নির্ত্তি করি নির্

म्तिः अद्वाप्तात्त्रं प्रवापतः त्र्रापतः ह्वायाद्वायः स्वयः स्वयः

कृष्ण्वित्त्तर्थ्यं स्वर्ण्यं स्वर्णं स्वरं स्वरं

नेते ळे गुल्र व्र-भी व्यव प्रमा इयश ग्रीका हे पर्दु व्यु प्राप्त में का ब्या कु'न्नर'नु'हैब'न्याष्ट्रग्राश्चर्यंत्रेकेन्द्रस्यरा'न्ना **ऍव**'पन्ग' इयस्रायाध्यान्वत्रत्न्'नु'ग्नन्व'त्रेव्'न् ग्रेंस्पतिर्वे कुरू' ''' व्यापन। व्याप्तास्यमाधिनाग्त्रात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र् मॅंत्र'ग्रुक्ष'र्माया महत्य्वर्म्य स्वर्मा ग्रैक्षं स्वरं न्या निवर्मा निवरं वर् मन्ग् इयस्युर्विताक्षुरु दिन्यम् ने मर्या मन् विष्यु स्र स्र मन् ब्बा न्यगः इन्सः रूप्ता शुरायः इन्याञ्च राज्या सुकेना **র্মমা**গ্রীমাণ্রদে<u>রিবা</u>ষ্টার্মর্মেন্নাগ্রমাইনের্র্মার্মম **গ্র**মাকরামার্মা मॅंभेव'वतरा अ'माराककुं नगरानु मुस्मारा मृत्रा वता वरा नुपान वर त्रेव'रा'बी'रेग्वा ग्वत'वर'रा' इवकाग्रुर'सुर'रावु कर क्रेंन्सा नियः श्रीतावववार्यनः द्विनः स्टान् वातक्षायान्तरः नवा नवतः वतः रा इवरा नवग 'न्युन'ळे'न ते क्रेवरा ग्रेया र वन स्त्रिन् जेन या प्रवा वय यहरातहरात्र्र ची न च का के हो न च के की न च न के न विग्रह्मप्त्रा न्यात्राहरू

प्रियास्त्रात्तरस्थित्। चित्रस्यस्याप्तरस्यास्त्रात्त्रस्यस्याः । चित्रस्यस्याप्तरस्याः भूतः । चित्रस्यस्याः । चित्रस्यस्याः । चित्रस्यस्याः । चित्रस्यस्यः । चित्रस्यः चित्रः चत्रः चित्रः चत्रः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः चत

न्तर्षे विष्यं त्र स्वयं ग्रह्मा स्वयं स्वयं प्रस्ता स्वयं स्

स्याने न्यान्त्रा व्यान्न न्यान्त न्यान न्यान्त न्यान न्य

वातरेव। विवाधिययान्दर्भित्रे में या के दाया विवाधियान क्रवारान्याया निर्देशस्यास्य स्वता ।तन्यते श्रेवास्य व <u>र्श्वराज्ञा । पराञ्चरायक्रेरायदेश्रीयाद्वराज्ञय। । नेन्द्रा</u> मतुग्रार्स्रिकान्नेत्रम् वेत्। विषयत्त्रम् निविद्यायक्ति।। मे नेराह नेरावहर पर त्वा | नि रेर के नि हेर महिता |रेन तिस्त्रंगुन्कीतिर्मिर्मीकानभून। । न्यतः में यस्कारीका व्यवसं मृत्य छेता । ने देर धर यारेग दें बाबेता । ने वेत हें गहा पर के के साहित ধুন। । নতবান উবা ঐ নু শ্বামান বিশা দবা ঠিবা গুৰা গ্ৰী বা কৰিব हेव'ला । पर्यार्सेकी प्रांची प्रांची ही रायहिं। । ही प्रांची यारी प्रां हिंगाला । यिन् से न् बॅस हु ग स न स हु न स है र ळ्याला । नम्द्रित्यायराञ्चाम्दर्वह्रा । मद्रवर्रारम् व्याप्तर्त्वर्त्तेत्वद्भरवा । श्रीतःश्रीवात्वेत्वात्वेत्वात्वेत्वत्वा । हे गरिग्'क्विप'पदि'क्य'चर'य। |दग्राक्वेव'यर'परांग्यर'क्विप' ब्रह्म । व्यायक्ष्यं व्याय्ये व्यवस्या । न्याया व्यवस्य हे:संय:रूर्। । न्नाय:हे:पर्व्यक्रयम्या । अव्यप्ति: ग्रीयापञ्चणः श्चित्र्या विभिन्नविषयात्रत्त्र्तिः शुंदि शुंदि स्वराया । विन्द्रित्याया स्र्यंश्वराष्ट्रित्। वितानमानमानित्तुःकृत्ता वितानितायरास्यम् ब्रुगुर्व। । ध्रायार्खेष् वाराय दे विशेष्ठी द्वुवाराय। । वृत् प्ययश्येत् में द्वु 

श्चित्रंतु'गुद्र| दि'निषद्'नेद्'ग्चैद्'ग्चैद्'य्याद्रिर्या । श्वर्त्तेवस्य विदेव वॅ'ग्नेनेस्तिहेद्'नेवस्य हिंद्यह्यंत्रद्रयंगित्वस्य वेवस्य । द्वांस्य केट्रेंप्तग्त्यंत्रेद्वस्य । गुद्रगुप्त केट्रेंप्तग्त्यवेद्'श्चिप्य । प्रदे'वेद्गश्चेद्र्यत्य । स्वांस्य । गुद्रगुप्त ह्यां दुःश्चेद्रप्तरः स्वा । देवस्य शुद्रस्य श्चर्याः

त्र्हेंत्र्व्याय्ये हे। हेप्त्र्व्य्शेष्वय्य्या रश्क्राप्यः श्चेनयानर्तुःसरायःश्चेत्राण्यस्ति। व्यक्तिःस्य्ये र्वेश्वयःस्यस्यान्यः सम्बद्धानर्त्त्र्वाःके। रशक्ताःपाक्षःत्र्वेवःश्चेश्वयःस्यस्यान्यव्यः द्वार्त्त्र्व्यःश्चेत्र्यात्र्वे। वर्ष्यक्षःत्र्वेवःश्चेश्वयःस्यस्यस्य

त्रश्यां विष्यं दें न्द्री हैं पर्ड्वं द्रियाय्यं द्रियं विष्यं द्रियं विष्यं द्रियं विष्यं द्रियं विष्यं द्रियं विषयं विषयं

त्ता स्थाक्कर्रात्याक्कर्रा हे यहे त्याक्षण स्थाप्या सक्कर्र हे यह

श्चित्र न त्राहे पर्त प्ताहे न त्राहे न हिन्द है। स्ताहिन स्ताहिन स्ताहिन स्ताहिन स्ताहिन स्ताहिन स्ताहिन स्ताहिन तुरा यात्रा होत्रवा तुरा । सातुः इताया सहै । तारा देखा सुपा वे का याना प्रमान के ने का सवान में वाच ते तत् ने का केना केना होना था इन'रब'इन'यरी'न्स्'यानुबानुबान्न'बनेबा ब्रॅ.गुरुपनेग गण्डरा **ষ** রক্তা অর্ল দেখা থা नैवर्ह्य में बाच देश्वर्ष्य में बाच कर वा बे बाच देश ५५'रा है स'रा देवा मर में। देव सम्मवस्थित राप्ता हर है वह स ह्रश्राहेश्रानुन्या न्नांभार्यान्यापन्यान्यान्यान्यान्या मर्चन् मुग्राचीन् यते व्यागुरागुः स्टान्याग् स्याया य १ वर्षे । त्राया **ब** श्चेत्रशतुरः श्चरतुः बह्मायात्मात् म् न में बाश्चराय्य पर्यात् स्वी ववा न्न'अ'र्ग'रा'अपर'र्ज्ञेर्'र्'ग्नेग्र'व्यकेंदरेर्रे रे ইব'বা मर्यत्रत्वांन्। न्'क्षंत्रन्'र्वरक्षिवांचेत्रप्नित्। वयःस्वत्रद्रद्रित् क्षियान्त्रान्त्रे भेकानेयान्स्रायक्ष्यां या द्वान्त्रान्त्रे है। निष्क न्दात्र् कुयानित्या हेर्चे दाया सिन्द देवा के प्रमा द्वारा है के दे पायातत्व नवाद्धनाधवात्राचनार्वेवा गुकाञ्चवति दयात्र्ये नक्षेपनाववा कुर्-र्यणकेव में अविदार स्टर्स स्टर्म स्टर्म के वा वा न्र मह्यानु व्यापना वितार विकास दे हा स्वापन के सामी स्वापन है नि के प्राप्त मेनवा नेरासुरा मर्डिया पति या वाया व व वाया सर्दरा परा मरा १ अगे ५ ५ अग विश्वया उर् कृषा यत्र रेश वर प्रति व हे व सर्वे सहर यशप'नेशनुगराष्ट्रें प'न्सर्श्वें प'न्स्रें पान विश्वागा शुरा **१५** प्राराह से र क़ॕॱॸय़ॻॱढ़ॖॱऄॸॱय़ॱढ़ॸॕॸॱफ़ॕॿॱख़॒ढ़ऀॱॺक़ॕॸॱॾऺ**ॹॱॸय़ॻॱढ़ॱऄॸॱ**य़ॱॿॕ**ॻॹय़ॱॸ॓ॱ** इयश्कुर्नर्येक्षेत्रवारामुक्षामुक्षामुक्षामुक्षामुक्षामुक्षाम् त्रत्यावित् र्श्वेन्ययायनेत्र्यायानेत्र्यायावित्रया हेर्यर्ज्न्या छ्रा 口, 与, 强烈, 灵幻, 点 *ਫ਼ੑੑਖ਼ਫ਼ਗ਼ਗ਼ਖ਼*੶ਖ਼ੑਗ਼ਜ਼ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼ਜ਼ੑਖ਼ੑੑਜ਼ੑੑੑੑੑਜ਼ੑਜ਼ੑੑੑੑਜ਼ੑਜ਼ੑੑੑਜ਼ परः हिन् देवका ग्रेकिक न्पारने शुरायत ग्रुताया भेव 'ग्रुतका पका नेते दरः दराः झे सं तर्वार विवादि । क्रेशन् वित् ग्रीका विवादि । सामाना वदानच्नाभीवावया क्षेत्रां तर्ना द्वां होतावाहीयहें त्रां में का मान **৸**য়য়৻য়ৢ৻ৼয়ৣ৾ঀ৻৸৻৸৻৸৴৸ৼয়ৣ৾৸য়৻ড়ৣ৻ৼ৸য়য়৻য়ৣয়৻য়ড়ৄ৴৻৸৻৸ঀ৸৻৸৻৻৻৻৻ के' इयस'गुर'कु'न् यर'व'ळें ग्रावस'यळें न्'रा'त त्या विर'**प्रन्'** नेरापार्च या न वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष प्राप्त है। श्रुप्त है। श्रुप्त है। ळॅन्'रा'नेते'क्वेन'वहे'पर्डव'येवयाततुग्के। नते'सु'नरा'छन'रा'र्तेनया राधिन'वय ग्रान्दी'सय स्रायने स्याने स्याने स्याने नि चर्ड्व'क्षु स्रायाची चन्द्राचरात्त्वा क्षेत्र प्राया हिले प्राप्ति वा" 원도, 황, 너너의, 황, 및 소 원 근 회 ग्रेंगप्त न न्त्र म्या ग्रा त्रा श्री भन म्बराउन्'ग्र्म्'प्राय्यं

न्द्रित्रहें पर्वत्रक्षित्रकात्रा द्वान्यक्रम्पारम् वे त्राम्प

स्वा स्वाहित्के स्वाहित्के स्वाहित्यं स्वाह

विश्वपदिश्चे ह्यायक्षेत्रस्य त्रायन्त्रायम् रहास्त्रायः स्तर्भः स्तर्यः स्तर्भः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्

्र्रें द्रापः वे। त्रापः गृंवं व्रापः इवराय। यिः तेः ॐ व्राच्छे नेः अतः या चेतः त्राः। त्रायाः गृंवं व्रापः इवराय। यिः तेः ॐ व्राच्छे नः या प्राप्तः वे घर्षः भरायं न्यां न्यां प्राच्छे न्यां व्याचित्रः या व्याच्याः व्याचः व्याच्याः व्याच्याः

मित्रग्रास्त्रित्त्राह्णत्त्राहणत्त

ब्रॅन ब्रिन्दा । नन्त्रेययन्द्रस्येन विनामिकी । युर्यान प्रानामि हेबाबु:तज्ञन्बात्वन्बात्वा । ह्रेबाबेन्। देवावान्वान्वान् । মিঅম'ঀৢ৴'নে দ্ম'ন দুর্ভন'র বা ক্রম'র বা বা বিমারী মা बद्धश्याय। । नर्ने हिन्दे पे सक्षा में विकास । विकास में विकास में विकास । . तश्चिमावमा । भ्रे. येन 'क्रेन्स' म्हणमानुमायेन । भ्रे. येन 'यर्द्यमा ह्य त्राप्त्रीया न्या स्वराया । व्रिंदि ने हिं या हिं न्दरास्त्रवार्द्रस्यार्ह्रन्यार्द्रयायेत्। । न्दरास्त्रवारान्द्रस्यायाः देनाः -रशकुराय। रिग्राड्गात्व्रियाचरीजूराह्वराय। यश्राद्रश्चेगाञ्चेता व्यत्रं के। विषयं स्ट हेराशुप्त प्रतात्र प्रतार्य । विषयं पारे दे लाईनवरित्राबेन। विनवर्मन्र्सित्वाकेनारक्किराम। विनवर्द् वयायाविः न्दीन्यावेगाव। सिंगयायिः यनयाम् यावाराह्यायाव।। इर्द्रिक्कित्रु विर्वास्य वास्त्र वास् र्श्या वर्ष । व अर् र्वेर्या भेषा र बाहिराया । व्राप्ता वर्षा प्राप्ता र वर्षा महाया । महिम् सु दे त्यात्य महात्य पा 1음'다'新지다'월두'다' म्युवा । म्रिन्'तृद्देश्यात्र व्यवाशुर्ये दक्षा । हें तर्ने न्द्र है यानर रें ग्रुव। ।ग्रेग्'तृ'त्रेल'ल'८देशशुक्रम ।ने'म् वर्शम्म'ग्र्'कुम' यभित्। । विकेशरागुन् क्षेत्रह्मायभित्। । मृत्रेने प्रसंभे न न हर्मा । दि वयमाशुर्मिरमानिगामा यो छ।।

बियान्यान्यान्या यन्दिन्न्यायानुः वैयावा । वैयायावन्

सहत्वा श्राप्त वित्ता श्राप्त व्या स्वा व्या स्व व्या स्य स्व व्या स्व व्या स्व व्य

नेति क्षें सुन्। तन् क्षेत्रं गी वया वायतः ता क्षेति सुन् नः सु व्यापा में प्रय धरा च तुन् क्षेति क्ष म जुन नि । तन् न प्रवास ते व क्षेत् व क्षेत्रं व क्षेत् व क्षेत्रं व क्षेत

न्तिः अं युःपानु श्रूपान् अप्नान्य क्यापागुन् श्री अर्थन् श्रूरा था यात्र प्राप्त स्तान्ति । स्ति स्त्र स्त

न्तिः संग्रह्म त्रात्वा सन् में स्वायश्चित्। तृष्टि ग्रह्म स्वत्या न्यान् सन् सन् स्वत्याः स्वत्याः स्वत्याः स

हेथेन पतिव देर तु ग्वेग य स्याता । यय ह विन याय द र्गा महाल हे छ र द हे ते र तर दे र । र र हिर हे दे र र र र र र हु र । **बे**'खे'यन्'ब'तन् न'मजुन्'न्न' । प्राण्'भैब'यजुन्'न्न'तैब'ळेब्' मतुत् । भेन् र्द्रनः सक्ति स्थानु स्थान् । भे भे तुन नि क स्थान ५८। वि.सर.बिर.स.हेर.हर.स्वाया १८८.हेर.स.ख.ब. त्र्या । वे कृषा अरव तर् त्र व्यापाया । वि वर ग्यर न दे व सर्युर। । पर्मेर् सेप्रायकर्प्य स्टिप्राय विषा । ५ प्राय स्तर र्दिन्'अर्केन्'ब्रेब्'दिवेषा । गृतुष्य'न्द्रकुत्य'अर्कब्'च'न्ब'न्द्रः। । म्या निवान्यताचेतु न्यान हुन त्रिया । यीन देन व्यापतात ही नुवा भैक्षा । सुरुञ्चरका गुरुर के परिने ग्रायका हिरा । सुरुर्य स्वा अर् खुरा राता । वित्रस्ययागुन्तातानु श्चर्यायस्य । व्यायस्य श्रीते यय बिराभी विरयमि श्रूरामयाक्र्या हैराप हरा हैराप हरा हिराभी पहीरी महाश्रे हें वाकर। । बुद्ध क्ष्म स्थित । वाद्य स्थित । वाद्य स्थित । वाद्य स्थित । बॅर्हिन्'ब्रेड्'प्रस्यह्नि । न्याप्ताके प्राचित्राची । इंडा हिन्'के बेर्क्रिंग्यं हेर्। क्रिंग्यं हेर्यं क्रिंत्यं हेर्यं वित्रं त्र्यं वित्रं त्र्यं वित्रं त्र्यं वित्रं त्र्यं **ロスト、ダー・ダー・イトー 「如み、日・、日・、 あまべき」、新トリー | 100年 日・日・ 新まり | 100年 日 |** 

विश्वपति'न् ग्रुन्यस्थि श्रुन्ते' अन् मृन्यस्थिन् अर्थः स्त्रान्त्रः अर्थः स्त्रान्तः अर्थः स्त्रान्तः स्वर्थः स्त्रान्तः स्वर्धः स्वर्थः स्त्रान्तः स्वर्धः स्त्रान्तः स्त्रानः स्त्रान्तः स्त्र

स्वायात्री व्यव्हर्ष्यः अत्यान्यवात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्री व्यायात्रीयात

ने वस्या राष्ट्र श्रें तं व सन्दानक्या पा द्वारा द्वारा राष्ट्र प्राप्टा लिया ही है। या तुन्द्र न्द्र न्द्र न्द्र न्य हो त्या वा वा वि वे वा गुका की हे व द न व व तश्चित्र'ने'स्यळं र ठव् यदायं 'तश्चें व्याय र ततुष् 'कुंब'न् ष्वर'ययावे 'नदे''' रन्त्रा धुन्ति-तायम् तम्बाव्याप्तिस्याम् स्वयाप्ति । स्वयाप्तिस्याप्तिस्याप्तिस्याप्तिस्याप्तिस्याप्तिस्याप्तिस्या मात्रत्त्र्भं वृ'ख्'न् र क्रीव्याच सत्या व्यापित्य द्वार्थं केरी कुर्'ग्रेश्राचकुर्'र'रर'०इ'परि'त्रिर्वे सेर'र्वर'ष्ट्'र्गर'र'र्'वर तर्नि 'संब' द्विते बर्कन 'ह्रान्यण 'तुः बेन 'संर्चे ग्रां वृत्रासुन ।वनः तावरून" महिं सं इवका श्रीकान् र न म र श्री सं या वा सुर मिन य'त ग्रत्य'वित्। मञ्जीपरापदियम् द्रव्यदिन् न् गर्स् 'वृद्धेव् देशकुर्वा द्वार्य विदः """ त्र्वाचित्रवेषव्यस्य स्ट्राचन् येत्या ने व्यवप्रत्र स्त्राचित्र दिनः पश्चितां स्वयां ग्रान्यं त्रेवां पार्श्वन् । अया ने स्युवां प्राया व्यापतः त्र्यां इवराव्यावातर्वेद्राव्याः। वकेन्र्ण्यावाई हेश्च्रव्यव्यान्तानेश्वर

क्रिस्तान्त्रिक्त्रस्य अवायत्त्रस्य अवायत्त्

विश्वाद्वात्रेत्र्युः गुत्रः न्द्यन्यायीया गुर्याया निर्मायया त्र्विति:खन्नेतिद्वत्देत्वतः
त्र्वितःखन्नेत्वः
त्र्वितः पश्चेत्रानुः स्रेत्रे क्षे न्दं स्राचित्रानु स्वाप्तान् क्षेत्रानु स्वाप्तान् स्वापतान् स्वापतान स्वापतान् स्वापतान स्वापतान् स्वापतान स्वापतान् स्वापतान स्वापतान् स्वापतान् स्वापतान् स्वापतान् सुकेन इसमा ग्रीम खुन दिन सर् दिया रते सेन महिन हैन ग्नव्यत्रेव्रुं हैव्र्याया देन्य होत्रेव्यत्या व्यावाय हेव्या म्डिण्रेर नेदिष्टि यन् अले हान्य प्रस्पित्र मन्द्र गुर्र प्रदेशेर ता क्षांचीयांचीयान्गराञ्चाद्वीरे सकेंद्र हे द्राष्ट्वी ग्रायाद्वर ग्रायाय्वा गरा दंद्याः तार्दर्'नेर'नि'र्द्रग'स'त्वे'निदेशमत'यर्याच्याच्च स'र्द्धर'स'म्बेस'ग्रेय'न्द्रेस' यर ने अ इस या द ने अपा पति व कु र में पति ते से के व या इस या व Nठा वे ग्रायापा विष्पुर्यु रापा दे व्याप्त साहे पहुंब वहाँ प्याप्त स्वाप्त विष्पुरा व्यवत्त्रम् इवराधिवाद्वन्त्वतावर्ष्वन्त्रम् विवानानान्त्रात्नेन्त्रा बर्क्ष र हे द देरे प्रांद्र व हे र की खुला रु तर्व वाप तरे वापत तर्वे व हे वा की व **छ्यान्यायगुरः तरीया गुरुवार्या ।** 

प्रसाय्व'न्यायेत्तुर्श्चन'द्रवया |वेंबागुरागुरु-पा<u>द्</u>रग्मेंपेवा । हेव। |रोबराक्व'ॲट्यायाग्वर'न्ग्यावेय। |ग्रायापाक्षेर'व्या नयात्रिरनरके भूरसे। | १८५५ पुराय्य दाई नया यह या है। भ्रुं चेगाये वृग्गविग्या | नेराच्येया क्यति श्रुं राउंबा | तर्जे च पॅरवाकुं ब्राचारि हेत्। । नन्याची राष्ठ्या सब्बे विचारित। । सम नते स्यान्य मार्थित । दिन्य मार्थियान निम्यु मार्थि । हिन्य हे छ्र-'र्'श्रे'तम् । य्यम्या श्रुक्षे क्षेत्र अळे व विष् बक्रग्'याप'याया । त्र'द्वित्'त्रक्षपति'श्चर्भीवायहेरा । व्य विषर् र्ष्टियात्रिर्देषयापाया | र्पत्रिं र्पत्र्रेते वर्ष्ट्रेश्व त्विनया |त्रांत्यक्विन्द्रेनयायत्येत्रः नेवास् । | न्यन्यस्य श्रुपाञ्चरतु'त्रचुर्मा । तर्ने तापार्थतापात्र ने प्रवास्त्र वा । चित्र क्रप्य ह्मर्र्केष वा विषय दर्शे ही भी र अहिंग भिना हिनार हैं ब भुतिरत्विन्ययान्य विवासुर्ष्य्य दिन्य दिन्य विवासी बर्ह्र १ हे द्र ह्यु न्या । बर्दे के यत्वा कुरा हें र स न्रा । कुर हे । चित्रीया च न च है। | न देश शुर्दे व प देश व व र है। | अपे द श ग है। पारनेपकानुकान्। तिस्नेनाकान्द्रमानुकान्। किकार्श्वमाञ्चित र्यार्चेयापेन्। । ज्ञायाभ्रागश्चार्ने राये । इ.प्रह्मायम्। पा

६र:यर:क्रॅवा <u>|इ</u>र:य:रॅंन्'परी:क्रु'त<u>ब्र</u>ाठवा 15 F N & R & S & रान्त्रवर्ध्यक्ष । इत्राज्यान्तुन्त्रप्त्रन्त्रान्त्रवा 1多二日本日本日 पातरेमवातुवाव। | र्रवाश्चमा छ्रात्वाव। शुमा विमायस्य कुं न्या क्षेत्र । न्या क्षेत्र न्द्र या शुरू न्या । न्या क्ष्र न्या स क्षीरान्द्रस्यायात्राच्या । पार्विषास्य रहेष्ट्रम् हेन्यम् । व्यान्दः व्यापतः त्या पर वेदार्दर। विद्याता में वादा वा । शुरानु शुनान दे पामिना । नन्गान्नान्स्यार्थस्यार्थस्यान्त्रा । तदे नहन्परकन् र्सन्'राध्येदा । ईं न्यार्न्न'रेशसुक्षे'त्तुन्यं । द्वारार्ध्यससुन्यः राधिव। । तिर्मरत्याष्ट्ररायरतळ र वृष्णव। । श्रीसरायर त्याष्ट्र न्यापाक्षेत्रा विस्ताल्यायां विस्ताल्यायां विस्ताल्यायाः न्नापामेन। विस्तरियुन्त्रम्भन्दियायान। निस्तर्भन्यस्यस्य र्ग'र'पेदा शिवकारुव'गुव'शे'र्दव'गुरा'दा । त्रकारुकेंट्रकारु र्गापंषित्। । र्सेन्श्चरास्गराभेर्पत्रेक्षपत्। । तस्यापर्स्त सुन्गराधित। । हगरान्रन्दिशं गुरायर्वरापत्। । दूरायर्धरया स्पुर्यादाधिता । दशकेया वस्त्र श्रुरः इत् वस्त स्त्र । वित्र स्त्र स्त्र 在公公子山山上、岩山田東山一

है। वित्रवस्त्रवात्रः यान्यः वित्रवस्ति स्वर्धः स्वरं स्वरं

म प्वव दें व ब्रुयाप दे के प्रवा । यिं द व र्षे द दें प्रवाद दे इतातर्वेराय। |श्रीवर्ष्यंक्ष्यंन्वेर्याववयाउन्।वन। कुंभु त्यम् इत्याप्त दिन्दा । वाष्ट्र दिन्दे स्व । देन्'त्'र्श्चेय' इयरा'याव्य-'य-रख्। |हे'युप'र्घेय' इयरा'न्-'यहयात्र**ा** व् । रेब के व गरे र शे क्वें अप्तार । हे रेब वर वे र परि द वर तर्त्वेरपा । श्रुट्यपं ठव्'याग् श्रंयाच'तरे प्रया । याप्तरत्त्रेते अग् **गै**। यकॅं ५ 'हे द' दे। | दे ५ 'तुःश्चॅं प' इयशं त्यं गव द' पर तु। | हे 'तु' वदे' विनदार्हेन्'हेर्'ह्राह्या ।न्यर'र्ग्राखन्'ने'नयर्र्र्र् वासवादित्रकार्वेराय। विषयाहे उदायाप्रवादित्य। वि रहेग हे द द्या पापहर परिक्षे । इस क्षेर देश परिक्र तार्म रहा । त्युर्प्यंथेर्प्यते'स्त्रात्युंर्प्य । ब्रैन क्रें नश ठव' या ग र्या या तर्वता हि न्यायते ग्राययार्ग क्रियार्थ व । स्वायां क्रियां क्रियं क्रियां क्रियं क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियं क्र त्र। | वे ळॅं अवे ५ 'प दे द्वार व्रॅ रप। | क्वे र उत्र क्व ता व्याप तन्यम् । हे के जेन्'युन्'च'त्रीय'र्ड'त्। । । हम्म में कुन से न्युन स बेन्'त्र । त्युर'यं बेन्'पर्दे स्यार प्रेरपा । यर्डे बाया सून्यास न्रस्यातात्रेन्या हिं हन्यान्त्रहें त्रहुताहुन्दं न । यान्हेन <u> र्राचेरार्गर्सेत्रा । वस्येर्यदेशस्येर्या</u> । तहेन्य

राम्यताताम्याद्यतापात्रे प्रया । हिं व्ययान्म मेंन् हेन् व्याम मर्ड सित श्रम १ कथात । तिस्य श्रम विमाय से स्वाव के राया । न्देरातहेव'येन'यान्र्ययापत्नेपया हि'म्रयाव्यात्र्राच्यात्र्राह्य कैं'अ''बे'भेल'स्र्'प'त्र। । शुप'र्ह्मप'बर्स्न्'पिते'क्ल'त्र्वेरप्। मग्रात्रेष्ठ व्यापाय्यात्रेयायाः त्रेयया हिः चरः चेरः वरः स्राध्यार्थः व। । १६० हुसाय हुन पत्र। । दे वर्षाय वृष्य स्थार हुन या। *नेश* क्रुंब्र बेन् ताम् व्यापात नेपर्या |हे बन् येते स्वित्या क्रुंन रं व्या तह्याच्चीरान्ध्यान्यात् । शुक्याचेतानते इतात्र्वीराया । बहुद् महें रुव्यापार्वायाप्ति नेप्या |हें तर्स्या ही विश्वायह तार्स्व | अ'र्र'तु'गु वेश'स्र्'प'त्र्। किम्ब्'यर्द्र'पते'क्स'त्र्वेरप। मुअरापा स्वापा स्थापा स्वापा । हे स्राप्त हुन गवरा हु गवि मा र्सं व। । १ देशं श्रुपः म हे र श्रुः श्रुवायाय द । । १ में बाद दें १ त श्रुपः च दे ह्रसार्द्धराय। मिंबर्टरक्रमाण्यसायाररेन्स। हिंबर्टन्नेस सुन् तसून वर्ष (मन्न भग दार्चेन प्राप्त हा 一尺番可で बेन्'पदे'इतादव्रिंग्य। । नुषाग्रुयाबह्येद'ताग्रीतायादनेयय। । हे न्द्रश्चान द्वर पुण्य दर र व। । य भेरा तुः य दे र त दे य य तर ह। । मन्यापां वेन् पारि द्रायात् वें रामा विषयां है उत्राया व्यापार ने प्रया मात्रतः त्र्तिः स्वा वी वर्षे न् दे द्रि । विन् त्रु र्र्ति । स्वराता वर्षा वर्षा 911

विश्वान्यस्यान्य न्त्राध्याः यद्यात्रस्य न्त्रेत्र्यात्र्यः

देखाः स्थाप'विषादि 'ग्रीबावुयापादी'शक्'तु'त् इ'वेद'र्वेश'या'व रूप्यदे सगुरः ८दे 'ग्राप्टवास्।।

ऍ'व'श्रेय'स्व'८८'रा'ठव। । ३८८३८'ग्रुट'यरा'ग्रॅय'८देवस या । । प्राथक्षेत्रप्रधार्यते सुर्वेता । विर्धिक्षेत्रप्रस्थापाना । इस्ये गिथातियातालया हिरादा हुराया प्राप्ता ह्या ह्या हिरादा हुरा स्था हिरादा हुरा स्था हिरादा हुरा हिरादा हुरा भु: ५ द्वी - राज्य देवा पा भेरा | गुन् हें वा गुन् - ५ - ५ - ५ - ५ - ५ वे वा क्षा | रियर्च वृक्ष्णानु युर्पान्। । सिन् चेरत्यरायस्य बह्न हेन् वृज्य । तर्ने तर्षे प्रक्रेत्यकी स्वारकी विन्। | प्रत्वार व्यवस्य प्रति विन्दु छेत्। । न मॅं व प वे र याप त त में हे ' ह हा छेत्। । खुन य कें न ' झे न न बारतार में बार दाया । बी खारा महत्रा गुराया व बार में। । बिरा सुर्वे प इयशक्तिश्रापाया । नरारीयशहराश्चरात्वी मुन्दर्ग । मन्दर नरा दैर'यश्चेय'न्यप'र्षेन्। १ने'वृयशद्यातेत्र'पदे'ययानुशद्या ।८इ' क्षेत्र'र्मे सम्बद्धाः स्ट्रांत सुनः । । स्ट्रां स्ट्रां स्ट्रांस स्ट्रांस स्ट्रांस स्ट्रांस स्ट्रांस स्ट्रांस सळव' ख्व'त्र्'या नक्षेत्र'प'न्द्र' । वि' नर्त्रन्व सर्व सर्व स्थान हे व'प' गुडेवा । तम्प्रात्रात्रां म्यार्च यह प्रात्या । वे क्रूरा से सहाया न र्भेषा वा अर्थन । अस्था व तुर्गा अर्थित स्था से ब्राया निष्य व वा है लात्र प्रतान है वा । तर् प्रतार तार् र प्रता वा वा दि । हुत् खुग्पते रत्पन्त्रा । वर्षे र अर्थे र अर्थे र द्वापा गृहेश । RE'TE'RE'M'र्दे रूप्यां यहिंद्। शिवकानेद'र्दे बेद्'ग्रेटरवर्षर

५८। विरायमान्यसम्बद्धस्य विषय के विषय विराप्त विराप्त वॅरार्नेणव्यवर्षेत्। । नृत्याशुचाहेबारवेताप्तरान्ता । वतावेता बर्धिते नर्सर् द्यसम्बेस । । तर्मित्र तर्से सर्म वस्ति। बान्नावित्त्रज्ञिते सन्यक्ष्यान्ता । वाञ्चात्र सुनावित्र पहेच। १८५'८८'तर्भन्दर्भवयायस्त्। विवरत्त्र्वश्चर मते । इंद्रिया वित्र में वित्र र्रात्र्यार्वेरार्वेषाव्यव्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र अहरानी रेटा नरे ता १८५ ५८ १८६ १८६ १८६ १८६ १८६ ह्ययम् न्डिन्यक्रिये हेंग न्ना । तर्नेन मिययक्ष थेये हेंग महिया त्र: न्रः त्रः त्रः देवा व्यवस्ता । या देवा या के क्षां प्रति व के न्र के क प्टा विषया के के वर्ष है वर्ष है का विकार प्राप्त के का विकार प्राप्त के कि बह्री दिन हैन तह दार्द गुर विन दर्भ विहास है वह तहरारेन्'गड़ेश । तह'न्नातह'यार्चेन्द्रं वर्षयहेन्। । व्वच्छे स्यात्र में ते : प्राप्त । किन्य स्थित स्था । स् संविषकीन्त्रामविषा । तर्नित्रत्राम्बर्गस्त्राम्बर्गस्त् । क्रिन वराञ्चरायाचेरायान्या वितरीञ्चयते स्त्रुपानेया । तदान्य तर्भार्यस्त्राव्यवस्त्। । नव्यस्त्राव्यम् सुरवेयन्त्रः। । स र्वन्तुरायान्त्र्ररायान्त्रया । तर्न्दरत्रायान्य वर्षन्। । अन्त्यापत्त्रम्ते अक्नि हे ब्रत्री । नियान्य अया स्यक्ति प्या

प्राची

## मलन्यन् मेग्या विवास्त्रः

म् निकान्यः मृत्यान्यः विकान्यः विकान्

्रें दे दे त्यापाय। इतात व्यापाय क्ष्याय व्यापाय व्य

स्ताचित्रं क्रेस्त्रं व्यायातिः स्र स्याप्ते स्वाप्ते स्वापते स्

राज्यवा वा वे क्रिया विक्रिया विक्रिया के क्रियानुता त्रे हॅंब्प्या नेबादयर हैं हे पति श्रुब्य यह महावा ह्या य <u>श्रुवानुपायां सेन्द्रां सेक्ट्रन्ता ने नित्रुवाही साध के स्वार्थ सन्</u> क्रीक लाग्य कर भिया है। वर्षे स्टि र साज्या वा न तर दा र वि साथे। **४**८। गुडुर ने द्रायाद्र त्र युवा इस में रे ह वर्ग द्रा ही द हैर्यसः इयसः ग्रेशेनः प्रति है। । सः यय यस र है नः परि इया र हैं र वें सं है में नदायातार नदाने क्षेत्र स्वाह स्वीते नद्राक्ष नदार न द्रियायम्तित्रहेर स्वाधित्रव्याच्या नत्त्वित्रयो क्षेत्रव्या **ॻ**য়ॸॱऄ॔ॱढ़ॹॖॖॸॹय़ॱॺॕॸॱढ़ॺ॓ख़ॸॖॱॹॗॸॱऄॸॱॺॵख़ॱड़ॕॸॱॺॕॻॱय़ढ़ऀॱऄॗॵऄॿॱ म्ब स्निक्त दिना हे दात देते वा ना न ह ना न ह स्मि हिना सब्दा देश क्रिश्चेयकेय्रच्यः स्राथयाञ्चा भेवायाञ्चेता स्थातन्याम्यापयानया र्सर में तथा कुष्ठ (कर् 'परि'ग्रु त्या कुष्ठा श्रू त्य स्व कुं) में त्य या पा है या तथा तर्या । बार्य वर हे न् ग र छुँ ग वा शुँ नः न दे श श भ द । की तु र्श्व नः न र ग वि र श भ न न र इवश्चुन्प्रेव् व्।

न्द्रस्याक्षित्र्यस्य विष्युं विष्यं स्वाप्त्र्यः स्वाप्त्रः स्वाप्त्रः स्वाप्तः स्वापतः स्व

ब्राह्म निकास मिन्न मिन

ने क्र सह क्षेत् सेन् प्राप्त हे व प्रति व हेन् प्राप्त क्षेत्र है। या व व व विष्

स्वार्चर्यात्रेयां न्याः विश्वायः विश्वाय

न्गतः क्रॅंब्रांत व्यान्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्यवय व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्याय्य व्याय्य

क्रांतर्चे रक्किन्न्य प्रताम हे पर्वन्ते त्रांतर्म क्रांतर्म व्यापन स्थाप क्रांत्र स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था

प्रकारायम् छेन्। हे पर्वन् छै इया वर्ष्य प्राप्त प्रमान प

Cথ,বাণু, শ্বীৰ, হৰ, শ্ৰীৰ, শব্ধৰৰ, ব

\*

ন্ন বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব ব

## 米拉日巴传及其道歌

## (藏 丈)

乳毕坚连著 青海民族出版社校订 青海民族出版社出版 (西宁市西关大街00岁)

實化%件: 扎密拉旦 史学礼 封面插图: 白 蜂 工治省新华书店发行 青海民族印刷厂排版制型

中国人民解放军第七二一九工厂印装

开本: 787×1092毫米1/32 印张: 28 插页: (精)12 (平)10 1981年4月第一版 1981年4月第一次印刷

印数: 1-70,000

统一书号: M10181·14 定价: 箱仗3.90元 轮一书号: M20181·14